सौर एवं चण्डू पक्षपाती विद्वानों को शास्त्रार्थ के लिए स्थायी आह्वान

[दस हजार रुपया पुरस्कार जीतिए]

वि. सं. २०३४ में अधिक मास के विषय में स्थूल (सौर-चण्डू आदि) एवं सूक्ष्म दृक्पक्ष के पंचांगकारों में मतभेद रहा। स्थूल पक्ष से आषाढ़ और दृक्पक्ष से श्रावण अधिक मास था। इस वैमत्य के कारण दोनों पक्षों के पंचांगकारों में लिखित वाद-विवाद भी चला। श्री गोवर्धन मठ पुरी के श्री १००८ जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जी एवं उनके अनुयायी जोधपुर और बालोतरा (बाड़मेर) के दो पण्डितों ने सौर और चण्डू-पक्षीय पंचांगों के एकसमर्थन तथा दृक्पक्षीय पंचांगों के विरोध में कुछ सामग्री प्रकाशित की। हमने उनके आधारहीन तर्कों के प्रतिवाद में दो लेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित किए। हमारे श्री मार्तण्ड पंचांग के निरयण सौर-वर्षमान को भी जोधपुर और बालोतरा (बाड़मेर) के इन दो पण्डितों ने अशुद्ध कहने का दुःसाहस किया, जिसका सैद्धान्तिक प्रतिवाद कर देने पर भी ये लोग दुराग्रहवश कुछ न कुछ असैद्धान्तिक बातें लिखते रहे (श्री मार्तण्ड पंचांग के निरयण सौर वर्षमान पर किए गए इन पण्डितों के आक्षेप का गणितीय निराकरण इसी वर्ष के पंचांग में आगे किया गया है)। अन्ततोगत्वा हमने इन दो पण्डितों तथा श्री १००८ जगद्गुरु श्री शंकराचार्य पुरी जी को स्थूल पक्षीय तिथियों और निरयण सौर वर्षमान को (जिन दोनों पर अधिक-मास निर्भर करता है) अहमदाबाद या जयपुर वेधशाला (Astronomical Observatory) में बैठ कर वेध-यन्त्रों तथा गणितीय-विवेचन द्वारा शुद्ध सिद्ध करने के लिए दो बार रजिस्टर्ड पत्रों द्वारा, जिन्हें सोलन से प्रकाशित ज्योतिष्मती पत्रिका में हमने प्रकाशित भी किया है, सादर आमन्त्रित किया। लेकिन हमारे इन आमन्त्रणों के उत्तर में इन बालोतरा के दो पण्डितों ने अहमदाबाद और जयपुर की वेधशालाओं के सम्मान्य विद्वान् अधिकारियों पर दृक्पक्षपाती होने का मिथ्या आरोप लगा कर इन दोनों वेधशालाओं को शास्त्रार्थ स्थल के रूप में स्वीकार करनेसे इन्कार कर दिया। इस पर हमने उन्हें मद्रास, हैदराबाद, नैनीताल आदि नगरों में स्थित भारत सरकार की अन्य छः Observatories के पते भी रजिस्टर्ड पत्र द्वारा भेजे और लिखा, कि वे "इनमें से किसी एक वेधशाला को शास्त्रार्थ-स्थल के रूप में चुन लें।" हमने अपने इस पत्र में इन पण्डितों से यह प्रतिज्ञा भी की कि—"अपने (स्थूल) पक्ष की तिथियों तथा सौर वर्षमान को वेध द्वारा शुद्ध सिद्ध करने वाले महानुभाव को हम १०००० (दस हजार) रुपया पुरस्कार भी देंगे।" हमारा यह पत्र भी "ज्योतिष्मती" के १९७७ ई. के कार्तिक अंक में प्रकाशित है।

इन दो पण्डितों के इस आग्रह पर कि उनके निवास-स्थल से शास्त्रार्थ स्थल तक पहुंचने और वहां से वापिस लौटनेके लिए उनका यातायात-व्यय मध्यस्थोंके यातायात व्यय साथ उन्हें भेज दिया जाए, तदनुसार हमने १५०० (पन्द्रह सौ रुपया) जोधपुरकी राजमाता श्री कृष्णा कुमारी जी (जो इस शास्त्रीय विवाद में रुचि ले रही थी) को ड्राफ्ट नं. PLH 479865 द्वारा रजिस्ट्री नं. 467 (P.O. Solan) से ता. 28-9-77 को भेज दिया, और उन पण्डितों को रजिस्टर्ड पत्र से सूचित कर दिया कि—"शास्त्रार्थ के बाद वे दोनों पण्डित तथा मध्यस्थ विद्वान् अपना यातायात व्यय श्री राजमाता जोधपुर से ले सकते हैं।" इतनी उदार सुविधा देने पर भी वे पण्डित अब शास्त्रार्थ के बारे में मौन साध कर बैठ गए हैं। इसके बाद उनका एक पत्र हमें ऐसा अवश्य मिला है, जिसमें उन्होंने लिखा है कि—"नोहर (राजस्थान) में चातुर्मास्य कर रहे जगद्गुरु श्री शंकराचार्य पुरी जी से शास्त्रार्थ के लिए आप दोनों भाई (नोहर) पहुंचें। श्री शंकराचार्य जी ने आपके शास्त्रार्थाह्वान को स्वीकार कर लिया है।"

वे दोनों पण्डित स्वयं शास्त्रार्थ के लिए उद्यत हैं या नहीं—इस बात की चर्चा उन पण्डितों ने अपने इस पत्र में बिल्कुल नहीं की। परन्तु एक आश्चर्य यह भी है कि—श्री शंकराचार्य जी का कोई भी पत्र हमारे शास्त्रार्थाह्वान की स्वीकृति में आजतक हमें मिला ही नहीं है। फिर भी हमने वेधशाला के अभाव में नोहर को शास्त्रार्थ स्थल के अनुपयुक्त समझते हुए श्री शंकराचार्य जी को ता. ८-९-७७ को रजिस्ट्री से पुन. पत्र दिया, कि—"कौन सा पक्ष आकाशीय स्थिति से मेल खाता है कौन सा नहीं;—इसके निर्णय के लिए हम उनसे किसी वेधशाला में ही साक्षात्कार करना चाहते हैं। हमारे द्वारा भेजी गई छः प्रामाणिक शासकीय-वेधशालाओं की सूची में से किसी एक वेधशाला को चुन कर हमें स्वोपयुक्त शास्त्रार्थ तिथि से स्वहस्ताक्षरांकित-पत्र द्वारा सूचित करने की कृपा करें। हम उस तिथि को शास्त्रार्थ हेतु उस वेधशाला में पहुंच जाएंगे।" लेकिन श्री शंकराचार्य जी ने हमें हमारे इस पत्र के उत्तर में आज (२२-१०-७७) तक कोई पत्र नहीं लिखा। स्पष्ट है—स्थूल गणित के पक्षपाती-महानुभाव वेधयन्त्र तथा गणितीय विश्लेषण द्वारा उपलब्ध होने वाले निष्पक्ष निर्णय से घबराते हैं।

सौर एवं चण्डू पक्ष के समर्थक विद्वानों के साथ किसी प्रामाणिक-वेधशाला में बैठकर गणितीय-विवेचन एवं यान्त्रिक-परिणामों द्वारा सौर-चण्डू तथा दृग्गणितीय पक्षों में से किसी एक की प्रामाणिकता (शुद्धि) के लिए हम दोनों भाई पूर्वाग्रह छोड़कर संयत वाद-विवाद के लिए सदैव प्रस्तुत हैं। सौरादि प्राचीन स्थूल पक्ष की तिथियों के समाप्ति-काल, तथा निरयण सौर वर्षमान को वेध द्वारा शुद्ध सिद्ध कर देने वाले किसी भी विद्वान् को दस हजार रुपए देने की प्रतिज्ञा से हम विमुख नहीं होंगे। कोई भी सौर-चण्डू-पक्षपाती विद्वान् वेध-यन्त्रों एवं गणितीय तर्कों के साक्ष्य में हमसे इस विषय पर किसीभी समय पर शास्त्रचर्चा कर सकता है—हमारा उन्हें यह सादर स्थायी आमन्त्रण है।

प्रियव्रत शर्मा-शशिधर शर्मा

...र्वों की तिथियों के निर्णायक के रूप में अखिल ...रतीय स्तर पर श्री प्रियव्रत शर्मा का चयन

मई सन् १९७७ में अहमदाबाद की सुप्रसिद्ध Astronomical Observotory (वेधशाला) द्वारा अखिल भारतीय-पंचांगकारों एवं अन्य नक्षत्रविदों की एक विशाल गोष्ठी का आयोजन किया गया था, जिसमें समस्त भारत के लगभग सभी प्रमुख पंचांगकर्त्ता एवं अन्य ज्योतिषियों ने भाग लिया। हिन्दु व्रत-पर्वोत्सवों की तिथियों में उपस्थित होने वाले असह्य मतभेदों को दूर करने वाले उपायों के निर्धारण के उद्देश्य से ही वेधशाला के विद्वान् अधिकारियों द्वारा इस गोष्ठी में भारत के गण्य-मान्य ज्योतिषज्ञों को आमन्त्रित किया गया था। गोष्ठी में डा.शक्तिधर शर्मा एवं डा.गोस्वामी गिरधारी लाल आदि विद्वानों ने दृक्पक्ष की प्रामाणिकता सिद्ध करते हुए हिन्दुव्रत पर्वों में उपस्थित होने वाली अनेक समस्याओं का निर्देश किया एवं उनके शास्त्रीय एवं गणितीय समाधान प्रस्तुत किए। वेधशाला के अधिकारियों द्वारा विशेष रूप से आमन्त्रित होने पर भी श्री प्रियव्रत शर्मा अस्वस्थ होने के कारण गोष्ठी में उपस्थित नहीं हो सके। लेकिन उन्होंने "हिन्दु व्रत पर्वों के मतभेद और उनका प्रतीकार, शीर्षक वाले अपने एक विस्तृत शोध-लेख की मुद्रित प्रतियां गोष्ठी में सम्मिलित होने वाले विद्वानों के विचारार्थ भेज दी थीं, जिसमें व्रत-पर्वों में मतभेद के सभी कारणों का सप्रतीकार वैज्ञानिक विवेचन था।

गोष्ठी में यह प्रस्ताव रखा गया, कि —"वेधशाला द्वारा भारतीय केन्द्र स्थल को आधार मान कर चित्रा पक्षीय दृग्गणित के अनुसार ही वर्षारम्भ से पूर्व पांच पांच वर्षों के व्रत पर्वों की तिथियों का निर्धारण अग्रिम रूप में (advance) करने की व्यवस्था की जाए और उसके अनुसार ही भारत के सभी पंचांगकार अपने पंचांगों में व्रत पर्वों का निर्देश करें।" गोष्ठी में सभी विद्वानों ने इस महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव को सर्वसम्मति से सहर्ष पारित किया।

इस पारित-प्रस्ताव को क्रियान्वित करने के लिए वेधशाला के अधिकारिगण ने श्री प्रियव्रत शर्मा को (जो भारत द्वारा इंग्लिश में प्रकाशित होने वाले "इण्डियन नाटिकल आल्मनाक" तथा अन्य १२ भारतीय भाषाओं में प्रकाशित होने वाले "राष्ट्रीय पंचांग" की व्रतपर्व निर्णायिका समिति के भी सम्मानित सदस्य हैं।) वेधशाला की व्रत पर्व निर्णायिका समिति के अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित करके सम्मानित किया है। वेधशाला द्वारा अग्रिम रूप में(advance)प्रकाशित किए जाने वाले इन "पंचवर्षीय राष्ट्रीय पंचांगों" में दी जाने वाली व्रत पर्वों की पूर्व-निर्धारित तिथियों द्वारा भारतीय पंचांगों में सदा कदा उत्पन्न होने वाला व्रत-पर्व तिथि सम्बन्धी मतभेद अब सर्वदा के लिए मिट जाएगा।

यह परम हर्ष का विषय है। इस के लिए भारतीय पंचांगकारों तथा धार्मिक जन समुदाय को वेधशाला अहमदाबाद के प्रति आभार प्रदर्शित करना चाहिए।

डा. शक्तिधर शर्मा के एडिनबर्ग (स्काटलैण्ड, U.K.) में अन्तर्राष्ट्रीय विज्ञानेतिहास-सम्मेलन में भारतीय—

—ज्यौतिष-विषयों पर भाषण—

अगस्त १० से १९ (सन् १९७७) तक एडिनबर्ग (Scotland U.K.) में UNESCO की सहायता से विज्ञान-सम्बन्धी-इतिहास के विषय में एक अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस हुई। इसमें श्री मार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग के सम्पादक डा. शक्तिधर शर्मा भी आमन्त्रित थे। आपने वहां जाकर भारतीय ज्यौतिष के विभिन्न विषयों पर शोध-भाषण दिये, एवं २१से २४ अग. तक ग्रीन्विच (लन्दन)में वैज्ञानिक यन्त्रों के इतिहास के विषय पर आयोजित विद्वद् गोष्ठी में भी भाग लिया। आपके लन्दन में एक तथा एडिनबर्ग में तीन भाषण हुए। एडिनबर्ग कांफ्रेंस में आपने तीन शोध-भाषण दिये—इनके विषय निम्न-लिखित थे:— (४)

(१) जैन-सिद्धान्त-ज्योतिष में दिनों की लम्बाई, (२) ई. स. १६०० से पूर्व (न्यूटन से पहिले) भारतीय ज्यौतिषज्ञों द्वारा ज्ञात सूर्य एवं चन्द्रमा के मन्दफल, च्युति, आदि संस्कार, जिनकी उपपत्ति बाद में आकर्षण-जन्य विक्षोभों (Gravitational Perturbations) के आधार पर ज्ञात हुई।

(३) ई. सन् १९११ में प्रो. लावेल से ५ वर्ष पूर्व भारतीय-ज्यौतिषज्ञ श्री वेंकटेश बापू केतकर द्वारा प्लूटो एवं उससे भी दूर एक अन्य ग्रह की सत्ता की भविष्यवाणी।

प्रथम शोध-भाषण में डा. शर्मा ने Brown University के Dr. David Pingree की बातों का खण्डन करते हुए सिद्ध किया, कि यदि जलघटी (Clepsydra) में मुख्य रूपेण जल-प्रवाह की दर में परिवर्तन एवं अन्य किरण-वक्री भवन आदि संस्कार दिये जाएं तो सबसे बड़े दिन एवं छोटे दिनों की लम्बाईयों का अनुपात ३:२ के स्थान पर १.२२:१ ही आता है। वेदांग ज्यौतिष तथा जैन प्राकृत-ग्रन्थों में यह अनुपात ३:२ दिया गया है—जब इतना मान जलघटी के प्रयोग से आता है, तब वास्तविक अनुपात १.२२:१ ही होता है। जो कि भारत में उज्जयिनी आदि के लिए ही ठीक बैठता है। ३:२ अनुपात बैबीलोन के लिए ही ठीक उतरता है। अतः वेदांग-ज्योतिष का उद्भव बैबीलोन में ही हुआ है;—यह मान्यता निराधार है।

दूसरे शोध-भाषण में डा. शर्मा ने सूर्य एवं चन्द्रमा के संस्कारों (Inequalities) का भारतीय-ज्योतिषियों द्वारा न्यूटन के सैद्धान्तिक प्रतिपादन से पूर्व तक क्रमिक विकास दिखलाया और सिद्ध किया, कि, चन्द्रमा का मन्द फल (Ist Equation of centre of Moon) भारतीय ज्यौतिष में जिन विशेष स्थितियों वाले ग्रहणों को लेकर ज्ञात किया गया, वे स्थितियें Ptolemy के प्राचीन ग्रहणों के विश्लेषण वाली स्थितियों से बिल्कुल भिन्न थीं। Evection तथा Variation का ज्ञान श्री मुञ्जाल (१०वीं शती) तथा श्री भास्कराचार्य (१२वीं शती)ने पहिले ही कर लिया था। विशेषरूप से यह ध्यान देने योग्य बात है, कि श्री भास्कराचार्य ने सब से पहिले चन्द्रमा का पूर्ण परम मन्दफल (Total Ist Equation of centre of Moon) ज्ञात कर लिया था। इनसे पहिले सभी मन्द फल-सूत्रों में पर्वान्त-कालीन तथा विशेष चन्द्रोच्च-स्थिति के लिए ही प्राप्त आंशिक-परम

मन्द फल (५° तुल्य) का ही प्रयोग होता रहा। इस भाषण के प्रारम्भ में ही डा. शर्मा की कुछ विद्वानों के साथ एक विषयान्तर पर भी बहस हुई, जिसका विवरण आगे दिया जाएगा।

तीसरे भाषण में डा. शर्मा ने ई. सन् १९११ में श्री वेंकटेश केतकर द्वारा की गई प्लूटो के अस्तित्व की भविष्यवाणी के प्रमाण में French Astronomical society की Bulletin में छपे लेखों के अंश तथा Dr. M.C. Flammarian को भेजे पत्र की प्रतिलिपियें प्रस्तुत की। इस भाषण के अन्त में Smithsonian वेधशाला के डा. गींग्रिच (Dr. Geingrich) एवं अमेरिका से आए हुए Dr. V. Raman ने अपने विचार प्रस्तुत किये। Dr. गींग्रिच ने इस तथ्य का समर्थन किया, कि—प्लूटो से आकर्षण जन्य विक्षोभ बहुत ही थोड़े हैं अतः उपेक्ष्य हैं। वेंकटेश केतकर का भी यही कहना था, कि उनसे कोई निष्कर्ष निकालना सम्भव नहीं था। वस्तुस्थिति तो यह है, कि इस बारे में प्रो. लावेल के परिणामों से प्रो. पिकरिंग के परिणाम अच्छे थे, परन्तु केतकर के परिणाम पिकरिंग से भी शुद्धतर थे और केतकर से अधिक शुद्ध परिणाम किसी के नहीं थे;—इसमें कोई सन्देह नहीं। इस प्रतिपादन को वहां उपस्थित विद्वानों ने ठीक माना। इस प्रकार वहां डा. शर्मा के भाषणों को श्लाघनीय सफलता मिली है।

—इन्दुशेखर

एडिनबर्ग कान्फ्रेन्स में विदेशीय विद्वानों के आक्षेपों के उत्तर—

डा. [illegible] शर्मा M.Sc., Ph.D., [न्यू. कि]. M.A, सिद्धान्त-ज्योतिषाचार्य

हमारे श्री मार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग एवं उर्दू जन्त्री में प्रायः प्रतिवर्ष मौलिक सैद्धान्तिक लेख मैं और मेरे अग्रज प्रो. प्रियव्रत शर्मा देते रहे हैं—जिनका अंग्रेजी में अनुवाद करके English Research Journals में भी प्रकाशनार्थ भेजने की आवश्यकता उन्होंने समयाभाव के कारण महसूस नहीं की। एक भाषा में प्रकाशन हो चुका, इसी से हम सन्तुष्ट रहे। इन लेखों में बहुत बार विवादास्पद विषयों के आधुनिक ज्योतिष सम्बन्धी शोध के रूप में समाधान प्रस्तुत किये जाते रहे हैं। ये लेख पिछले २५ वर्ष के हमारे सम्पादकत्व में प्रकाशित इन पञ्चाङ्गों में देखे जा सकते हैं। आजकल के दृक्पक्षीय पञ्चाङ्गकार ग्रह-गणित में सभी Gravitational Perturbative Corrections का उपयोग करते हैं। पञ्चाङ्गों के संशोधन के २०० वर्ष के इतिहास से अपरिचित होने से ही गलत धारणा कुछ तथाकथित वैज्ञानिकों में बनी हुई है। प्रत्येक वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी विवादास्पद विषयों का सैद्धान्तिक विवेचन यहां प्रस्तुत किया जा रहा है। परन्तु इस वर्ष यहां Edinburgh Conference में Dr. Hartner के साथ हुई वाद-समस्या का समाधान भी किया जाएगा। इसके अतिरिक्त अभी पीछे सं. २०३४ में आए अधिकमास-जन्त्री विवाद में आई एक रुचिकर समस्या का समाधान भी किया जाएगा।

[illegible] एडिनबर्ग में जर्मनी के डा हर्टनर के साथ वेदांग ज्योतिष, ऋग्वैदिक ज्योतिष-सम्बन्धी व वैदिक साहित्य की प्राचीनता (Vedic antiquity) के विषय में बहस [illegible] इस अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन में अमेरिका, रूस तथा रोमानिया आदि के विद्वानों ने [illegible] प्राप्त होता [illegible] एवं ज्योतिष विषय पर भाषण दिए। पहिले ही दिन इनमें से एक [illegible] में डा. हर्टनर ने यह आक्षेप किया, कि-ऋग्वेद में पूरे २७ नक्षत्रों का ज्ञान नहीं था।—इस आक्षेप के उत्तर में मैंने अपने विचार प्रकट किए, कि यद्यपि केवल कुछ तीन चार नक्षत्रों के नाम ही ऋग्वेद में मिलते हैं, परन्तु यह स्पष्ट है कि—उस समय नक्षत्रों के नाम से ही दिनों के नाम होते थे (वार उस समय नहीं थे)। इससे स्पष्ट है-कि उन्हें पूरे २७ नक्षत्रों के नाम अवश्य ज्ञात होंगे, अन्यथा २७ दिनों के नाम तीन चार नक्षत्रों के नाम पर ही नहीं रखे जा सकते। डा. हर्टनर ने इस तर्क को बहुत युक्ति-संगत माना और स्वीकार किया, कि यद्यपि ऋग्वेद में नक्षत्रों की लिस्ट पूरी नहीं मिलती, परन्तु अप्राप्य शाखाओं में अवश्य रही होगी। ऐसी बातों से सावधान होकर मैंने अपने प्रथम भाषण में ही जैन ज्योतिष के समय का उल्लेख करते हुए कहा, कि—वेदांग ज्योतिष १४०० B.C. के लगभग लिखा गया और जैन—सिद्धान्त-ज्योतिष (सूर्य प्रज्ञप्ति आदि) लगभग ६००—५०० B.C. के हैं। भले ही ये ग्रन्थरूप में बाद में संकलित किये गए परन्तु इनमें उल्लिखित ज्योतिष-सम्बन्धी रिकार्ड पुराने हैं, जो (Oral traditions) श्रुति-परम्परा में आए हैं। अतः इनके काल वस्तुतः वे ही मानने चाहिए, जिस समय के नक्षत्र चक्रादि के अनुसार गणना आदि उल्लिखित है। वैदेशिक पाश्चात्य लोग वेदांग ज्योतिष को लगभग १४०० B.C. पुराना नहीं मानते।

बड़े आश्चर्य की बात है, कि—वेदांग ज्योतिष में उत्तरायण बिन्दु धनिष्ठादि (जिस से लगभग १४०० B.C. की तारीख आती है।) के उल्लेख की ये पाश्चात्य विद्वान् उपेक्षा करते हैं और भाषा विज्ञान के आधार पर वेदांग ज्योतिष को अर्वाचीन सिद्ध करने का प्रयत्न करने लग जाते हैं। भाषा-विज्ञान तो अभी तक Exact Science की कोटि में नहीं गिना जा सकता। गणित-वेत्ता लोगों का गणितीय प्रमाणों को छोड़कर एक Qualitative ढंग से निर्णय पर उतर आना केवल पूर्वाग्रह मात्र है। कोई भी भाषा विज्ञानी गारण्टी से नहीं कह सकता, कि संस्कृत में परिवर्तन किस दर से हुए हैं? वैदिक संस्कृत से लौकिक-संस्कृत आने में कितना समय लगा? इत्यादि। वेदांग-ज्योतिष में लिखा है:—"यथा शिखा मयूराणां ...... ज्योतिषं मूर्धनि स्थितम्"। यहां 'मयूर'-शब्द प्रयुक्त हुआ है। इसे पाश्चात्य लोग अन्य भाषाओं से आया मानते हैं। परन्तु—यह शब्द आचार्य पाणिनि (लगभग ६०० B.C.) ने अपने व्याकरण के एक सूत्र 'मयूर-व्यंसकादयश्च' में प्रयुक्त किया है। अतः यह शब्द संस्कृत में अर्वाचीन नहीं। इसमें सन्देह नहीं, कि-धनिष्ठादि गणना वेदाङ्ग ज्योतिष को १४०० B.C. के लगभग सिद्ध करती है और यही तर्क-संगत मान्यता है। खेद है, कुछ भारतीय बिना आधार के ही पाश्चात्य विद्वानों की मान्यता को प्रामाणिक मान लेते हैं। वे पाश्चात्य विद्वानों को निष्पक्ष मानते हैं और अपनी हीनत्व भावनाओं के कारण ऐसा समझते हैं कि भारतीय उनका मुकाबला नहीं कर सकते। ये सब धारणाएं हीनत्व-भावनाओं की देन हैं। हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं, कि—विश्व में कोई भी मनुष्य भले ही वह कितना शिक्षित, यशस्वी-विद्वान् हो, किसी न किसी पूर्वाग्रह (Prejudice) से ग्रस्त अवश्य है। पाश्चात्य विद्वानों को आंखें मूंद कर मान्यता देना इनकी पहिली दासताओं के कारण ही है। मैंने लगभग ४ वर्ष तक अमेरिका में रह कर वहां के समाज-सम्पर्क से अपना अनुभव लिया है, कि—कोई भी मनुष्य Prejudices एवं Biases से मुक्त नहीं।

…इये, देखें कि-Dr. Hartner के सन्देहों में कितना सत्य है। ऊपर वेदाङ्ग …के विषय में समाधान दिया गया है। हम अपने तर्कों में और भी आगे …दावा किया, कि-यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण में कृत्तिकाओं (Plaledes) के पूर्व …की बात लिखी है। यह 'घटना लगभग 2700 B.C. की सिद्ध होती है। …तिरिक्त ऋग्वेद के प्रथम मण्डल तथा ताण्ड्य ब्राह्मण आदि मे उल्लिखित …ति एवं पुष्य (योगतारा) की युति का सन्दर्भ देते हुए हमने प्रतिपादन किया, …-यह घटना लगभग 4650 B.C. की है। डा. हर्टनर का कहना था, कि इतना पुराना तो इतिहास ही नहीं है। हमने कहा, कि-जब समय था और मनुष्य थे, तो इतिहास भी था;- भले ही हमें ज्ञात न हो। आर्य लोग अमुक समय में भारत में आए, इत्यादि के विषय में जो भी पुरातत्त्वीय प्रमाण (Archeological Evidences) हमें मिलते हैं—उनका पुराने ज्यौतिष सम्बन्धी सन्दर्भों (Old Astronomical records) के साथ कोई विवाद नहीं। आर्य जहां भी थे श्रुति परम्परा (Oral traditions) में ये रिकार्ड जीवित रहे हैं,—इसी कारण वेदों को 'श्रुति' कहा गया है।

पुष्य का एक ही योगतारा δ Cancri है, इसे प्रो. Whitney, Baintley, Kaye तथा श्री केतकर, श्री बालशंकर दीक्षित आदि सभी मानते हैं। पुष्य नक्षत्र के विभाग को आंखों से देखने पर भी यही बात पुष्ट होती है। बृहस्पति की कक्षा (Orbit) का विनाम कोण (Inclination) १°—१८′ है। δ Cancri का चित्रा-पक्षीय निरयण-भोगांश [(Sidereal Longitude) (Without Precession), With respect to longitude of Spice = १८०°)] १०४°—५३′ है और बृहस्पति की कक्षा के उत्तर पात का निरयण-भोगांश (Sidereal longitude) ७७°—४′ है और δ Cancri का शर = +४′ मात्र है। बृहस्पति के विम्ब का अर्ध व्यास ≅ ३′—१५″ है। यदि δ Cancri के बिम्ब को बिन्दु ही मान लिया जाए तो भी विशेष अन्तर न पड़ेगा। (इन अंकों के लिये Indian Nautical Almanac एवं इसका Appendix देखें)। बृहस्पति की कक्षा के पात की निरयण गति (Speed without velocity of Precession) १९ वर्ष के चक्र में —०°.०८ है और १००० वर्ष में लगभग-४°.१ की गति है। इसका …गण काल (Period) लगभग ८८००० वर्ष है। यह स्पष्ट है कि पात का δ Cancri …वर्तमान अन्तर २७°—४९′ है। अतः लगभग ४६५० B.C. में उत्तर-पात δ Cancri …था। अब इससे युति की वह स्थिति लीजिये, जबकि δ Cancri के साथ बृहस्पति की …प्रारम्भ हुई थी। यह युति कितनी शताब्दियों तक बृहस्पति के प्रत्येक भगण में पुष्य में …ति पर होती रही है और कब बन्द हुई? इन तथ्यों का सैद्धान्तिक विवेचन नीचे होगा।

प
(δ CANCRI)
(पुष्य योगतारा)
गुरु-कक्षा
पा
ग
म
उत्तर-पात
क्रान्तिवृत्त

"बृहस्पतिः प्रथमं जायमानः तिष्यं नक्षत्रम् अभिसम्बभूव"
ऋगवेद प्र. मण्डल एवं ताण्ड्य ब्राह्मण"
(बृहस्पति की पुष्य भेद युति की प्रारम्भ होने वाली स्थिति बतलाने वाला चित्र)

यहां ऊपर चित्र में ग गुरु की स्थिति है। प पुष्य है पा बृहस्पति की कक्षा का उत्तर पात है। युति के आरम्भ होने की स्थिति में "म" वह क्रान्ति-वृत्तीय बिन्दु है, जो कि गुरु तथा पुष्य योगतारा के केन्द्रों में गुजरते हुए कदम्ब-प्रोत-वृत्त एवं क्रान्तिवृत्त का सम्पात है। क्योंकि δ Cancri का शर बहुत थोड़ा है एवं इस तारे को बिन्दु मात्र माना जा सकता है और म एवं ग बिन्दुओं में अन्तर थोड़ा है। अतः वलन कोण की भी विशेष समस्या नहीं। अब निम्नलिखित क्षेत्र में म पा ग, चापीय त्रिकोण में

∠म पा ग = १°—१८′
∠पा म ग = ९०°
भुज म ग = ४५″
ज्या-सूत्र अनुसार—
ज्या (पा ग) ≃ ज्या (४५″) / ज्या (१°-१८′)
∴ पा ग ≃ ०°-३५′

किञ्च-इसी प्रकार केन्द्र-भेद-युति के लिये गणित करने पर गुरु एवं पात का अन्तर ≃ ३° आता है।

यद्यपि यहां दोनों तरफ युति काल की अवधियों में थोड़ा अन्तर पड़ेगा, परन्तु स्वल्पान्तरेण हम यह कह सकते हैं, कि केन्द्र युति-बिन्दु के दोनों तरफ लगभग २°½ तुल्य अन्तर होने तक यह युति चलती रहेगी। ५° तुल्य अन्तर को पार करने में बृहस्पति की कक्षा के पात को लगभग १२०० वर्ष लगेंगे। अतः यह स्पष्ट है, कि यह युति लगभग ४५०० B.C. से लगभग ३३०० B.C. तक (अर्थात् बृहस्पति के लगभग १०० चक्करों में) होती रही है। अतः ऋग्वेद ताण्ड्य ब्राह्मण का एतत्सम्बन्धी मन्त्र "बृहस्पतिः प्रथमं...तिष्यं नक्षत्रम् अभिसम्बभूव ॥" इसी अवधि का पुराना बृहस्पति का ऐतिहासिक रिकार्ड है। इसी कारण पुष्य नक्षत्र का देवता बृहस्पति माना गया है। यह स्पष्टीकरण मैंने Dr. Hartner को भेजा है, एवं उनकी प्रतिक्रिया आमन्त्रित की है।

वि. सं. २०३४ के अधिमास-विषयक विवाद में सौर पक्षपातियों के आक्षेपों के उत्तर

विकलान्त-सूक्ष्म दृक्पक्षीय वेधोपलभ्य सूर्य ज्ञात करने के लिये सायन-पद्धति में मन्दफल के अतिरिक्त तिथि संस्कार (पृथ्वी पर चन्द्रमा के आकर्षण जन्य संस्कार) अन्य-ग्रहाकर्षण-संस्कार (जो कि अन्य ग्रहों एवं पृथ्वी के परस्पर आकर्षण के कारण जन्य छोटे छोटे ९ मुख्य संस्कारों से बना है।), एवं धूनन-संस्कार (Nutation) दिया जाता है। हमारे पञ्चाङ्ग में वर्षमान को अशुद्ध बताने वाले कुछ पण्डितों ने हमारे पञ्चाङ्ग के क्रमिक वर्षों के मेष संक्रम क्षणों के अन्तर को लेकर ही वर्षमान जानने का प्रयत्न किया है। लेकिन दृक्पक्षीय सूर्य के लिए यह पद्धति नितान्त भ्रामक है। यह पद्धति तभी ठीक बैठती है, जब केवल मन्दफल संस्कार सूर्य में दिया हो। चन्द्र-ग्रहाकर्षण संस्कारों के आवर्तकाल (Periods) भिन्न होने से मध्यम वर्षमान ज्ञानार्थ औसत बड़ी अवधि पर लेनी पड़ेगी।

सूर्य सिद्धान्तीय निरयण वर्षमान वास्तविक मान से ८½ पल अधिक है। और सूर्य सिद्धान्त का सूर्य परम मन्द फल (२°१९′) वास्तविक मान से लगभग १४′ अधिक है। यदि चन्द्राकर्षण ग्रहाकर्षणादि संस्कारों की उपेक्षा कर दी जाए, तो यह स्पष्ट है, कि

दृक्पक्षीय और सौर-पक्षीय संक्रान्तियों में लगभग ८३ पल का अन्तर प्रतिवर्ष एक रेखीय रूप से (Linearly) बढ़ता जाएगा, क्योंकि दृक्पक्षीय एवं सौर पक्षीय सूर्यों का अन्तर निम्नलिखित है:—

। दृक्पक्षीय स्पष्ट सूर्य — सौरपक्षीय स्पष्ट सूर्य ।

≃ ८".५ का—१४' ज्या (सूर्य मन्द केन्द्र)

जहां 'का' = १८०० शाक से व्यतीत समय (वर्षों में)

यहां अन्तर में प्रथम पद ८".५ का एकरेखीय रूप से वृद्धि-शील (Linearly Monotonically increasing) है। दूसरा पद—१४' ज्या (सूर्य मन्द केन्द्र) क्षय वृद्धिशील ज्या प्रकृतिक फल (Sinusoidal function) है। अत: यह स्पष्ट है, कि—अभी (शाका १९०० में) ८".५ का = १४' है। अत: कुछ संक्रान्तियां दोनों पक्षों में लगभग एक सी हैं और कुछ संक्रान्तियों में ३० घटी तक का अन्तर पड़ता है। जब ८".५ का इसका मान ६० घटी अथवा इससे अधिक ७५ घटी के लगभग हो जाएगा, तब वर्ष में कोई भी संक्रान्ति दोनों पक्षों के अनुसार एक ही दिन नहीं हो सकेगी। इसी तथ्य का उल्लेख हमने अपने लेखों में किया था। परन्तु सौरपक्षीय पण्डित वस्तुस्थिति को न समझ कर इस प्रतिपादन पर भ्रान्तिपूर्ण टीका-टिप्पणी करने लगे, कि "डा. शर्मा यह नहीं समझते कि सूर्य-साधन ज्या आदि से होता है!" अस्तु, हम अब उनके अन्य भ्रान्तिपूर्ण आक्षेपों के उत्तर देते हैं;—

दृक्पक्षानुसार निरयण वर्ष का स्पष्ट मान इसके मध्यम मान से अन्तरित होता रहता है। ज्योतिर्गणितकार ने तिथि-संस्कार, अपेरणादि संस्कार बतलाए हैं। परन्तु ग्रहाकर्षण संस्कारों को छोड़ दिया है। हमें किसी भी वर्ष का मान (उदाहरणार्थ मेष संक्रम से मेष संक्रम तक का काल) जानने के लिए इन संस्कारों के वार्षिक-परिवर्तनों का ज्ञान आवश्यक है। यदि हमें स्पष्ट वर्षमान के परमाल्प किंवा परमाधिक मूल्य ज्ञात करने हों, तो हमें इन संस्कारों के वार्षिक परिवर्तनों के परमाल्पाधिक-मान चलन कलन गणित की सहायता से ज्ञात करने होंगे। पहिले तिथि संस्कार को ही लीजिए।

तिथि संस्कार = ६".५ ज्या (चं-सू.)

= ६".५ ज्या (तिथि)

इसके उपकरण तिथि की वार्षिक गति ≃ ११ तिथि = १३२°

∴ तिथि संस्कार की वार्षिक गति

≃ ६".५ [ज्या (ति) ∼ ज्या (ति — १३२°)]

ध्यान रहे—अधिकमास वाले वर्ष में इसका मान परम नहीं होगा। अत: हमने उपकरण तिथि की वार्षिक गति = ११ ति. के लगभग यहां ली है। इस व्यञ्जक का काल (= का) के सापेक्ष अवकलन (Differentiation) करके परम-मान साधनार्थ शून्य तुल्य करने पर,

$$\frac{\text{ता (ति. स. वा. ग.)}}{\text{ता का}} = 0$$

इससे एक त्रिकोणमितीय फलनों में समीकरण (Trascendental equation) प्राप्त होता है। इसे साधित करने पर ज्ञात होता है, कि तिथि संस्कार की अधिकतम वार्षिक गति ≃ ±११' (११ विकला) है।

ग्रहाकर्षण संस्कार के मुख्य ९ घटक निम्नलिखित हैं;—

संस्कार घटक		उपकरण की वार्षिक गति	
प्रथम	(शुक्राकर्षण)	(पृथ्वी-शुक्र)	— २२५°
द्वितीय	(गुरु-आकर्षण)	(गुरु-पृथ्वी)	— ३३०°
तृतीय		(८ × प्र.उ. + ५पृ.	०°.७
चतुर्थ		(२ × प्र.उ. + पृ.)	— ९०°
पंचम	(भौम संस्कार)	(मंगल-पृथ्वी)	— १६१°
षष्ठ		(प्र.उ. + मंगल)	+ २३°
सप्तम		(प्र.उ + च.उ.)	— ३१५°
अष्टम		(स.उ. + पृथ्वी)	+ ४५°
नवम		उपकरण १, (द्वि.उ.)	— ३३०°
		उपकरण २, (गुरु)	+ ३०°

इन संस्कारों के व्यञ्जकों से अवकलन द्वारा विस्तृत गणित करने पर यह स्पष्ट हो जाता है, कि ग्रहाकर्षण संस्कार का परममान +२३" एवं —१७" हो सकता है। वार्षिक उपकरण-गति लेकर इन घटकों के परमाल्प वार्षिक गति-मान साधित करने पर ज्ञात होता है, कि ग्रहाकर्षण के कारण वर्षमान में लगभग +१४प. एवं —१२ प. का अन्तर पड़ सकता है। ध्यान रहे,—अपेरण संस्कार तो ≈ —२०" के तुल्य स्थिर है। अत: इससे वर्षमान में अन्तर नहीं पड़ता है। परन्तु धूनन संस्कार की वार्षिक गति (जो कि ४" के तुल्य हो जाती है) के कारण सायन वर्षमान पर प्रभाव पड़ता है। परन्तु कुछ वर्तमान पञ्चाङ्गकार अपने अयनांशों में धूनन संस्कार नहीं देते। अत: उनकी गणितसे वर्षमान में यह अन्तर भी आ जाएगा। यद्यपि निरयण-गणित में धूनन-संस्कृत अयनांश लेने पर यह प्रभाव हीन है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है, कि-तिथि संस्कार ग्रहाकर्षणादि के कारण स्पष्ट निरयण वर्षमान में स्वल्पान्तरेण ± २५पल तक का अन्तर पड़ सकता है। इसी अन्तरके कारण इन पण्डितों को हमारे पञ्चाङ्ग के वर्षमान के विषय में भ्रान्ति हुई है। आशा है, विद्वज्जन एवं साधारण जनता इन भ्रामक आक्षेपों से भ्रान्त नहीं होंगे।

अब आइये, प्रायोगिक दृष्टि से (Experimental basis पर) हम विचार करें, कि किस पक्ष का वर्षमान शुद्ध है। नव्य ज्योतिषज्ञों के २०० — ३०० वर्षों के रिकार्ड से दृक्पक्षीय निरयण वर्षमान ही शुद्ध उतरता है। प्रो. पिक्कार्ड के प्रयोगों में से एक प्रयोग में सूर्य एवं प्रश्वा (Procyon) तारा का विषुवांश-अन्तर क्षणविशेष के लिये ज्ञात करके ७६ वर्ष बाद पुन: क्षण विशेष के लिए विषुवांशान्तर मापा गया। इससे दृक्पक्षीय निरयण वर्षमान प्राप्त होता है। इसका मान सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान से ८॥ पल कम है। यह आकर्षण सिद्धान्त आदि से सिद्ध किया जा सकता है, कि इसमें अशुद्धि १ पल के शतांश से भी कम है।

बड़े खेद से लिखना पड़ रहा है, कि सूर्य-सिद्धान्त के वर्षमान को शुद्ध मान कर उससे ही चिपकने वाले पण्डित पञ्चाङ्गकारों को यह ध्यान भी नहीं, कि आज तक के भारतीय ज्योतिष साहित्य (भास्कराचार्य, गणेश दैवज्ञ ... आदि के साहित्य) में दी गई वर्षमान-साधन पद्धतियें नितांत भ्रामक एवं सैद्धान्तिक दृष्टि से गलत हैं। हमें यह लिखते हुए दुख होता है, कि भास्कराचार्य आदि सभी आचार्यों ने निरयण वर्षमान साधन की

(७)

जो पद्धतियो दी है, वे वस्तुत निरयण वर्षमान की नहीं, अपितु सायन-वर्षमान की हैं।

श्री भास्कराचार्य ने क्षितिज पर वर्ष भर वेध करने के लिये लिखा है। क्षैतिज-वेध से तो सायन वर्षमान आएगा; न कि निरयण-वर्षमान। निरयण-वर्षमान ज्ञात करने के लिए तो याम्योत्तर लंघन के समय वेध करना होगा, अथवा किसी एक तारे से स्थिर अन्तर पर वेध करते रहना पड़ेगा। किसी भी आचार्य ने स्थिर बिन्दु के सापेक्ष वर्षमान ज्ञात करने की विधि नहीं दी। वस्तुस्थिति तो यह है, कि श्री भास्कराचार्य जी ने स्वयं वेध नहीं किया और वह वेध-पद्धति देकर पिछले आचार्यों के ही अंक दे दिये! यदि वेध किया भी होगा तो भी यह स्पष्ट सिद्ध है, कि १ मीटर की त्रिज्या वाले वृत्त से क्षैतिज-वेध करने पर उत्तरायण-बिन्दु को क्षितिज पर अनुपात से निश्चय सम्भव न होने के कारण अथवा मापने में १ मिलीमीटर की अशुद्धि आने से वर्षमान में काफी पलों का अन्तर आ जाता है। इस प्रकार उनके अंक वस्तुतः सायन वर्षमान के ही हैं; परन्तु अशुद्धि अधिक होने से वह निरयण मान के लगभग आ गया। उस समय सायन एवं निरयण वर्षमान में अन्तर भी उन्हें ध्यान में था या नहीं? यह भी विचारणीय विषय है।

सूर्यसिद्धान्त आर्यभट आदि से पूर्व तो जैन ग्रन्थों में "विराज" एक दिन का मिलता है, जो कि ऐतरेयब्राह्मण में पांच दिन का है, और बाद में तीन दिन का माना गया और बाद में एक दिन का। "विराज" दिन वे दिन हैं,—जिनमे वह सूर्य उत्तरायण-दक्षिणायन बिन्दु पर स्थिर विराजमान प्रतीत होता है। इससे स्पष्ट है, कि हमारे आचार्यों को उत्तरायण दक्षिणायन का निर्णय एक दिन तक हुआ था। सूर्यक्रान्ति के स्थिर होने के क्षण का ज्ञान बाद में सैद्धान्तिक विकास होने पर हुआ। वेदाङ्ग ज्योतिष में तो वर्षमान ३६६ दिन का था बाद में वर्षमान में संशोधन होता रहा। सौर पक्षीय पञ्चाङ्ग-कार आर्ष वेदाङ्ग ज्योतिष का वर्षमान क्यों नहीं ले लेते? सूर्य सिद्धान्त तो अपने आपमें अनार्ष है, इस तथ्य का विश्लेषण हम आगे करेंगे।

ध्यान रहे—चन्द्रमा के च्युति, तिथि (Evection, Variation) तथा वार्षिक संस्कार (Annual Variation) आदि की उपेक्षा नहीं की जा सकती। सूर्य सिद्धान्तानुसार केवल मन्दफल-संस्कृत चन्द्रमा से नक्षत्र-युति वेध-सिद्ध नहीं प्राप्त हो सकती। च्युति-संस्कार का ज्ञान श्री मुञ्जाल (१०वीं शती) को हो गया था। श्री भास्कराचार्य ने बीजोपनय ग्रन्थ में पूर्ण मन्दफल ६°—१५' ज्ञात कर लिया था। परन्तु दुर्भाग्यवश उनकी वेध स्थितियों में च्युति-संस्कार शून्य था। श्री मुञ्जाल के च्युति-संस्कार की उपपत्ति नहीं मिली थी, अतः श्री भास्कराचार्य भी भ्रान्त हो गए और उन्होंने करण कुतूहल ग्रन्थ में बीजोपनय को मान्यता नहीं दी। इन संस्कारों की यदि उपेक्षा कर दी जाए तो ग्रहणों में अशुद्धि रहेगी ही, ऐसा सिद्धान्त-वेत्ता समझते ही हैं। इन सभी सैद्धान्तिक रहस्यों का विवेचन हमने अपनी अप्रकाशित पुस्तक "शास्त्रीय पञ्चाङ्ग-मीमांसा" में किया है और इस विषय पर गत अगस्त १९७७ ई. में ही मुझे ऐडिनबर्ग (U.K.) में UNESCO. की सहायता से आयोजित विद्वत्सभा में भाषण देने का भी अवसर मिला। वहां यह प्रतिपादन सैद्धान्तिक-दृष्ट्या किया गया। एतद्विषयक गणितीय लेख प्रकाशित हो रहे हैं। सूर्य सिद्धान्त में चन्द्रमा का वार्षिक संस्कार सूर्य में चला गया,-यह हम पहिले ही स्पष्ट कर चुके हैं। आजकल सभी संस्कारों की सैद्धान्तिक उपपत्ति आकर्षण सिद्धान्त के आधार पर ज्ञात है, अतः अब हमें इनको मान्यता देने में संकोच नहीं करना चाहिए। कुछ राजस्थानीय पण्डितों का कहना है, कि-श्री भास्कराचार्य जी को आकर्षण सिद्धान्त का पता था। आकर्षण सिद्धान्त का ज्ञान आचार्यों को केवल Qualitative रूप में था, गणितीय रूप में नहीं। किसी भी विद्वान् को श्रेय औचित्य से अधिक नहीं दिया जा सकता। उस समय के अनुसार आचार्यों को श्रेय बहुत अधिक है। परन्तु यदि आप सीमा से आगे जाएंगे तो वस्तुस्थिति का व्यपोहन तो होगा ही, साथ में नवीन गणितज्ञों द्वारा वस्तुस्थिति ज्ञात होने पर आप लोग उन्हें श्रेय के स्थान पर व्यर्थ में आलोचना का विषय बनाएंगे, जो कि हमारे लिये वस्तुतः असह्य होगा। वे पण्डित स्वयं आकर्षण-सिद्धान्त के ग्रन्थ पढ़ें,—वस्तुतः इसके लिये उन्हें उच्चतम गणित के अभ्यास के साथ साथ बड़ी पृष्ठ भूमि तैयार करनी होगी। ऐसा करने पर वस्तुस्थिति निश्चय ही स्वतः स्पष्ट हो जाएगी।

अयनांश के बारे भी पण्डित लोग हमेशा विवाद उपस्थित करते हैं,—वस्तुस्थिति तो यह है, कि सूर्यसिद्धान्त के नक्षत्रों के ध्रुवाभिमुख भोगशरों से एक अयनांश का निर्णय सम्भव ही नहीं-उसका कारण सूर्य सिद्धान्त के इन अंकों में अशुद्धि ही है न कि किसी अन्य का दोष। अयनांश सम्मति का विषय है। वस्तुत चित्रा पक्ष स्वीकार करने में किसी को भी वैमत्य नहीं होना चाहिये। छायार्क सूर्यसिद्धान्त-गणितागतार्क के अन्तर से प्राप्त अयनांशों को मान्यता देना निरयण पद्धति के साथ अन्याय है। ऐसा करने से नक्षत्रों का सम्बन्ध टूटता जाएगा। फिर यह निरयण-गणित किस काम की? सूर्य-सिद्धान्त से अयनांश के लिए तो Method of least Squares ही लगाया जा सकता है। जिससे परिणाम शुद्धतम आ सकते हैं-परन्तु वह केवल सैद्धान्तिक व्यायाम मात्र ही होगा। ऐसी स्थिति में अयनांश सम्मति मात्र का विषय है—पण्डित ही सहमत न हों, तो इस में किसी का क्या दोष? व्यर्थ के विवाद से कुछ भी निर्णय नहीं हो सकता। अशुद्ध वर्षमान एवं अशुद्ध अयनगति लेकर गणित करना स्थिर-बिन्दु-सापेक्ष निरयण-गणित का गला घोंटना ही है।

आश्चर्य है – ये पण्डित सूर्य सिद्धान्त को लाखों वर्ष पुराना मानते हैं। "अमुक गणित का अहर्गण यहां से प्रारम्भ होता है, अतः अमुक ग्रन्थ इतना पुराना है"-एक उपहास्य तर्क है। जूलियन वर्ष का प्रारम्भ कलियुग से पूर्व है; – इतने मात्र से जुलियन वर्ष की प्राचीनता सिद्ध नहीं होती। ये सैद्धान्तिक वर्ष गणित सौकर्यार्थ ध्रुवक क्षेपक देने के लिए किसी प्राचीन अथवा प्राचीनतर तारीख से प्रारम्भ किये जाते हैं;-यह एक गणितीय समन्वय

(Adjustment) मात्र है । ध्यान रहे, श्री लगध का वेदाङ्ग ज्योतिष लगभग १४०० B.C पुराना है और बाद के आर्यभट एवं सूर्यसिद्धान्त (पञ्च सिद्धान्तिका में प्राप्त) से पूर्व का युग भारतीय ज्योतिष शास्त्र का अन्धकारमय युग है, इस काल के प्राकृत ग्रन्थों पर शोध करवाने का सौभाग्य मुझे मिला और अभी इसी वर्ष मेरे छात्र को इस विषय पर Ph.D.की उपाधि भी मिली है । इस कार्य को देश-विदेशों से श्लाघा तथा श्रेय मिला है । इस शोध-कार्य के परिणामों से अभी तक हम निर्णय नहीं कर पाए हैं, कि सूर्य सिद्धान्त के मूलाङ्कों का स्रोत भारत के कौन से ग्रन्थ रहे हैं । अभी तक तो यही स्पष्ट है, कि सूर्य सिद्धान्त के नक्षत्र-योग-तारा ध्रुवाङ्क Appolonius of Perga (लगभग ४०० B.C.) के अंकों की ही नकल है, चीनियों का दावा है, कि ये अंक उनके अपने है । मन्द-वृत्त परिधियों के स्थिरांकों (Epicyclic Constants) का भी हमारे यहां से उद्गम अभी नहीं मिल सका। और चन्द्रमा के शर का वेदाङ्ग-ज्योतिष के बक्त पता नहीं चला था । "इसका उद्गम बैबीलोन में हुआ था" -ऐसा ज्योतिषेतिहासज्ञ पाश्चात्य-विद्वान् मानते है । परन्तु इसका उद्गम भारत में ही हुआ है:-हमें यह सिद्ध करने का श्रेय प्राप्त हुआ है । अस्तु, अभी भद्रबाहु संहिता पैतामह सिद्धान्त आदि ग्रन्थों पर कार्य चल रहा है । अभी तक ऐसी स्थिति में हमारे पास कोई ठोस प्रमाण नहीं है; — कि इन अंकों का उद्गम कैसे हुआ और किस प्रकार के वेधों से किन स्थितियों में हुआ ? इन सभी बातों का उत्तर देने के लिये हमें मूल स्रोत ग्रन्थ ढूंढने होंगे । सारी उमर इसी तरह भरसक प्रयत्न करते रहना पड़ेगा । अमरिका में बैबीलोन-ज्योतिष के इतिहास पर ८० वर्षों से काम चल रहा है । तभी वे इतनी गारन्टी से दावे करते हैं । परन्तु खेद है, हमारे यहां बिना आधार के ही श्लोक मात्र के उद्धरण देकर बात सिद्ध करने का प्रयत्न किया जाता है । "अत्र गणित स्कन्धे उपपत्ति मानेबागम प्रमाणम्" आज कल के गणितज्ञ उपपत्ति के बिना किसी तर्क को मान्यता नहीं देते । परन्तु पण्डित लोग श्लोकों के उद्धरणमात्र देकर प्रशंसा करने को ही विद्वत्ता की पराकाष्ठा समझते है । अस्तु, सूर्य सिद्धान्त आर्ष नहीं है; — इसमें संशोधन होते रहे है । वर्तमान सूर्य सिद्धान्त के ग्रहों के भोगांशों में अशुद्धि १०वीं शती (लगभग ९७५ A.D.) में शून्य तुल्य थी परन्तु आगे एवं पीछे बढ़ती जाती है । शनि, गुरु, एवं शुक्र के लिये कुछ अंक नीचे दिए जा रहे हैं ।

अशुद्धि: सूक्ष्म मध्यम ग्रह—सू. सि. मध्यम ग्रह:

वर्ष	शनि में अशुद्धि	गुरु में अशुद्धि	शुक्र में अशुद्धि
३०८४ वि. पू.	−२०°.७३	+१५°.९१	+३३.०३
१०८८ वि. पू.	−१०.७८	+७.८६	+१६.७२
४८ वि. पू.	−५.७५	+३.२८	+८.५७
९५७ वि.	−०.७६	−०.९८	+०.८२
१९५७ वि.	+४.२३	−५.२१	−७.७३

अतः यह स्पष्ट है कि सूर्य सिद्धान्त का वर्तमान रूप दसवीं शताब्दी का है । संशोधन समय समय पर होते रहे हैं । आर्यभट सिद्धान्त आदि में संशोधन हुए — अब आज कल आर्य-सिद्धान्तीय मेष संक्रान्ति में और सूर्य-सिद्धान्तीय मेष संक्रान्ति में लगभग ७ घटी का अन्तर हो गया है । अतः यह स्पष्ट है, कि हमारे आचार्य संशोधन को मान्यता देते रहे है और जब तक उपपत्ति नहीं मिली, तभी तक उन्होंने संशोधन का निषेध किया । यह एक वैज्ञानिक दृष्टि कोण है, कि निरुपपत्तिक संस्कार देने में अधिक अशुद्धि की आशंका बन जाती है । हमारे आचार्य इन संस्कारों की ग्रहणादि में परीक्षा करते रहे) अन्त में उपपत्ति मिलने पर ही मान्यता उचित थी । आजकल ये संस्कार सोपपत्तिक रूपेण ज्ञात हैं,— अतः मान्य होने चाहिए । अभी तक के प्राप्त प्रमाणों से सूर्य सिद्धान्तको भारतीय भी सिद्ध नहीं किया जा सकता । आर्ष तो वेदाङ्ग ज्योतिष है । ये आर्ष गणित से प्रेम रखने वाले दृक्पक्ष विरोधी पण्डित उसके अनुसार अधिमास निर्णय क्यों नहीं करते? पांच वर्ष के पञ्चाङ्ग से ही काम चला लें । इसके अनुसार तो आषाढ़ भी अधिक नहीं आता । वास्तविक युक्ति को न समझते हुए राजस्थान के एक दो पण्डितों का इतनी कटु असभ्य एवं अशिष्ट भाषा में अपने पक्ष को निरुपपत्तिकत्वयैव सिद्ध करने का दुःसाहस किया है । ये कटु लिखने के अभ्यासी पण्डित तर्क हीन बातों से ही सूर्य सिद्धान्त को आर्ष सिद्ध करना चाहते हैं । इन आर्ष गणित के प्रेमी विद्वानों को सभा बुला कर अनार्ष सूर्यसिद्धान्त का बहिष्कार करके मूल रूपेण आर्ष वेदाङ्ग ज्योतिष में जुट जाना चाहिए । न उन्हें पुनः पुनः गणित करने का कष्ट होगा । पांच वर्ष के पञ्चाङ्ग से ही काम चलता रहेगा ।

अशास्त्रीय ऊटपटांग आक्षेप प्रपत्र, परिपत्रों में लिखकर समय बर्बाद करना एवं कागज खराब करने में कोई तुक नहीं । सम्भव होंगे तो तुरन्त बाङ्-मुद्रण हो जाएगा हमारा स्थायी आह्वान इसी पञ्चाङ्ग में प्रस्तुत है ।

—: "श्री मार्त्तण्ड पंचांग" पर विद्वानों की अमूल्य सम्मतियां :—

(आपरितोषाद् विदुषां न मन्ये साधु प्रयोग-विज्ञानम्)

(श्री मार्तण्ड पंचांग पर अनुरक्त असंख्य सम्मान्य विद्वानों की अमूल्य सम्मतियां हमें विगत आधी शताब्दी से प्रतिवर्ष उपलब्ध हो रही हैं, जिन्हें हम विशेष सम्मान से अपने पास सुरक्षित रखते हैं। इस स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर तो इन गुणग्राही अमत्सर विद्वान् पाठकों का हमारे प्रति अनुरागातिशय उनकी प्रशंसामय सम्मतियों की बाढ़ के रूप में प्रकट हुआ है, जिससे अपने परिश्रम की उपयोगिता के बारे में जानकर हमारे हृदय में भारी आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ है। हमारे इस तुच्छ प्रयत्न से महाविद्वानों के अब्धिकल्प हृदय भी उत्तरङ्गित हो उठे हैं—यह वस्तुतः हमारे हर्ष और गर्व का विषय है।

—सम्पादक मण्डल

गवर्नमेण्ट संस्कृत कालेज कलकत्ता के प्राध्यापक, साहित्य-न्याय-व्याकरण-वेदान्ताचार्य, सांख्य-वेदान्त-न्याय-मीमांसा-तर्क तीर्थ, महापण्डित श्री सीताराम शास्त्री जी लिखते हैं—

श्रीमान् प्रियव्रत जी ! सप्रेम हरिस्मरण। सं. २०२२ वि. का "श्री मार्त्तण्ड पंचांग" मिला, अमृतसर के शास्त्रार्थ का प्रकाशित विवरण भी। प्राच्य-नव्य ज्योतिष के मर्मज्ञ आप दोनों सहोदरों द्वारा सम्पादित यह पंचांग निःसन्देह अपनी ही कोटि का है। अमृतसर के शास्त्रार्थ से लौटने के बाद बहुत दिनों से आप को पत्र देने की सोच रहा था। **अमृतसर के शास्त्रार्थ में आपकी वाक्पटुता, विनम्र स्वभाव, तीक्ष्ण तर्क, प्राच्य और पाश्चात्य ज्योतिष में अगाध पाण्डित्य तथा सबसे अधिक तत्काल उत्तर देने की विलक्षण शक्ति से मुझे यथार्थतः भारी प्रसन्नता हुई।** ...आप दोनों भाईयों से मुझे भविष्य में भी बहुत आशाएं हैं।.........

भवदीय

सीता राम शर्मा

ता. २-८-१९६५ — १३० चित्तरंजन एवेन्यू

कलकत्ता—७

X X X

श्री राधाकृष्ण संस्कृत कालेज खुर्जा (उ. प्र.) के भूतपूर्व-ज्योतिष-विभागाध्यक्ष 'विज्ञान ज्योति' मासिक पत्रिका के सम्पादक-सुप्रसिद्ध ज्योर्विद्, सिद्धान्त-फलित-ज्योतिष के भारत प्रसिद्ध महाविद्वान् पं. विशुद्धानन्द गौड़ ज्योतिषाचार्य अपनी पत्रिका में लिखते हैं—

श्री मुकुन्द वल्लभ जी मिश्र भारतवर्ष के विख्यात ज्योतिषाचार्य हैं, जिन्होंने श्री मार्त्तण्ड पचांग की आधारशिला रखी है। श्री मिश्र जी के परम योग्य, तीन पुत्र ज्योतिष शास्त्र के पारंगत विद्वान् श्री प्रियव्रत, श्री शक्तिधर तथा श्री इन्दुशेखर इस समय इस पञ्चांग का सम्पादन कर रहे हैं। ये तीनों ही भाई न केवल भारतीय ज्योतिष-शास्त्र के ही विद्वान् हैं, अपितु संस्कृत-साहित्य एवं अर्वाचीन ज्योतिष तथा गणित शास्त्र के भी ये विशेषज्ञ हैं। छोटी ही अवस्था और थोड़े ही काल में विभिन्न विषयों में ऊंची योग्यता प्राप्त करके प्रतिष्ठित भी हो जाना इन तीनों भाइयों के वैदुष्य की एक विशेषता है।.........

भारत के प्रचलित पंचांगों में मैं वास्तव में श्री मार्तण्ड पंचांग को सब से उत्तम पंचांग मानता हूं।

विशुद्धानन्द गौड़ ज्योतिषाचार्य

ता. ५-१२-७५ — विज्ञान ज्योति कार्यालय, खुरजा

X X X

Maharshi Institute of Creative Intelligence के President—

—आत्मज्ञ ब्रह्मचारी श्री सत्यानन्द जी महाराज ने ऋषिकेश से लिखा है—

प्रिय श्री शक्तिधर जी ! सस्नेह जय गुरुदेव। सपरिवार आप सबको बधाई है—आप "श्री मार्त्तण्ड पचांग" का स्वर्ण जयन्ती अंक प्रकाशित करने जा रहे हैं। 'श्री मार्त्तण्ड पचांग का ज्योतिष क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है।........ मैं तो प्रचलित **वर्ष की प्रति सदैव अपने पास रखता हूं,** चाहे भारत में रहूं या विदेश में। मुहूर्त, लग्न, तिथ्यादि सम्बन्धी परामर्श के लिए 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग को ही आधार मानने के लिए मेरा सभी को सुझाव है।

ब्रह्मचारी सत्यानन्द

शंकराचार्य नगर

ता. २८-११-७५ — ऋषिकेश (उ.प्र.)

X X X

भारत के राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित ज्योतिष-शास्त्र एवं गणित-शास्त्र के प्रखर विद्वान् D.N.R. College, Bhimavaran के भूतपूर्व प्रिंसिपल—डा. डी. अर्कसोमयाजी M.A., Ph.D. (Math.) का अभिमत—

श्रीमतां प्रियव्रत शर्मणां सविधे नमांसि भूयांसि । अयि महोदया: ! भवद्भिः सादरं प्रेषितं मार्त्तण्ड नामकं पंचागं प्राप्तम् । सत्यम्—श्री मुकुन्द वल्लभ शर्माण:, भवन्त:, श्री शक्तिधर शर्माण:, श्री इन्दुशेखर शर्माण ये चान्येपि अस्य पंचांगस्य लेखने कार्यकर्त्तारस्ते सर्वेऽपि नून ज्योतिषे कृत-भूरिश्रमा: । भवदीयं पंचागमेतत् मां सत्यं अमोदयत् । एतद् दृष्ट्वा काचित् भावना मम मनसि आयाता । किम्-इत्युक्ते-यथा डा. सम्पूर्णानन्द महोदया: ज्योतिष-शास्त्रस्य उज्जीवनाय महान्तं प्रयत्नं चक्रु:, तद्वदेव अद्यत्वे खिलीभवदिदं शास्त्र पुन: कथं वा उद्ध्रियेत—इति आलोचना मामावृणोति । भवादृशा: पण्डित-प्रकाण्डा: तत्र प्रयत्नं कर्तुं प्रभवन्ति—इति मे मति: ।.. ......इदमपि पुनर्वक्तुमुत्सहे यत्-अद्यत्वे क्रियमाणानां पंचांगानां मध्ये भवदीयमेव पंचांगं शास्त्रीयं मूर्धन्यं च-इत्युच्यमाने न काप्यतिशयोक्ति: ।

ता २२-१-७६ घ. अ. सो. [श्री अभमाचार्य कला मन्दिर K.T. Road तिरुपति

X X X

संस्कृत-हिन्दी के सिद्धहस्त-कवि, ज्योतिष-शास्त्र के मर्मज्ञ, ऋषि आश्रम महाविद्यालय के प्रतिष्ठापक-आचार्य, एवं कांगड़ा क्षेत्र के सुप्रतिष्ठित समाज-सेवक युवक विद्वान् पं. श्री पद्मनाभ त्रिवेदी जी का मत—

पचांगं लोकमान्यं सविविधविषयं ज्ञान विज्ञान सद्म ।
बह्वीभि: सारिणीभि: यदनुपममथो पावनत्वे मुराम्भ: ।
त्रित्वं वैशिष्ट्यमेतद् भजदपि सततं न द्वितीयं स्वभावे ।
दीप्तम्मार्त्तण्ड संज्ञं जगति विजयता मुज्ज्वल ज्योतिषेदम् ।।
केनास्तुल्यो मुकुन्द: परिहरति दया यस्य दोषा न शान्तिम् ।
रक्षार्थं यस्य शक्तिस्तिमिर लयमुदे काम्यतेऽथेन्दु कान्ति: ।
हर्षोत्कर्षं प्रतन्वन् प्रियव्रत ललितो नित्य नून्न प्रभाव: ।
प्राज्ञप्रेम्ण: सुपात्रं जयति यदुदय: काम्य सौम्य स्वभाव: ।।
मार्त्तण्ड ज्योतिरस्ति स्वत: प्रमाण दिशं दिशन् दीप्तमती समानम् ।
वैदुष्यशंसां विदधामिजोषं व्याख्यातुमूक: कथमेव तोषम् ।।
कृते कृते कृतज्ञस्ते पद्मनाभस्त्रिवेद्यहम् ।
ईश्वरं प्रार्थये मित्र ! भवत्कायं निरामयम् ।।

पद्मनाभ त्रिवेदी, ऋषि आश्रम
कांगड़ा

आश्विन शुक्ल प्रतिपदा सं. २०३३,

X X X

'ज्योतिस्तत्व' आदि नितान्त महत्वपूर्ण विशाल ग्रन्थ समूह की प्रौढ़ रचनाओं से त्रिस्कन्ध ज्योतिषशास्त्र के साहित्य को सुसमृद्ध करने वाले, वर्तमान युग के वराह-मिहिर, स्वनामधन्य श्रद्धेय श्री मुकुन्द दैवज्ञ जी का शुभाशीर्वाद :—

प्रिय चि. इन्दुशेखर जी ! आशीर्वाद । आशा है—आप के पूज्य पिता जी स्वस्थ होंगे । उन्हें मेरा प्रणाम कहिए । .... मुझे विशेष प्रसन्नता है कि आप प्रियव्रत आदि तीनों भाई अपने पूज्य पिता जी के निर्मित पथ पर चल कर देश तथा जाति को गौरवान्वित कर रहे हैं ।......... मार्त्तण्ड पंचांग ने दृग्गणित द्वारा धर्मप्रिय जनता का पथ प्रदर्शन किया है, इसके लिए समस्त देश आपका आभारी रहेगा ।

मार्त्तण्डाभिध पंचांगं गणितं चोत्तमोत्तमम् ।
भूयादनेन देशस्य सेवा धर्मस्य कर्मणि ।।

मुकुन्द शर्मा
गढ़वाल

ता. २०-३-७६

X X X

प्राच्य एवं नव्य ज्योतिष के विगज विद्वान्, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के ज्योतिष विभाग के अध्यक्ष डा. मुरारि लाल शर्मा, पी.एच.डी. का मत—

श्री मार्त्तण्ड पंचांग में पंचांगीय विषयों के अतिरिक्त अनेक अपेक्षित गणित-फलित सम्बन्धी विषयों का संकलन रहता है, जिससे साधारण व्यक्ति भी अच्छा ज्योतिषी बन सकता है ।.........यह वस्तुत: उत्तर-भारत का सर्वश्रेष्ठ पंचांग है । इसके आद्य सम्पादक विद्वद्वरेण्य पं. मुकुन्दवल्लभ जी तथा उनके सुयोग्य पुत्र, जो इसका सम्पादन कर रहे हैं, वस्तुत: धन्यवाद के पात्र हैं ।

डा. मुरारि लाल शर्मा
वाराणसी

ता. १६-४-७६

X X X

भारतीय शासन-सेवा के सेवा-निवृत्त विद्वान् अधिकारी, सतत स्वाध्याय निरत, श्री आर. ऐन. हावा साहेब I.A.S. (Retd) अजमेर से श्री मार्त्तण्ड पंचांग के विषय में यह लिखते हैं—

आदरणीय प्रिय श्री प्रियव्रत जी ! सादर नमस्कार । पंचांग के क्षेत्र में श्री मार्त्तण्ड पंचांग ने उत्तरी भारत में एक आदर्श मानदण्ड स्थापित किया है । इसके लिए ज्योतिष प्रेमी जनता आपकी सदा आभारी रहेगी । .... आपात कालीन स्थिति की पाबन्दियों की सीमा में रहते हुए भी आपने इस पंचांग में भविष्य सम्बन्धी जो दिग्दर्शन कराया है, वह प्रशंसनीय है । अब प्रतिदिन घटने वाली घटनाएं उसे प्रमाणित करती जा रही हैं । अमेरिका, रूस, अफ्रीका, चीन, जापान, पाकिस्तान, बंगला देश, ग्रेट ब्रिटेन, अरब गणराज्य आदि से सम्बन्धित आपकी भविष्यवाणियां काफी सही प्रमाणित हो रही हैं ।

कई दृष्टिकोण से तो उनको चमत्कारक कहा जा सकता है। दृग्गणितीय शुद्ध पद्धति की सफल स्थापना से आपके परम पूज्य पिता श्री पं. मुकुन्द वल्लभ ज्योतिषाचार्य एवं आपके योग्य अनुज डाक्टर शक्तिधर शर्मा सहित आपका योगदान चिरस्मरणीय रहेगा...

आर ऐन हावा

२२-७-७७ माडर्न लाज जयपुर रोड

अजमेर

X X X

भारतीय और पाश्चात्य ज्योतिष पर प्रशंसनीय अधिकार रखने वाले, पंचांग संशोधन सम्बन्धी अनेक विचारोत्तेजक मौलिक लेखों के विश्रुत लेखक Commodore (R) श्री ऐस. के. चटर्जी लिखते हैं—

It is a matter of great pleasure that Shree Martanda Panchangam is Celebrating its Golden Jubilee Year of its publication this year............ Some of our present-day Compilers of Panchangs have become aware of the necessity to publish Panchangs based on Correct observed astronomical value and it is gratifying to note that "Shree Martanda Panchangam" which has been serving the people of North-West India for the last 50 Years and is now happily Celebrating the Golden Jubilee, is one of the few pioneers in the field. It is supplying valuable information on astronomical phenomena to public, which are correct as per modern observed values and per our shastras and it deserves praise for doing so.

I wish the compilers of 'Shree Martanda Panchangam, a very happy Golden Jubilee Year, and I hope that they will not hasitate to carry out correction to the Panchang as and when new facts come to notice.

ऐस के चटर्जी

A—9/1 वसन्त विहार

नई दिल्ली

X X X

व्याकरण-साहित्य एवं षड्दर्शन के उद्भट विद्वान् विग्रहधारी-वैदुष्य, श्रद्धेय [illegible] साहित्याचार्य का आशीर्वाद—

श्री मार्त्तण्ड पंचांग' ने ज्योतिष की जो सर्वाङ्गपूर्ण सेवा की है, उसने यह सर्वथा प्रमाणित कर दिया है—कि यह पंचांग वस्तुत: मार्त्तण्ड ही है। वर्तमान में 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर मैं यह अनुभव करता हूं, कि इसके द्वारा जो भारतीय ज्योतिर्विज्ञान की सेवा हुई है, वह हम लोगों के लिए गर्व की वस्तु है। ज्योतिर्विज्ञान का यह महिमा-प्राप्त-ज्योतिष्पुंज भविष्य में विश्व को आलोकित करे, ताकि यह हमारी विद्या भारत के लिए और अधिक गौरव की वस्तु बने।

शुभ कामनाओं के साथ—

ता. २८-४-७६ शालग्राम

X X X

गवर्नमेण्ट संस्कृत कालेज सोलन के अनुभवी प्राध्यापक, व्याकरण पुराणादि के लब्धकीर्ति विद्वान्, प्रवचन-वाचस्पति पं. श्री शुकदेव जी व्याकरणाचार्य का अभिमत—

........हम यदि विगत अर्धशती से श्री मार्त्तण्ड पंचांग द्वारा की गई लोक सेवा का आकलन करें तो इस पंचांग के लिए साधनारत परिवार के वैदुष्य, तप, त्याग और लक्ष्यार्पित जीवन के आगे स्वत: ही श्रद्धावनत हो जाते हैं।....... मैं श्री मार्त्तण्ड पंचांग के साधक तपस्वी एवं प्रखर पाण्डित्य पूर्ण सदस्यों के लिए अनन्त-अनन्त मंगलमय प्रार्थनाएं परमेश्वर से करता हूं, ताकि भारतीय ज्योतिष का यह लोक शिक्षक पत्र अपने ज्ञान वर्धक विषयों से विश्व में भारतीय ज्योतिर्विज्ञान का एक सर्वोत्तम और मुखर अग्रदूत बना रहे।

शुकदेव शर्मा आचार्य

ता. २८-४-७६ राजकीय संस्कृत महाविद्यालय

सोलन (हि. प्र.)

X X X

गवर्नमेण्ट कालेज कुल्लू (हि.प्र.) के प्राध्यापक, संस्कृत के प्रतिभावान् रस सिद्ध आशुकवि, षड्दर्शन के परिपक्वमति युवक विद्वान् प्रो. केशव शर्मा दर्शनाचार्य, M.A., M. Phil (स्वर्ण पदक भूषित) लिखते हैं—

इस यशस्वी पंचांग की स्वर्ण जयन्ती के शुभ अवसर पर आपको शतश: बधाइयां प्रस्तुत हैं। इसके माध्यम से आपने सुदूर अतीत की भारतीय ज्योतिष विद्या की धारा को नवयुग के क्रान्तिकारी वैज्ञानिक प्रवाह के साथ परख, ढाल एवं जोड़कर एक आश्चर्यकर ऐतिहासिक कार्य किया है। वर्तमान वैज्ञानिक चाकचक्य में आपने इस पुरातन महान् विज्ञान को न केवल सुरक्षित ही रखा है, अपितु आर्ष मनीषा के गहनतम चमत्कार से नूतन विज्ञानवेत्ताओं को चकाचौंध कर एक चुनौती भी दी है। प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर नई-नई खोजों से जटिलतम विषयों को सरलातिसरल प्रकार से सर्व जनगम्य बनाकर तो आपने ऐसा विशिष्ट उपकार किया है, कि—इस विद्या के लक्षश: मादृश जिज्ञासु आपको कोटिश: श्रद्धा विजृम्भित मुसाधुवाद देते हैं।

ता. ३०-४-७६ प्रो. केशव शर्मा

कुल्लू (हि.प्र.)

X X X

जैमिनि के मत के अनुसार आयु-स्पष्ट करने की विधि

गत वर्ष हमने वराह मिहिर-सम्मत 'अंशायु पद्धति' द्वारा आयु-स्पष्ट करने का प्रकार बताया था। बहुत से ज्योतिषी जैमिनि सूत्रोक्त आयु-साधन-पद्धति को अपेक्षाकृत अधिक प्रामाणिक समझते हैं, उनके लिए हम यहां इसी पद्धति को नितान्त सरल रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

इस पद्धति में काम आने वाली दो बातों का हम पहिले ही स्पष्टीकरण कर देते हैं, जिन्हें हमारे अनेक पाठक जानते नहीं होंगे:—

(१) **जैमिनि-सम्मत ग्रह-दृष्टि**—जैमिनि मुनि के मत में ग्रहों की पारस्परिक-दृष्टि ज्योतिष में प्रचलित ग्रहदृष्टि से सर्वथा भिन्न है। पृष्ठ १७ पर "जैमिनि-सम्मत ग्रहदृष्टि चक्र" दिया गया है। इसमें बतलाया गया है, कि—किस राशि में बैठा ग्रह किन-किन राशियों में बैठे ग्रहों को देखता है। यहां आयु-साधन में सर्वत्र इसी ग्रहदृष्टि को प्रयोग में लाया जाता है।

(२) **होरा लग्न**—पृष्ठ १४ पर "होरा लग्न साधन सारणी" दी गई है। अपने इष्टकाल के घड़ी पलों द्वारा इस सारणी से राशि-अंश-कलाएं लेकर उन्हें सूर्योदय-कालिक सूर्य की राशि-अंश-कलाओं में जोड़ दें। योग (जोड़) की राशि १२ हो, या १२ से कम हो तो उनमें से १२ घटा दें। यह आपका 'होरा लग्न' होगा। जैसे मान लीजिए—हमारा इष्टकाल ४४ घ. ४५. प. और सूर्योदय-कालिक स्पष्ट-सूर्य ५ रा. १० अं. ८ क. है। 'होरालग्न-साधन सारणी' में ४२ घ. ३० प. इष्टकाल के आगे ५ रा. ० अं. लिखा है। इष्टकाल के शेष २ घ. १५ प. के आगे इसी सारणी में २७ अं. ० क. है। इन दोनों का योग ५ रा. २७ अं. ० क. हुआ। इसे उदयकालिक सूर्य में जोड़ने पर ११ रा. ७ अं. ८ क. हमारा होरा लग्न बन गया।

आयु-साधन पद्धति:—जैमिनि के अनुसार आयु स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित सात चीजों की जरूरत होती है:—

(१) स्पष्ट लग्न। (२) होरा लग्न। (३) जन्म कुण्डली। (४) स्पष्ट लग्नेश (५) स्पष्ट अष्टमेश (६) स्पष्ट चन्द्र। (७) स्पष्ट शनि।

सबसे पहले निम्न लिखित तीन प्रकार से कोष्ठक (१) द्वारा आयु परिमाण (दीर्घ मध्य या अल्प आयु) का निर्णय करें।

(१) लग्न और होरा लग्न की राशियों से।

(२) लग्नेश और अष्टमेश की राशियों से।

(३) शनि और चन्द्र की राशियों से।

कोष्ठक (१) देखें, इसकी सबसे पहिली पंक्ति और बाईं ओर के सबसे पहिले कालम में बारह राशियां लिखी हैं। लग्न की राशि वृश्चिक और होरा लग्न की राशि धनु हो तो कोष्ठक में वृश्चिक के आगे धनु के नीचे (अथवा धनु के आगे वृश्चिक के नीचे) देखा तो दीर्घ-आयु (आयु परिमाण) मिला। इसी प्रकार लग्नेश और अष्टमेश की राशियों तथा शनि और चन्द्र की राशियों से भी इस कोष्ठक (१) द्वारा आयु-परिमाण जान लें। यदि इन तीनों प्रकार से अथवा दो प्रकार से आयु परिमाण एक ही आए तो उसे ही स्वीकार कर लें। यदि तीनों प्रकार से आयु-परिमाण भिन्न-भिन्न आए तो आयु-परिमाण का निर्णय नीचे लिखे ढंग से किया जाएगा—

यदि चन्द्रमा लग्न या सप्तम में पड़ा हो तो शनि और चन्द्रमा की राशियों द्वारा जाने गए आयुपरिमाण को स्वीकार करना चाहिए। यदि चन्द्रमा लग्न और सप्तम के अलावा किसी अन्य भाव में स्थित हो तो लग्न और होरा लग्न की राशियों द्वारा जाने गए आयु परिमाण को स्वीकार किया जाएगा।

जिस आयु-परिमाण को हमने स्वीकार किया है, वह जितने प्रकार से हमें प्राप्त है, उसके अनुसार कोष्ठक (२) से 'आयु की कक्षा ज्ञात करलें। उदाहरणार्थ मान लीजिए—यदि कोष्ठक (१) से हमें उपरोक्त तीनों प्रकार से मध्य-आयु मिली हो, तो कोष्ठक (२) में 'तीनों प्रकार से मध्यायु' के आगे की आयु 'षष्ठ-कक्षा' मिलेगी।

आयु कारक—कोष्ठक (१) द्वारा ज्ञात जिस आयु परिणाम को हमने स्वीकार किया है, उसके निर्णय में जिस-जिस ग्रह (शनि, चन्द्र, अष्टमेश, लग्नेश), या लग्न, होरा लग्न की राशि का प्रयोग हुआ हो, उस ग्रह, लग्न या होरा लग्न को हम 'आयु-कारक' कहते हैं। उदाहरणार्थ—यदि शनि और चन्द्र की राशियों से कोष्ठक (१) द्वारा प्राप्त आयु परिमाण को हमने स्वीकार किया हो तो शनि और चन्द्र दोनों आयु कारक माने जाएंगे। यदि लग्न, होरा लग्न से प्राप्त आयु परिमाण को हमने स्वीकार किया हो तो लग्न और होरा लग्न को हम आयु कारक कहेंगे।

कक्षाह्रास:—यदि शनि आयुकारक हो और वह मेष, कर्क, सिंह या वृश्चिक राशि में हो तो नीचे लिखी स्थितियों में कक्षाह्रास (कोष्ठक (२) से प्राप्त कक्षा में कमी) हो जाएगी—

(i) शनि के साथ कोई अशुभ ग्रह न तो बैठा हो और न उस पर किसी अशुभ ग्रह की दृष्टि ही हो, तो कक्षाह्रास होता है।

(ii) अशुभ-ग्रह से युति या अशुभ-ग्रह से दृष्टि-सम्बन्ध होने पर भी यदि शनि के साथ कोई शुभ ग्रह बैठा हो या उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो, तो भी कक्षाह्रास होता है।

(iii) शनि का शुभ या अशुभ दोनों प्रकार के ग्रहों से योग या दृष्टि-सम्बन्ध बिल्कुल न हो, तो कक्षाह्रास होता है।

(iv) शनि का केवल शुभग्रह से योग या दृष्टि-सम्बन्ध हो तो कक्षाह्रास होता है।

यहां यह ध्यान रखें, कि-कक्षाह्रास के लिए शनि की मेष, कर्क, सिंह या वृश्चिक में स्थिति आवश्यक है।

कक्षाह्रास होने पर कोष्ठक (२) से प्राप्त आयु की कक्षा एक नीचे खिसक आती है। जैसे—यदि नवम कक्षा हो तो वह अष्टम कक्षा, अष्टम कक्षा हो तो वह सप्तम-कक्षा बन जाएगी।

कक्षा-वृद्धि—यदि गुरु आयु-कारक हो और वह लग्न या सप्तम में स्थित हो एवं उसके साथ कोई क्रूरग्रह न तो बैठा हो और न उसे देख ही रहा हो, तो आयु की कक्षा में वृद्धि होती है। यदि आयु-कारक गुरु लग्न और सप्तम के अलावा किसी अन्य भाव में पड़ा हो और उसके साथ केवल शुभग्रह बैठा हो या उसे केवल शुभ ग्रह देख रहा हो (क्रूरग्रह का योग या दृष्टि-सम्बन्ध न हो) तो भी कक्षा-वृद्धि होती है।

कक्षा वृद्धि होने पर कोष्ठक (२) से प्राप्त की आयु कक्षा एक ऊपर उठ जाती है। जैसे—पञ्चम-कक्षा हो तो वह षष्ठकक्षा, षष्ठ-कक्षा हो तो वह सप्तम-कक्षा बन जाएगी।

कक्षाह्रास और कक्षा वृद्धि का निर्णय करते समय ग्रहों की दृष्टि जैमिनि वाली

कई दृष्टिकोण से तो उनको चमत्कारक कहा जा सकता है। दृग्गणितीय शुद्ध पद्धति की सफल स्थापना में आपके परम पूज्य पिता श्री पं. मुकुन्द वल्लभ ज्योतिषाचार्य एवं आपके योग्य अनुज डाक्टर शक्तिधर शर्मा सहित आपका योगदान चिरस्मरणीय रहेगा...

आर ऐन हावा
२२-३-७७ माडर्न लाज जयपुर रोड
अजमेर

X X X

भारतीय और पाश्चात्य ज्योतिष पर प्रशंसनीय अधिकार रखने वाले पंचांग संशोधन सम्बन्धी अनेक विचारोत्तेजक मौलिक लेखों के विश्रुत लेखक Commodore (R) श्री ऐस. के. चटर्जी लिखते हैं—

It is a matter of great pleasure that Shree Martanda Panchangam is Celebrating its Golden Jubilee Year of its publication this year......... Some of our present-day Compilers of Panchangs have become aware of the necessity to publish Panchangs based on Correct observed astronomical value and it is gratifying to note that "Shree Martanda Panchangam" which has been serving the people of North-West India for the last 50 Years and is now happily Celebrating the Golden Jubilee is one of the few pioneers in the field. It is supplying valuable information on astronomical phenomena to public, which are correct as per modern observed values and per our shastras and it deserves praise for doing so.

I wish the compilers of 'Shree Martanda Panchangam, a very happy Golden Jubilee Year, and I hope that they will not hasitate to carry out correction to the Panchang as and when new facts come to notice.

ऐस के चटर्जी
A—9/1 बसन्त विहार
नई दिल्ली

X X X

व्याकरण-साहित्य एवं षड्दर्शन के उद्भट विद्वान् विग्रहधारी-वैदुष्य, श्रद्धेय [illegible] साहित्याचार्य का आशीर्वाद—

श्री मार्त्तण्ड पचांग ने ज्योतिष की जो सर्वाङ्गपूर्ण सेवा की है, उसने यह सर्वथा प्रमाणित कर दिया है—कि यह पंचांग वस्तुत: मार्त्तण्ड ही है। वर्तमान में 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर मैं यह अनुभव करता हूं, कि इसके द्वारा जो भारतीय ज्योतिर्विज्ञान की सेवा हुई है, वह हम लोगों के लिए गर्व की वस्तु है। ज्योतिर्विज्ञान का यह महिमा-प्राप्त-ज्योतिष्पुंज भविष्य में विश्व को आलोकित करे, ताकि यह हमारी विद्या भारत के लिए और अधिक गौरव की वस्तु बनें।

शुभ कामनाओं के साथ—

ता. २८-४-७६ शालग्राम

X X X

गवर्नमेण्ट संस्कृत कालेज सोलन के अनुभवी प्राध्यापक, व्याकरण पुराणादि के लब्धकीर्ति विद्वान्, प्रवचन-वाचस्पति पं. श्री शुकदेव जी व्याकरणाचार्य का अभिमत—

.........हम यदि विगत अर्धशती से श्री मार्त्तण्ड पचांग द्वारा की गई लोक सेवा का आकलन करें तो इस पंचांग के लिए साधनारत परिवार के वैदुष्य, तप, त्याग और लक्ष्यार्पित जीवन के आगे स्वत: ही श्रद्धावनत हो जाते हैं।......... मैं श्री मार्त्तण्ड पंचांग के साधक तपस्वी एवं प्रखर पाण्डित्य पूर्ण सदस्यों के लिए अनन्त-अनन्त मंगलमय प्रार्थनाएं परमेश्वर से करता हूं, ताकि भारतीय ज्योतिष का यह लोक शिक्षक पत्र अपने ज्ञान वर्धक विषयों से विश्व में भारतीय ज्योतिर्विज्ञान का एक सर्वोत्तम और मुखर अग्रदूत बना रहे।

शुकदेव शर्मा आचार्य
ता. २८-४-७६ राजकीय संस्कृत महाविद्यालय
सोलन (हि. प्र.)

X X X

गवर्नमेण्ट कालेज कुल्लू (हि.प्र.) के प्राध्यापक, संस्कृत के प्रतिभावान् रस सिद्ध आशुकवि, षड्दर्शन के परिपक्वमति युवक विद्वान् प्रो. केशव शर्मा दर्शनाचार्य, M.A., M. Phil (स्वर्ण पदक भूषित) लिखते हैं—

इस यशस्वी पचांग की स्वर्ण जयन्ती के शुभ अवसर पर आपको शतश: बधाइयां प्रस्तुत है। इसके माध्यम से आपने सुदूर अतीत की भारतीय ज्योतिष विद्या की धारा को नवयुग के क्रान्तिकारी वैज्ञानिक प्रवाह के साथ परख, ढाल एवं जोड़कर एक आश्चर्यंकर ऐतिहासिक कार्य किया है। वर्तमान वैज्ञानिक चाकचक्य में आपने इस पुरातन महान् विज्ञान को न केवल सुरक्षित ही रखा है, अपितु आर्ष मनीषा के गहनतम चमत्कार से नूतन विज्ञानवेत्ताओं को चकाचौंध कर एक चुनौती भी दी है। प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर नई-नई खोजों से जटिलतम विषयों को सरलातिसरल प्रकार से सर्व जनगम्य बनाकर तो आपने ऐसा विशिष्ट उपकार किया है, कि—इस विद्या के लक्षश: मादृश जिज्ञासु आपको कोटिश: श्रद्धा विजृम्भित सुसाधुवाद देते हैं।

ता. ३०-४-७६ प्रो. केशव शर्मा
कुल्लू (हि.प्र.)

X X X

(९३)

जैमिनि के मत के अनुसार आयु-स्पष्ट करने की विधि

गत वर्ष हमने वराह मिहिर-सम्मत 'अंशायु पद्धति' द्वारा आयु-स्पष्ट करने का प्रकार बताया था। बहुत से ज्योतिषी जैमिनि सूत्रोक्त आयु-साधन-पद्धति को अपेक्षाकृत अधिक प्रामाणिक समझते हैं, उनके लिए हम यहां इसी पद्धति को नितान्त सरल रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

इस पद्धति में काम आने वाली दो बातों का हम पहिले ही स्पष्टीकरण कर देते हैं, जिन्हें हमारे अनेक पाठक जानते नहीं होंगे:—

(१) **जैमिनि-सम्मत ग्रह-दृष्टि**—जैमिनि मुनि के मत में ग्रहों की पारस्परिक-दृष्टि ज्योतिष में प्रचलित ग्रहदृष्टि से सर्वथा भिन्न है। पृष्ठ १७ पर "जैमिनि-सम्मत ग्रहदृष्टि चक्र" दिया गया है। इसमें बतलाया गया है, कि—किस राशि में बैठा ग्रह किन-किन राशियों में बैठे ग्रहों को देखता है। यहां आयु-साधन में सर्वत्र इसी ग्रहदृष्टि को प्रयोग में लाया जाता है।

(२) **होरा लग्न**—पृष्ठ १४ पर "होरा लग्न साधन सारणी" दी गई है। अपने इष्टकाल के घड़ी पलों द्वारा इस सारणी से राशि-अंश-कलाएं लेकर उन्हें सूर्योदय-कालिक सूर्य की राशि-अंश-कलाओं में जोड़ दें। योग (जोड़) की राशि १२ हो, या १२ से कम हो तो उनमें से १२ घटा दें। यह आपका 'होरा लग्न' होगा। जैसे मान लीजिए—हमारा इष्टकाल ४४ घ. ४५. प. और सूर्योदय-कालिक स्पष्ट-सूर्य ५ रा. १० अं. ८ क. है। 'होरालग्न-साधन सारणी' में ४२ घ. ३० प. इष्टकाल के आगे ५ रा. ० अं. लिखा है। इष्टकाल के शेष २ घ. १५ प. के आगे इसी सारणी में २७ अं. ० क. है। इन दोनों का योग ५ रा. २७ अं. ० क. हुआ। इसे उदयकालिक सूर्य में जोड़ने पर ११ रा. ७ अं. ८ क. हमारा होरा लग्न बन गया।

आयु-साधन पद्धति:—जैमिनि के अनुसार आयु स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित सात चीजों की जरूरत होती है:—

(१) स्पष्ट लग्न। (२) होरा लग्न। (३) जन्म कुण्डली। (४) स्पष्ट लग्नेश (५) स्पष्ट अष्टमेश (६) स्पष्ट चन्द्र। (७) स्पष्ट शनि।

सबसे पहले निम्न लिखित तीन प्रकार से कोष्ठक (१) द्वारा आयु परिमाण (दीर्घ मध्य या अल्प आयु) का निर्णय करें।

(१) लग्न और होरा लग्न की राशियों से।

(२) लग्नेश और अष्टमेश की राशियों से।

(३) शनि और चन्द्र की राशियों से।

कोष्ठक (१) देखें, इसकी सबसे पहिली पंक्ति और बाईं ओर के सबसे पहिले कालम में बारह राशियां लिखी हैं। लग्न की राशि वृश्चिक और होरा लग्न की राशि धनु हो तो कोष्ठक में वृश्चिक के आगे धनु के नीचे (अथवा धनु के आगे वृश्चिक के नीचे) देखा तो दीर्घ-आयु (आयु परिमाण) मिला। इसी प्रकार लग्नेश और अष्टमेश की राशियों तथा शनि और चन्द्र की राशियों से भी इस कोष्ठक (१) द्वारा आयु-परिमाण जान लें। यदि इन तीनों प्रकार से अथवा दो प्रकार से आयु परिमाण एक ही आए तो उसे ही स्वीकार कर लें। यदि तीनों प्रकार से आयु-परिमाण भिन्न-भिन्न आए तो आयु-परिमाण का निर्णय नीचे लिखे ढंग से किया जाएगा—

यदि चन्द्रमा लग्न या सप्तम में पड़ा हो तो शनि और चन्द्रमा की राशियों द्वारा जाने गए आयुपरिमाण को स्वीकार करना चाहिए। यदि चन्द्रमा लग्न और सप्तम के अलावा किसी अन्य भाव में स्थित हो तो लग्न और होरा लग्न की राशियों द्वारा जाने गए आयु परिमाण को स्वीकार किया जाएगा।

जिस आयु-परिमाण को हमने स्वीकार किया है, वह जितने प्रकार से हमें प्राप्त है, उसके अनुसार कोष्ठक (२) से 'आयु की कक्षा' ज्ञात करलें। उदाहरणार्थ मान लीजिए—यदि कोष्ठक (१) से हमें उपरोक्त तीनों प्रकार से मध्य-आयु मिली हो, तो कोष्ठक (२) में 'तीनों प्रकार से मध्यायु' के आगे की आयु 'षष्ठ-कक्षा' मिलेगी।

आयु कारक—कोष्ठक (१) द्वारा ज्ञात जिस आयु परिणाम को हमने स्वीकार किया है, उसके निर्णय में जिस-जिस ग्रह (शनि, चन्द्र, अष्टमेश, लग्नेश), या लग्न, होरा लग्न की राशि का प्रयोग हुआ हो, उस ग्रह, लग्न या होरा लग्न को हम 'आयु-कारक' कहते हैं। उदाहरणार्थ—यदि शनि और चन्द्र की राशियों से कोष्ठक (१) द्वारा प्राप्त आयु परिमाण को हमने स्वीकार किया हो तो शनि और चन्द्र दोनों आयु कारक माने जाएंगे। यदि लग्न, होरा लग्न से प्राप्त आयु परिमाण को हमने स्वीकार किया हो तो लग्न और होरा लग्न को हम आयु कारक कहेंगे।

कक्षाह्रास:—यदि शनि आयुकारक हो और वह मेष, कर्क, सिंह या वृश्चिक राशि में हो तो नीचे लिखी स्थितियों में कक्षाह्रास (कोष्ठक (२) से प्राप्त कक्षा में कमी) हो जाएगी—

(i) शनि के साथ कोई अशुभ ग्रह न तो बैठा हो और न उस पर किसी अशुभ ग्रह की दृष्टि ही हो, तो कक्षाह्रास होता है।

(ii) अशुभ-ग्रह से युति या अशुभ-ग्रह से दृष्टि-सम्बन्ध होने पर भी यदि शनि के साथ कोई शुभ ग्रह बैठा हो या उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो, तो भी कक्षाह्रास होता है।

(iii) शनि का शुभ या अशुभ दोनों प्रकार के ग्रहों से योग या दृष्टि-सम्बन्ध बिल्कुल न हो, तो कक्षाह्रास होता है।

(iv) शनि का केवल शुभग्रह से योग या दृष्टि-सम्बन्ध हो तो कक्षाह्रास होता है।

यहां यह ध्यान रखें, कि—कक्षाह्रास के लिए शनि की मेष, कर्क, सिंह या वृश्चिक में स्थिति आवश्यक है।

कक्षाह्रास होने पर कोष्ठक (२) से प्राप्त आयु की कक्षा एक नीचे खिसक जाती है। जैसे—यदि नवम कक्षा हो तो वह अष्टम कक्षा, अष्टम कक्षा हो तो वह सप्तम-कक्षा बन जाएगी।

कक्षा-वृद्धि:—यदि गुरु आयु-कारक हो और वह लग्न या सप्तम में स्थित हो एवं उसके साथ कोई क्रूरग्रह न तो बैठा हो और न उसे देख ही रहा हो, तो आयु की कक्षा में वृद्धि होती है। यदि आयु-कारक गुरु लग्न और सप्तम के अलावा किसी अन्य भाव में पड़ा हो और उसके साथ केवल शुभग्रह बैठा हो या उसे केवल शुभ ग्रह देख रहा हो (क्रूरग्रह का योग या दृष्टि-सम्बन्ध न हो) तो भी कक्षा-वृद्धि होती है।

कक्षा वृद्धि होने पर कोष्ठक (२) से प्राप्त की आयु कक्षा एक ऊपर उठ जाती है। जैसे—पञ्चम-कक्षा हो तो वह षष्ठकक्षा, षष्ठ-कक्षा हो तो वह सप्तम-कक्षा बन जाएगी।

कक्षाह्रास और कक्षा वृद्धि का निर्णय करते समय ग्रहों की दृष्टि जैमिनि वाली

ही लेनी होगी।

विशेष:—यदि कोष्ठक (२) से आयु की कक्षा प्रथम मिली हो और शनि द्वारा कक्षाह्रास हो जाए, तब यह समझना चाहिए कि—जातक की बहुत ही छोटी अवस्था में बालारिष्ट आदि से मृत्यु होने के योग है। ऐसी स्थिति में जैमिनि के अनुसार आयुसाधन यहीं समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार यदि कोष्ठक (२) से आयु की 'नवम कक्षा' प्राप्त होने पर गुरु द्वारा कक्षा-वृद्धि हो जाए तो समझना चाहिए, कि-जातक की आयु १२०परमायु से भी अधिक होगी। इस स्थिति में भी जैमिनि के अनुसार आयु के वर्ष-मास-दिन का साधन सम्भव नहीं है।

आयु के वर्ष-मास-दिन ज्ञात करना।—जो ग्रह, लग्न या होरा-लग्न आयुकारक हों उन सब की राशियों को छोड़कर उनकी केवल अंश कलाओं को जोड़े और आयुकारकों की संख्या (जितने आयु कारक हों उतने) से भाग दें। जो अंश कलाएं मिलें, उन्हें अलग नोट कर लें। कोष्ठक (३) में से इन अंशों द्वारा वर्ष-मास-दिन और कलाओं द्वारा मास दिन उठा लें। अंशों द्वारा प्राप्त 'वर्ष-मास-दिन' में से कलाओं द्वारा प्राप्त मास दिन घटा दें। बस जातक की यही स्पष्ट आयु है।

कोष्ठक (३) का प्रयोग करते समय अपनी आयु की कक्षा वाला कालम ही देखना चाहिए।

यहां आयुकारकों की अंश-कलाओं का योग करते समय यह ध्यान रखें, कि यदि कोई ग्रह कोष्ठक(१) द्वारा आयु परिमाण के निर्णय में आयुकारक के रूप में दो बार प्रयोग में आया हो तो उसे एक आयुकारक न मानकर दो आयुकारक मानना होगा और तब उसकी अंश कलाओं को दो बार (दुगुना करके) जोड़ना होगा। स्पष्टता के लिए उदाहरण (१) और (२) देखें।

स्पष्टता के लिए आगे दिए जा रहे इन तीनों उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए—

उदाहरण (१)—नीचे एक जातक की कुण्डली और लग्न आदि दिए गए हैं, इसकी आयु स्पष्ट करें।

जन्मकुण्डली



	रा. अं. क.
लग्न	३।१०।२०
होरा लग्न	५। १।४५
लग्नेश (चन्द्र)	७।१७।३०
अष्टमेश (शनि)	९।१५।१४
चन्द्र	७।१७।३०
शनि	९।१५।१४

कोष्ठक (१) द्वारा शनि की राशि मकर और चन्द्र की राशि वृश्चिक से मध्य (आयु), लग्नेश(चन्द्र) की राशि वृश्चिक और अष्टमेश (शनि) की राशि मकर में भी मध्य तथा लग्न की राशि कर्क और होरा लग्न की राशि कन्या से अल्प आयुपरिमाण मिला। क्योंकि यहां पहिले दो प्रकारों से मध्य आयु परिमाण मिला है अत: इसी को हमने स्वीकार किया।

कोष्ठक (२) में "दो प्रकार से मध्यायु" के आगे आयु की पंचम कक्षा मिली।

यहां शनि आयु कारक तो अवश्य है परन्तु वह मेष कर्क सिंह या वृश्चिक में नहीं है, अत: कक्षाह्रास का प्रश्न ही नहीं उठता। यहां गुरु आयु-कारक नहीं है, अत: कक्षावृद्धि का भी कोई प्रश्न नहीं है।

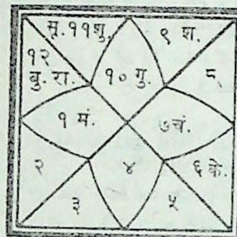
यहां आयुकारक चार है—(१) लग्नेश (चन्द्र), (२) अष्टमेश (शनि) (३) शनि (४) चन्द्र। (ध्यान दें—यहां चन्द्रमा दो प्रकार से आयुकारक है—(१) लग्नेश के रूप में, और (२) केवल चन्द्रमा के रूप में। इसी प्रकार यहां शनि भी दो प्रकार से आयुकारक है, (१) अष्टमेश के रूप में और (२) केवल शनि रूप में। इसलिए यहां चन्द्र और शनि की अंश कलाओं को दुहरा-दुहरा जोड़ना होगा) इन चारों आयुकारकों की राशियों को छोड़कर इनकी अंश कलाओं का योग किया।

	अं. क.
लग्नेश (चन्द्र)	१७।३०
अष्टमेश (शनि)	१५।१४
चन्द्र	१७।३०
शनि	१५।१४
योग	६५।२८

इस योग को आयु कारकों की संख्या ४ से भाग देने पर १६ अं. २२ क. मिलीं। कोष्ठक (३) के "पंचम कक्षा" वाले कालम में १६ अंश के आगे ५२ वर्ष ९ मास १८ दिन और २२ कला के आगे ५ मास ८ दिन मिले। ५२ वर्ष ९ मास १८ दिन में से ५ मास ८ दिन घटा देने पर ५२ वर्ष ४ मास १० दिन जातक की आयु स्पष्ट हो गई। अर्थात्—यह जातक इतने वर्ष-मास-दिन जीएगा।

उदाहरण (२)—नीचे लिखी जन्मकुण्डली और लग्न आदि वाले जातक की आयु स्पष्ट करें।

जन्मकुण्डली



	रा. अं. क.
लग्न	९। ५।१५
होरा लग्न	८।२४।२४
लग्नेश (शनि)	८।१०। ४
अष्टमेश (सूर्य)	१०। ५।१७
चन्द्र	६।१२।३२
शनि	८।१०। ४

कोष्ठक (१) द्वारा लग्न की राशि मकर और होरा लग्न की राशि धनु से अल्प, लग्नेश शनि की राशि धनु और अष्टमेश सूर्य की राशि कुम्भ से दीर्घ, तथा चन्द्र की राशि तुला और शनि की राशि धनु से अल्प आयु परिमाण मिला। यहां पहिले और तीसरे (दो) प्रकारों से अल्प आयु परिमाण मिला है, अत: अल्पायु को ही हम स्वीकार करेंगे।

कोष्ठक (२) में "दो प्रकार से अल्पायु" के आगे आयु की "द्वितीयकक्षा" मिली।

यहां शनि धनु में है अत: कक्षाह्रास नहीं हो सकता। गुरु लग्न में बैठा है। इस के साथ कोई क्रूर ग्रह नहीं है, इस पर किसी क्रूर ग्रह की दृष्टि भी नहीं है। अत: यहां कक्षावृद्धि हो सकती थी, लेकिन गुरु यहां आयुकारक नहीं है, अत: कक्षावृद्धि नहीं हो सकती।

यहां चार आयुकारक है—(१) लग्न। (२) होरा लग्न (३) चन्द्र। (४) शनि इनकी अंश कलाओं के योग (५२ अं. १५ क.) को आयुकारक की संख्या ४ से भाग देने पर १३ अं. ४ क. मिली। कोष्ठक (२) के द्वितीय कक्षा वाले कालम में १३ अंश के आगे २२ वर्ष १ मास और १८ दिन और ४ कला के आगे ० मास २६ दिन मिले। २२ वर्ष १ मास १८ दिन में से ० मास २६ दिन घटाने पर २२ व. ० मा २२ दिन जातक की आयु मालूम हो गई।

होरा लग्न साधक सारणी

इष्ट काल के		इष्ट के शेष		इष्ट के शेष		इष्ट के शेष		इष्ट के शेष		इष्ट के शेष		इष्ट के शेष	
घ. प	रा. अं.	घ. प.	अं. क.	घ. प.	अं. क.	घ. प.	अं. क.	घ. प.	अं. क.	घ. प.	अं. क.	घ. प.	अं. क.
०। ०	०। ०	०। १	०।१२	०।२६	५।१२	०।५१	१०।१२	१।१६	१५।१२	१।४१	२०।१२	२। ६	२५।१२
२।३०	१। ०	०। २	०।२४	०।२७	५।२४	०।५२	१०।२४	१।१७	१५।२४	१।४२	२०।२४	२। ७	२५।२४
५। ०	२। ०	०। ३	०।३६	०।२८	५।३६	०।५३	१०।३६	१।१८	१५।३६	१।४३	२०।३६	२। ८	२५।३६
७।३०	३। ०	०। ४	०।४८	०।२९	५।४८	०।५४	१०।४८	१।१९	१५।४८	१।४४	२०।४८	२। ९	२५।४८
१०। ०	४। ०	०। ५	१। ०	०।३०	६। ०	०।५५	११। ०	१।२०	१६। ०	१।४५	२१। ०	२।१०	२६। ०
१२।३०	५। ०	०। ६	१।१२	०।३१	६।१२	०।५६	११।१२	१।२१	१६।१२	१।४६	२१।१२	२।११	२६।१२
१५। ०	६। ०	०। ७	१।२४	०।३२	६।२४	०।५७	११।२४	१।२२	१६।२४	१।४७	२१।२४	२।१२	२६।२४
१७।३०	७। ०	०। ८	१।३६	०।३३	६।३६	०।५८	११।३६	१।२३	१६।३६	१।४८	२१।३६	२।१३	२६।३६
२०। ०	८। ०	०। ९	१।४८	०।३४	६।४८	०।५९	११।४८	१।२४	१६।४८	१।४९	२१।४८	२।१४	२६।४८
२२।३०	९। ०	०।१०	२। ०	०।३५	७। ०	१। ०	१२। ०	१।२५	१७। ०	१।५०	२२। ०	२।१५	२७। ०
२५। ०	१०। ०	०।११	२।१२	०।३६	७।१२	१। १	१२।१२	१।२६	१७।१२	१।५१	२२।१२	२।१६	२७।१२
२७।३०	११। ०	०।१२	२।२४	०।३७	७।२४	१। २	१२।२४	१।२७	१७।२४	१।५२	२२।२४	२।१७	२७।२४
३०। ०	०। ०	०।१३	२।३६	०।३८	७।३६	१। ३	१२।३६	१।२८	१७।३६	१।५३	२२।३६	२।१८	२७।३६
३२।३०	१। ०	०।१४	२।४८	०।३९	७।४८	१। ४	१२।४८	१।२९	१७।४८	१।५४	२२।४८	२।१९	२७।४८
३५। ०	२। ०	०।१५	३। ०	०।४०	८। ०	१। ५	१३। ०	१।३०	१८। ०	१।५५	२३। ०	२।२०	२८। ०
३७।३०	३। ०	०।१६	३।१२	०।४१	८।१२	१। ६	१३।१२	१।३१	१८।१२	१।५६	२३।१२	२।२१	२८।१२
४०। ०	४। ०	०।१७	३।२४	०।४२	८।२४	१। ७	१३।२४	१।३२	१८।२४	१।५७	२३।२४	२।२२	२८।२४
४२।३०	५। ०	०।१८	३।३६	०।४३	८।३६	१। ८	१३।३६	१।३३	१८।३६	१।५८	२३।३६	२।२३	२८।३६
४५। ०	६। ०	०।१९	३।४८	०।४४	८।४८	१। ९	१३।४८	१।३४	१८।४८	१।५९	२३।४८	२।२४	२८।४८
४७।३०	७। ०	०।२०	४। ०	०।४५	९। ०	१।१०	१४। ०	१।३५	१९। ०	२। ०	२४। ०	२।२५	२९। ०
५०। ०	८। ०	०।२१	४।१२	०।४६	९।१२	१।११	१४।१२	१।३६	१९।१२	२। १	२४।१२	२।२६	२९।१२
५२।३०	९। ०	०।२२	४।२४	०।४७	९।२४	१।१२	१४।२४	१।३७	१९।२४	२। २	२४।२४	२।२७	२९।२४
५५। ०	१०। ०	०।२३	४।३६	०।४८	९।३६	१।१३	१४।३६	१।३८	१९।३६	२। ३	२४।३६	२।२८	२९।३६
५७।३०	११। ०	०।२४	४।४८	०।४९	९।४८	१।१४	१४।४८	१।३९	१९।४८	२। ४	२४।४८	२।२९	२९।४८
६०। ०	०। ०	०।२५	५। ०	०।५०	१०। ०	१।१५	१५। ०	१।४०	२०। ०	२। ५	२५। ०	२।३०	३०। ०

उदाहरण (३)—निम्नलिखित कुण्डली वाले जातक की आयु-साधन कीजिए :—

जन्म कुण्डली

(कुण्डली : १२, १० के., ९, ११ चं., शु.म., २गु., ८, ३सू., ५, ७, बु., ६, रा. ४श.)

	रा. अं. क.
लग्न	१०। ६।२५
होरा लग्न	७।२५।१०
लग्नेश (शनि)	३।२०।३०
अष्टमेश (बुध)	३।२६।१०
चन्द्र	१०। १।३०
शनि	३।२०।३०

कोष्ठक (१) द्वारा लग्न और होरा लग्न की राशियों (कुम्भ और वृश्चिक) से अल्प, लग्नेश (शनि) और अष्टमेश (बुध) की राशियों (कर्क और कर्क) से दीर्घ, एवं चन्द्र और शनि की राशियों (कुम्भ और कर्क) से मध्य आयु परिमाण मिला। यहां तीनों प्रकारों से भिन्न भिन्न आयु परिमाण प्राप्त हुए हैं। क्योंकि यहां चन्द्रमा लग्न में है, अतः शनि और चन्द्र द्वारा प्राप्त आयुपरिमाण 'मध्यायु' को ही स्वीकार किया जाएगा।

कोष्ठक (२) में 'एक ही प्रकार से मध्यायु' के आगे 'चतुर्थ कक्षा' मिली। कुण्डली में शनि कर्क में है। इसके साथ क्रूर ग्रह राहु है और इस पर शुभ ग्रह चन्द्रमा और गुरु की दृष्टि भी है। अतः कक्षाह्रास होगा। कोष्ठक (२) से चतुर्थ कक्षा प्राप्त हुई थी, कक्षाह्रास के कारण अब यह तृतीय कक्षा बन गई।

यहां पर आयुकारक केवल दो (चन्द्र और शनि) हैं। इनकी अंश कलाओं के योग (२२ अं. ० क.) को आयुकारकों की संख्या २ से भाग देने पर ११ अं. ० क. हुई। कोष्ठक (३) के तृतीय कक्षा वाले कालम में ११ अंश के आगे २८ वर्ष ३ मास ६ दिन प्राप्त हुए। इस जातक की आयु सिर्फ इतनी ही होगी।

(आयु-साधन) कोष्ठक (१)

राशि →	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मेष	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प
वृष	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ
मिथुन	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य
कर्क	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प
सिंह	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ
कन्या	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य
तुला	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प
वृश्चिक	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ
धनु	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य
मकर	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प
कुम्भ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ
मीन	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य

(आयु साधन) कोष्ठक (२)

कितने प्रकार से कौन सी आयु मिली है	आयु की कक्षा
तीनों प्रकार से दीर्घायु	नवम कक्षा
दो प्रकार से दीर्घायु	अष्टम कक्षा
एक प्रकार से दीर्घायु	सप्तम कक्षा
तीनों प्रकार से मध्यायु	षष्ठ कक्षा
दो प्रकार से मध्यायु	पञ्चम कक्षा
एक प्रकार से मध्यायु	चतुर्थ कक्षा
एक प्रकार से अल्पायु	तृतीय कक्षा
दो प्रकार से अल्पायु	द्वितीय कक्षा
तीनों प्रकार से अल्पायु	प्रथम कक्षा

ही लेनी होगी।

विशेष:—यदि कोष्ठक (२) में आयु की कक्षा प्रथम मिली हो और शनि द्वारा कक्षाह्रास हो जाए, तब यह समझना चाहिए कि—जातक की बहुत ही छोटी अवस्था में बालारिष्ट आदि से मृत्यु होने के योग है। ऐसी स्थिति में जैमिनि के अनुसार आयुसाधन यहीं समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार यदि कोष्ठक (२) से आयु की 'नवम कक्षा' प्राप्त होने पर गुरु द्वारा कक्षा-वृद्धि हो जाए तो समझना चाहिए, कि-जातक की आयु १२०परमायु से भी अधिक होगी। इस स्थिति में भी जैमिनि के अनुसार आयु के वर्ष-मास-दिन का साधन सम्भव नहीं है।

आयु के वर्ष-मास-दिन ज्ञात करना.—जो ग्रह, लग्न या होरा-लग्न आयुकारक हों उन सब की राशियों को छोड़कर उनकी केवल अंश कलाओं को जोड़ें और आयुकारकों की संख्या (जितने आयु कारक हों उतने) से भाग दें। जो अंश कलाएं मिलें, उन्हें अलग नोट कर लें। कोष्ठक (३) में से इन अंशों द्वारा वर्ष-मास-दिन और कलाओं द्वारा मास दिन उठा लें। अंशों द्वारा प्राप्त 'वर्ष-मास-दिन' में से कलाओं द्वारा प्राप्त मास दिन घटा दें। बस जातक की यही स्पष्ट आयु है।

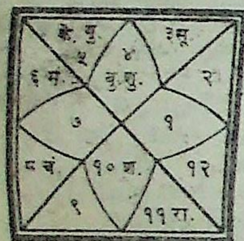
कोष्ठक (३) का प्रयोग करते समय अपनी आयु की कक्षा वाला कालम ही देखना चाहिए।

यहां आयुकारकों की अंश-कलाओं का योग करते समय यह ध्यान रखें, कि यदि कोई ग्रह कोष्ठक (१) द्वारा आयु परिमाण के निर्णय में आयुकारक के रूप में दो बार प्रयोग में आया हो तो उसे एक आयुकारक न मानकर दो आयुकारक मानना होगा और तब उसकी अंश कलाओं को दो बार (दुगुना करके) जोड़ना होगा। स्पष्टता के लिए उदाहरण (१) और (२) देखें।

स्पष्टता के लिए आगे दिए जा रहे इन तीनों उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए—

उदाहरण (१)—नीचे एक जातक की कुण्डली और लग्न आदि दिए गए हैं, इसकी आयु स्पष्ट करें।

जन्मकुण्डली



	रा. अं. क.
लग्न	३।१७।२०
होरा लग्न	५। ११८५
लग्नेश (चन्द्र)	७।१७।३०
अष्टमेश (शनि)	९।१५।१४
चन्द्र	७।१७।३०
शनि	९।१५।१४

कोष्ठक (१) द्वारा शनि की राशि मकर और चन्द्र की राशि वृश्चिक से मध्य (आयु), लग्नेश (चन्द्र) की राशि वृश्चिक और अष्टमेश (शनि) की राशि मकर से भी मध्य तथा लग्न की राशि कर्क और होरा लग्न की राशि कन्या से अल्प आयुपरिमाण मिला। क्योंकि यहां पहिले दो प्रकारों से मध्य आयु परिमाण मिला है अतः इसी को हमने स्वीकार किया।

कोष्ठक (२) में "दो प्रकार से मध्यायु" के आगे आयु की पचम कक्षा मिली।

यहां शनि आयु कारक तो अवश्य है परन्तु वह मेष कर्क, सिंह, या वृश्चिक में नहीं है, अतः कक्षाह्रास का प्रश्न ही नहीं उठता। यहां गुरु आयु-कारक नहीं है, अतः कक्षावृद्धि का भी कोई प्रश्न नहीं है।

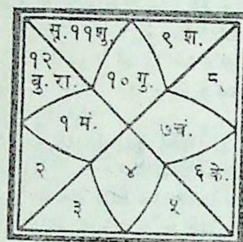
यहां आयुकारक चार हैं—(१) लग्नेश (चन्द्र), (२) अष्टमेश (शनि) (३) शनि (४) चन्द्र। (ध्यान दें—यहां चन्द्रमा दो प्रकार से आयुकारक है—(१) लग्नेश के रूप में, और (२) केवल चन्द्रमा के रूप में। इसी प्रकार यहां शनि भी दो प्रकार से आयुकारक है, (१) अष्टमेश के रूप में और (२) केवल शनि रूप में। इसलिए यहां चन्द्र और शनि की अंश कलाओं को दुहरा-दुहरा जोड़ना होगा) इन चारों आयुकारकों की राशियों को छोड़कर इनकी अंश कलाओं का योग किया।

	अं. क.
लग्नेश (चन्द्र)	१७।३०
अष्टमेश (शनि)	१५।१४
चन्द्र	१७।३०
शनि	१५।१४
योग	६५।२८

इस योग को आयु कारकों की संख्या ४ से भाग देने पर १६ अं. २२ क. मिलीं। कोष्ठक (३) के "पचम कक्षा" वाले कालम में १६ अंश के आगे ५२ वर्ष ९ मास १८ दिन और २२ कला के आगे ५ मास ८ दिन मिले। ५२ वर्ष ९ मास १८ दिन में से ५ मास ८ दिन घटा देने पर ५२ वर्ष ४ मास १० दिन जातक की आयु स्पष्ट हो गई। अर्थात्—यह जातक इतने वर्ष-मास-दिन जीएगा।

उदाहरण (२)—नीचे लिखी जन्मकुण्डली और लग्न आदि वाले जातक की आयु स्पष्ट करें।

जन्मकुण्डली



	रा. अं. क.
लग्न	९। ५।१५
होरा लग्न	८।२४।२४
लग्नेश (शनि)	८।१०। ४
अष्टमेश (सूर्य)	१०। ५।१७
चन्द्र	६।१२।३२
शनि	८।१०। ४

कोष्ठक (१) द्वारा लग्न की राशि मकर और होरा लग्न की राशि धनु से अल्प, लग्नेश शनि की राशि धनु और अष्टमेश सूर्य की राशि कुम्भ से दीर्घ, तथा चन्द्र की राशि तुला और शनि की राशि धनु से अल्प आयु परिमाण मिला। यहां पहिले और तीसरे (दो) प्रकारों से अल्प आयु परिमाण मिला है, अतः अल्पायु को ही हम स्वीकार करेंगे।

कोष्ठक (२) में "दो प्रकार से अल्पायु" के आगे आयु की "द्वितीयकक्षा" मिली।

यहां शनि धनु में है अतः कक्षाह्रास नहीं हो सकता। गुरु लग्न में बैठा है। इस के साथ कोई क्रूर ग्रह नहीं है, इस पर किसी क्रूर ग्रह की दृष्टि भी नहीं है। अतः यहां कक्षावृद्धि हो सकती थी, लेकिन गुरु यहां आयुकारक नहीं है, अतः कक्षावृद्धि नहीं हो सकती।

यहां चार आयुकारक है—(१) लग्न। (२) होरा लग्न (३) चन्द्र। (४) शनि इनकी अंश कलाओं के योग (५२ अं. १५ क.) को आयुकारक की संख्या ४ से भाग देने पर १३ अं. ४ क. मिली। कोष्ठक (२) के द्वितीय कक्षा वाले कालम में १३ अंश के आगे २२ वर्ष १ मास और १८ दिन और ४ कला के आगे ० मास २६ दिन मिले। २२ वर्ष १ मास १८ दिन में से ० मास २६ दिन घटाने पर २२ व. ० मा २२ दिन जातक की आयु मालूम हो गई।

होरा लग्न साधक सारणी

इष्ट काल के		इष्ट के शेष		इष्ट के शेष		इष्ट के शेष		इष्ट के शेष		इष्ट के शेष		इष्ट के शेष	
घ. प	रा. अं.	घ. प.	अं. क.	घ. प.	अं. क.	घ. प.	अं. क.	घ. प.	अं. क.	घ. प.	अं. क.	घ. प.	अं. क.
०। ०	०। ०	०। १	०।१२	०।२६	५।१२	०।५१	१०।१२	१।१६	१५।१२	१।४१	२०।१२	२। ६	२५।१२
२।३०	१। ०	०। २	०।२४	०।२७	५।२४	०।५२	१०।२४	१।१७	१५।२४	१।४२	२०।२४	२। ७	२५।२४
५। ०	२। ०	०। ३	०।३६	०।२८	५।३६	०।५३	१०।३६	१।१८	१५।३६	१।४३	२०।३६	२। ८	२५।३६
७।३०	३। ०	०। ४	०।४८	०।२९	५।४८	०।५४	१०।४८	१।१९	१५।४८	१।४४	२०।४८	२। ९	२५।४८
१०। ०	४। ०	०। ५	१। ०	०।३०	६। ०	०।५५	११। ०	१।२०	१६। ०	१।४५	२१। ०	२।१०	२६। ०
१२।३०	५। ०	०। ६	१।१२	०।३१	६।१२	०।५६	११।१२	१।२१	१६।१२	१।४६	२१।१२	२।११	२६।१२
१५। ०	६। ०	०। ७	१।२४	०।३२	६।२४	०।५७	११।२४	१।२२	१६।२४	१।४७	२१।२४	२।१२	२६।२४
१७।३०	७। ०	०। ८	१।३६	०।३३	६।३६	०।५८	११।३६	१।२३	१६।३६	१।४८	२१।३६	२।१३	२६।३६
२०। ०	८। ०	०। ९	१।४८	०।३४	६।४८	०।५९	११।४८	१।२४	१६।४८	१।४९	२१।४८	२।१४	२६।४८
२२।३०	९। ०	०।१०	२। ०	०।३५	७। ०	१। ०	१२। ०	१।२५	१७। ०	१।५०	२२। ०	२।१५	२७। ०
२५। ०	१०। ०	०।११	२।१२	०।३६	७।१२	१। १	१२।१२	१।२६	१७।१२	१।५१	२२।१२	२।१६	२७।१२
२७।३०	११। ०	०।१२	२।२४	०।३७	७।२४	१। २	१२।२४	१।२७	१७।२४	१।५२	२२।२४	२।१७	२७।२४
३०। ०	०। ०	०।१३	२।३६	०।३८	७।३६	१। ३	१२।३६	१।२८	१७।३६	१।५३	२२।३६	२।१८	२७।३६
३२।३०	१। ०	०।१४	२।४८	०।३९	७।४८	१। ४	१२।४८	१।२९	१७।४८	१।५४	२२।४८	२।१९	२७।४८
३५। ०	२। ०	०।१५	३। ०	०।४०	८। ०	१। ५	१३। ०	१।३०	१८। ०	१।५५	२३। ०	२।२०	२८। ०
३७।३०	३। ०	०।१६	३।१२	०।४१	८।१२	१। ६	१३।१२	१।३१	१८।१२	१।५६	२३।१२	२।२१	२८।१२
४०। ०	४। ०	०।१७	३।२४	०।४२	८।२४	१। ७	१३।२४	१।३२	१८।२४	१।५७	२३।२४	२।२२	२८।२४
४२।३०	५। ०	०।१८	३।३६	०।४३	८।३६	१। ८	१३।३६	१।३३	१८।३६	१।५८	२३।३६	२।२३	२८।३६
४५। ०	६। ०	०।१९	३।४८	०।४४	८।४८	१। ९	१३।४८	१।३४	१८।४८	१।५९	२३।४८	२।२४	२८।४८
४७।३०	७। ०	०।२०	४। ०	०।४५	९। ०	१।१०	१४। ०	१।३५	१९। ०	२। ०	२४। ०	२।२५	२९। ०
५०। ०	८। ०	०।२१	४।१२	०।४६	९।१२	१।११	१४।१२	१।३६	१९।१२	२। १	२४।१२	२।२६	२९।१२
५२।३०	९। ०	०।२२	४।२४	०।४७	९।२४	१।१२	१४।२४	१।३७	१९।२४	२। २	२४।२४	२।२७	२९।२४
५५। ०	१०। ०	०।२३	४।३६	०।४८	९।३६	१।१३	१४।३६	१।३८	१९।३६	२। ३	२४।३६	२।२८	२९।३६
५७।३०	११। ०	०।२४	४।४८	०।४९	९।४८	१।१४	१४।४८	१।३९	१९।४८	२। ४	२४।४८	२।२९	२९।४८
६०। ०	०। ०	०।२५	५। ०	०।५०	१०। ०	१।१५	१५। ०	१।४०	२०। ०	२। ५	२५। ०	२।३०	३०। ०

उदाहरण (३)—निम्नलिखित कुण्डली वाले जातक की आयु-साधन कीजिए:—

जन्म कुण्डली

१२   १० के.   १ सू. मं.   ११ चं.   ९   २ गु.   ८   ३ शु.   ५   ७   बु.   ६   रा. ४श.

	रा. अं. क.
लग्न	१०। ६।२५
होरा लग्न	७।२५।१०
लग्नेश (शनि)	३।२०।३०
अष्टमेश (बुध)	३।२६।१०
चन्द्र	१०। १।३०
शनि	३।२०।३०

कोष्टक (१) द्वारा लग्न और होरा लग्न की राशियों (कुम्भ और वृश्चिक) से अल्प, लग्नेश (शनि) और अष्टमेश (बुध) की राशियों (कर्क और कर्क) से दीर्घ, एवं चन्द्र और शनि की राशियों (कुम्भ और कर्क) से मध्य आयु परिमाण मिला। यहां तीनों प्रकारों से भिन्न भिन्न आयु परिमाण प्राप्त हुए हैं। क्योंकि यहां चन्द्रमा लग्न में है, अत: शनि और चन्द्र द्वारा प्राप्त आयुपरिमाण 'मध्यायु' को ही स्वीकार किया जाएगा।

कोष्ठक (२) में 'एक ही प्रकार से मध्यायु' के आगे 'चतुर्थ कक्षा' मिली। कुण्डली में शनि कर्क में है। इसके साथ क्रूर ग्रह राहु है और इस पर शुभ ग्रह चन्द्रमा और गुरु की दृष्टि भी है। अत: कक्षाह्रास होगा। कोष्ठक (२) से चतुर्थ कक्षा प्राप्त हुई थी, कक्षाह्रास के कारण अब यह तृतीय कक्षा बन गई।

यहा पर आयुकारक केवल दो (चन्द्र और शनि) हैं। इनकी अंश कलाओं के योग (२२ अं. ० क.) को आयुकारकों की संख्या २ से भाग देने पर ११ अं. ० क. हुई। कोष्ठक (३) के तृतीय कक्षा वाले कालम में ११ अंश के आगे २८वर्ष ३ मास ६ दिन प्राप्त हुए। इस जातक की आयु सिर्फ इतनी ही होगी।

(आयु-साधन)   कोष्ठक (१)

राशि→ ↓	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
मेष	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प
वृष	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ
मिथुन	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य
कर्क	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प
सिंह	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ
कन्या	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य
तुला	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प
वृश्चिक	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ
धनु	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य
मकर	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प
कुम्भ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ
मीन	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य	अल्प	दीर्घ	मध्य

(आयु साधन)   कोष्ठक (२)

कितने प्रकार से कौन सी आयु मिलीहै	आयु की कक्षा
तीनों प्रकार से दीर्घायु	नवम कक्षा
दो प्रकार से दीर्घायु	अष्टम कक्षा
एक प्रकार से दीर्घायु	सप्तम कक्षा
तीनों प्रकार से मध्यायु	षष्ठ कक्षा
दो प्रकार से मध्यायु	पञ्चम कक्षा
एक प्रकार से मध्यायु	चतुर्थ कक्षा
एक प्रकार से अल्पायु	तृतीय कक्षा
दो प्रकार से अल्पायु	द्वितीय कक्षा
तीनों प्रकार से अल्पायु	प्रथम कक्षा

कोष्ठक (३) [प्रथम भाग]

प्रथम कक्षा

क्रम	व. मा. दि.	कला	मा. दि.	कला	मा. दि.
०	०। ०। ०	१	०। ६	३१	६।१८
१	३०।११। ६	२	०।१३	३२	६।२५
२	२९।१०।१२	३	०।१९	३३	७। १
३	२८। ९।१८	४	०।२६	३४	७। ८
४	२७। ८।२४	५	१। २	३५	७।१४
५	२६। ८। ०	६	१। ९	३६	७।२०
६	२५। ७। ६	७	१।१५	३७	७।२७
७	२४। ६।१२	८	१।२१	३८	८। ३
८	२३। ५।१८	९	१।२८	३९	८।१०
९	२२। ४।२४	१०	२। ४	४०	८।१६
१०	२१। ४। ०	११	२।१०	४१	८।२२
११	२०। ३। ६	१२	२।१७	४२	८।२९
१२	१९। २।१२	१३	२।२३	४३	९। ५
१३	१८। १।१८	१४	३। ०	४४	९।१२
१४	१७। ०।२४	१५	३। ६	४५	९।१८
१५	१६। ०। ०	१६	३।१२	४६	९।२४
१६	१४।११। ६	१७	३।१९	४७	१०। १
१७	१३।१०।१२	१८	३।२५	४८	१०। ७
१८	१२। ९।१८	१९	४। २	४९	१०।१४
१९	११। ८।२४	२०	४। ८	५०	१०।२०
२०	१०। ८। ०	२१	४।१४	५१	१०।२६
२१	९। ७। ६	२२	४।२१	५२	११। ३
२२	८। ६।१२	२३	४।२७	५३	११। ९
२३	७। ५।१८	२४	५। ४	५४	११।१६
२४	६। ४।२४	२५	५।१०	५५	११।२२
२५	५। ४। ०	२६	५।१६	५६	११।२८
२६	४। ३। ६	२७	५।२३	५७	१२। ५
२७	३। २।१२	२८	५।२९	५८	१२।११
२८	२। १।१८	२९	६। ६	५९	१२।१८
२९	१। ०।२४	३०	६।१२	६०	१२।२४

द्वितीय कक्षा

क्रम	व. मा. दि.	कला	मा. दि.	कला	मा. दि.
०	४। ०। ०	१	०। ६	३१	६।१८
१	३४।११। ६	२	०।१३	३२	६।२५
२	३३।१०।१२	३	०।१९	३३	७। १
३	३२। ९।१८	४	०।२६	३४	७। ८
४	३१। ८।२४	५	१। २	३५	७।१४
५	३०। ८। ०	६	१। ९	३६	७।२०
६	२९। ७। ६	७	१।१५	३७	७।२७
७	२८। ६।१२	८	१।२१	३८	८। ३
८	२७। ५।१८	९	१।२८	३९	८।१०
९	२६। ४।२४	१०	२। ४	४०	८।१६
१०	२५। ४। ०	११	२।१०	४१	८।२२
११	२४। ३। ६	१२	२।१७	४२	८।२९
१२	२३। २।१२	१३	२।२३	४३	९। ५
१३	२२। १।१८	१४	३। ०	४४	९।१२
१४	२१। ०।२४	१५	३। ६	४५	९।१८
१५	२०। ०। ०	१६	३।१२	४६	९।२४
१६	१८।११। ६	१७	३।१९	४७	१०। १
१७	१७।१०।१२	१८	३।२५	४८	१०। ७
१८	१६। ९।१८	१९	४। २	४९	१०।१४
१९	१५। ८।२४	२०	४। ८	५०	१०।२०
२०	१४। ८। ०	२१	४।१४	५१	१०।२६
२१	१३। ७। ६	२२	४।२१	५२	११। ३
२२	१२। ६।१२	२३	४।२७	५३	११। ९
२३	११। ५।१८	२४	५। ४	५४	११।१६
२४	१०। ४।२४	२५	५।१०	५५	११।२२
२५	९। ४। ०	२६	५।१६	५६	११।२८
२६	८। ३। ६	२७	५।२३	५७	१२। ५
२७	७। २।१२	२८	५।२९	५८	१२।११
२८	६। १।१८	२९	६। ६	५९	१२।१८
२९	५। ०।२४	३०	६।१२	६०	१२।२४

तृतीय कक्षा

क्रम	व. मा. दि.	कला	मा. दि.	कला	मा. दि.
०	८। ०। ०	१	०। ६	३१	६।१८
१	३८।११। ६	२	०।१३	३२	६।२५
२	३७।१०।१२	३	०।१९	३३	७। १
३	३६। ९।१८	४	०।२६	३४	७। ८
४	३५। ८।२४	५	१। २	३५	७।१४
५	३४। ८। ०	६	१। ९	३६	७।२०
६	३३। ७। ६	७	१।१५	३७	७।२७
७	३२। ६।१२	८	१।२१	३८	८। ३
८	३१। ५।१८	९	१।२८	३९	८।१०
९	३०। ४।२४	१०	२। ४	४०	८।१६
१०	२९। ४। ०	११	२।१०	४१	८।२२
११	२८। ३। ६	१२	२।१७	४२	८।२९
१२	२७। २।१२	१३	२।२३	४३	९। ५
१३	२६। १।१८	१४	३। ०	४४	९।१२
१४	२५। ०।२४	१५	३। ६	४५	९।१८
१५	२४। ०। ०	१६	३।१२	४६	९।२४
१६	२२।११। ६	१७	३।१९	४७	१०। १
१७	२१।१०।१२	१८	३।२५	४८	१०। ७
१८	२०। ९।१८	१९	४। २	४९	१०।१४
१९	१९। ८।२४	२०	४। ८	५०	१०।२०
२०	१८। ८। ०	२१	४।१४	५१	१०।२६
२१	१७। ७। ६	२२	४।२१	५२	११। ३
२२	१६। ६।१२	२३	४।२७	५३	११। ९
२३	१५। ५।१८	२४	५। ४	५४	११।१६
२४	१४। ४।२४	२५	५।१०	५५	११।२२
२५	१३। ४। ०	२६	५।१६	५६	११।२८
२६	१२। ३। ६	२७	५।२३	५७	१२। ५
२७	११। २।१२	२८	५।२९	५८	१२।११
२८	१०। १।१८	२९	६। ६	५९	१२।१८
२९	९। ०।२४	३०	६।१२	६०	१२।२४

चतुर्थ कक्षा

क्रम	व. मा. दि.	कला	मा. दि.	कला	मा. दि.
०	२८। ०। ०	१	०। ७	३१	७।१३
१	६२। ९।१८	२	०।१४	३२	७।२०
२	६१। ७। ६	३	०।२२	३३	७।२८
३	६०। ४।२४	४	०।२९	३४	८। ५
४	५९। २।१२	५	१। ६	३५	८।१२
५	५८। ०। ०	६	१।१३	३६	८।१९
६	५६। ९।१८	७	१।२०	३७	८।२६
७	५५। ७। ६	८	१।२८	३८	९। ४
८	५४। ४।२४	९	२। ५	३९	९।११
९	५३। २।१२	१०	२।१२	४०	९।१८
१०	५२। ०। ०	११	२।१९	४१	९।२५
११	५०। ९।१८	१२	२।२६	४२	१०। २
१२	४९। ७। ६	१३	३। ४	४३	१०।१०
१३	४८। ४।२४	१४	३।११	४४	१०।१७
१४	४७। २।१२	१५	३।१८	४५	१०।२४
१५	४६। ०। ०	१६	३।२५	४६	११। १
१६	४४। ९।१८	१७	४। २	४७	११। ८
१७	४३। ७। ६	१८	४।१०	४८	११।१६
१८	४२। ४।२४	१९	४।१७	४९	११।२३
१९	४१। २।१२	२०	४।२४	५०	१२। ०
२०	४०। ०। ०	२१	५। १	५१	१२। ७
२१	३८। ९।१८	२२	५। ८	५२	१२।१४
२२	३७। ७। ६	२३	५।१६	५३	१२।२२
२३	३६। ४।२४	२४	५।२३	५४	१२।२९
२४	३५। २।१२	२५	६। ०	५५	१३। ६
२५	३४। ०। ०	२६	६। ७	५६	१३।१३
२६	३२। ९।१८	२७	६।१४	५७	१३।२०
२७	३१। ७। ६	२८	६।२२	५८	१३।२८
२८	३०। ४।२४	२९	६।२९	५९	१४। ५
२९	२९। २।१२	३०	७। ६	६०	१४।१२

पंचम कक्षा

क्रम	व. मा. दि.	कला	मा. दि.	कला	मा. दि.
०	३६। ०। ०	१	०। ७	३१	७।१३
१	७०। ९।१८	२	०।१४	३२	७।२०
२	६९। ७। ६	३	०।२२	३३	७।२८
३	६८। ४।२४	४	०।२९	३४	८। ५
४	६७। २।१२	५	१। ६	३५	८।१२
५	६६। ०। ०	६	१।१३	३६	८।१९
६	६४। ९।१८	७	१।२०	३७	८।२६
७	६३। ७। ६	८	१।२८	३८	९। ४
८	६२। ४।२४	९	२। ५	३९	९।११
९	६१। २।१२	१०	२।१२	४०	९।१८
१०	६०। ०। ०	११	२।१९	४१	९।२५
११	५८। ९।१८	१२	२।२६	४२	१०। २
१२	५७। ७। ६	१३	३। ४	४३	१०।१०
१३	५६। ४।२४	१४	३।११	४४	१०।१७
१४	५५। २।१२	१५	३।१८	४५	१०।२४
१५	५४। ०। ०	१६	३।२५	४६	११। १
१६	५२। ९।१८	१७	४। २	४७	११। ८
१७	५१। ७। ६	१८	४।१०	४८	११।१६
१८	५०। ४।२४	१९	४।१७	४९	११।२३
१९	४९। २।१२	२०	४।२४	५०	१२। ०
२०	४८। ०। ०	२१	५। १	५१	१२। ७
२१	४६। ९।१८	२२	५। ८	५२	१२।१४
२२	४५। ७। ६	२३	५।१६	५३	१२।२२
२३	४४। ४।२४	२४	५।२३	५४	१२।२९
२४	४३। २।१२	२५	६। ०	५५	१३। ६
२५	४२। ०। ०	२६	६। ७	५६	१३।१३
२६	४०। ९।१८	२७	६।१४	५७	१३।२०
२७	३९। ७। ६	२८	६।२२	५८	१३।२८
२८	३८। ४।२४	२९	६।२९	५९	१४। ५
२९	३७। २।१२	३०	७। ६	६०	१४।१२

ई. सन	रा.प्र.क.	ई. सन	रा.प्र.क.
१९००	९।२१। २	१९१२	[illegible]
१९०१	[illegible]		

(अपु-साधन)

कोष्ठक (३) [द्वितीय भाग]

षष्ठ कक्षा

क्रम	व. मा. दि.	कला	मा. दि.	कला	मा. दि.
०	४४। ०। ०	१	०। ७	३१	७।१३
१	७८। ९।१८	२	०।१४	३२	७।२०
२	७७। ७। ६	३	०।२२	३३	७।२८
३	७६। ४।२४	४	०।२९	३४	८। ५
४	७५। २।१२	५	१। ६	३५	८।१२
५	७४। ०। ०	६	१।१३	३६	८।१९
६	७२। ९।१८	७	१।२०	३७	८।२६
७	७१। ७। ६	८	१।२८	३८	९। ४
८	७०। ४।२४	९	२। ५	३९	९।११
९	६९। २।१२	१०	२।१२	४०	९।१८
१०	६८। ०। ०	११	२।१९	४१	९।२५
११	६६। ९।१८	१२	२।२६	४२	१०। २
१२	६५। ७। ६	१३	३। ४	४३	१०।१०
१३	६४। ४।२४	१४	३।११	४४	१०।१७
१४	६३। २।१२	१५	३।१८	४५	१०।२४
१५	६२। ०। ०	१६	३।२५	४६	११। १
१६	६०। ९।१८	१७	४। २	४७	११। ८
१७	५९। ७। ६	१८	४।१०	४८	११।१६
१८	५८। ४।२४	१९	४।१७	४९	११।२३
१९	५७। २।१२	२०	४।२४	५०	१२। ०
२०	५६। ०। ०	२१	५। १	५१	१२। ७
२१	५४। ९।१८	२२	५। ८	५२	१२।१४
२२	५३। ७। ६	२३	५।१६	५३	१२।२२
२३	५२। ४।२४	२४	५।२३	५४	१२।२९
२४	५१। २।१२	२५	६। ०	५५	१३। ६
२५	५०। ०। ०	२६	६। ७	५६	१३।१३
२६	४८। ९।१८	२७	६।१४	५७	१३।२०
२७	४७। ७। ६	२८	६।२२	५८	१३।२८
२८	४६। ४।२४	२९	६।२९	५९	१४। ५
२९	४५। २।१२	३०	७। ६	६०	१४।१२

सप्तम कक्षा

क्रम	व. मा. दि.	कला	मा. दि.	कला	मा. दि.
०	५६। ०। ०	१	०। ८	३१	८। ८
१	९४। ८। ०	२	०।१६	३२	८।१६
२	९३। ४। ०	३	०।२४	३३	८।२४
३	९२। ०। ०	४	१। २	३४	९। २
४	९०। ८। ०	५	१।१०	३५	९।१०
५	८९। ४। ०	६	१।१८	३६	९।१८
६	८८। ०। ०	७	१।२६	३७	९।२६
७	८६। ८। ०	८	२। ४	३८	१०। ४
८	८५। ४। ०	९	२।१२	३९	१०।१२
९	८४। ०। ०	१०	२।२०	४०	१०।२०
१०	८२। ८। ०	११	२।२८	४१	१०।२८
११	८१। ४। ०	१२	३। ६	४२	११। ६
१२	८०। ०। ०	१३	३।१४	४३	११।१४
१३	७८। ८। ०	१४	३।२२	४४	११।२२
१४	७७। ४। ०	१५	४। ०	४५	१२। ०
१५	७६। ०। ०	१६	४। ८	४६	१२। ८
१६	७४। ८। ०	१७	४।१६	४७	१२।१६
१७	७३। ४। ०	१८	४।२४	४८	१२।२४
१८	७२। ०। ०	१९	५। २	४९	१३। २
१९	७०। ८। ०	२०	५।१०	५०	१३।१०
२०	६९। ४। ०	२१	५।१८	५१	१३।१८
२१	६८। ०। ०	२२	५।२६	५२	१३।२६
२२	६६। ८। ०	२३	६। ४	५३	१४। ४
२३	६५। ४। ०	२४	६।१२	५४	१४।१२
२४	६४। ०। ०	२५	६।२०	५५	१४।२०
२५	६२। ८। ०	२६	६।२८	५६	१४।२८
२६	६१। ४। ०	२७	७। ६	५७	१५। ६
२७	६०। ०। ०	२८	७।१४	५८	१५।१४
२८	५८। ८। ०	२९	७।२२	५९	१५।२२
२९	५७। ४। ०	३०	८। ०	६०	१६। ०

अष्टम कक्षा

क्रम	व. मा. दि.	कला	मा. दि.	कला	मा. दि.
०	६८। ०।०	१	०। ८	३१	८। ८
१	१०६। ८।०	२	०।१६	३२	८।१६
२	१०५। ४।०	३	०।२४	३३	८।२४
३	१०४। ०।०	४	१। २	३४	९। २
४	१०२। ८।०	५	१।१०	३५	९।१०
५	१०१। ४।०	६	१।१८	३६	९।१८
६	१००। ०।०	७	१।२६	३७	९।२६
७	९८। ८।०	८	२। ४	३८	१०। ४
८	९७। ४।०	९	२।१२	३९	१०।१२
९	९६। ०।०	१०	२।२०	४०	१०।२०
१०	९४। ८।०	११	२।२८	४१	१०।२८
११	९३। ४।०	१२	३। ६	४२	११। ६
१२	९२। ०।०	१३	३।१४	४३	११।१४
१३	९०। ८।०	१४	३।२२	४४	११।२२
१४	८९। ४।०	१५	४। ०	४५	१२। ०
१५	८८। ०।०	१६	४। ८	४६	१२। ८
१६	८६। ८।०	१७	४।१६	४७	१२।१६
१७	८५। ४।०	१८	४।२४	४८	१२।२४
१८	८४। ०।०	१९	५। २	४९	१३। २
१९	८२। ८।०	२०	५।१०	५०	१३।१०
२०	८१। ४।०	२१	५।१८	५१	१३।१८
२१	८०। ०।०	२२	५।२६	५२	१३।२६
२२	७८। ८।०	२३	६। ४	५३	१४। ४
२३	७७। ४।०	२४	६।१२	५४	१४।१२
२४	७६। ०।०	२५	६।२०	५५	१४।२०
२५	७४। ८।०	२६	६।२८	५६	१४।२८
२६	७३। ४।०	२७	७। ६	५७	१५। ६
२७	७२। ०।०	२८	७।१४	५८	१५।१४
२८	७०। ८।०	२९	७।२२	५९	१५।२२
२९	६९। ४।०	३०	८। ०	६०	१६। ०

नवम कक्षा

क्रम	व. मा. दि.	कला	मा. दि.	कला	मा. दि.
०	८०। ०।०	१	०। ८	३१	८। ८
१	११८। ८।०	२	०।१६	३२	८।१६
२	११७। ४।०	३	०।२४	३३	८।२४
३	११६। ०।०	४	१। २	३४	९। २
४	११४। ८।०	५	१।१०	३५	९।१०
५	११३। ४।०	६	१।१८	३६	९।१८
६	११२। ०।०	७	१।२६	३७	९।२६
७	११०। ८।०	८	२। ४	३८	१०। ४
८	१०९। ४।०	९	२।१२	३९	१०।१२
९	१०८। ०।०	१०	२।२०	४०	१०।२०
१०	१०६। ८।०	११	२।२८	४१	१०।२८
११	१०५। ४।०	१२	३। ६	४२	११। ६
१२	१०४। ०।०	१३	३।१४	४३	११।१४
१३	१०२। ८।०	१४	३।२२	४४	११।२२
१४	१०१। ४।०	१५	४। ०	४५	१२। ०
१५	१००। ०।०	१६	४। ८	४६	१२। ८
१६	९८। ८।०	१७	४।१६	४७	१२।१६
१७	९७। ४।०	१८	४।२४	४८	१२।२४
१८	९६। ०।०	१९	५। २	४९	१३। २
१९	९४। ८।०	२०	५।१०	५०	१३।१०
२०	९३। ४।०	२१	५।१८	५१	१३।१८
२१	९२। ०।०	२२	५।२६	५२	१३।२६
२२	९०। ८।०	२३	६। ४	५३	१४। ४
२३	८९। ४।०	२४	६।१२	५४	१४।१२
२४	८८। ०।०	२५	६।२०	५५	१४।२०
२५	८६। ८।०	२६	६।२८	५६	१४।२८
२६	८५। ४।०	२७	७। ६	५७	१५। ६
२७	८४। ०।०	२८	७।१४	५८	१५।१४
२८	८२। ८।०	२९	७।२२	५९	१५।२२
२९	८१। ४।०	३०	८। ०	६०	१६। ०

जैमिनि-सम्मत ग्रह-दृष्टि चक्र

इस राशि में स्थित ग्रह	इन राशियों में स्थित ग्रहों को देखता है
मेष	सिंह, वृश्चिक, कुम्भ
वृष	कर्क, तुला, मकर
मिथुन	कन्या, धनु, मीन
कर्क	वृश्चिक, कुम्भ, वृष
सिंह	मेष, तुला, मकर
कन्या	धनु, मीन, मिथुन
तुला	वृष, सिंह, कुम्भ
वृश्चि.	मेष, मकर, कर्क
धनु	मीन, मिथुन, कन्या
मकर	सिंह, वृश्चिक, वृष
कुम्भ	कर्क, तुला, मेष
मीन	मिथुन, कन्या, धनु

जैमिनि मत से ग्रह-दृष्टि:—ऊपर बने चक्र से ज्ञात होता है कि—मेष में बैठा ग्रह सिंह, वृश्चिक और कुम्भ में बैठे ग्रहों को देखेगा। हम इसे इस प्रकार भी कह सकते हैं, कि—सिंह, वृश्चिक और कुम्भ में बैठे ग्रह ही मेष में बैठे ग्रह को देखेंगे, दूसरे नहीं। इसी प्रकार दूसरी राशियों के लिए भी समझ लेना चाहिए।

कोष्ठक (३) [प्रथम भाग]

प्रथम कक्षा

क्रम	व. मा. दि.	कला	मा. दि.	कला	मा. दि.
०	०।०।०	१	०।६	३१	६।१८
१	३०।११।६	२	०।१३	३२	६।२५
२	२९।१०।१२	३	०।१९	३३	७।१
३	२८।९।१८	४	०।२६	३४	७।८
४	२७।८।२४	५	१।२	३५	७।१४
५	२६।८।०	६	१।९	३६	७।२०
६	२५।७।६	७	१।१५	३७	७।२७
७	२४।६।१२	८	१।२१	३८	८।३
८	२३।५।१८	९	१।२८	३९	८।१०
९	२२।४।२४	१०	२।४	४०	८।१६
१०	२१।४।०	११	२।१०	४१	८।२२
११	२०।३।६	१२	२।१७	४२	८।२९
१२	१९।२।१२	१३	२।२३	४३	९।५
१३	१८।१।१८	१४	३।०	४४	९।१२
१४	१७।०।२४	१५	३।६	४५	९।१८
१५	१६।०।०	१६	३।१२	४६	९।२४
१६	१४।११।६	१७	३।१९	४७	१०।१
१७	१३।१०।१२	१८	३।२५	४८	१०।७
१८	१२।९।१८	१९	४।२	४९	१०।१४
१९	११।८।२४	२०	४।८	५०	१०।२०
२०	१०।८।०	२१	४।१४	५१	१०।२६
२१	९।७।६	२२	४।२१	५२	११।३
२२	८।६।१२	२३	४।२७	५३	११।९
२३	७।५।१८	२४	५।४	५४	११।१६
२४	६।४।२४	२५	५।१०	५५	११।२२
२५	५।४।०	२६	५।१६	५६	११।२८
२६	४।३।६	२७	५।२३	५७	१२।५
२७	३।२।१२	२८	५।२९	५८	१२।११
२८	२।१।१८	२९	६।६	५९	१२।१८
२९	१।०।२४	३०	६।१२	६०	१२।२४

द्वितीय कक्षा

क्रम	व. मा. दि.	कला	मा. दि.	कला	मा. दि.
०	४।०।०	१	०।६	३१	६।१८
१	३४।११।६	२	०।१३	३२	६।२५
२	३३।१०।१२	३	०।१९	३३	७।१
३	३२।९।१८	४	०।२६	३४	७।८
४	३१।८।२४	५	१।२	३५	७।१४
५	३०।८।०	६	१।९	३६	७।२०
६	२९।७।६	७	१।१५	३७	७।२७
७	२८।६।१२	८	१।२१	३८	८।३
८	२७।५।१८	९	१।२८	३९	८।१०
९	२६।४।२४	१०	२।४	४०	८।१६
१०	२५।४।०	११	२।१०	४१	८।२२
११	२४।३।६	१२	२।१७	४२	८।२९
१२	२३।२।१२	१३	२।२३	४३	९।५
१३	२२।१।१८	१४	३।०	४४	९।१२
१४	२१।०।२४	१५	३।६	४५	९।१८
१५	२०।०।०	१६	३।१२	४६	९।२४
१६	१८।११।६	१७	३।१९	४७	१०।१
१७	१७।१०।१२	१८	३।२५	४८	१०।७
१८	१६।९।१८	१९	४।२	४९	१०।१४
१९	१५।८।२४	२०	४।८	५०	१०।२०
२०	१४।८।०	२१	४।१४	५१	१०।२६
२१	१३।७।६	२२	४।२१	५२	११।३
२२	१२।६।१२	२३	४।२७	५३	११।९
२३	११।५।१८	२४	५।४	५४	११।१६
२४	१०।४।२४	२५	५।१०	५५	११।२२
२५	९।४।०	२६	५।१६	५६	११।२८
२६	८।३।६	२७	५।२३	५७	१२।५
२७	७।२।१२	२८	५।२९	५८	१२।११
२८	६।१।१८	२९	६।६	५९	१२।१८
२९	५।०।२४	३०	६।१२	६०	१२।२४

तृतीय कक्षा

क्रम	व. मा. दि.	कला	मा. दि.	कला	मा. दि.
०	८।०।०	१	०।६	३१	६।१८
१	३८।११।६	२	०।१३	३२	६।२५
२	३७।१०।१२	३	०।१९	३३	७।१
३	३६।९।१८	४	०।२६	३४	७।८
४	३५।८।२४	५	१।२	३५	७।१४
५	३४।८।०	६	१।९	३६	७।२०
६	३३।७।६	७	१।१५	३७	७।२७
७	३२।६।१२	८	१।२१	३८	८।३
८	३१।५।१८	९	१।२८	३९	८।१०
९	३०।४।२४	१०	२।४	४०	८।१६
१०	२९।४।०	११	२।१०	४१	८।२२
११	२८।३।६	१२	२।१७	४२	८।२९
१२	२७।२।१२	१३	२।२३	४३	९।५
१३	२६।१।१८	१४	३।०	४४	९।१२
१४	२५।०।२४	१५	३।६	४५	९।१८
१५	२४।०।०	१६	३।१२	४६	९।२४
१६	२२।११।६	१७	३।१९	४७	१०।१
१७	२१।१०।१२	१८	३।२५	४८	१०।७
१८	२०।९।१८	१९	४।२	४९	१०।१४
१९	१९।८।२४	२०	४।८	५०	१०।२०
२०	१८।८।०	२१	४।१४	५१	१०।२६
२१	१७।७।६	२२	४।२१	५२	११।३
२२	१६।६।१२	२३	४।२७	५३	११।९
२३	१५।५।१८	२४	५।४	५४	११।१६
२४	१४।४।२४	२५	५।१०	५५	११।२२
२५	१३।४।०	२६	५।१६	५६	११।२८
२६	१२।३।६	२७	५।२३	५७	१२।५
२७	११।२।१२	२८	५।२९	५८	१२।११
२८	१०।१।१८	२९	६।६	५९	१२।१८
२९	९।०।२४	३०	६।१२	६०	१२।२४

चतुर्थ कक्षा

क्रम	व. मा. दि.	कला	मा. दि.	कला	मा. दि.
०	२८।०।०	१	०।७	३१	७।१३
१	६२।९।१८	२	०।१४	३२	७।२०
२	६१।७।६	३	०।२२	३३	७।२८
३	६०।४।२४	४	०।२९	३४	८।५
४	५९।२।१२	५	१।६	३५	८।१२
५	५८।०।०	६	१।१३	३६	८।१९
६	५६।९।१८	७	१।२०	३७	८।२६
७	५५।७।६	८	१।२८	३८	९।४
८	५४।४।२४	९	२।५	३९	९।११
९	५३।२।१२	१०	२।१२	४०	९।१८
१०	५२।०।०	११	२।१९	४१	९।२५
११	५०।९।१८	१२	२।२६	४२	१०।२
१२	४९।७।६	१३	३।४	४३	१०।१०
१३	४८।४।२४	१४	३।११	४४	१०।१७
१४	४७।२।१२	१५	३।१८	४५	१०।२४
१५	४६।०।०	१६	३।२५	४६	११।१
१६	४४।९।१८	१७	४।२	४७	११।८
१७	४३।७।६	१८	४।१०	४८	११।१६
१८	४२।४।२४	१९	४।१७	४९	११।२३
१९	४१।२।१२	२०	४।२४	५०	१२।०
२०	४०।०।०	२१	५।१	५१	१२।७
२१	३८।९।१८	२२	५।८	५२	१२।१४
२२	३७।७।६	२३	५।१६	५३	१२।२२
२३	३६।४।२४	२४	५।२३	५४	१२।२९
२४	३५।२।१२	२५	६।०	५५	१३।६
२५	३४।०।०	२६	६।७	५६	१३।१३
२६	३२।९।१८	२७	६।१४	५७	१३।२०
२७	३१।७।६	२८	६।२२	५८	१३।२८
२८	३०।४।२४	२९	६।२९	५९	१४।५
२९	२९।२।१२	३०	७।६	६०	१४।१२

पंचम कक्षा

क्रम	व. मा. दि.	कला	मा. दि.	कला	मा. दि.
०	३६।०।०	१	०।७	३१	७।१३
१	७०।९।१८	२	०।१४	३२	७।२०
२	६९।७।६	३	०।२२	३३	७।२८
३	६८।४।२४	४	०।२९	३४	८।५
४	६७।२।१२	५	१।६	३५	८।१२
५	६६।०।०	६	१।१३	३६	८।१९
६	६४।९।१८	७	१।२०	३७	८।२६
७	६३।७।६	८	१।२८	३८	९।४
८	६२।४।२४	९	२।५	३९	९।११
९	६१।२।१२	१०	२।१२	४०	९।१८
१०	६०।०।०	११	२।१९	४१	९।२५
११	५८।९।१८	१२	२।२६	४२	१०।२
१२	५७।७।६	१३	३।४	४३	१०।१०
१३	५६।४।२४	१४	३।११	४४	१०।१७
१४	५५।२।१२	१५	३।१८	४५	१०।२४
१५	५४।०।०	१६	३।२५	४६	११।१
१६	५२।९।१८	१७	४।२	४७	११।८
१७	५१।७।६	१८	४।१०	४८	११।१६
१८	५०।४।२४	१९	४।१७	४९	११।२३
१९	४९।२।१२	२०	४।२४	५०	१२।०
२०	४८।०।०	२१	५।१	५१	१२।७
२१	४६।९।१८	२२	५।८	५२	१२।१४
२२	४५।७।६	२३	५।१६	५३	१२।२२
२३	४४।४।२४	२४	५।२३	५४	१२।२९
२४	४३।२।१२	२५	६।०	५५	१३।६
२५	४२।०।०	२६	६।७	५६	१३।१३
२६	४०।९।१८	२७	६।१४	५७	१३।२०
२७	३९।७।६	२८	६।२२	५८	१३।२८
२८	३८।४।२४	२९	६।२९	५९	१४।५
२९	३७।२।१२	३०	७।६	६०	१४।१२

ई. सन्	रा.प्र.क.	ई. सन्	रा.प्र.क.
१९००	९।८। ९	१९१२	९।०।०२
१९०१	९।९।५४		

(आयु-साधन)

कोष्ठक (३) [द्वितीय भाग]

षष्ठ कक्षा

अंश	व. मा. दि.	कला	मा. दि.	कला	मा. दि.
०	८८। ०। ०	१	०। ७	३१	७।१३
१	७८। ९।१८	२	०।१४	३२	७।२०
२	७७। ७। ६	३	०।२२	३३	७।२८
३	७६। ६।२४	४	०।२९	३४	८। ५
४	७५। २।१२	५	१। ६	३५	८।१२
५	७४। ०। ०	६	१।१३	३६	८।१९
६	७२। ९।१८	७	१।२०	३७	८।२६
७	७१। ७। ६	८	१।२८	३८	९। ४
८	७०। ४।२४	९	२। ५	३९	९।११
९	६९। २।१२	१०	२।१२	४०	९।१८
१०	६८। ०। ०	११	२।१९	४१	९।२५
११	६६। ९।१८	१२	२।२६	४२	१०। २
१२	६५। ७। ६	१३	३। ४	४३	१०।१०
१३	६४। ४।२४	१४	३।११	४४	१०।१७
१४	६३। २।१२	१५	३।१८	४५	१०।२४
१५	६२। ०। ०	१६	३।२५	४६	११। १
१६	६०। ९।१८	१७	४। २	४७	११। ८
१७	५९। ७। ६	१८	४।१०	४८	११।१६
१८	५८। ४।२४	१९	४।१७	४९	११।२३
१९	५७। २।१२	२०	४।२४	५०	१२। ०
२०	५६। ०। ०	२१	५। १	५१	१२। ७
२१	५४। ९।१८	२२	५। ८	५२	१२।१४
२२	५३। ७। ६	२३	५।१६	५३	१२।२२
२३	५२। ४।२४	२४	५।२३	५४	१२।२९
२४	५१। २।१२	२५	६। ०	५५	१३। ६
२५	५०। ०। ०	२६	६। ७	५६	१३।१३
२६	४८। ९।१८	२७	६।१४	५७	१३।२०
२७	४७। ७। ६	२८	६।२२	५८	१३।२८
२८	४६। ४।२४	२९	६।२९	५९	१४। ५
२९	४५। २।१२	३०	७। ६	६०	१४।१२

सप्तम कक्षा

अंश	व. मा. दि.	कला	मा. दि.	कला	मा. दि.
०	९६। ०। ०	१	०। ८	३१	८। ८
१	९४। ८। ०	२	०।१६	३२	८।१६
२	९३। ४। ०	३	०।२४	३३	८।२४
३	९२। ०। ०	४	१। २	३४	९। २
४	९०। ८। ०	५	१।१०	३५	९।१०
५	८९। ४। ०	६	१।१८	३६	९।१८
६	८८। ०। ०	७	१।२६	३७	९।२६
७	८६। ८। ०	८	२। ४	३८	१०। ४
८	८५। ४। ०	९	२।१२	३९	१०।१२
९	८४। ०। ०	१०	२।२०	४०	१०।२०
१०	८२। ८। ०	११	२।२८	४१	१०।२८
११	८१। ४। ०	१२	३। ६	४२	११। ६
१२	८०। ०। ०	१३	३।१४	४३	११।१४
१३	७८। ८। ०	१४	३।२२	४४	११।२२
१४	७७। ४। ०	१५	४। ०	४५	१२। ०
१५	७६। ०। ०	१६	४। ८	४६	१२। ८
१६	७४। ८। ०	१७	४।१६	४७	१२।१६
१७	७३। ४। ०	१८	४।२४	४८	१२।२४
१८	७२। ०। ०	१९	५। २	४९	१३। २
१९	७०। ८। ०	२०	५।१०	५०	१३।१०
२०	६९। ४। ०	२१	५।१८	५१	१३।१८
२१	६८। ०। ०	२२	५।२६	५२	१३।२६
२२	६६। ८। ०	२३	६। ४	५३	१४। ४
२३	६५। ४। ०	२४	६।१२	५४	१४।१२
२४	६४। ०। ०	२५	६।२०	५५	१४।२०
२५	६२। ८। ०	२६	६।२८	५६	१४।२८
२६	६१। ४। ०	२७	७। ६	५७	१५। ६
२७	६०। ०। ०	२८	७।१४	५८	१५।१४
२८	५८। ८। ०	२९	७।२२	५९	१५।२२
२९	५७। ४। ०	३०	८। ०	६०	१६। ०

अष्टम कक्षा

अंश	व. मा.दि.	कला	मा. दि.	कला	मा. दि.
०	६८। ०।०	१	०। ८	३१	८। ८
१	१०६। ८।०	२	०।१६	३२	८।१६
२	१०५। ४।०	३	०।२४	३३	८।२४
३	१०४। ०।०	४	१। २	३४	९। २
४	१०२। ८।०	५	१।१०	३५	९।१०
५	१०१। ४।०	६	१।१८	३६	९।१८
६	१००। ०।०	७	१।२६	३७	९।२६
७	९८। ८।०	८	२। ४	३८	१०। ४
८	९७। ४।०	९	२।१२	३९	१०।१२
९	९६। ०।०	१०	२।२०	४०	१०।२०
१०	९४। ८।०	११	२।२८	४१	१०।२८
११	९३। ४।०	१२	३। ६	४२	११। ६
१२	९२। ०।०	१३	३।१४	४३	११।१४
१३	९०। ८।०	१४	३।२२	४४	११।२२
१४	८९। ४।०	१५	४। ०	४५	१२। ०
१५	८८। ०।०	१६	४। ८	४६	१२। ८
१६	८६। ८।०	१७	४।१६	४७	१२।१६
१७	८५। ४।०	१८	४।२४	४८	१२।२४
१८	८४। ०।०	१९	५। २	४९	१३। २
१९	८२। ८।०	२०	५।१०	५०	१३।१०
२०	८१। ४।०	२१	५।१८	५१	१३।१८
२१	८०। ०।०	२२	५।२६	५२	१३।२६
२२	७८। ८।०	२३	६। ४	५३	१४। ४
२३	७७। ४।०	२४	६।१२	५४	१४।१२
२४	७६। ०।०	२५	६।२०	५५	१४।२०
२५	७४। ८।०	२६	६।२८	५६	१४।२८
२६	७३। ४।०	२७	७। ६	५७	१५। ६
२७	७२। ०।०	२८	७।१४	५८	१५।१४
२८	७०। ८।०	२९	७।२२	५९	१५।२२
२९	६९। ४।०	३०	८। ०	६०	१६। ०

नवम कक्षा

अंश	व. मा.दि.	कला	मा. दि.	कला	मा. दि.
०	८०। ०।०	१	०। ८	३१	८। ८
१	११८। ८।०	२	०।१६	३२	८।१६
२	११७। ४।०	३	०।२४	३३	८।२४
३	११६। ०।०	४	१। २	३४	९। २
४	११४। ८।०	५	१।१०	३५	९।१०
५	११३। ४।०	६	१।१८	३६	९।१८
६	११२। ०।०	७	१।२६	३७	९।२६
७	११०। ८।०	८	२। ४	३८	१०। ४
८	१०९। ४।०	९	२।१२	३९	१०।१२
९	१०८। ०।०	१०	२।२०	४०	१०।२०
१०	१०६। ८।०	११	२।२८	४१	१०।२८
११	१०५। ४।०	१२	३। ६	४२	११। ६
१२	१०४। ०।०	१३	३।१४	४३	११।१४
१३	१०२। ८।०	१४	३।२२	४४	११।२२
१४	१०१। ४।०	१५	४। ०	४५	१२। ०
१५	१००। ०।०	१६	४। ८	४६	१२। ८
१६	९८। ८।०	१७	४।१६	४७	१२।१६
१७	९७। ४।०	१८	४।२४	४८	१२।२४
१८	९६। ०।०	१९	५। २	४९	१३। २
१९	९४। ८।०	२०	५।१०	५०	१३।१०
२०	९३। ४।०	२१	५।१८	५१	१३।१८
२१	९२। ०।०	२२	५।२६	५२	१३।२६
२२	९०। ८।०	२३	६। ४	५३	१४। ४
२३	८९। ४।०	२४	६।१२	५४	१४।१२
२४	८८। ०।०	२५	६।२०	५५	१४।२०
२५	८६। ८।०	२६	६।२८	५६	१४।२८
२६	८५। ४।०	२७	७। ६	५७	१५। ६
२७	८४। ०।०	२८	७।१४	५८	१५।१४
२८	८२। ८।०	२९	७।२२	५९	१५।२२
२९	८१। ४।०	३०	८। ०	६०	१६। ०

जैमिनि-सम्मत ग्रह-दृष्टि चक्र

इस राशि में स्थित ग्रह	इन राशियों में स्थित ग्रहों को देखता है
मेष	सिंह, वृश्चिक, कुम्भ
वृष	कर्क, तुला, मकर
मिथुन	कन्या, धनु, मीन
कर्क	वृश्चिक, कुम्भ, वृष
सिंह	मेष, तुला, मकर
कन्या	धनु, मीन, मिथुन
तुला	वृष, सिंह, कुम्भ
वृश्चि.	मेष, मकर, कर्क
धनु	मीन, मिथुन, कन्या
मकर	सिंह, वृश्चिक, वृष
कुम्भ	कर्क, तुला, मेष
मीन	मिथुन, कन्या, धनु

जैमिनि मत से ग्रह-दृष्टि—ऊपर बने चक्र से ज्ञात होता है कि—मेष में बैठा ग्रह सिंह, वृश्चिक और कुम्भ में बैठे ग्रहों को देखेगा। हम इसे इस प्रकार भी कह सकते हैं, कि—सिंह, वृश्चिक और कुम्भ में बैठे ग्रह ही मेष में बैठे ग्रह को देखेंगे दूसरे नहीं। इसी प्रकार दूसरी राशियों के लिए भी समझ लेना चाहिए।

'गणक मार्तण्ड' से उद्धृत—

सन् १९०० से २०१९ तक का सूक्ष्म सूर्य स्पष्ट

(छः सात सेकण्डों में ही इष्टकालिक सूर्य स्पष्ट कीजिए)

प्राचीन शैली से लग्न और दशम स्पष्ट करने के लिए इष्ट कालिक सायन स्पष्ट सूर्य की आवश्यकता होती है। यहां पृष्ठ १८-१९ पर दिए गए तीन कोष्ठकों [सूर्य साधन कोष्ठक (१), (२) और (३)] से सन् १९०० से सन् २०१९ तक के १२० वर्षों में किसी भी समय का सायन सूर्य छः सात सैकिण्डों में ही स्पष्ट किया जा सकता है। इन कोष्ठकों द्वारा जाने गए स्पष्ट सायन सूर्य में २ कला से ज्यादा स्थूलता नहीं होगी। इसलिए इससे स्पष्ट किए गए लग्न एवं दशम में भी २ कला से अधिक अन्तर नहीं हो सकता। हमारे इष्ट काल में चार सैकण्ड की अशुद्धि होने पर भी लग्न, दशम में एक कला की अशुद्धि आ जाती है। सैकण्डों की तो बात ही क्या, हमारे इष्टकाल में मिनट तक की अशुद्धि अक्सर रहती ही है। अतः इन कोष्ठकों से स्पष्ट सायन सूर्य द्वारा स्पष्ट किए गए लग्न-दशम पर्याप्त सूक्ष्म माने जाएंगे।

सूर्य स्पष्ट करने की विधि—कोष्ठक नं. (१) से अपने ईस्वी सन् द्वारा, कोष्ठक नं. (२) से अपने महीने की तारीख द्वारा, तथा कोष्ठक नं. (३) से अपने इष्ट कालिक भा. स्टै. टा. के घण्टा मिनटों और तारीख द्वारा रा.अं.क. उठाएं। इन तीनों का योग (जोड़) ही आपका इष्ट कालिक स्पष्ट सायन सूर्य होगा। योग की राशि १२ हो या १२ से अधिक हो तो उसमें से १२ घटा दें। यदि आप का वर्ष लीप इयर (लुप्त वर्ष) हो तो सिर्फ फरवरी के बाद के महीनों की तारीख में १ जोड़कर कोष्ठक (२) को प्रयोग में लाएं।

उदाहरण (१)—सन् १९४५ की १३ मई को प्रातः १० घं. ३० मि. भा. स्टै. टा. पर सायन सूर्य स्पष्ट करें। कोष्ठक नं. (१) में सन् १९४५ के आगे ९ रा. २ अं. १३ क., कोष्ठक (२) में १३ मई को ४ रा. ११ अ. ३९ क. और कोष्ठक (३) में १० घं. २४ मि. के आगे २३ अप्रैल से ३० मई के नीचे ८ अ. १२ क. है। इन तीनों का योग १३ रा. २२ अ. ४ क. हुआ। इस में से १२ राशि घटाने पर १ रा. २२ अं. ४ क. हमारा इष्ट कालिक सायन स्पष्ट सूर्य हो गया।

उदाहरण (२)—ईस्वी सन् १९४८ की ८ अगस्त को शाम के ५ घं. ४० मि. (यानी १७ घं. ४० मि.) भा. स्टै. टा. पर सायन सूर्य स्पष्ट करना है। कोष्ठक (१) में ई. सन् १९४८ में ९ रा. १ अ. २९ क. है। हमारा सन् १९४८ लीप इयर है, और हमारी तारीख फरवरी के बाद की है, अतः कोष्ठक (२) में ८ अगस्त की जगह ९ अगस्त में देखा तो ७ रा. ५ अ. ५० क. मिलीं। कोष्ठक (३) में १७ घ. ३६ मि. के आगे "७ अगस्त से १४ सितम्बर" के नीचे ८ अं. २९ क. है। इन तीनों का योग १६ रा. १५ अ. ४८ क. हुआ। अतः इस ... रा. १५ अ. ४८ क. स्पष्ट सायन सूर्य हुआ।

सायन सूर्य को निरयण बनाना हो तो उसमें से उस दिन का अयनांश घटा दीजिए।

सूर्य साधन कोष्ठक (३)

काल (भा. स्टै. टा.)	१ जन. से १९ फर.; १७ नव से ३१ दिस.	२० फर से २३ मार्च; १५ अक्तू. से १६ नवं.	२४ मार्च से २२ अप्रै.; १५ सितं से १४ अक्तू.	२३ अप्रै. से ३० मई; ७ अग. से १४ सितं.	३१ मई से ३० जून; १ जुला. से ६ अग.	काल (भा. स्टै. टा.)	१ जन. से १९ फर.; १७ नवं. से ३१ दिस.	२० फर. से २३ मार्च; १५ अक्तू. से १६ नवं.	२४ मार्च से २२ अप्रै.; १५ सितं. से १४ अक्तू.	२३ अप्रै. से ३० मई; ७ अग. से १४ सितं.	३१ मई से ३० जून; १ जुला. से ६ अग.
घं. मि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	घं. मि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
०। ०	७।४६	७।४६	७।४६	७।४७	७।४७	१२। ०	८।१६	८।१६	८।१६	८।१५	८।१५
०।२४	७।४७	७।४७	७।४७	७।४७	७।४८	१२।२४	८।१७	८।१७	८।१७	८।१६	८।१६
०।४८	७।४८	७।४८	७।४८	७।४८	७।४९	१२।४८	८।१८	८।१८	८।१८	८।१७	८।१७
१।१२	७।४९	७।४९	७।४९	७।४९	७।५०	१३।१२	८।१९	८।१९	८।१९	८।१८	८।१८
१।३६	७।५०	७।५०	७।५०	७।५०	७।५१	१३।३६	८।२०	८।२०	८।२०	८।१९	८।१९
२। ०	७।५१	७।५१	७।५१	७।५१	७।५१	१४। ०	८।२१	८।२१	८।२१	८।२०	८।२०
२।२४	७।५२	७।५२	७।५२	७।५२	७।५२	१४।२४	८।२२	८।२२	८।२२	८।२१	८।२१
२।४८	७।५३	७।५३	७।५३	७।५३	७।५३	१४।४८	८।२३	८।२३	८।२३	८।२२	८।२२
३।१२	७।५४	७।५४	७।५४	७।५४	७।५४	१५।१२	८।२४	८।२४	८।२४	८।२३	८।२३
३।३६	७।५५	७।५५	७।५५	७।५५	७।५५	१५।३६	८।२५	८।२५	८।२५	८।२४	८।२४
४। ०	७।५६	७।५६	७।५६	७।५६	७।५६	१६। ०	८।२६	८।२६	८।२६	७।२५	८।२५
४।२४	७।५७	७।५७	७।५७	७।५७	७।५७	१६।२४	८।२७	८।२७	८।२७	८।२६	८।२६
४।४८	७।५८	७।५८	७।५८	७।५८	७।५८	१६।४८	८।२८	८।२८	८।२८	८।२७	८।२७
५।१२	७।५९	७।५९	७।५९	७।५९	७।५९	१७।१२	८।२९	८।२९	८।२९	८।२८	८।२८
५।३६	८। ०	८। ०	८। ०	८। ०	८। ०	१७।३६	८।३१	८।३०	८।२९	८।२९	८।२९
६। ०	८। १	८। १	८। १	८। १	८। १	१८। ०	८।३२	८।३१	८।३०	८।३०	८।२९
६।२४	८। २	८। २	८। २	८। २	८। २	१८।२४	८।३३	८।३२	८।३१	८।३१	८।३०
६।४८	८। ३	८। ३	८। ३	८। ३	८। ३	१८।४८	८।३४	८।३३	८।३२	८।३२	८।३१
७।१२	८। ४	८। ४	८। ४	८। ४	८। ४	१९।१२	८।३५	८।३४	८।३३	८।३३	८।३२
७।३६	८। ५	८। ५	८। ५	८। ५	८। ५	१९।३६	८।३६	८।३५	८।३४	८।३४	८।३३
८। ०	८। ६	८। ६	८। ६	८। ६	८। ६	२०। ०	८।३७	८।३६	८।३५	८।३५	८।३४
८।२४	८। ७	८। ७	८। ७	८। ७	८। ७	२०।२४	८।३८	८।३७	७।३६	८।३६	८।३५
८।४८	८। ८	८। ८	८। ८	८। ८	८। ७	२०।४८	८।३९	८।३८	८।३७	८।३७	८।३६
९।१२	८। ९	८। ९	८। ९	८। ९	८। ८	२१।१२	८।४०	८।३९	८।३८	८।३८	८।३७
९।३६	८।१०	८।१०	८।१०	८।१०	८। ९	२१।३६	८।४१	८।४०	८।३९	८।३९	८।३८
१०। ०	८।११	८।११	८।११	८।११	८।१०	२२। ०	८।४२	८।४१	८।४०	८।४०	८।३९
१०।२४	८।१२	८।१२	८।१२	८।१२	८।११	२२।२४	८।४३	८।४२	८।४१	८।४१	८।४०
१०।४८	८।१३	८।१३	८।१३	८।१३	८।१२	२२।४८	८।४४	८।४३	८।४२	८।४२	८।४१
११।१२	८।१४	८।१४	८।१४	८।१४	८।१३	२३।१२	८।४५	८।४४	८।४३	८।४३	८।४२
११।३६	८।१५	८।१५	८।१५	८।१४	८।१४	२३।३६	८।४६	८।४५	८।४४	८।४४	८।४३
१२। ०	८।१६	८।१६	८।१६	८।१५	८।१५	२४। ०	८।४७	८।४६	८।४५	८।४४	८।४४

सूर्य साधन कोष्ठक (१)

ई. सन्	रा.अं.क.	ई. सन्	रा.अं.क.	ई. सन्	रा.अं.क.	ई. सन्	रा.अं.क.	ई. सन्	रा.अं.क.	ई. सन्	रा.अं.क.	ई. सन्	रा.अं.क.	ई. सन्	रा.अं.क.	ई. सन्	रा.अं.क.	ई. सन्	रा.अं.क.
+१९००	९।२। ९	१९१२	९।१।१३	१९२४	९।१।१८	१९३६	९।१।२४	१९४८	९।१।२९	१९६०	९।१।३५	१९७२	९।१।४०	१९८४	९।१।४५	१९९६	९।१।५०	२००८	९।१।५६
१९०१	९।१।५४	१९१३	९।१।५९	१९२५	९।२। ४	१९३७	९।२।१०	१९४९	९।२।१५	१९६१	९।२।२०	१९७३	९।२।२६	१९८५	९।२।३१	१९९७	९।२।३६	२००९	९।२।४२
१९०२	९।१।३९	१९१४	९।१।४५	१९२६	९।१।४९	१९३८	९।१।५५	१९५०	९।२। ०	१९६२	९।२। ६	१९७४	९।२।११	१९८६	९।२।१७	१९९८	९।२।२२	२०१०	९।२।२७
१९०३	९।१।२४	१९१५	९।१।३०	१९२७	९।१।३४	१९३९	९।१।४०	१९५१	९।१।४५	१९६३	९।१।५१	१९७५	९।१।५६	१९८७	९।२। २	१९९९	९।२। ७	२०११	९।२।१२
१९०४	९।१। ९	१९१६	९।१।१५	१९२८	९।१।२०	१९४०	९।१।२५	१९५२	९।१।३१	१९६४	९।१।३६	१९७६	९।१।४१	१९८८	९।१।४७	२०००	९।१।५२	२०१२	९।१।५७
१९०५	९।१।५५	१९१७	९।२। १	१९२९	९।२। ६	१९४१	९।२।१२	१९५३	९।२।१७	१९६५	९।२।२२	१९७७	९।२।२८	१९८९	९।२।३४	२००१	९।२।३९	२०१३	९।२।४४
१९०६	९।१।४०	१९१८	९।१।४६	१९३०	९।१।५१	१९४२	९।१।५७	१९५४	९।२। २	१९६६	९।२। ८	१९७८	९।२।१३	१९९०	९।२।१९	२००२	९।२।२४	२०१४	९।२।३०
१९०७	९।१।२५	१९१९	९।१।३१	१९३१	९।१।३७	१९४३	९।१।४२	१९५५	९।१।४८	१९६७	९।१।५३	१९७९	९।१।५९	१९९१	९।२। ४	२००३	९।२।१०	२०१५	९।२।१५
१९०८	९।१।११	१९२०	९।१।१७	१९३२	९।१।२२	१९४४	९।१।२७	१९५६	९।१।३३	१९६८	९।१।३८	१९८०	९।१।४४	१९९२	९।१।४९	२००४	९।१।५५	२०१६	९।२। ०
१९०९	९।१।५७	१९२१	९।२। ३	१९३३	९।२। ८	१९४५	९।२।१३	१९५७	९।२।१९	१९६९	९।२।२४	१९८१	९।२।३०	१९९३	९।२।३५	२००५	९।२।४१	२०१७	९।२।४६
१९१०	९।१।४२	१९२२	९।१।४८	१९३४	९।१।५४	१९४६	९।१।५८	१९५८	९।२। ४	१९७०	९।२। ९	१९८२	९।२।१५	१९९४	९।२।२०	२००६	९।२।२६	२०१८	९।२।३१
१९११	९।१।२८	१९२३	९।१।३३	१९३५	९।१।३९	१९४७	९।१।४४	१९५९	९।१।४९	१९७१	९।१।५४	१९८३	९।२। ०	१९९५	९।२। ५	२००७	९।२।११	२०१९	९।२।१६

+ ईस्वी सन् १९०० लीप इयर (प्लुत वर्ष) नहीं था।

सूर्य साधन कोष्ठक (२)

तारीख	जनवरी रा. अं. क.	फरवरी रा. अं. क.	मार्च रा. अं. क.	अप्रैल रा. अं. क.	मई रा. अं. क.	जून रा. अं. क.	जुलाई रा. अं. क.	अगस्त रा. अं. क.	सितम्बर रा. अं. क.	अक्तूबर रा. अं. क.	नवम्बर रा. अं. क.	दिसम्बर रा. अं. क.	तारीख
१	०। ०। ०	१। १।३३	१।२९।५०	३। ०।४१	४। ०। ३	४।२९।५६	५।२८।३५	६।२८।१०	७।२७।५९	८।२७।१४	९।२७।५९	१०।२८।१३	१
२	०। १। १	१। २।३४	२। ०।५०	३। १।४०	४। १। १	५। ०।५३	५।२९।३२	६।२९। ८	७।२८।५७	८।२८।१३	९।२८।५९	१०।२९।१४	२
३	०। २। २	१। ३।३५	२। १।५०	३। २।४०	४। १।५९	५। १।५१	६। ०।३०	७। ०। ५	७।२९।५५	८।२९।१२	१०। ०। ०	११। ०।१५	३
४	०। ३। ३	१। ४।३६	२। २।५०	३। ३।३९	४। २।५७	५। २।४८	६। १।२७	७। १। ३	८। ०।५३	९। ०।१२	१०। १। ०	११। १।१५	४
५	०। ४। ५	१। ५।३७	२। ३।५०	३। ४।३८	४। ३।५५	५। ३।४५	६। २।२४	७। २। ०	८। १।५१	९। १।११	१०। २। ०	११। २।१६	५
६	०। ५। ६	१। ६।३७	२। ४।५०	३। ५।३७	४। ४।५३	५। ४।४३	६। ३।२१	७। २।५८	८। २।५०	९। २।१०	१०। ३। ०	११। ३।१७	६
७	०। ६। ७	१। ७।३८	२। ५।५०	३। ६।३६	४। ५।५१	५। ५।४०	६। ४।१८	७। ३।५५	८। ३।४८	९। ३। ९	१०। ४। ०	११। ४।१८	७
८	०। ७। ८	१। ८।३९	२। ६।५०	३। ७।३५	४। ६।४९	५। ६।३८	६। ५।१६	७। ४।५३	८। ४।४६	९। ४। ८	१०। ५। ०	११। ५।१९	८
९	०। ८। ९	१। ९।४०	२। ७।५०	३। ८।३४	४। ७।४७	५। ७।३५	६। ६।१३	७। ५।५०	८। ५।४४	९। ५। ७	१०। ६। १	११। ६।२०	९
१०	०। ९।१०	१।१०।४१	२। ८।५०	३। ९।३२	४। ८।४५	५। ८।३२	६। ७।१०	७। ६।४८	८। ६।४३	९। ६। ७	१०। ७। १	११। ७।२१	१०
११	०।१०।११	१।११।४१	२। ९।५०	३।१०।३१	४। ९।४३	५। ९।३०	६। ८। ७	७। ७।४५	८। ७।४१	९। ७। ६	१०। ८। १	११। ८।२२	११
१२	०।११।१२	१।१२।४२	२।१०।५०	३।११।३०	४।१०।४१	५।१०।२७	६। ९। ४	७। ८।४३	८। ८।३९	९। ८। ५	१०। ९। २	११। ९।२३	१२
१३	०।१२।१४	१।१३।४३	२।११।५०	३।१२।२९	४।११।३९	५।११।२५	६।१०। २	७। ९।४०	८। ९।३८	९। ९। ५	१०।१०। २	११।१०।२४	१३
१४	०।१३।१५	१।१४।४३	२।१२।५०	३।१३।२८	४।१२।३७	५।१२।२२	६।१०।५९	७।१०।३८	८।१०।३६	९।१०। ४	१०।११। ३	११।११।२५	१४
१५	०।१४।१६	१।१५।४४	२।१३।५०	३।१४।२७	४।१३।३५	५।१३।१९	६।११।५६	७।११।३६	८।११।३५	९।११। ४	१०।१२। ३	११।१२।२६	१५
१६	०।१५।१७	१।१६।४४	२।१४।४९	३।१५।२५	४।१४।३३	५।१४।१७	६।१२।५४	७।१२।३३	८।१२।३३	९।१२। ३	१०।१३। ३	११।१३।२७	१६
१७	०।१६।१८	१।१७।४५	२।१५।४९	३।१६।२४	४।१५।३१	५।१५।१४	६।१३।५१	७।१३।३१	८।१३।३२	९।१३। ३	१०।१४। ४	११।१४।२८	१७
१८	०।१७।१९	१।१८।४६	२।१६।४९	३।१७।२३	४।१६।२९	५।१६।११	६।१४।४८	७।१४।२९	८।१४।३०	९।१४। २	१०।१५। ४	११।१५।२९	१८
१९	०।१८।२०	१।१९।४६	२।१७।४९	३।१८।२२	४।१७।२६	५।१७। ८	६।१५।४५	७।१५।२७	८।१५।२९	९।१५। २	१०।१६। ५	११।१६।३१	१९
२०	०।१९।२२	१।२०।४७	२।१८।४८	३।१९।२०	४।१८।२४	५।१८। ६	६।१६।४३	७।१६।२४	८।१६।२८	९।१६। २	१०।१७। ५	११।१७।३२	२०
२१	०।२०।२३	१।२१।४७	२।१९।४८	३।२०।१९	४।१९।२२	५।१९। ३	६।१७।४०	७।१७।२२	८।१७।२६	९।१७। १	१०।१८। ६	११।१८।३३	२१
२२	०।२१।२४	१।२२।४८	२।२०।४७	३।२१।१७	४।२०।२०	५।२०। ०	६।१८।३७	७।१८।२०	८।१८।२५	९।१८। १	१०।१९। ७	११।१९।३४	२२
२३	०।२२।२५	१।२३।४८	२।२१।४७	३।२२।१६	४।२१।१८	५।२०।५८	६।१९।३५	७।१९।१८	८।१९।२४	९।१९। १	१०।२०। ७	११।२०।३५	२३
२४	०।२३।२६	१।२४।४८	२।२२।४६	३।२३।१४	४।२२।१५	५।२१।५५	६।२०।३२	७।२०।१६	८।२०।२२	९।२०। ०	१०।२१। ८	११।२१।३६	२४
२५	०।२४।२७	१।२५।४९	२।२३।४६	३।२४।१३	४।२३।१३	५।२२।५२	६।२१।२९	७।२१।१३	८।२१।२१	९।२१। ०	१०।२२। ९	११।२२।३७	२५
२६	०।२५।२८	१।२६।४९	२।२४।४५	३।२५।११	४।२४।११	५।२३।४९	६।२२।२६	७।२२।११	८।२२।२०	९।२२। ०	१०।२३। ९	११।२३।३८	२६
२७	०।२६।२९	१।२७।४९	२।२५।४४	३।२६। ९	४।२५। ८	५।२४।४६	६।२३।२४	७।२३। ९	८।२३।१९	९।२३। ०	१०।२४।१०	११।२४।३९	२७
२८	०।२७।३०	१।२८।५०	२।२६।४४	३।२७। ८	४।२६। ६	५।२५।४४	६।२४।२१	७।२४। ७	८।२४।१८	९।२४। ०	१०।२५।११	११।२५।४०	२८
२९	०।२८।३१	१।२९।५०	२।२७।४३	३।२८। ६	४।२७। ३	५।२६।४१	६।२५।१८	७।२५। ५	८।२५।१७	९।२५। ०	१०।२६।१२	११।२६।४२	२९
३०	०।२९।३२	....	२।२८।४३	३।२९। ४	४।२८। १	५।२७।३८	६।२६।१६	७।२६। ३	८।२६।१५	९।२५।५९	१०।२७।१२	११।२७।४३	३०
३१	१। ०।३२	....	२।२९।४२	....	४।२८।५९	....	६।२७।१३	७।२७। १	....	९।२६।५९	....	११।२८।४४	३१
												११।२९।४५	३२

'गणक मार्तण्ड' से—

—: समस्त उत्तर भारत की लग्न सारणियां :—

प्राचीन पद्धति से लग्न साधन

पिछले वर्षों में हम अपने पाठकों को नवीन शैली (साम्पातिक काल) से लग्न स्पष्ट-करने की विधि बतला चुके हैं। इस बार हम उन्हें प्राचीन शैली में (स्पष्ट-सूर्य और इष्टकाल द्वारा) लग्न साधन करने का सरल प्रकार बतलाएंगे। एतदर्थ हमने यहां पृष्ठ २१-२२ पर सारे उत्तर भारत (उत्तर अक्षांश २४से ३६ तक) के लिए उपयोगी लग्न सारणियां दी गई हैं। इनसे इष्टकाल का लग्न इस प्रकार स्पष्ट कीजिए—

इष्टकाल का सायन सूर्य स्पष्ट कीजिए। (पृष्ठ १८-१९ पर दी गई सारणियों से इष्टकालिक सायन सूर्य आसानी से स्पष्ट किया जा सकता है)। इष्टकाल यदि घड़ी पलों में है तो उसे घण्टा मिनटों में बदल लें। अपने नगर के अक्षांश वाली लग्न सारणी में (लग्न सारणी के अपने अक्षांश वाले कालम में) इष्टकालिक सायन सूर्य की राशि-अंशों से घं.मि. उठाएं। लग्न सारणी ६-६ अंशों के अन्तर पर बनी हुई है। अत. सूर्य के शेष अंश-कलाओं को कला बनाकर उन्हें सारणी में लिखे अन्तर से गुणा करके ३६० का भाग देकर एक लब्धि (मिनट) प्राप्त करें। इसे सारणी से उठाए गए घं. मि. में जोड दें। अब इन घण्टा-मिनटों को इष्टकाल के घन्टामिनटों में जोड़ने पर जो घं.मि.मिलें, इन्हें अपनी (अपने अक्षांश की) लग्नसारणी में ढूंढिये। सारणी में जहां इनके बराबर या इनके लगभग घं. मि. मिलें, उनके बाईं ओर पहले कालम में लिखे राशि-अंशों को अलग लिख लें। शेष मिनटों को ६ से गुणा करके उन्हें सारणी में दिए गए अन्तर से भाग देकर दो लब्धियां (अं. क.) प्राप्त करें। इन्हें अलग लिखे राशि-अंशों में जोड़ने पर आपका इष्टकालिक सायन लग्न स्पष्ट हो जाएगा। इसमें से अपने ईस्वी सन् का अयनांश (जो इस पृष्ठ पर दी गई अयनांश सारणी से प्राप्त किया जा सकता है) घटा देने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण—चण्डीगढ़ में सन् १९७७ ई. की १५ जून को शाम के ५ बजकर २५ मिनट पर लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सायन सूर्य २ रा. २४ अं; १५ क. और इष्टकाल ३० घ. ७ प. और घण्टा मिनटात्मक इष्ट १२ घं. ३ मि. है। चण्डीगढ के अक्षांश ३० अं. ४४ क. उत्तर हैं। अत: इसके समीप के अक्षांश ३१ अंश वाली लग्न सारणी को प्रयोग में लाएंगे। सायन सूर्य की २ राशि २४ अ. के आगे ४ घ. ३४ मि. मिले। सायन सूर्य के बाकी ० अंश और १५ कलाओं को कला बनाया, तो १५ कलाएं हुईं। इन्हें सारणी में लिखे अन्तर मिनट २६ से गुणा करके ३६० का भाग देने पर १ मिनट मिला। इन्हें सारणी में मिले घण्टा मिनटों में जोड़ा तो घं ४ मि३५ बने। इन्हें इष्ट के घ.मि. में जोड़ने पर १६ घं.३८ मि हुए। इन्हें ३१ अक्षांश वाली सारणी में ढूंढने पर हमें इनके समीप वाली संख्या १६ घ.१४ मि. मिले। इन घ. मि. के बाईं ओर पहले कालम में सारणी में ७ रा.२४ अं. लिखे हैं;—इन्हें अलग नोट किया शेष २४ मिनटों को ६ से गुणा करके सारणी में दिए गए अन्तर २८ मि. से भाग देने पर दो लब्धियां ५अं.९क.मिलीं। इन्हें अलग लिखे ७रा.२४अं.में जोड़ने पर ७रा.२९अं.९क.हमारा इष्ट-कालिक सायन लग्न स्पष्ट हो गया। सन् १९७७ में अयनांश २३ अं. ३२ क. है। (देखें अयनांश सारणी)। इसे सायन लग्न में घटाने पर ७ रा. ५ अ. ३७क. हमारा इष्ट कालिक निरयण लग्न स्पष्ट हो गया।

अयनांश कोष्ठक

ई. सन्	अयनांश अं. क.	ई. सन्	अयनांश अं. क.	ई. सन्	अयनांश अं. क.
१९००	२२।२८	१९४३	२३। ४	१९८६	२३।४०
१९०१		१९४४	२३। ४	१९८७	
१९०२		१९४५	२३। ५	१९८८	
१९०३		१९४६	२३। ६	१९८९	
१९०४		१९४७	२३। ७	१९९०	
१९०५		१९४८	२३। ८	१९९१	
१९०६		१९४९	२३। ९	१९९२	
१९०७		१९५०	२३।१०	१९९३	
१९०८		१९५१	२३।१०	१९९४	
१९०९		१९५२	२३।११	१९९५	
१९१०	२२।३६	१९५३	२३।१२	१९९६	२३।४८
१९११		१९५४	२३।१३	१९९७	
१९१२		१९५५	२३।१४	१९९८	
१९१३		१९५६	२३।१५	१९९९	
१९१४		१९५७	२३।१५	२०००	
१९१५		१९५८	२३।१६	२००१	
१९१६		१९५९	२३।१७	२००२	
१९१७		१९६०	२३।१८	२००३	
१९१८		१९६१	२३।१९	२००४	
१९१९		१९६२	२३।२०	२००५	
१९२०	२२।४४	१९६३	२३।२०	२००६	२३।५६
१९२१	२२।४५	१९६४	२३।२१	२००७	
१९२२	२२।४६	१९६५	२३।२२	२००८	
१९२३	२२।४७	१९६६	२३।२३	२००९	
१९२४	२२।४८	१९६७	२३।२४	२०१०	
१९२५	२२।४९	१९६८	२३।२५	२०११	
१९२६	२२।४९	१९६९	२३।२५	२०१२	
१९२७	२२।५०	१९७०	२३।२६	२०१३	
१९२८	२२।५१	१९७१	२३।२७	२०१४	
१९२९	२२।५२	१९७२	२३।२८	२०१५	
१९३०	२२।५३	१९७३	२३।२९	२०१६	२४। ५
१९३१	२२।५४	१९७४	२३।३०	२०१७	
१९३२	२२।५४	१९७५	२३।३०	२०१८	
१९३३	२२।५५	१९७६	२३।३१	२०१९	२४। ७
१९३४	२२।५६	१९७७	२३।३२		
१९३५	२२।५७	१९७८	२३।३३		
१९३६	२२।५८	१९७९	२३।३४		
१९३७	२२।५९	१९८०	२३।३५		
१९३८	२२।५९	१९८१	२३।३५		
१९३९	२३। ०	१९८२	२३।३६		
१९४०	२३। १	१९८३	२३।३७		
१९४१	२३। २	१९८४	२३।३८		
[illegible]	२३। ३	१९८५	२३।३९		

लग्नसारणी (१म भाग)

(लगभग पूरे उत्तरी भारत के लिए)

सूर्य या लग्न	प्रकाश +२४°	अन्तर	प्रकाश +२५°	अन्तर	प्रकाश +२६°	अन्तर	प्रकाश +२७°	अन्तर	प्रकाश +२८°	अन्तर	अक्षांश +२९°	अन्तर	प्रकाश +३०°	अन्तर	अक्षांश +३१°	अन्तर	प्रकाश +३२°	अन्तर	प्रकाश +३३°	अन्तर	प्रकाश +३४°	अन्तर	प्रकाश +३५°	अन्तर
रा. अ.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.
०।०	०।०	१८	०।०	१८	०।०	१७	०।०	१७	०।०	१७	०।०	१७	०।०	१७	०।०	१६	०।०	१६	०।०	१६	०।०	१६	०।०	१५
०।६	०।१८	१८	०।१८	१७	०।१७	१८	०।१७	१७	०।१७	१७	०।१७	१७	०।१७	१६	०।१६	१७	०।१६	१६	०।१६	१६	०।१६	१५	०।१५	१६
०।१२	०।३६	१८	०।३५	१८	०।३५	१८	०।३४	१८	०।३४	१७	०।३४	१७	०।३३	१७	०।३३	१७	०।३२	१७	०।३२	१६	०।३१	१६	०।३१	१५
०।१८	०।५४	१८	०।५३	१८	०।५३	१८	०।५२	१८	०।५१	१८	०।५१	१७	०।५०	१७	०।४९	१७	०।४९	१६	०।४८	१६	०।४७	१६	०।४६	१७
०।२४	१।१२	१९	१।११	१९	१।११	१८	१।१०	१८	१।९	१८	१।८	१८	१।७	१८	१।६	१८	१।५	१७	१।४	१७	१।३	१७	१।३	१६
१।०	१।३१	१९	१।३०	१९	१।२९	१९	१।२८	१९	१।२७	१८	१।२६	१८	१।२५	१८	१।२४	१८	१।२२	१८	१।२१	१७	१।२०	१७	१।१९	१७
१।६	१।५०	२०	१।४९	२०	१।४८	१९	१।४७	१९	१।४५	१९	१।४४	१९	१।४३	१९	१।४२	१८	१।४०	१८	१।३९	१८	१।३७	१८	१।३६	१८
१।१२	२।१०	२१	२।९	२०	२।७	२०	२।६	२०	२।४	२०	२।३	२०	२।२	१९	२।०	१९	१।५८	२०	१।५७	१८	१।५५	१९	१।५४	१८
१।१८	२।३१	२१	२।२९	२१	२।२७	२१	२।२६	२१	२।२४	२१	२।२३	२०	२।२१	२०	२।१९	२०	२।१८	१९	२।१६	१९	२।१४	१९	२।१२	१९
१।२४	२।५२	२२	२।५०	२२	३।४८	२२	२।४७	२१	२।४५	२१	२।४३	२१	२।४१	२१	२।३९	२१	२।३७	२१	२।३५	१९	२।३३	१९	२।३१	२१
२।०	३।१४	२३	३।१२	२३	३।१०	२३	३।८	२२	३।६	२३	३।४	२२	३।२	२२	३।०	२२	२।५८	२२	२।५६	२१	२।५४	२१	२।५२	२१
२।६	३।३७	२४	३।३५	२३	३।३३	२३	३।३०	२३	३।२९	२३	३।२६	२४	३।२४	२३	३।२२	२३	३।२०	२३	३।१८	२२	३।१५	२३	३।१३	२२
२।१२	४।१	२४	३।५८	२४	३।५६	२३	३।५३	२४	३।५२	२४	३।५०	२४	३।४७	२४	३।४५	२४	३।४३	२४	३।४०	२२	३।३८	२४	३।३५	२४
२।१८	४।२५	२५	४।२२	२५	४।२०	२४	४।१७	२५	४।१६	२५	४।१४	२५	४।११	२५	४।९	२५	४।७	२४	४।४	२४	४।२	२४	३।५९	२५
२।२४	४।५०	२५	४।४७	२६	४।४५	२५	४।४२	२६	४।४१	२६	४।३९	२५	४।३६	२६	४।३४	२६	४।३१	२६	४।२९	२५	४।२६	२६	४।२४	२५
३।०	५।१५	२६	५।१३	२७	५।११	२६	५।८	२७	५।७	२६	५।४	२७	५।२	२७	५।०	२६	४।५७	२७	४।५५	२६	४।५२	२७	४।४९	२७
३।६	५।४१	२७	५।४०	२७	५।३८	२७	५।३५	२७	५।३३	२७	५।३१	२७	५।२९	२७	५।२६	२७	५।२४	२७	५।२१	२७	५।१९	२७	५।१६	२७
३।१२	६।८	२८	६।७	२७	६।५	२७	६।२	२८	६।०	२८	५।५८	२८	५।५६	२७	५।५३	२८	५।५१	२८	५।४८	२८	५।४६	२८	५।४३	२८
३।१८	६।३६	२८	६।३४	२८	६।३२	२७	६।३०	२८	६।२८	२८	६।२६	२८	६।२३	२८	६।२१	२८	६।१९	२८	६।१६	२९	६।१४	२९	६।११	२९
३।२४	७।४	२७	७।२	२७	७।०	२८	६।५८	२८	६।५६	२८	६।५४	२८	६।५१	२९	६।४९	२९	६।४७	२९	६।४५	२९	६।४३	२८	६।४०	२९
४।०	७।३१	२८	७।२९	२८	७।२७	२७	७।२६	२८	७।२४	२८	७।२२	२८	७।२०	२८	७।१८	२८	७।१६	२८	७।१४	२८	७।११	२९	७।९	२९
४।६	७।५९	२७	७।५७	२८	७।५५	२८	७।५४	२८	७।५२	२८	७।५०	२८	७।४८	२९	७।४६	२९	७।४४	२९	७।४२	२९	७।४०	३०	७।३८	३०
४।१२	८।२६	२८	८।२५	२७	८।२३	२८	८।२२	२७	८।२०	२८	८।१८	२९	८।१७	२८	८।१५	२९	८।१३	२९	८।११	२९	८।१०	२९	८।८	२९
४।१८	८।५४	२७	८।५२	२८	८।५१	२७	८।४९	२८	८।४८	२८	८।४७	२८	८।४५	२८	८।४४	२८	८।४२	२९	८।४०	२९	८।३९	२९	८।३७	२९
४।२४	९।२१	२७	९।२०	२७	९।१८	२८	९।१७	२८	९।१६	२८	९।१५	२८	९।१३	२८	९।१२	२८	९।११	२८	९।९	२९	९।८	२९	९।६	३०
५।०	९।४८	२६	९।४७	२७	९।४६	२७	९।४५	२७	९।४४	२७	९।४३	२७	९।४१	२८	९।४०	२९	९।३९	२९	९।३८	२९	९।३७	२९	९।३६	२९
५।६	१०।१४	२७	१०।१४	२६	१०।१३	२७	१०।१२	२७	१०।११	२८	१०।१०	२८	१०।९	२८	१०।९	२८	१०।८	२८	१०।७	२८	१०।६	२८	१०।५	२९
५।१२	१०।४१	२६	१०।४०	२७	१०।४०	२७	१०।३९	२७	१०।३९	२७	१०।३८	२७	१०।३७	२८	१०।३७	२७	१०।३६	२८	१०।३५	२९	१०।३४	२९	१०।३४	२९
०८	११।७	२७	११।७	२७	११।७	२६	११।६	२७	११।६	२७	११।५	२८	११।५	२७	११।४	२८	११।४	२८	११।४	२८	११।३	२९	११।३	२८
[illegible]	११।३४	२६	११।३४	२६	११।३३	२७	११।३३	२७	११।३३	२७	११।३३	२७	११।३२	२८	११।३२	२८	११।३२	२८	११।३२	२८	११।३२	२८	११।३१	२९
६।०	१२।०	२६	१२।०	२६	१२।०	२७	१२।०	२७	१२।०	२७	१२।०	२७	१२।०	२८	१२।०	२८	१२।०	२८	१२।०	२८	१२।०	२८	१२।०	२९

लग्नसारणी (२य भाग)

(लगभग पूरे उत्तरी भारत के लिए)

सूर्य वा लग्न	प्रक्षांश +२४°	अन्तर	प्रक्षांश +२५°	अन्तर	प्रक्षांश +२६°	अन्तर	प्रक्षांश +२७°	अन्तर	प्रक्षांश +२८°	अन्तर	प्रक्षांश +२९°	अन्तर	प्रक्षांश +३०°	अन्तर	प्रक्षांश +३१°	अन्तर	प्रक्षांश +३२°	अन्तर	प्रक्षांश +३३°	अन्तर	प्रक्षांश +३४°	अन्तर	प्रक्षांश +३५°	अन्तर
रा. अं.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.	घं. मि.	मि.
६। ०	१२। ०	२६	१२। ०	२६	१२। ०	२७	१२। ०	२७	१२। ०	२७	१२। ०	२७	१२। ०	२८	१२। ०	२८	१२। ०	२८	१२। ०	२८	१२। ०	२८	१२। ०	२९
६। ६	१२।२६	२७	१२।२६	२७	१२।२७	२६	१२।२७	२७	१२।२७	२७	१२।२७	२८	१२।२८	२७	१२।२८	२८	१२।२८	२८	१२।२८	२९	१२।२८	२९	१२।२९	२९
६।१२	१२।५३	२६	१२।५३	२७	१२।५३	२७	१२।५४	२७	१२।५४	२८	१२।५५	२७	१२।५५	२८	१२।५६	२७	१२।५६	२८	१२।५७	२८	१२।५७	२९	१२।५७	२८
६।१८	१३।१९	२७	१३।२०	२६	१३।२०	२७	१३।२१	२७	१३।२२	२७	१३।२२	२८	१३।२३	२८	१३।२३	२९	१३।२४	२८	१३।२५	२८	१३।२६	२८	१३।२६	२९
६।२४	१३।४६	२६	१३।४६	२७	१३।४७	२७	१३।४८	२७	१३।४९	२७	१३।५०	२७	१३।५१	२८	१३।५२	२८	१३।५२	२९	१३।५३	२९	१३।५४	२९	१३।५५	२९
७। ०	१४।१२	२७	१४।१३	२८	१४।१४	२७	१४।१५	२८	१४।१६	२८	१४।१७	२८	१४।१९	२८	१४।२०	२८	१४।२१	२८	१४।२२	२९	१४।२३	२९	१४।२४	३०
७। ६	१४।३९	२७	१४।४१	२७	१४।४२	२७	१४।४३	२८	१४।४४	२८	१४।४५	२८	१४।४७	२८	१४।४८	२८	१४।४९	२९	१४।५१	२९	१४।५२	२९	१४।५४	२९
७।१२	१५। ६	२८	१५। ८	२७	१५। ९	२८	१५।११	२७	१५।१२	२८	१५।१३	२९	१५।१५	२८	१५।१६	२९	१५।१८	२९	१५।२०	२९	१५।२१	२९	१५।२३	२९
७।१८	१५।३४	२७	१५।३५	२८	१५।३७	२८	१५।३८	२८	१५।४०	२८	१५।४२	२८	१५।४३	२९	१५।४५	२९	१५।४७	२९	१५।४९	२९	१५।५०	३०	१५।५२	३०
७।२४	१६। १	२८	१६। ३	२८	१६। ५	२८	१६। ६	२८	१६। ८	२८	१६।१०	२८	१६।१२	२८	१६।१४	२८	१६।१६	२८	१६।१८	२८	१६।२०	२९	१६।२२	२९
८। ०	१६।२९	२७	१६।३१	२७	१६।३३	२७	१६।३४	२८	१६।३६	२८	१६।३८	२८	१६।४०	२९	१६।४२	२९	१६।४४	२९	१६।४६	२९	१६।४९	२९	१६।५१	२९
८। ६	१६।५६	२८	१६।५८	२८	१७। ०	२७	१७। २	२८	१७। ४	२८	१७। ६	२८	१७। ९	२८	१७।११	२८	१७।१३	२८	१७।१५	२९	१७।१८	२८	१७।२०	२९
८।१२	१७।२४	२७	१७।२६	२७	१७।२८	२७	१७।३०	२८	१७।३२	२८	१७।३४	२८	१७।३७	२७	१७।३९	२८	१७।४१	२८	१७।४४	२८	१७।४६	२८	१७।४९	२८
८।१८	१७।५१	२८	१७।५३	२७	१७।५५	२७	१७।५८	२७	१८। ०	२७	१८। २	२७	१८। ४	२७	१८। ७	२७	१८। ९	२७	१८।१२	२७	१८।१४	२७	१८।१७	२७
८।२४	१८।१८	२६	१८।२०	२७	१८।२२	२७	१८।२५	२६	१८।२७	२६	१८।२९	२७	१८।३१	२७	१८।३४	२६	१८।३६	२७	१८।३९	२६	१८।४१	२७	१८।४४	२७
९। ०	१८।४४	२६	१८।४७	२६	१८।४९	२६	१८।५१	२६	१८।५३	२६	१८।५६	२५	१८।५८	२६	१९। ०	२६	१९। ३	२६	१९। ५	२६	१९। ८	२६	१९।११	२५
९। ६	१९।१०	२५	१९।१३	२५	१९।१५	२५	१९।१७	२५	१९।१९	२५	१९।२१	२५	१९।२४	२५	१९।२६	२५	१७।२९	२४	१९।३१	२५	१९।३४	२४	१९।३६	२५
९।१२	१९।३५	२५	१९।३८	२४	१९।४०	२४	१९।४२	२४	१९।४४	२४	१९।४६	२४	१९।४९	२४	१९।५१	२४	१९।५३	२४	१९।५६	२४	१९।५८	२४	२०। १	२४
९।१८	२०। ०	२४	२०। २	२३	२०। ४	२३	२०। ६	२३	२०। ८	२३	२०।१०	२४	२०।१३	२३	२०।१५	२३	२०।१७	२३	२०।२०	२२	२०।२२	२३	२०।२५	२२
९।२४	२०।२४	२३	२०।२५	२३	२०।२७	२३	२०।२९	२३	२०।३१	२३	२०।३४	२२	२०।३६	२२	२०।३८	२२	२०।४०	२२	२०।४२	२२	२०।४५	२१	२०।४७	२१
१०। ०	२०।४७	२२	२०।४८	२२	२०।५०	२२	२०।५२	२१	२०।५४	२१	२०।५६	२१	२०।५८	२१	२१। ०	२१	२१। २	२१	२१। ४	२१	२१। ६	२१	२१। ८	२१
१०। ६	२१। ९	२१	२१।१०	२१	२१।१२	२१	२१।१३	२१	२१।१५	२१	२१।१७	२०	२१।१९	२०	२१।२१	२०	२१।२३	१९	२१।२५	१९	२१।२७	१९	२१।२९	१९
१०।१२	२१।३०	२०	२१।३१	२०	२१।३३	२०	२१।३४	२०	२१।३६	२०	२१।३७	२०	२१।३९	१९	२१।४१	१९	२१।४२	२०	२१।४४	१९	२१।४६	१९	२१।४८	१८
१०।१८	२१।५०	२०	२१।५१	२०	२१।५३	१९	२१।५४	१९	२१।५६	१९	२१।५७	१९	२१।५८	१९	२२। ०	१९	२२। २	१८	२२। ३	१८	२२। ५	१८	२२। ६	१८
१०।२४	२२।१०	१९	२२।११	१९	२२।१२	१९	२२।१३	१९	२२।१५	१८	२२।१६	१८	२२।१७	१८	२२।१९	१७	२२।२०	१८	२२।२१	१८	२२।२३	१७	२२।२४	१७
११। ०	२२।२९	१९	२२।३०	१९	२२।३१	१८	२२।३२	१८	२२।३३	१८	२२।३४	१८	२२।३५	१८	२३।३६	१८	२२।३८	१७	२२।३९	१७	२२।४०	१७	२२।४१	१७
११। ६	२२।४८	१८	२२।४९	१८	२२।४९	१८	२२।५०	१८	२२।५१	१८	२२।५२	१७	२२।५३	१७	२२।५४	१७	२२।५५	१६	२२।५६	१६	२२।५७	१६	२२।५८	१६
११।१२	२३। ६	१८	२३। ७	१८	२३। ७	१८	२३। ८	१८	२३। ९	१७	२३। ९	१७	२३।१०	१७	२३।११	१६	२३।११	१७	२३।१२	१६	२३।१३	१६	२३।१४	१५
११।१८	२३।२४	१८	२३।२५	१७	२३।२५	१८	२३।२६	१७	२३।२६	१७	२३।२६	१७	२३।२७	१७	२३।२७	१७	२३।२८	१६	२३।२८	१६	२३।२७	१५	२३।२९	१५
११।२४	२३।४२	१८	२३।४२	१७	२३।४३	१७	२३।४३	१७	२३।४३	१७	२३।४३	१७	२३।४४	१७	२३।४४	१६	२३।४४	१६	२३।४४	१६	२३।४४	१६	२३।४५	१५
१२। ०	२४। ०	१८	२४। ०	१८	२४। ०	१७	२४। ०	१७	२४। ०	१७	२४। ०	१७	२४। ०	१७	२४। ०	१६	२४। ०	१६	२४। ०	१६	२४। ०	१६	२४। ०	१५

'गणक मार्तण्ड' से उद्धृत—

२७१ साल का कैलेण्डर (सन् १९०१ से सन् २०७२ ई. तक)

तारीख जानने की विधि.—कोष्ठक (१) में अपने सन् के बाईं ओर पहिले कालम में लिखा बार (बार संख्या) लेकर उसमें कोष्ठक (२) में लिखी अपनी तारीख की संख्या जोड़ दें। जोड़ सात से ज्यादा हो तो सात घटा दीजिए। शेष आप का बार होगा (१ से रविवार, २ से सोमवार इत्यादि समझें)। यहां विशेष बात यह ध्यान में रखें कि-यदि लीप इयर (लीप का साल) हो तो सिर्फ फरवरी के बाद के महीनों में कोष्ठक (१) और (२) से मिली संख्याओं के जोड़ में एक जोड़ लेना चाहिए।

उदाहरण (१).—"१० अक्तूबर (ई. सन १९१०)" को बार ज्ञात करें। कोष्ठक (१) में १९१० ई. के बाईं ओर पहिले कालम में बार ७ है। कोष्ठक (२)में १० अक्तूबर की संख्या २ है। इन दोनों का जोड़ ९ हुआ। यह जोड़ ७ से ज्यादा है अतः इस में से ७ घटाने पर २ शेष बचा। इसका अर्थ है इस दिन दूसरा बार यानी सोमवार था।

उदाहरण (२):—सन् १९८० की १५ फरवरी को कौन सा बार होगा? कोष्ठक (१) में १९८० ई. की बार संख्या ३ है। कोष्ठक (२) में १५ फरवरी की संख्या ३ है। इन दोनों का योग ६ हुआ। अतः मालूम हो गया कि इस तारीख को छठा बार यानी शुक्रवार होगा।

उदाहरण (३)—सन् १९४४ की ३० दिसम्बर को बार मालूम करें? कोष्ठक (१) में सन् १९४४ की बार संख्या ७ है। कोष्ठक(२)में ३०दिसं. की संख्या ६ लिखी है। इन दोनों का जोड़ १३ हुआ। क्योंकि सन् १९४४ लीपइयर है, और हमारी तारीख फरवरी के बाद की है,अतः ऊपर लिखे नियमानुसार इस जोड़ (१३) में १ जोड़ा तो १४ हुआ। इसमें से ७ घटाने पर ७ बचे इस प्रकार मालूम हो गया कि इस दिन सातवां बार यानी शनिवार था।

कोष्ठक (१)

बार	ई. सन्	ई. सन्	ई. सन्	ई. सन्	ई. सन्	ई. सन्	ई. सन्	ई. सन्
३	१९०१	......	......	......	......	......	......	......
४	१९०२	......	......	......	......	......	......	......
५	१९०३	......	१९७०	२००४	२०३७	२०७१	२१०५	२१३९
६	१९०४	१९३७	१९७१	......	२०३८	२०७२	२१०६	२१४०
७	......	१९३८	१९७२	२००५	२०३९	......	२१०७	......
१	१९०५	१९३९	......	२००६	२०४०	२०७३	२१०८	२१४१
२	१९०६	१९४०	१९७३	२००७	......	२०७४	......	२१४२
३	१९०७	......	१९७४	२००८	२०४१	२०७५	२१०९	२१४३
४	१९०८	१९४१	१९७५	......	२०४२	२०७६	२११०	२१४४
५	......	१९४२	१९७६	२००९	२०४३	......	२१११	......
६	१९०९	१९४३	......	२०१०	२०४४	२०७७	२११२	२१४५
७	१९१०	१९४४	१९७७	२०११	......	२०७८	......	२१४६
१	१९११	......	१९७८	२०१२	२०४५	२०७९	२११३	२१४७
२	१९१२	१९४५	१९७९	......	२०४६	२०८०	२११४	२१४८
३	......	१९४६	१९८०	२०१३	२०४७	......	२११५	......
४	१९१३	१९४७	......	२०१४	२०४८	२०८१	२११६	२१४९
५	१९१४	१९४८	१९८१	२०१५	......	२०८२	......	२१५०
६	१९१५	......	१९८२	२०१६	२०४९	२०८३	२११७	२१५१
७	१९१६	१९४९	१९८३	......	२०५०	२०८४	२११८	२१५२
१	......	१९५०	१९८४	२०१७	२०५१	......	२११९	......
२	१९१७	१९५१	......	२०१८	२०५२	२०८५	२१२०	२१५३
३	१९१८	१९५२	१९८५	२०१९	......	२०८६	......	२१५४
४	१९१९	......	१९८६	२०२०	२०५३	२०८७	२१२१	२१५५
५	१९२०	१९५३	१९८७	......	२०५४	२०८८	२१२२	२१५६
६	......	१९५४	१९८८	२०२१	२०५५	......	२१२३	......
७	१९२१	१९५५	......	२०२२	२०५६	२०८९	२१२४	२१५७
१	१९२२	१९५६	१९८९	२०२३	......	२०९०	......	२१५८
२	१९२३	......	१९९०	२०२४	२०५७	२०९१	२१२५	२१५९
३	१९२४	१९५७	१९९१	......	२०५८	२०९२	२१२६	२१६०
४	......	१९५८	१९९२	२०२५	२०५९	......	२१२७	......
५	१९२५	१९५९	......	२०२६	२०६०	२०९३	२१२८	२१६१
६	१९२६	१९६०	१९९३	२०२७	......	२०९४	......	२१६२
७	१९२७	......	१९९४	२०२८	२०६१	२०९५	२१२९	२१६३
१	१९२८	१९६१	१९९५	......	२०६२	२०९६	२१३०	२१६४
२	......	१९६२	१९९६	२०२९	२०६३	......	२१३१	......
३	१९२९	१९६३	......	२०३०	२०६४	२०९७	२१३२	२१६५
४	१९३०	१९६४	१९९७	२०३१	......	२०९८	......	२१६६
५	१९३१	......	१९९८	२०३२	२०६५	२०९९	२१३३	२१६७
६	१९३२	१९६५	१९९९	......	२०६६	+२१००	२१३४	२१६८
७	......	१९६६	२०००	२०३३	२०६७	२१०१	२१३५	......
१	१९३३	१९६७	......	२०३४	२०६८	२१०२	२१३६	२१६९
२	१९३४	१९६८	२००१	२०३५	......	२१०३	......	२१७०
३	१९३५	......	२००२	२०३६	२०६९	२१०४	२१३७	२१७१
४	१९३६	१९६९	२००३	......	२०७०	......	२१३८	२१७२

कोष्ठक (२)

तारीख	जन.	फर.	मार्च	अप्रै.	मई	जून	जुला.	अग.	सित.	अक्तू.	नव.	दिसं.
१	०	३	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
२	१	४	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
३	२	५	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
४	३	६	६	२	४	०	२	५	१	३	६	१
५	४	०	०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
६	५	१	१	४	६	२	४	०	३	५	१	३
७	६	२	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
८	०	३	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
९	१	४	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
१०	२	५	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
११	३	६	६	२	४	०	२	५	१	३	६	१
१२	४	०	०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
१३	५	१	१	४	६	२	४	०	३	५	१	३
१४	६	२	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
१५	०	३	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
१६	१	४	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
१७	२	५	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
१८	३	६	६	२	४	०	२	५	१	३	६	१
१९	४	०	०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
२०	५	१	१	४	६	२	४	०	३	५	१	३
२१	६	२	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
२२	०	३	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
२३	१	४	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
२४	२	५	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
२५	३	६	६	२	४	०	२	५	१	३	६	१
२६	४	०	०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
२७	५	१	१	४	६	२	४	०	३	५	१	३
२८	६	२	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
२९	०	३	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
३०	१		४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
३१	२		५		३		१	४		२		०

+ई. सन् २१०० लीपइयर नहीं है।

लीप इयर—ईस्वी सन् को चार से भाग देने पर शेष शून्य बचे तो वह सन् लीपइयर होगा। जैसे ईस्वी सन् १९०४, १९०८, १९१२, १९१६ लीपइयर है। जिस ईस्वी सन् के दाईं ओर दो या इससे अधिक शून्य हों, उसे ४०० से भाग देकर लीपइयर का निर्णय किया जाता है। उसे ४०० से भाग देने पर यदि शेष शून्य बचे तो वह सन् लीप इयर होगा, अन्यथा नहीं। जैसे ई. सन् २०००, २४००, २८०० लीपइयर होंगे, क्योंकि ये ४०० से पूरे विभाजित हो जाते हैं। लेकिन ई. सन् २१००, २२००, २३०० लीपइयर नहीं होंगे, क्योंकि ये ४०० से पूरे विभाजित नहीं होते।

लीप इयर में फरवरी २९ दिन की होती है—यह तो आप जानते ही है।

५२ वर्ष की संक्रान्तियों की तारीखें और बार

(वि सं. १९८३ से वि. सं. २०३४ तक)

नीचे दी गई सारणी में वि. स १९८३ से वि. स. २०३४ तक की सूर्य संक्रान्तियां (देसी महीनों के पहिले प्रविष्टों) की अंग्रेजी तारीखें, ईस्वी सन् और बार दिए गए हैं। इससे किसी देसी महीने के पहिले प्रविष्टे को कौन से ईस्वी सन् की कौन से महीने की कौन सी तारीख थी —यह सहसा मालूम किया जा सकता है। जैसे —वि. सं. १९९४ के आषाढ प्रविष्टा १ को कौन सी अङ्ग्रेजी तारीख और कौन सा बार था—यह मालूम करना है। सारणी में वि. सं. १९९४ के नीचे १ आषाढ (जून) के आगे १४ च. लिखा है। इसका अर्थ है, इस संवत् में १ आषाढ को ई. सन् १९३७ की जून की १४ तारीख और चन्द्र बार था।

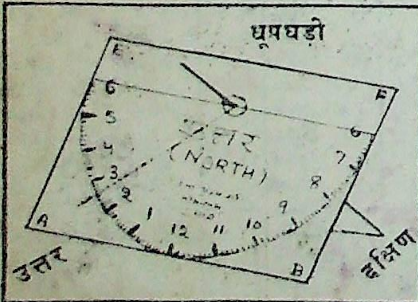
प्रविष्टा मास	अंग्रेजी महीना	ता.वार	ता.वार	ता.वार	ता.वार	ता.वार	ता.वार	ता.वार	ता.वार	ता.वार	ता.वार	ता.वार	ता.वार	ता.वार
वि. संवत		१९८३	१९८७	१९९१	१९९५	१९९९	२००३	२००७	२०११	२०१५	२०१९	२०२३	२०२७	२०३१
१ वैशा	अप्रै.	१३ म	१३ र.	१३ गु.	१३ बु.	१३ च.	१३ श.	१३ गु.	१३ म.	१३ र.	१३ शु	१३ बु.	१३ च.	१३ श.
१ ज्येष्ठ	मई	१४ शु.	१४ बु.	१४ च.	१४ श	१४ गु.	१४ मं.	१४ र.	१४ शु.	१४ बु.	१४ च.	१४ श.	१४ गु.	१४ म.
१ आषा.	जून	१४ च.	१४ श.	१४ गु.	१४ म.	१४ र.	१४ शु.	१४ बु.	१४ च.	१५ र.	१५ शु.	१४ म	१४ र.	१५ शु.
१ श्राव.	जुलाई	१६ शु.	१६ बु.	१६ च.	१६ श.	१६ गु.	१६ मं.	१६ र.	१६ शु.	१६ बु.	१६ च.	१६ श.	१६ गु.	१६ म.
१ भाद्र.	अगस्त	१६ च.	१६ श.	१६ गु.	१६ मं	१६ र.	१६ शु.	१७ गु.	१७ म.	१७ र.	१७ शु.	१६ म.	१६ र.	१६ शु.
१ आश्वि.	सितंबर	१६ गु.	१६ म.	१६ र.	१६ शु.	१६ बु.	१७ मं.	१७ र.	१७ शु.	१७ बु.	१७ चं.	१६ शु.	१६ बु.	१६ च.
१ कार्ति.	अक्तूबर	१७ र.	१७ शु.	१७ बु.	१७ च.	१७ श.	१७ गु.	१७ मं.	१७ र.	१७ शु.	१७ बु.	१७ च.	१७ श.	१७ गु.
१ मार्ग.	नवंबर	१६ म	१६ र.	१६ शु	१६ बु.	१६ चं.	१६ श.	१६ गु.	१६ म.	१६ र.	१६ शु.	१६ बु.	१६ चं.	१६ श.
१ पौष	दिसंबर	१५ बु.	१५ चं.	१५ श.	१५ गु.	१५ मं.	१५ र.	१५ शु.	१५ बु.	१५ चं.	१५ श.	१५ गु.	१५ म.	१५ र.
ई. सन्		१९२७	१९३१	१९३५	१९३९	१९४३	१९४७	१९५१	१९५५	१९५९	१९६३	१९६७	१९७१	१९७५
१ माघ	जनवरी	१३ गु.	१४ बु.	१४ च.	१४ श.	१४ गु.	१४ मं.	१४ र.	१४ शु.	१४ बु	१४ च	१४ श.	१४ गु.	१४ मं.
१ फाल्गु.	फरवरी	१२ श.	१२ गु	१२ मं.	१२ र.	१२ शु.	१२ बु.	१२ च.	१२ श.	१२ गु.	१२ म.	१२ र.	१२ शु.	१२ बु.
१ चैत्र	मार्च	१४ च.	१४ श.	१४ गु.	१४ मं.	१४ र.	१४ शु.	१४ बु.	१४ च.	१४ श.	१४ गु.	१४ मं.	१४ र.	१४ शु.
वि. संवत्		१९८४	१९८८	१९९२	१९९६	२०००	२००४	२००८	२०१२	२०१६	२०२०	२०२४	२०२८	२०३२
१ वैशा.	अप्रैल	१३ बु.	१३ चं.	१३ श.	१३ गु.	१३ म	१३ र.	१३ शु.	१३ बु.	१३ चं.	१३ श.	१३ गु.	१४ बु.	१४ चं.
१ ज्येष्ठ	मई	१४ श.	१४ गु.	१४ म.	१४ र	१४ शु.	१४ बु.	१४ चं.	१४ श.	१४ गु.	१४ मं.	१४ र.	१४ शु.	१४ बु.
१ आषा.	जून	१४ म.	१५ चं.	१५ श.	१५ गु.	१५ म.	१५ र.	१५ शु.	१५ बु.	१५ च.	१५ श.	१५ गु	१५ म.	१५ र.
१ श्राव.	जुलाई	१६ श.	१६ गु.	१६ म.	१६ र.	१६ शु.	१६ बु.	१६ च.	१६ श.	१६ गु.	१६ म.	१६ र.	१६ शु.	१६ बु.
१ भाद्र.	अगस्त	१७ बु.	१७ च.	१७ श	१७ गु.	१७ म.	१७ र.	१७ शु.	१७ बु	१७ चं.	१७ श.	१६ बु.	१६ चं.	१७ र.
१ आश्वि.	सितम्बर	१७ श.	१७ गु.	१७ म.	१७ र.	१७ शु.	१७ बु.	१७ च.	१७ श.	१७ गु.	१७ मं.	१६ श.	१६ गु.	१७ बु.
१ कार्ति.	अक्तूबर	१७ चं.	१७ श.	१७ गु.	१७ म.	१७ र.	१७ शु.	१७ बु.	१७ च.	१७ श	१७ गु.	१७ मं.	१७ र.	१७ शु.
१ मार्ग.	नवंबर	१६ बु.	१६ चं.	१६ श.	१६ गु.	१६ मं.	१६ र.	१६ शु.	१६ बु	१६ चं.	१६ श.	१६ गु.	१६ म.	१६ र.
१ पौष	दिसंबर	१५ गु.	१५ म.	१५ र.	१६ श.	१६ गु.	१६ म,	१६ र.	१६ शु.	१६ बु.	१६ चं.	१५ शु.	१६ गु.	१६ मं.
ई. सन्		१९२८	१९३२	१९३६	१९४०	१९४४	१९४८	१९५२	१९५६	१९६०	१९६४	१९६८	१९७२	१९७६
१ माघ	जनवरी	१४ श.	१४ गु.	१४ म.	१४ र.	१४ शु.	१४ बु.	१४ चं.	१४ श.	१४ गु.	१४ मं.	१४ र.	१४ शु.	१४ बु.
१ फाल्गु.	फरवरी	१२ र.	१२ शु.	१२ बु.	१२ च.	१२ श.	१२ गु.	१२ म.	१२ र.	१२ शु.	१२ बु.	१२ चं.	१३ र.	१३ शु.
१ चैत्र	मार्च	१३ मं.	१३ र.	१३ शु.	१३ बु	१३ च.	१३ श.	१३ गु.	१३ मं.	१३ र.	१३ शु.	१३ बु.	१३ च.	१३ श.
वि. संवत		१९८५	१९८९	१९९३	१९९७	२००१	२००५	२००९	२०१३	२०१७	२०२१	२०२५	२०२९	२०३३
१ वैशाख	अप्रैल	१२ गु.	१२ म.	१२ र.	१२ शु.	१३ गु.	१३ मं.	१३ र.	१३ शु.	१३ बु.	१३ च.	१३ श.	१३ गु.	१३ म.
१ ज्येष्ठ	मई	१३ र.	१३ शु.	१३ बु.	१३ च.	१३ श.	१४ शु.	१४ बु.	१४ च.	१४ श.	१४ गु.	१४ म.	१४ र.	१४ शु.
१ आषा.	जून	१४ गु.	१४ म.	१४ र	१४ शु	१४ बु.	१४ च.	१४ श.	१४ गु.	१४ मं.	१४ र.	१४ शु.	१४ बु	१४ च.
१ श्राव,	जुलाई	१५ र.	१५ शु.	१५ बु.	१५ च.	१६ र.	१६ शु.	१६ बु.	१६ च.	१६ श.	१५ बु.	१५ च.	१५ श.	१५ गु.
१ भाद्र.	अगस्त	१६ गु.	१६ म.	१६ र.	१६ शु.	१६ बु.	१६ च.	१६ श.	१६ गु.	१६ म.	१६ र.	१६ शु.	१६ बु.	१६ च.
१ आश्वि,	सितम्बर	१६ र.	१६ शु.	१६ बु.	१६ चं.	१६ श.	१६ गु	१६ म.	१६ र.	१६ शु.	१६ बु.	१६ च.	१६ श.	१६ गु.
१ कार्ति.	अक्तूबर	१६ म.	१६ र.	१६ श.	१६ बु.	१६ च.	१६ श	१६ गु.	१७ बु.	१७ च.	१६ शु.	१६ बु.	१६ च.	१६ श.
१ मार्ग.	नवंबर	१५ गु.	१५ म.	१५ र.	१५ शु.	१५ बु.	१५ च.	१५ श.	१५ गु.	१५ म	१५ र.	१५ शु	१५ बु.	१५ च.
१ पौष	दिसंबर	१४ श.	१५ शु	१५ म.	१५ र	१५ शु.	१५ बु.	१५ च.	१५ श.	१५ शु.	१५ मं.	१५ र	१५ शु.	१५ बु.
ई. सन्		१९२९	१९३३	१९३७	१९४१	१९४५	१९४९	१९५३	१९५७	१९६१	१९६५	१९६९	१९७३	१९७७
१ माघ	जनवरी	१३ र.	१३ शु.	१३ बु.	१३ च.	१३ श.	१३ गु.	१३ म.	१३ र.	१३ शु	१३ बु.	१३ च.	१३ श	१३ गु.
१ फाल्गु,	फरवरी	११ च.	११ श.	१२ शु.	१२ बु.	१२ च.	१२ श.	१२ गु.	१२ म,	१२ र.	१२ शु.	१२ बु.	१२ च	१२ श.
१ चैत्र	मार्च	१३ बु.	१३ चं.	१३ श.	१३ गु.	१३ म.	१३ र.	१३ शु.	१४ गु.	१४ म.	१४ र	१४ शु.	१४ बु.	१४ च.
वि. संवत्		१९८६	१९९०	१९९४	१९९८	२००२	२००६	२०१०	२०१४	२०१८	२०२२	२०२६	२०३०	२०३४
१ वैशाख	अप्रैल	१३ श.	१३ गु.	१३ म	१३ र.	१३ शु.	१३ बु.	१३ च.	१३ श.	१३ गु.	१३ म.	१३ र.	१३ शु.	१३ बु.
१ ज्येष्ठ	मई	१४ म.	१४ र.	१४ शु.	१४ बु.	१४ च.	१४ श.	१४ गु.	१४ म.	१४ र.	१४ शु.	१४ बु.	१४ च.	१४ श.
१ आषाढ़	जून	१४ शु.	१४ बु.	१४ च.	१४ श.	१४ गु.	१४ म.	१४ र.	१४ शु.	१४ बु	१४ च.	१४ श.	१४ गु.	१४ म.
१ श्रावण	जुलाई	१६ म.	१६ र.	१६ शु.	१६ बु.	१६ च.	१६ श.	१६ गु	१६ म.	१६ र.	१६ शु.	१६ बु.	१६ च.	१६ श.
१ भाद्र.	अगस्त	१६ शु.	१६ बु.	१६ च.	१६ श.	१६ गु.	१६ म.	१६ र.	१६ शु.	१६ बु	१६ च	१६ श.	१६ गु.	१६ म.
१ आश्वि.	सितम्बर	१६ च.	१६ श.	१६ गु.	१६ म.	१६ र.	१६ शु.	१६ बु.	१६ च.	१६ श.	१६ गु.	१६ म.	१६ र.	१६ शु.
१ कार्ति.	अक्तूबर	१७ गु.	१७ म.	१७ र.	१७ शु.	१७ बु.	१७ च.	१७ श.	१७ गु.	१७ म.	१६ श.	१६ गु.	१६ म.	१६ र.
१ मार्ग.	नवम्बर	१५ श.	१५ बु.	१६ म.	१६ र.	१६ शु.	१६ बु.	१६ च.	१६ श.	१६ गु.	१५ च.	१५ श.	१५ गु.	१५ म.
१ पौष	दिसंबर	१५ र.	१५ शु.	१५ बु.	१५ च.	१५ श.	१५ गु.	१५ म.	१५ र.	१५ शु.	१५ बु.	१५ च.	१५ श.	१५ गु.
ई. सन्		१९३०	१९३४	१९३८	१९४२	१९४६	१९५०	१९५४	१९५८	१९६२	१९६६	१९७०	१९७४	१९७८
१ माघ	जनवरी	१३ च.	१३ श.	१३ गु.	१३ म.	१३ र.	१३ शु.	१३ बु.	१३ च.	१३ श.	१३ गु.	१३ म.	१३ र.	१४ श.
१ फाल्गु.	फरवरी	१२ बु.	१२ च.	१२ श.	१२ गु.	१२ म.	१२ र.	१२ शु.	१२ बु.	१२ च.	१२ श.	१२ गु.	१२ म.	१२ र
१ चैत्र	मार्च	१४ शु.	१४ बु.	१४ च.	१४ श.	१४ गु.	१४ म.	१४ र.	१४ शु	१४ बु.	१४ च.	१४ श.	१४ बु.	१४ म

—: पाठकों को एक सुन्दर उपहार "धूपघड़ी" :—

निर्माता: — प्रियव्रत शर्मा M.A., ज्योतिषाचार्य

इस वर्ष अपने प्रिय पाठकों को हम श्री मार्त्तण्ड पचांग' की स्वर्णजयन्ती के उपलक्ष्य में एक 'धूपघड़ी उपहार के रूप में दे रहे है। मोटे कागज पर बनी यह 'धूपघड़ी' इसी पृष्ठ के पास लगाई हुई है।

धूपघड़ी के प्रयोग की विधि—कागज पर बनी इस धूपघड़ी के चारों ओर - - - इस प्रकार की लाईन है। इस लाईन के ठीक साथ-साथ इसे कैंची से काट लीजिए, और E F लाईन के साथ-साथ भी इसे काट कर दो भागों में बांट लीजिए। धूपघड़ी के ये दोनों भाग बराबर-बराबर (६ इंच लम्बे और ४ इंच चौड़े) होंगे इन दोनों भागों को हम 'डायल' कहेंगे। जिस भाग पर 'उत्तर' लिखा है वह 'उत्तर डायल' और जिस भाग पर 'दक्षिण' लिखा है वह 'दक्षिणी डायल' होगा। अब ठीक ६ इंच लम्बे और ४ इंच चौड़े गत्ते (Cardboard) या प्लाईवुड का एक समतल टुकड़ा लेकर उसके दोनों ओर दोनों डायलों को गोंद से चिपका दें। इन डायलों को ऐसे चिपकाए, कि इन डायलों की A B लाईनें एक ही किनारे पर रहें, और इनके केन्द्र (O इस प्रकार का निशान) भी एक दूसरे के बिल्कुल ऊपर नीचे (दोनों साइडों के इधर उधर) हों। अब एक ९—१० इंच लम्बी लोहे या लकड़ी की बिल्कुल सीधी बारीक कील (छड़) लेकर उसे डायल के केन्द्र में से आर पार निकाल दें। ये कील दोनों ओर चिपके दोनों 'डायलों' के केन्द्रों में से गुजरेगी, यह कील इस तरह डायलों के केन्द्र में गाड़ें (स्थिर करें), कि वह दोनों तरफ बने डायलों पर (डायलों के धरातलों पर) बिल्कुल सीधी (लम्ब रूप में) खड़ी रहे। उत्तर डायल की ओर इस कील की लम्बाई लगभग दो इंच की होनी चाहिए। 'दक्षिण डायल' की तरफ इस कील की लम्बाई प्रत्येक शहर में भिन्न भिन्न होगी। कोष्ठक (१) में भारत के प्रसिद्ध प्रसिद्ध नगरों के लिए 'दक्षिण डायल' की ओर कील की लम्बाई इंचों में दी गई है। जैसे—अमृतसर में धूपघड़ी लगानी हो तो दक्षिण डायल की ओर कील की लम्बाई कोष्ठक (१) के अनुसार ४$\frac{?}{१०}$ इंच होगी। यह आवश्यक है, कि-डायल के केन्द्र में लगाई जाने वाली कील ज्यादा मोटी न हो।



धूपघड़ी को धूप में रखने की विधि—अब इस धूपघड़ी को एक क्षैतिज-समतल (इधर उधर बिल्कुल न झुके) धरातल (जमीन) पर रखें। धरातल पर रखते समय ध्यान रखें, कि —धूपघड़ी की A B लाईन वाली भुजा धरातल पर लग जाए और 'दक्षिण डायल' की तरफ निकली कील का सिरा भी धरातल पर टिक जाए। घड़ी को धरातल पर रखते हुए यह भी ध्यान रखें कि-घड़ी का उत्तर डायल लगभग उत्तर की ओर और दक्षिण डायल लगभग 'दक्षिण की ओर हो। (देखें इस पृष्ठ पर दिया गया धूपघड़ी का चित्र) अब दोपहर के लगभग रेडियो से मिलाई गई किसी घड़ी से भारतीय स्टैंडर्ड टाईम के घण्टा-मिनट नोट करें। कोष्ठक (३) में उस दिन की तारीख के आगे अपने नगर के नीचे लिखे मिनटों को +, — चिह्न के विपरीत भा. स्टै. टा. के घण्टा-मिनटों में जोड़ें या घटाएं। इस प्रकार जो घण्टा-मिनट मिलेंगे, ठीक उतने घण्टा मिनट पर इस समय धूपघड़ी की कील की छाया को डायल पर गिराएं। अर्थात्-धूपघड़ी को थोड़ा-बहुत इधर-उधर हिलाकर धरातल पर ऐसे रखें, कि कील की छाया डायल में लिखे हुए उतने घण्टा मिनट पर पड़े। **उदाहरणार्थ** मान लीजिए कि—१ जन. को शिमला में १२ बजकर ४५ मि. (भा. स्टै. टा.) पर धूपघड़ी लगानी है। कोष्ठक (३) में शिमला के नीचे १ जन. को + २४ मिनट लिखे हैं। इसलिए १२ घं. ४५ मि. में से २४ मिनट चिह्न (+) के विपरीत घटाए, तो १२ घ. २१ मि. मिले। इसका अभिप्राय यह हुआ कि इस समय शिमला में धूपघड़ी धूप में इस प्रकार रखी जाएगी कि कील की छाया डायल में लिखे १२ घ. २१ मि. पर पड़े। अगर आपका शहर कोष्ठक (३) में नहीं है, तो कोष्ठक (१) में अपने शहर के आगे के 'स्टैण्डर्ड अन्तर' के मिनटों और कोष्ठक (२) में दिए गए उस तारीख के मिनटों को चिह्न के विपरीत भा.स्टै.टा. में जोड़ें या घटाएं। जो टाईम मिले कील की छाया को डायल में वहां पर गिराए। मानलें, प्रयाग में ५ अप्रै. को दोपहर के १२ घ. ४५ मि. पर धूपघड़ी लगानी है। कोष्ठक (१) में प्रयाग का 'स्टैंडर्ड अन्तर' + २ मिनट है, इसे चिह्न के विपरीत १२ घ. ४५ मि. में से घटाने पर १२ घं. ४३ मि. हुए। कोष्ठक (२) में ५ अप्रै. को + ३ मि. है। इन्हें भी चिह्न के विपरीत १२ घं. ४३ मि. में से घटाने पर १२ घं. ४० मि. मिले। इसका अभिप्राय यह हुआ, कि-प्रयाग में इस समय धूपघड़ी धूप में इस प्रकार रखी जाएगी, कि इसकी कील की छाया डायल में १२ घ. ४० मि. पर पड़े। इस प्रकार से धूपघड़ी हमेशा के लिए स्थापित हो जाएगी। अर्थात्—ऊपर बतलाए गए प्रकार से किसी भी मास की किसी भी तारीख को एक बार धूपघड़ी स्थापित कर दी जाए तो इसे अपनी जगह से इधर उधर बिल्कुल हिलने नहीं देना चाहिए। इसे इसी स्थिति (Position) में इसी जगह पर हमेशा के लिए स्थिर कर दें। अब इस तरह स्थिर की गई इस धूपघड़ी से किसी भी दिन नीचे लिखी विधि से भा. स्टै. टा. आसानी से जाना जा सकता है।

धूपघड़ी से भा. स्टै. टा. कैसे जानें?-जिस समय टाईम जानना है, उस समय कील की छाया डायल पर लिखे जितने घ. मि. पर पड़ रही है, उसे नोट कर लें। इन घ. मि. में कोष्ठक (३) से अपने नगर के नीचे और उस दिन की तारीख के आगे लिखे मिनटों को लेकर चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने से भा. स्टै. टा. मालूम हो जाएगा। जैसे—पटना में लगाई गई धूपघड़ी की कील की छाया २ जन को १ घ. ४३ मि. पर पड़ रही है। कोष्ठक ३ में पटना के नीचे २ जन को —१३ मिनट लिखे है। इन्हें धूपघड़ी के टाईम १ घ. ४३ मि. में से चिह्न (—) के अनुसार घटाने पर उस समय १ घ. ३० मि. भा. स्टै. टा. हुआ।

यदि कोष्ठक (३) में आपका नगर न हो तो कोष्ठक (१) में दिए गए स्टैण्डर्ड अन्तर के मिनटों और कोष्ठक (२) में दिए गए उस तारीख के मिनटों को चिह्न के अनुसार धूपघड़ी के टाईम में जोड़ने या घटाने से भा.स्टै.टा. मालूम होगा। जैसे — ६ मार्च को कलकत्ता में कील की छाया २ घ. ४५ मि. पर पड़ रही है। कोष्ठक (१) में कलकत्ता के आगे स्टैण्डर्ड अन्तर-२४ मिनट और कोष्ठक (२) में ६ मार्च को + १२ मिनट लिखा है।

धूपघड़ी—

कोष्ठक (१)

नगर	दक्षिण डायल की ओर कील की लम्बाई (इंच)	स्टैण्डर्ड अन्तर मिनट	नगर	दक्षिण डायल की ओर कील की लम्बाई (इंच)	स्टैण्डर्ड अन्तर मिनट
अजमेर	६	+३१	पटियाला	५ २/१०	+२४
अमृतसर	४ ६/१०	+३१	पठानकोट	४ १/१०	+२७
अम्बाला	५ १/१०	+२३	प्रयाग	६ ३/१०	+ २
अयोध्या	५ १/१०	+ १	पुंछ	४ ५/१०	+३३
अलवर	५ ७/१०	+२३	पूना	९	+३४
अलीगढ़	५ ६/१०	+१८	फरीदकोट	५	+३१
अहमदाबाद	७ १/१०	+३९	फिरोजपुर	५	+३१
आगरा	५ ५/१०	+१८	बम्बई	८ ७/१०	+३८
इन्दौर	७ १/१०	+२७	बरेली	५ ८/१०	+१२
उज्जैन	७	+२७	बीकानेर	५ ८/१०	+३७
उदयपुर	६ ७/१०	+३५	बुलन्दशहर	५ ३/१०	+१८
कपूरथला	४ ८/१०	+२८	भटिण्डा	५ २/१०	+३०
करनाल	५ ८/१०	+२२	भरतपुर	५ ८/१०	+२०
कलकत्ता	७ ३/१०	−२४	भोपाल	७	+२०
काठमाण्डू	५ ३/१०	−११	मथुरा	५ ८/१०	+१९
कानपुर	६	+ ८	मद्रास	१२ १/१०	+ ९
कांगड़ा	४ ८/१०	+२५	मुरादाबाद	५ ४/१०	+१५
काशी	६ ३/१०	− २	मण्डी (हि.प्र.)	४ ८/१०	+२२
कुरुक्षेत्र	५ ७/१०	+२३	मेरठ	५ ४/१०	+१९
ग्वालियर	६ ५/१०	+१७	रिवाड़ी	५ ६/१०	+२३
गुरदासपुर	४ ८/१०	+२८	रोपड़	५	+२४
गोरखपुर	५ ३/१०	− ४	रोहतक	५ ४/१०	+२३
चण्डीगढ़	५	+२३	लखनऊ	५ २/१०	+ ६
चम्बा	४ ७/१०	+३४	लुध्याना	५	+२६
जम्मू	४ ६/१०	+३०	शिमला	५	+२१
जयपुर	५ ८/१०	+२७	श्रीनगर (क.)	४ ५/१०	+३१
जालन्धर	४ ८/१०	+२८	सहारनपुर	५ ३/१०	+२०
जोधपुर	६ १/१०	+३८	हरिद्वार	५ ३/१०	+१७
झांसी	६ ७/१०	+१६	हाथरस	५ ७/१०	+२८
दिल्ली	५ ४/१०	+२१	हिसार	५ ४/१०	+२७
देहरादून	५ १/१०	+१८	हैदराबाद (द.)	९ ८/१०	+१६
नागपुर	७ ७/१०	+१३	होशियारपुर	४ ६/१०	+२६
नाभा	५ ६/१०	+२५			

धूपघड़ी—

कोष्ठक (२)

ता.	जन.	फर.	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुला.	अग.	सितं.	अक्तू.	नव.	दिस.
	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.
१	+३	+१४	+१३	+४	—३	—३	+३	+६	०	—१०	—१६	—११
२	४	१४	१३	४	३	२	४	६	०	१०	१६	११
३	४	१४	१२	४	३	२	४	६	०	११	१६	११
४	५	१४	१२	३	३	२	४	६	—१	११	१६	१०
५	५	१४	१२	३	३	२	४	६	१	११	१६	१०
६	६	१४	१२	३	३	२	४	६	१	१२	१६	९
७	६	१४	११	३	३	१	५	६	२	१२	१६	९
८	६	१४	११	२	४	१	५	६	२	१२	१६	९
९	७	१४	११	२	४	१	५	६	२	१२	१६	८
१०	७	१४	११	२	४	१	५	५	३	१३	१६	८
११	८	१४	१०	१	४	१	५	५	३	१३	१६	७
१२	८	१४	१०	१	४	—१	५	५	३	१३	१६	७
१३	८	१४	१०	१	४	०	५	५	४	१३	१६	६
१४	९	१४	१०	+१	४	०	६	५	४	१४	१६	६
१५	९	१४	९	०	४	०	६	५	५	१४	१६	५
१६	९	१४	९	०	४	०	६	४	५	१४	१५	५
१७	१०	१४	९	०	४	०	६	४	५	१४	१५	४
१८	१०	१४	९	०	४	+१	६	४	५	१५	१५	४
१९	१०	१४	८	—१	४	१	६	४	६	१५	१५	३
२०	११	१४	८	१	४	१	६	३	६	१५	१५	३
२१	११	१४	८	१	४	१	६	३	६	१५	१४	२
२२	११	१४	७	१	४	१	६	३	७	१५	१४	२
२३	१२	१४	७	१	४	२	६	३	७	१५	१४	१
२४	१२	१४	७	२	३	२	६	३	८	१६	१४	—१
२५	१२	१३	६	२	३	२	६	२	८	१६	१३	०
२६	१२	१३	६	२	३	२	६	२	८	१६	१३	०
२७	१३	१३	६	२	३	२	६	२	९	१६	१३	+१
२८	१३	१३	६	२	३	३	६	२	९	१६	१२	१
२९	१३	+१३	५	३	३	३	६	१	९	१६	१२	२
३०	१३	—	५	—३	३	+३	६	१	—१०	१६	—१२	२
३१	+१३	—	+५		—३		+६	+१		—१६		+३

इन्हें चिह्न के अनुसार धूपघड़ी के २ घं. ४५ मि. में घटाने और जोड़ने पर २ घं. ३३ मि. भा. स्टैं. टा. मालूम हुआ।

नोट—२२मार्च से २२ सितम्बर तक धूपघड़ी के 'उत्तर डायल' पर और २३ सितम्बर से २१ मार्च तक 'दक्षिण डायल' पर धूप पड़ेगी। यही कारण है, कि धूपघड़ी के दो डायल बनाने की आवश्यकता है।

संगमरमर पर बनी धूपघड़ियां

उपहार में—पाठकों को उपहार में दी जा रही कागज पर बनी यह धूपघड़ी 'अक्ष वृत्त धरातलीय धूपघड़ी कहलाती है। इसे पत्थर या लोहे के टुकड़े पर बनाकर किसी जगह सीमेण्ट आदि से स्थायी रूप में लगाना इतना सुविधा-पूर्ण नहीं है, जितना कि 'क्षैतिज डायल' वाली धूपघड़ी को लगाना क्षैतिज डायल वाली धूपघड़ी को कहीं एक बार स्थिर कर देने पर उसके इधर-उधर हिलने का विशेष डर भी नहीं रहता। श्री मार्त्तण्ड पंचांग की स्वर्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में हमारे कार्यालय द्वारा भारत की अनेक धार्मिक संस्थाओं तथा सार्वजनिक उद्यानों (Public Parks) को मणिशाला (Marble) पर बनी क्षैतिज डायल वाली आकर्षक धूपघड़ियां उपहार के रूप में दी जा रही हैं। अपने यहां ऐसी धूपघड़ी लगाने की इच्छुक संस्थाओं को उनके अक्षांश-रेखांश के आधार पर मार्बल एवं सामान्य पत्थर पर बनी धूपघड़ियों को सामान्य मूल्य में वितरित करने की योजना भी हम बना रहे हैं।

मैनेजर—श्री मार्त्तण्ड पंचांग कार्यालय
मु. पो. कुराली (रूपनगर)
(पंजाब)

धूपघड़ी

कोष्ठक (३)

तारीख	अजमेर, अमृतसर, फिरोजपुर, फरीदकोट, श्रीनगर	इन्दौर, उज्जैन, जयपुर, हिसार, पठानकोट	करनाल, मण्डी (हि.प्र.)	कांगड़ा, नाभा	जम्मू, भटिण्डा	दिल्ली, शिमला	पटना	पटियाला, रोपड़	लुधियाना, होशियारपुर	कपूरथला, जालन्धर, गुरदासपुर	अम्बाला, अलवर, कुरुक्षेत्र, चण्डीगढ़, रोहतक	काशी
	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.
१ जन.	+३४	+३०	+२५	+२८	+३३	+२४	−८	+२७	+२९	+३१	+२६	+१
२	३५	३१	२६	२९	३४	२५	७	२८	३०	३२	२७	२
४	३६	३२	२७	३०	३५	२६	६	२९	३१	३३	२८	३
६	३७	३३	२८	३१	३६	२७	५	३०	३२	३४	२९	४
९	३८	३४	२९	३२	३७	२८	४	३१	३३	३५	३०	५
११	३९	३५	३०	३३	३८	२९	३	३२	३४	३६	३१	६
१४	४०	३६	३१	३४	३९	३०	२	३३	३५	३७	३२	७
१७	४१	३७	३२	३५	४०	३१	−१	३४	३६	३८	३३	८
२०	४२	३८	३३	३६	४१	३२	०	३५	३७	३९	३४	९
२३	४३	३९	३४	३७	४२	३३	+१	३६	३८	४०	३५	१०
२७	४४	४०	३५	३८	४३	३४	२	३७	३९	४१	३६	११
१ फर.	४५	४१	३६	३९	४४	३५	३	३८	४०	४२	३७	१२
२५	४४	४०	३५	३८	४३	३४	२	३७	३९	४१	३६	११
३ मार्च	४३	३९	३४	३७	४२	३३	+१	३६	३८	४०	३५	१०
७	४२	३८	३३	३६	४१	३२	०	३५	३७	३९	३४	९
११	४१	३७	३२	३५	४०	३१	−१	३४	३६	३८	३३	८
१५	४०	३६	३१	३४	३९	३०	२	३३	३५	३७	३२	७
१९	३९	३५	३०	३३	३८	२९	३	३२	३४	३६	३१	६
२२	३८	३४	२९	३२	३७	२८	४	३१	३३	३५	३०	५
२५	३७	३३	२८	३१	३६	२७	५	३०	३२	३४	२९	४
२९	३६	३२	२७	३०	३५	२६	६	२९	३१	३३	२८	३
१ अप्रैल	३५	३१	२६	२९	३४	२५	७	२८	३०	३२	२७	२
४	३४	३०	२५	२८	३३	२४	८	२७	२९	३१	२६	+१
८	३३	२९	२४	२७	३२	२३	९	२६	२८	३०	२५	०
११	३२	२८	२३	२६	३१	२२	१०	२५	२७	२९	२४	−१
१५	३१	२७	२२	२५	३०	२१	११	२४	२६	२८	२३	२
१९	३०	२६	२१	२४	२९	२०	१२	२३	२५	२७	२२	३
२४	२९	२५	२०	२३	२८	१९	१३	२२	२४	२६	२१	४
२९	२८	२४	१९	२२	२७	१८	१४	२१	२३	२५	२०	५
८ मई	२७	२३	१८	२१	२६	१७	१५	२०	२२	२४	१९	६
२४	२८	२४	१९	२२	२७	१८	१४	२१	२३	२५	२०	५
२ जून	२९	२५	२०	२३	२८	१९	१३	२२	२४	२६	२१	४
७	३०	२६	२१	२४	२९	२०	१२	२३	२५	२७	२२	३
१३	३१	२७	२२	२५	३०	२१	११	२४	२६	२८	२३	२
१८	३२	२८	२३	२६	३१	२२	१०	२५	२७	२९	२४	−१
२३	३३	२९	२४	२७	३२	२३	९	२६	२८	३०	२५	०
२७	३४	३०	२५	२८	३३	२४	८	२७	२९	३१	२६	+१
२ जुलाई	३५	३१	२६	२९	३४	२५	७	२८	३०	३२	२७	२
७	३६	३२	२७	३०	३५	२६	६	२९	३१	३३	२८	३
१४	३७	३३	२८	३१	३६	२७	५	३०	३२	३४	२९	४
१० अगस्त	+३६	+३२	+२७	+३०	+३५	+२६	−६	+२९	+३१	+३३	+२८	+३

तारीख	अजमेर, अमृतसर, फिरोजपुर, फरीदकोट, श्रीनगर	इन्दौर, उज्जैन, जयपुर, हिसार, पठानकोट	करनाल, मण्डी (हि.प्र.)	कांगड़ा, नाभा	जम्मू, भटिण्डा	दिल्ली, शिमला	पटना	पटियाला, रोपड़	लुधियाना, होशियारपुर	कपूरथला, जालन्धर, गुरदासपुर	अम्बाला, अलवर, कुरुक्षेत्र, चण्डीगढ़, रोहतक	काशी
	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.
१६ अग.	+३५	+३१	+२६	+२९	+३४	२५ +	−७	+२८	+३०	+३२	+२७	+२
२०	३४	३०	२५	२८	३३	२४	८	२७	२९	३१	२६	+१
२५	३३	२९	२४	२७	३२	२३	९	२६	२८	३०	२५	०
२९	३२	२८	२३	२६	३१	२२	१०	२५	२७	२९	२४	−१
१ सित.	३१	२७	२२	२५	३०	२१	११	२४	२६	२८	२३	२
४	३०	२६	२१	२४	२९	२०	१२	२३	२५	२७	२२	३
७	२९	२५	२०	२३	२८	१९	१३	२२	२४	२६	२१	४
१०	२८	२४	१९	२२	२७	१८	१४	२१	२३	२५	२०	५
१३	२७	२३	१८	२१	२६	१७	१५	२०	२२	२४	१९	६
१६	२६	२२	१७	२०	२५	१६	१६	१९	२१	२३	१८	७
१९	२५	२१	१६	१९	२४	१५	१७	१८	२०	२२	१७	८
२२	२४	२०	१५	१८	२३	१४	१८	१७	१९	२१	१६	९
२४	२३	१९	१४	१७	२२	१३	१९	१६	१८	२०	१५	१०
२७	२२	१८	१३	१६	२१	१२	२०	१५	१७	१९	१४	११
३०	२१	१७	१२	१५	२०	११	२१	१४	१६	१८	१३	१२
३ अक्तू.	२०	१६	११	१४	१९	१०	२२	१३	१५	१७	१२	१३
६	१९	१५	१०	१३	१८	९	२३	१२	१४	१६	११	१४
१०	१८	१४	९	१२	१७	८	२४	११	१३	१५	१०	१५
१४	१७	१३	८	११	१६	७	२५	१०	१२	१४	९	१६
१८	१६	१२	७	१०	१५	६	२६	९	११	१३	८	१७
२४	१५	११	६	९	१४	५	२७	८	१०	१२	७	१८
१६ नव.	१६	१२	७	१०	१५	६	२६	९	११	१३	८	१७
२१	१७	१३	८	११	१६	७	२५	१०	१२	१४	९	१६
२५	१८	१४	९	१२	१७	८	२४	११	१३	१५	१०	१५
२८	१९	१५	१०	१३	१८	९	२३	१२	१४	१६	११	१४
१ दिसं.	२०	१६	११	१४	१९	१०	२२	१३	१५	१७	१२	१३
४	२१	१७	१२	१५	२०	११	२१	१४	१६	१८	१३	१२
६	२२	१८	१३	१६	२१	१२	२०	१५	१७	१९	१४	११
९	२३	१९	१४	१७	२२	१३	१९	१६	१८	२०	१५	१०
११	२४	२०	१५	१८	२३	१४	१८	१७	१९	२१	१६	९
१३	२५	२१	१६	१९	२४	१५	१७	१८	२०	२२	१७	८
१५	२६	२२	१७	२०	२५	१६	१६	१९	२१	२३	१८	७
१७	२७	२३	१८	२१	२६	१७	१५	२०	२२	२४	१९	६
१९	२८	२४	१९	२२	२७	१८	१४	२१	२३	२५	२०	५
२१	२९	२५	२०	२३	२८	१९	१३	२२	२४	२६	२१	४
२३	३०	२६	२१	२४	२९	२०	१२	२३	२५	२७	२२	३
२५	३१	२७	२२	२५	३०	२१	११	२४	२६	२८	२३	२
२७	३२	२८	२३	२६	३१	२२	१०	२५	२७	२९	२४	१
२९	३३	२९	२४	२७	३२	२३	९	२६	२८	३०	२५	०
३१	+३४	+३०	+२५	+२८	+३३	+२४	−८	+२७	+२९	+३१	+२६	+१

फलित शास्त्र के गूढ़ रहस्य

फलितशास्त्र की प्रामाणिकता एवं वैज्ञानिकता इस शास्त्र के गूढ़ रहस्यों के बिना सिद्ध नहीं की जा सकती। गूढ़ रहस्यों को हृदयंगम कर लेने पर ही दैवज्ञ अव्यभिचरित भविष्य कथन में समर्थ हो सकता है—यह तथ्य है। इसी दृष्टिकोण से हम फलित जिज्ञासु-सज्जनों के लिए प्रतिवर्ष इस स्तम्भ के अन्तर्गत फलित-शास्त्र का कोई एक मार्मिक रहस्य दिया करेंगे। जिज्ञासु पाठक लाभान्वित होंगे;—ऐसा विश्वास है।

फलित में नवांश व वर्गोत्तमी ग्रह-भाव का महत्व

बहुधा देखने में आता है, कि किसी व्यक्ति की कुण्डली में विशिष्ट राजयोग पड़ा हुआ है, परन्तु उसका जीवन गिरी हुई हालत में ही गुजरता है, ऐसे ही किसी की कुण्डली में अधिकांश ग्रह या विशिष्ट ग्रह नीच के हैं, परन्तु वह महाभाग्यवान् है। इसका कारण नवांश-गत-ग्रहों की परिस्थिति है। क्योंकि फलादेश-कथन में नवांश-कुण्डली व वर्गोत्तमी ग्रहभाव का विशेष महत्व है। नवांश कुण्डली के बिना फलादेश कहना लंगड़े की दौड़ के समान ही है। क्योंकि, विशेष विचारों में जन्म कुण्डली से भी अधिक विशेष महत्व नवांश कुण्डली का होता है, तद्यथा—"स्वोच्चे नीचांशके दुःखी नीचे स्वोच्चांशके सुखी। स्वांशे वर्गोत्तमे भोगी राजयोगो भविष्यति॥"

जैसे जन्म कुण्डली में कोई ग्रह अपनी उच्च राशि का है और वही ग्रह नवांश कुण्डली में नीचराशिगत है तो उसकी राशिगत उच्चता निरर्थक है। नवांश की स्थिति को देखते हुए वह ग्रह नीच ही समझा जाएगा। इस के विपरीत यदि कोई ग्रह जन्म कुण्डली में नीचस्थ है और वही ग्रह नवांश कुण्डली में उच्च का है तो उसका नीचत्व भंग हो जाता है। वह ग्रह उच्च सदृश फलप्रद रहेगा। विशेष यह भी समझ लें, कि-जन्म कुण्डली में नीचस्थ ग्रह यदि नवांश कुण्डली में भी नीच का ही रहे, तो वह ग्रह वर्गोत्तमी समझा जाएगा और अपनी वर्गोत्तम-स्थिति के कारण अशुभ फल न देकर शुभफल ही देगा, उसकी राशिगत नीचता लुप्त हो जाएगी।

इसी तरह यदि कोई ग्रह शत्रु क्षेत्रवर्ती है, लेकिन नवांश कुण्डली में भी उसी राशिगत है तो वह वर्गोत्तमी एवं स्वक्षेत्री ही समझा जाएगा, अतः शुभ फलप्रद रहेगा।

चन्द्र एवं गुरु का केवल वर्गोत्तम होना राजयोगप्रद है। शुक्र भी वर्गोत्तमी हो कर शुभ उत्तम भाग्य योग बनाता है। लग्न का वर्गोत्तमी होना विशेष लाभप्रद है। वर्गोत्तम लग्न-गत चन्द्र या स्वनवांशगत-चन्द्रमा शुभ सौभाग्यप्रद कहा है। शुभग्रह किंवा पाप ग्रह भी वर्गोत्तम स्थिति में शुभ फलप्रद ही सिद्ध होता है। वर्गोत्तम-लग्नेश यदि वक्री हो साथ ही आत्मकारक ग्रह के साथ हो तो उसे अधिक बलशाली एवं श्रेयस्कर समझना चाहिए।—इस प्रकार ग्रहस्थिति को दृष्टि में रखते हुए भविष्य कथन में आश्चर्यजनक रूप से सफलता मिलती है—यह अनुभव है।

नोट—आगामी वर्ष (सं. २०३६ वि.) में हम जातक की कुण्डली के आधार पर जातक के सम्बन्धी विशेष किंवा जातक की दुर्घटना की भविष्यवाणी कैसे की जा सकती है? —यह देंगे।

सिद्ध-सन्तों के अनुभूत टोटके

(१) **पीलिया रोग की दवा**—तीन माशा शहद के साथ एक तोला गुलकन्द कर (गर्म करके ठण्डा किया हुआ) दुग्ध पान करें। दिन [illegible] तीन बजे से पहिले पहिले दो बार यह विधि करें। [illegible]

(२) **दाद खाज की दवा**—राल, गन्धक और सुहागा तीनों को बराबर मात्रा में लेकर पीस कर पानी या नींबू के रस में घोल कर दाद पर मलें, दाद सदा के लिए जड़ से जाता रहेगा, दवा वाले हाथ आंखों को न लगावें।

(३) **मुहासों की दवा**—प्रायः देखा है कि मुंह पर फुंसियां निकल कर कील निकलने लगते हैं एतदर्थ इस औषध का प्रयोग करें।

छुआरे की गुठली को सिरके में घिस कर मुंह पर लगा लें थोड़ी देर बाद किसी अच्छे साबुन से धो दें। दो तीन बार ऐसा करने से लाभ होगा।

(४) **नींद लाने के लिए दवा**—चार छटांक तिल का तेल खूब गर्म करके उस में कपूर मिला लें। ठण्डा होने पर पैरों के तलुओं पर खूब मालिश करें, गहरी नींद आएगी।

मन्त्र शास्त्र का अद्भुत चमत्कार

इस स्तम्भ के अन्तर्गत कुछ यन्त्र-मन्त्र गत कई वर्षों से देते आ रहे हैं निम्नांकित कुछ मन्त्र "साबर मन्त्र" हैं, जिन को भाषा की दृष्टि से शुद्ध करने का प्रयास नहीं करना चाहिए "**अनमिल अक्षर मन्तर जापू प्रकट प्रभाव महेश-प्रतापू।**" यन्त्रों को लाल चन्दन से भूर्जपत्र (भोजपत्र) पर बार-बार लिखकर अष्टगंध धूप-दीपादि से पूजा करके धारण करने पर प्रत्यक्ष चमत्कार देखा जा सकता है। मन्त्रों को शुभ मुहूर्त में गुरु-मुख से प्राप्त करें एवं दृढ़ निश्चयी होकर जप अनुष्ठानादि द्वारा सिद्धि प्राप्त करके यशोलाभ करें। **ध्यान रहे**—दीपमाला की रात्रि को या ग्रहण के समय यन्त्रों को बार-बार लिखकर एवं मन्त्रों को जप पूर्वक सिद्ध करके अविलम्ब ही चमत्कार देख सकते हैं। यन्त्र मन्त्रों के बल पर ही दैवज्ञ अपने वैदुष्य से अक्षुण्ण यश को प्राप्त कर सकता है:—"**सिद्धिर्भूषयते विद्याम्**"।

रूठी स्त्री व विमुख-प्रेमिका के वशीकरण के लिए साबरी मन्त्र

निम्न लिखित साबरी मन्त्र के प्रयोग से रूठी स्त्री व विमुख-प्रेमिका सब कुछ भूलकर जीवनभर सौहार्दपूर्ण व्यवहार करती है, यह मन्त्र गोली की चोट असर करता है:—

मन्त्र—"मोहिनी माता, भूत पिता, भूत सिर बेताल, उड़ ऐ काली नागिन (प्रेमिका का नाम लें) को जा लाग। ऐसी जाके लाग, कि (प्रेमिका का नाम लें) को लग जावे हमारी मुहब्बत की आग। न खड़े सुख, न लेटे सुख, न सोते सुख, सिन्दूर चढ़ाऊं मंगलवार, कभी न छोड़े हमारा ख्याल। जब तक न देखे हमारा मुख, काया तड़प तड़प मर जाय, चलो मन्त्र फुरो वाचा, दिखाओ रे शब्द अपने गुरु के इलम का तमाशा॥"

विधि—शुक्ल पक्ष में पूर्णमासी से आठ दिन पहिले एकान्त शान्त कमरे में रात को दस बजे शुद्ध वस्त्र पहन कर कंबल के आसन पर बैठ कर जल का पात्र अपने पास रख कर तथा धूपबत्ती से कमरे को सुवासित करके मन्त्र जाप करें। मन्त्र जाप के समय अपने मुंह को विमुख प्रेमिका किंवा रूठी स्त्री के वास स्थान की ओर रखें। प्रतिरात्रि एकाग्रमन से घड़ी देख कर ठीक दो घन्टे जाप करें मन्त्र जाप करते समय आंखें बन्द करके प्रेयसी का चित्र कल्पना द्वारा अपने नेत्रों के सामने इस प्रकार बनालें, मानो कि-उसके नाक कान आंखें होंठ मुख को सच में ही आप देख रहे हों। जाप के समय कल्पना जगत् में और कुछ न रहे। इस प्रकार दृढ़ इच्छा शक्ति वाला व्यक्ति उपरोक्त मन्त्र से नौवें दिन ही सफलता प्राप्त कर लेता है। जिस व्यक्ति की इच्छा शक्ति प्रबल न हो, तो उसे दूसरे या तीसरे प्रयोग में

दो बार यह विधि करें। एक सप्ताह में ही ... लेता है। जिस व्यक्ति की इच्छा पूर्ति न हो, तो उसे दूसरे या तीसरे प्रयोग में

व्यापार-विमर्श

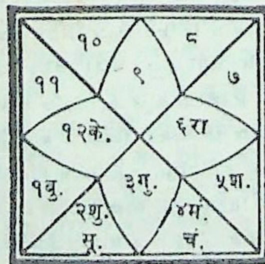
संवत् २०३५ वि. व्यापारी वर्ग के लिए विशेष-महत्व का सिद्ध होगा। इस संवत् में गुरु-शनि एवं राहु-केतु आदि ग्रहों के राशि-नक्षत्र-चार तथा वर्ष में महत्वपूर्ण ग्रहों के दृष्टि-सम्बन्ध एवं वेध आदि के परिशीलन से ज्ञात होता है, कि—यह वर्ष प्रमुख-बाजारों में आश्चर्यजनक घटाबढ़ी वाला रहेगा। व्यापारियों को निम्नलिखित हिदायतों को ध्यान में रखते हुए अपनी ग्रहस्थिति वश हानि-लाभ का विचार कर लेने पर ही व्यापारिक क्षेत्र में आगे कदम बढ़ाने चाहिए।

वायदा-व्यापारियों के लिए हिदायतें— (१) सदैव उतने ही लाभ की आशा कर के व्यापार करें. जितनी साधारणतया हानि उठाने की सामर्थ्य हो। (२) सदैव याद रक्खो, कि वायदा व्यापार में नुक्सान की लिमिट बांध कर काम करें, ज्यादा नुक्सान व घबराहट से बच जाओगे,कम नुकसान में सौदा काट देना अक्लमन्दी है। (३) व्यापार करते समय ध्यान रहे,—कि सब से पहिले अपने मन में व्यापारिक आधार के साथ साथ ग्रह-गति के आधार पर निर्णय करलें कि—यह समय 'इस' वस्तु में मोटी तेजी का है या मोटी मन्दी का? मन में यह धारणा बांध कर बाजार का रुख देखें। यदि व्यापार वक्त तेजी का चल रहा हो, तो हमारे परामर्श से तेजी का व्यापार करके लाभ उठावें। (४) यदि ग्रह योग भी मन्दे का हो और बाजार में मन्दी के मोटे कारण भी दिखलाई देने लगें और व्यापार के वक्त भी बाजार का रुख मन्दे का हो तो ऐसी स्थिति में हर बढ़े भाव में बेचान करते रहिए, थोड़ा थोड़ा सौदा काट कर नफा से सुलटते रहिए।

(५) व्यापार-वक्त तेजी का है या मन्दी का?–यह जानने के लिए'खास'वस्तु के भावों को देखना चाहिए। यदि उस वस्तु के भाव हर तीसरे चौथे आठवें दिन मन्दी के या तेजीके नए२भाव आते चले जाएं,जैसे तीसरे दिन नया भाव मन्दी का आवे तो जान लो कि इस वस्तु में अब मन्दे का वक्त है, उसे तेजी के उछाले में बेच दें। (६) यदि मन्दी के भाव तो छूटते चले जाएं और तेजी के भाव तीसरे या चौथे दिन नए नए बनते जाएं तो समझ लें कि तेजीका वक्त चल रहा है,ऐसे समय जब ग्रहचाल से भी तेजी नजर आए तो तेजी का व्यापार करके प्राय: लाभ उठाया जा सकता है।(७)बाजार के खिलाफ कभी काम न करें। मानलो, आपने तेजी का काम किया, उधर सौदा करते ही बाजार मन्दी के वक्त का चल रहा हो तो किसी भी समय तेजी का उछाला आते ही सौदा खत्म कर दो, बड़े नुक्सान से बच जायोगे। हमेशा ग्रहयोग को आधार मान कर और बाजार के रुख को ध्यान में रखते हुए अपनी पाराशरी शुभ दशा में व्यापार से अच्छा लाभ उठाया जा सकता है। इस के विरुद्ध खोटी ग्रह स्थिति वाले व्यापारियों को वायदे का व्यापार भूलकर भी नहीं करना चाहिए, क्योंकि भारी हानी हो सकती है, सट्टा तो सितारे का साथी है। अत: समयानुसार पत्र द्वारा अपनी दशा के अनुसार हमारे सुभावों द्वारा व्यापारी लाभ उठा सकते हैं।

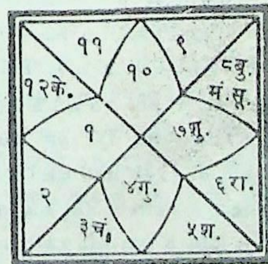
सब से पहिले सस्य-जातक कुण्डलियों के अनुसार व्यापार के बारे में संक्षेप में कुछ जान लेना उचित समझते हैं।

शरत्सस्य जातक कुं॰



१४ मई (१९७८ ई.) इष्ट ४३।४०

ग्रीष्म सस्य जातक कुं॰



१६ नवं. (१९७८ ई.) इष्ट १३।४७

शरत् सस्य जातक कुण्डली के अनुसार कन्या एवं कर्क में पाप ग्रह होने से ज्ञात होता है कि ज्वार बाजरा चावल मूंग मोठ तिल आदि के व्यापार में बाजार का रुख देख कर ही काम करने में लाभ है तथा इस वर्ष ग्रीष्म सस्य जातक कुण्डली के अनुसार सिंह का शनि अनेकत्र ग्रीष्म धान्यों की खड़ी फसल के लिए हानि कारक है इस वर्ष ग्रीष्म धान्यों में भारी उथल पुथल होगी। दोनों कुण्डलियों में शनि-मंगल की स्थिति लोह निर्मित मशीनरी तथा तेलवाना गुड़ खाण्ड रसकस आदि में तेजी का संकेत देती है। शनि मंगल की तुला पर दृष्टि से रूई आदि में भी अच्छी तेजी का संकेत मिलता है। यह वर्ष व्यापारिक जगत् में एक विशेष महत्वपूर्ण ग्रह-स्थिति वाला वर्ष है। इस वर्ष में व्यापारियों को बहुत सूझबूझ एवं शासन की गतिविधि को ध्यान में रखते हुए काम करना चाहिए। क्योंकि—सिंह के शनि में तेलवाना एवं लोह-निर्मित वस्तुओं में भयंकर तेजी तथा रूई आदि में भी उच्चकोटी की तेजी बनती है; जिससे शासकों को व्यापार में हस्तक्षेप करने के लिए विवश होना पड़ता है एवं शासन का अंकुश मार्कीट के रुख में एकदम परिवर्तन लाकर व्यापारियों को परेशानी में डाल सकता है।

इस वर्ष शनि वर्ष का राजा है तथा मंगल रसेश (गुड़खांण्ड रसकस आदि का स्वामी) है। अनेकत्र अवर्षण आदि से व्यापार क्षेत्र प्रभावित होगा। कहीं अतिवर्षण किंवा अन्य प्रकृतिक कोप से खड़ी फसल को हानि भी होगी। इस वर्ष अन्न स्तम्भ के विचार से सभी प्रकार के अनाजों की फसल बहुत अच्छी होगी। लेकिन कुछ माल को

फलित शास्त्र के गूढ़ रहस्य

फलितशास्त्र की प्रामाणिकता एवं वैज्ञानिकता इस शास्त्र के गूढ़ रहस्यों के बिना सिद्ध नहीं की जा सकती। गूढ़ रहस्यों को हृदयंगम कर लेने पर ही दैवज्ञ अव्यभिचरित भविष्य कथन में समर्थ हो सकता है—यह तथ्य है। इसी दृष्टिकोण से हम फलित जिज्ञासु-सज्जनों के लिए प्रतिवर्ष इस स्तम्भ के अन्तर्गत फलित-शास्त्र का कोई एक मार्मिक रहस्य दिया करेंगे। जिज्ञासु पाठक लाभान्वित होंगे;—ऐसा विश्वास है।

फलित में नवांश व वर्गोत्तमी ग्रह-भाव का महत्व

बहुधा देखने में आता है, कि किसी व्यक्ति की कुण्डली में विशिष्ट राजयोग पड़ा हुआ है, परन्तु उसका जीवन गिरी हुई हालत में ही गुजरता है, ऐसे ही किसी की कुण्डली में अधिकांश ग्रह या विशिष्ट ग्रह नीच के हैं, परन्तु वह महाभाग्यवान् है। इसका कारण नवांश-गत-ग्रहों की परिस्थिति है। क्योंकि फलादेश-कथन में नवांश-कुण्डली व वर्गोत्तमी ग्रहभाव का विशेष महत्व है। नवांश कुण्डली के बिना फलादेश कहना लंगड़े की दौड़ के समान ही है। क्योंकि, विशेष विचारों में जन्म कुण्डली से भी अधिक विशेष महत्व नवांश कुण्डली का होता है, तद्यथा—"स्वोच्चे नीचांशके दुःखी नीचे स्वोच्चांशके सुखी। स्वांशे वर्गोत्तमे भोगी राजयोगी भविष्यति॥"

जैसे जन्म कुण्डली में कोई ग्रह अपनी उच्च राशि का है और वही ग्रह नवांश कुण्डली में नीचराशिगत है तो उसकी राशिगत उच्चता निरर्थक है। नवांश की स्थिति को देखते हुए वह ग्रह नीच ही समझा जाएगा। इस के विपरीत यदि कोई ग्रह जन्म कुण्डली में नीचस्थ है और वही ग्रह नवांश कुण्डली में उच्च का है तो उसका नीचत्व भंग हो जाता है। वह ग्रह उच्च सदृश फलप्रद रहेगा। विशेष यह भी समझ लें, कि-जन्म कुण्डली में नीचस्थ ग्रह यदि नवांश कुण्डली में भी नीच का ही रहे, तो वह ग्रह वर्गोत्तमी समझा जाएगा और अपनी वर्गोत्तम-स्थिति के कारण अशुभ फल न देकर शुभफल ही देगा, उसकी राशिगत नीचता लुप्त हो जाएगी।

इसी तरह यदि कोई ग्रह शत्रु क्षेत्रवर्ती है, लेकिन नवांश कुण्डली में भी उसी राशिगत है तो वह वर्गोतमी एवं स्वक्षेत्री ही समझा जाएगा, अतः शुभ फलप्रद रहेगा।

चन्द्र एवं गुरु का केवल वर्गोत्तम होना राजयोगप्रद है। शुक्र भी वर्गोत्तमी हो कर शुभ उत्तम भाग्य योग बनाता है। लग्न का वर्गोतमी होना विशेष लाभप्रद है। वर्गोत्तम लग्न-गत चन्द्र या स्वनवांशगत-चन्द्रमा शुभ सौभाग्यप्रद कहा है। शुभग्रह किंवा पाप ग्रह भी वर्गोत्तम स्थिति में शुभ फलप्रद ही सिद्ध होता है। वर्गोत्तम-लग्नेश यदि वक्री हो साथ ही आत्मकारक ग्रह के साथ हो तो उसे अधिक बलशाली एवं श्रेयस्कर समझना चाहिए।— इस प्रकार ग्रहस्थिति को दृष्टि में रखते हुए भविष्य कथन में आश्चर्यजनक रूप से सफलता मिलती है—यह अनुभव है।

नोट—आगामी वर्ष (सं. २०३६ वि.) में हम जातक की कुण्डली के आधार पर जातक के सम्बन्धी विशेष किंवा जातक की दुर्घटना की भविष्यवाणी कैसे की जा सकती है ?—यह देंगे।

सिद्ध-सन्तों के अनुभूत टोटके

(१) **पीलिया रोग की दवा**—तीन माशा शहद के साथ एक तोला गुलकन्द कर (गर्म करके ठण्डा किया हुआ) दुग्ध पान करें। दिन में तीन बजे से पहिले पहिले दो बार यह विधि करें। एक सप्ताह में ही पीलिया रोग

(२) **दाद खाज की दवा**—राल, गन्धक और सुहागा तीनों को बराबर मात्रा में लेकर पीस कर पानी या नींबू के रस में घोल कर दाद पर मलें, दाद सदा के लिए जड़ से जाता रहेगा, दवा वाले हाथ आंखों को न लगावें।

(३) **मुहासों की दवा**—प्रायः देखा है कि मुंह पर फुंसियां निकल कर कील निकलने लगते हैं एतदर्थ इस औषध का प्रयोग करें।

छुआरे की गुठली को सिरके में घिस कर मुंह पर लगा लें थोड़ी देर बाद किसी अच्छे साबुन से धो दें। दो तीन बार ऐसा करने से लाभ होगा।

(४) **नींद लाने के लिए दवा**—चार छटांक तिल का तेल खूब गर्म करके उस में कपूर मिला लें। ठण्डा होने पर पैरों के तलुओं पर खूब मालिश करें, गहरी नींद आएगी।

मन्त्र शास्त्र का अद्भुत चमत्कार

इस स्तम्भ के अन्तर्गत कुछ यन्त्र-मन्त्र गत कई वर्षों से देते आ रहे हैं निम्नांकित कुछ मन्त्र "साबर मन्त्र" हैं, जिन को भाषा की दृष्टि से शुद्ध करने का प्रयास नहीं करना चाहिए "**अनमिल अक्षर मन्तर जापू प्रकट प्रभाव महेश-प्रतापू।**" यन्त्रों को लाल चन्दन से भूर्जपत्र (भोजपत्र) पर बार-बार लिखकर अष्टगंध धूप-दीपादि से पूजा करके धारण करने पर प्रत्यक्ष चमत्कार देखा जा सकता है। मन्त्रों को शुभ मुहूर्त में गुरु-मुख से प्राप्त करें एवं दृढ़ निश्चयी होकर जप अनुष्ठानादि द्वारा सिद्धि प्राप्त करके यशोलाभ करें। **ध्यान रहे**—दीपमाला की रात्रि को या ग्रहण के समय यन्त्रों को बार-बार लिखकर एवं मन्त्रों को जप पूर्वक सिद्ध करके अविलम्ब ही चमत्कार देख सकते हैं। यन्त्र मन्त्रों के बल पर ही दैवज्ञ अपने वैदुष्य से अक्षुण्ण यश को प्राप्त कर सकता है:—"**सिद्धिर्भूषयते विद्याम्**"।

रूठी स्त्री व विमुख-प्रेमिका के वशीकरण के लिए साबरी मन्त्र

निम्न लिखित साबरी मन्त्र के प्रयोग से रूठी स्त्री व विमुख-प्रेमिका सब कुछ भूलकर जीवनभर सौहार्दपूर्ण व्यवहार करती है, यह मन्त्र गोली की चोट असर करता है:—

मन्त्र—"मोहिनी माता, भूत पिता, भूत सिर बेताल, उड़ ऐ काली नागिन (प्रेमिका का नाम लें) को जा लाग। ऐसी जाके लाग, कि (प्रेमिका का नाम लें) को लग जावे हमारी मुहब्बत की आग। न खड़े सुख, न लेटे सुख, न सोते सुख, सिन्दूर चढ़ाऊं मंगलवार, कभी न छोड़ें हमारा ख्याल। जब तक न देखे हमारा मुख, काया तड़प तड़प मर जाय, चलो मन्त्र फुरो वाचा, दिखाओ रे शब्द अपने गुरु के इल्म का तमाशा॥"

विधि—शुक्ल पक्ष में पूर्णमासी से आठ दिन पहिले एकान्त शान्त कमरे में रात को दस बजे शुद्ध वस्त्र पहन कर कंबल के आसन पर बैठ कर जल का पात्र अपने पास रख कर तथा धूपबत्ती से कमरे को सुवासित करके मन्त्र जाप करे। मन्त्र जाप के समय अपने मुंह को विमुख प्रेमिका किंवा रूठी स्त्री के वास स्थान की ओर रक्खें। प्रतिरात्रि एकाग्रमन से घड़ी देख कर ठीक दो घन्टे जाप करें मन्त्र जाप करते समय आंखें बन्द करके प्रेयसी का चित्र कल्पना द्वारा अपने नेत्रों के सामने इस प्रकार बनालें, मानो कि-उसके नाक कान आंखें होंठ मुख को सच में ही आप देख रहे हों। जाप के समय कल्पना जगत् में और कुछ न रहे। इस प्रकार दृढ़ इच्छा शक्ति वाला व्यक्ति उपरोक्त मन्त्र से नौवें दिन ही सफलता प्राप्त कर लेता है। जिस व्यक्ति की इच्छा शक्ति प्रबल न हो, तो उसे दूसरे या तीसरे प्रयोग में

व्यापार-विमर्श

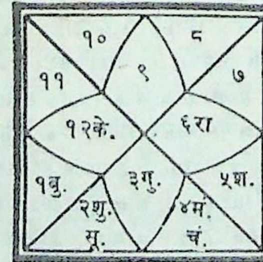
संवत् २०३५ वि. व्यापारी वर्ग के लिए विशेष-महत्व का सिद्ध होगा। इस संवत् में गुरु-शनि एवं राहु-केतु आदि ग्रहों के राशि-नक्षत्र-चार तथा वर्ष में महत्वपूर्ण ग्रहों के दृष्टि-सम्बन्ध एवं वेध आदि के परिशीलन से ज्ञात होता है, कि—यह वर्ष प्रमुख-बाजारों में आश्चर्यजनक घटाबढ़ी वाला रहेगा। व्यापारियों को निम्नलिखित हिदायतों को ध्यान में रखते हुए अपनी ग्रहस्थिति वश हानि-लाभ का विचार कर लेने पर ही व्यापारिक क्षेत्र में आगे कदम बढ़ाने चाहिए।

वायदा-व्यापारियों के लिए हिदायतें— (१) सदैव उतने ही लाभ की आशा कर के व्यापार करें, जितनी साधारणतया हानि उठाने की सामर्थ्य हो। (२) सदैव याद रक्खो, कि वायदा व्यापार में नुक्सान की लिमिट बांध कर काम करें, ज्यादा नुक्सान व घबराहट से बच जाओगे, कम नुकसान में सौदा काट देना अक्लमन्दी है। (३) व्यापार करते समय ध्यान रहे,—कि सब से पहिले अपने मन में व्यापारिक आधार के साथ साथ ग्रह-गति के आधार पर निर्णय करलें कि—यह समय 'इस' वस्तु में मोटी तेजी का है या मोटी मन्दी का? मन में यह धारणा बांध कर बाजार का रुख देखें। यदि व्यापार वक्त तेजी का चल रहा हो, तो हमारे परामर्श से तेजी का व्यापार करके लाभ उठावें। (४) यदि ग्रह योग भी मन्दे का हो और बाजार में मन्दी के मोटे कारण भी दिखलाई देने लगें और व्यापार के वक्त भी बाजार का रुख मन्दे का हो तो ऐसी स्थिति में हर बढ़े भाव में बेचान करते रहिए, थोड़ा थोड़ा सौदा काट कर नफा से सुलटते रहिए।

(५) व्यापार-वक्त तेजी का है या मन्दी का?–यह जानने के लिए 'खास' वस्तु के भावों को देखना चाहिए। यदि उस वस्तु के भाव हर तीसरे चौथे आठवें दिन मन्दी के या तेजीके नए२भाव आते चले जाएं, जैसे तीसरे दिन नया भाव मन्दी का आवे तो जान लो कि इस वस्तु में अब मन्दे का वक्त है, उसे तेजी के उछाले में बेच दें। (६) यदि मन्दी के भाव तो छूटते चले जाएं और तेजी के भाव तीसरे या चौथे दिन नए नए बनते जाएं तो समझ लें कि तेजीका वक्त चल रहा है, ऐसे समय जब ग्रहचाल से भी तेजी नजर आए तो तेजी का व्यापार करके प्रायः लाभ उठाया जा सकता है। (७) बाजार के खिलाफ कभी काम न करें। मानलो, आपने तेजी का काम किया, उधर सौदा करते ही बाजार मन्दी के वक्त का चल रहा हो तो किसी भी समय तेजी का उछाला आते ही सौदा खत्म कर दो, बड़े नुकसान से बच जाओगे। हमेशा ग्रहयोग को आधार मान कर और बाजार के रुख को ध्यान में रखते हुए अपनी पाराशरी शुभ दशा में व्यापार से अच्छा लाभ उठाया जा सकता है। इस के विरुद्ध खोटी ग्रह स्थिति वाले व्यापारियों को वायदे का व्यापार भूलकर भी नहीं करना चाहिए, क्योंकि भारी हानी हो सकती है, सट्टा तो सितारे का साथी है। अत: समयानुसार पत्र द्वारा अपनी दशा के अनुसार हमारे सुझावों द्वारा व्यापारी लाभ उठा सकते हैं।

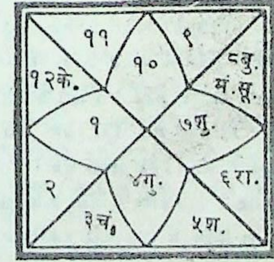
सब से पहिले सस्य-जातक कुण्डलियों के अनुसार व्यापार के बारे में संक्षेप में कुछ जान लेना उचित समझते हैं।

शरत्सस्य जातक कुं.



१४ मई (१९७८ ई.) इष्ट ४३।४०

ग्रीष्म सस्य जातक कुं.



१६ नवं. (१९७८ ई.) इष्ट १३।४७

शरत् सस्य जातक कुण्डली के अनुसार कन्या एवं कर्क में पाप ग्रह होने से ज्ञात होता है कि ज्वार बाजरा चावल मूंग मोठ तिल आदि के व्यापार में बाजार का रुख देख कर ही काम करने में लाभ है तथा इस वर्ष ग्रीष्म सस्य जातक कुण्डली के अनुसार सिंह का शनि अनेकत्र ग्रीष्म धान्यों की खड़ी फसल के लिए हानि कारक है इस वर्ष ग्रीष्म धान्यों में भारी उथल पुथल होगी। दोनों कुण्डलियों में शनि-मंगल की स्थिति लोह निर्मित मशीनरी तथा तेलवाना गुड़ खाण्ड रसकस आदि में तेजी का संकेत देती है। शनि मंगल की तुला पर दृष्टि से रुई आदि में भी अच्छी तेजी का संकेत मिलता है। यह वर्ष व्यापारिक जगत् में एक विशेष महत्वपूर्ण ग्रह-स्थिति वाला वर्ष है। इस वर्ष में व्यापारियों को बहुत सूझबूझ एवं शासन की गतिविधि को ध्यान में रखते हुए काम करना चाहिए। क्योंकि—सिंह के शनि में तेलवाना एवं लोह-निर्मित वस्तुओं में भयंकर तेजी तथा रुई आदि में भी उच्चकोटी की तेजी बनती है; जिससे शासकों को व्यापार में हस्तक्षेप करने के लिए विवश होना पड़ता है एवं शासन का अंकुश मार्कीट के रुख में एकदम परिवर्तन लाकर व्यापारियों को परेशानी में डाल सकता है।

इस वर्ष शनि वर्ष का राजा है तथा मंगल रसेश (गुड़खांण्ड रसकस आदि का स्वामी) है। अनेकत्र अवर्षण आदि से व्यापार क्षेत्र प्रभावित होगा। कहीं अतिवर्षण किंवा अन्य प्रकृतिक कोप से खड़ी फसल को हानि भी होगी। इस वर्ष अन्न स्तम्भ के विचार से सभी प्रकार के अनाजों की फसल बहुत अच्छी होगी। लेकिन कुछ माल का

एक प्राप्त से दूसरे प्राप्त में निर्यात होने से कुछ प्रकार के मोटे अनाजों में प्राय.मार्कीट का रुख साधारण तेजी का होगा। ग्रह गतिवश बीच बीच में कुछ अरसा के लिए तेजी के रिएक्शन भी आएगे।

इस वर्ष सस्येश (चौमासी फसलों का मालिक) सूर्य तथा धान्येश (शीतकालीन फैसलों का मालिक) शुक्र है। शरत् सस्यजातक कुण्डली में सूर्य शुक्र दोनों छठे भाव में शनि से दृष्ट हैं तथा ग्रीष्म सस्य जातक कुण्डली में शनि की शुक्र पर दृष्टि है। सूर्य अष्टमेश होकर मंगल के साथ आय स्थान में है – इस वर्ष ग्रहस्थिति से स्पष्ट संकेत मिलता है, कि – व्यापार का रुख तेजी की ओर रहेगा एवं आकस्मात् शासन का अकुश व्यापारिक लाईन को बदल देगा।

अब हम प्रत्येक मास में ग्रहों की विशेष गतिविधि के अनुसार आने वाली तेजी मन्दी का विवरण दे रहे हैं; – आशा है, व्यापारी वर्ग विवेकपूर्वक काम करके लाभ ले सकेगा।

अप्रैल—राजनैतिक गतिविधि एवं ग्रहगति को ध्यान में रखते हुए ज्ञात होता है कि संवत् के पारम्भिक दिनों में सरसों तिल तेल अलसी घी उड़द नारियल एवं गुड़ खाण्ड में मन्दे का रुख रहेगा। चना मूंग मोठ ज्वार में घटावढ़ी एवं रुई में तेजी रहेगी। १३ अप्रैल के लगभग तेलवाना लोहा आदि धातु नारियल सुपारी बादाम हींग गुड़ खाण्ड शक्कर लौंग इलायची नमक तेज होंगे। १९ अप्रैल के लगभग जो चावल तिल तेल सरसों में साधारणतया और मन्दा बनेगा २२ से २४ अप्रैल तक चांदी रुई कपास में अचानक अच्छी मन्दी आ सकती है। यह मन्दी कुछ उतार चढ़ाव के साथ मासान्त तक चलेगी और २४ अप्रैल को शनि के मार्गी होने पर व्यापारी बाजार का रुख देख कर काम करें।

मई – ३ मई को गुरु के आर्द्रा नक्षत्र के द्वितीय चरण में आने पर सोना पीतल आदि धातु नारियल लौंग आदि सुगन्धित पदार्थ पुखराज मोती आदि रत्न तेज होंगे। ६ मई को मंगल के आश्लेषा में आने पर चांदी रुई में साधारणतया मन्दा ही चलेगा। १० मई से बुध के मेष में आने पर ज्वार बाजरा जौ चना एवं मूंग मोठ में कुछ तेजी आएगी। १६ मई को शुक्र के मिथुन में आते ही रुई कपास सूती वस्त्र तिल तेल सरसों एवं घी में अच्छी मन्दी आने का विचार है—इस मन्दी में मार्कीट का रुख देख कर स्टाक करने में आगे अच्छा लाभ मिल सकता है। इस समय गेहूं आदि अनाजों में भी मन्दे का ही वातावरण रहेगा। आगे २६ मई के लगभग मार्कीट का रुख देखकर काम करें। **२९ मई की सायंकाल को गुरु-शुक्र की भोगांश युति होगी,** यहां से मार्कीट का रुख बदलेगा और राजनैतिक वातावरण का प्रभाव व्यापार पर होगा। गेहूं जौ चना चावल मटर रुई कपास एवं ऊनी रेशमी कपड़ों में तेजी का रुख रहेगा।

जून—२ जून से **शनि मंगल की सिंह राशि में युति होने के साथ ही इनकी क्रान्तिवृत्तीय-युति भी हो रही है।** – यह ग्रहस्थिति व्यापारिक-क्षेत्र के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। इन दिनों व्यापारियों के लिए विशेष सावधानी एवं विचार पूर्वक काम करने की सलाह देते है। २ जून से लोहा ताम्बा आदि धातुओं में भी अच्छी तेजी चलेगी।

२ जून से ही तिल तेल सरसों आदि तेलवीया तथा गुड़ खाण्ड रसकस आदि में अच्छी तेजी चलेगी। इस मास में व्यापारी वर्ग को हम बता देना चाहते हैं, कि—यह मास व्यापारियों के लिए अच्छी तेजी मन्दी का चलेगा अतः बाजार का रुख देख कर काम करें। इस युति के प्रभाव से उड़द मूंग चना मोठ बाजरा आदि अनाजों में अच्छी तेजी चलेगी। १० जून को **शुक्र कर्क में** आकर रुई चांदी में अच्छी खासी झटके की मन्दी लाएगा। लेकिन गुड़ खाण्ड अलसी एरण्ड तेल घी शक्कर एवं कुछ अनाजों में तेजी चलेगी।

"यदा दैत्यगुरुः कर्के रसानां च महर्घता।
सर्वधान्य महर्घत्वं मेघाः स्वल्प जलप्रदाः॥"

गुरु-शुक्र की मिथुन में भोगांश युति रुई में अच्छी मन्दी या अच्छी तेजी करेगी- व्यापारी बाजार का रुख देखकर काम करें। हमारा विचार मन्दे का है।

२४ जून के लगभग तुअर एवं चावलों में मन्दे का रुख बनेगा। पन्द्रह दिन में रुई में झटके के साथ अच्छी मन्दी बनेगी। रुई के व्यापारी सावधान रहें। २७ जून को शनि मघा के तृतीय चरण में आ रहा है, सण दाख हींग तेज होंगे। २८ जून को गुरु के अस्त होने पर बाजारों का रुख कुछ बदलेगा। मूंगफली सरसों सोना एवं ऊनी कपड़े बाजरा मोठ हरड़ सुपारी आदि में कुछ तेजी बनेगी।

जुलाई—मासारम्भ में ही बुध पुष्य नक्षत्र में आकर पांच दिन में चांदी में मन्दी एवं रुई में घटावढ़ी के साथ तेजी करेगा। ६ जुलाई को शुक्र सिंह में आकर कुछ प्रान्तों में वर्षा का अवरोध करता है —"सिंह शुक्र जब होय भवानी। चले पवन नहीं बरसे पानी॥" अतः जुलाई में कुछ प्रान्तों में वायु वेग अधिक रहेगा एवं वर्षा की कमी अनुभव होगी। ऐसी स्थिति में व्यापारिक क्षेत्र प्रभावित होगा। शुक्र रुई कपास एवं बिनौला को प्रभावित करने वाला है। इसी दिन गुरु पुनर्वसु में नक्षत्र के दूसरे चरण में आ जाता है। पुनर्वसु नक्षत्र भी रुई कपास और बिनौला से सम्बन्ध रखता है लेकिन गुरु-शुक्र परस्पर शत्रुग्रह है; अतः रुई कपास बिनौला को अधिक प्रभावित न करेंगे, लेकिन सोना ताम्बा जौ चना लाल चन्दन मजीठ लाल वस्तुएं तेज होंगी। चांदी में मास के प्रथम सप्ताह में मन्दा ही रहेगा। रुई एवं कपास में भी मन्दे का ही रुख रहेगा। ९ जुलाई को बुध के आश्लेषा में आने पर तिल तेल सरसों गुड़ खाण्ड उड़द मूंग एवं मूंगफली में तेजी आए। आषाढ़ शुक्ल पक्ष द्वितीया (७ जुलाई) को एवं नवमी (१४ जुलाई) को शुक्रवार है अतः इस पक्ष

"आषाढ़-शुक्ल पक्षे च द्वितीया नवमी दिने।
चन्द्रेज्य-भृगुवाराः स्युः सुवृष्टिश्च महर्घता॥"

१६ जुलाई को सूर्य की सक्रान्ति के बाद रूई सूत बादाम सुपारी गुड़ खाण्ड शक्कर तिल नारियल सरसों चांदी सोना आदि तेज हों। गेंहू चना जौ मटर मूंग चावल में मन्दे का रुख रहेगा। ज्वार बाजरा उड़द में भी अच्छा मन्दा रहे। १९ जुलाई को मंगल ग्रह उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रमें आता है। मंगल ग्रह विशेषतया तेलबीया कपास जूट गुड़ खाण्ड एवं शेयर बाजारों को प्रभावित करेगा। साथ ही १९ जुलाई को बुध मघा सिंह में है—गेहूं चना जौ सूत रूई वस्त्र देवदारु तेज होंगे। २४ जुलाई को मंगल के कन्या में आते ही रूई में झटके के साथ अच्छी तेजी का उछाल आ सकता है। आगे २८ जुलाई को शनि के मघा ३ में आते ही तेल कपास में तेजी रहेगी।

अगस्त—२ अगस्त को सूर्य आश्लेषा एवं शुक्र कन्या में प्रविष्ट होगा। सोना चांदी बिनौला गेहूं उड़द चना गुड़ शक्कर घी तिल तेल सरसों एरण्ड अलसी मिर्च मजीठ ऊनी एवं रेशमी वस्त्रोंमें तेजी आएगी, इन दिनों चावलोंमें विशेष तेजी का झटका आएगा। २ अगस्त को कन्या का मंगल राहु के साथ योग करता है—साथ ही मं. रा. दोनों उ. फा. नक्षत्र में हैं—यह ग्रह स्थिति कहीं खडी फसल की हानि का संकेत देती है। धान्य एवं अन्य उपरोक्त सभीचीजें तेज रहेंगी। वर्षाकी कमी अनुभव होगी। इस अवर्षण का परिणाम व्यापारिक क्षेत्र पर पड़ेगा.—

"राहुरंगारश्चैक - राशि-भ्रूक्षगतौ तथा।
महाभयं च सस्यानां न च वृष्टिः प्रजायते॥"

ध्यान रहे—श्रावण कृष्ण पक्ष में शनि सिंह के ७, ८ अंश पर चल रहा है—जब भी सिंह का शनि ७,या ८ अंश पर गया है,तभी रूई में जबरदस्त तेजी आई है। अतः हमारे विचार के अनुसार जुलाई के मध्य में रूई में जबरदस्त तेजी चलेगी। ५ अगस्त को गुरु कर्क में आकर रूई में भयंकर मन्दी लाएगा। यह समय व्यापारी वर्ग के लिए महत्वपूर्ण है। हमारे विचार में इस समय मन्दी का व्यापारी लाभ में रहेगा। लेकिन मार्कीट का रुख देखते हुए काम करें। कर्क के गुरु में सभी तरह के धान्य तेज रहेंगे पशुओं में बीमारी फैलेगी। सोना चांदी तांबा सूत मूंगा मोती मजीठ सफेद कपड़ गेहूं चावल तेलशक्कर माष में खूब तेजी आएगी। ७-८ अगस्त को शुक्र-चन्द्र भेदयुति जोकि मध्य पूर्वी एशिया एवं अमेरिका में दृश्य है, तथा ८ अगस्त को चन्द्र मंगल की भेदयुति का अन्तरराष्ट्रीय बाजार पर प्रभाव पड़ेगा। अतः किसी स्थानपर अकाल की स्थिति बनेगी। परिणाम स्वरूप बाजारों में तेजी चलेगी। आगे ९ अगस्त को शनि के अस्त होने पर मार्कीट की लाईन बदलने का भय है। अगर लाईन नहीं बदलती तो जिस तरफ मार्कीट जा रहा है, [illegible] आगे बढ़ें। बुध एवं शुक्र दोनों एक साथ ११ अगस्त को अस्त हो रहे हैं। इस समय मार्कीट का रूख देखे बिना आगे बढ़ना भूल होगी। हमारे विचार में घी गुड़ खाण्ड तेज एवं रूई चांदी मन्दे रहेंगें।

२० अगस्त को गुरु के पुष्य में तथा २१ अगस्त को वक्री बुध के आश्लेषा कर्क में आने पर रूई कपास आदि में तेजी का वातावरण रहेगा। तेल सरसों गुड़ खाण्ड उड़द मूंग मूंगफली तेज हों। २४ अगस्त को शनि के मघा ४ में आने पर घी गुड़ खाण्ड नमक आदि में प्रायः तेजी रहेगी। ३० अगस्त को पू.फा. नक्षत्र में सूर्य एवं मंगल चित्रा में आएगा। रूई कपास रेशम सूत सोना चांदी लोहा घी तेल अलसी सरसों खण्ड चावल चना उड़द ज्वार सुपारी नारियल मूंज, बांस एवं नील में तेजी रहेगी ३१ अगस्त को शुक्र तुला में आ जाएगा। तुला का शुक्र रूई में पहले कुछ तेजी तथा बाद में कुछ मन्दी करेगा। सोनों चांदी गुड़ खाण्ड में तेजी चलेगी।

सितम्बर—४ सितम्बर को बुध मघा सिंह में आ जाता है, चांदी सोना सूत रूई व ऊनी वस्त्र देवदार एवं खट्टे पदार्थ तेज होंगे। वर्षा के अभाव से कहीं धान्यनाश होगा तथा अनाज भी महंगे होंगे। ६ सितम्बर को पुष्य का गुरु रूई में साधारण तेजी करेगा। "मघा बुधेऽल्पवृष्टिः"। ७ सितम्बर को शुक्रस्वाती में आता है, अनाज के भावों में मन्दा आए। १० सितम्बर को तुला में मंगल के आने पर मूंगफली गुड़ खाण्ड गेहूं एवं उड़द मूंग आदि अनाज तेज होंगे। १३ सितं. से सूर्य के उ. फा. में एवं यूरेनस के विशाखा १ में आने पर उपरोक्त चीजों में कुछ अधिक तेजी आ सकती है। लेकिन १४ सितम्बर को ही शनि के उदित होने पर अलसी सरसों बिनौला मूंगफली आदि को लाईन बदल सकती है। इस समय सूझ से काम करने से लाभ मिल सकता है। १९ सितम्बर को शनि पू. फा. में आकर सरसों एवं तिलहन में तेजी करेगा। २० सितं. को मंगल स्वाती में आकर २४ दिन में रूई ऊनी वस्त्र गेहूं तिल तेल तेज ही रहेंगे। २१ सितम्बर को बुध के उ.फा.में आने पर ही मूंग मोठ मसूर आदि अनाजों में मन्दी होगी। २४सितं. को शुक्र के विशाखा में आने पर रूई व अनाज मन्दे होंगे। २५ सितम्बर को गुरु पुष्य ३ में आकर रूई में पुनः कुछ मन्दे का रूख बना देगा। २६ सितम्बर से भी जौ ज्वार गुड़ खाण्ड कपास रूई सूत जून लकड़ी एवं नमक तेज रहेंगे।

अक्तूबर—९ अक्तूबर को मंगल के विशाखा में आने पर रूई कपास वस्त्र एवं गेहूं तेज रहेंगे। १० अक्तूबर को सूर्य एवं प्लूटो की युति भी रूई सोना सूत चांदी मोती आदि रत्न गुड़ खाण्ड अरहर गेहूं चना तिल नारियल सण केसर कपूर तेज होंगे। १४ अक्तूबर के बाद शीघ्र ही रूई में मन्दे का वातावरण बनेगा। १८ अक्तूबर को शुक्र के

वक्री होते ही रूई में लाइन बदलेगी, मार्कीट का रुख देखकर काम करें। २२ अक्तूबर को बुध के विशाखा में आते ही अनाजों में बहुत जगह मन्दा बनेगा। तथा रूई में खास मन्दी आने का योग है। २३ तारीख को सूर्य के स्वाती में एवं मंगल के वृश्चिक में आते ही गुड़ रूई सोना चांदी एवं मशीनरी में तेजी आएगी। यदि आश्वि. शु.पूर्णमाशी (१६ अक्तू.) को बादल हों तो अनाज का स्टाक करने से आगे चैत्र में लाभ मिल सकता है—

"आश्विनी निर्मला पूर्णा शुभाय जलदोदये।
धान्यस्य संग्रहं कुर्यात् चैत्रे लाभप्रदो भवेत् ॥"

१७ अक्तूबर को सूर्य तुला में संक्रमण करके २८ अक्तूबर तक बुध शुक्र के साथ तुला राशि में योग करता है—यह ग्रहस्थिति सभी धान्यों में महर्घता की सूचक है:—

"एक राशौ यदा यान्ति सौम्य शुक्र दिनाधिपाः।
सर्वधान्य महर्घत्व मेघाः स्वल्प जलप्रदाः ॥"

नवम्बर—६ नवम्बर को सूर्य विशाखा में आकर जो चावल गेहूं मसूर गुड़ खाण्ड तेज करेगा,यह तेजी १३ नवम्बर तक चल सकती है। १५ नवम्बर को मंगल के अस्त होते ही रूई में मन्दे का रुख बनेगा। गेहूं एवं अलसी जो चना गुड़ में विशेष तेजी चलेगी। १७ नव. को राहु उ. फा. १ सिंह में तथा केतु पू. भा. ३ कुम्भ में आकर अदरक, सौंफ, मिर्च पीपल का स्टाक करने पर छः मास बाद चतुर्गुणित लाभ मिल सकता है;—

"यदा सिंह-गतो राहुः शृंगवेर कटुत्रयम्
षष्ठे मासि व्यतीतश्च लाभश्चैव चतुर्गुणः ॥"

इसके साथ यह बात भी ध्यान रखने योग्य है, कि राहु के सिंह में आने पर शनि-राहु एक राशिस्थ हो जाते हैं। यह युति गेहूं जौ चना आदि में विशेष तेजी कारक सिद्ध होगी।

"शनि-राहू यदेकत्र भवेतां सहितौ तदा।
सर्वधान्य महर्घत्वं राजानो-भय बिह्वला ॥"

इस समय महर्घता को दृष्टि में रखते हुए शासन व्यापार पर अंकुश लगा सकता है। अतः विचार पूर्वक काम करने की सलाह है। २५ नवम्बर को बुध के वक्री होने के साथ ही कर्कस्थ गुरु भी वक्री हो जाता है। यह ग्रह स्थिति अनेकत्र अशान्ति, कहीं दुर्भिक्ष किंवा देशों में परस्पर संघर्षपूर्ण स्थिति का संकेत देती है;—

"कर्क राशि गतो जीवो यदा वक्री भवेत्तदा।
दुर्भिक्षं जायते घोरं राजानो युद्ध-तत्परा ॥"

अनाज घी के स्टाक से अच्छा लाभ मिलेगा। २५नवम्बर से ३० नवम्बर तक का समय स्टाक के लिए अच्छा है।

दिसम्बर—४ दिसम्बर से मंगल मूल धनु में आकर एरण्ड हींग गुग्गुल पारा, गुड़ खाण्ड रूई चांदी सोना लकड़ी सूत सण बिनौला सरसों घी में तेजी लाएगा। पशुओं के भाव भी तेज होंगे। १५ दिसम्बर को बुध के मार्गी होने पर चौपायों के व्यापारियों को हानि रहेगी। पशु संग्रह हो तो पहले ही निकाल देना उचित रहेगा। १७ दिसम्बर को रूई में अच्छी मन्दी आने का योग है। २४ दिसम्बर को शनि के वक्री होते ही घी तेल गुड़ खाण्ड शक्कर गेहूं जौ चना तेज होंगे। ३० दिसम्बर को शुक्र वृश्चिक में संक्रमण करेगा। अनाजों में तेजी का रुख बनेगा—

"वृश्चिके तु गते शुक्रे सर्व-धान्य महर्घता।"

जनवरी १९७९ ई.

वर्षारम्भ में गेहूं जौ चना उड़द मूंग मोठ बाजरा में तेजी रहेगी। १ जनवरी १९७९ ई. को गुरु पुष्य में आकर रूई में तेजी का वातावरण बनाएगा। ४ जनवरी को शुक्र के मूल धनु में आने पर अनाज में घटाबढ़ी, रूई कपास कपड़े चांदी तेज होंगे। ८ जनवरी को रूई में विशेष तेजी आएगी धान्य घी तेल सरसों उड़द तेज रहें। १२ जनवरी को मंगल के मकर में आने पर रूई सोना चांदी सोना कपास सूत गेहूं तथा घोड़े बैल आदि पशु तेज होंगे। १३ जनवरी को बुध के पू.षा. में आने पर बिनौला में तेजी एवं अनाज मन्दे होंगे। चांदी सोना काफी मन्दे होंगे। घी एवं तेलबीया में भी मन्दा आएगा।

"मकरे च स्थितो भौमः घृत तैल महर्घता।
सुभिक्षं तत्र धान्यानां लोकानां दुःख पीड़नम् ॥"

२४ जनवरी को बुध मकर में आकर रूई सोना चांदी में तेजी करेगा। २५ जनवरी को मंगल के श्रवण में आते ही २० दिन के अन्दर गेहूं में भारी तेजी का योग बनता है। जौ चना तिल अफीम एवं चांदी में भी तेजी रहेगी। ३० जनवरी को शुक्र के मूल धनु में विचरण करने पर गेहूं जौ चना आदि अनाज चांदी सोना तांबा आदि धातु एवं धनु तेज होंगे।

"यदा च धन राशिस्थो दैत्याचार्यः प्रवर्तते।
महर्घं च विजानीयात् सर्वं सस्यं विनश्यति ॥"

फरवरी १९७९ ई.

११ फरवरी को मंगल के धनिष्ठा में आने पर रूई जौ पीतल सोना चांदी तांबा तेज होंगे। घी गुड़ शक्कर खाण्ड रूई सूत अनाज में मन्दी चलेगी। १९ फरवरी के लगभग लोहा रूई और चांदी में काफी घटाबढ़ी चलेगी, अनाजों तथा गुड़ खाण्ड सोना में तेजी रहेगी। २३ फरवरी के लगभग रसकस एवं तेलबाना में मन्दे का वातावरण रहेगा। २६ फरवरी से पुनः गुड़ घी खाण्ड गेहूं चना आदि सभी अनाज तेज रहेंगे। २७ फरवरी को बुध ... तक बुध-गुरु दोनों वक्री हैं अतः अनाजों में मन्दा

समय स्टॉक के लिए अच्छा है।

फरवरी से पुनः गुड़ घी खाण्ड गेहूं चना आदि सभी अनाज तेज रहेंगे। २७ फरवरी को बुध

मीन में, सूर्य मंगल केतु साथ हैं। तथा राहु, शनि से दृष्ट है अतः रूई गुड़ खाण्ड शक्कर सोना चांदी में अच्छी तेजी या अच्छी मन्दी करेगा, हमारा विचार तेजी का है, बाजार का रुख देखकर काम करें।

मार्च १९७९ ई.

४ मार्च को सूर्य के पू.भा. में आने पर १४ दिन में रेशम सोना चांदी गेहूं चना उड़द चावल ज्वार घी सरसों तिल तेल गुड़ खाण्ड रूई में तेजी आएगी। यह तेजी १४ मार्च तक उत्तम मध्यम रूप से चलेगी। १६ मार्च को रूई में झटके के साथ मन्दी बनेगी। १८ मार्च को मंगल के पू. भा. में आने पर में आते ही तिल तेल मूंगफली एरण्ड अलसी नारियल सुपारी रूई सूत कपास सोना चांदी तेज होंगे १८ मार्च को ही शुक्र धनिष्ठा में आकर चावल मूंग मोठ उड़द ज्वार बाजरा में तेजी करेगा।—लाभ का अच्छा अवसर हाथ लगेगा, विचार पूर्वक काम करें।

२३ मार्च को शुक्र कुम्भ में आकर रूई चांदी गुड़ खाण्ड गेहूं चना जौ मूंग ज्वार बाजरा तथा सफेद चीजों में मन्दी होगी। ध्यान रहे--१३ मार्च के बाद शुक्र कुम्भ के २४ अंश पर आकर रूई में भारी तेजी करेगा। १५ मार्च को गुरु मार्गी होकर ८ दिन में चावल अलसी सरसों गुड़ तमाखू में तेजी बनाएगा।

गेहूं जौ चना में तेजी के कुछ योग

(१) ५ अगस्त १९७८ को गुरु कर्क में आ रहा है। अतः आरम्भ में ही चना गेहूं आदि अनाजों का खूब स्टाक करें, आगे कर्क के गुरु में ही अनाजों में अच्छी तेजी आएगी। इस समय मार्कीट का रुख देख कर बाजरा मक्की के स्टाक से भी विशेष लाभ लिया जा सकता है।

(२) इस वर्ष कार्तिक शु. ५ को रविवार तथा कार्ति. शु. अमावस के मंगलवारी होने से एवं वर्षराज शनि होने से अन्न तेज और किसी प्रान्त में दुर्भिक्ष की

(३) ७, ८, ९ अग. को चं. मं. शु. रा. कन्या में हैं बुध वक्री एवं अस्त है, अतः अनाजों में उत्तम तेजी आएगी।

(४) ५ दिसम्बर १९७८ से लगभग ८ फरवरी १९७८ तक आगे सूर्य पीछे शुक्र मध्य में बुध है। अतः इन दिनों गेहूं आदि अनाजों में तेजी रहेगी।

गेहूं जौ चना आदि अनाजों में मन्दे के कुछ योग

(१) १० सितं. को मंगल तुला में आकर शुक्र के साथ युति करता है, दोनों २३ अक्तूबर तक तुला में रहते है, यह दोनों ग्रह गेहूं आदि अनाजों में विशेष मन्दी लाते हैं।

(२) २५ नव. से १५ दिस. तक बुध-गुरु दोनों वक्री हैं अतः अनाजों में मन्दा आ सकता है।

(३) ३० दिसं १९७८ से ३ जन. १९७९ तक बुध-शुक्र वृश्चिक में हैं अतः अनाज मन्दा हो।

(४) मं. शु. श. ६ जुलाई १९७८ से २ अगस्त १९७८ तक एक ही राशि पर चल रहे हैं। अतः अनाज मन्दा हो।

(५) भाद्रपद शु. १५ पूर्णिमा को कन्या संक्रान्ति शनिवारी है। वर्षराज शनि है। अतः अनाज मन्दे होंगे।

गुड़ में तेजी के योग

(१) ५ अगस्त १९७८ से गुरु कर्क में आ रहा है। गुड़ तेज रहेगा।

(२) २४ दिसम्बर १९७८ को शनि वक्री होता है। गुरु पहिले से ही वक्री है। अतः गुड़ में भारी तेजी आएगी। दोनों ग्रह वर्षान्त तक वक्र रहते हैं।

(३) फाल्गुन में चन्द्र ग्रहण का प्रभाव गुड़ में तेजी का रहेगा।

(४) कार्तिक संक्रान्ति १७ अक्तूबर १९७८ को मंगलवारी है, गुड़ तेज हो। गुड़ में तेजी आने के समय पक्के गुड़ का ही स्टाक करना चाहिए, जो कि माघ प्रविष्टे १६ के बाद तैयार होता है।

(५) यूरेनस के साथ क्रूर ग्रह मंगल की युति ११ अक्तूबर १९७८ को हो रही है, गुड़ तेज हो।

गुड़ में मन्दी के योग

२० अगस्त को शुभ ग्रह गुरु पुष्य नक्षत्र पर आ जाता है। पुष्य का गुरु ज्येष्ठा का वेध करता है अतः इन दिनों गुड़ में मन्दी आए। ध्यान रहे—कि गुरु पुष्य के अन्त बिन्दु में आने से पहिले ही वक्री हो जाता है अतः वर्षान्त तक पुष्य में ही रहता है। कर्क का गुरु तेज करता है, परन्तु उपरोक्त अवधि में कुछ मन्दे का ही वातावरण रहेगा।

अन्ततः व्यापारी वर्ग को हम पुनः सूचित कर देना उचित समझते हैं कि इस वर्ष गुड़, तेलबीया एवं अनाजोंमें तथा कुछ अन्य बाजारोंमें भी अच्छी तेजी मन्दी के योग आ रहे है। अपनी ग्रह दशा एवं बाजारों पर ग्रह गोचर के प्रभाव को ध्यान में रखते हुए परामर्श पूर्वक काम करें, ईश्वर ने चाहा तो अच्छा लाभ उठा सकेंगे।

ग्रहण-विवरण (सं. २०३५ वि.)

गणितकर्ता एवं परिलेखक-प्रियव्रत शर्मा M.A., साहित्य-ज्योतिषाचार्य

इस वर्ष (वि.सं. २०३५ में) भूगोल पर निम्नलिखित चार ग्रहण दिखाई देंगे:—

(१) **खग्रास चन्द्र ग्रहण** (१६-१७ सितम्बर, सन् १९७८ ई.)
(२) खण्ड ग्रास सूर्य ग्रहण (२ अक्तूबर, सन् १९७८ ई.)
(३) खग्रास सूर्य ग्रहण (२६ फरवरी, सन् १९७९ ई.)
(४) **खण्ड ग्रास चन्द्र ग्रहण** (१३-१४ मार्च सन् १९७९ ई.)

इन में से उल्लिखित दोनों सूर्य ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देंगे। शेष दोनों चन्द्र ग्रहण समस्त भारत में देखे जा सकेंगे।

भारत में न दिखाई देने वाले दोनों सूर्य ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:—

(१) **खण्डग्रास सूर्य ग्रहण** (२ अक्तूबर सन् १९७८ ई.):—यह ग्रहण रूस, चीन, मंगोलिया, तैवान, जापान, कोरिया में खण्डग्रास के रूप में दीखेगा। भारत के पूर्वी प्रान्त अरुणाचल प्रदेश से उत्तर पूर्व की ओर लगभग एक अंश की दूरी पर ही इस ग्रहण की दक्षिणी सीमा समाप्त हो जाती है।

(२) **खग्रास सूर्य ग्रहण** (२६ फरवरी, सन् १९७९, ई.):—यह ग्रहण कनाडा, उत्तरी-अमेरिका, ग्रीन लैण्ड, आयरलैण्ड, आईस लैण्ड में तथा फ्रांस और स्पेन के पश्चिमी भाग में दिखाई देगा। ग्रीन लैण्ड और उ. अमेरिका के कुछ प्रदेशों में इसका खग्रास रूप देखा जा सकेगा।

भारत में दिखाई देने वाले ग्रहणों का विस्तृत विवरण

(१) **खग्रास चन्द्र ग्रहण** (भाद्रपद पूर्णिमा, शनिवार, १६-१७ सितम्बर, सन् १९७८ ई.)—यह ग्रहण भारत तथा इसके पड़ौसी देशों में स्पर्श (प्रारम्भ) से मोक्ष (समाप्ति) तक देखा जा सकेगा। इसके स्पर्श आदि का काल (भा. स्टैं. टा.) इस प्रकार है:—

ग्रहण-स्पर्श	= १० घं. ५० मि.	१६ और १७ सितं. सन् १९७८ ई. की मध्यगत रात्रि (भा. स्टैं. टा.)
खग्रास-प्रारम्भ	= ११ घं. ५४ मि.	
ग्रहण मध्य	= १२ घं. ३४ मि.	
खग्रास समाप्त	= १ घं. १४ मि.	
मोक्ष	= २ घं. १८ मि.	
पर्व काल	= ३ घं. २८ मि.	

पृष्ठ ३७ पर दिए गए ग्रहण चित्र (१) में दुनिया भर के देशों में इस ग्रहण की स्थिति (कहां ग्रस्तास्त होगा, कहां ग्रस्तोदय होगा, कहां खग्रास दीखेगा इत्यादि) को भग्न (·· इस प्रकार की) रेखाओं तथा द्विमुख बाणों (⟷ इस प्रकार के चिह्नों) द्वारा स्पष्ट किया गया है। इसी चित्र के बाईं ओर इस ग्रहण के ग्रास की आकृति तथा ग्रहण के स्पर्श मोक्ष आदि की दिशाएं भी दिखाई गई हैं। **इस ग्रहण के मध्य के लगभग ही सूर्य संक्रान्ति भी हो रही है. अतः इस ग्रहण के समय जप-दान-पूजा आदि का विशेष महत्त्व होगा।**

ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक १६ सितंबर को दिन के एक बजकर ५० मिनट पर प्रारम्भ होगा। ग्रहण के सूतक के आरम्भ से ग्रहण के अन्त तक बच्चों बूढ़ों और रोगियों को छोड़ कर अन्य किसी को कुछ खाना पीना नहीं चाहिए।

ग्रहण का राशि फल—यह ग्रहण पू.भा. नक्षत्र, कुम्भ और मीन राशियों में हो रहा है, अतः पू.भा. नक्षत्र और कुम्भ-मीन राशि वालों को यह विशेष अशुभ, मेष-कर्क-सिंह-वृश्चिक-धनु राशि वालों के लिए अशुभ तथा शेष राशि वालों के लिए शुभ है।

ग्रहण का अन्य फल—ज्वार अफीम एवं काली चीजें तेज होंगी। अलसी सरसों एरण्ड और तिल का संग्रह करने पर छः मास बाद और तांबे का संग्रह करने से दो मास बाद लाभ मिलेगा। उड़ीसा, बंगाल, गुजरात तथा मुस्लिम-राष्ट्रों में अशान्ति हो। राष्ट्र में अन्न की कमी न रहे।

(२) **खण्ड ग्रास चन्द्र ग्रहण** (फाल्गुन पूर्णिमा, मंगलवार, १३-१४ मार्च सन् १९७९ ई.)—१३ और १४ मार्च (१९७९ ई.) के बीच वाली रात्रि में यह ग्रहण भारत तथा इसके पड़ौसी देशों में प्रारम्भ से समाप्ति तक दिखाई देगा। इसके स्पर्श (प्रारम्भ) एवं मोक्ष (समाप्ति) आदि का काल नीचे दिया जा रहा है:—

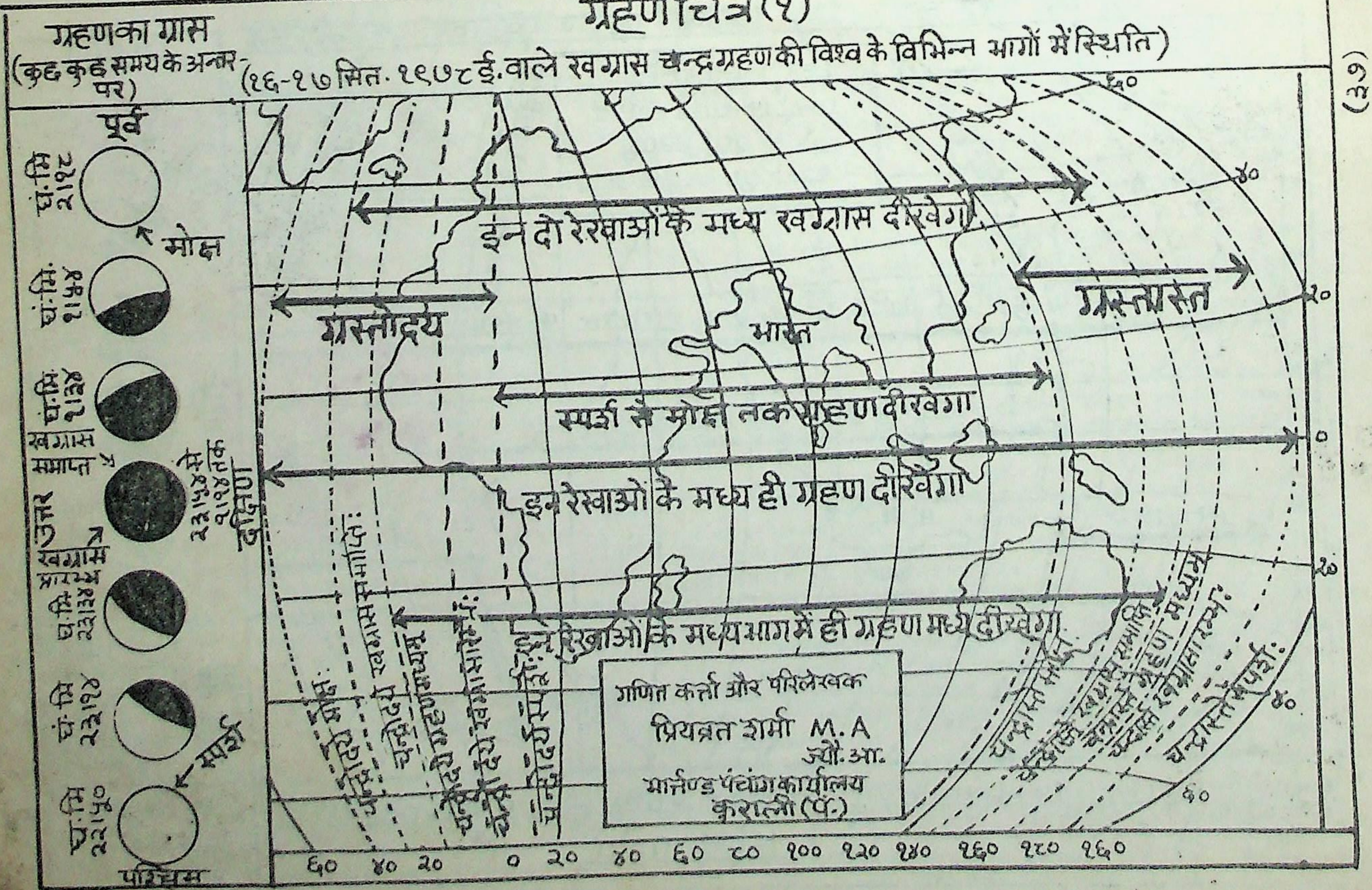
	घं. मि.	
स्पर्श	= १२।५९	१३ और १४ मार्च (सन् १९७९ ई.) की मध्यगत रात्रि, (भा. स्टैं. टा.)
ग्रहण मध्य	= २।३८	
मोक्ष	= ४।१७	
पर्व काल	= ३।१८	
परमग्रास	= ८६ (चन्द्र बिम्ब = १००)	

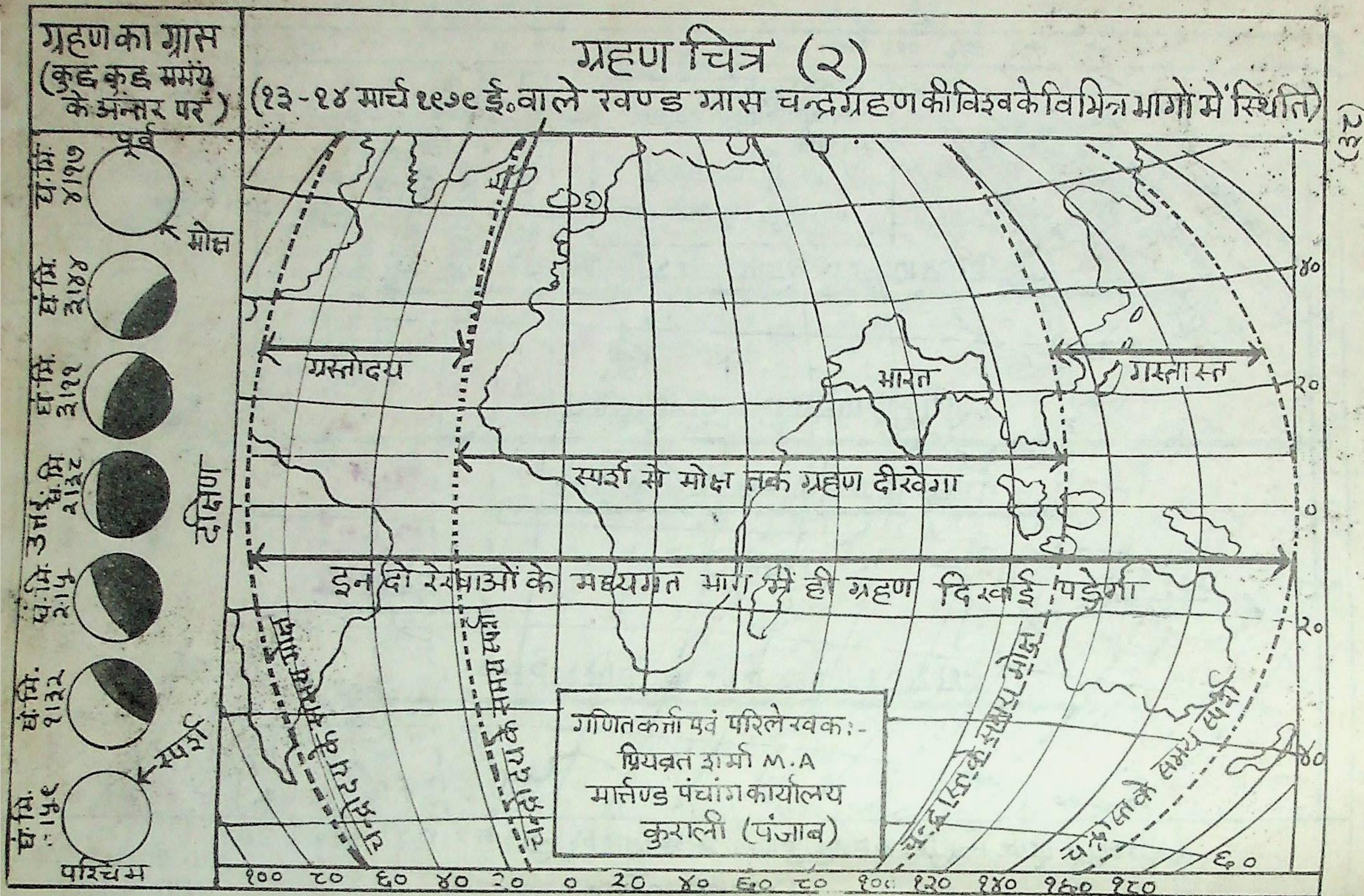
पृष्ठ ३८ पर दिए गए ग्रहण चित्र नं. (२) में विश्व के समस्त देशों में इस ग्रहण की स्थिति (कहां ग्रस्तास्त होगा, कहां ग्रस्तोदय होगा, कहां खग्रास दीखेगा—इत्यादि) को भग्न (- - - - इस प्रकार की) रेखाओं तथा द्विमुख बाणों (⟷ इस प्रकार के चिह्नों) द्वारा स्पष्ट किया गया है। इसी चित्र के बाईं ओर इस ग्रहण के ग्रास की आकृति तथा ग्रहण के स्पर्श-मोक्ष आदि की दिशाएं भी दिखाई गई हैं।

ग्रहण का सूतक—इस ग्रहण का सूतक १३ मार्च को दिन में ३ बजकर ५९ मिनट पर प्रारम्भ हो जाएगा।

ग्रहण का राशि फल—यह ग्रहण उत्तरा फाल्गुनी-नक्षत्र तथा सिंह राशि में हो रहा है, अतः उ.फा. नक्षत्र एवं सिंह राशि वालों के लिए यह विशेष अशुभ, वृष-कन्या-मकर-राशि वालों के लिए अशुभ तथा शेष राशि वालों के लिए शुभ है।

ग्रहण का अन्य फल—राई मेथी जसद के संग्रह से चार मास बाद लाभ हो। चावल सस्ते हों। नए आर्थिक-कानूनों से पूंजीपतियों में अशान्ति हो, भारत के पश्चिमोत्तरी भाग में वातावरण अशान्त रहे। कहीं कृषि को हानि पहुंचे।


ग्रहण चित्र (१)
(१६-१७ सित. १९७८ ई. वाले खग्रास चन्द्रग्रहण की विश्व के विभिन्न भागों में स्थिति)
ग्रहण का ग्रास
(कुछ कुछ समय के अन्तर-पर)
पूर्व
मोक्ष
खग्रास समाप्त
उत्तर
दक्षिण
खग्रास प्रारम्भ
स्पर्श
पश्चिम
इन दो रेखाओं के मध्य खग्रास दीखेगा
ग्रस्तोदय
ग्रस्तास्त
भारत
स्पर्श से मोक्ष तक ग्रहण दीखेगा
इन रेखाओं के मध्य ही ग्रहण दीखेगा
इन रेखाओं के मध्य भाग में ही ग्रहण मध्य दीखेगा
गणित कर्त्ता और परिलेखक
प्रियव्रत शर्मा M.A
ज्यो. आ.
मार्तण्ड पंचांग कार्यालय
करनाल (पं.)
६० ४० २० ० २० ४० ६० ८० १०० १२० १४० १६० १८० १६०



ग्रहण का ग्रास
(कुछ कुछ समय के अन्तर पर)
ग्रहण चित्र (२)
(१३-१४ मार्च १९७९ ई० वाले खण्ड ग्रास चन्द्रग्रहण की विश्व के विभिन्न भागों में स्थिति)
पूर्व
मोक्ष
दक्षिण
स्पर्श
पश्चिम
ग्रस्तोदय
ग्रस्तास्त
भारत
स्पर्श से मोक्ष तक ग्रहण दीखेगा
इन दो रेखाओं के मध्यगत भाग में ही ग्रहण दिखाई पड़ेगा
गणितकर्त्ता एवं परिलेखक:-
प्रियव्रत शर्मा M.A
मार्त्तण्ड पंचांग कार्यालय
कुराली (पंजाब)
४०
२०
०
२०
४०
६०
१००
८०
६०
४०
२०
०
२०
४०
६०
८०
१००
१२०
१४०
१६०
१८०

आकाशी कौंसिल का विचार (सं. २०३५ वि.)

विश्व की सामाजिक आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति पर ग्रहों का प्रभाव

आकर्षण विकर्षण से प्रभावित ये अनन्त-कोटि खगोलीय-पिण्ड अपनी वक्र-मार्ग आदि गति द्वारा भौमिक-पार्थिव क्रियाओं के मध्य सामयिक परिवर्तनों से ज्योतिष-शास्त्र की वैज्ञानिकता का साक्षिन्व अनन्तकाल से ही प्रस्तुत करते आ रहे हैं। प्रत्येक पिण्ड उस जगत्पिता की अदृश्य अलौकिक-शक्ति से प्रभावित होकर ब्रह्माण्ड को प्रभावित करता है। प्रभावित-वर्ग, ग्रहों की गति एवं प्रकृति के अनुरूप ही कर्मानुष्ठान करने को प्रेरित होता है। ग्रहगति जन्य उस परिणाम को हम-'भवितव्यता' किंवा 'ईश्वरेच्छा' कहकर स्वीकार करते हैं।

अवश्य-भव्येष्वनवग्रह - ग्रहा यया दिशा धावति वेधस स्पृहा।
तृणेन वात्येव तयानुगम्यते लोकस्य चित्तेन भृशावशात्मन।

उस ग्रहगति वश प्रभावित-व्यक्ति की मन : स्थिति, तीव्र वायु-वेग से प्रभावित-तृण की भान्ति कही जा सकती है, जो कि एक क्षण में ही अपने अस्तित्व को खो कर वायु से प्रताड़ित होकर तदनुसार चलने को विवश हो जाता है। स्पष्ट है, कि—उस अलौकिक शक्ति के परिचायक अनन्तकोटि-तारों एवं ग्रहों के अदृश्य संकेत से प्रभावित-ब्रह्माण्ड में समय समय पर अनेकविध घटनाए घटित होती हैं। ग्रहगति की सूक्ष्म-गणना के आधार पर जो जो संकेत हमें प्राप्त होते रहे हैं, तदनुसार हम विगत ५० वर्षों से विश्व में घटित होने वाली घटनाओं की भविष्यवाणी करते आ रहे हैं। लेकिन गत दो वर्षों के पचाङ्गों में आपात स्थिति के कारण हम ग्रह-गति-जन्य संकेतों को 'इदमित्थम्' कहने में विवश थे। क्योंकि शासकों के आदेश की अवहेलना सम्भव न थी। गत दो वर्षों से सैंसर ने हमारी आश्चर्य चकित कर देने वाली भविष्यवाणियों को प्रकाशित करने की अनुमति नहीं थी। गत वर्ष स. २०३४ वि. में हमने स्पष्ट भविष्यवाणी की थी, कि—

"श्रीमती इन्दिरा गांधी की कुण्डली में दशमेश-नीचाकांक्षी होकर लग्नस्थ राहु से ग्रस्त है। जन्मकुण्डली में सप्तमेश-अष्टमेश शनि की महादशा में व्ययस्थ केतु का अन्तर नेष्ट है। विपक्ष से हानि का भय है। इस वर्ष श्रीमती गांधी एवं कांग्रेस दोनों की राजनैतिक असफलता का संकेत मिलता है।"

इस भविष्यवाणी को सैंसर बोर्ड ने स. २०३४ में प्रकाशित करने की आज्ञा नहीं दी। शासन के अंकुश से हम अपने पाठकों को अपने विचारों से अवगत न करा सके, इसका खेद हमें अवश्य है।

श्री मार्त्तण्ड पंचाग की लोकप्रियता एवं व्यापकता का रहस्य इसकी अव्यभिचरित भविष्यवाणियों में साधारण वर्ग से लेकर गण्यमान्य व्यक्तियों तक की अभिरुचि कही जा सकती है। देशरत्न प. श्री नेहरू जी भी श्री मार्त्तण्ड पचाग की भविष्यवाणियों को (उनके दिनांक २२—२—४९ के पत्र के अनुसार) बड़ी दिलचस्पी से पढ़ा करते थे।

सं. २०३३ के पचाग में 'भारत एवं भारत सरकार' शीर्षक के अन्तर्गत आपात स्थिति में की गई सांकेतिक भविष्यवाणियां भी कम आश्चर्यजनक नहीं। इससे अधिक स्पष्ट रूप में लिखने की आज्ञा सैंसर बोर्ड ने नहीं दी। फिर भी भविष्य का कितना स्पष्ट संकेत इन लाइनों में कर सके हैं; —यह कम आश्चर्य का विषय नहीं है। ध्यान रहे, निर्वाचन स. २०३३ में ही हुआ है अतः इन स्पष्ट संकेतपूर्ण भविष्यवाणियों को यहां देना युक्ति संगत ही है।

"सं. २०३३ वि. पूर्णरूप से प्रजातन्त्र विरोधी तत्वों के विनाश का समय है।" —(पृष्ठ १९) "भारत की प्रभाव राशि से सप्तमस्थ शनि नवम प्लूटो दशमस्थ यूरेनस एवं एकादशस्थ नेप्च्यून है,—यह सारी ग्रहस्थिति भविष्य में गणतन्त्र के स्थायीत्व की सूचना देती है। स्वतन्त्र भारत में गणतन्त्र चिरस्थायी रहेगा। राष्ट्र भक्त एवं राष्ट्र के कर्णधार राष्ट्र को नया विवेक, नई जागृति, नया जीवन प्रदान करने में सफल होंगे।" (पृ. २० कालम २)

"कर्कस्थ शनि भारत की प्रभाव राशि मकर से भी सप्तम है। अतः इस अवधि में एक विशेष घटना चक्र चलेगा और यह वर्ष विगत २८-२९ वर्षों की अपेक्षा कई दृष्टियों से ऐतिहासिक सिद्ध होगा। देशद्रोही तत्वों के अपाकरण एवं राष्ट्र को पुनः नई चेतना एवं प्रेरणा देने के लिए 'दण्ड : शास्ति प्रजा सर्वा' का सिद्धान्त प्रयोग में लाना पड़ेगा, शासन तन्त्र राष्ट्र को नई दृष्टि देगा।" (स. २०३३ पृ. २०, कालम १)।

ध्यान रहे, कि—स. २०३३ में ही निर्वाचन हुए एवं शासनतन्त्र में परिवर्तन से यह वर्ष गत-वर्षों से महत्वपूर्ण एव ऐतिहासिक सिद्ध हुआ है, राष्ट्र में नया विवेक एवं जागृति आई है। अब बड़े बड़े गण्य मान्य भूतपूर्व नेताओं का दण्डित होना अक्षिलखित भविष्यवाणी को अक्षरशः सत्य सिद्ध करता है।

संवत् २०३३ के पंचांग में 'पाकिस्तान' शीर्षक के अन्तर्गत (पृ. २३ पर) स्पष्ट लिखा था—

"यहां के वरिष्ठ शासक भुट्टो का जन्म मिथुन लग्न एवं ध्रुव नाड़ी में हुआ है, अतः मित्र-बन्धुओं द्वारा सरलता से राजनीति में पथभ्रष्ट किए जाने का योग है, दूरदर्शिता नष्ट होगी। इस अदूर दर्शिता का परिणाम कर्क के शनि में ही अपदस्थता में परिणत होगा। सत्ता किसी क्रूर अधिकारी द्वारा हथियाई जा सकती है।"—सं. २०३४ के पचांग में भी 'पाकिस्तान' शीर्षक के अन्दर लिखा था—"राष्ट्र नायकों की नीति राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाने में अन्तत : असमर्थ रहेगी। मई से पहले का समय जुलाई एवं दिसम्बर विशेष घटनापूर्ण होंगे।"

इन उपरोक्त भविष्यवाणियों के अनुसार श्री भुट्टो के लिए मई से पहिले का समय विशेष उलझनपूर्ण एवं देश में अशान्ति रक्तपात एवं अराजकतापूर्ण रहा। तत्पश्चात् जुलाई में भुट्टो को अपदस्थ करके सेना के अधिकारी श्री जिया ने शासन सम्भाल लिया।

अमेरिका के बारे में भविष्यवाणी करते समय सं. २०३४ में पृ.४० पर लिखा था — "राष्ट्रपति फोर्ड के लिए समय अनुकूल नहीं। राष्ट्रपति फोर्ड की कुण्डली में द्वितीयेश एवं सप्तमेश शुक्र की महादशा में शुक्रान्तर चल रहा है। .. पदस्थैर्य की दृष्टि से समय प्रतिकूल है। विरोधी वर्ग प्रबल होगा। कर्क के शनि में ही शासनतन्त्र में आवश्यक परिवर्तन होंगे।"

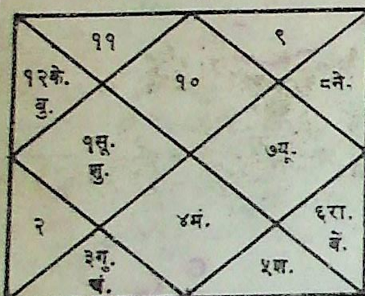
ठीक इसी भविष्यवाणी के अनुसार विरोधी वर्ग ने कर्क के शनि में ही शासन सम्भाल लिया।

इस प्रकार श्रीमती इन्दिरा गांधी एवं कांग्रेस की असफलता, श्री नेहरू-चाऊ-एन लाई-माउत्सेतुंग आदि ऐतिहासिक महापुरुषों की मृत्यु की भविष्यवाणी, पाकिस्तान का विघटन तथा देश-देशान्तर में होने वाली अन्य अनेकों आश्चर्यजनक घटनाओं की अभ्यभि चरित-भविष्यवाणियां करने को श्रेय आपके श्रीमार्तण्ड पंचांगको प्राप्त हुआ है, यह सब विद्वान्-पाठकों के सौहार्द एवं उस जगदम्बा भगवती की असीम अनुकम्पा का ही परिणाम है।

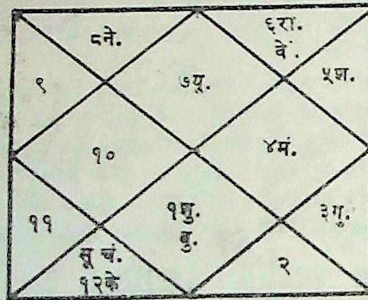
ग्रह स्थिति का विश्व पर प्रभाव

ग्रहों की प्रभाव-परिधि में ही विश्व का घटना चक्र एवं शासकों का उत्थान पतन चलता रहता है—"**ग्रहाधीना नरेन्द्राणामुच्छ्रायाः पतनानि च।**"— ठीक इसी धारणा के अनुसार आगामी वर्ष में ग्रहगति जन्य जो संकेत मिलते हैं, उन्हीं के आधार पर विश्व में घटित होने वाले घटनाक्रम को पाठकों के समक्ष यथामति प्रस्तुत कर रहे हैं।

(वर्षेश) जगत्कुण्डली ५०।१०



वर्ष प्रवेश कुण्डली ३६।३७



सं. २०३५ वि. की ग्रह परिषद् में पांच अधिकार शुभ-ग्रहों को एवं पांच अधिकार अशुभ-ग्रहों को उपलब्ध हुए हैं। वर्ष का राजा शनि वर्षराज होने के साथ साथ धनेश भी है। वर्षेश कुण्डली में धनेश-लग्नेश शनि अष्टम भाव में सिंहस्थ है। भायेश एवं चतुर्थेश-मंगल सप्तम भाव में नीच-खशिगत है। यह ग्रह स्थिति विश्व में अघटित घटनाओं को जन्म देगी। १६ मई को शुक्र मिथुन में आकर गुरु से युत होता है;—कहीं देशों में आन्तिरिक समस्याएं विषम बनेंगी, आगे २ जून से शनि-मंगल की स्थानीय युति के साथ-साथ क्रान्तिवृत्तीय-युति होगी;—यह ग्रहस्थिति पूर्वोत्तरी भाग में भयंकर युद्ध का बीजारोपण कर देगी। विरोधी देश-सैन्य बल को अधिक शक्तिशाली बनाने की होड़ में आगे बढ़ेंगे। कहीं सैन्य बल से शान्ति को खतरा पैदा होगा। दक्षिण पश्चिम के देश भी इससे अछूते न रहेंगे। "**शनि-भौम महायोगो मही नाशाय कल्प्यते।**" शनि मंगल की युति विश्व में आश्चर्यकर घटना वाली होगी। कहीं क्रान्ति से शासन सत्ता बदलेगी। २ जून से शनि मंगल की युति २४ जुलाई तक चलेगी इस अवधि में किसी विशेष राजनीतिज्ञ किंवा लोकप्रिय वरिष्ठ व्यक्ति के आकस्मिक निधन का समाचार मिलेगा।

जून से जुलाई तक की समयावधि में शनि मं. की युति में कहीं भयंकर अग्निकाण्ड, यान-दुर्घटना किंवा तूफान-भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से जन-धन की हानि होगी।—"**अमारयोः पवन-हुताशजं भयं ह्यवृष्ट्योरसहितयोश्च सद्ग्रहैः**"। इसवर्ष कुछ स्थानों पर भयंकर बीमारी फैलेगी—जिससे जनता को काफी परेशानी व कष्ट उठाना पड़ेगा। कहीं खड़ी फसल को नुकसान पहुंचेगा। कहीं जलाभाव के कारण फसल न होगी, परिणाम स्वरूप अनेकत्र अकाल की स्थिति बनेगी, शासकों को चिन्तित रहना होगा। आगे ७-८ अगस्त को शुक्र-चन्द्र भेद युति मध्य-पूर्वी-एशिया एवं अमेरिका में दृश्य है, ८ अगस्त को चन्द्र मंगल की भेद युति भी ईस्ट इण्डीज, आस्ट्रेलिया आदि में दृश्य है—इस दृश्य भेद युति का परिणाम उपरोक्त देशों में आश्चर्यजनक घटना वाला सिद्ध होगा।

इस वर्ष एशियामें **चन्द्र का रोहिणी शकट भेद** १३ दिसं.को देखा जा सकेगा तथा अन्य कुछ स्थानों पर ११अप्रैल (१९७८ ई.), ९मई, २जुलाई, २९जुलाई, २६अगस्त एवं २२ सितं. को रोहणी शकट भेद दिखाई देगा, यह रोहणी शकट छः तारा होने से रोहिणी शकट कहा जाता हैं। इस रोहिणी शकट के मध्य स्थित होकर चन्द्रमा गमन करेगा। परिणाम स्वरूप एशिया के कुछ देशों में भयंकर अकाल की स्थिति बनेगी। शासक कई स्थानों पर स्थिति को स्वस्थ बनाने में अशक्त रहेंगे।

रोहणी शकट मध्य-संस्थिते चन्द्रमस्यशरणीकृता जनाः॥"
क्वापि यान्ति शिशु याचिताशनाः सूर्यतप्त पिठराम्बु-पायिनः॥"

आगे १९८६ में एक भयंकर धूम्रकेतु का उदय होगा, जोकि यावन राष्ट्रों का पतन एवं कुछ वरिष्ठ प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञों के अकस्मात् निधन का संदेश लेकर आएगा। विश्व में इस समय अशान्ति का साम्राज्य होगा, परन्तु भारत शान्ति का सन्देश देगा।

आगे आने वाली ग्रह स्थिति के अनुसार सन् १९९० ई. में यू. ने. प्लू. एक धरातल

पर आकर सौर परिवार के गुरुत्वाकर्षण केन्द्र में कुछ विचलन लाएंगे. सौर क्रियाशीलता में अन्तर आएगा परिणाम स्वरूप साधारण भूकम्प बाढ़ आंधी तूफान आदि मे हानि होगी ग्रहों की उपरोक्त स्थिति भौगोल युति नही है, अपितु एक विशेष प्रकार की ग्रह कक्षाओं की स्थति है।

यूरोपीय देशों की कु.(१९७८ई.)

७यू.
५श. चं.
८बु. ने.
६वें. रा.
४मं.
९सू. शु.
३
१०
१२के.
२
११
१

यूरोप के देशों की कुण्डली में शनि द्वारा दृष्ट लग्नस्थ बेंकटेश (प्लूटो) एवं राहु पश्चिमी जर्मनी फ्रांस इटली रोम स्पेन वगैरह में इस वर्ष भयप्रद घटनाएं घटित होने की सूचना देते हैं। कहीं शासक के विरुद्ध बगावत एवं कहीं क्रान्तिकारी समस्या से अशान्ति होगी। कहीं षड़यन्त्र एवं कहीं हत्याकाण्ड सुनने में आएंगे। पश्चिमी जर्मनी, हालैण्ड, फ्रांस, डेन्मार्क आदि में बेरोजगारी चरम सीमा पर पहुंचेगी। अन्ततः कहीं अन्दरूनी बगावत शान्त करने के लिए सैन्य बल का प्रयोग करना पड़ेगा। अर्जेंटाइना बरतानियां, आदि में मुद्रास्फीति बढ़ेगी, औद्योगिक संकट बढ़ेंगे असन्तुष्ट तत्व जोर पकड़ेंगे। याद रहे, इस वर्ष जून से लेकर विशेषतः गुरु के कर्क में आने पर पश्चिमी देशों अन्न समस्या विकट होगी। कहीं परस्पर तनावपूर्ण स्थिति पैदा होगी। २५ नव० को कर्क राशि का गुरु वक्री होना है, यह ग्रह स्थिति कहीं अकाल की स्थिति पैदा करेगी तथा शासकों को विषम स्थिति का सामना करना पड़ेगा। वर्षान्त में बुध वक्री एवं अतिचारी होता है तथा इन्हीं दिनों शनि भी वक्री चल रहा है:—

"यदा क्रूरग्रहो वक्री शुभश्चैवातिचारगः।
तदा भवति दुर्भिक्षं राज्ञां युद्धं परस्परम्॥"

यह समय अशान्तिपूर्ण रहेगा। ध्यान रहे, सन् १९७९ ई. का वर्ष यूरोप के देशों के लिए अघटित घटनाओं वाला सिद्ध होगा। बहुत से देश व्यापी युद्ध की ज्वाला में आहुती डालने का काम करेंगे।

पश्चिमी एशिया में युद्ध ज्वाला भड़केगी। इजराइल, जोर्डन के पश्चिम में अपने डेरे खत्म नहीं करेगा। फिलस्तीन, जोर्डन में अशान्ति रहेगी। प्रच्छन्न रूप से अमेरिका युद्धाग्नि को हवा देने का काम करेगा। परिणाम भयंकर होगा। आगामी स २०३६ में श्रावण से कार्तिक तक की ग्रहस्थिति विश्व में भयंकर घटनाप्रद होगी, कहीं भयंकर(व्यापी) युद्ध का सूत्रपात होगा, कहीं महामारी, भूकम्प, तूफान कहीं अवृष्टि किंवा कहीं अतिवृष्टि से हानि होगी। किसी भाग से भयंकर अकाल की स्थिति शासकों के लिए चिन्ता का कारण बनेगी। अफ्रीका में कुछ देश मुक्ति के लिए आन्दोलन करेंगे कहीं शस्त्र संघर्ष होगा।

मुस्लिम-देशों की कुण्डली
हिजरी सन् १३९८

३गु.
१
४मं.
२
१२के.
श.५
११
६रा. वे.
ने.८शु. सू.च.
१०
७यू.
९बु.

यावन देशों की कुण्डली का अध्ययन करने से ज्ञात होता है, कि यह वर्ष यावन देशों के लिए साधारण है। लेकिन कुछ मुस्लिम राष्ट्रों में चली आ रही राजशाही के खिलाफ अन्दरूनी योजनाएं बनेंगी। अफ्रीका के यावन देशों में क्रान्ति की ज्वाला भड़केगी। पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बंगलादेश, ईराक, ईरान आदि में भी आन्तरिक कलह क्लेश होंगे, फिलस्तीन लीबिया आदि की समस्याएं भयंकर होंगी, अन्य देशों को भी उलझना पड़ेगा। मुस्लिम देशों के शासकों और शासितों में मतभेद कहीं विकराल रूप धारण करेगा। सिंह का शनि में अफगानिस्तान पाकिस्तान के सिन्ध बलूचिस्तान, अरब-गणराज्य ईराक-ईरान को विशेषतः प्रभावित करेगा। किसी देश में विघटन एवं बगावत होगी। जून से जुलाई, सितम्बर एवं नवम्बर मे संवत् अन्त तक का समय यावन राष्ट्रों के लिए नेष्ट है।

भारत एवं भारत सरकार

जनता पार्टी की ज. कुं.

५
३
६
४श.
२
७रा.
१के. गु.
८
१० सू. च.
१२शु.
९बु. मं.
११

स्वतन्त्र भारत की वर्ष कुं.

११
९
१२के.
१०
८ने.
१
७यू.
प्ल.
मं.२
४श. सू.
६रा. वे.
गु.३ शु.
चं.५ बु.

२० जनवरी सन् १९७७ ई. को कर्क लग्न में विभिन्न दलों के एकीकरण से जनता पार्टी का उदय हुआ है, प्रस्तुत तात्कालिक-कुण्डली में शनि चन्द्र का राशि-विपर्यय एवं दशमस्थ, गुरु-केतु की स्थिति शुभ है। साथ ही दशमेश-मंगल की नवम-स्थान पर दृष्टि

तथा नवमेश का दशमस्थान में होना भी योगकारक है। शनि की दशम-स्थान पर नीच दृष्टि होने से पार्टी के कुछ व्यक्तियों में पद लिप्सा जन्य असन्तोष एवं मन मुटाव कुछ समय के लिए प्रछन्न रूप से बना रहेगा। इस वर्ष २ जून से २४ जुलाई तक के समय में शनि मं. की युति में इस पार्टी के कुछ व्यक्तियों में मनमुटाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलेगा, पार्टी में कुछ क्लीव-प्रवृत्तियां उभरेंगी। लेकिन किसी कुशल नीतिज्ञ के हस्तक्षेप से पार्टी की स्थिति सुदृढ होगी नीति में कुछ परिवर्तन संशोधन होगा। अन्ततः जनता पार्टी कुशल नेतृत्व में अपने अस्तित्व को सशक्त पार्टी के रूप में बनाए रखेगी।

भारत के ३१वें एवं ३२वें वर्ष की लग्न-कुण्डलियों के अनुसार ज्ञात होता है, कि- ३१वां वर्ष देश के लिए विषम समस्याओं वाला रहेगा। इस वर्ष आर्थिक दृष्टि से समाज में बड़े माने जाने वाले व्यक्तियों का रहन-सहन स्तर गिरेगा। राजनैतिक स्थिति में दृढता नजर न आएगी। कुछ शक्तिशाली देश मित्रता के लिए हाथ बढ़ाएंगे। अन्ततः ३२वें वर्ष में भारत के शक्तिशाली देशों के साथ सम्बन्ध अधिक मैत्रीपूर्ण रहेंगे। व्यापार बढ़ेगा। सिंह के शनि में जून के बाद किसी सुयोग्य प्रतिष्ठित पथ प्रदर्शक का वियोग सहना पड़ेगा। पुनरपि भारत व्यापारिक एवं राजनैतिक दृष्टि से प्रगति करता हुआ विश्व के देशों में अपने वर्चस्व को अक्षुण्ण रक्खेगा।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष में गुरु-शुक्र की भोगांश युति होगी तथा आगे जून में मं. श. की युति भी शासकों के लिए विषम है। यान एवं वाहन दुर्घटना से हानि का समाचार मिलेगा। विरोधी देश के साथ सम्बन्ध तनावपूर्ण होंगे। २ जून से लेकर जुलाई तक का समय जनता शासन के लिए अग्नि-परीक्षा का है। इस अवधि में राजनीतिज्ञों की पैंतरेबाजी एवं कुछ व्यक्तियों की स्वार्थपरायणता देश के लिए अहितकर होगी। शासकों के अदम्य उत्साह एवं विवेक से स्थिति-पुनः सुदृढ होगी।

जून में शनि-मं. सिंहस्थ हैं एवं जून में एक ही गोलार्ध में सभी ग्रह चलते हैं— जून से अगस्त के अन्त तक किसी विशेष व्यक्ति का पदरिक्त होगा। किसी प्रान्त विशेष की राजनीति में गतिरोध पैदा होगा। मन्त्रिमण्डल में आवश्यक परिवर्त एवं परिवर्धन होंगे। कहीं प्राकृतिक प्रकोप से जन धन हानि होगी। कहीं आगजनी की घटना से नुकसान होगा तथा कहीं यान दुर्घटना से जन-धन हानि का समाचार भी मिलेगा। व्यापार पर विशेष कारणवश अंकुश लगाना पड़ेगा।

भाद्रपद शुक्ल पक्ष में तुला का मंगल एवं स्वाती नक्षत्र का शुक्र भी किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त होने का संकेत देता है। चोरी ठगी लूटमार की घटनाएं बढ़ेंगी। समय परराष्ट्रनीति के लिए अनुकूल नहीं। सन्धि-मित्रता की बातें व्यर्थ लगेंगी। ६ अक्तूबर को बुध चित्रा (घोर गति) में प्रवेश करेगा भ्रष्टाचार बढ़ेंगे। शासन की नीति एवं सामयिक समस्या से असन्तोष बढ़ेगा। १० अक्तूबर को प्लूटो की सूर्य से युति विशेष घटना कारक सिद्ध होगी। देश में योजनाओं को पूर्ण करने के लिए आर्थिक विषमता उपस्थित होगी। भारत के पूर्वी देशों में स्थिति कुछ अनुकूल रहेगी। १७ नवं को राहु सिंह राशि में शनि के साथ युति करता है, इस समय सरकार व्यापारिक क्षेत्र पर पूरी नजर रखेगी, व्यापार में दखल देना पड़ेगा:—

शनि-राहू यदैकत्र भवेतां सहितौ तदा।
सर्वधान्य महर्घत्वं राजानो भय विह्वलाः ॥"

शासन की स्थिति में शीघ्र ही नियन्त्रण हो जाएगा। इस स्थिति से देश को आर्थिक स्थिति एवं व्यापार क्षेत्र में नई नीतियों का समावेश होगा। फरवरी के उत्तरार्ध में कुम्भ राशि से मं. चं. सू. के. तु. एवं बुध पांच ग्रह मिलकर पंचग्रही योग बनाते हैं;-देश में फरवरी मार्च के लगभग किसी रोग विशेष से जनता में परेशानी रहेगी, रोग से मृत्युदर बढ़ेगी; किसी अन्य प्राकृतिक प्रकोप किंवा यान दुर्घटना से जन धन की हानि का भी संकेत है। राजनीतिज्ञों में परस्पर वैमत्य बढ़ेगा, किसी राजनीतिज्ञ का पद रिक्त होगा—

"शशि सूर्य समायोगे पंचग्रह समन्विते। महारोगभयं राष्ट्रे राजयुद्धं भविष्यति।
जायते जननाशश्च मन्त्रिणो मरणं तथा ॥"

शपथ काल कुं.

- ६ प्लू.
- ४ श.
- ७ यू. रा.
- ५
- ३
- ८ ने.
- २ गु. चं.
- ९
- ११ मं.
- १ के.
- १०
- १२ बु. सू. शु.

नवांश कुं.

- २
- १२ शु.
- ३
- १ के.
- ११ गु.
- ४
- १० चं.
- ५
- ७ सू. रा.
- ९ मं. बु. न.
- ६
- ८

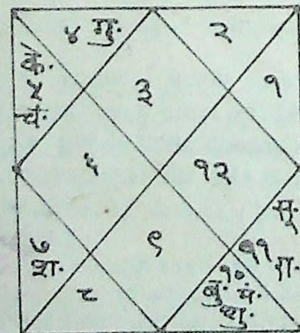
प्रधान मन्त्री की शपथ कालीन कुण्डली के अनुसार उच्चस्थ चं. के साथ गु. शुभ है। कृषि एवं तकनीकी में प्रगति कारक योजनाएं बनेंगी। शासक वर्ग का प्रयास देश के लिए समृद्धि एवं प्रगतिकारक रहेगा।

२४ मार्च १९७७ गुरुवार को ३ – ३० पर सिंह लग्न एवं कृत्तिका नक्षत्र में श्री देसाई ने शपथ ग्रहण की। तात्कालीन कुण्डली में बुध नीच भंग राजयोग बनाता है। शुक्र वर्गोत्तम है लग्न चतुर्थेश दशमेश द्वारा दृष्ट है। यह स्थिति अन्ततः अग्नि परीक्षा कारक-विषम-समस्याओं के समाधान हो जाने का संकेत देती है शासन स्थिरता का विचार करने के लिए अष्टम भाव एवं सूर्य की स्थिति पर विचार करना अनिवार्य है अष्टम भाव में बुध एवं शुक्र की स्थिति शासन-सत्ता के स्थायित्व की सूचना तो देती हैं, परन्तु नवांश कुण्डली में सूर्य नीच का होकर राहु के साथ सप्तमस्थ है। १९ अक्तूबर १९७७ से २९ सितम्बर १९७८ ई. तक सूर्य में शनि का अन्तर रहेगा—बस, यह अवधि चुनौतियों वाली विषम, मन्त्रिमण्डल में वैमनस्यपूर्ण, अन्य आर्थिक एवं राजनैतिक दृष्टि से संघर्षमय रहेगी, यही अग्नि परीक्षा का समय है। प्रधान शासकों को जनता का विश्वास प्राप्त करने के लिए सब पहलुओं पर पैनी नजर रखनी होगी, जन-जीवनोपयोगी सुख सुविधाओं पर अधिक व्यय होगा। नई-नई उन्नतिप्रद योजनाओं को कार्यान्वित करना पड़ेगा। आर्थिक नीति में आश्चर्यकर परिवर्तन होंगे। संविधान में आवश्यक परिवर्तन होंगे। नागरिक स्वतन्त्रता के अधिकार निलम्बित न रह सकेंगे। इस सूर्य में शनि की अन्तर्दशा में शासकों को अपनी स्थिति सुदृढ करने के लिए प्राणपण की बाजी लगानी पड़ेगी।

जनता सरकारके सामने समस्याओंका बवंडर खडा होगा। आर्थिक स्थिति शोचनीय होगी। कुछ नई समस्याएं उभरेंगी। सीमा प्रान्तों पर शत्रु देश की गतिविधि देखकर सैन्यबल को सुदृढ एवं सतर्क रखने के लिए विवश होना पड़ेगा। सिंह के शनि में ही कहीं सीमा प्रान्तों

पर विवशता की स्थिति में सैन्यबल का प्रयोग करना पड़ेगा, भारत का यश अक्षुण्ण रहेगा। उत्तर-पूर्वी प्रान्तों में होने वाले विधान सभाई निर्वाचनों में जनता पार्टी का पक्ष प्रबल रहेगा अन्ततः सर्वविध आँधी तूफानों को पार करता हुआ यह 'जनता' का शासन, जनता के लिए, जनता के द्वारा गणतन्त्र की रक्षा करता हुआ प्रबल रहेगा।

प्रधानमन्त्री श्री मोरारजी देसाई—श्री मोरार जी का जन्म २९ फरवरी १८९६ ई. में दोपहर के १ बजे गुजरात राज्य के बलसर जिले के पास भादली गांव में हुआ। जन्म कुण्डली में शनि, गुरु-नक्षत्रीय होकर गुरु को पूर्ण दृष्टि से देखता है, गुरु शनि-नक्षत्रीय है, इस प्रकार गुरु-शनि का परस्पर अन्योन्य नक्षत्र-सम्बन्ध है, गु. श. मं. तीनों एक दूसरे से केन्द्र में है यह स्थिति राजयोग कारक है। अब बुध की महादशा में केतु का अन्तर २८-१-७८ से चलेगा। यह समय पूर्णरूप से सफलता एवं वर्चस्व को बढ़ाने वाला है। तत्पश्चात् बुध में शुक्रान्तर १८-११-१९८० तक चलेगा। जन्म कुण्डली में उच्च राशिस्थ मंगल विरोधी वर्ग को हतप्रभ करेगा। वर्चस्व बढ़ेगा। लेकिन सेहत के लिए समय अनुकूल नहीं। आगे बुध में चन्द्रमा का अन्तर इनके स्वास्थ्य के लिए अधिक नेष्ट है। शपथ कालीन कुण्डली के अनुसार सिंह राशि में शनि की युति जो कि २ जून १९७८ से प्रारम्भ होकर जुलाई के अन्तिम सप्ताह तक चलती है,—श्री मोरार जी देसाई के लिए परीक्षाकारक होने पर भी वर्चस्व सम्मानप्रद है लेकिन यान-वाहन दुर्घटना से सावधान रहना चाहिए, कष्ट भय है।



गृहमन्त्री श्री चौधरी चरण सिंह जी की ग्रहस्थिति का सिंहावलोकन करने से ज्ञात होता है, कि—इनकी नवांश कुण्डली में बृहस्पति उच्चस्थ चन्द्र के साथ होकर कर्म-क्षेत्र को देखता है तथा जन्म कुण्डली में गुरु लग्नेश एवं चतुर्थेश भी है। अत: बृहस्पति के कर्क में आने पर उन्हें अधिक मान-सम्मान मिलेगा, प्रभाव बढ़ेगा। लेकिन कर्क के गुरु की समयावधि स्वास्थ्य के लिए चिन्ताप्रद है। इस समय बुध में गुरु का अन्तर प्रशासनिक क्षमता से यशस्वी बनाता है। १५-४-१९८० से बुध में शनि का अन्तर चलेगा—यह समय अत्युत्तम रहेगा।

विदेशमन्त्री श्री अटल विहारी वाजपेयी की जन्मकालिक ग्रहस्थिति के अनुसार सूर्य पूर्ण दृष्टि से इनके भाग्य-स्थान को देखता है। आगे राजनैतिक जीवन में संघर्ष के साथ साथ प्रगति के योग हैं। वर्तमान ग्रहस्थिति पूर्ण सफलताप्रद है। मंगल की अशुभ स्थिति के कारण ४९वें वर्ष में अस्वस्थता रहे। जन्म कुण्डली में लग्नस्थ उच्च का शनि है, अत: गोचर में शनि के तुला में आने पर इन्हें विशेष सम्मान एवं राजनैतिक क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होगी, वर्चस्व बढ़ेगा। इनकी जन्म कुण्डली में कोई भी ग्रह अपने भाव से अष्टमस्थ नहीं है, अत: प्रत्येक भाव बली है। भाग्य स्थान पर सू. बु. गु. मं. की दृष्टि है, जोकि प्रबल योगकारक है। कन्या के शनि में राजनैतिक-क्षेत्र में एक बार संघर्षमय स्थिति बनेगी, लेकिन अन्तत: उत्तम सफलता एवं पद की उपलब्धि होगी।

लोकनायक श्री जयप्रकाश नारायण की ग्रहस्थिति के अनुसार इस समय बुध की महादशा में शनि का अन्तर चल रहा है। आपका लग्न कर्क है। अत: तृतीयेश-व्ययेश की महादशा में सप्तमेश-अष्टमेश की अन्तर्दशा मान-सम्मान की दृष्टि से शुभ होते हुए भी स्वास्थ्य की दृष्टि से चिन्तनीय है। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार जून से आगे की ग्रहस्थिति स्वास्थ्य के लिए अधिक खराब रहेगी। अन्तत: सिंह का शनि एवं शनि की अन्तर्दशा की अवधि लोक नायक के स्वास्थ्य के लिए विशेष नेष्ट सिद्ध होगी।

श्रीमती इन्दिरा गांधी की ग्रहगति के अनुसार सप्तमेश अष्टमेश शनि की महादशा, में आयेश-चतुर्थेश शुक्र का अन्तर चल रहा है। शुक्र राहु के साथ शत्रु स्थान में है, अत: यश-सम्मान धन सम्पत्ति के लिए हानिकारक रहेगा। शासन की ओर से भय रहेगा। शनि में सूर्य का अन्तर आने पर श्रीमती गांधी अपनी पार्टी-विशेष का प्रतिनिधित्व करेगी, लेकिन शनि में सूर्य का अन्तर शारीरिक-स्वास्थ्य के लिए विशेष चिन्ताकारक है अचानक शारीरिक कष्ट बनेगा। इस अवधि में गुप्त शत्रु वर्ग से हानिभय है। कांग्रेस पार्टी में सशक्त नेतृत्व न होने से पार्टी के विघटन की स्थिति पैदा होगी। अन्तत: भूतपूर्व सहायक ही श्रीमती गांधी के विरोधी होंगे। सिंह के शनि में ही कांग्रेस में विघटन होगा। स्वास्थ्य ठीक रहने पर तुला के शनि में श्रीमती गांधी का प्रयास पुन: सक्रिय राजनीति में पदार्पण करने का रहेगा।

भारत का वायु मण्डल एवं वर्षा—यहां हम किसी जगहकी स्थानीय वर्षा की भविष्यवाणी नहीं कर रहे अपितु जिन तारीखों में वर्षा का योग लिखा है उन तारीखों में वर्षा यत्र तत्र समीपस्थ प्रान्तीय प्रदेशों में अवश्य होगी ही, इसमें सन्देह नहीं। आषाढ़ कृ. १ बुधवार सं. २०३५ तदनुसार २२ जून सन् १९७८ ई. को सूर्योदय से पूर्व सूर्य आर्द्रा में प्रविष्ट होता है। चैत्र शु. १ को शनिवार होने से वर्षराज शनि है—"वार: स्यान्मन्द कुजयोस्तदा वृष्टि: सुशोभना।" अत: वर्षा पर्याप्त होगी। वर्षारम्भ में ही बुध वक्री होकर शुक्र को छोड़कर मीन में चला गया है—अत: आगे पर्याप्त वर्षा होने का संकेत मिलता है—

उन्मार्गं गमनं कृत्वा यदा शुक्रं त्यजेद्बुध: ।
तदा वर्षति पर्जन्यो दिनानि पंच सप्त वा ॥"

११ से २१ मई तक हि. प्र. हरयाणा में बादल चाल बूंदा बांदी के योग हैं। ज्येष्ठ कृष्ण में एक राशि के गुरु शुक्र कहीं आकालिक वर्षा से हानि का योग बनाते हैं— ६ जुलाई को सिंह का शुक्र कहीं वर्षा के अभाव के कारण जन-जीवन को क्षुब्ध रखेगा। लेकिन आषाढ़ शुक्ल पक्ष की द्वितीया एवं नवमी शुक्रवारी होने से कुछ प्रान्तों में पर्याप्त वर्षा होगी। कुछ स्थानों पर अतिवर्षण तथा कहीं अनावर्षण से हानि भी होगी। आगे जुलाई एवं अगस्त में अनेकत्र वर्षा होगी। आगे ४, ५, १५, २१, २४, ३० दिसं. को वर्षा के योग बनते हैं। साथ ही जनवरी ३, ४, ८,१२ तथा फरवरी के पूर्वार्ध में भी बादल वर्षा के योग हैं। शीत लहरसे अनेकत्र जनकष्टके समाचार मिलेंगे। जलस्तम्भ इस वर्ष ४५प्रतिशत है. अत: वर्षा प्राय: पर्याप्त रहेगी। कहीं ओलापात एवं तूफान आदि से भी हानि के समाचार मिलेंगे।

भारत का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार

स्वतन्त्र भारत की वर्षकुण्डली में दशमस्थ यूरेनस एवं दशमभाव पर गुरु की दृष्टि विदेशों के साथ व्यापारिक क्षेत्र को प्रोत्साहन देगी। नई नई व्यापारिक सन्धियां होंगी। गोचर में सिंहस्थ शनि की वर्ष कुण्डली के दशम भाव पर उच्च दृष्टि तथा द्वितीय भाव पर दृष्टि मशीनरी के व्यापर में भारत की प्रतिष्ठा को ऊंचा करेगी। मशीनरी पुर्जे-इजनीयरिंग का सामान, ऊन का सामान आदि स्वनिर्मित वस्तुओं का निर्यात करके भारत अन्तरराष्ट्रीय व्यापार में विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा। जूट चमड़ा कम्प्यूटर एवं जहाज निर्माण में पूर्ण आत्म निर्भरता पर सन्तोष होगा। सूती कपड़ा, फल एवं रासायनिक वस्तुओं का निर्यात होगा। रूस अमेरिका जापान आदि के साथ व्यापारिक सम्बन्ध सुदृढ होंगे। इन देशों के अतिरिक्त अन्य देशों के साथ भी व्यापरिक सम्बन्ध बनेंगे। इस प्रकार अन्तरराष्ट्रीय व्यापार में भारत को श्रेय प्राप्त होने के योग हैं।

हरयाणा—प्रभाव राशि मिथुन है। लग्नस्थ गुरु यहां की राजनीति में स्थिरता का संकेत देता है। ५ अग. के बाद कर्क के गुरु में यहां की आर्थिक दशा सुदृढ़ होगी। आयस्तर बढ़ेगा। लोगों का जीवनस्तर उन्नत करने के लिए सुसमृद्धिप्रद योजनाओं का निर्माण होगा। कृषि में प्रगति होगी। १७ नवं. के बाद कोई प्रान्तीय समस्या खड़ी होगी एवं राजनैतिक गतिरोध पैदा होगा, लेकिन शासकों की कुशलता से शीघ्रही समाधान होगा।

हिमाचल प्रदेश—प्रभाव राशि मीन में केतु, सप्तम प्लूटो एवं अष्टम यूरेनस है। यहां की राजनीति में विशेष हलचल रहे। सितं. से पहिले का समय यहां के राजनीतिज्ञों के लिए समस्यापूर्ण अवश्य है। सितम्बर के बाद का समय कुछ शान्तिपूर्ण रहेगा। कृषि-उद्योग, बागवानी एवं शिक्षा के क्षेत्र में प्रगतिकारक योजनाएं कार्यान्वित होंगी। हिमाचल के जन-जीवन को उन्नत करने का प्रयास प्रशंसनीय रहेगा। किसी एक भाग में तूफान भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से जन-जीवन क्षुब्ध होगा।

उत्तर प्रदेश—उत्तर प्रदेश मन्त्रि मण्डल ने २३-६-७७ को दिन में ११ बजकर ४५ मि. पर शपथ ग्रहण की। इस समय ग्रहस्थिति काल सर्प योग कारक है। चन्द्र पाप कर्तरी है। परिणाम निराशा जनक रहेंगे। प्रान्त की प्रगति-सहयोग एवं समृद्धिप्रद योजनाओं की सफलता में गतिरोध होने से शासनतन्त्र प्रान्त को आशा के अनुरूप सन्तोषप्रद परिणाम देने में निरुत्तर सा रहेगा। आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। शनि पर मंगल की दोषपूर्ण दृष्टि होने से यहां के शासक अपनी नीति को निर्धारित करने में असफल रहेंगे। उत्तराखण्ड का भाग पृथक् प्रान्तीय सत्ता की मांग करेगा। अक्तूबर १९७७ ई. से आगेका समय तनावपूर्ण रहेगा। तथा जून१९७८ई. से शनि-मं.की युतिमें यहां के शासन को कुछ वर्गों के सहयोग से वंचित होना पड़ेगा. सिंह के शनि में ही यहां के मन्त्रिमण्डल में विशेष परिवर्तन होने का संकेत मिलता है।

राजस्थान—प्रभाव राशि तुला है। लग्न में यूरेनस शनि से दृष्ट है। ४ अगस्त १९७८ तक राजनैतिक स्थिरता रहेगी। तत्पश्चात् गुरु के कर्क में आने पर किसी भाग में अकाल की स्थिति से तथा किसी अन्य प्राकृतिक-प्रकोप से स्थिति शासकों के लिए चिन्ता कारक रहेगी। १७ नवं. के बाद का समय शासकों के लिये विषम रहेगा।

बिहार—२४ जून १९७७ ई. को ११ बजकर २० मिनट पर सिंह लग्न में बिहार की सरकार ने शपथ ग्रहण की। जून के आगे का समय प्रान्तीय सरकार के लिए अग्नि परीक्षा कारक रहेगा। आर्थिक स्थिति शोचनीय रहेगी। विरोधी दल प्रबल होगा. १७ नवं. के बाद प्रमुख शासक के सहयोगी विमुख होंगे। अन्तत: आवश्यक परिवर्तन होंगे। अनेक विघ्न बाधाओं के बावजूद भी जनता समस्याओं को सुलझाने में सफल होगी।

तामिलनाडु—प्रभाव राशि कुम्भ है। यहां की प्रान्तीय सरकार भी सिंह लग्न में बनी है। २ जून से २४ जुलाई एवं नवम्बर से आगे का समय अनुकूल नहीं। फ़सल को प्राकृतिक प्रकोप में हानि होगी। शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति होगी।

बंगाल—प्रभाव राशि कुम्भ है। सितम्बर के बाद का समय अनुकूल रहेगा। आर्थिक दशा कमजोर रहेगी। जन-जीवन की उन्नति के लिए नई योजना। बनेगी किसी भाग में दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी।

गुजरात—ग्रह गोचर के अनुसार यहां राजनीति में कुछ गतिरोध होगा। लेकिन परिस्थिति में सुधार के योग हैं। प्राकृतिक-प्रकोप तूफान आदि से हानि होगी। कृषि उद्योग परिवहन एवं ग्राम्य जीवन को उन्नत करने की योजनाएं कार्यान्वित होंगी।

मध्य प्रदेश—प्रभाव राशि वृष से चतुर्थ-शनि एवं छठे यूरेनस नेष्ट है। कहीं अकाल की स्थिति से, कहीं अवर्षण, कहीं अतिवर्षण से हानि होगी। कुशल नेतृत्व भी शनि मं. की युति में (मई के बाद) विषम स्थिति में अशक्त अनुभव करेगा। उन्नतिप्रद योजनाओं का लागू करना अभी सम्भव नहीं। १७ नवं. के बाद परिस्थिति में कुछ परिवर्तन होगा।

काश्मीर—श्री शेख अब्दुल्ला ने अश्विनी नक्षत्र में शपथ ग्रहण की है। प्रभाव-राशि तुला में स्थित नेप्च्यून पर शनि की दृष्टि है। कार्यकाल में प्रधान शासक के केन्द्र के साथ सम्बन्ध कुछ कटु होंगे जून-जुलाई सित. एवं १७ नवं. से आगे का समय नेष्ट है। इस वर्ष यहां की जनता में असन्तोष व्यापेगा। स्थिति पर नियन्त्रणार्थ शासन को कठोर कदम उठाने पड़ेंगे, सीमा सुरक्षा की दृष्टि से यहां नए कानून से सैन्यबल को सुसज्ज करना पड़ेगा। तूफान-भूकम्प आदि प्राकृतिक-प्रकोप से हानि का भय है। सितम्बर के बाद यहां के प्रधान शासक का स्वास्थ्य खराब होने का योग है।

पंजाब—इस प्रान्त की प्रभाव राशि मीन में चतुर्थ केतु, छठे शनि-रा. हैं। ५ अगस्त १९७८ से पहिले का समय इस प्रान्त के लिए अधिक अच्छा है। कृषि सम्बन्धी नई योजनाएं बनेंगी। कृषि-क्षेत्र में नए नए परीक्षण होंगे। ऊनी गर्म कपड़ों का निर्यात होगा। नए उद्योग धन्धे स्थापित होंगे। बड़े कारखाने एवं पंजाब को सुसमृद्ध बनाने वाली योजनाएं बनेंगी। यहां की राजनीति में शान्ति एवं शासकीय कार्य सुचारु रूप से चलेंगे। १७ नवं. १९७८ से आगे का समय विशेष अच्छा नहीं।

विश्व के कुछ प्रमुख राष्ट्र

अमेरिका—प्रभाव राशि मिथुन है। लग्न में वृहस्पति शासकों के कुशल नेतृत्व में इस राष्ट्र को उन्नति की ओर अग्रेसर करेगा। ५ अगस्त के बाद यहां वृहस्पति के कर्कमें आने पर यह राष्ट्र भारत के साथ अधिक घनिष्ठता का हाथ बढ़ाएगा। व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ेंगे। १७ नवम्बर के बाद केतु के कुम्भ में आने पर विरोधी देशों के साथ में नीति कुछ परिवर्तन होगा। बेरोजगारी बढ़ेगी। जीव-विज्ञान अन्तरिक्ष-विज्ञान एवं संहारक शस्त्रास्त्रों में प्रगति होगी। राजनैतिक-स्थिरता एवं राष्ट्रनायकों का यश बढ़ेगा।

रूस—प्रभाव राशि कुम्भ है। शासकों के लिएं नवम्बर से पहले का समय प्रायः ठीक रहेगा। तत्पश्चात् कोई समस्या उपस्थित होगी। नीति में अचानक परिवर्तन आएगा। चीन के साथ सम्बन्ध स्वस्थ न रहेंगे। मशीनरी एवं वैज्ञानिक क्षेत्र में प्रगति होगी मशीनरी एवं वैज्ञानिक क्षेत्र में प्रगति होगी। सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। भारत के साथ सम्बन्ध यथावत स्वस्थ रहेंगे।

जर्मनी—प्रभाव राशि मेष है। मशीनरी-यन्त्र विज्ञान आदि तकनीकी एवं विज्ञान में प्रगति होगी। लेकिन पश्चिमी जर्मनी में जनता बेरोजगारी असमर्थता एवं गरीबी का शिकार होगी। जनता में क्रान्ति एवं आन्दोलन होंगे। शासन तन्त्र के विरोध में प्रदर्शन होंगे। सिंह के शनि में शासन में विशेष परिवर्तन आएंगे।

अरब गणराज्य—ग्रहगति के अनुसार जून जुलाई एवं सितम्बर के लगभग का समय अशान्ति एवं अराजकता पूर्ण रहेगा। फिलस्तीन एवं सीरिया में सैन्य संघर्ष होगा। टर्की एवं यूनान में पुनः युद्ध भयंकर रूप धारण करेगा। जून जुलाई विशेष नेष्ट है।

चीन—प्रभाव राशि तुला में यूरेनस है। सिंहस्थ-शनिकी प्रभाव राशि पर उच्च-दृष्टि है। आन्तरिक समस्याएं विषम होंगी। ५ जुलाई के बाद विशेषतः १७ नवम्बर के बाद यहां की नीति भारत तथा रूस के लिए कुछ अनुकूल न होगी। अणुशस्त्र परीक्षण होगा। सैन्यबल में वृद्धि होगी।

ब्रिटेन—प्रभाव राशि मेष से छठे वेंकटेश (प्लूटो), सातवें यूरेनस एवं अष्टमस्थ नेपच्यून है। पदस्थैर्य की दृष्टि से प्रधान शासक के लिए समय अनुकूल नहीं। प्रधान शासक का विरोधी वर्ग प्रबल होगा एवं सिंह के शनि में ही सत्ता हस्तान्तरण का योग है। नई नीति का निर्धारण होगा। ५ अगस्त के बाद पौण्ड का मूल्य बदलेगा। जून जुलाई एवं १७ नवम्बर के बाद का समय विशेष कठिन रहेगा। आयरलैण्ड एवं रोडेशिया की समस्या का हल भी सिंह के शनि में ही हो जाएगा।

पाकिस्तान—प्रभाव राशि कन्या में प्लूटो है। यह देश पूर्णरूप से साढ़ेसाती के प्रभाव में हैं। २ जून के बाद जुलाई के अन्त तक, एवं सितम्बर इस देश के लिए विशेष घटनापूर्ण रहेगा। जून के बाद फौजी शासकों की नीति अधिक कठोर होगी। आन्तरिक कलह, रक्तपात एवं अव्यवस्था का वातावरण रहेगा। किसी भाग में क्रान्ति को सैन्यबल से दबाया जाएगा। लेकिन अन्ततः १७ नवम्बर के बाद यहां की नीति बदलेगी। सत्ता में परिवर्तन आएगा। अमेरिका चीनसे शस्त्रास्त्र खरीद कर सैन्यबल को दृढ़ बनाने का प्रयास बना रहेगा। इस अवधि में अपनी कुनीति के कारण यह देश अपने पड़ोसी देश से सम्बन्ध अधिक कटुतापूर्ण कर लेगा। जिससे इसकी प्रतिष्ठा को धक्का लगेगा।

अफ्रीका—प्रभाव राशि कर्क है। ४ सितम्बर बाद गुरु कर्क में आकर यहां की उलझी समस्याओं का समाधान कर देगा। सितम्बर के बाद यहां की उलझी हुई समस्याएं अधिक विषम हो जाएगी और इस विषमता के साथ ही रंग भेद नीति के शिकार अफ्रीकी देश मुक्ति प्राप्त कर लेंगे। रोडेशिया नामीबिया युगांडा तंजानिया आदि में भयंकर क्रान्ति होगी सिंह के शनि में शीघ्र ही स्वाधिकार प्राप्त होने का योग है।

पाठको ! अतर्क्य भविष्य देखने की क्षमता इस कलियुग में कठिन ही है। पुनरपि ज्योतिर्विज्ञान दृष्ट्या एवं श्री प्रभुकृपावशात् राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय जो शुभाशुभ घटनाएं अल्पविषया मति में स्फुरित हुई है, आपके समक्ष उपस्थित कर दी गई हैं। आगे कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुं समर्थ, भविष्य के निर्धारक स्वयं प्रभु ही हैं। उनकी प्रबल माया-शक्ति के सम्मुख मुझ जैसे अल्पज्ञ की भविष्य-लेखक में प्रवृत्ति वाक्चापल ही तो है।

"त्वं वाग्रेश्वरी वेत्ति नाहं वेद्मि, कदाचन।"

शुभचिन्तक—

२ अगस्त १९७७ ई.

इन्दु शेखर शर्मा

श्री मार्तण्ड भवन, कुराली

शनि की साढ़ेसाती और ढैय्या का विचार

बृहत्कल्याणी (साढ़ेसाती) साढ़े सात वर्ष की होती है, जो जन्म-राशि से बाहरवीं राशि में शनि के आने पर २॥ वर्ष तक सिर पर चढ़ती, जन्म राशि में जाने पर २॥ वर्ष हृदय पर एवं जन्मराशि से दूसरी राशि में आने पर २॥ वर्ष पैरों पर(उतरती) मानी जाती है। साढ़ेसाती का ठीक प्रारंभ जन्म का स्पष्ट चन्द्र जिस अंश में हो उससे ४५अंश आगे व ४५ अंश पीछे से जानना। जैसे —जन्म का चन्द्र सिंह पर २४ अंश का हो तो कर्क के १०अंश से साढ़ेसाती प्रारंभ होगी, और तुला के १० अंश पर जाकर मुक्ति होगी।

लघुकल्याणी (ढैय्या) अढ़ाई वर्ष की होती है जो जन्म राशि से चौथी एवं आठवीं राशि में शनि के आने पर मानी जाती है।

जिसकी जन्मकुण्डली में शनैश्चर का शुभ ग्रह से सम्बन्ध हो अथवा महादशा का अन्तर शुभ चल रहा हो, उसे शनि का अशुभ फल कम होता है। यदि चन्द्र-शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हों तो सढ़ेसाती व ढैया महान् अशुभ, चिन्ता, अवनति, धनहानि, झगड़ा कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी व्यर्थ कलह एवं रोग पशु-पीड़ा हानि आदि का कारण बनती है। यदि जन्म कुण्डली में शनि अष्टमेश व्ययेश या मारकेश भी हो तो ढैया साढ़ेसती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है। यदि जन्म में लग्नेश पंचमेश नवमेश होकर ३।६।११वें स्थित हो तो सुख सम्पत्ति व्यापारादि में लाभ होता है। शनि-अष्टक वर्ग में अधिक रेखाएं हों तो शुभ, कम-रेखाएं हों तो अशुभ फल निश्चित देता है। शान्त्यर्थ शनिवार के दिन सतनाजा को तेल का हाथ लगाकर पक्षियों को डालना चाहिए या शनिवार को तेल में मुख देखकर उसमें मिष्ठान्न गुलगुले आदि बनाकर गरीबों को, भैंसे या कुत्ते को देवे या बन्दरों को गुड़ चने डालते रहें।

साढ़ेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का अशुभ फल इस प्रकार है—मेष राशि वालों को बीच के ढाई वर्ष खराब, **वृष** राशि वालों को पहिले ढाई वर्ष खराब, **मिथुन** को अन्त के ढाई वर्ष खराब, **कर्क** को बीच के ढाई वर्ष, **सिंह** को पहिले ५ वर्ष, उसमें भी मध्य के ढाई वर्ष विशेष खराब है। **कन्या** को पहिले ५ वर्ष, उसमें भी मध्य के ढाई वर्ष विशेष अशुभ है। **तुला** के आखिर के ढाई वर्ष, **वृश्चिक** को अन्तिम ५ वर्ष नेष्ट हैं, उसमें भी बीच के ढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। **धनु** को प्रारम्भ के ढाई वर्ष, **मकर** को पहले ५ वर्ष उस में भी पहले ढाई वर्ष विशेष खराब हैं। **कुम्भ** को आदि अन्त के ढाई वर्ष, विशेषतया अन्त के ढाई वर्ष अधिक अशुभ है। **मीन** को पूरे साढ़े सात वर्ष नेष्ट हैं उनमें भी अन्त के ढाई वर्ष विशेष अशुभ-फल वाले होते हैं।

सं. २०३४ वि. में भाद्रपद कृ. ९-बुध ७ सित. १९७७ ई. को मिथुन के चन्द्रमा के समय शनिदेव सिंह में प्रविष्ट होंगे। सिंहस्थ शनि के समय मेषादि राशि वालों के लिए साढ़ेसाती-ढैय्या का विचार निम्नलिखित है:—

वृष—(ढैय्या) चांदी के पाए शुभ है।
कर्क—(साढ़ेसाती) पैरों पर, तीसरी ढैय्या, लोहे के पाए अशुभ है।
सिंह—(साढ़ेसाती) छाती पर, दूसरी ढैय्या, सोने के पाए हानिप्रद है।
कन्या—(साढ़ेसाती) मस्तक पर प्रथम ढैय्या, तांबे के पाए शुभ है।
मकर—(ढैय्या) सोने के पाए हानिकारक है।
शेष राशि वालों के लिए साढ़ेसाती और ढैय्या नहीं है।

गुरु का शुभाशुभ फल—संवत् २०३४ में प्रथम(अधिक) श्रावण शुक्ल २ चन्द्रवार तदनुसार १८ जुलाई सन् १९७७ ई. को गुरुदेव मिथुन राशि में प्रविष्ट होकर ४ अगस्त तक मिथुन में ही रहते हैं। फिर श्राव. शु. १ शनिवार तदनुसार ५ अगस्त सन् १९७८ ई. को गुरु कर्क में आकर संवत् के अन्त व आगे तक कर्क में ही रहता है। इन राशियों में गुरु का प्रत्येक राशि के लिए शुभ एवं अशुभ फल नीचे लिखे चक्रों में देखें।

मिथुन राशि के गुरु का शुभाशुभ फल

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
मध्यम	शुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	अशुभ

कर्क के गुरु का शुभाशुभ फल

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
अशुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ

गुरु का विशेष फल—गुरु जब तक जिस राशि को शुभ फलप्रद होते हैं, तब तक उस राशि वालों को विद्या व सन्तति की ओर से सुख, मित्र-बन्धु-मिलाप, मान-वृद्धि, खुशी धन लाभ, शुभ यात्रादि अच्छे फल प्रदान करते हैं। और जिन राशि वालों को अशुभ फलप्रद होते हैं उन्हें धन-मान-हानि, विद्या वा सन्तति की ओर से चिन्ता, वृथा यात्रा, शरीरिक कष्ट बड़ों से वैमनस्य आदि अशुभ फलप्रद होते हैं।

शान्त्यर्थ गुरुवार को व्रत, जप-दान तथा चिड़िया आदि पक्षियों को हल्दी से पीले किए हुए चावल डालने चाहिए।

राहु का शुभाशुभ फल —३०अप्रै.(सन् १९७७ई.)से १६नवं.तक राहु कन्या में है आगे १७नवं से राहु सिंह में चलेगा। इनका शुभाशुभ फलप्रत्येक राशि के लिए इस प्रकार है:—

कन्या राशि के राहु का फल

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
शुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	मध्यम	अशुभ	अशुभ

सिंह राशि के राहु का फल

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
मध्यम	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	मध्यम	अशुभ	मध्यम	शुभ

राहु का विशेष फल—राहु जब तक जिस राशि को शुभ फलप्रद होता है, तब तक उस राशि वालों को प्रिय-मिलन, द्रव्य-लाभ, स्वास्थ्य सुख, घर में सन्तोष कुटुम्ब में वृद्धि आदि शुभ फल होता है। जिन राशि वालों को मध्यम होता है, उन्हें यदा-कदा किंचित शत्रु-भय, कुछ हानि-लाभ-कम, वृथा कलह, द्रव्य-चिन्ता आदि फल देता है और जिन राशि वालों को वह अशुभ होता है, उन्हें अकस्मात् हानि, चोट-रोग-भय, खर्च अधिक, मित्र-बन्धु वियोग, गृह-कलह, अशुभ विचारों की ओर मन की दौड़ इत्यादि फल देता है।

शान्त्यर्थ प्रत्येक मास के पहिले बुधवार की रात को तैलपक्व भोज्य गरीबों को दें या कुत्तों को डालें। दुर्गा पाठ करें।

जन्म कुण्डली से विशे[illegible]

जन्म-कुण्डली से विशेष विचार

लघु-भ्राता का जन्म समय जानना—(१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़ें जो राशि हो, उस पर जब गोचर में गुरु ग्रह आवे तो भाई वा बहन का जन्म होता है।

(२) तृतीयेश तृतीयस्थग्रह तृतीयस्थ राशि की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है यदि भ्रातृ-प्रतिबन्धक योग न हो तो।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना—(१) जन्मलग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटावे, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(३) लग्नेश स्पष्ट में से तृतीयेश स्पष्ट घटावे, शेष में दशमेश स्पष्ट और मंगल-स्पष्ट घटावे—(यथा)—ल० तृ० शे०। शेष राशि में से जब गोचर का शनि आता है तब भ्रातृ कष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, भौम इन चारों स्पष्टों को जोड़ कर जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर शनि होता है उस काल में भ्रातृ-कष्ट होता है।

(५) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृ कष्ट जानिये।

माता की मृत्यु का समय जानना—(१) जन्म के सूर्य स्पष्ट में से चंद्रस्पष्ट को घटावे तो शेष के उस राशि में या त्रिकोण राशि में या उस शेष राशि के नवांश राशि में जब गोचर का शनि वा गुरु होगा तब माता की मृत्यु का समय जानना।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वो	हस्ते	गुह्ये	जंघा	जान्वो	पादे	स्थानम्
४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०	घटी
पशु ना	धन ना.	धन ला.	कुटिला	धनला.	दयावती	कामिनी	भातृना.	भ्रातृना.	वैधव्य	फलम्

कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल	आश्लेषा	ज्येष्ठा	विशाखा (४च०)
फलम्	(१।२।३च०) श्वसुरहानि	(२।३।४ च०) सास नाश	ज्येष्ठ नाश	देवर नाश

सुतः सुता वा नियतं श्वसुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथा श्लेषाद्यपादजः।

तिथिगण्डान्त—पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों आदि की दो-दो घड़ी तिथि गण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म यात्रा विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूल नक्षत्राणि

अश्विनी । आश्लेषा । मघा । ज्येष्ठा । मूल । रेवती

उपरोक्त ये ६ नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं, इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाय, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र के ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए, तत्पश्चात् शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरण जन्मफल

मूल पाद फल			आश्लेषा पाद फल		
चरण		फल	चरण		फल
१	म	पितृनाश	४	म	पितृनाश
२	,,	मातृनाश	३	,,	मातृनाश
३	,,	धननाश	२	,,	धननाश
४	,,	शान्ति से सुख	१	,,	शान्ति से शुभ

मूलजनने वृक्षविभाग फलम्

मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फलम्	शिखा	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटी
मूल नाश	वंश नाश	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मन्त्री पदम्	मन्त्री पदम्	विपुल लाभ	अल्प जीव	फल

अथ मूलपुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुख	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जान्वोः	पाद	स्थान
५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६	घटी
राजा	पि.मृ.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा.	मतिमा.	फलम्

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार दोनों प्रकार से भूमि पर आवे तो महाभयप्रद होता है एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी शनिभौमसमन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातं संहरते कुलम् ॥ यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत् ॥ दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गंडातिगंडे च परिघ यमघण्टके ॥ ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम् ॥

यथा सर्पविषश्चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते ॥ रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निःसृतेन जलेन हि ॥ बालकस्यापि तत्स्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। अरिष्टभयदानेन कृतं स्यान्मांगल्यं ध्रुवम् ॥ विरुद्धावयवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेमुमीप्सुभिः ॥

अथाभुक्तमूलविचारः—ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी, किसी के मत से एक घटी एवं मूल नक्षत्र आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है। इस

समय में जो बच्चा जन्म ले उसका परित्याग [illegible] ८ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे। धनगंडे दरिद्रोऽपि शान्तिं कुर्यात्स्वशक्तितः। अन्यथा [illegible]माप्नोति पाभुक्तर्क्षे विशेषतः ॥

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

दिन में	रात्रि में	सन्ध्या	प्रातः	समय
मू० ज्ये० पिता को भय	मू० श्ले० माता को भय	रे० अश्वि० शरीर भय	पशु हानि	फल

अश्विनीजातस्य फलम्—अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखश्वर्य, तृतीय में मन्त्री तुल्य, चतुर्थ में नृपति समान होता है।

मघाफलम्—मघा के प्रथम चरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन विद्या लाभ होवे।

ज्येष्ठापाद फलम्—प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। ज्येष्ठाद्यपादजो ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलक्ष मातरं पितरं तथा।

रेवतीपाद फलम्—रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृप समान, दूसरे में मन्त्री या मुख्तार, तीसरे में सुख सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हो।

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ-ग्रह-फलानि

भावः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	शूरअंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन २	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज ३	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत् ४	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहा	दुःखी
सुत ५	सुतहानि	धनी पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु ६	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री ७	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहा
मृत्यु ८	अल्पायु	योगी	शरीरपी	गुणी	नीचस्व	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म ९	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म १०	शूर	तेजयुत	तेजस्वी	कीर्तिमान्	संपत्तिमान्	संपत्ति०	पराक्रमी	मानी	पितृहानि
लाभ ११	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान	मुख्यात	धनी
व्यय १२	दुष्टस्वभाव	कामी	पति तदारह	दरिद्री	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थग्रहफलानि

भावः	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु १	क्रोधिनी	गतायुः	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	वन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन २	दरिद्रा	बहुधन	वन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्त्ता
सहज ३	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत् ४	सपीड़ा	दुर्भगा	दुःखार्त्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहा
सुत ५	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुत्ता	सगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु ६	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति ७	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु ८	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म ९	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	वन्ध्या	वन्ध्या	शोक
कर्म १०	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साध्वी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ ११	सधना	गुणज्ञा	सलाभ	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुसुता	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय १२	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कुभांगी	सुव्यया	सुव्यया	मक्षा	दुष्टा	रोगिणी

अथ मातृसुखनाश योगाः—(१) पापग्रह युक्त चन्द्रमा सातवें भाव में होवे, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र होवे, (३) पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे सातवें पापग्रह हों, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य होवे और लग्न में मंगल होवे, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो; इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप दान करना चाहिए।

पितृनाश योगाः—(१) सूर्य मंगल दशवें वा नवमें गये हो (२) दशमेश रवि मंगल से युक्त हो (३) शत्रु राशि का मंगल १०वें हो, (४) पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें पड़ा हो, इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो।

भ्रातृनाश योगाः—भ्रातृ गृहको ईश जो भौम संगत्रिक होय।
जाके ऐसे योग हैं भ्रातृहीन नर होय ॥

सन्तानसुख नाशयोगाः—गुरु ते पञ्चम गेह पति, जाय परे त्रिक भाव। ऐसा यो जो लखि परे, ताके पुत्र अभाव। पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे त्रिक थान। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोगाः—शुक्र और सूर्य सप्तम पंचम और नवम में हों तो उसकी स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है।

नीचयोगाः—सहज सप्तम धन सदन में क्रूर बसे खगै आई। भवन पाँचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई ॥ सिंह लग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध भग राहु संग सप्तम भाव विराज। लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्याबाज।

जारज योगः—भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशु है परपुरुष को भाषन ज्योतिषमग्न ॥ रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तर जन्म में तब शिशु कहो परार ॥

गोचर-ग्रहाणां द्वादशभाव-फल बोध-चक्रम्

नाम की राक्षसी का दोष होगा। बच्चे को इतर फुलेल लगाने

गोचर-ग्रहाणां द्वादशभाव-फल बोध-चक्रम्

ग्रह:	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य:	स्थानना.	भयं	श्री:	मानभग	दैन्य	विजय:	मार्ग:	पीड़ा	सुकृना.	सिद्धि:	धनलाभ	द्रव्यना.
चन्द्र:	अन्नला.	धननाश	सुखं	रोग:	कार्यनाश	धनला.	स्त्रीला.	रोग:	धर्मला.	सौख्यं	धनलाभ	धनना.
भौम:	शत्रुभी.	धननाश	धनलाभ	शत्रुभी.	धननाश	धनला.	द्रव्यना.	शत्रुभी.	शत्रुभी.	शोक:	धनलाभ	धनना.
बुध:	बन्धनं	धनलाभ	शत्रुभी:	पशुलाभ	सुख	स्थानला	पीड़ा	धनला.	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धनना.
गुरु:	भयं	धनलाभ	क्लेश	धननाश:	सुखं	शोक:	राजमा.	पीड़ा	सौख्य	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र:	शत्रुना.	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभी.	शोक:	धनला.	वस्त्रला.	दुःख	धनलाभ	धनला.
शनि:	भय	धननाश	ऐश्वर्यं	शत्रुभी.	पुत्रनाश:	धनला.	दोष:	पीड़ा	धर्मना.	दौर्मन.	धनलाभ	धनना
राहु:	हानि:	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक:	श्री:	कलह:	मृत्यु	दुःख	वैर	सुखं	शोक:
केतु:	रोग:	वैर	सुखं	भयं	सुख	धनला.	कलह:	रोग:	पाप	शोक:	कीर्ति:	शत्रुभी.

उपरोक्त गोचर फल जन्म राशि या जन्मलग्न के अंश आदि से लेकर अग्रिम राशि के उतने अंश तक प्रथम भाव एवं द्वादश भावों के अंशों पर कल्पना करने से अधिक मिलता है। केवल राशि से फल में अधिक अन्तर रहता है।

अथ ग्रहाणामेकभे भोगफल-समयादि ज्ञानम्

सू.	च.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.के.	ग्रहा:
मा.१	दि.२।	मा १॥	मा १	मा १२	मा. १	मा ३०	मा १८	एकार्थभोग
आदौ.	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते	फलसमय:
दि.५	घ.३	दि ८	दि. ७	मा. १	दि.७.	मा.६	मा. ६	गतव्यराशे: प्राक्फलम्

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थं धारणाय मणय:

सू.	च.	म.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवाल:	पन्ना	पुष्पराग:	हीरा	नीलम	गोमेदम्	वैदूर्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	रौप्यम्	वैडूर्यम्	काजवर्तं:	लाजावर्तं:

पूतना विचार

बहुत मैले बिछौने पर अकेली जगह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से बच्चा बीमार हो जाता है। तब पूतना की बलि निकालने से अच्छा होता है। जब कभी बच्चा बैठे २ गिर पड़े, या यों मालूम हो कि किसी के पीटने से गिरा है। और मूर्छा आगई है अथवा कोई रोग हो गया है, तब जानो कि उसे महा-पूतना ने ग्रसा है। यदि कोई लोभादि के वश में आकर वन देवता या नगर देवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है। यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नात स्त्री का गमन करके पश्चात् स्नान न करे या बिना ऋतु के संगम करके हाथ मुंह न धोवे और माता अपवित्र अवस्था में ही बालक के साथ सो जावे तो बालकान्ता

नाम की राक्षसी का दोष होगा। बच्चे को इतर फुलेल लगाने और फूल माला पहिनाने से रेवती ग्रही का दोष होता है। सिर खुले जूठे बालक को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है। संध्या के समय जमीन पर सोने में अथवा खेलने से बालक को पुष्प रेवती का दोष होता है। कदाचित् बालक खेलता २ गिर जाय अथवा उसे उल्टी हो या हाथ-पांव नहीं धुले हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मलमूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड़ लेती है। जो नित्य कर्म संध्या वंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुमुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है। फिर उसका पूजन और बलि धूपादि दान करने से शान्ति होती है।

चेष्टा—जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नहीं आवे, डर लगे, मन को उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जावे, उसे ग्रहाविष्ट जानना।

उद्वर्तनम्—दूर्वा, कुटकी, नीम, के पत्ते, तज, इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते मुलट्ठी, लसूड़े के पत्ते इनका काढ़ा बनाकर स्नान करावे ग्रह रोग दूर होगा।

सर्वबालग्रहशान्त्यर्थं देवालये ज्योतिर्दान निवासश्च तत्र रात्रौ—ॐहिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव॥ इत्यस्य जप: ततोऽनेनव मन्त्रेण सदीपदधिमाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्ति:॥

अथ बाल रक्षा विधि—(प्रयोगसारे)

यदि दुष्ट दृष्टि (नजरादिदोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग कष्ट हो जाय तो—ॐवासुदेवो जगन्नाथ: पूतनातर्जनो हरि: रक्षति त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्॥१॥ कृष्ण! रक्ष शिशु शङ्ख मधुकैटभ मर्दन:। प्रात: सङ्गव मध्याह्ने सायाह्ने सुच सन्ध्ययो:॥२॥ महोनिशि सदा रक्ष कंसारिष्ट निषूदन:। यद्गोरज: पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि॥३॥ बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि महा-भयान्। त्राहि त्राहि हरेनित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम्॥४॥

इन चार मंत्रों से अभिमंत्रित हुई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

ग्रहगोचराद्यंर्दशा क्रमाद्यैर्ग्रहकृतानिष्ट-फल-शमनार्थं प्रत्येक-ग्रहाणां-दान-पदार्थाः													जप संख्या	जपनीय-मंत्राः	दानसमय	हवन-समिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केशर	मूंग	रक्तगौ	रक्तचन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कर्पूर	श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलास
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केशर	कस्तूरी	रक्तबैल	रक्तचन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २शेषदि.	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कर्पूर	शस्त्र	फल	१६०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५शेषदि.	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१६०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि	श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तैल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णांग	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	मध्याह्ने	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल	घोड़ा	शष्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्री	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तैल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	कंबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्री	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कर्पूर	ममरी	श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुंथेशवत्	मुन्थेशमंत्रः	मुन्थेशकाले	

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति को कोई ग्रह गोचर से या दशा-अन्तर्दशा मे खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार से उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत-विधान ब्रह्मचर्य पूर्वक करने से अशुभ फल निवृत्ति होती है।

रविवार के व्रत की विधि—सूर्य का व्रत रविवार को करे। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठे) रविवार से प्रारम्भ करके वर्ष पर्यन्त या तीस या कम से कम १२ व्रत करें। उस रोज केवल गेहूं की रोटी घी लाल खाण्ड के साथ, या गेहूं का गुड से बना दलिया या हलवा इलायची डाल कर दान करके शेष का भोजन करें। नमक बिलकुल न खावें। भोजन से पूर्व हो सके तो लाल वस्त्र पहनकर ऊपर चक्रोक्त बीज-मन्त्र की पांच माला जप करे। तन्दनतर सूर्य को गन्धाक्षत रक्त पुष्प-दुर्वायुक्त अर्घ्य प्रदान करे। अपने मस्तक में लाल चन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण भोजन करावे। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परणित हो जावेगा। तेजस्विता बढ़ेगी, शरीरिक रोगों की शान्ति भी होगी।

सोमवार के व्रत की विधि—चन्द्रमा का व्रत शुक्ल-पक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार से प्रारम्भ करके ५४ या १० व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके चक्र-लिखित बीज-मन्त्र की ११ माला या ३ माला जप करे। सफेद फूलों से पूजन करके सफेद चन्दन का तिलक करे। मध्याह्न के समय नमक के बिना दही-चावल घी-खाण्ड या यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करे। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो, उस दिन हवन पूर्णाहुति करके खीर-खाण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन करावे। इस व्रत के करने से व्यापार मे लाभ, मानसिक कष्टों की शान्ति होती है, विशेष कार्य सिद्ध्यर्थ भी पूर्ण फलदायक होता है।

मंगलवार के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ या ४५ व्रत करने चाहिए। हो सके तो यह व्रत आजीवन करें। सिला हुआ लाल वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १, ५ या ७ माला जप करे। नमक सेवन न करे, यह जरूरी है। उस दिन गुड़ से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करे। और स्वयं भी खावें। गुड़ से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलावें। मंगलवार का व्रत ऋण-हर्ता तथा सन्तति-सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो उस दिन हवन-पूर्णाहुति करके लाल वस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूं तथा नारियल का दान करे। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन करावें।

बुधवार का व्रत—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम बुधवार (जेठे) से प्रारम्भ करे। २१ या ४५ व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १७ या तीन माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमक-रहित खाण्ड, घी से बने पदार्थ जैसे मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डुओं का दान करे। फिर तीन तुलसीदल गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खावे। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन पूर्णाहुति करके अङ्गहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करे। इस व्रत से विद्या-धन-लाभ, व्यापार मे तरक्की तथा स्वास्थ्य लाभ होता है।

बृहस्पति के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरुवार से आरम्भ करें। तीन वर्ष पर्यन्त या १६ गुरुवार के व्रत करे। उस दिन पीत वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की ११ या तीन माला जप करे। पीत-पुष्पों से पूजन-अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की बनी घी-खाण्ड से बनी मिठाई लड्डु या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खावें और यही दान करे। जब व्रत का अन्तिम गुरुवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डु भोजन करावे। स्वर्ण पीत-वस्त्र, चने की दाल आदि का दान करे। यह व्रत-विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्या-प्रद है, धन की स्थिरता तथा यश-वृद्धिकर है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

... मे उबाल कर स्नान करे। सोमवार के
देवदारू, मलेठी, लाल फल, केसर, गर्म पानी ...

...करके २९ या ४९ व्रत करने चाहिए। हो सके तो यह व्रत आजीवन करें ... तथा यश-वृद्धिकर है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

शुक्र के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ
होता है। ३१ या २१ व्रत करे। श्वेत वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की ३ या २१ माला
जपे। भोजन मे चावल, खाण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करे। यही पदार्थ यथा-
शक्ति संभव हो तो एकाक्षी (एक आख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत
का अन्तिम शुक्रवार हो, हवन पूर्णाहुति के बाद खीर-खण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मण बटुको
को खिलावे। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करे। इस व्रत से स्त्री सुख एवं
ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शनि के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम शनिवार से प्रारम्भ करे।
व्रत ५१ या १६ करने चाहिए। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की १९
या तीन माला का जप करे। फिर एक बर्तन मे शुद्ध जल, काले तिल काले फूल या
लवग (लौंग) गङ्गाजल, तथा शक्कर थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुह करके
पीपल-वृक्ष की जड मे डाल दे। भोजन मे उडद के आटे का बना पदार्थ, पञ्जीरी, कुछ
तेल मे पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दे तथा तैलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य
फल स्वय प्रयोग मे लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करे। व्रत के अन्तिम शनिवार
को हवन पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, कंबल,
उड़द तथा देसी जूता, तेल लगाकर दान करे। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक
हैरानी दूर हो जाती है। झगड़े मे विजय होती है। लोह-मशीनरी कारखाने वालों के
व्यापार में उन्नति होती है।

राहु केतु के व्रत की विधि—शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत शुरू
करना चाहिए। यह व्रत १८ करे। काला वस्त्र धारण करके १८ या ३ बीजमन्त्र की
माला जपे। तदनन्तर एक बर्तन मे जल, दूर्वा और कुशा लेकर पीपल की जड़ में डाले।
भोजन मे मीठा चूरमा, मीठी रोटी, समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ
सेवन करे और यही दान मे भी दे। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड मे
रख दे। इस व्रत से शत्रुभय दूर तथा राजपक्ष मे विजयी मिलती है।

ग्रहों के अरिष्ट-निवृत्यर्थ स्नान-विधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्।
तथा स्नान-विधानेन ग्रह-दोषः प्रणश्यति॥

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़,
देवदारु, मुलेठी, लाल फूल, केसर, गर्म पानी में उबाल कर स्नान करे। सोमवार के
व्रत के दिन खिरनी की जड, श्वेत, चन्दन, सिप्पी पञ्चगव्य उबाल कर स्नान करे।
ऐसे ही मंगल के दिन अनन्त मूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल ये सब उबाल कर,
बुध के दिन गोबर, मधु, चावल, विधारा उबाल कर, गुरु के दिन भारंगी, मुलेठी
श्वेत सरसों, मालती पुष्प, उबाल कर, शुक्र के दिन इलायची, मजीठ तथा शनि के
दिन काले तिल, सौंफ, सुरमा, अमलबेत, सफेद बिनौला उबाल कर स्नान करे। ऐसे ही
राहु केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारु, सरसो तथा लोहबान उबाल
कर स्नान करे, तो ग्रह शान्ति होती है।

नोट—स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो तो जो वस्तु मिले, उनसे ही स्नान करे।

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्तये सामान्यमौषधि स्नानम्

लाजवंती (छुई-मुई), कूट, खिला, कांगनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि
लोध इन औषधियों के जल से सत्तीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीडा नष्ट होती
है तथा पूर्व ही जो दान कह चुके है उनके करने से शान्ति होती है। गुरु, वचन, देवता,
ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम
तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नही करते (श्रीपतिः)॥

शनिविचार— अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्— कल्याणी प्रददाति वा रविसुते
राशौञ्चतुर्थाष्टमे, व्याधि बन्धु-विरोध देशगमनं क्लेश च चिन्ताधिकम्। मृत्यु चैव करोति
चापि मनुजं दुःखादि वह्निर्भय लोह शस्त्रभय सदैवासुख कुर्यादसौ सर्वदा॥१॥ अथ बृहत्-
कल्याणी (साढ़ेसाती) फलम्...राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये
२) शनिः। नानाक्लेशकरोऽतिदुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीड्येत्॥ हानिः स्यान्मरण विदेशगमन
सौख्य च साधारणम्, रामाऋद्धिविनाशन प्रकुरुते तुर्याष्टमे बाऽथवा॥२॥

सप्तधान्य—उड़द १, मूंगी २, गेहूं ३, चने ४, जौ ५, धान्य (तंदुल) ६
कंगनी ७, **अष्टगंध**—अगर, कस्तूरी, कुकुम कर्पूर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन,
देवदारु।

अष्टगंध धूप—अगर, छरीला, जटामासी, कर्पूर-कचरी, गुग्गुल, देवदारु गोघृत,
सफेद चन्दन।

ग्रहगोचराद्यंर्दशा क्रमाद्यैर्ग्रहकृतानिष्ट-फल-शमनार्थं प्रत्येक-ग्रहाणां-दान-पदार्था:													जप संख्या	जपनीय-मंत्रा:	दानसमय	हवन-समिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केशर	मूंग	रक्तगो	रक्तचन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं स: सूर्याय नम:	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कर्पूर	श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं स: चन्द्राय नम:	सन्ध्या	पलास
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केशर	कस्तूरी	रक्तबैल	रक्तचन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं स: भौमाय नम:	घ.२शेषदि.	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कर्पूर	शस्त्र	फल	१६०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं स: बुधाय नम:	घ.५शेषदि.	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१६०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं स: गुरवे नम:	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगंध	दधि	श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं स: शुक्राय नम:	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तैल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्णागौ	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं स: शनये नम:	मध्याह्ने	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल	घोड़ा	शप्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं स: राहवे नम:	रात्री	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तैल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	कंबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं स: केतवे नम:	रात्री	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कर्पूर	मसरी	श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुंथेशवत्	मुन्थेशमंत्र:	मुन्थेशकाले	

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति को कोई ग्रह गोचर से या दशा-अन्तर्दशा में खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार से उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत-विधान ब्रह्मचर्य पूर्वक करने से अशुभ फल निवृत्ति होती है।

रविवार के व्रत की विधि—सूर्य का व्रत रविवार को करे। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठे) रविवार से प्रारम्भ करके वर्ष पर्यन्त या तीस या कम से कम १२ व्रत करें। उस रोज केवल गेहूं की रोटी घी लाल खाण्ड के साथ, या गेहूं का गुड से बना दलिया या हलवा इलायची डाल कर दान करके शेष का भोजन करें। नमक बिलकुल न खावें। भोजन से पूर्व हो सके तो लाल वस्त्र पहनकर ऊपर चक्रोक्त बीज-मन्त्र की पांच माला जप करे। तन्दनतर सूर्य को गन्धाक्षत रक्त पुष्प-दुर्वायुक्त अर्घ्य प्रदान करे। अपने मस्तक में लाल चन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण भोजन करावे। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परणित हो जावेगा। तेजस्विता बढ़ेगी, शरीरिक रोगों की शान्ति भी होगी।

सोमवार के व्रत की विधि-चन्द्रमा का व्रत शुक्ल-पक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार से प्रारम्भ करके ५४ या १० व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके चक्र-निर्मित बीज-मन्त्र की ११ माला या ३ माला जप करे। सफेद फूलों से पूजन करके सफेद चन्दन का तिलक करे। मध्याह्न के समय नमक के बिना दही-चावल घी-खाण्ड या यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करे। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो, उस दिन हवन पूर्णाहुति करके खीर-खाण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन करावे। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ, मानसिक कष्टों की शान्ति होती है, विशेष कार्य सिद्ध्यर्थ भी पूर्ण फलदायक होता है।

मंगलवार के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ या ४५ व्रत करने चाहिए। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लाल वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १, ५ या ७ माला जप करे। नमक सेवन न करे, यह जरूरी है। उस दिन गुड से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करे। और स्वयं भी खावें। गुड़ से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलावें। मंगलवार का व्रत ऋण-हर्ता तथा सन्तति-सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो उस दिन हवन-पूर्णाहुति करके लाल वस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूं तथा नारियल का दान करे। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन करावें।

बुधवार का व्रत—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम बुधवार (जेठे) से प्रारम्भ करे। २१ या ४५ व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की १७ या तीन माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमक-रहित खाण्ड, घी से बने पदार्थ जैसे मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डुओं का दान करे। फिर तीन तुलसीदल गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खावे। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन पूर्णाहुति करके अङ्गहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करे। इस व्रत से विद्या-धन-लाभ, व्यापार मे तरक्की तथा स्वास्थ्य लाभ होता है।

बृहस्पति के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरुवार से आरम्भ करें। तीन वर्ष पर्यन्त या १६ गुरुवार के व्रत करे। उस दिन पीत वस्त्र धारण करके बीज-मन्त्र की ११ या तीन माला जप करे। पीत-पुष्पों से पूजन-अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की बनी घी-खाण्ड से बनी मिठाई लड्डु या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खावें और यही दान करे।जब व्रत का अन्तिम गुरुवार हो तो हवन पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डु भोजन करावे। स्वर्ण पीत वस्त्र, चने की दाल आदि का दान करे।यह व्रत-विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्या-प्रद है,धन की स्थिरता तथा यश-वृद्धिकर है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

प्रारम्भ करके २१ या ५१ व्रत करने चाहिए । हो सके तो यह व्रत आजीवन करें । ... तथा यश-वृद्धिकर है । अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है ।

शुक्र के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ होता है । ३१ या २१ व्रत करे । श्वेत वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की ३ या २१ माला जपे । भोजन मे चावल, खाण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करे । यही पदार्थ यथा-शक्ति संभव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें । जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, हवन पूर्णाहुति के बाद खीर-खण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मण बटुकों को खिलावे । चांदी. श्वेतवस्त्र. खाण्ड, चावल का दान करे । इस व्रत मे स्त्री सुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है ।

शनि के व्रत की विधि—यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम शनिवार से प्रारम्भ करे । व्रत ५१ या १६ करने चाहिए । व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की १९ या तीन माला का जप करे । फिर एक बर्तन मे शुद्ध जल, काले तिल काले फूल या लवंग (लौंग) गङ्गाजल. तथा शक्कर थोडा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुह करके पीपल-वृक्ष की जड़ मे डाल दे । भोजन मे उड़द के आटे का बना पदार्थ. पञ्जीरी. कुछ तेल मे पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दे तथा तैलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वय प्रयोग मे लाना चाहिए । यही पदार्थ दान भी करे । व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, कंबल, उड़द तथा देसी जूता, तेल लगाकर दान करे । इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक हैरानी दूर हो जाती है । झगड़े मे विजय होती है । लोह-मशीनरी कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है ।

राहु केतु के व्रत की विधि—शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से यह व्रत शुरू करना चाहिए । यह व्रत १८ करे । काला वस्त्र धारण करके १८ या ३ बीजमन्त्र की माला जपे । तदनन्तर एक बर्तन मे जल. दूर्वा और कुशा लेकर पीपल की जड़ में डाले । भोजन मे मीठा चूरमा. मीठी रोटी. समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करे और यही दान में भी दे । रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड मे रख दे । इस व्रत से शत्रुभय दूर तथा राजपक्ष मे विजयी मिलती है ।

ग्रहों के अरिष्ट-निवृत्यर्थ स्नान-विधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम् ।
तथा स्नान-विधानेन ग्रह-दोषः प्रणश्यति ॥

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़, देवदारू, मुलेठी. लाल फूल. केसर. गर्म पानी में उबाल कर स्नान करे । सोमबार के व्रत के दिन खिरनी की जड़. श्वेत. चन्दन. सिप्पी पञ्चगव्य उबाल कर स्नान करे । ऐसे ही मंगल के दिन अनन्त मूल. रक्त चन्दन. मौलश्री. लाल फूल ये सब उबाल कर. बुध के दिन गोबर, मधु, चावल. विधारा उबाल कर. गुरु के दिन भारंगी, मुलेठी श्वेत सरसों. मालती पुष्प, उबाल कर. शुक्र के दिन इलायची, मजीठ तथा शनि के दिन काले तिल. सौंफ, सुरमा. अमलबेत. सफेद बिनौला उबाल कर स्नान करे । ऐसे ही राहु केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारु, सरसो तथा लोहबान उबाल कर स्नान करे. तो ग्रह शान्ति होती है ।

नोट—स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो तो जो वस्तु मिले. उनसे ही स्नान करे ।

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्तये सामान्यमौषधि स्नानम्

लाजवंती (छुई-मुई). कूट. खिला, कांगनी. जौ, सरसों, देवदारू, हल्दी. सर्वौषधि लोध इन औषधियों के जल से सत्तीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीडा नष्ट होती है तथा पूर्व ही जो दान कह चुके है उनके करने से शान्ति होती है । गुरु, वचन. देवता. ब्राह्मणों की वंदना. वेदादि श्रवण. साधुओं से बातें. मन की शुद्धता, जप. दान. होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः) ॥

शनिविचार— अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्— कल्याणी प्रददाति वा रविसुते राशेश्चतुर्थाष्टमे. व्याधि बन्धु-विरोध देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम् । मृत्यु चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्निभंय लोहं शस्त्रभयं सदैवासुखं कुर्यादसौ सर्वदा ॥१॥ अथ बृहत्-कल्याणी (साढेसाती) फलम्...राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये २) शनिः। नानाक्लेशकरोऽतिदुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीडयेत् ॥ हानिः स्यान्मरण विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम्. रामाऋद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा ॥२॥

सप्तधान्य—उड़द १. मूंगी २. गेहूं ३. चने ४. जौ ५. धान्य (तंदुल) ६ कगनी ७, **अष्टगंध**—अगर, कस्तूरी. कुंकुम कर्पूर, चन्दन. टोपीदार लौंग. गोरोचन. देवदारु ।

अष्टगंध धूप—अगर, छरीला, जटामासी, कर्पूर-कचरी, गुग्गुल, देवदारु गोघृत. सफेद चन्दन ।

अथ नक्षत्रराशि-ज्ञान-चक्रम्

राशिज्ञाने विशेष—नक्षत्र वा राशि में श और स में, व और ब में कोई भेद नहीं होता तथा जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करे। (संयोग जाक्षरे 'नाम्नि ग्राह्य तत्रादिमाक्षरम्)

राशयः	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्राणि	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू. फा.	उ. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा
प्रथमचरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी	मा	मो	टे	०	पू	पे
द्वितीय च०	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू	मी	टा	०	टो	ष	पो
तृतीय च०	चो	ले	०	उ	वी	०	का	ङ	ह	०	हो	डे	मू	टी	०	पा	ण	०
चतुर्थ च०	ला	लो	०	ए	वू	०	की	छ	०	हि	डा	डो	मे	टू	०	पी	ठ	०

राशयः	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्राणि	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू. षा.	उ. षा.	उ. षा.	अभिजित	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू. भा.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
प्रथमचरण	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय च०	०	रे	तू	०	नी	य	यो	ध	०	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय च०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ च०	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	ची

॥१॥ बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन। ततः पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वर-विशारदैः ॥२॥ प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शब्दितः। तस्य नामाद्यवर्णो या मात्रा स स्वर एव हि ॥३॥ **अथ जन्मराशि-नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते**—विवाहे सर्व मांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ॥४॥ देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके॥ नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥५॥ काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भुवरणे नामराशेः प्रधानता ॥६॥ कुर्यात्षोडश कर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥७॥ विवाहघटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम्। नामभाक्चिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥८॥

अभिजित्-निर्णय—वैश्यप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति-तिथि-भागतोऽभिजित्स्यात् ॥ उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करो। उसको अभि-जित् का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करो। उत्तराषाढ़ा ये तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक-एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे उसके चार भाग करो, उसको श्रवण का १-१ चरण मानो। इस प्रकार को प्रायः सामान्य गणक नहीं जानते, एतदर्थ यहां लिखा गया है।

राशि ज्ञानम्—चूल अ मेषः, इ वो वृषः, क घ ङ छ ह मिथुनम्।
हीडो कर्कः, माटे सिंहः, टो प ण ठ पो कन्या॥
राते तुला तो ना यू वृश्चिक ये धफढभे धनुः।
भोजा खागी मकरः गुशद कुम्भः दीथझञची मीनः॥

उपरोक्त राशि-ज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर लिया है और जहां जो अक्षर बदलता है, वहां वह भी ले लिया गया है। जैसे--मेष में पहला अक्षर 'च' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रह होता है और 'ल' से (ला ली लू ले लो) पांचों का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा चरण) अश्विनी का और चतुर्थ चरण भरणी का ग्रहण हुआ और उसे कृत्तिका के प्रथम चरण इन नौ चरणों की एक राशि मेष हुई। इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें।

टिप्पणी—(१) जज्ञोर्ज्ञः यथा ज्ञानचन्द्रस्य मकर-राशिः। कष-संयोगे क्षः, यथा क्षेमचन्द्रस्य मिथुनराशिः। एवं द्यालारामस्य कुम्भराशिः। (२) गर्भाधानं पुंसवनं सीमन्तोन्नयनं ततः। जातकर्माभिधेयं च निष्क्रम-प्राशने क्रमात्। चूडोपनयनं वेदव्रतानां च चतुष्टयम्। गोदान-मेखलोन्मोक्षौ विवाहः षोडशी क्रिया॥

नोट—चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने से फलितज्ञ को काफी सुभीता रहता है। नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्म के समय चन्द्रमा की राशि एवं नक्षत्र जान लेता है तथा फलित-शास्त्र में काफी महत्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है। इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है। निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भू-स्थित-वनस्पति एवं प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है। ज्वार भाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है। चन्द्रमा का ज्वार-भाटांक [Tide Factor] सूर्य के ज्वार-भाटांक से दुगुना है। चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक-धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर-जगत् [वनस्पति आदि] पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है। अतः जन्म-पत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की परिपाटी फलितज्ञों में है।

नवीन-फलित-वेत्ता जन्म-पत्र की अंग्रेजी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं। इस पद्धति में सायन सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है। चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है। अतः प्राचीन फलित-शास्त्रियों ने जन्म-कालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्म राशि के नाम से कहा है। हमारे ज्योतिष के अनुसार इसी राशि का महत्व है।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सं. २०३५ वि.)

राशि	बैशाख (१३ अप्रैल से १३ मई तक)	ज्येष्ठ (१४ मई से १४ जून तक)	आषाढ़ (१५ जून से १५ जुलाई तक)
मेष	शुभ-यात्रा, वृथा खर्च, सन्तति चिन्ता, लाभ होता रहे, वायु-विकार, विवाद-भय। ता. अप्रै. १५,१६,१७ २५,२६, मई ३,४,१३ अशुभ।	शरीर-कष्ट, शत्रु से भय, सन्तति-चिन्ता, कारोबार ठीक, धर्म में रुचि, मित्र-मिलाप। ता. मई १४,२२, २३,३०,३१, जून १,९,१०,११ अशुभ।	सन्तति की तर्फ से चिन्ता, कारोबार से लाभ अच्छा शरीर कष्ट, मकान आदि की चिन्ता, परिश्रम अधिक। ता. जून १८,१९,२७,२८, जुला. ६,७,८ अशुभ।
वृष	लाभ अच्छा, खर्च भी अधिक, बन्धु-चिन्ता, इधर उधर की दौड़ धूप, शत्रुभय। ता. अप्रै. ८,९,१८,१९, २७,२८, मई ५,६,७ अशुभ।	बन्धु-चिन्ता, कोष में कमी, कारोबार मध्यम, स्वास्थ्य कमजोर, नई कठिनाई, निजी जन विमुख हों। ता. मई १५,१६,१७,२४,२५, जून २,३,१२,१३ अशुभ।	पुत्र-स्त्री की चिन्ता, अकारण-विवाद, कारोबार कमजोर, अपमान-भय, मित्र-बन्धु से सन्तोष, अकस्मात् लाभ भी हो। ता. जून २०,२१,२९,३०, जु. ९,१० अशुभ।
मिथुन	स्वास्थ्य अच्छा, अचानक व्यय बढ़े, मान बढ़े, कुटुम्ब सुख, मस्तक-पीड़ा; यात्रा भी हो। ता. अप्रै. १०, ११,१२,२०,२१,२२,२९,३०, मई ८, ९ अशुभ।	लाभ अच्छा, उत्तम पुरुषों से मिलाप, नए कारोबार का विचार, मासान्त में चिन्ता, दुष्ट भय, शरीर दुर्बल हो। ता. मई १८,१९,२६,२७, जून ४,५,६,१४ अशुभ।	चिन्ताएं दूर, कार्य सफलता की आशा, बन्धु कष्ट कारोबार ठीक, घर में जल व अग्नि से भय। ता. जून १५,२२,२३, जुलाई १,२,३,११,१२,१३ अशुभ।
कर्क	शत्रु-भय, शरीर-कष्ट, किसी समाचार से शोक, लाभ होकर पीछे हानि, बनते काम में विघ्न। ता. अप्रै. १३,१४,२३,२४, मई १,२,१०,११,१२ अशुभ।	लाभ में कमी, विवाद भय, पशु-पीड़ा, धन व मान की चिन्ता, रक्त रोग से कष्ट, जोखिम के कामों से अलग रहें। ता. मई २०,२१,२८,२९, जून ७,८ अशुभ।	कारोबार में हानि, नेत्र व मस्तक में पीड़ा, महापुरुष दर्शन, वृथा झगड़ा, चोर-ठग भय, लाभ कम। ता. जून १६,१७,२४,२५,२६, जुला. ४,५,१४,१५ अशुभ।
सिंह	चित्त में अशान्ति, मित्र से सन्तोष, वायु-विकार, कारोबार मध्यम, नजदीकी-यात्रा अशुभ-विचार। ता. अप्रै. १५,१६,१७,२५,२६, मई ३,४,१३ अशुभ।	स्वास्थ्य मध्यम शोक समाचार से कष्ट, लाभ कम खर्च अधिक, स्त्री-चिन्ता, शत्रु-भय, सन्तति सुख। ता. मई १४,२२,२३,३०,३१, जून १,९,१०,११ अशुभ।	काम में विघ्न, रक्त-पित्त-पीड़ा, बन्धु जनों से मिलाप, धर्म में प्रवृत्ति, वाह्य-भय, खर्च अधिक हो। ता. जून १८,१९,२७,२८, जुला. ६,७,८ अशुभ।
कन्या	राजकीय-मामलों से परेशानी, स्वास्थ्य में बिगाड़, लाभ होकर हानि भय। ता. अप्रै. ८,९,१८,१९,२७, २८, मई, ५,६,७ अशुभ।	कोष में कमी का अनुभव, बन्धु-चिन्ता, कमर तोड़ खर्च, दुष्टों से सावधान, यात्रा-कष्ट। ता. मई १५,१६ १७,२४,२५, जून २,३,१२,१३ अशुभ।	घरेलू उलझनें बढ़ें, विवाद-भय, लाभ होकर फिर हाथ से निकल जाए, चित्त-अशान्त, रोग-भय। ता. जून २०,२१,२९,३०, जुला. ९,१० अशुभ।
तुला	शोक, अतिभय, शुभ में व्यय, प्रभु-चिन्तन, कारोबार कुछ ठीक, पशु लाभ, वृथा विवाद। ता. अप्रै. १०,११, १२,२०,२१,२२,२९,३०, मई ८, ९ अशुभ।	नए कार्य का आरम्भ, दौड़ धूप विशेष, बन्धु व मित्र-मिलाप, कारोबार ठीक। ता. मई १८,१९,२६, २७, जून ४,५,६,१४ अशुभ।	मास-फल शुभ है, इज्जत बढ़े, लाभ मध्यम, कार्यों में विलम्ब, राज पक्ष से विजय, सन्त समागम हो। ता. जून १५,२२,२३, जुला. १,२,३,११,१२,१३ अशुभ।
वृश्चिक	स्वास्थ्य में बिगाड़, नए उद्योग का विचार, स्त्री-पुत्रादि द्वारा विशेष खर्च, दुष्ट से भय, बन्धु-विरोध। ता. १३,१४,२३,२४, मई १,२,१०,११,१२ अशुभ।	लेन देन की चिन्ता, शत्रु हानि, शुभ में व्यय, स्वास्थ्य में बिगाड़, बन्धु से विरोध, लाभ अच्छा। ता. मई २० २१,२८,२९ जून ७,८ अशुभ।	नई आपत्ति, कष्ट, शारीरिक-निर्बलता हो, कारोबार की चिन्ता, लड़ाई झगड़े, लाभ मध्यम रहे। ता. जून १६ १७,२४,२५,२६, जुला. ४,५,१४,१५ अशुभ।
धनु	कारोबार ठीक, स्त्री आदि से सन्तोष, अशुभ विचार, अचानक-यात्रा, ठग-चोर-भय। ता. अप्रै. १५,१६,१७ २५,२६, मई ३,४,१३ अशुभ।	शत्रु-चिन्ता, अशुभ-विचार, वाहन-भय, कारोबार मध्यम, मित्र बन्धु के लिए खर्च हो। ता. मई १४,२२ २३,३०,३१, जून १,९,१०,११ अशुभ।	स्त्री व सन्तति-चिन्ता, अचानक-यात्रा, स्थान-लाभ, कारोबार यथावत् ठीक रहे, शत्रु-बाधा, रक्त-पित्त-पीड़ा ता. जून १८,१९,२७,२८, जुला. ६,७,८ अशुभ।
मकर	बन्धु-चिन्ता, कारोबार में गड़बड़, राज्य से चिन्ता, खर्च अधिक, रोग-भय, धन-हानि। ता. अप्रै. ८,९,१८ १९,२७,२८, मई ५,६,७ अशुभ।	घरेलू-जीवन कष्टमय, राज पक्ष से भय-चिन्ता, दुष्टों से सावधान, कारोबार ढीला। ता. मई १५,१६, १७,२४,२५, जून २,३,१२,१३ अशुभ।	परिश्रम अधिक, लाभ कम, विवाद भय, प्रेमियों से मन-मुटाव, काम में विघ्न, जायदाद-विषयक चिन्ता, पैसे की तंगी। ता. जून २०,२१,२९,३०, जुला ९,१० अशुभ।
कुम्भ	शत्रु-निरुत्साह, शुभ में व्यय, रुका कार्य सिद्ध हो, कारोबार ठीक, गृह में सन्तोष। ता. अप्रै. १०,११,१२ २०,२१,२२,२९,३०, मई ८,९ अशुभ।	विशेष खर्च, लाभ मध्यम, मित्र-मिलाप, स्वास्थ्य कमजोर, गृह-मकान की चिन्ता, यात्रा में कष्ट। ता. मई १८,१९,२६,२७, जून ४,५,६,१४ अशुभ।	स्त्री एवं पुत्र द्वारा खर्च तथा चिन्ता, उदर व मस्तक में पीड़ा, लेन देन का विवाद, कारोबार ठीक। ता जून. १५,२२,२३, जुला. १,२,३,११,१२,१३ अशुभ।
मीन	अचानक धन-हानि, रोग एवं शत्रु-भय व्यापे, मास के उत्तरार्ध में लाभ, कार्यान्तर का विचार। ता. अप्रै. १३,१४,२३,२४, मई १,२,१०,११,१२ अशुभ।	शत्रु-हानि, लाभ से खर्च-विशेष, आत्मीय-जन की चिन्ता, राज-पक्ष से भय, वृथा विवाद, उदर विकार। ता. मई २०,२१,२८,२९, जून ७,८ अशुभ।	पड़ौसी व मित्रों से वैमनस्य, अचानक यात्रा, लाभ मध्यम-बड़े व्यापारादि में हानि-भय, चित्त-अशान्त। स्वास्थ्य में गड़बड़ी। जून १६,१७,२४,२५,२६, जु. ४,५,१४,१५ अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सं. २०३५ वि.)

राशि	श्रावण (१६ जुलाई से १५ अगस्त तक)	भाद्रपद (१६ अगस्त से १५ सितम्बर तक)	आश्विन (१६ सितम्बर से १६ अक्तूबर तक)
मेष	अकारण क्रोध, रक्त पित्त पीड़ा, कारोबार-मध्यम, विवाद-भय, शुभ में प्रवृत्ति, स्त्री से सन्तोष। ता. जुला. १६,१७,२४,२५, अग ३,४,१२ १३ अशुभ।	अपने व्यवसाय से लाभ, जल से भय, लेन देन की चिन्ता, शुभ कार्य की योजना, शत्रु-पीड़ा। ता. अग. २१,२२,३०,३१सितम्बर ८,९,१० अशुभ।	कारोबार की चिन्ता, लाभ से खर्च अधिक, कार्यों में रुकावट, पुत्रादि को कष्ट, मित्र मिलाप। ता. सितम्बर १७,१८,२६,२७,२८, अक्तू. ६,७,१४,१५ अशुभ।
वृष	नए अमफल विचार, मानसिक-व्यथा, कार्यान्तर व स्थानान्तर का योग है, लाभ में विघ्न। ता. जुला.१८, १९,२६,२७,२८, अग. ५,६,७,१४,१५ अशुभ।	शत्रु-भय, बन्धु-विरोध, वृथा-विवाद, किसी बनते कार्य में विघ्न, मन अशान्त, हानिभय। ता. अग. २३, २४, सितम्बर १,२,३,११,१२ अशुभ।	बन्धु-विरोध, कुटुम्ब में वृद्धि. विवाद में हानि, स्त्री द्वारा खर्च, व्यवसाय में गड़बड़ी, चित्त अशान्त। ता सितम्बर १९,२०,२९,३० अक्तू. ८,९,१६ अशुभ।
मिथुन	मित्र-बन्धुओं से प्रसन्नता, धर्म कार्य में मन, लाभ अच्छा, मासान्त में वायु-विकार, बड़े लोगों से मान मिले। ता. जुला. २०,२१,२९,३० अग. ८,९ अशुभ।	घरेलू जीवन सुखमय,लाभ होता रहे,शत्रुभय किंवा हानि सम्भव,शुभ में खर्च, धार्मिक यात्रा का सुख,नए काम की चिन्ता,ता.अग.१६,१७,२५,२६ सितं. ४,५,१३,१४अशुभ	सहयोगी से भय, वायु-विकार, कारोबार ठीक,किसी कार्यार्थ दौड़धूप. चिन्तित-कार्य सफल। ता. सितम्बर २१,२२,२३, अक्तू १,२,१०,११ अशुभ।
कर्क	धन-मकान आदि की चिन्ता जल भय, रक्त-पित्त पीड़ा, खर्च अधिक, घरेलू झंझटों से हैरानी, लाभ कम। ता. जुला. २२,२३,३१, अग. १,२,१०,११ अशुभ।	लाभ के चास हाथ से निकलें. क्रोध दुःख का कारण बने, मित्र-बन्धु मिलाप,पैर व छाती में पीड़ा। ता.अग. १८,१९,२०,२७,२८,२९ सितं. ६,७,१५ अशुभ।	पैसे की तंगी, लाभ मध्यम, बन्धु जनों में मतभेद, सेहत बिगड़े, जमीन-मकान पर खर्च, सवारी से भय। ता.सित.१६,२४,२५,अक्तू. ३,४,५,१२,१३ अशुभ।
सिंह	आलस्य-वृद्धि विशेष-परिश्रम से कुछ लाभ,अकस्मात् तंदरुस्ती बिगड़े, शत्रु-भय, कारोबार की चिन्ता। ता. जुला. १६,१७,२४,२५, अग. ३,४,१२,१३ अशुभ।	खर्च ज्यादा, लाभ में विघ्न,चोट भय,अनेक उलझनों से हैरानी, यात्रा का प्रसंग बने। ता.अग. २१,२२,३०, ३१, सितम्बर ८,९,१० अशुभ।	राजनैतिक-कार्यों में उलझनें, निर्मूल विवाद, किसी की सहायता से लाभ,मस्तक-विकार,चिन्ताप्रद समाचार। ता.सित. १७,१८ २६,२७,२८अक्तू.६,७,१४,१५अशुभ।
कन्या	गुप्त-चिन्ता, रोग-भय, पैसे की तंगी, खर्च अधिक, धर्म में रुचि, विवाद से बचें। ता. जुला. १८,१९,२६, २७,२८, अग. ५,६,७,१४,१५ अशुभ।	आर्थिक स्थिति खराब, शत्रु तथा राज-भय, विशेष परिश्रम वाले काम करने पड़ें,सट्टे आदि में हानि। ता. अग.२३,२४, सितम्बर १,२,३,११,१२ अशुभ।	लाभ के कुछ मौके मिलें,नेत्र व छाती में पीड़ा, बन्धु चिन्ता, धार्मिक-स्थानों व सत्पुरुषों के दर्शन, विवाद से हानि।ता.सित.१९,२०,२९,३०अक्तू.८,९,१६अशुभ।
तुला	कारोबार से लाभ, बन्धुकष्ट, वृथा खर्च,उदर विकार जल से भय, सन्तति चिन्ता। ता. जुला. २०,२१,२९, ३०, अग. ८,९ अशुभ।	सावधानी से काम करें, लाभ होगा, रोग-शोक भय भी हो,बड़े व्यक्ति से मिलाप,शुभ में प्रवृत्ति,प्रिय-मिलन। ता.अग.१६,१७,२५,२६,सित.४,५,१३,१४ अशुभ।	नए कार्य की योजना, लाभ के मौके बनते रहें, वायु पीड़ा, शुभ में प्रवृत्ति, स्वास्थ्य-बिगड़े। ता. सितम्बर २१,२२,२३ अक्तू. १,२,१०,११ अशुभ।
वृश्चिक	लाभ-खर्च समान, कुटुम्ब-सुख, बड़े अधिकारी से भय नए काम का विचार, उदर विकार। ता. जुला. २२ २३,३१, अग. १,२,१०,११ अशुभ।	लाभ कई प्रकार से हो, प्रिय जन मिलाप, मासारम्भ में घरेलू उलझनों से हैरानी,शुभ में प्रवृत्ति,उदर-विकार। ता.अग.१८,१९,२०,२७,२८,२९, सित.६,७,१५ अशुभ।	मानवृद्धि, लाभ यथावत् होता रहे, वंश-वृद्धि,प्रिय-व्यक्ति के लिए खर्च, मासान्त में अचानक चिन्ता, पशु-सुख। ता.सित.१६,२४,२५,अक्तू.३,४,५,१२,१३अशुभ।
धनु	मन अशान्त, लाभ का मौका बने, समीप की यात्रा, प्रिय जन की चिन्ता, कुटुम्ब में वृद्धि। ता. जुला. १६, १७,२४,२५, अग. ३,४,१२,१३ अशुभ।	लाभ-अच्छा,नए कार्य की योजना,हर्ष-प्रद समाचार मिले, मस्तक-पीड़ा, समीप की यात्रा हो। ता.अग.२१, २२,३०,३१, सितम्बर ८,९,१० अशुभ।	व्यवसाय में वृद्धि, चिन्ता से शनैः शनैः मुक्ति, कार्य सफल, पशु-सुख, शरीर-पीड़ा,भय। ता.सित. १७,१८, २६,२७,२८, अक्तू. ६,७,१४,१५ अशुभ।
मकर	निजी व्यवसाय की चिन्ता, गृह-कलह, हैरानी, स्थानान्तर व कार्यान्तर का विचार, जीव जन्तु से भय। ता.जुला.१८,१९,२६,२७,२८अग.५,६ ७,१४,१५अशुभ।	स्त्री व पुत्र से मन-मुटाव, लाभ होता रहे, खर्च भी विशेष,सट्टे आदि से बचें,हानिभय,गुप्त शत्रु से सावधान। ता. अग. २३,२४, सितम्बर १,२,३,११,१२ अशुभ।	प्रियजन चिन्ता, मिलता लाभ हाथ से जाता रहे, उदर विकार, बनते कार्य में विघ्न, मासान्त में लाभ। ता. सित १९,२०,२९,३०, अक्तू. ८,९,१६ अशुभ।
कुम्भ	स्त्री व सन्तति की चिन्ता, कारोबार मध्यम, अपरिचित व्यक्ति से खतरा, पैर व उदर में पीड़ा, चोर-भय। ता. जुला.२०,२१,२९,३०, अग. ८,९ अशुभ।	अचानक चिन्ता, लाभ मध्यम, किसी काम की सिद्धि से खुशी,जीव-जन्तु से भय,व्यर्थ भ्रमण,स्त्री द्वारा खर्च। ता. अग.१६,१७,२५,२६ सित.४,५,१३,१४ अशुभ।	निजी जन की ओर से खुशी, लाभ अच्छा, शुभ में प्रवृत्ति, स्त्री-पुत्र द्वारा खर्च, व्यवसाय में वृद्धि। ता सित. २१,२२,२३ अक्तू. १,२,१०,११ अशुभ।
मीन	राज-पक्ष शुभ सन्तति द्वारा खर्च अधिक, कोई काम सिद्ध हो, कारोबार कुछ ठीक, मित्र-मिलाप। ता.जुला. २२,२३,३१, अग. १,२,१०,११ अशुभ।	अपमान-भय, शरीर-दुर्बल, कोष में कमी, लेन देन का विवाद, लाभ कम, उदर विकार, गृह कलह। ता. अग.१८,१९,२०,२७,२८,२९,सित.६,७,१५ अशुभ।	घरेलू सुख, धन लाभ, वृथा व्यय वायु-पीड़ा, वृथा यात्रा। ता. सितम्बर१६,२४,२५अक्तू. ३,४,५,१२,१३ अशुभ।

२२,२३,३१, अग. १,२,१०,११ अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सं. २०३५ वि.)

राशि	कार्तिक (१७ अक्तूबर से १५ नवम्बर तक)	मार्गशीर्ष (१६ नवम्बर से १४ दिसम्बर तक)	पौष (१५ दिस. १९७८ से १३ जन. १९७९ ई. तक)
मेष	सवर्ग या मित्र से मन खिन्न,सन्तति-चिन्ता,कारोबार मे विघ्न, अभीष्ट कार्य बिगड़े ,राजपक्ष से चिन्ता । ता. अक्तू.२३,२४,२५. नवम्बर २,३,१०,११,१२ अशुभ।	परिश्रम से लाभ,वायु-कफ विकार, स्त्री से सन्तोष, सहयोगी से मतभेद, शत्रुनाश । ता. नवम्बर २०,२१. २९,३०, दिस. ८,९ अशुभ।	कारोबार मध्यम,उचित खर्च करते हुए भी तंगी,घर में फूट से कष्ट,पुत्र-स्त्री सुख में बाधा,मन-अशान्त।ता. दिस १७,१८,१९,२७,२८,जन.(१९७९) ४,५,१३अशुभ।
वृष	शत्रुओं से भय,कारोबार में उलझन,तंगी का अनुभव,स्त्री व पुत्र से हैरानी,प्रिय-वियोग से दुःख,मास के उत्तरार्ध में लाभ,ता.अक्तू.१७,१८,२६,२७,नव.४,५,१३,१४अशुभ।	राजपक्ष से भय, कारोबार में उलट फेर, घर में रोग के कारण व्यय हो,मित्र-बन्धु के सहयोग से शान्ति,सुख लाभ । ता. नव.२२,२३,२४, दिस.१,२,१०,११अशुभ।	बुद्धिभ्रम, रोगभय,स्वजनों के व्यवहार से दुःख,स्व-व्यवसाय में गड़बड़ी, शत्रुवृद्धि । ता. दिस. २०,२१, २९,३०, जन. (१९७९) ६,७ अशुभ।
मिथुन	लाभ होते हुए भी विशेष खर्च होने से तंगी, शुभ में प्रवृत्ति,सम्पत्ति-चिन्ता,परस्पर मतभेद,पुत्रादि से विरोध, ता. अक्तू.१९,२०,२८,२९,३० नव. ६,७,१५ अशुभ।	आय में वृद्धि होगी, हौसला बढ़ेगा, नए काम की योजना, कठिन समस्या सुलझे, सत्संग लाभ । ता. नव. १६,२५,२६, दिस. ३,४,१२,१३,१४ अशुभ।	मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, लाभ भी अच्छा, सन्तति से खुशी, पशु सुख, शरीर में कुछ रोग । ता. दिस.२२,२३ ३१, जन. (१९७९) १,८,९,१० अशुभ।
कर्क	लाभ होता रहे पैसा स्थिर न रहे, बन्धु चिन्ता,रोग भय, अचानक यात्रा. विश्वासघात भय । ता. अक्तू.१६ २४,२५,नवम्बर ३,४,५,१२,१३ अशुभ।	लाभ से खर्च अधिक,अचानक शोक या चिन्ता का कारण बने, बन्धु सहयोग मिले,गुप्त-शत्रुओं से हानि,अजनबी से सावधान।ता.नव.१७,१८,१९,२७,२८दिस.५,६,७अशुभ।	शीत रोग भय, कारोबार ढीला, महापुरुषों से धर्म लाभ, सन्तति की ओर से चिन्ता। ता. दिस. १५, १६, २४,२५,२६,जन.(१९७९)२,३,११,१२ अशुभ।
सिंह	लाभ होकर हानि,बन्धु-सुख,व्यवसाय में रद्दो बदल, विलासिता में मन लगे,खानपान में सावधान।ता.अक्तू. २३,२४,२५,नवम्बर २,३,१०,११,१२ अशुभ।	आय में कमी से चिन्ता,यात्रा प्रसंग,शत्रुओं से सावधान, शिर व उदर में पीड़ा, महापुरुषों से मिलाप, राजपक्ष अशुभ । ता. नव.२०,२१,२९,३०, दिस. ८,९ अशुभ।	मान-प्रतिष्ठा ठीक,कारोबार से लाभ मध्यम,स्वास्थ्य में बिगाड़,नए काम की योजना,क्रोध से घर में अशान्ति। ता.दिस.१७,१८,१९,२७,२८,जन.('७९)४,५,१३अशुभ।
कन्या	यह मास संघर्षमय रहेगा लाभ कम, व्यय अधिक, गुप्त किंवा प्रत्यक्ष शत्रु भी परेशान करेंगे । ता. अक्तू. १७,१८,२६,२७, नवम्बर ४,५,१३,१४ अशुभ।	बनते काम बिगड़ें,कारोबार में उलझन,मित्र विरोध स्थानान्तरण संभव,शत्रुभय । ता. नवम्बर २२,२३,२४, दिस. १,२,१०,११ अशुभ।	बनते काम में विघ्न,लाभ के साथ हानि योग भी है अतः सावधान, घरेलू झंझटों से हैरानी । ता.दिस. २०, २१,२९,३०, जन.(१९७९)६,७ अशुभ।
तुला	बौद्धिक उलझनें बढ़ें, कई प्रकार से लाभ, शुभ यात्रा हो, मित्र-मिलाप, स्वास्थ्य खराब हो । ता. अक्तू. १९, २०,२८,२९,३०, नवम्बर ६,७,१५ अशुभ।	किसी जीव से खुशी,कारोबार में व्यस्तता,शत्रु निरुत्साह हों,स्वास्थ्य ठीक,लाभ अच्छा,स्त्री द्वारा खर्च । ता.नव. १६,२५,२६, दिस. ३,४,१२,१३,१४ अशुभ।	सुख यश वृद्धि, शत्रु नाश,बड़े लोगों से मिलाप,कार्य सफल,व्यवसाय-वृद्धि, लाभ ठीक । ता. दिस. २२, २३, ३१, जन. (१९७९) १,८,९,१० अशुभ।
वृश्चिक	स्वास्थ्य मध्यम, शत्रुनाश, लाभ अच्छा, स्त्री पुत्रादि द्वारा खर्च, किसी समाचार से चिन्ता-शोक हो । ता. अक्तू.१६,२४,२५ नवम्बर ३,४,५,१२,१३ अशुभ।	कारोबार में सफलता, उत्साह बढ़े, घरेलू झंझटों से हैरानी, वायु-कफ विकार,पुत्रादि द्वारा खर्च । ता. नव. १७,१८,१९,२७,२८, दिस. ५,६,७ अशुभ।	कुटुम्ब से सुख मिले, शत्रु हानि, मानवृद्धि, लाभ अच्छा, रोग चोट भय । ता. दिस. १५,१६,२४,२५, २६, जन. (१९७९)२,३,११,१२ अशुभ।
धनु	लाभ उत्तम, वृद्ध व बच्चों को कष्ट, गुप्त शत्रुओं से सावधान, नई योजनाओं में सफलता । ता. अक्तू. २३, २४,२५, नवम्बर २,३,१०,११,१२ अशुभ।	विरोधी शान्त रहें, अशुभ समाचार, मनखिन्न, धर्म में रुचि, हृदय व टांग में कष्ट, लाभ होता रहेगा । ता. नव. २०,२१,२९,३०, दिस. ८,९ अशुभ।	लाभ होता रहे, राजकीय मामलों में उलझनें,सन्तति चिन्ता, सट्टे आदि से हानि भय है, वायु-कफ पीड़ा।ता. दिस १७,१८,१९,२७,२८,जन.(१९७९)४,५,१३अशुभ।
मकर	अपमान-भय, धन का दुरुपयोग,स्त्री से सुख,चिन्तित काम में विघ्न, शत्रुभय । ता. अक्तू. १७,१८,२६,२७, नवम्बर ४,५,१३,१४ अशुभ।	लोकापवाद,असफल विचार,लाभ कम,मन में चिन्ता उदासी एवं निराशा रहे, बन्धुओं से विरोध,गुरुजनों से शान्ति लाभ।ता.नव.२२,२३,२४दिस.१,२,१०,११अशुभ	आशा से लाभ कम, राजकीय मामलों में उलझनें, चिन्तित योजनाएं अपूर्ण, पुत्र-स्त्री से मतभेद । ता.दिस. २०,२१,२९,३०, जन. (१९७९) ६,७ अशुभ।
कुम्भ	रुके हुए काम बनें, शत्रु निरुत्साह हों, किसी मंगल कार्य की योजना,बन्धु चिन्ता,मित्र मिलाप । ता. अक्तू. १९,२०,२८,२९,३०, नवम्बर ६,७,१५ अशुभ।	लाभ मध्यम,खर्च में वृद्धि,चापलूसों से हानि,सहयोगियों से संघर्ष,वृथा विवाद,मकानादि के सुधार की चिन्ता । ता. नव.१६,२५,२६, दिस. ३,४,१२,१३,१४ अशुभ।	मित्र-बन्धुओं से खुशी, धनलाभ यथावत् होता रहे, नीच से अपमान भय,ठगों से सावधान,छाती व टांग में कष्ट ।ता.दिस.२२,२३,३१,जन.('७९)१,८,९,१०अशुभ।
मीन	खर्च अधिक, लेन देन की चिन्ता, दौड़-धूप ज्यादा, कारोबार यथावत् चले, वृद्धजन-कष्ट । ता. अक्तू. १६, २४,२५, नवम्बर ३,४,५,१२,१३ अशुभ।	नीच व्यक्ति से हानिभय, अशुभ घटनाओं से कष्ट, प्रिय व्यक्ति की चिन्ता,वृथा खर्च, सज्जन के सहयोग से लाभ । ता. नव.१७,१८,१९,२७,२८,दिस.५,६,७अशुभ।	धर्म में रुचि, वायु पीड़ा, कारोबार मध्यम,विश्वास-घात भय, काम में विघ्न, अशुभ समाचार से दुःख । ता. दिस.१५,१६,२४,२५,२६जन.('७९)२,३,११,१२अशुभ।

बारह राशियों का मासिक फलादेश (सं. २०३५ वि.)

राशि	माघ (१४ जनवरी १९७९ से ११ फरवरी तक)	फाल्गुन (१२ फरवरी से १३ मार्च तक)	चैत्र (१४ मार्च से १३ अप्रैल तक)
मेष	विलासिता में खर्च, शत्रुभय, निजी कारोबार कमजोर, छाती व पैर में कष्ट, मासान्त में लाभ। ता जन. १४. १५, २३, २४, ३१, फर. १, १०, ११ अशुभ।	सुख शान्ति लाभ, कारोबार में वृद्धि, विवाद भय, राजपक्ष शुभ। ता. फर. १९, २०, २१, २८, मार्च १, ९, १० अशुभ।	कारोबार में सुधार, शरीर में वायु विकार, मन अशान्त, शत्रुभय, सन्तति चिन्ता। ता. मार्च १९, २०, २७, २८, अप्रैल ५, ६, ७ अशुभ।
वृष	बन्धु चिन्ता, विवाद से हानि, स्वास्थ्य खराब, व्यय अधिक कारोबार में गड़बड़ी लाभ कम। ता जन. १६, १७, २५, २६, फर. २, ३, ४ अशुभ।	लाभ में रुकावट, व्यय खर्च, यात्रा में हानि, स्थानान्तर कार्यान्तर का विचार, स्वास्थ्य में सुधार। ता. फर. १२ १३, १४, २२, २३, मार्च २, ३, ११, १२, १३ अशुभ।	मित्र बन्धु विरोध, बुद्धि भ्रम, राज तथा शत्रु पक्ष से भय, स्त्री से संतोष, लाभ मध्यम। ता. मार्च १३, २१, २२, २९, ३०, अप्रैल ८, ९, अशुभ।
मिथुन	रोजगार में उन्नति, मान वृद्धि, विद्या बुद्धि-विकास, स्त्री-पुत्रादि, प्रिय-जनों का सुख। ता. जन. १८, १९, २०, २७, २८, फर. ५, ६ अशुभ।	हौसला बढ़े, शत्रु नतमस्तक हों, लाभ अच्छा, अकस्मात् चिन्ता का कारण बने, मित्र मिलाप। ता. फर. १५, १६, २४, २५, मार्च ४, ५ अशुभ।	व्यवसाय में लाभ, नये काम का विचार, ठग-चोर भय, पैर व छाती में कष्ट, मित्र बन्धु सुख। ता. मार्च १४, १५, २३, २४, ३१, अप्रैल १, २, १०, ११ अशुभ।
कर्क	लाभ में विघ्न, उत्साह में कमी, निराशा, कष्ट, मास के उत्तरार्ध में लाभ, आवश्यक कार्यों में व्यय। जन. २१, २२, २९, ३०, फर. ७, ८, ९ अशुभ।	शत्रु वृद्धि, नेत्र-शिर पीड़ा, कमरतोड़ खर्च, राजभय, दौड़-धूप विशेष, मित्र बन्धु भी विमुख। ता. फर. १७, १८, २६, २७, मार्च ६, ७, ८ अशुभ।	लाभ कम, खर्च अधिक, राजशत्रु भय, ऋण लेने की नौबत आवे, स्वास्थ्य बिगड़े, पाप बुद्धि हो। ता. मार्च १६, १७, १८, २५, २६, अप्रैल ३, ४, १३, १४ अशुभ।
सिंह	अशुभ विचार, स्वास्थ्य में खराबी, मित्र मिलाप, व्यापार से लाभ कम, अचानक चिन्ता का कारण बने। ता. जन. १४, १५, २३, २४, ३१, फर. १, १०, ११ अशुभ।	वृथा यात्रा, मान हानि, सन्तति सुख, वायु विकार, धन लाभ की चिन्ता। ता. फर. १९, २०, २१, २८, मार्च १, ९, १० अशुभ।	दुष्ट से विवाद, रोग भय, वृथा खर्च, योजना असफल, लाभ में विघ्न, दौड़ धूप, बन्धु चिन्ता। ता. मार्च १९, २०, २७, २८, अप्रैल ५, ६, ७ अशुभ।
कन्या	स्त्री व सन्तान कष्ट, वृथा व्यय, उन्नत्यर्थ प्रयत्न असफल, विवाद भय, शत्रुओं से सावधान, लाभ में विघ्न। ता जन. १६, १७, २५, २६, फर. २, ३, ४ अशुभ।	लाभ होकर पुनः हानि, रोग भय, नई समस्या से घबराहट, शीघ्र धनी बनाने वाली योजना से दूर रहें। ता. फर. १२, १३, १४, २२, २३ मा. २, ३, ११, १२, १३ अशुभ।	कलह विवाद का भय, कुछ लाभ हो, सट्टा तथा पशु से हानि, बनते काम बिगड़ें। ता. मार्च १३, २१, २२, २९, ३०, अप्रैल ८, ९, अशुभ।
तुला	कारोबार ठीक, आवश्यक वस्तुओं पर विशेष व्यय, राजपक्ष से विजय, शत्रु नाश, स्वास्थ्य मध्यम। ता. जन. १८, १९, २०, २७, २८, फर. ५, ६ अशुभ।	सफर से कष्ट, लाभ होता रहे, अकस्मात् शत्रु-भय, नई योजना से सुख शान्ति। ता. फर. १५, १६, २४, २५, मार्च ४, ५ अशुभ।	लाभ होता रहे, चिन्तित कार्य सफल, सुख व योजना का विचार, शुभ यात्रा, सन्तति चिन्ता। ता. मार्च १४, १५, २३, २४, ३१, अप्रैल १, २, १०, ११ अशुभ।
वृश्चिक	लाभ ठीक, खर्च भी विशेष हो, सांसारिक सुख भी यथावत्, गुप्त शत्रु भय, स्वास्थ्य अच्छा। ता. जन. २१, २२, २९, ३०, फर. ७, ८, ९ अशुभ।	सुख एवं मान वृद्धि, मिलाप से वैमनस्य, चिन्तित काम बनने की आशा, कारोबार ठीक, गुप्त शत्रु भय। ता. फर. १७, १८, २६, २७, मार्च ६, ७, ८ अशुभ।	कारोबार ठीक, लाभ अच्छा, मान वृद्धि, वायु पीड़ा, दुष्ट से विवाद भय, सन्तति सुख। ता. मार्च १६, १७, १८, २५, २६, अप्रैल ३, ४, १३, १४ अशुभ।
धनु	कारोबार के नये विचार, बाल व वृद्धों की चिन्ता, लाभ ठीक, धर्म में प्रवृत्ति, छाती व शिर में पीड़ा। ता. जन. १४, १५, २३, २४, ३१, फर. १, १०, ११ अशुभ।	सुख समृद्धि, नये मार्गों से लाभ, शत्रु नाश, वायु विकार, अशुभ स्वप्न, पाप कर्म में मन। ता. फर. १९, २०, २१, २८, मार्च १, ९, १० अशुभ।	सुख वृद्धि, लाभ होता रहे, समीप की यात्रा, अनेक संकल्प विकल्पों से मन डोले। ता. मार्च १९, २०, २७, २८, अप्रै. ५, ६, ७ अशुभ।
मकर	गृह कलह से अशांति, जोखिम काम न करें, व्यवसाय से लाभ कम, सत्संग लाभ, खर्च से हैरानी, राजपक्ष से भय। जन. १६, १७, २५, २६, फर. २, ३, ४ अशुभ।	मित्रों के सहयोग से लाभ, नीच पुरुष से भय, घरेलू समस्याओं से मन खिन्न, इधर उधर की दौड़ धूप। ता. फर. १२, १३, १४, २२, २३, मा. २, ३, ११, १२, १३ अशुभ।	कमर-तोड़ खर्च, संघर्ष व चिन्ताओं में इधर-उधर भटकने में समय गुजरे, मासान्त में लाभ। ता. मार्च १३, २१, २२, २९, ३०, अप्रैल ८, ९ अशुभ।
कुम्भ	स्वास्थ्य में अचानक बिगाड़, लाभ का मौका अच्छा बने, अशुभ समाचार से चिन्ता, यात्रा से कष्ट। ता. जन. १८, १९, २०, २७, २८, फर. ५, ६ अशुभ।	रोग-शोक भय, लाभ होता रहे, नये काम का विचार, अकस्मात खर्च अधिक करना पड़े। दुःख स्वप्न चिन्ता। ता. फर. १५, १६, २४, २५, मार्च ४, ५ अशुभ।	आशा की किरण जागे, लाभ मध्यम, रोग-भय पीड़ा, मित्र सुख, यात्रा कष्ट। ता. मार्च १४, १५, २३, २४, ३१, अप्रैल १, २, १०, ११ अशुभ।
मीन	संतति की ओर से खुशी, प्रिय व्यक्ति से मिलाप, लाभ अच्छा, स्वास्थ्य ठीक, धर्म में रुचि। ता. जन. २१, २२, २९, ३०, फर. ७, ८, ९, अशुभ।	व्यवसाय में लाभ, सिर में पीड़ा, किसी कार्य के बिगड़ने से हैरानी, मित्र बन्धुओं से शांति लाभ, अचानक यात्रा। ता. फर. १७, १८, २६, २७, मार्च ६, ७, ८ अशुभ।	अकस्मात् लाभ अच्छा, सवारी सुख, वायु पीड़ा, झगड़े में जय, सत्संग लाभ। ता. मार्च १६, १७, १८, २५, २६, अप्रैल ३, ४, १३, १४ अशुभ।

।। चंद्र शक्ल १ का ग्रहफल-... ।।

...खाण्ड रसकस आदि के स्वामी) मंगल, नीरसेश

(...के स्वामी) रवि, फलेश (फल फूल आदि के

॥ चैत्र शुक्ल १ का वर्षफल-श्रवण ॥

अचिन्त्याव्यक्त-रूपाय निर्गुणाय गुणात्मने । समस्त-जगदाधार-मूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥१॥
विनायकं प्रणम्यादौ देवीं वाग्देवतां गुरुम् । संवत्सर-फलं-वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया ॥२॥
सम्यग् विचार्य गणितं दैवज्ञजन-तुष्टिदम् । मुकुन्द वल्लभेनेदं तिथिपत्रं प्रवर्तितम् ॥३॥
अनेन धार्मिक-जनः कालज्ञान सहायिना । तिथिपत्रेण सन्तुष्टो भवत्विरयेव प्रार्थ्यते ॥४॥
तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च । पञ्चांगस्य फलं श्रुत्वा गंगा-स्नान फलं लभेत ॥५॥

चैत्र शुक्ल १ को नूतन संवत्सर प्रारम्भ होता है, उस दिन प्रति घर पर ध्वजा लगावें तोरण आदि से गृह सुशोभित कर, मंगल स्नान कर, देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा करें, स्त्रिया-शिशु आदि वस्त्र-आभूषण परिधान कर उत्सव मनावें । ज्योतिषी जी का सत्कार कर उनसे नूतन संवत्सर-फल श्रवण करें । कटु-निम्ब के कोमल-पत्र और पुष्प लाएं, उस में काली मिर्च, भुनी हुई हींग (सेंधा) नमक, अजवायन, सफेद जीरा और खाण्ड बराबर मात्रा में मिला कर चूर्ण बनाएं; कुछ इमली मिलाएं और वह ३ से ६ माशे तक की मात्रा में चै. शु. १ से १५ तक लगातार स्नानादि से निवृत होकर निराहार-मुख खाएं । इस प्रयोग से अनेक रोगों की शान्ति होती है । (वर्ष पर्यन्त रक्त-विकार ज्वरादि नहीं होते) यदि १५ दिन सेवन न कर सकें तो चैत्र शुक्ल १ को तो अवश्य सेवन करें ।

पञ्चांगस्थ गणेश और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा (वाचकों को यथाशक्ति दानादि से प्रसन्न) करें । मिष्ठान्न आदि भोजन कराएं । गीत गायन, वाद्य कथा-श्रवण आदि कर सम्पूर्ण दिन आनन्द से व्यतीत करें । गृहस्थियों को विलास-युक्त आनन्द पूर्वक वर्षारम्भ-दिन व्यतीत करने से सम्पूर्ण वर्ष आनन्दमय जाता है ।

वर्षफल श्रवण का माहात्म्य—ये चैत्रशुक्लप्रतिपत्तिथौ फलं श्रृण्वन्ति भक्त्या खलु वार्षिक नराः । ते दुःखदारिद्र्यरुगादि वर्जिता नन्दन्ति लोके धनधान्य-सकुलाः ॥१॥

अथ वर्षराजादि फल-विचार (सं. २०३५ वि.)

कल्पादि से गत वर्ष १९७२९४९०७९, सृष्टि संवत् १९५५८८५०७९, श्री विक्रम संवत् २०३५, शक संवत् १९००, श्री कृष्ण जन्म संवत् ५२१४, कलि संवत् ५०७९, श्री महावीर जैन निर्वाण संवत् २५०४-२५०५, श्री बुद्ध संवत् २६०२-२६०३, हिजरी सन् १३९८-१३९९, फसली सन् १३८५-१३८६, ईस्वी सन् १९७८-१९७९ ।

वर्षारम्भ में गुरुमान से प्रभव आदि संवत्सरों में ब्राह्मी विंशति (प्रथम युग) का 'प्रजापति' नामक संवत्सर है, फल इस प्रकार लिखा है:—

"न चलन्त्यखिला लोकाः स्व स्व-मार्गात्कथञ्चन ।
अब्दे प्रजापतौ नूनं बहु सस्यार्घवृष्टयः ॥"

अर्थात्—शासक एवं शासित वर्ग अपने कर्तव्य से च्युत न हों । अपने लक्ष्य पर आगे बढ़ने का सत्संकल्प दृढ़ रहे । खेती एवं वर्षा अच्छी हो ।

किञ्च—'प्रजापति वत्सरे चन्द्रः स्वामी, द्वादशैव मासाः शुभाः, अल्पमेघः, आश्विने रोग बाहुल्यं, धान्यस्य कलशिका पञ्चत्रिंशद् फदियानाणकैः, कार्तिकादि-मास-द्वयं मन्दं, पौषादि मासत्रयेऽरिष्टम्, क्वचिदुत्पातः, लोकस्य पीडा ।

इस वर्ष का राजा (ग्रह-परिषद् के प्रधान) शनि, मन्त्री गुरु, सस्येश (चौमासी फसलों के स्वामी) रवि, धान्येश (शीतकालीन फसलों के स्वामी) शुक्र, मेघेश (वर्षा-पानी के स्वामी) बुध, रसेश (गुड़-खाण्ड रसकस आदि के स्वामी) मंगल, नीरसेश (सभी प्रकार की धातु तथा व्यापार आदि के स्वामी) रवि, फलेश (फल फूल आदि के स्वामी) बुध, धनेश (कोष के स्वामी) शनि, दुर्गेश (सुरक्षा-प्रतिरक्षा आदि के स्वमी) बुध है । इन दस अधिकारियों का फल निम्नलिखित है:—

राजा शनि का फल—रोगों के कारण जनता में परेशानी हो, तस्करी की घटनाएं अधिक हों, कही तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि एवं कहीं युद्धभय व्याप्त हो । देश के किसी भाग में भुखमरी का वातावरण बने ।

मन्त्री गुरु का फल—प्रजा में सुख, धन-धान्य-वृद्धि, मंगल कार्य हों, वर्षा पर्याप्त तथा शासक वर्ग में कर्तव्य निष्ठा बनी रहे ।

सस्येश रवि का फल—कहीं खड़ी फसल को हानि हो, कहीं परिश्रमानुरूप फसल न हो, अनाज महंगे रहें, रोगभय एवं कहीं युद्ध के वातावरण से क्षोभ हो, वर्षा पर्याप्त हो ।

धान्येश शुक्र का फल—जनता में परस्पर प्रेम सद्भाव रहे, पशुधन एवं कृषि बढ़े, धर्मकार्य हों, हाड़ी की फसल खराब हो, चारा महंगा हो ।

मेघेश बुध का फल—वर्षा अधिक हो । बुद्धिजीवी वर्ग सम्मानित हो ।

रसेश मंगल का फल—रस, चन्दन, कुसुम एवं मधुर वस्तु दुर्लभ हों, देश के किसी भाग में वर्षा पर्याप्त न हो ।

नीरसेश रवि का फल—तांबा चन्दन रत्न माणिक्य मोती आदि महंगे हों ।

फलेश बुध का फल—वर्षा पर्याप्त, फलों की फसल अच्छी हो, फल-फूल तृण पर्याप्त हों, जनता में आनन्द मंगल रहें ।

धनेश शनि का फल—धन हानि के योग बनें, कही शासक अस्वस्थ हो, धनिक वर्ग कृषक एवं बुद्धिजीवि वर्ग में असन्तोष रहे ।

दुर्गेश बुध का फल—अमन रहे, यात्री निर्भय होकर यात्रा करें ।

सूचना—यद्यपि वर्ष के इन दस अधिकारियों का साधारण फल तो सर्वत्र ही होता है, किन्तु विशेष कर राजा का फल काश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड देश में, मन्त्री का फल आन्ध्र, बाल्हीक, उज्जैन एवं मालवा में सस्येश का पौण्ड्र-विदर्भ में, धान्येश का गुजरात, नर्मदा के तटवर्ती प्रदेशों एवं मध्य प्रदेश में, मेघेश का मगध एवं बंगाल में रसेश का कोंकण व गोआ में, नीरसेश का मालवा व बिहार में, धनेश का राजस्थान एवं मारवाड़ में, फलेश—दुर्गेश एवं राजा का फल सब जगह विशेष होता है ।

नव मेघों में 'वायु' नामक मेघ का फल—तूफान से कहीं हानि हो, वर्षा पर्याप्त न हो । द्वादश नागों में 'तक्षक' नामक नाग है, **फल**—वर्षा मध्यम, कहीं विग्रह से अशान्ति हो तथा किसी विशेष व्यक्ति का निधन हो । इस वर्ष रोहिणी का वास 'सन्धि' में है, **संवत्सर का वास 'वैश्य' के घर है । फल**—अनेकत्र खण्डवृष्टि हो । **संवत्सर का वाहन 'महिष' है,** शनि की दृष्टि दक्षिण में है । फल—दक्षिणी गोलार्ध के देशों एवं दक्षिणी प्रान्तों में कहीं देशभंग, दुष्काल भूकम्प भूस्खलन रोग विग्रह आदि से अशान्ति किंवा हानि होगी । सितम्बर १९७८ ई. के मध्य तक शनि मघा में रहेगा तत्पश्चात् संवत्सर तक पू. फा. में ही रहेगा । अतः कूर्म-चक्रानुसार इन दिनों अंग, बंग, कलिंग कोशल, तैलंग, बिहार, आसाम, उड़ीसा, हुगली में अशान्ति के कारण बनें अनेकत्र कारण-विशेष से हानि हो ।

इस वर्ष **सोमवती अमावस्याएं** तीन हैं,—ज्येष्ठ, आश्विन, एवं फाल्गुन में। **शनैश्चरी** अमावस एक है,—भाद्रपद में। **भौमवती** अमावस भी एक ही है,—कार्तिक में।

वर्षा आदि के विश्वाभान—वर्षा विश्वा ९, धान्य १७, तृण ७, शीत १७, तेज ५, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा १३, तृषा ३, निद्रा ७, आलस्य ७, उद्यम ९, शान्ति १३, क्रोध ५, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रसनिष्पत्ति ९, फल निष्पत्ति ३, उत्साह ३, पाप १७, पुण्य ९, व्याधि ७, व्याधिनाश १७, आचार ९, अनाचार ३, मृत्यु ३, जन्म १३, देशोपद्रव १, देश स्वास्थ्य ३, चौर भय ५, चौर नाश ९, अग्नि भय १७, अग्नि शान्ति १३, उद्भिज्ज ५, जरायुज ३, अण्डज १५, स्वेदज १३, टिड्डी १७, तोता १७, मूषक १९, सोना १७, ताम्बा ३, स्वचक्र ७, परचक्र १९, वृष्टि १७, वृष्टिनाश ३, संवत्सर विश्वा १०।

वर्ष के चार स्तम्भों का विचार—(१) **जलस्तम्भ** (चैत्र शु. १ को रेवती नक्षत्र) ४५ प्रतिशत है। **वायुस्तम्भ**—(ज्येष्ठ शु. १ को मृगशिर नक्षत्र) ८३ प्रतिशत है। **तृणस्तम्भ**—(वैशा. शु. १ को भरणी नक्षत्र) ३२ प्रतिशत है। **अन्नस्तम्भ**—(आषा. शु. १ को पुन. नक्षत्र) ९५ प्रतिशत है। **फल**—स्तम्भ-विचार से इस वर्ष अनाजों की फसल अच्छी होगी, घास चारा पर्याप्तमात्रा में न होगा, आंधी तूफान से अनेकत्र हानि के समाचार मिलेंगे। वर्षा साधारण होगी। यह वर्ष साधारण है।

आर्षमान विचार (वर्ष-रक्षा के लिए ४ दुर्ग)—(१) **प्रथम आर्ष** (अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र) ३५ प्रतिशत है। (२) **द्वितीय आर्ष**—(गत सं २०३४ वि.की) पौष अमावस को मूल नक्षत्र १० प्रतिशत है। (३) **तृतीय आर्ष**—(श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र) ३५ प्रतिशत है। (४) **चतुर्थ आर्ष**—(कार्तिक पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र) १५ प्रतिशत है। **फल**—आर्षमान विचार से यह वर्ष सन्तोष जनक नहीं।

संवत् के शरीर पर शनि का प्रभाव—सितम्बर १९७८ ई. तक शनि मघा नक्षत्र पर है, मघा नक्षत्र वर्ष का पुण्प है। अतः फल फूल हानि होगी, प्रजा में बालकों को भय पीड़ा हो।

नव वर्ष प्रवेश—चैत्र कृ. ३० शुक्र (७ अप्रैल १९७८ ई.)को ३६।३७ इष्ट (२० घण्टा ४९ मि. भा. स्टें. टा.) पर तुला लग्न में नव वर्ष प्रवेश होगा। **फल**—मध्य प्रदेश आदि में विपक्ष शासन में गतिरोध पैदा करने का असफल-प्रयास करेगा। गुप्त मन्त्रणाएं होंगी, कहीं उपद्रव, कहीं सत्ता परिवर्तन, दुर्भिक्ष, बाढ़ से हानि, कहीं सूखा, कहीं तूफान से हानि, महंगाई एवं पश्चिम में महायुद्ध का भय व्याप्त हो। उत्तर में दुर्भिक्ष। पांचवां, दसवां ग्याहरवां बाहरवां मास अनुकूल न होगा।

वर्षेश (जगत) लग्न—चैत्र शु. ६ गुरुवार (संवत् २०३५ वि.) को ५०।१० इष्ट पर [१३-१४ अप्रैल १९७८ ई. की रात्रि में २ बज कर ७ मिनट भा. स्टें. टा. पर] मकर लग्न में सूर्य नारायण मेष राशि पर संक्रमण करेंगे। **फल**—वर्षेश कुं. में सप्तमस्थ नीच का मंगल खड़ी खेती को नुक्सान पहुंचाएगा। अनेकत्र खलिहान को आग लगने की घटनाएं सुनने में आएगी। कार्तिक, मार्गशीर्ष एवं पौष नेष्ट रहेंगे।

आर्द्रा प्रवेश लग्न—आषाढ़ कृष्ण १ बुधवार (सं. २०३५ वि.) (तदनुसार २२ जून सन् १९७८ ई.)को ५९।४२ इष्ट (५ घं. १६ मि. भा. स्टें. टा.) पर पू. षा. नक्षत्र ब्रह्म-योग तथा मिथुन लग्न में सूर्य देव आर्द्रा में प्रविष्ट होंगे। **फल**—लग्नस्थ सूर्य एवं सप्तमस्थ चन्द्र गुरु-दृष्ट होने से सब प्रकार के धान्य पर्याप्त होंगे। वर्षा मध्यम हो, राजनीतिज्ञों में परस्पर विरोध एवं सत्ता की होड़ रहे।

वर्ष लग्न कुं.

७ (लग्न); ८; ६ रा.; ५ श; ४ मं.; ३ गु.; २; १ शु. बु.; १२ सू. के. चं.; ११; १०; ९

वर्षेश (जगत) लग्न कुं.

१० (लग्न); ११; १२ के. बु.; १ शु. सू.; २; ३ गु. चं.; ४ मं.; ५ श.; ६ रा.; ७; ८; ९

आर्द्रा प्रवेश कुं.

३ बु. सू. गु. (लग्न); ४ शु.; ५ मं. श; ६ रा.; ७; ८; ९ चं.; १०; ११; १२ के.; १; २

जगल्लग्न से व्यक्तिगत फल विचार—जन्म कुण्डली में लग्न बलवान हो तो जन्म-लग्न से, चन्द्र बलवान हो तो जन्म राशि से, जगल्लग्न जिस स्थान में आए, वह भाव शुभ या स्वामी ग्रहों से युक्त दृष्ट और बलवान हो तो वर्ष में उस भाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापी ग्रह की दृष्टि या योग हो तो उस भाव की हानि कहे। जन्म लग्न, जन्म राशि और अपने वर्ष प्रवेश लग्न वर्षेश (जगल्लग्न) आठवें—बाहरवें हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होता। इसी प्रकार देश और ग्राम के शुभाशुभ विचार से भी देश नगर व ग्राम की जो राशि हो, उससे जगल्लग्न आठवें या बाहरवें हो तो उस देश, ग्राम व नगर के लिए वह वर्ष हानिप्रद समझना चाहिए।

जन्म लग्न से जगल्लग्न का फल—१ देह सुख, २ धन लाभ, ३ कुटुम्बवृद्धि, ४ मित्र सौख्य, ५ पुत्र सौख्य, ६ शत्रुजय, ७ स्त्री सुख, ८ रोग भय, ९ धर्मलाभ, १० धन लाभ, ११ लाभ सुख, १२ व्यय दुःख।

सस्य जातक—ग्रीष्म सस्य जातक कुं के अनुसार सिंह का शनि ग्रीष्मान्न के लिए हानिप्रद अवश्य है लेकिन गुरु-दृष्ट होने से कुछ बचाव हो जाता है। शरत्सस्य जातक कुं. में कन्या एवं कर्क में पाप-ग्रह होने से शरद्-धान्य पर्याप्त मात्रा में होंगे। कुण्डली में मेष का बुध भी शरद् धान्यों के अच्छा होने का संकेत देता है।

गुर्रा फल—गत सं. २०३४ वि.में मार्ग. २ चन्द्रवार तदनुसार १२ दिसं. सन् १९७७ ई. को हिजरी सन् १३९८ प्रारम्भ हुआ है। **फल**—अनाज का भाव सम रहे, अनेक विध रोग एवं प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो। व्यापारी वर्ग समय पर आशानुकूल लाभ न उठा सके। पश्चिमी राष्ट्र विषम स्थिति में से गुजरेंगे।

मार्ग. शु. २ शनिवार (सं. २०३५ वि.) तदनुसार २ दिसम्बर सन् १९७८ ई. को हिजरी सन् १३९९ प्रारम्भ होगा। फल—मुस्लिम देशों में कहीं अन्दरूनी अशान्ति, युद्ध-संघर्ष से जन धन की हानि होगी। शासक स्थिति पर नियन्त्रण में असमर्थ रहेंगे, राजशाही देशों में स्थिति अधिक बिगड़ेगी, पड़ोसी देश चिन्तित रहेंगे।

लाभ-व्यय-चक्र (विंशोत्तरी मतानुसार)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	८	२	८	२	५	८	२	८	५	१४	१४	५
व्यय	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	११	११	११

लाभ व्यय देखने की रीति—अपनी राशि के लाभ-व्यय अंकों को जोड़ कर उसमें से १ घटाकर, शेष को ८ से भाग देने पर यदि १, २, ६, ७ बचें तो वर्ष में उत्तम लाभ, ३, ४, ५, ० बचें, तो लाभ बहुत कम हो, चिन्ता भी रहे।

'इन्दौर बम्बई फर्म ...'

भारत सरकार के अवकाश (सं. २०३५ वि.) पंजाब, हरयाणा, जम्मू-काश्मीर और हि. प्र. आदि के मेले

भारत सरकार के अवकाश (सं. २०३५ वि.)

अवकाश	तारीख	वार
गुड़ी पड़वा	८ अप्रै. '७८	श.
बैशाखी	१३ ,,	गु.
श्री राम नवमी (स्मार्त)	१६ ,,	र.
श्री जैन महावीर जयन्ती	२१ ,,	शु.
श्री बुद्ध जयन्ती	२२ मई	च.
जन्मदिन श्री हजरत अली	२० जून	मं.
भारत-स्वतन्त्रता दिवस	१५ अग.	मं.
रक्षा बन्धन	१८ ,,	शु.
श्री कृष्ण जन्माष्टमी	२५ ,,	शु.
जमद-उल-विदा	१ सित.	शु.
इदुल फित्र	५ ,,	मं.
तिरु ओनम् दिवस	१५ ,,	गु.
जन्म दिन श्री म. गांधी	२ अक्तू.	चं.
श्री दुर्गाष्टमी	९ ,,	चं.
श्री महानवमी	१० ,,	मं.
विजया दशमी	११ ,,	बु.
श्री वाल्मीकि जयन्ती	१६ ,,	च.
दीपावली	३१ ,,	मं.
गोवर्धन पूजा	१ नवं.	बु.
टिका भाई दूज	२ ,,	गु.
इदुज्जुहा	१२ ,,	र.
श्री गुरु नानक जयन्ती	१४ ,,	मं.
शहीदी दिन श्री गुरु तेग बहादुर जी	४ दिसं.	चं.
मुहर्रम	११ ,,	चं.
क्रिस्मस डे	२५ ,,	चं.
इंग्लिश नव वर्ष दिन	१ जन. '७९	चं.
जन्म दिन श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	४ ,,	गु.
पोंगल	१४ ,,	र.
भारत-गणतन्त्र दिवस	२६ ,,	शु.
ईद-ए-मिलाद	१० फर.	श.
जन्म दिन श्री गुरु रविदास जी	११ फर.	र.
श्री महाशिव रात्रि	२५ ,,	र.

पंजाब, हरयाणा, जम्मू-काश्मीर और हि. प्र. आदि के मेले

मेला	तारीख
चीमा (नानकसर, पं.)	८ अप्रै. '७८
माईसरखाना (पं.)	१३ ,,
श्री मनसा देवी (हरयाणा)	१६ ,,
बाहु फोर्ट (जम्मू, का.)	१६ ,,
पीपल जातर (कुल्लू, हि.प्र.)	२८-३० अप्रै.
पिंजौर	७ मई
डूंगरी जातर (मनाली, हि.प्र.)	१४-१५ मई
बंजार (हि.प्र.)	१४-१८ ,,
शाढी जातर (नगर, हि.प्र.)	१८-२३ ,,
क्षीर भवानी (काश्मीर)	१४ जून
भून्तर (हि. प्र.)	१५-१७ जून
श्री गंगा दशहरा (हरिद्वार, उ.प्र.)	१७ ,,
श्री नयना देवी (हि. प्र.)	१२ अग.
श्री चिन्त पूरणी (हि. प्र.)	१२ ,,
श्री अमरनाथ (काश्मीर)	१८ ,,
कैलाश यात्रा (काश्मीर)	३१ अग.-१ सितं.
बाबा गोसाईं आणां (कुराली, पं.)	४ सितं.
मेला पात (काश्मीर)	७-९ ,,
बामन द्वादशी (अम्बाला, पटियाला, पं.)	१४ ,,
मेला छपार (पं.)	१५ ,,
गोइन्दवाल (पं.)	१६ ,,
मेला फल्गु	२ अक्तू.
ज्वाला मुखी, तारा देवी, (हि.प्र.) दुर्गाष्टमी	९ ,,
दशहरा (कुल्लू हि.प्र.)	११ ,,

मेला	तारीख
शाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	१५ अक्तू. '७८
मानक पुर शरीफ (पं.)	१७-१९ अक्तू.
दीपावली	३१ ,,
बाबा रुद्रानन्द नारी (ऊना, हि.प्र.)	१०-१४ नवं.
रेणुका (हि.प्र.)	१० ,,
जन्मोत्सव वीर बैरागी (नकोदर पं.)	१२ ,,
रामतीर्थ कपाल मोचन (पं.)	१४ ,,
पुष्कर राज (राज.)	१४ ,,
बाल मेला (देहली)	१४ ,,
पुरमण्डल (देविका स्नान, जम्मू)	२९ ,,
जोड़मेला फतेहगढ़ साहिब (पं.)	२६-२९ दिसं.
संगीत मेला बाबा हरवल्लभ (जालन्धर)	२७ दिसं.
लोहड़ी (दाऊं) (पं.)	१३ जन. '७९
मुक्तसर (पं.)	१४ जन.
मस्तुआणा (पं.)	१ फर.
बसन्त पंचमी	१ ,,
श्री महाशिव रात्रि	१ ,,
होला महल्ला (आनन्दपुर साहिब) (पं.)	१४ मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून, उ.प्र.)	१९ ,,
बीरमदास बधौछी (पटियाला, पं.)	२० ,,
श्री शीतला माता (कुराली, पं.)	२२ ,,
मेला पिहोवा तीर्थ (हरयाणा)	२७ ,,
नीमे गुरु (नमाणी एकादशी) का मेला बरहे (भटिंडा)	१७ जून

नीचे लिखे महानुभावों के हम हृदय से आभारी हैं, जिन्होंने अपने प्रान्तों के स्थानीय मेलों की सूची हमें भेजकर अनुगृहीत किया है:—

पं. श्री वेणी माधव ज्योतिर्विद् (कुल्लू, हि. प्र.), श्री वाचस्पति भारद्वाज, मोरी पाड़ा मेरठ, श्री प्रीतम गोस्वामी फतेहाबाद (हिसार), वैद्य गुरदास द्विवेदी रोहण (सिरसा), पं. सुखराम ज्यो. मारकण्ड (बिलासपुर H.P.) श्री गोविन्द राम बनवारी लाल बडोपल(हिसार),श्री साधुराम ठाकुर, चमन लाल ठाकुर प्रेम सि,ठाकुर इलाका देसा (डोडा ज. काश्मीर),वैद्य शिंगारा सिंह वरियाह नवें(तरन तारन),श्री पं. मनसाराम नाग—सचिव श्री सनातन धर्म सभा, भद्रवाह (जम्मू का.), प. जालम राम घरेच (ठियोग, हि. प्र.), भगत श्री मग्घर सिंह जी, बरेह (बठिण्डा)।

स्थानाभाव के कारण नामों की पूरी लिस्ट नहीं दी जा सकी है। अत: शेष नाम आगामी वर्ष देंगे। स्थानीय मेलों की और लिस्ट सादर आमन्त्रित है।

सन्दिग्ध व्रत-पर्व व्यवस्था (सं. २०३५)

श्री राम नवमी :—मध्याह्न व्यापिनी चैत्र शुक्ल नवमी के दिन श्री राम नवमी व्रत किया जाता है, इस समय पुनर्वसु का योग विशेष माहात्म्य वाला माना गया है। मध्याह्न के बारे में तीन मत हैं—(i) कुछ लोग पंचधा विभक्त दिनमान के तृतीय भाग को, (ii) कुछ त्रेधा विभक्त दिनमान के द्वितीय भाग को और (iii) कुछ पंचदशधा विभक्त दिनमान के अष्टम भाग (अष्टम मुहूर्त) को मध्याह्न मानते हैं। इन में प्रथम मत की मान्यता सर्वाधिक है। प्रथम एवं तृतीय मत के अनुसार इस वर्ष १६ अप्रैल (रविवार) को ही नवमी मध्याह्न व्यापिनी है, अत: अधिकतर आचार्यों के मतानुसार स्मार्तों और वैष्णवों (दोनों सम्प्रदायों) का रामनवमी व्रत इसी दिन सिद्ध होता है। लेकिन विरल मान्यता वाले द्वितीय (त्रेधा-विभक्त दिनमान के द्वितीय भाग को मध्याह्न मानने वाले) मत के अनुसार १६ और १७ अप्रै. को दोनों दिन नवमी मध्याह्न व्यापिनी होने से स्मार्तों का व्रत १६ अप्रै. को और वैष्णवों का व्रत १७ अप्रै. को माना जाएगा, क्योंकि ऐसी स्थिति में वैष्णव लोग पुनर्वसु योग होने पर भी अष्टमी विद्धा नवमी का परित्याग कर देते है। भट्टोजिदीक्षित कृत 'तिथि निर्णय' का वाक्य है—"**दिनद्वये मध्याह्नव्याप्तौ तदभावे वा पुनर्वसुयुतामपि पूर्वां त्यक्त्वा परैव ग्राह्या**—"**नवमी चाष्टमी विद्धा तु त्याज्या**—"**इति विष्णुपुराण वचनात्**।" १६ अप्रै. को अष्टमी त्रिमुहूर्त व्यापिनी होने से नवमी को विद्ध कर रही है।

जैन पर्व (सं. २०३५ वि.)

पर्व	तिथि	तारीख १९७८ ई.	पर्व	तिथि	तारीख १९७८-७९ ई.
आचार्य भिक्षु अभि निष्क्रमण	चैत्र शु. ९	१७ अप्रै.	संवत्सरी (पंचमी पक्ष)	भाद्र.शु. ५	७ सितं.
श्री महावीर जयन्ती	,, ,, १३	२१ ,,	आचार्य श्री तुलसी पट्टारोहण	,, ,, ९	११ ,,
श्री महावीर केवल ज्ञान	वैशा.शु. १०	१७ मई	आचार्य भिक्षु निर्वाण	,, ,, १३	१४ ,,
श्री महावीर च्यवन	आषा.शु. ६	११ जुला.	श्री महावीर निर्वाण	कार्ति.कृ. ३०	३१ अक्तू.
तेरा पन्थ स्थापना	,, ,, १५	२० ,,	आचार्य श्री तुलसी जन्म	कार्ति.शु. २	२ नवं.
चातुर्मास्य प्रारम्भ	,, ,, १५	२० ,,	चातुर्मास्य समाप्त	,, ,, १५	१४ ,,
श्री जयाचार्य निवार्ण	भाद्र.कृ. १२	३० अग.	श्री महावीर दीक्षा	मार्ग.कृ. १०	२५ ,,
पर्यूषण प्रारम्भ (चतुर्थी पक्ष)	,, ,, १२	३० ,,	आचार्य श्री तुलसी दीक्षा	पौष कृ. ५	१९ दिसं.
पर्यूषण प्रारम्भ (पंचमी पक्ष)	,, ,, १३	३१ ,,	मर्यादा महोत्सव	माघ शु. ७	३ फर.
संवत्सरी (चतुर्थी पक्ष)	भाद्र. शु. ४	६ सितं.			

श्री वि. सं. २०३५, शाक १९००, चैत्र शुक्ल पक्ष १ | तारीखें | चन्द्र- | भा स्टैं टा उदय-कालिक | (८ से २३ अप्रैल तक, सन् १९७८ ई.), उ.अ.-गो, वसन्त-ग्रीष्म ऋतु

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्र-संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
३१	२२	१	श.	३६	१५	रे.	४	२८	वै.	२८	४५	किं.	६	२६	२६	८	१८	२९	मि. ४।२८	६	९	६	४२	११	२४	१६	२५
३१	२७	२	र.	३७	२०	अ.	६	३०	वि.	२९	४५	बा.	६	४०	२७	९	१९	ज१	मेष	६	८	६	४३	११	२५	१५	२४
३१	३१	३	चं.	३९	५०	भ.	९	५०	प्री.	२५	५२	तै.	८	३५	२८	१०	२०	२	वृ. २६।०	६	७	६	४३	११	२६	१४	१९
३१	३६	४	मं.	४३	४२	कृ.	१४	३२	आ.	२६	५	व.	११	४६	२९	११	२१	३	वृष	६	५	६	४४	११	२७	१३	१२
३१	४०	५	बु.	४८	४०	रो.	२०	२२	सौ.	२७	८	व.	१६	११	३०	१२	२२	४	मि ५३।४७	६	४	६	४४	११	२८	१२	३
३१	४४	६	गु.	५४	२२	मृ.	२६	१२	शो.	२८	५५	कौ.	२१	३१	वै१	१३	२३	५	मिथुन	६	३	६	४५	११	२९	१०	५२
३१	४९	७	शु.	६०	०	आ.	३४	३०	अ.	३१	८	ग.	२७	२८	२	१४	२४	६	मिथुन	६	२	६	४५	०	०	९	३७
३१	५४	७	श.	०	३५	पुन.	४१	५२	सु.	३३	२२	व.	०	३५	३	१५	२५	७	क. २५।२	६	०	६	४६	०	१	८	२१
३१	५८	८	र.	६	२८	पु.	४८	३७	धृ.	३५	१२	व.	६	३८	४	१६	२६	८	कर्क	५	५९	६	४६	०	२	७	१
३२	२	९	चं.	११	३५	आश्ले.	५४	२२	शू.	३६	२२	कौ.	११	३५	५	१७	२७	९	सि ५४।२२	५	५८	६	४७	०	३	५	४०
३२	६	१०	मं.	१५	२५	म.	५८	४२	गं.	३६	२२	ग.	१५	२५	६	१८	२८	१०	सिंह	५	५७	६	४७	०	४	४	१६
३२	११	११	बु.	२७	४५	पू.फा.	६०	०	वृ.	३५	१२	वि.	१७	४५	७	१९	२९	११	सिंह	५	५५	६	४८	०	५	२	५१
३२	१५	१२	गु.	१८	१५	पू.फा.	१	२२	ध्रु.	३२	३२	बा.	१८	१५	८	२०	३०	१२	क १६।३६	५	५४	६	४८	०	६	१	२३
३२	२०	१३	शु.	१६	५८	उ.फा.	२	१८	व्या.	२८	३०	तै.	१६	५८	९	२१	वै१	१३	कन्या	५	५३	६	४९	०	६	५९	५३
३२	२४	१४	श.	१४	०	ह.	४६ / १	३० / १०	ह.	२३	१२	व.	१४	०	१०	२२	२	१४	तु. ३०।२०	५	५२	६	५०	०	७	५८	२१
३२	२९	१५	र.	९	३५	स्वा.	५५	३७	व.	१६	४५	ब.	९	३५	११	२३	३	१५	तुला	५	५१	६	५०	०	८	५६	४८

ग्रह दर्शन:-१९ अप्रैल को बुध पूर्व में उदित होगा। सायं शुक्र को पश्चिम की ओर जाता हुआ, गुरु को पश्चिम कपाल में, मंगल को खमध्यागत तथा शनि को पूर्वकपाल में देखा जा सकता है।

चन्द्र दर्शन मु. ३०, पंचक म. ४।२८, व. बुध रेव. मीन में ४२।१५, शुक्र
जमद उल-अव्वल मु. प्रा.,
श्रीमत्स्य जयन्ती, गौरीतृतीया (गणगौर)
म. ११।४६ उ., ४३।४२ या.,
भर. में २६।४०, चान्द्र संवत्सर ★
सं. सूर्य अश्वि. मेष में ५०।१०, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न से पूर्व,
मु. १५, गुरु आर्द्रा१ में ३०।५५, स्कन्द६, मेला वैशाखी (पंजाब)
भ. ०।३५ उ., ३३।३१ या., ओली प्रा., मेला माई सरखाना
श्री दुर्गाष्टमी, श्री रामनवमी व्र. स्मा. मेला श्री मनसादेवी (हरयाणा),
श्री रामनवमी व्र. वै. [देखें पृ. ६०] नवरात्र स.-वर्षफल-श्रवण तैलाभ्यङ्ग
भ. ४६।३५ उ., (वि. मु. मघा) ★प्रा., नवरात्र प्रा., घटस्थापन,
भ. १७।४५ या., बुध पूर्व में उदित ३६।१५, शुक्र कृत्ति. में १८।३२,
सूर्य सा. वृष में २६।२, ग्रीष्म ऋतु प्रा., अगस्त्य अस्त ४५।५८, प्रदोष व्र.,
शक वै. प्रा., श्री जैन महावीर जयन्ती, अनङ्ग१३, (वि. मु. चित्रा)
भ. १४।०उ., ४१।४७ या., शुक्र वृष में २।१०, सत्य व्र., ओली स.,
वैशाख स्नान प्रा., (वि. मु. स्वा). कामदा ११ व्र. स.

वर्षारम्भ में बार्हस्पत्यमान से "प्रजापति" नामक संवत्सर है अतः वर्ष के अन्त तक संकल्प में इसे ही प्रयुक्त करें।

चैत्र शु. ८ रवि, इष्ट ५८।४८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	११	२	०	४	५	११
३	८	२४	७	२३	०	११	११
४	४७	३	११	४८	९	२३	२३
३०	८	५६	०	४९	४५	११	११
५८	२२	३६	९	७३	०	३	३
३९	५२	५	१३	३४	४२	११	११
	मा	व.	मा	मा	व.	व	व
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये

१शु. सू. | २ | १२के. बु. | ३गु. | ११ | चं.४मं. | १० | ५श. | ७ | ९ | ६रा. | ८

लोक भविष्य—वै. शु. १ को शनिवार है। आगे वर्षा पर्याप्त होगी। विरोधी देशों में परस्पर द्वेष वैमनस्य बढ़ेगा, परिणाम स्वरूप कहीं सत्ता संघर्ष तथा युद्धभय व्याप्त होगा- "वारः स्यान्मद-कुजयोस्तदा वृष्टिः सुशोभना। सस्यानि न प्ररोहन्ति विग्रहं यान्ति भूमिपाः।" संवत्सरारम्भ तुल लग्न में हुआ है:—देश में कहीं राजनैतिक अस्थिरता, पश्चिमी मुस्लिम-राष्ट्रों में परस्पर युद्ध एवं महर्घता आदि से अशान्ति रहे, उत्तर में कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने।

कुं. सूर्योदये

२ शु. | १ सू. | १२के. बु. | ३गु. | ११ | ४मं. | १० | ५श. | ७चं. | ९ | ६रा. | ८

चैत्र शु. १५ रवि, इष्ट ५९। ८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	११	२	१	४	५	११
९	११	२१	८	२	०	११	११
५४	२७	२२	१७	२२	५	०	०
२२	५९	१५	४८	५६	५८	५७	५७
५८	२४	३	९	७३	०	३	३
२५	४३	५६	५८	१६	६	११	११
	मा	व.	मा	मा	व.	व.	व.
	उ	उ	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्रह चाल एवं बाजार का रुख—पक्षारम्भ में सरसों तिल तेल अलसी घी उड़द नारियल एवं गुड़ खाण्ड में मन्दे का रुख रहेगा। चना मूंग मोठ ज्वार में घटाबढ़ी एवं रुई में तेजी रहेगी। १३ अप्रैल से अलसी एरण्ड तिल तेल सोना चांदी लोहा तांबा नारियल सुपारी बादाम हींग गुड़ खाण्ड शक्कर सूत कपड़ा लौंग इलायची नमक एवं जवाहरात में तेजी आएगी। १९ अप्रैल के लगभग जो चावल तिल तेल सरसों एवं जवाहरात में मन्दा बनेगा। २२ अप्रैल से रुई कपास में अचानक मन्दे का योग है।

आकाश लक्षण—१०.११ एवं १९ से २३ अप्रैल तक राजस्थान उ.प्र., पंजाब, हरयाणा, हि.प्र. आदि में कहीं बादल चाल कहीं आंधी तूफान तथा मेघ गर्जन के साथ बूंदा बांदी हो।

शकुन विचार—चैत्र शु. सप्तमी को यदि आकाश में मेघ दिखाई दें, किंवा वायु जोर से चले तो गेहूं का स्टाक करें, श्रावण में त्रिगुणित लाभ मिले।

नोट—इस संवत् के प्रारम्भ में शक संवत् की बीसवीं शताब्दी का मंगलोत्सव मनाना चाहिए। क्योंकि-शालिवाहन शकाब्द की संख्या व्यतीत वर्षों को प्रकट करती है अतः शकाब्द १९०० के प्रारम्भ से ही बीसवीं शक शताब्दी प्रारम्भ मानी जाएगी।

श्री वि. सं. २०३५, शाक १९००: वैशाख कृष्ण पक्ष२ । तारीखें । चन्द्र- । भा. स्टै. टा । उदय-कालिक (२४अप्रै. से ७ मई तक, सन् १९७८ई.),उ. अयन-गोल, ग्रीष्म ऋतु

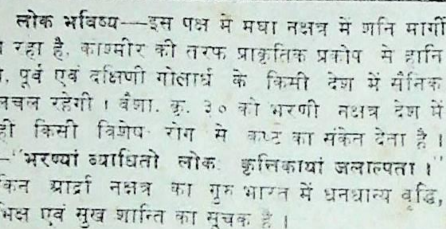
दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रहदर्शन:-सायं शुक्र-गुरु एवं मंगल पश्चिम कपाल में तथा शनि खमध्य की ओर जाता दीखेगा । प्रातः बुध पूर्व में दीखेगा ।
३२	३३	१	चं.	४	०	वि.	५१	१५	सि.	९	२०	कौ.	४	०	१२	२४	४	१६	वृ. ३७।२१	५	५०	६	५१	०	९	५५	१२	शनि मार्गी ५९।१०
प्र	थम	२	चं.	५३	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथि क्षय
३२	३७	३	मं.	५०	४२	अ.	४६	२२	व्य.	४३	२४	ब.	२४	८	१३	२५	५	१७	वृश्चिक	५	४९	६	५२	०	१०	५३	३५	म. २४।८ उ., ५०।४२ या., बुध मार्गी ३४।२५,
३२	४१	४	बु.	४३	३५	ज्ये.	४१	१८	व.	४६	२५	ब.	१७	८	१४	२६	६	१८	ध. ४१।१८	५	४८	६	५३	०	११	५१	५५	श्री गणेश ४ व्र.,
३२	४५	५	गु.	३६	४८	मू.	३६	२३	शि.	३६	२	कौ.	१०	११	१५	२७	७	१९	धनु	५	४७	६	५३	०	१२	५०	१४	सूर्य भर. में ३०।३७,
३२	५०	६	शु.	३०	२२	पू.षा.	३१	५२	सि.	२८	०	ग.	३	३५	१६	२८	८	२०	म. ४५।५५	५	४६	६	५४	०	१३	४८	३१	म. ३०।२२ उ., ५७।२९ या.,
३२	५५	७	श.	२४	३५	उ.षा.	२८	५	सा.	२०	३२	ब.	२४	३५	१७	२९	९	२१	मकर	५	४५	६	५५	०	१४	४६	४७	
३२	५९	८	र.	१९	३५	श्र.	२५	१	शु.	१३	४२	कौ.	१९	३५	१८	३०	१०	२२	कु. ५३।५६	५	४४	६	५६	०	१५	४५	३	पंचक प्रा. ५३।५६, शुक्र रोहि. में १५।५५,
३३	३	९	चं.	१५	३०	ध.	२२	५२	शु.	७	३५	ग.	१५	३०	१९	म१	११	२३	कुम्भ	५	४३	६	५६	०	१६	४३	१७	म. ४३।५६, मई प्रा.,
३३	८	१०	मं.	१२	२२	श.	२१	४५	ब्र.	४३	४०	वि.	१२	२२	२०	२	१२	२४	कुम्भ	५	४२	६	५७	०	१७	४१	२९	म. १२।२२ या.,
३३	१२	११	बु.	१०	१५	पू.भा.	२२	१७	ऐ.	५३	५७	बा.	१०	१५	२१	३	१३	२५	मी. ७।९	५	४१	६	५८	०	१८	३९	३९	गुरु आर्द्रा२में४९।३३,वरुथिनी११व्र.स., श्री वल्लभाचार्य जयन्ती,
३३	१६	१२	गु.	९	२	उ.भा.	२१	५२	वि.	५०	५८	तै.	९	२	२२	४	१४	२६	मीन	५	४१	६	५८	०	१९	३७	४८	प्रदोष व्र.,
३३	१९	१३	शु.	८	५२	रे.	२४	२	प्री.	४८	४३	व.	८	५२	२३	५	१५	२७	मे. २४।२	५	४०	६	५९	०	२०	३५	५६	म. ८।५२ उ., ३९।१७ या., पंचक स. २४।२,
३३	२२	१४	श.	९	४२	अ.	२६	४८	आ.	४७	२२	श.	९	४२	२४	६	१६	२८	मेष	५	३९	७	०	०	२१	३४	२	मंगल आश्ले. में ०।८,
३३	२६	३०	र.	११	३७	भ.	३०	३२	सौ.	४६	५०	ना.	११	३७	२५	७	१७	२९	वृ. ४६।४४	५	३८	७	०	०	२२	३२	८	मेला पिंजौर, जन्म दिन विश्वकवि र. ना. टैगोर

वैशा. कृ. ८ रवि. इष्ट ५९।२५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	११	२	१	४	५	११
१९	१६	२२	९	१९	०	१०	१०
४२	२६	३६	२९	५५	७	३८	३८
४४	१	४२	३७	११	२६	४०	४२
५८	२६	२८	१०	७३	०	३	३
१५	२०	५६	३८	३	३८	११	११
	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
	उ.	उ.	उ	उ	उ	अ	अ
भर. २	पुष्य ४	रेव. २	आर्द्रा १	रो. १	मघा १	हस्त १	उ.भा. ३

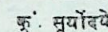
कुं सूर्योदये

२ शु. | १ | १२के. बु. | ३गु. | सू. | ११ | ४मं. | १०चं. | ५श. | ७ | ९ | ६रा. | ८



लोक भविष्य—इस पक्ष में मघा नक्षत्र में शनि मार्गी हो रहा है. काश्मीर की तरफ प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो, पूर्व एवं दक्षिणी गोलार्ध के किसी देश में सैनिक हलचल रहेगी । वैशा. कृ. ३० को भरणी नक्षत्र देश में कहीं किसी विशेष रोग से कष्ट का संकेत देता है । —'भरण्यां व्याधितो लोकः कृत्तिकायां जलाल्पता ।' लेकिन आर्द्रा नक्षत्र का गुरु भारत में धनधान्य वृद्धि, सुभिक्ष एवं सुख शान्ति का सूचक है ।

ग्रहचाल एवं बाजार का रुख—इस पक्ष में रूई और चांदी में प्राय मन्दा चलेगा । पक्ष के प्रारम्भ में तिल तेल सरसों गुड़ खाण्ड शक्कर बिनौला मूंगफली कपूर चन्दन में कुछ मन्दे के बाद २७अप्रै. के बाद तेजी का रुख बनेगा । विशेषतया ३ मई के बाद अनाज एवं सभी रस तेज होंगे । लोहा अभ्रक एवं खनिज पदार्थों के व्यापारियों के लिये समय अच्छा है । पक्षान्त में चांदी एवं रूई में अच्छी मन्दी आ सकती है ।



कुं सूर्योदये

२ शु. | १ | १२के. बु. | ३गु. | सू.चं. | ११ | ४मं. | १० | ५श. | ७ | ९ | ६रा. | ८

वैशा. कृ. ३० रवि,इष्ट ५९।४०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	३	११	२	१	४	५	११
२३	१७	२७	१०	१९	०	१०	१०
२९	३४	२०	४५	२५	१४	१६	१६
५३	४३	३६	५४	४२	६	२८	२८
५८	२७	५४	११	७२	१	३	३
३	४६	४१	१४	४६	२३	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
भर. ४	आश्ले. १	रेव. ४	आर्द्रा २	रोहि. ३	मघा १	हस्त १	उ.भा. ३

आकाश लक्षण—२४ से २७ अप्रैल तक एवं २,३,६ मई के लगभग लंका के पश्चिमी छोर, बंगाल एवं हि. प्र. में वर्षा के योग हैं । इन्हीं दिनों पंजाब हरयाणा बिहार में भी कहीं बादल चाल और कहीं बूंदाबांदी हो ।

शकुन विचार- वैशाख वदी आठ दिना बिजली गर्जन होय । संवत् अच्छा जानिए संशय करो न कोय ।। वैशाख वदी एकादशी प्रबल मेघ जो जान । धान्य बीज खेती करो अच्छा संवत् मान ।।

श्री वि. सं. २०३५, शाक १९००, वैशाख शुक्ल पक्ष ३ | तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टै. टा. | उदय-कालिक | (८ से २२ मई तक, सन् १९७८ ई.) उ. अ., उ. गो., ग्रीष्म ऋतु

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	मु.	संचार घ. प.	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन:-प्रात:बुध को पूर्व में देखें। सूर्यास्तानन्तर शुक्र पश्चिम की ओर नत, उससे ऊपर गुरु तथा मंगल को खमध्य से पश्चिम की ओर झुका हुआ एवं इनसे कुछ ही ऊपर शनि को देख सकेंगे।
३३	३०	१	चं.	१४	३०	कृ.	३५	१८	शो.	४७	५	ब.	१४	३०	२६	८	१८	३०	वृष	५	३७	७	१	०	२३	३०	१३	चन्द्र दर्शन मु. ३०,
३३	३४	२	मं.	१८	२५	रो.	४१	२	अ.	४८	५	कौ.	१८	२५	२७	९	१९	ज१	वृष	५	३६	७	२	०	२४	२८	१४	जमद उस्सानी मु. प्रा., श्री परशुराम जयन्ती, श्री शिवाजी जयन्ती
३३	३८	३	बु.	२३	१७	मृ.	४७	३६	सु.	४९	४८	ग.	२३	१७	२८	१०	२०	२	मि१४।२०	५	३५	७	३	०	२५	२६	१२	भ. ५६।६ उ., बुध अश्वि. मेष में ४६।२, अक्षय ३, [वि. मु. मृ.]
३३	४२	४	गु.	२८	५५	आ.	५४	५०	धृ.	५१	४९	वि.	२८	५५	२९	११	२१	३	मिथुन	५	३४	७	३	०	२६	२४	११	भ. २८।५५ या., सूर्य कृत्ति. में १६।२५, शुक्र मृग. में १३।८,
३३	४५	५	शु.	३४	५८	पुन.	६०	०	शू.	५४	२०	ब.	१	५६	३०	१२	२२	४	क.४५।२८	५	३४	७	४	०	२७	२२	८	आद्य जगद्गुरु श्री शंकराचार्य जयन्ती,
३३	४८	६	श.	४१	२	पुन.	२	२०	गं.	५६	३७	कौ.	८	०	३१	१३	२३	५	कर्क	५	३३	७	४	०	२८	२०	४	राहु उ.फा. ४, केतु उ.भा.२ में १०।३२, श्री रामानुजाचार्य जयन्ती,
३३	५१	७	र.	४६	३५	पु.	९	३५	वृ.	२८	२८	ग.	१३	४८	ज्ये१	१४	२४	६	कर्क	५	३३	७	५	०	२९	१७	५८	भ.४६।३५उ., सं. सूर्य वृष में ४३।३५, पुण्यकाल १६।५६उ., मु.१५★
३३	५४	८	चं.	५१	५	आश्ले.	१६	१०	ध्रु.	५९	२८	वि.	१८	५०	२	१५	२५	७	सिं१६।१०	५	३२	७	६	१	०	१५	४९	भ. १८।५० या., [वि. मु. मघा] ★श्री गङ्गा जन्म,
३३	५७	९	मं.	५४	७	म.	२१	३७	व्या	५९	१३	बा.	२२	३६	३	१६	२६	८	सिंह	५	३२	७	६	१	१	१३	३८	शुक्र मिथुन में ४४।५, श्री जानकी जयन्ती,
३४	०	१०	बु.	५५	२५	पू.फा.	२५	२५	ह.	५७	३७	तै.	२४	४६	४	१७	२७	९	क.४०।५३	५	३१	७	७	१	२	११	२५	
३४	३	११	गु.	५४	३५	उ.फा.	२७	१८	व.	५४	२२	ब.	२५	०	५	१८	२८	१०	कन्या	५	३०	७	७	१	३	९	११	भ. २५।० उ., ५४।३५ या., मोहिनी ११ व्र. स.,
३४	६	१२	शु.	५१	४३	ह.	२७	५७	सि	४९	२८	ब.	२३	९	६	१९	२९	११	तु.५६।३१	५	३०	७	८	१	४	६	५५	[वि.बु चि.] गुरु आर्द्रा ३ में १२।२२, श्री नृसिंह जयन्ती, [वि.मु.स्वा.]
३४	९	१३	श.	४७	३	चि.	२५	५	व्य.	४३	८	कौ.	१९	२३	७	२०	३०	१२	तुला	५	२९	७	९	१	५	४	३८	शनि प्रदोष व्र., [वि. मु. स्वा.] कुम्भ दान, सत्य व्र.
३४	१२	१४	र.	४०	४५	स्वा.	२१	१८	व.	३५	२२	ग.	१३	५४	८	२१	३१	१३	तुला	५	२९	७	१०	१	६	२	२०	भ.४०।४५उ., सूर्य सा. मिथुन में २५।२२, बुध भर. में १९।५०,
३४	१५	१५	चं.	३३	१८	वि.	१६	१२	प.	२६	४०	वि.	७	१	९	२२	ज्ये१	१४	वृ. २।२८	५	२८	७	१०	१	६	५९	५९	भ.७।१या., शुक्र आर्द्रा में १६।१८, शक ज्येष्ठ प्रा., श्री कूर्म जयन्ती

वैशाख स्नान स., श्री बुद्ध जयन्ती, यम प्रीत्यर्थ जल

वैशा. शु.८ चन्द्र, इष्ट ५९।५५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	३	०	२	१	४	५	११
१	२१	६	१२	२९	०	९	९
१३	२१	०	१७	६	२८	५१	५१
३३	५१	११	४९	४३	२	१	१
५७	२९	७७	११	७२	२	३	३
४९	९	८	४९	२५	१२	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये

३गु. | १बु. | चं. ४मं. | २सू. शु. | १२के. | श.५ | ११ | ६रा. | ८ | १० | ७ | ९

लोक भविष्य—पक्ष मध्य में शुक्र एवं गुरु मिथुनस्थ हो जाते हैं, गुजरात मध्य प्रदेश आन्ध्र प्रदेश केरल आदि में कुछ-विषयों पर राजनैतिक गतिरोध की स्थिति पैदा होगी, लेकिन शीघ्र ही समस्या का समाधान होगा। अरब देश एवं अन्य यावन देशों में कहीं आन्तरिक स्थिति बिगड़ने से अशान्ति होगी।

ग्रह चाल एवं बाजार का रुख—पक्षारम्भ में मूंग उड़द मोठ तिल ज्वार बाजरा जौ चना अलसी तेज हों। एक सप्ताह में गुड़ खाण्ड शक्कर और सरसों में कुछ मन्दी के बाद तेजी आए। मई के मध्य में बादाम सुपारी नारियल तिल तेल तेज हों। मटर अरहर चावल पाट बारदाना मन्दे होंगे। गुरु के आर्द्रा नक्षत्र के तृतीय चरण में आने पर (२० मई के बाद) तीन सप्ताह में सोना चांदी आदि धातु रसकस तिल तेल तेज होंगे। पक्षान्त में अनाजों में अचानक मन्दे का वातावरण बनेगा।

कुं. सूर्योदये

३गु. शु. | १बु. | ४मं. | २ सू. | १२के. | ५श. | ११ | ६रा. | ८ | १० | ७ चं. | ९

वैशा. शु. १५ चन्द्र, इष्ट ०।५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	३	०	२	२	४	५	११
७	२४	१४	१३	६	०	९	९
०	१९	१९	२९	२०	४२	३१	३१
१	४	३३	३६	३०	४१	५७	५७
५७	३०	९१	१२	७२	२	३	३
४०	३	३७	११	८	४५	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण—९, १० एवं २६ से २२ मई तक भूटान सिक्कम आसाम बिहार में कहीं बादल चाल कहीं खण्डवृष्टि हो। पंजाब, हरयाणा, उ. प्र., राजस्थान आदि में तापमान ऊंचा रहे, तथा आंधी आदि से वृक्षों को हानि पहुंचे।

शकुन विचार—वैशाख शु. ५ को सन्ध्या के समय यदि पूर्व की वायु चले, या दिन भर बादल चाले रहे, बादल गरजें तो भाद्रपद में धान्य महंगा होता है, अनाज का स्टाक करके भाद्रपद में निकाल कर लाभ ले सकते हैं।

श्री वि. सं. २०३५, शाके १९०० ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४ | तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टै. टा | उदय-कालिक (२३ मई से ५ जून तक, सन् १९७८ ई.), उ. प्र., उ.-गो., ग्रीष्म ऋतु,

ग्रह दर्शन:-३ जून को बुध पूर्व में अस्त होगा । २९ मई को साय गुरु-शुक्र की भोगांश-युति होगी । शुक्र गुरु से १°।३६' के लगभग उत्तर की ओर होगा । ५ जून को मंगल-शनि बिल्कुल आसन्न याम्योत्तर-वृत्त के आसपास होंगे, मंगल-शनि से केवल ६' दक्षिण में होगा ।

मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्र-संचार घ. प.	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३४	१८	१	मं.	२४	५५	अनु.	१०	७	शि.	१७	१२	कौ.	२४	५५	१०	२३	२	१५	वृश्चिक	५	२८	७	११	१	७	५७	३७	
३४	२१	२	बु.	१६	१८	ज्ये.	३/५६	३२/४४	सि.	७/५७	२५/३२	ग.	१६	१८	११	२४	३	१६	ध. ३१३२	५	२७	७	११	१	८	५५	१५	म. ४१।५७ उ., [वि. मु. मू.]
३४	२४	३	गु.	७	३७	पू.षा.	५०	४०	शु.	४८	२	वि.	७	३९	१२	२५	४	१७	धनु	५	२७	७	१२	१	९	५२	५१	भ. ७।३७ या.. सूर्य रोहि. में ७।२८, व. यूरेनस स्वाती ४ में ३४।२.★
अव	म	४	गु.	५९	२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथि-क्षय
३४	२६	५	शु.	५२	२	उ.षा.	४५	८	धु.	३९	८	कौ.	२५	४३	१३	२६	५	१८	म. ४।१७	५	२७	७	१३	१	१०	५०	२६	[वि.मु.उ.षा.] ★श्री गणेश ४ व्र., आनन्दमयी मातृ जन्म प्रधानोत्सव,
३४	२८	६	श.	४५	५०	श्र.	४०	४५	व्या.	३१	२	ग.	१८	५६	१४	२७	६	१९	मकर	५	२६	७	१३	१	११	४८	०	भ. ४५।५० उ.,
३४	३०	७	र.	४०	५०	ध.	३७	३८	ऐं.	२४	५	वि.	१३	२०	१५	२८	७	२०	कु. ९।११	५	२६	७	१४	१	१२	४५	३३	भ. १३।२० या., पंचक प्रा. ९।११,
३४	३३	८	चं.	३६	२०	श.	३५	५५	वै.	१८	१५	बा.	९	५	१६	२९	८	२१	कुम्भ	५	२६	७	१५	१	१३	४३	५	बुध कृत्ति. में २८।२७,
३४	३५	९	मं.	३५	१८	पू.भा.	३५	४५	वि.	१३	३५	तै.	६	१९	१७	३०	९	२२	मी २०।४८	५	२५	७	१५	१	१४	४०	३६	
३४	३७	१०	बु.	३४	३८	उ.भा.	३६	५२	प्री.	१०	८	व.	४	५८	१८	३१	१०	२३	मीन	५	२५	७	१६	१	१५	३८	७	भ. ४।५६ उ., ३८।३८ या., बुध वृष में १८।१२.
३४	४०	११	गु.	३५	१८	रे.	३९	१५	आ.	७	४०	ब.	४	५८	१९	जू.१	११	२४	मे ३९।१५	५	२४	७	१६	१	१६	३५	३८	पंचक स. ३९।१५, जून प्रा., अपरा ११ व्र. स., भद्रकाली ११ (पंजाब)
३४	४२	१२	शु.	३७	२	अ.	४२	४५	सौ.	६	१३	कौ.	६	१०	२०	२	१२	२५	मेष	५	२४	७	१७	१	१७	३३	९	मंगल मघा सिंह में ५।४५, शुक्र पुन. में २४।२२, [वि. मु. अश्वि.]
३४	४३	१३	श.	३९	४८	भ.	४७	१०	शो.	५	३०	ग.	८	२५	२१	३	१३	२६	मेष	५	२४	७	१७	१	१८	३०	३९	भ. ३९।४८ उ., बुध पूर्व में अस्त २०।१५, शनि प्रदोष व्र.,
३४	४५	१४	र.	४३	२५	कृ.	५२	२५	अ.	५	३५	वि.	११	३६	२२	४	१४	२७	वृ. ३।३९	५	२४	७	१८	१	१९	२८	८	भ. ११।३६ या.,
३४	४७	३०	चं.	४७	५०	रो.	५८	२७	सु.	६	२०	च.	१५	३८	२३	५	१५	२८	वृष	५	२३	७	१८	१	२०	२५	३६	बुध रोहि. में २४।४२, सोमवती ३०, भावुका ३०, वट सावित्री व्र.;

ज्येष्ठ कृ. ८ चन्द्र, इष्ट ०।१०

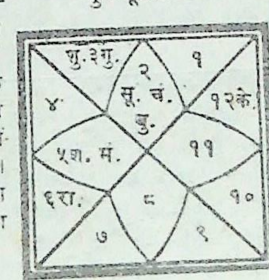
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	३	०	२	२	४	५	११
१३	२७	२५	१४	१४	१	९	९
४३	५२	४९	५५	४४	४	९	९
१४	२०	१७	५८	१९	५	४२	४२
५७	३१	१०७	१२	७१	३	३	३
३३	०	४४	३३	४७	२६	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	प्र.	प्र.
रोहि. १	आश्ले. ४	भर. ४	आर्द्रा ३	आर्द्रा ३	मघा १	उ.फा. ४	उ.भा. २

कुं. सूर्योदये

३गु. शु. | २ | १बु. | ४मं. | सू. | १२के. | ५श. | ११चं. | ६रा. | ८ | १० | ७ | ९

लोक भविष्य—इस पक्ष में गुरु एवं शुक्र की भोगांश-युति हो रही है—'गुरु-शुक्रौ यदैकस्थौ नर-युद्धं तदा भवेत् । अकाले वा भवेद्वृष्टिः जगत्यां नात्र संशयः ॥' कहीं आकालिक अतिवर्षण से हानि हो, कहीं राजनैतिक परिस्थिति की विषमता से युद्ध की स्थिति बने । पश्चात् में अमा. के दिन शनि-मंगल की युति भी दक्षिणी एवं पश्चिमी देशों में किसी विषम स्थिति को जन्म देगी । अप्रिय-घटनाएं घटेंगी । कहीं तूफान, आगजनी की दुर्घटना से हानि होगी । किसी विशेष व्यक्ति के अपदस्थ या निधन का समाचार मिले ।

कुं. सूर्योदये



ज्येष्ठ कृ. ३० चन्द्र, इष्ट ०।१७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	१	२	२	४	५	११
२०	१	९	१६	२३	१	८	८
२५	३२	१०	२४	५	३०	४७	४७
५०	२	४	४६	४६	०	२७	२७
५७	३१	१५२	१२	७१	४	३	३
२८	५३	४७	५२	२५	३	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
रोहि. ४	मघा १	कृत्ति. ४	आर्द्रा ३	पुन. १	मघा १	उ.फा. ४	उ.भा. २

ग्रहचाल एवं बाजार का रुख—२५ मई से लगभग पक्ष के मध्य तक तिल तेल एरण्ड अलसी सरसों मूंगफली गुड़ खाण्ड घी गेहूं जौ चना ज्वार बाजरा चावल मटर रुई कपास सूत ऊन एवं अफीम के भाव में तेजी का रुख रहेगा । २ जून से तेलवाना रसकस एवं धातुओं में अच्छी तेजी का योग है । व्यापारी विचार पूर्वक काम करें ।

आकाश लक्षण—इस पक्ष में गर्मी का जोर रहेगा । लेकिन बम्बई गोआ सिक्कम सूरत भूटान शिलांग आसाम बंगाल काठमाण्डू आदि में ३१ मई तथा २, ३ जून को वर्षा होगी । पंजाब हरयाणा हि. प्र. में भी २, ३ जून को बादल चाल, बूंदाबांदी सम्भव है ।

शकुन विचार—ज्ये. कृ. २ को यदि दक्षिण की वायु चले तो घी तिल तेल खरीदने से आश्विन में लाभ मिले । ज्येष्ठ में यदि दक्षिण दिशा में मेघ गर्जना हो तो तेलबीया के स्टाक से चौथे माह में उत्तम लाभ मिलता है ।

(... सन् १९७८ ई.), उ. प्र.,-गो., ग्रीष्म ऋतु

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५ | तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टै. टा. उदय-कालिक | ... पश्चिम कपाल में दीखेंगे ।

श्री वि. सं. २०३५, शाक १९००, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५ | तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टैं. टा. | उदय-कालिक (६ से २० जून तक, सन् १९७८ ई.), उ. अ.,-गो., ग्रीष्म ऋतु

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	अं.	मा.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३४	४९	१	मं.	५२	५५	मृ.	६०	०	धु.	७	३५	कि.	२०	२२	२४	६	१६	२९	मि३१।४८	५	२३	७	१९	१	२१	२३	३	गुरु आर्द्रा ४ में ११।१८, [बि. मु. मृग.]
३४	५०	२	बु.	५८	३२	मृ.	५	१०	शू.	९	२२	बा.	२५	४८	२५	७	१७	३०	मिथुन	५	२३	७	१९	१	२२	२०	३०	चन्द्र दर्शन मु. १५,
३४	५२	३	गु.	६०	०	आ.	१२	१८	गं.	११	३२	तै.	३१	३३	२६	८	१८	१	मिथुन	५	२३	७	२०	१	२३	१७	५५	सूर्य मृग. में २।१२, रजब मु.प्रा., रम्भा व्र., श्री प्रताप जयन्ती,
३४	५३	३	शु.	४	३५	पुन.	१९	५०	वृ.	१४	०	ग.	४	३५	२७	९	१९	२	क. २१५७	५	२३	७	२०	१	२४	१५	१९	भ. ३७।३८ उ.,
३४	५४	४	श.	१०	४२	पु.	२७	२०	ध्रु.	१६	३०	वि.	१०	४२	२८	१०	२०	३	कर्क	५	२३	७	२०	१	२५	१२	४२	भ. १०।४२ या., शुक्र कर्क में ४८।५८, व. नेप्च्यून ज्येष्ठा २ में ★
३४	५५	५	र.	१६	३७	आश्ले.	३४	३०	व्या.	१८	४८	बा.	१६	३७	२९	११	२१	४	सि३४।३०	५	२३	७	२१	१	२६	१०	५	बुध मृग. में ४४।२५, [बि. मु. मघा]
३४	५६	६	चं.	२१	४७	म.	४०	५२	ह.	२०	३०	तै.	२१	४७	३०	१२	२२	५	सिंह	५	२३	७	२१	१	२७	७	२६	विन्ध्यवासिनी पूजा, [बि. मु. मघा]
३४	५७	७	मं.	२५	४५	पू.फा.	४५	५७	व.	२१	२०	व.	२५	४५	३१	१३	२३	६	सिंह	५	२२	७	२१	१	२८	४	४७	भ. २५।४५ उ., ५६।५५ या., शुक्र पुष्य में ३८।०,
३४	५९	८	बु.	२८	५	उ.फा.	४९	१७	सि.	२०	५५	ब.	२८	५	३२	१४	२४	७	क. ११४७	५	२२	७	२२	१	२९	२	६	बुध मिथुन में ४३।१५, मेला क्षीर भवानी (काश्मीर),
३५	०	९	गु.	२८	२५	ह.	५०	४३	व्य.	१८	५५	कौ.	२८	२५	आ.१	१५	२५	८	कन्या	५	२२	७	२२	१	२९	५९	२५	स. सूर्य मिथुन में ०।३७, पुण्यकाल १६।३७ या., मु. ३०,
३५	१	१०	शु.	२६	४०	चि.	५०	०	व.	१५	२०	ग.	२६	४०	२	१६	२६	९	तु. २०।२१	५	२२	७	२३	२	०	५६	४४	भ. ४४।४५ उ., श्री गंगा दशहरा,
३५	१	११	श.	२२	५०	स्वा.	४७	१२	प.	१०	०	वि.	२२	५०	३	१७	२७	१०	तुला	५	२२	७	२३	२	१	५४	२	भ. २२।५० या., बुध आर्द्रा में ४६।१२, निर्जला ११ व्र, स.,
३५	१	१२	र.	१७	२	वि.	४२	४०	शि.	४	४०	बा.	१७	२	४	१८	२८	११	वृ. २८।४८	५	२२	७	२३	२	२	५१	१९	प्रदोष व्र., चम्पक १२, [बि. मु. अनु.] [बि. मु. स्वा.]
३५	१	१३	चं.	९	३८	अनु.	३६	३७	सा.	४५	१२	तै.	९	३८	५	१९	२९	१२	वृश्चिक	५	२२	७	२३	२	३	४८	३५	[बि. मु. अनु.] ★ १६।५८, बलिदान दिन श्री गुरु अर्जुन देव जी,
३५	१	१४	मं.	०	५३	ज्ये.	२९	३५	शु.	३४	५२	व.	०	५३	६	२०	३०	१३	ध. २९।३५	५	२३	७	२४	२	४	४५	५०	भ. ०।५३ उ., २६।१२ या., सत्य व्र., जन्मदिन श्री हजरत अली, [बि. मु. मू.]
अवम		१५	मं.	५१	३२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पूर्णिमा तिथि क्षय

ग्रह दर्शन:—बुध अस्त है। सायं गु.शु.श.मं. पश्चिम कपाल में दीखेंगे। १२ जून को सायं पश्चिम कपाल में मं. मघा योगतारा से केवल ८' उत्तर की ओर होगा। और वह रात्रि में १० घं. ३० मि. तक देखा जा सकेगा।

ज्येष्ठ शु. ८ बुध, इष्ट ०।२०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	१	२	३	४	५	११
२९	६	२८	१८	३	२	८	८
२	२३	२५	२१	४६	९	१८	१८
२५	५	३५	४८	२४	२२	५०	५०
५७	३२	१३२	१३	७०	४	३	३
१९	५३	०	१०	५१	४६	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये

३गु. | २ | १ | ४शु. | सू. बु. | १२के. | श. ५चं. मं. | ११ | ६रा. | ८ | १० | ७ | ९

लोक भविष्य—इस पक्ष में सिंह राशि के शनि मं. है, एवं एक ही गोलार्ध में सभी ग्रह चल रहे हैं:—यह ग्रह स्थिति कहीं शासन एवं शासित में संघर्ष, कहीं अन्दरूनी अशान्ति कहीं शान्त्यर्थ सैन्यबल का प्रयोग करने को बाधित करेगी। मूल्य वृद्धि-नियन्त्रणार्थ व्यापार पर अंकुश लगाना होगा। कोई अचानक दुर्घटना घटित हो, वायु-किंवा आगजनी की घटना से हानि होने का भी योग है—"धमारयोः पवन-हुताशजं भयं ह्युदृष्टयो रसहितयोश्च सद्ग्रहैः। किसी विशेष व्यक्ति के निधन का समाचार मिलेगा। १२ तारीख को मंगल का मघा-योगतारा के साथ पश्चिम-कपाल में सान्निध्य भी विशेष घटनाप्रद रहेगा।

कुं. सूर्योदये

४शु. | ३गु. सू. बु. | २ | ५श. मं. | १ | ६रा. | १२के. | ७ | ९ | ११ | ८चं. | १०

ज्येष्ठ शु. १४ मंगल, इष्ट ०।१७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	४	२	२	३	४	५	११
४	९	११	१९	१०	२	७	७
४६	४१	२८	४१	५०	३९	५९	५९
८	४९	५४	९	२८	६	४५	४५
५७	३३	१२६	१३	६९	५	३	३
१३	२८	५६	१८	२५	१२	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्रह चाल एवं बाजार का रुख—इस पक्ष में कस्तूरी उड़द मूंग चना मोठ बाजरा अलसी नारियल तेज हों, इत्र फुलेल आदि सुगन्धित पदार्थ मन्दे होंगे। १० जून को शुक्र के कर्क में आने पर रुई में अच्छी मन्दी आ सकती है लेकिन गुड़ खाण्ड अलसी एरण्ड तेल घी शक्कर एवं कुछ अनाजों में तेजी आएगी,—"यदा दैत्यगुरुः कर्के रसानां वै महर्घता। सर्व धान्य महर्घत्वं मेघाः स्वल्प जलप्रदाः॥" ८ जून से रेशम एवं सण में तेजी आकर बाद में मन्दी का रुख रहेगा।

आकाश लक्षण—६,७,१०,१४,१५,१७ एवं २० जून को बम्बई गुजरात एवं म.प्र. के कुछ भागों में वर्षा बादलचाल एवं बूंदाबांदी के योग हैं।

शकुन विचार—यदि ज्येष्ठ शु. सप्तमी को बादल गरजें, दक्षिण की वायु चले तो तिल तेल का स्टाक करने से कार्तिक में लाभ हो।

श्री वि. सं. २०३५, शाक १९००, आषाढ़ कृष्ण पक्ष६ | तारीखें | चन्द्र- भा. स्टै. टा | उदय-कालिक (२१ जून से ५ जुलाई तक, सन१९७८ई.),द.अ.,उ.-गो., वर्षा ऋतु,

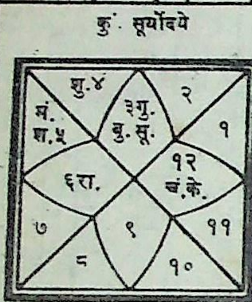
ग्रह दर्शन:-२५जून को बुध पश्चिम में उदित होगा ।२८जून को गुरु अस्त हो जाएगा । सायं शु.श.मं.को पश्चिम कपाल में देखें । २६ जून को सायं पश्चिम में बुध उदय के समय गुरु से केवल १°।४६' (♀)

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	मु.	संचार घ. प	सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३५	१	१	बु.	४१	४८	मू.	२२	०	शु.	२४	१३	बा	१६	४०	७	२१	३१	१४	धनु	५	२३	७	२४	२	५	४३	४	सूर्य आर्द्रा में५९।४३,सूर्य सा. कर्क में४५।४२,दक्षिणायन,वर्षा ऋतु☆
३५	१	२	गु.	३२	१२	पू.षा.	१४	२५	ध.	१३	३२	तै.	७	०	८	२२	आ.	१५	म.२७।३७	५	२३	७	२४	२	६	४०	१८	भ.५७।४३,उ.,शक आषाढ़ प्रा.,[वि.मु. उ.षा.]
३५	१	३	शु.	२३	१५	उ.षा.	७	१५	ऐं.	७ / ५३	१२ / ३८	वि	२३	१५	९	२३	२	१६	मकर	५	२३	७	२४	२	७	३७	३२	भ. २३।१५ या., श्री गणेश ४ व्र., -प्रा., गुरु पुन.१में२५।१८
३५	१	४	श.	१५	१८	श्र.	१ / ५६	२ / ५	वि.	४५	५	बा.	१५	१८	१०	२४	३	१७	कु.२८।३४	५	२३	७	२४	२	८	३४	४६	पंचक प्रा.२८।३४, बुध पुन. में ६।५५, शुक्र आश्ले. में ५८।४८,
३५	१	५	र.	८	३८	श.	५२	४०	प्री.	३७	४८	तै	८	३८	११	२५	४	१८	कुम्भ	५	२४	७	२४	२	९	३२	०	बुध पश्चिम में उदित ४५।८, गुरु वार्धक्य प्रा. १८।०,
३५	०	६	चं.	३	४०	पू.भा.	५१	२	आ	३१	५५	व.	३	४०	१२	२६	५	१९	मी३६।२७	५	२४	७	२४	२	१०	२९	१४	भ. ३।४० उ., ३२।३ या., मंगल पू.फा. में २८।२८,
३५	०	७	मं.	०	२५	उ.भा.	५१	१५	सौ.	२७	३०	ब	०	२५	१३	२७	६	२०	मीन	५	२४	७	२४	२	११	२६	२८	शनि मघा२में३२।५२, वेंकटेश(प्लूटो)मार्गी१८।५८,[वि.मु. धनि.]
अवम		८	मं.	५९	५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी तिथि क्षय,
३५	०	९	बु.	५९	२५	रे.	५३	७	शो.	२४	३२	तै.	२९	१५	१४	२८	७	२१	मे.५३।७	५	२४	७	२४	२	१२	२३	४२	पंचक स. ५३।७, गुरु अस्त १८।० (गुरु अस्त २८ जून)
३४	५९	१०	गु.	६०	०	अ.	५६	३०	अ.	२२	५०	व.	३०	२०	१५	२९	८	२२	मेष	५	२५	७	२५	२	१३	२०	५६	भ. ३०।२० उ., बुध कर्क में १८।२५.
३४	५८	१०	शु.	१	१५	भ.	६०	०	सु.	२२	१८	वि.	१	१५	१६	३०	९	२३	मेष	५	२५	७	२५	२	१४	१८	१०	भ. १।१५ या.,
३४	५७	११	श.	४	२५	भ.	१	८	धृ.	२२	३८	बा.	४	२५	१७	जु१	१०	२४	वृ.१७।३३	५	२६	७	२५	२	१५	१५	२४	बुध पुष्य में ९।१०, योगिनी ११ व्र. म., जुलाई प्रा.,
३४	५६	१२	र.	८	३०	कृ.	६	५०	शू.	२३	४५	तै.	८	३०	१८	२	११	२५	वृष	५	२६	७	२५	२	१६	१२	३८	प्रदोष व्र., (♀)उत्तर होगा; बुध को सुगमता से पहिचान सकते हैं।
३४	५५	१३	चं.	१३	२५	रो.	१३	१०	गं.	२५	२०	व	१३	२५	१९	३	१२	२६	मि४६।३९	५	२७	७	२५	२	१७	९	५२	भ. १३।२५ उ., ४६।९ या.,
३४	५४	१४	मं.	१८	५२	मृ.	२०	८	वृ.	२७	२५	श.	१८	५२	२०	४	१३	२७	मिथुन	५	२७	७	२५	२	१८	७	६	
३४	५३	३०	बु.	२४	४०	आ.	२७	२२	ध्रु	२९	४०	ना	२४	४०	२१	५	१४	२८	मिथुन	५	२८	७	२५	२	१९	४	२१	सूर्य पुन. में ५८।२०,

आषाढ़ कृ. ७ मं., इष्ट ०।१५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	४	२	२	३	४	५	११
११	१३	२५	२१	१९	३	७	७
२९	३८	४०	१४	१	१६	३७	३७
४२	२	४९	४०	४०	२५	३०	३०
५७	३४	[illegible]	१३	६९	५	३	३
१३	७	५९	२५	५१	४०	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा ३	पू.फा. १	पुन. ३	पुन. १	आश्ले. १	मघा १	उ.फा. ४	उ.भा. ३

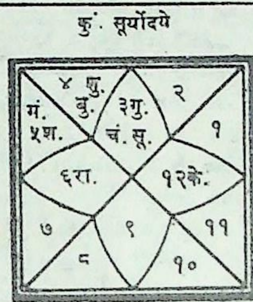
कुं. सूर्योदये



लोक भविष्य—इस पक्ष में श. मं. का एक राशिस्थ होना कुछ देशों में सैनिक हलचल करेगा। कहीं अतिवर्षण एवं कहीं अवर्षण से हानि होगी, कहीं दुर्भिक्ष से जन जीवन अशान्त रहेगा। सीमा प्रान्तों पर सुरक्षा प्रबन्ध दृढ़ करने होंगे। मघा नक्षत्र का शनि अफगानिस्तान जापान बंगलादेश रूस-चीन आदि के लिए नेष्ट फलप्रद रहेगा।

ग्रहचाल एवं बाजार का रुख—खल, अलसी, जौ, चना में जून के चौथे सप्ताह में तेजी चलेगी। २४ जून के लगभग तुअर चावल में मंदी के योग हैं, १५ दिन के भीतर रूई में अच्छी मन्दी बनेगी—बाजार का रुख देख कर काम करें। सूत सण कपास में भी मन्दे का योग है। २७ जून को शनि मघा के तृतीय चरण में आ रहा है, सण दाख हींग तेज होंगे। जून के अन्त में मूंगफली सरसों सोना ऊनी कपड़े मोती जवाहरात लाख ज्वार बाजरा मोठ हरड़ सुपारी सोंठ गुग्गुल तेज होंगे।

कुं. सूर्योदये



आषाढ़ कृ. ३० बुध, इष्ट ०।५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	४	३	२	३	४	५	११
१९	१८	९	२३	२८	४	७	७
४	१३	५३	२	१८	३	१२	१२
२७	२८	३५	२४	११	५७	५	५
५७	३४	९७	१३	६९	६	३	३
१४	४९	१	३१	१०	९	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा ४	पू.फा. ३	पुष्य ३	पुन. १	आश्ले. ४	मघा ३	उ.फा. ४	उ.भा. ३

आकाश लक्षण—२१ एवं २४ से २९ जून तक हि.प्र., पंजाब, हरयाणा, उ.प्र. भूटान, शिलांग आदि में अनेकत्र वर्षा के योग है।

शकुन विचार—यदि आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा को बिजली गरजे, मेघ व वर्षा हो तो दो मास तक वर्षा का अवरोध रहे, अनाज तेज हो। यदि आषाढ़ कृष्ण ८ को चन्द्रोदय बादलों में हो तो आगे अच्छी वर्षा हो।

श्री वि. सं. २०३५, शाक १९०० आषाढ़ शुक्ल पक्ष ७ | तारीखें | चन्द्र- भा. स्टै. टा | उदय-कालिक (६ से २० जुलाई तक, सन १९७८ ई.) द. अ.-उ.गो., वर्षा ऋतु,

श्री वि. सं. २०३५, शाक १९००, आषाढ़ शुक्ल पक्ष ७ | तारीखें | चन्द्र-संचार | भा. स्टैं. टा. | उदय-कालिक (६ से २० जुलाई तक, सन् १९७८ ई.), द. अ.,-उ.गो., वर्षा ऋतु,

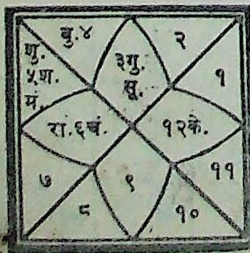
ग्रह दर्शन:-गुरु अस्त है। १० जुलाई को सायंकाल के समय शनि, शुक्र से केवल ७' दक्षिण में दीखेगा, इस समय बुध पश्चिम में तथा मंगल पश्चिम कपाल के मध्य में होगा।

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	मु.	संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५२	१	गु.	३०	४२	पुन.	३४	५२	व्या.	३२	८	ब.	३०	४२	२२	६	१५	२९	क. १८।०	५	२८	७	२५	२	२०	१	३६	गुरु पुन. २ में १८।१२, शुक्र मघा सिंह में २८।२५
३४	५०	२	शु.	३६	४५	पु.	४२	१८	ह.	३४	३२	बा.	३	४४	२३	७	१६	३०	कर्क	५	२९	७	२५	२	२०	५८	५१	चन्द्र दर्शन मु. ३०, **श्री जगदीश-रथोत्सव**,
३४	४८	३	श.	४२	३५	आश्ले.	४९	३५	व.	३६	५२	तै.	९	४०	२४	८	१७	शा. १	सिं ४९।३५	५	२९	७	२५	२	२१	५६	६	शाबान मु. प्रा.,
३४	४६	४	र.	४७	५०	म.	५६	१५	सि.	३८	४५	व.	१५	१२	२५	९	१८	२	सिंह	५	३०	७	२४	२	२२	५३	२१	भ. १५।१२ उ., ४७।५० या., बुध आश्ले. में २१।१५,
३४	४४	५	चं.	५२	१५	पू.फा.	६०	०	व्य.	४०	२	ब.	२०	३	२६	१०	१९	३	सिंह	५	३१	७	२४	२	२३	५०	३७	
३४	४२	६	मं.	५५	२२	पू.फा.	२	०	व.	४०	२२	कौ.	२३	४८	२७	११	२०	४	क. १८।७	५	३१	७	२४	२	२४	४७	५२	बुध मघा सिंह में ४८।३७, सत्य व्र., सायं वायु परीक्षा,
३४	४०	७	बु.	५६	५३	उ.फा.	६	२८	प.	३९	३२	ग.	२६	८	२८	१२	२१	५	कन्या	५	३२	७	२४	२	२५	४५	७	भ. ५६।५३ उ., विवस्वत् सप्तमी,
३४	३८	८	गु.	५६	३०	ह.	९	२२	शि.	३७	१२	वि.	२६	४२	२९	१३	२२	६	तु. ३९।५०	५	३२	७	२४	२	२६	४२	२१	भ. २६।४१ या.,
३४	३६	९	शु.	५४	७	चि.	१०	१८	सि.	३३	२२	बा.	२५	१८	३०	१४	२३	७	तुला	५	३३	७	२३	२	२७	३९	३५	★दिन, मु. ३०, हरिशयनी ११ व्र.स., चातुर्मास्य व्रत नियमादि प्रा.,
३४	३४	१०	श.	४९	४५	स्वा.	९	२०	सा.	२९	५२	तै.	२१	५६	३१	१५	२४	८	वृ. ५२।५	५	३३	७	२३	२	२८	३६	४९	राहु उ.फा., ३ केतु उ.भा. १ में ५।१२,
३४	३२	११	र.	४३	३५	वि.	६	२०	शु.	२०	४५	व.	१६	४०	श्रा. १	१६	२५	९	वृश्चिक	५	३४	७	२३	२	२९	३४	४	भ. १६।४० उ., ४३।४५ या., सं. सूर्य कर्क में २७।१०, पुण्य सारा★
३४	३०	१२	चं.	३५	५२	अनु.	१, ५५	४०, ३२	शु.	१२	२५	व.	९	४४	२	१७	२६	१०	ध. ५५।३२	५	३४	७	२३	३	०	३१	१९	सोम प्रदोष व्र.,
३४	२७	१३	मं.	२६	५८	मू.	४८	२२	ब.	[illegible]	[illegible]	कौ.	१	२५	३	१८	२७	११	धनु	५	३५	७	२२	३	१	२८	३५	शुक्र पू.फा. में ९।३५,
३४	२५	१४	बु.	१७	२२	पू.षा.	४०	४२	वै.	४१	३७	व.	१७	२२	४	१९	२८	१२	म. ५३।४६	५	३५	७	२१	३	२	२५	५१	भ. १७।२२ उ., ४२।२५ या., सूर्य पुष्य में ५६।४८, मंगल उ.फा. में १९।५,
३४	२२	१५	गु.	७	२८	उ.षा.	३२	५८	वि.	३०	४७	ब.	७	२८	५	२०	२९	१३	मकर	५	३६	७	२१	३	३	२३	८	**गुरु-पूर्णिमा**, गुरु व्यास पूजा,

आषा. शु. ८ गु., इष्ट ५९।५५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	४	३	२	४	४	५	११
२७	२३	२३	२५	८	५	६	६
३९	२९	७	३	३६	१	४३	४३
२९	५३	५४	५६	५६	८	२८	२८
५७	३५	७६	१३	६८	६	३	३
१३	३४	५६	२९	११	३६	११	११
—	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
—	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये



लोक भविष्य—६ जुलाई को शुक्र सिंह में आ जाता है, वायु का जोर रहेगा। कहीं वर्षा के अभाव से कृषक वर्ग चिन्तित रहेगा,—'सिंह शुक्र जब होय भवानी, चाले पवन नहीं बर्षे पानी"। लेकिन इस पक्ष की द्वितीया नवमी शुक्रवारी होने से कुछ प्रान्तों में पर्याप्त वर्षा होगी, दैनिक जीवनोपयोगी वस्तुओं के भाव गिरेंगे—"आषाढ़ शुक्ल पक्षे च द्वितीया नवमी दिने। चन्द्रेज्य भृगुवारा: स्यु: सुवृष्टिश्च समर्घता॥" लूट पात डकैती की घटनाएं एवं कोई यान दुर्घटना भी हो।

कुं. सूर्योदये

बु.५श. मं.शु. | ३गु. | ६रा. | ४सू. | २ | ७ | १ | ८ | १०चं. | १२के. | ९ | ११

आषा. शु. १५ गुरु, इष्ट ५९।४५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	४	४	२	४	४	५	११
४	२७	१	२६	१६	५	६	६
२०	४०	१३	३८	३१	४८	२१	२१
८	२४	१८	१३	३३	११	१४	१४
५७	३६	५८	१३	६७	६	३	३
१५	५	२८	२५	१४	५३	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्रह चाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ से ही सीसा तांबा जौ चना मजीठ लाल रंग की वस्तुएं तेज होंगी, रुई में ८-१० दिन मन्दे के बाद तेजी का रुख रहें। मूंगफली, बादाम सुपारी तिल तेल सरसों नारियल तेज हों। १९ जुलाई के बाद मध जौ ज्वार बाजरा सोंठ गुग्गुल मोम हींग लाख सण रुई ऊनी वस्त्र सिक्का तथा घोड़ा आदि पशु तेज रहेंगे, सम्बंधित व्यापारी लाभ ले सकते हैं।

आकाश लक्षण—इस पक्ष में पंजाब, हरयाणा, हि.प्र., उ.प्र., राजस्थान, दिल्ली, म.प्र. गुजरात आदि में सर्वत्र बादल चाल बूंदाबांदी वर्षा एवं झंझावात के योग हैं। विशेषत: ६ एवं १९ जुलाई को सार्वजनिक वर्षा हो।

शकुन विचार—यदि आषाढ़ शु. ५ को पश्चिम की वायु चले, बादल गरजें, वर्षा हो, किंवा इन्द्र धनुष दीखे तो अन्न संग्रह से आगे लाभ रहे।

श्री वि. सं. २०३५, शाक १९००, श्रावण कृष्ण पक्ष ८ | तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टै. टा. | उदय-कालिक (२१ जुलाई से ४ अग. तक, सन् १९७८ई.), द.भ., उ.-गो., वर्षा ऋतु,

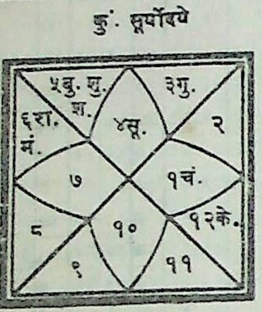
दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	मु.	संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन:-२२ जुलाई को गुरु उदित होगा। सायं बुध शुक्र शनि एवं मंगल को पश्चिम कपाल में देख सकेंगे।
प्रथम		१	गु.	५७	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
३४	२०	२	शु.	४८	३८	श्र.	२५	३७	प्री.	२०	२०	तै.	२३	११	६	२१	३०	१४	कु.५२।२५	५	३६	७	२०	३	४	२०	२४	पंचक प्रा. ५२।२५, गुरु पुन.३ में ७।४२, यूरेनस मार्गी ५९।४२
३४	१७	३	श.	४०	४३	ध.	१९	१२	आ.	१०	३२	ब.	१४	४०	७	२२	३१	१५	कुम्भ	५	३७	७	२०	३	५	१७	४०	भ. १४।४० उ., ४०।४३ या., गुरु उदित ३६।०,
३४	१४	४	र.	३४	१२	श	१४	५	सौ.	१ ५४	४५ २५	ब.	७	२८	८	२३	आ१	१६	मी५६।३०	५	३८	७	१९	३	६	१४	५८	सूर्य सा. सिंह में १२।८, शक श्राव.प्रा., श्री गणेश४व्र..
३४	११	५	सो.	२९	२५	पू.भा.	१०	३८	अ.	४८	२७	कौ.	१	४८	९	२४	२	१७	मीन	५	३८	७	१९	३	७	१२	१६	मंगल कन्या में ५१।५,
३४	८	६	मं.	२६	२२	उ.भा.	९	२	सु.	४४	५	व.	२६	३२	१०	२५	३	१८	मीन	५	३९	७	१८	३	८	९	३५	भ. २६।३२ उ., ५६।५ या., गुरु बाल्य स.३६।०,
३४	६	७	बु.	२५	३७	रे.	९	२५	धृ.	४१	२६	ब.	२५	३७	११	२६	४	१९	मे. ९।२५	५	३९	७	१८	३	९	६	५४	पंचक स.९।२५,
३४	३	८	गु.	२६	३७	अ.	११	३७	शू.	४०	०	कौ.	२६	३७	१२	२७	५	२०	मेष	५	४०	७	१७	३	१०	४	१४	
३४	०	९	शु.	२९	१५	भ.	१५	३०	गं.	३९	५५	ग.	२९	१५	१३	२८	६	२१	वृ.३१।५०	५	४१	७	१७	३	११	१	३६	शनि मघा ३ में २३।१८,
३३	५७	१०	श.	३३	१८	कृ.	२०	५०	वृ.	४०	५०	व.	१	१७	१४	२९	७	२२	वृष	५	४१	७	१६	३	११	५८	५८	भ. ११।६ उ., ३३।१८ या.,
३३	५४	११	र.	३८	२०	रो.	२७	१२	ध्रु	४२	३०	ब.	५	४९	१५	३०	८	२३	वृष	५	४२	७	१५	३	१२	५६	२२	शुक्र उ.फा. में ७।१२, कामिका ११ व्र. स.,
३३	५०	१२	सो.	४४	२	मृ	३४	१५	व्या	४४	३८	कौ.	११	११	१६	३१	९	२४	मि. ०।४३	५	४३	७	१५	३	१३	५३	४८	
३३	४७	१३	मं.	५०	५	आ.	४१	४०	ह.	४७	२	ग.	१७	४	१७	प्र१	१०	२५	मिथुन	५	४३	७	१४	३	१४	५१	१५	भ. ५०।१५ उ., अगस्त प्रा., भौम प्रदोष व्र., लो. मा. तिलक-जयन्ती
३३	४४	१४	बु	५६	५	पुन.	४९	५	व.	४९	३०	वि.	२३	५	१८	२	११	२६	क.३२।१४	५	४४	७	१४	३	१५	४८	४३	भ. २३।५ या., सूर्य आश्ले. में ५३।३०, शुक्र कन्या में ९।४५,
३३	४१	३०	गु.	६०	०	पु.	५६	२५	लि.	५१	४५	च.	२९	०	१९	३	१२	२७	कर्क	५	४५	७	१३	३	१६	४६	११	हरयाली ३०,
३३	३७	३०	शु	१	५५	आश्ले.	६०	०	व्य.	५३	४८	ना.	१	५५	२०	४	१३	२८	कर्क	५	४५	७	१२	३	१७	४३	४०	बुध वक्री ५४।३२,

गुरु उदय २२ जुलाई

श्रावण कृ.८ गुरु, इष्ट५८।३५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	५	४	२	४	४	५	११
११	१	६	२८	२४	६	५	५
१	५४	५४	११	१९	३७	५८	५८
१०	३४	४५	४८	१५	११	५९	५९
५७	३६	३४	१३	६६	७	३	३
२८	३७	३०	१७	१३	८	११	११
—	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
—	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य. ३	उ.फा.२	मघा ३	पुन. ३	पू.फा.४	मघा २	उ.फा.३	उ.भा.१

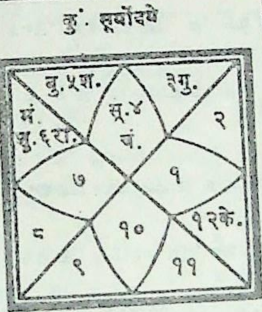
कुं. सूर्योदये



लोक भविष्य—२४ जुलाई को मंगल कन्या राशि में स्थित राहु से योग करता है दोनों उ.फा. नक्षत्र में हैं। राहु मंगल एक राशि एक नक्षत्र पर होने से दुर्भिक्ष की स्थिति पैदा करते हैं, अनेकत्र वर्षा के अभाव किंवा अति वर्षा से हानि होगी, कृषक वर्ग चिन्तित रहेगा—"राहु रंगारकश्चैक-राशि-ऋक्षगतौ तथा। महाभयं च सस्यानां नच वृष्टिः प्रजायते॥ राजनैतिक परिस्थिति उलझनपूर्ण रहे अनेकत्र असन्तोष दिखाई दे।

ग्रहचाल एवं बाजार का रुख—२४ जुलाई के लगभग रूई में खब अच्छी तेजी आने का योग है। साथ ही सोना चांदी ऊनी व सूती वस्त्र चना मजीठ नील एवं अलसी आदि में भी तेजी आएगी। २ अगस्त के लगभग चावलों में विशेष तेजी का झटका आ सकता है, इन दिनों गुड़ खाण्ड शक्कर भी तेज रहेंगे, जौ चना आदि अनाजों में मन्दी का वातावरण रहेगा।

कुं. सूर्योदये



श्रावण कृ. ३० शुक्र, इष्ट५८।२३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	५	४	२	५	४	५	११
१८	६	९	२९	३	७	५	५
४०	४९	२७	५७	४	२५	३३	३३
३१	३३	१२	२८	१६	३	३३	३३
५७	३७	२	१३	६४	७	३	३
२९	१२	४९	५	४८	२१	११	११
—	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
—	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले.१	उ.फा.४	मघा ३	पुन. ३	उ.फा.२	मघा ३	उ.फा.३	उ.भा.१

आकाश लक्षण—इस पक्ष में पंजाब, हि.प्र., हरयाणा, उ प्र. एवं अन्यत्र प्रान्तों में वर्षा के योग हैं, विशेषत: २१,२२,२४,२८ जुलाई एवं २,४ अगस्त को अनेकत्र अच्छी वर्षा हो। लेकिन कुछ स्थानों पर वर्षा न होने से चिन्ता होगी।

शकुन विचार—यदि श्रावण कृ. ४, ५ को बादल गरजें, बिजली चमके, वर्षा हो, तो सुभिक्ष रहे। यदि श्रावण कृ. ५ को आकाश निर्मल रहे तो १८ पहर में वर्षा हो।

श्रीवि. सं. २०३५, शाक १९००, श्रावण शुक्ल पक्ष ६ | तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टै. टा. | उदय-कालिक (५ से १८ अगस्त तक, सन् १९७८ ई.), द. अ.,-उ.गो, वर्षा ऋतु,

...८ अगस्त को शनि एवं ११ अगस्त को बुध पश्चिम में ...स्त होगा। ८ अगस्त को सायं शुक्र चन्द्रमा से कुछ पश्चिम-दक्षिण

वीवि. सं. २०३५, शाक १९००, श्रावण शुक्ल पक्ष ... उदय-कालिक (५ से १८ अगस्त तक, सन् १९७८ ई.)

ग्रह दर्शन—९ अगस्त को शनि एवं ११ अगस्त को बुध पश्चिम में अस्त होगा। ८ अगस्त को सायं शुक्र चन्द्रमा से कुछ पश्चिम-दक्षिण होगा। इसी दिन चन्द्र मंगल की भेद युति होगी। इसी समय मंगल, चन्द्र एवं शुक्र के मध्य दिखाई देगा। (चन्द्र-मंगल-भेद युति भारत में अदृश्य है।)

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	मु.	संचार घ. प.	सू.उ. घं.	मि.	सू.अ. घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३३	३३	१	श.	७	२०	आश्ले.	३	२०	व.	५५	२२	व.	७	२०	२१	५	१४	२९	सिं. ३।२०	५	४६	७	११	३	१८	४१	११	गुरु पुन. ४ कर्क में १०।५५, चन्द्र दर्शन मु. ३०,
३३	३०	२	र.	१२	१८	म.	९	४८	प.	५६	३०	कौ.	१२	८	२२	६	१५	१	सिंह	५	४६	७	१०	३	१९	३८	४१	रमजान मु. प्रा.,
३३	२६	३	चं.	१६	२५	पू.फा.	१५	२७	शि.	५६	४८	ग.	१६	२५	२३	७	१६	२	क. ३१।३८	५	४७	७	९	३	२०	३६	१२	भ. ४८।० उ., मधुश्रवा ३, सन्धारा तीज,
३३	२३	४	मं.	१९	३५	उ.फा.	२०	१२	सि.	५६	१५	वि.	१९	३५	२४	८	१७	३	कन्या	५	४७	७	८	३	२१	३३	४४	भ. १९।३५ या.,
३३	२०	५	बु.	२१	२८	ह.	२३	४०	सा.	५४	३८	ग.	२१	२८	२५	९	१८	४	तु. ५४।४१	५	४८	७	८	३	२२	३१	१७	शनि अस्त ३९-२०, नाग पञ्चमी, श्री कल्कि जयन्ती,
३३	१६	६	गु.	२१	५०	चि.	२५	४२	शु.	५१	४२	तै.	२१	५०	२६	१०	१९	५	तुला	५	४९	७	७	३	२३	२८	५१	मंगल हस्त में ५।१०, वर्ण षष्ठी,
३३	११	७	शु.	२०	४०	स्वा.	२६	१०	शु.	४७	३०	व.	२०	४०	२७	११	२०	६	तुला	५	५०	७	६	३	२४	२६	२७	भ.२०।४०उ.,४९।१६या.,बुध पश्चिम में अस्त १५।४५,शुक्र हस्त
३३	७	८	श.	१७	५२	वि.	२५	०	ब्र.	४२	०	ब.	१७	५२	२८	१२	२१	७	वृ. १०।१८	५	५०	७	५	३	२५	२४	३	श्री दुर्गाष्टमी, मेला श्री नयना देवी व चिन्तपूरणी, [हि. प्र.] में २७।३०, गोस्वामी श्री तुलसीदास जयन्ती,
३३	३	९	र.	१३	१५	अनु.	२२	५	ऐ.	३५	५	कौ.	१३	१५	२९	१३	२२	८	वृश्चिक	५	५१	७	४	३	२६	२१	४०	
३२	५९	१०	चं.	७	१०	ज्ये.	१७	५१	वै.	२७	२	ग.	७	१०	३०	१४	२३	९	ध. १७।५१	५	५१	७	३	३	२७	१९	१७	भ. ३३।३२ उ., ५९।५३ या., पवित्रा ११ व्र. स्मा.,
[illegible]	[illegible]	११	चं.	५९	५३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथि क्षय,
३२	५५	१२	मं.	५१	३२	मू.	१२	१५	वि.	१७	५८	ब.	२५	४३	३१	१५	२४	१०	धनु	५	५२	७	२	३	२८	१६	५५	पवित्रा ११ व्र. वै., भारत स्वातन्त्र्य दिवस, जयहिन्द सं. ३२ प्रा.
३२	५०	१३	बु.	४२	३७	पू.षा.	५/५८	४५/५०	प्री	५८/५८	७/१०	कौ.	१७	५	भा.	१६	२५	११	म. १९।१	५	५२	७	०	३	२९	१४	३५	सं. सूर्य मघा सिंह में ४७।१५, पुण्य अगले दिन मध्याह्न से पूर्व, मु.★४५, प्रदोष व्र.,
३२	४६	१४	गु.	३३	३२	उ.षा.	५१	४८	सौ.	४७	५५	ग.	८	५	२	१७	२६	१२	मकर	५	५३	६	५९	४	०	१२	१७	भ. ३३।३२ उ., ५९।५ या., ऋक् उपाकर्म,
३२	४२	१५	शु.	२४	३७	श्र.	४५	८	शो.	३८	१०	व.	२४	३७	३	१८	२७	१३	कु. १८।२८	५	५३	६	५८	४	१	९	५९	पंचक प्रा. १८।२८, शुक्ल-कृष्ण-यजु उपाकर्म, ऋषितर्पण, रक्षा बन्धन (राखी), मेला श्री अमरनाथ (काश्मीर), सत्य व्र.,

श्राव. शु. ८ शनि., इष्ट ५९।१०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	५	४	३	५	४	५	११
२६	११	६	१	११	८	५	५
२०	४९	३८	४१	३६	३४	८	८
५१	७	४३	१०	४८	२६	५	५
५७	३७	४२	१२	६३	७	३	३
३६	४६	२०	४८	१	३०	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	प्र.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये

मा.५ बु.
मं. शु. ६रा.
सू.४ गु.
३
२
चं ७
१
८
१०
१२के.
९
११

लोक भविष्य—श्राव. शु. पक्ष में तिथिक्षय नेष्ट हैं; कार्तिक में कहीं शासन सत्ता में परिवर्तन का संकेत मिलता है—"श्रावणे शुक्ल पक्षे च क्षीणा क्वापि तिथिर्भवेत्। तदैव कार्तिके मासे छत्र-भंगः प्रजायते॥" पक्षारंभ में ही कर्क राशि में गुरु का प्रवेश अल्पवर्षा दुर्भिक्ष अशान्ति अनेकविध रोग एवं चिन्ताओं से कष्टकारक रहेगा। शासन तन्त्र को जन-जीवन की सुविधा जुटाने एवं महंगाई को कम करने के लिए विषम स्थिति का सामना करना होगा आर्थिक स्थिति चिन्तनीय रहेगी। ७-८ अग. को शुक्र चन्द्र युति एवं चन्द्र मंगल युति म.पू. एशिया, अमेरिका, ईस्ट-इण्डीज़ एवं आस्ट्रेलिया के लिए विशेष घटनाप्रद रहेगी।

कुं. सूर्योदये

६रा.मं. शु.
४गु.
बु.५श. सू.
७
३
८
२
९
११
१
१०चं.
१२के.

श्राव. शु. १५ शुक्र. इष्ट ५९।३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	५	४	३	५	४	५	११
२	१५	१	२	१७	९	४	४
६	३६	४९	५७	५०	१९	४९	४९
४३	४१	२७	१४	५३	३८	१	१
५७	३८	५०	७	६१	७	३	३
४३	९	१४	३१	२१	३५	११	११
	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्रहचाल और बाजार का रुख—५ अगस्त को गुरु के कर्क में आने पर रुई में अच्छी मन्दी आएगी। चांदी में घटाबढ़ी के बाद कुछ तेजी रहेगी। अगस्त के तीसरे सप्ताह में गुड़ खाण्ड शक्कर तिल तेल सरसों, लाल रंग की वस्तुएं तथा रत्न तेज हों।

आकाश लक्षण—५, ९ से १२ एवं १६ अगस्त को पंजाब, हरयाणा, हि.प्र. उ.प्र., आदि में अनेकत्र बादल चाल, बूंदाबांदी एवं खण्डवृष्टि के योग हैं। तत्पश्चात् वर्षा की खेंच रहेगी।

शकुन विचार—श्राव. शु. ७ के दिन स्वाती योग में यदि वर्षा हो तो आगे फसल अच्छी होगी—ऐसा समझें। "सप्तम्यां श्रावणे मासि स्वाती योगे च वर्षति। निष्पत्तिः सर्व सस्यानां भवन्ति सुखिनो जनाः॥"

श्री बि. सं. २०३५, शाक १९००, भाद्रपद कृष्ण पक्ष १०। तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टै. टा. | उदय-कालिक | (१९अग. से२ सितं.तक,सन्१९७८ई.),द.ग्र.,उ.-गो.,वर्षा-शरद ऋतु,

ग्रह दर्शन:-२७ अगस्त को बुध पूर्व में उदित होगा। शनि अस्त है। ३१अगस्त को सायंकाल शुक्र देदीप्यमान चित्रा तारा के बिल्कुल पास दीखेगा। चित्रा तारा शुक्र से कुछ मामूली उत्तर की तरफ होगा।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	मु.	संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३२	३८	१	श.	१६	२०	ध	३९	०	अ.	२८	४०	कौ.	१६	२०	४	१९	२८	१४	कुम्भ	५	५४	६	५७	४	२	७	४२	
३२	३४	२	र.	९	८	पू.भा.	३४	३५	सु.	२०	१८	ग.	९	८	५	२०	२९	१५	मी४०।४१	५	५४	६	५६	४	३	५	२६	भ.३६।१०उ., गुरु पुष्य १ में ०।१२,
३२	३०	३	चं.	३	१३	उ.भा.	३१	२८	धृ.	१३	५	वि.	३	१३	६	२१	३०	१६	मीन	५	५५	६	५५	४	४	३	१३	भ. ३।१३ या., व. बुध आश्ले. कर्क में १३।४०, श्री गणेश ४ व्र.,
अवम		४	चं.	५९	५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
३२	२६	५	मं.	५६	४८	रे.	३०	५	शू.	७	१७	कौ.	२७	५६	७	२२	३१	१७	मे. ३०।१५	५	५६	६	५४	४	५	१	१	पंचक स. ३०।१५, [illegible]प्रा., चन्द्र षष्ठी व्र.
३२	२२	६	बु.	५६	३०	अ.	३०	४२	गं.	३	२	ग.	२६	३९	८	२३	भा.१	१८	मेष	५	५६	६	५३	४	५	५८	५०	भ.५६।३०उ., सूर्य सा.कन्या में २८।४५, शरद् ऋतु प्रा., शक भाद्रपद[illegible]
३२	१७	७	गु.	५८	८	भ.	३३	१५	वृ.	४६	२३	वि.	२७	११	९	२४	२	१९	वृ.४९।१७	५	५७	६	५२	४	६	५६	४२	भ.२७।१९या., शुक्र चित्रा में २४।५०, शनि मघा ४ में १८।२,
३२	१३	८	शु.	६०	०	कृ.	३७	२५	ध्रु.	५९	२०	बा.	२९	४६	१०	२५	३	२०	वृष	५	५८	६	५१	४	७	५४	३५	दूर्वाष्टमी व्र., श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्र.स. (जयन्ती योग) (चन्द्रोदय ★
३२	९	८	श.	१	२५	रो.	४३	८	ह.	६०	०	कौ.	१	२५	११	२६	४	२१	वृष	५	५८	६	५०	४	८	५२	२९	गुग्गा नवमी, गोकुलाष्टमी ★रात्रि ११ घं. ४५ मि.)
३२	४	९	र.	६	२	मृ	४९	५३	ह.	०	३०	ग.	६	२	१२	२७	५	२२	मि१६।३०	५	५९	६	४९	४	९	५०	२५	भ.३८।२१उ., बुध पूर्व में उदित ६।३५, नेप्च्यून मार्गी ३८।४८,
३१	५९	१०	चं.	११	४०	आ.	५७	१०	व.	२	२२	बि.	११	४०	१३	२८	६	२३	मिथुन	६	०	६	४७	४	१०	४८	२३	भ. ११।४० या., बुध मार्गी १६।५२,
३१	५५	११	मं.	१७	४२	पुन.	६०	०	सि.	४	४२	बा.	१७	४२	१४	२९	७	२४	क.४७।४८	६	०	६	४६	४	११	४६	२३	प्रजा ११ व्र. स.
३१	५०	१२	बु.	२३	४८	पुन.	४	४०	व्य.	७	५	तै	२३	४८	१५	३०	८	२५	कर्क	६	१	६	४५	४	१२	४४	२४	सूर्य पू.फा. में ३६।५०, मंगल चित्रा में ५९।५८, प्रदोष व्र.,
३१	४६	१३	गु.	२९	३०	पु.	११	५२	व.	९	१५	व.	२९	३०	१६	३१	९	२६	कर्क	६	२	६	४४	४	१३	४२	२७	भ.२९।३०उ., शुक्र तुला में१४।१५,मेला बाबा काशीगिर जी(नजफगढ़),
३१	४२	१४	शु.	३४	४०	आश्ले.	१८	३२	प.	११	२	बि.	२	५	१७	सि.१	१०	२७	सिं१८।३२	६	२	६	४३	४	१४	४०	३१	भ. २।५ या., सितम्बर प्रा., जमत उल विदा,
३१	३८	३०	श.	३९	०	म.	२४	३२	शि.	१२	१५	च.	६	५०	१८	२	११	२८	सिंह	६	३	६	४२	४	१५	३८	३८	शनैश्चरी ३०, कुशोत्पाटिनी ३०, पिठोरी ३०,

भाद्र. कृ.८ शुक्र, इष्ट ५८।५०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	५	३	३	५	४	५	११
८	२०	२७	४	२४	१०	४	४
५१	५	१४	२३	५३	१२	२६	२६
१९	१३	४०	४६	४३	४७	४७	४७
५७	३८	१६	१२	५९	७	३	३
५५	३८	४४	९	३	३७	११	११
—	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
—	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
मघा ३	हस्त ४	आश्ले. ४	पुष्य १	चित्रा १	मघा ४	उ.फा. ३	उ.भा. १

कुं. सूर्योदये

शु.६रा. मं. | ५श. सू. | गु.४ बु. | ३ | चं.२ | १ | १२के. | ११ | १० | ९ | ८ | ७

लोक भविष्य—इस मास में पांच शनिवारों का होना नेष्ट है—"शनिवारा यदा पञ्च पाताले कम्पते फणी। ईशान देश-भंगश्च वह्निवाहो महर्घता॥" कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि एवं पश्चिम में कहीं राजनैतिक अस्थिरता से अशान्ति का वातावरण बनेगा। कहीं आगजनी की घटना से हानि हो। इस पक्ष में गुरु पुष्य नक्षत्र में, मंगल चित्रा में एवं शुक्र तुला में आकर अनेकत्र अनावृष्टि, रोग एवं शासक वर्ग में चिन्ता-जनक वातावरण बन जाने का संकेत देते हैं। अनाजों में तेजी से चिन्ता रहे। "चित्रा कुजे तीव्र रुजोऽति पीड़ा शालीष्ट गोधूम महर्घतापि॥"

कुं. सूर्योदये

६रा. मं. | श.५ सू.चं. | गु.४ बु. | ३ | २ | १ | १२के. | ११ | १० | ९ | ८ | शु.७

भाद्र. कृ. ३० शनि, इष्ट ५८।३८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	५	३	३	६	४	५	११
१६	२५	२८	५	२	११	४	४
३५	१६	४४	५९	३५	१३	१	१
२४	१७	५६	१२	४	३४	२१	२१
५८	३९	४७	११	५५	७	३	३
८	१२	४६	३८	४४	३५	११	११
—	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
—	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
पू.फा. १	चित्रा १	आश्ले. ४	पुष्य १	चित्रा ३	मघा ४	उ.फा. ३	उ.भा. १

ग्रहचाल एवं बाजार का रुख—गुरु के पुष्य में आने पर २० अगस्त के बाद रूई कपास आदि में तेजी आएगी। २४ अगस्त को शनि मघा के चतुर्थ चरण में आ रहा है अतः घी गुड़ खाण्ड नमक आदि रस एवं तिलहन प्रायः तेज रहेंगे। रेशम सूत सोना चांदी लोहा चावल ज्वार सुपारी नारियल मूंज अफीम बांस एवं नील में भी तेजी का ही रुख रहेगा।

आकाश लक्षण—अगस्त २१,२३,२४,२७ से ३१ अग. को कालीकट सूरत पंजाब हरयाणा आदि के कुछ भागों में कहीं बादल चाल तड़ित् की चमक गड़गड़ाहट एवं बूंदाबांदी हो।

शकुन विचार—भाद्र कृ. ३ को यदि बादल हों, तो अनाज का स्टाक करने से छठे मास में लाभ मिल सकेगा।

श्री बि.सं. २०३५, शाक १९००, भाद्रपद शुक्ल पक्ष ... तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टै. टा. | उदय-कालिक | (३ से १६ सितम्बर तक, सन् १९७८ई.) द. ग्र. उ.गो., शरद ऋतु,

ग्रह दर्शन:-१५ सितम्बर को बुध पूर्व में अस्त तब १४ मित. को

श्री वि.सं. २०३५, शाक १९००, भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११ तारीख चन्द्र- भा. स्टै. टा. उदय-कालिक (२ से १६ सितम्बर तक, सन् १९७८ई.), द. अ., उ.गो., शरद ऋतु

ग्रह दर्शन:-१५ सितम्बर को बुध पूर्व में अस्त एवं १४ सित. को शनि उदित होगा। ८-९ सितं. को सायं मंगल से चित्रा तारा २° दक्षिण होगा।

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	मु.	संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३१	३४	१	र.	४२	२२	पू.फा.	२९	४०	सि.	१२	४२	कि.	१०	४१	१९	३	१२	२९	क. ४५।४०	६	३	६	४१	४	१६	३६	४६	अगस्त्य उदित ३८।१२, गुसांईयांणा (कुराली)
३१	३०	२	सो.	४४	४२	उ.फा.	३३	४२	सा.	१२	२७	बा.	१३	३२	२०	४	१३	३०	कन्या	६	४	६	४०	४	१७	३४	५६	बुध मघा सिंह में २८।१०, चन्द्र दर्शन मु.४५, मेला बाबा
३१	२५	३	मं.	४५	५७	ह.	३६	४५	शु.	११	२२	तै.	१५	२०	२१	५	१४	श१	कन्या	६	४	६	३८	४	१८	३३	७	शव्वाल मु.प्रा., सामउपाकर्म, हरतालिका व्र., श्रीवराहजयन्ती, इदुलफित्र
३१	२०	४	बु.	४५	५७	चि.	३८	३७	शु.	९	२२	व.	१५	५७	२२	६	१५	२	तु. ७।४१	६	५	६	३७	४	१९	३१	२०	भ.१५।५७उ., ४५।५७या., गुरु पुष्य२में१८।५५ कलंक चतुर्थी (चन्द्र
३१	१६	५	गु.	४४	५०	स्वा.	३९	२०	ब्र.	६	२५	ब.	१५	२४	२३	७	१६	३	तुला	६	६	६	३६	४	२०	२९	३५	शुक्र स्वाती में २६।३०, ऋषि पंचमी व्र., संवत्सरी ५,
३१	११	६	शु.	४२	३२	वि.	३८	५५	ऐ.	५७	३२/४०	को.	१३	४१	२४	८	१७	४	वृ. २४।१	६	६	६	३५	४	२१	२७	५१	सूर्य षष्ठी व्र., दर्शन निषिद्ध), (चन्द्रास्त रात्रि८घं.५५मि.)
३१	६	७	श.	३८	५८	अनु.	३७	१५	वि.	५१	५५	ग.	१०	४५	२५	९	१८	५	वृश्चिक	६	७	६	३३	४	२२	२६	८	भ. ३८।५८ उ., सिद्धि विनायक व्र.
३१	१	८	र.	३४	१७	ज्ये.	३४	२५	प्री.	४५	१०	वि.	६	३८	२६	१०	१९	६	ध. ३४।२५	६	८	६	३२	४	२३	२४	२८	भ.६।३८या., मंगल तुला में१०।२८, श्री राधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मीव्र.प्रा.
३०	५६	९	सो.	२८	३७	मू.	३०	४०	आ	३७	४०	बा.	१	२७	२७	११	२०	७	धनु	६	८	६	३१	४	२४	२२	४९	श्री चन्द्र नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव),
३०	५२	१०	मं.	२२	२	पू.षा.	२६	०	सौ.	२९	२८	ग.	२२	२	२८	१२	२१	८	म. ३४।४२	६	९	६	३०	४	२५	२१	११	भ. ४८।२८ उ., ४में५७।४२अनन्त१४व्र., मेला छपार
३०	४८	११	बु.	१४	५५	उ.षा.	२०	४८	शो.	२०	५०	वि.	१४	५५	२९	१३	२२	९	मकर	६	९	६	२८	४	२६	१९	३४	भ.१४।५५या., सूर्य उ.फा.में२१।०, यूरे.विशा.१में५६।२५, पद्मा११व्र.स.
३०	४४	१२	गु.	७	२५	श्र.	१५	१२	अ.	११	४४	बा.	७	२५	३०	१४	२३	१०	कु. ४२।२४	६	१०	६	२७	४	२७	१७	५९	पंचक प्रा.४२।२४, बुध पू.फा.में३।८, शनि उदित२१।५२, प्रदोष व्र.,
क्षय	म	१३	गु.	५९	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय, श्री वामन द्वादशी, श्रवण १२,
३०	४०	१४	शु.	५२	३२	ध.	९	३५	सु.	२/५४	५२/१०	ग.	२६	११	३१	१५	२४	११	कुम्भ	६	१०	६	२६	४	२८	१६	२६	भ.५२।३२उ., बुध पूर्व में अस्त २१।१२, राहु उ.फा.२, केतु पू.भा.
३०	३५	१५	श.	४५	५०	श.	४/५६	२०/४७	शू.	४५	५२	वि.	१९	११	अ१	१६	२५	१२	मी. ४५।५५	६	११	६	२५	४	२९	१४	५४	भ.१९।११या., सं.सूर्य कन्या में४६।१२, पुण्यकाल अगलेदिन मध्याह्न से पूर्व, मु.३०, सत्य, व्र., चन्द्रग्रहण, प्रोष्ठपदी१५,

भाद्र. शु. ८ रवि., इष्ट ५८।२५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	६	४	३	६	४	५	११
२४	०	८	७	९	१२	३	३
२१	३१	१४	३०	४६	१३	३५	३५
१५	४३	५०	१०	७	५७	५३	५३
५८	३९	९५	११	५१	७	३	३
२१	४३	३०	०	१५	२९	११	११
--	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
--	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये

६रा. | ४गु. | मं.७ शु. | बु.५श. सू. | ३ | ८ चं. | २ | ९ | ११ | १ | १० | १२के.

लोक भविष्य—इस पक्ष में तुला का मंगल एवं स्वाती नक्षत्र का शुक्र नेष्ट है, किसी बड़े नेता व प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु की सूचना से शोक व्याप्त हो। चोरी ठगी लूट मार की घटनाएं हों। कहीं अराजकता बढ़े, समय पर--राष्ट्र नीति के लिए अनुकूल नहीं, विरोधी देशों में तनाव रहे, छोटी २ बातों पर मतभेद बढ़े। सन्धि तथा मित्रता की बातें निरर्थक सी लगेंगी। व्यापारियों के लिए समय सावधानी का है। तिल तेल सोना चांदी के व्यापारी लाभ में रहेंगे।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारंभ से गेहूं जौ चना सूत रूई खट्टे पदार्थ तेज होंगे। कपूर, गुड, खाण्ड, शक्कर आदि पदार्थ मन्दे रहेंगे। लेकिन १० सितम्बर के बाद रूई कपास सूत सण पाट बारदाना मूंगफली गुड़ खाण्ड गेहूं तथा उड़द मूंग तेज हों। इन दिनों नारियल मूंज बांस उड़द ज्वार चावल भी तेज ही रहेंगे। पक्षान्त में शेयरों तथा चांदी में मन्दा बनेगा।

कुं. सूर्योदये

६रा. | ४गु. | मं.७ शु. | बु.५श. सू. | ३ | ८ | २ | ९ | ११चं. | १ | १० | १२के.

भाद्र. शु. १५ शनि, इष्ट ५८।१८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	६	४	३	६	४	५	११
०	४	१८	८	१४	१२	३	३
११	३१	३१	२४	४३	५८	१६	१६
४४	१	३९	५८	६	३६	४७	४७
५८	४०	१०६	१०	४६	७	३	३
३१	६	४४	३०	५१	२२	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण—४,५,१०,१४,१५ सितम्बर को म. प्र., मैसूर, मद्रास, लंका, प. राजस्थान में बादलचाल एवं बूंदाबांदी के योग हैं।

शकुन विचार—यदि भाद्र शु. १५ को चन्द्रोदय के समय बादल हों तो धान्य का स्टाक निकाल दें, आगे निश्चय ही मन्दा होगा। यदि आकाश निर्मल रहे, तो गेहूं जौ चना का स्टाक करें। आगे निश्चय ही लाभ मिलेगा।

श्री वि.सं. २०३५,शाक १९००,आश्विन कृष्ण पक्ष १२ | तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टै. टा. | उदय-कालिक | (१७सितं. से २ अक्तु. तक,सन१९७८ई.),द.अ.,उ.द.गो.,शरद् ऋतु,

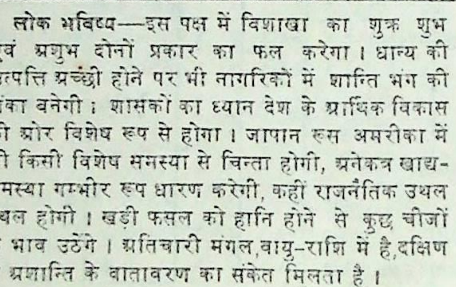
ग्रह दर्शनः-बुध अस्त है। सायं म.शु. पश्चिम कपाल में होंगे। प्रातः गु.श. को पूर्व कपाल में देख सकेंगे।

ति. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. आश्विन	अं. सितं.	श. भाद्र.	मु. शव्वा	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
३०	३०	१	र.	४०	५	उ.भा.	५६	१५	ग.	३८	२८	बा.	१२	५८	२	१७	२६	१३	मीन	६	११	६	२३	५	०	१३	२५	महालय (श्राद्ध) प्रा., प्रतिपदा का श्राद्ध,
३०	२५	२	चं.	३५	३५	रे.	५४	२	वृ.	३१	५८	तै.	७	५०	३	१८	२७	१४	मे. ५४।२	६	१२	६	२२	५	१	११	५७	पंचक स. ५४।२, द्वितीया का श्राद्ध,
३०	२०	३	मं.	३२	३८	अ.	५३	२८	ध्रु.	२६	४५	व.	४	६	४	१९	२८	१५	मेष	६	१२	६	२०	५	२	१०	३१	भ.४।६उ.,३२।३८या.,शनि पू.फा.१में५२।५५,श्री गणेश४व्र.,
३०	१५	४	बु.	३१	२२	भ.	५४	३३	व्या.	२२	५२	व.	२	०	५	२०	२९	१६	मेष	६	१३	६	१९	५	३	९	७	मंगल स्वाती में १०।५०, चतुर्थी का श्राद्ध, तृतीया का श्राद्ध
३०	१०	५	गु.	३२	३	कृ.	५७	३०	ह.	२०	३०	कौ.	१	४३	६	२१	३०	१७	वृ. १०।३२	६	१३	६	१७	५	४	७	४६	बुध उ.फा. में २२।३२, पंचमी का श्राद्ध
३०	५	६	शु.	३४	२५	रो.	६०	०	व.	१९	३०	ग.	३	१४	७	२२	३१	१८	वृष	६	१४	६	१६	५	५	६	२८	भ.३४।२५उ.,षष्ठी का श्राद्ध, समाप्त,मेला फल्गु,जन्म दिन म.गांधी,
३०	०	७	श.	३८	२८	रो.	२	५	सि.	१९	४५	वि.	६	२७	८	२३	अ.१	१९	मि३५।४	६	१४	६	१४	५	६	५	११	भ.६।२७या.,सूर्य सा. तुला में२१।४२,दक्षिण गोल प्रा., बुध कन्या
२९	५६	८	र.	४३	४०	मृ.	८	२	व्य.	२१	२	बा.	११	४	९	२४	२	२०	मिथुन	६	१५	६	१३	५	७	३	५७	शुक्र विशा. में ९।२०, अष्टमी का श्राद्ध, श्री महालक्ष्मी व्र. समाप्त
२९	५१	९	चं.	४९	४०	आ.	१५	०	व.	२३	०	तै.	१६	४०	१०	२५	३	२१	मिथुन	६	१५	६	१२	५	८	२	४४	गुरु पुष्य३में२१।१८,नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध,
२९	४६	१०	मं.	५५	५०	पुन.	२२	२५	प.	२५	१५	व.	२२	४५	११	२६	४	२२	क. ६।३४	६	१६	६	१०	५	९	१	३४	भ.२२।४५उ.,५५।५०या.,सूर्य हस्त में५९।३३,दशमी का श्राद्ध,
२९	४२	११	बु.	६०	०	पु.	२९	४५	शि.	२७	३०	व.	२८	४४	१२	२७	५	२३	कर्क	६	१६	६	९	५	१०	०	२६	एकादशी का श्राद्ध, में१०।१५,शक आश्वि.प्रा.,सप्तमी का श्राद्ध,
२९	३८	११	गु.	१	३८	आश्ले.	३६	३२	सि.	२९	१७	बा.	१	३८	१३	२८	६	२४	सि३६।३२	६	१७	६	८	५	१०	५९	२१	बुध हस्त में३७।२८,इन्दिरा११व्र.स.,द्वादशीका श्राद्ध,सन्यासियों का श्राद्ध
२९	३३	१२	शु.	६	४०	म.	४२	२२	सा.	३०	१५	तै.	६	४०	१४	२९	७	२५	सिंह	६	१८	६	७	५	११	५८	१७	प्रदोष व्र.,त्रयोदशी का श्राद्ध. मघा१३(६घ.४०प.उ.),
२९	२९	१३	श.	१०	३७	पू.फा.	४७	२	शु.	३०	२७	व.	१०	३७	१५	३०	८	२६	सिंह	६	१८	६	६	५	१२	५७	१६	भ.१०।३७उ.,४१।५८या.,चतुर्दशी का श्राद्ध,शस्त्र-विष आदि से★
२९	२४	१४	र.	१३	१८	उ.फा.	५०	२८	शु.	२९	३२	श.	१३	१८	१६	अ.१	९	२७	क. २।५३	६	१९	६	४	५	१३	५६	१६	अक्तूबर प्रा.,अमावस का श्राद्ध,सर्व पितृ श्राद्ध, ★मरे हुओं का श्राद्ध
२९	१९	३०	चं.	१४	३५	ह.	५२	३२	ब्र.	२७	३८	ना.	१४	३५	१७	२	१०	२८	कन्या	६	२०	६	३	५	१४	५५	१९	सोमवती३०, गजच्छाया पर्व (१४।३५या.) मातामह श्राद्ध, श्राद्ध

आश्वि.कृ.८ रवि, इष्ट ५८।८

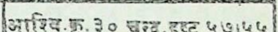
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	६	५	३	६	४	५	११
८	९	३	९	२०	१३	२	२
०	५३	१९	५६	३२	५६	५१	५१
५३	४५	५५	१५	४७	५३	२०	२०
५८	४०	११०	९	३९	७	३	३
४९	३९	१८	४३	१६	१०	११	११
—	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
—	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा.४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये



लोक भविष्य—इस पक्ष में विशाखा का शुक्र शुभ एवं अशुभ दोनों प्रकार का फल करेगा। धान्य की उत्पत्ति अच्छी होने पर भी नागरिकों में शान्ति भंग की शंका बनेगी। शासकों का ध्यान देश के आर्थिक विकास की ओर विशेष रूप से होगा। जापान रूस अमरीका में भी किसी विशेष समस्या से चिन्ता होगी, अनेकत्र खाद्य-समस्या गम्भीर रूप धारण करेगी, कहीं राजनैतिक उथल पुथल होगी। खड़ी फसल को हानि होने से कुछ चीजों के भाव उठेंगे। अतिचारी मंगल,वायु-राशि में है,दक्षिण में अशान्ति के वातावरण का संकेत मिलता है।

कुं. सूर्योदये



आश्वि.कृ.३० चन्द्र,इष्ट ५७।५५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	६	५	३	६	४	५	११
१५	१५	१७	११	२५	१४	२	२
५२	२०	४२	१०	१२	५३	२५	२५
२०	४७	१७	५०	३६	११	५३	५३
५९	४१	२०४	८	२८	६	३	३
६	११	१२	४९	५२	५३	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्रहचाल एवं बाजार का रुख—१९ सित. से शनि के पू.फा.१में आने पर जौ चना उड़द मूंग सरसों तिल तेल मोठ मसर अरहर ऊनी वस्त्र तेज होंगे। रूई में मन्दी के बाद तेजी आए। पश्चात् में जौ ज्वार बाजरा सूत जूट कपास हींग हरड़ धनिया हल्दी लकड़ी एवं कोयला आदि मन्दे होंगे।

आकाश लक्षण—२३,२४ सितम्बर के लगभग सिक्किम, शिलांग, आसाम, हैदराबाद के कुछ भागों में बादल चाल एवं वायु का जोर रहे। कहीं छींटाकशीं हो।

शकुन विचार—आश्विन कृ. १०,११,१२, को यदि मेघ गर्जे, बिजली चमके तो आगे गेहूं का भाव तेज होगा।

आकाश लक्षण —२६,२७ सितम्बर के मेघमय सिक्किम, शिलांग, आसाम, हैदराबाद के कुछ भागों में बादल चाल एवं वायु का जोर रहे। कहीं छींटाकशी हो।
शकुन विचार —आश्विन कृ. १०,११ ...

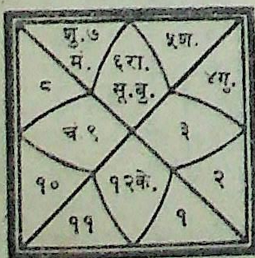
श्री वि.सं. २०३५, शाक १९००, आश्विन शुक्ल पक्ष १३ | तारीखें | चन्द्र-संचार | भा. स्टैं. टा. चण्डीगढ़ | उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य | (३ से १६ अक्तूबर तक, सन् १९७८ई.), द. अ.-गो., शरद् ऋतु,

वि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्र-संचार घ. प.	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन:-बुध अस्त है; सायं मं.शु. पश्चिम कपाल में परस्पर आसन्न दीखेंगे। प्रात: गुरु खमध्य से पूर्व की ओर नत एवं श. पूर्व कपाल के मध्य दीखेगा। ३अक्तू.को शु. की चमक अधिकतम होगी।
२९	१५	१	मं.	१४	३८	चि.	५३	२५	ऐ.	२८	४२	ब.	१४	३८	१८	३	११	२९	तु २२।५८	६	२०	६	२	५	१५	५४	२४	चन्द्र दर्शन मु. ३०, शारद नवरात्र प्रा., घटस्थापन,
२९	११	२	बु.	१३	२७	स्वा.	५३	१०	वै.	२०	५२	कौ.	१३	२७	१९	४	१२	जि,१	तुला	६	२१	६	१	५	१६	५३	३१	जिल्काद मु. प्रा.,
२९	७	३	गु.	११	१२	वि.	५२	५	वि	१६	१२	ग.	११	१२	२०	५	१३	२	वृ. ३७।२४	६	२१	६	०	५	१७	५२	४०	भ. ३९।३७ उ.,
२९	२	४	शु.	८	२	अनु.	५०	२	प्री.	१०	४५	वि	८	२	२१	६	१४	३	वृश्चिक	६	२२	५	५९	५	१८	५१	५०	भ. ८।२ या., बुध चित्रा में १४।२०, उपाङ्ग ललिता व्र.,
२८	५७	५	श.	४	५	ज्ये.	४७	२५	आ	४ ५८	४३ १५	बा.	४	५	२२	७	१५	४	ध. ४७।२५	६	२३	५	५८	५	१९	५१	२	
अव	म	६	श.	५९	३७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	षष्ठी तिथि क्षय, विसर्जन, श्री माध्वाचार्य जयन्ती
२८	५३	७	र.	५४	३२	मू.	४४	१८	शो	५१	२०	ग.	२६	४	२३	८	१६	५	धनु	६	२३	५	५६	५	२०	५०	१७	भ. ५४।३२ उ., सरस्वती आवाहन, आयंबिल ओली प्रा.
२८	४८	८	चं.	४९	६	पू.षा.	४०	४५	अ.	४४	५	वि.	२१	४९	२४	९	१७	६	म.५४।४८	६	२४	५	५५	५	२१	४९	३४	भ.२१।४९या.,मंगल विशा.में१३।५०,श्री दुर्गाष्टमी.सरस्वती पूजन
२८	४४	९	मं.	४३	२२	उ.षा.	३६	५८	सु.	३६	३७	बा.	१६	१४	२५	१०	१८	७	मकर	६	२५	५	५४	५	२२	४८	५२	सूर्य चित्रा में८।५८,बुध तुला में१३।१२, महानवमी,
२८	४०	१०	बु.	३७	३८	श्र.	३३	२	धृ.	२९	५	तै.	१०	३०	२६	११	१९	८	मकर	६	२५	५	५३	५	२३	४८	११	विजया दशमी(दशहरा),अपराजिता पूजा,सीमोल्लंघन,सरस्वती
२८	३५	११	गु.	३१	५२	ध.	२९	७	शू.	२१	३०	व.	४	४५	२७	१२	२०	९	कु. १।५	६	२६	५	५१	५	२४	४७	३२	भ.४।४५उ.,३१।५२या.,पंचक प्रा.१।५,पापांकुशा११व्र.स,भरतमिलाप
२८	३०	१२	शु.	२६	१८	श.	२५	२२	गं.	१४	२	बा.	२६	१८	२८	१३	२१	१०	कुम्भ	६	२७	५	५०	५	२५	४६	५५	प्रदोष व्र., मेला ज्वाला मुखी व तारा देवी (हि. प्र.)
२८	२५	१३	श.	२१	७	पू.भा.	२२	०	वृ.	६	५५	तै.	२१	७	२९	१४	२२	११	मी. ७।५१	६	२८	५	४९	५	२६	४६	२१	बुध स्वाती में १९।४८, मेला शाकम्भरी देवी
२८	२०	१४	र.	१६	३५	उ.भा.	१९	२०	ध्रु.	० ४४	१० १०	व.	१६	३५	३०	१५	२३	१२	मीन	६	२८	५	४८	५	२७	४५	४७	भ.१६।३५उ.,४४।४५या.,सत्य व्र.,शरत्पूर्णिमा, कोजागरव्र.,
२८	१५	१५	चं.	१२	५५	रे.	१७	२८	ह.	४८	५५	ब.	१२	५५	३१	१६	२४	१३	मे. १७।२८	६	२९	५	४७	५	२८	४५	१६	पंचक स.१७।२८,कार्तिक स्नान प्रा.,श्री वाल्मीकि जयन्ती,ओली स.,

आश्वि.शु.८ चन्द्र, इष्ट५७।४५

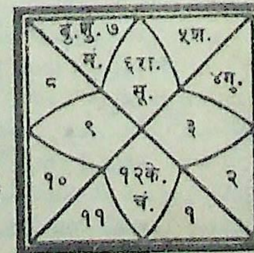
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	६	५	३	६	४	५	११
२२	२०	२९	१२	२८	१५	२	२
४६	१०	३४	९	०	४०	३	३
३८	२४	३०	५३	३	२२	३८	३८
५९	४१	९८	७	१६	६	३	३
१८	३८	३५	५५	४३	३३	११	११
--	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
--	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये



लोक भविष्य—६ अक्तू. को बुध चित्रा (घोर गति) में प्रवेश करेगा;-अनेकत्र अत्याचार कुनीति एवं चोरी आदि से अशान्ति रहे। कुछ प्रान्तों में असन्तोष अधिक भड़के। १० अक्तू. को प्लूटो एवं सूर्य की युति हो रही है यह युति देश में विशेष घटना कारक रहेगी। देश को आर्थिक क्षति सहन करनी पड़े, अन्न समस्या पुन: बने। किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त हो। वर्षा कम रहे, जन जीवन को व्यवस्थित करने के लिए देश में नए उद्योग धन्दे कल कारखाने स्थापित हों। भारत के पूर्वी देशों के लिए समय अनुकूल है।

कुं. सूर्योदये



आश्वि.शु.१५ चन्द्र, इष्ट५७।३२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	६	६	३	६	४	५	११
२९	२५	१०	१२	२९	१६	१	१
४२	३	४९	२	१३	२५	४१	४१
२१	४	३४	२९	७	११	२४	२४
५९	४२	९३	६	१	६	३	३
३१	४	४३	५७	३५	१२	११	११
	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्रहचाल और बाजार का रुख—अक्तूबर के दूसरे सप्ताह से रूई चांदी में कुछ घटाबढ़ी के बाद तेजी रहे, कपास वस्त्र, मोती आदि जवाहरात, अरहर, चना, तिल, नारियल, लवण, केसर के भाव भी ऊंचे उठेंगे। पश्चात् में बिनौला मूंगफली एवं रूई में मन्दी रहे।

आकाश लक्षण —९,१०,११ अक्तूबर को सिक्कम शिलांग आसाम के कुछ भागों में बूंदाबांदी एवं बादलचाल रहे। नाडी चक्र विचार से वर्षा का कोई विशेष योग नहीं।

शकुन विचार —आश्वि. पूर्णमाशी को यदि बादल हों तो धान्य-संग्रह से चैत्र में लाभ मिले—"आश्विनी निर्मला पूर्णा शुभाय जलदोदये। धान्यस्य संग्रहं कुर्याच्चैत्रे लाभप्रदो भवेत्॥"

श्री वि.सं. २०३५,शाक १९००,कार्तिक कृष्ण पक्ष१४ | तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टै. टा. | उदय-कालिक | (१७ से ३१ अक्तू. तक,सन्१९७८ई.),द.अ.-गो., शरद्-हेमन्त ऋतु,

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. कार्ति.	अं. अक्तू.	स. आश्विन	मु. जिलकाद	चन्द्र-संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन:-प्रातः गु. खमध्यासन्न एवं श.को पूर्वकपाल में देख सकेंगे १९-२० अक्तू.को भारत में दृश्य चन्द्रमा रोहिणी शकट-भेद होगा। २०अक्तू.की रात्रि को देहली में लगभग०।१२से१बजकर७मि.तक ✻
२८	१०	१	मं.	१०	२०	अ.	१६	४२	व.	४४	३८	कौ.	१०	२०	१	१७	२५	१४	मेष	६	३०	५	४६	५	२९	४४	४७	सं.सूर्य तुला में१५।१८,पुण्य सारा दिन मु.३०,वेंकटेश चित्रा१में३८।१५
२८	६	२	बु.	९	८	भ.	१७	१८	सि.	४१	३०	ग.	९	८	२	१८	२६	१५	वृ.३२।५०	६	३१	५	४५	६	०	४४	२०	भ.३९।१८उ., शुक्र वक्री १७।४५, ✻यह योग देखा जा सकेगा।
२८	२	३	गु.	९	२८	कृ.	१९	२५	व्य.	३९	४०	वि.	९	२८	३	१९	२७	१६	वृष	६	३१	५	४४	६	१	४३	५५	भ.९।२८या., गुरु पुष्य४में३१।१२,शनि पू.फा.२में२२।०, श्री गणेश
२७	५८	४	शु.	११	२२	रो.	२३	२	व.	३९	२	बा.	११	२२	४	२०	२८	१७	मि५०।३५	६	३२	५	४३	६	२	४३	३३	बुध पश्चिम में उदित २०।०,
२७	५४	५	श.	१४	५५	मृ.	२८	८	प.	३९	३२	तै.	१४	५५	५	२१	२९	१८	मिथुन	६	३२	५	४२	६	३	४३	१३	४व्र., करक चतुर्थी,(करवा चौथ) (चन्द्रोदय रात्रि ८घं.१६मि.)
२७	५०	६	र.	१९	४५	आ.	३४	३५	शि.	४१	०	व.	१९	४५	६	२२	३०	१९	मिथुन	६	३३	५	४१	६	४	४२	५४	भ.१९।४५उ.,५२।४०या.,बुध विशा. में ५५।३६,
२७	४५	७	चं.	२५	३५	पुन.	४१	४८	सि.	४३	०	व.	२५	३५	७	२३	का.१	२०	क.२५।०	६	३४	५	४०	६	५	४२	३८	सूर्य स्वाती में५७।३३,सूर्य सा. वृश्चिक में४३।५२,हेमन्त प्रा.★
२७	४०	८	मं.	३१	५५	पु.	४९	१८	सा.	४५	१५	कौ.	३१	५५	८	२४	२	२१	कर्क	६	३४	५	३८	६	६	४२	२५	अहोई अष्टमी (पंजाब), ★मंगल वृश्चिक में५८।५५,शक कार्ति.प्रा.,
२७	३५	९	बु.	३८	२	आश्ले.	५६	२५	शु.	४७	१८	तै.	४	५८	९	२५	३	२२	सिं५६।२५	६	३५	५	३७	६	७	४२	१४	
२७	३०	१०	गु.	४३	२२	म.	६०	०	शु.	४८	४०	व.	१०	४२	१०	२६	४	२३	सिंह	६	३६	५	३६	६	८	४२	५	भ. १०।४२ उ., ४३।२२ या.,
२७	२६	११	शु.	४७	३२	म.	२	४०	ब्र.	४९	२	ब.	१५	२७	११	२७	५	२४	सिंह	६	३७	५	३५	६	९	४१	५८	रमा ११ व्र.स.,
२७	२२	१२	श.	५०	२	पू.फा.	७	४०	ऐ.	४८	१८	कौ.	१८	४०	१२	२८	६	२५	क.२३।३०	६	३७	५	३४	६	१०	४१	५३	मंगल अनु. मे ४०।१२, गोवत्स १२, ✻प्रदोष व्र., धन १३
२७	१८	१३	र.	५०	४३	उ.फा.	११	२	वै.	४६	१०	ग.	२०	२६	१३	२९	७	२६	कन्या	६	३८	५	३३	६	११	४१	५०	भ.५०।४७उ., बुध वृश्चिक में४२।४५,शुक्र वार्धक्य प्रा.१२।०,✻.
२७	१४	१४	सो.	४९	५०	ह.	१२	४२	वि.	४२	३८	वि.	२०	१८	१४	३०	८	२७	तु.४२।४५	६	३९	५	३२	६	१२	४१	४९	भ.२०।१९या.,नरक१४,यम को दीपदान,रूप १४, श्री हनुमान जयन्ती
२७	१०	३०	मं.	४७	२०	चि.	१२	४७	प्री.	३७	५२	च.	१८	३५	१५	३१	९	२८	तुला	६	४०	५	३२	६	१३	४१	५१	भौमवती३०,दीपावली,श्रीमहालक्ष्मीपूजन,श्रीजैनमहावीर निर्वाणदिवस

कार्ति.कृ.८ मंगल, इष्ट५७।२०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	७	६	३	६	४	५	११
७	०	२३	१३	२८	१६	९	९
३९	४१	२	५३	१८	१३	१५	१५
३३	२४	१९	५४	४९	२	५६	५६
५९	४२	८८	५	१७	५	३	३
४९	३५	५३	४४	३१	४८	११	११
	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
स्वा. १	विशा. ४	विशा. ४	पुष्य ४	विशा. ३	पू.फा. २	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये

मं ८ | ६रा. | सू.७ शु.बु. | ५श. | ९ | १० | ४गु.च. | ११ | १ | ३ | १२के. | २

लोक भविष्य—इस पक्ष में मंगलवारी अमावस है, विश्व में अनेकत्र राजनैतिक विवाद खड़े हों, कहीं विरोधी देशों में तनाव से शान्ति भंग की आशंका बने, शासकों को अनेकत्र विषम स्थिति का सामना करना पड़े।—'कार्तिकस्य त्वमावस्या रविवारेण संयुता। शनि-भौम युता वापि सर्वलोक भयप्रदा ॥'' इस पक्ष में खर्पर योग बनता है। देश में कहीं आगजनी की घटना से जन धन की हानि होगी। जन-जीवनोपयोगी वस्तुओं में तेजी से असन्तोष व्याप्त होगा।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—१७ अक्तू. मे सोना तांबा लाल चन्दन, सुपारी एवं मजीठ में तेजी का वातावरण रहेगा। १९ अक्तूबर को शनि के पू.षा. २ में आने पर कपास रेशम एवं सूती रेशमी कपड़े तेज हो जाएंगे। पश्चात् में बिनौला अलसी सरसों राई हींग गुग्गुल तेज रहें, २८ अक्तू. से लाल मिर्च सोना रूई कपास गेहूं और तेज हो सकते हैं।

कुं. सूर्योदये

बु ८ मं. | ६रा. | सू.७ शु.च. | ५श. | ९ | १० | गु.४ | ११ | १ | ३ | १२के. | २

कार्ति.कृ.३० मंगल,इष्ट ५७।५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	७	७	३	६	४	५	११
१४	५	३	१४	२५	१७	०	०
३८	४०	११	३०	३१	५१	५३	५३
५८	५२	२९	३५	२९	३०	४०	४०
६०	४३	८४	४	३१	५	३	३
३	२	१९	३४	१९	१३	११	११
	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
	उ.	उ.	उ	उ.	उ.	अ.	अ.
स्वा. ३	अनु. १	विशा. ४	पुष्य ४	विशा. २	पू.फा. २	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण—इस पक्ष में विशेष वर्षा का योग नहीं। सूखा रहेगा। लेकिन १९,२० एवं २३ अक्तूबर को द. पू. मद्रास, पाक के उत्तरी भाग एवं मैसूर में बादल चाल रहेगी।

शकुन विचार—कार्तिक में मेघ-गर्जना से आगे अनाज में तेजी समझें;—''यदा कार्तिक मासे तु वारिवस्य हि गर्जनम्। अवश्यम-महर्घत्वं सस्य-निष्पत्तिवत्सला ॥''

(१ से १४ नवंबर तक सन १९७८ई.), द. अ.-गो., हेमन्त ऋतु,

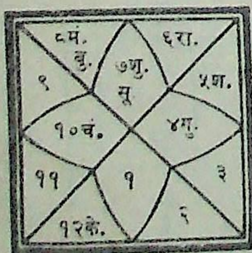
श्री वि.सं. २०३५, शाक १९००, कार्तिक शुक्ल पक्ष १५ | तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टै. टा. | उदय-कालिक | (१ से १४ नवंबर तक, सन् १९७८ई.), द. अ.-गो., हेमन्त ऋतु,

दि.मा. घ.प	तिथि	वार	घ.प	नक्षत्र	घ.प	योग	घ.प	करण	घ.प	प्र. कार्ति.	अं. नवं.	श. कार्ति.	मु. जिलहिज्जा	संचार घ.प	चण्डीगढ़ सू.उ. घं. मि.	सू.अ. घं. मि.	स्पष्ट सूर्य रा. अं. क. वि.	ग्रह दर्शन:-१नवं. को शुक्र पश्चिममें अस्त एवं १४नवं. को प्रातः पूर्व में उदित होगा। उषःकाल में गुरु खमध्यासन्न एवं शनि पूर्व कपाल में दीखेगा। मं.-बु. को सायं पश्चिममें परस्पर आसन्न देखें।
२७ ६	१	बु.	४२ ३२	स्वा.	११ २५	आ.	३२ २	कि.	१५ २६	१६	१	१०	२९	वृ. ५४।३३	६ ४१	५ ३१	६ १४ ४१ ५४	बुध अनु. में ३।५, शुक्र पश्चिम में अस्त १२।०, नवम्बर प्रा.,
२७ ०	२	गु.	३८ ४८	वि.	८ ५५	सौ.	२५ २७	बा.	११ १०	१७	२	११	३०	वृश्चिक	६ ४१	५ ३०	६ १५ ४२ ०	चन्द्र दर्शन मु.३०, यम द्वितीया, भाई दूज, (टिक्का), विश्वकर्मा पूजा
२६ ५८	३	शु.	३३ २०	अनु.	५ ३०	शो.	१८ १०	तै.	६ ४	१८	३	१२	जि.१	वृश्चिक	६ ४२	५ २९	६ १६ ४२ ८	जिल्हिज्ज मु. प्रा., अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, बलिपूजा
२६ ५४	४	श.	२७ ३०	ज्ये.	५ ३७ / ५७ ३२	अ.	१० ३०	व.	० २५	१९	४	१३	२	ध. १।३७	६ ४३	५ २८	६ १७ ४२ १७	भ. ०।२५ उ., २७।३० या. **शुक्र अस्त १ नवं.**
२६ ५०	५	र.	२१ ३०	पू.षा.	५३ २५	सु.	२ ४ / ५५ ०	बा.	२१ ३०	२०	५	१४	३	धनु	६ ४४	५ २७	६ १८ ४२ २८	ज्ञान ५,
२६ ४५	६	चं.	१५ ४२	उ.षा.	४९ ३८	शू.	४७ २५	तै.	१५ ४२	२१	६	१५	४	म. ७।२६	६ ४५	५ २७	६ १९ ४२ ४१	सूर्य विशा. में १७।१५, **शुक्र उदित १४ नवं.**
२६ ४०	७	मं.	१० ८	श्र.	४६ २	गं.	४० ८	व.	१० ८	२२	७	१६	५	मकर	६ ४६	५ २६	६ २० ४२ ५५	भ. १०।८ उ., ३७।३६ या., गोपाष्टमी,
२६ ३६	८	बु.	५ ५	ध.	४३ ३	वृ.	३३ १२	व.	५ ५	२३	८	१७	६	कु. १४।३३	६ ४७	५ २६	६ २१ ४३ १०	पंचक प्रा. १४।३३, नेप्च्यून ज्येष्ठा ३ में ५९।४५, कूष्माण्ड ९, अक्षय ९
२६ ३३	९	गु.	० ३०	श.	४० ३२	ध्रु.	२६ ४७	कौ.	० ३०	२४	९	१८	७	कुम्भ	६ ४७	५ २५	६ २२ ४३ २६	स्मा., भीष्म-पंचक प्रा., चातुर्मास्य व्र. नियम समाप्त
क्षय	१०	गु.	५६ २८	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	०	० ०	० ०	० ० ० ०	दशमी तिथिक्षय, व कपाल मोचन, बाल दिवस
२६ २९	११	शु.	५३ ०	पू.भा.	३८ ३५	व्या.	२० ४५	व.	२४ ४४	२५	१०	१९	८	मी. २४।४	६ ४८	५ २४	६ २३ ४३ ४३	भ. २४।४४उ., ३०।०या., व्र. शुक्र स्वाती में २५।४७, प्रबोधिनी ११व्र.
२६ २५	१२	श.	५० १२	उ.भा.	३७ २०	ह.	१५ १५	ब.	२१ ३६	२६	११	२०	९	मीन	६ ४९	५ २३	६ २४ ४४ ३	बुध ज्येष्ठा में ५।१५, प्रबोधिनी ११ व्र. वै., तुलसी विवाह,
२६ २२	१३	र.	४८ ०	रे.	३६ ३७	व.	१० १२	कौ.	१९ १०	२७	१२	२१	१०	मे. ३६।३७	६ ५०	५ २३	६ २५ ४४ २५	पंचक स. ३६।३७, यूरेनस विशा. २ में १३।२८, प्रदोष व्र. जन्मदिन ★
२६ १९	१४	चं.	४६ ५०	अ.	३६ ५२	सि.	५ ४७	ग.	१७ २८	२८	१३	२२	११	मेष	६ ५१	५ २२	६ २६ ४४ ४८	भ. ४६।५०उ., बैकुण्ठ १४, ★ वीर वैरागी जी (नकोदर पं.), इदुज्जुहा.
२६ १६	१५	मं.	४६ ३७	भ.	३७ ५८	व्य.	५ ५ / ४४ १५	वि.	१६ ४४	२९	१४	२३	१२	वृ. ५३।३१	६ ५१	५ २२	६ २७ ४५ १२	भ. १६।४४या., शुक्र पूर्व में उदित ४८।०, सत्य व्र. भीष्म पंचक स.
																		कार्तिक स्नान स., श्री गुरु नानक जयन्ती, मेला रामतीर्थ, पुष्कर

कार्ति. शु. ८ बुध, इष्ट ५६।४८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	७	७	३	६	४	५	११
२२	११	१४	१५	२०	१८	०	०
४०	२६	०	२५	३	३१	२८	२८
१२	५०	०	१२	४०	३	१५	१५
६०	४३	७५	३	३६	४	३	३
१६	३०	४६	९	१९	३५	११	११
	मा	मा	मा	व.	मा	व.	व.
	उ.	अ.	उ.	प्र.	उ.	प्र.	प्र.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

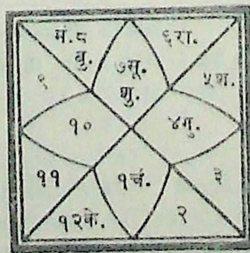
कुं. सूर्योदये



लोक भविष्य—पक्षारम्भ में ही बुध अनुराधा नक्षत्र में प्रवेश करता है। बिहार, म.प्र., आसाम में राजनैतिक गतिरोध होगा। कहीं मन्त्रिमंडल में कुछ परिवर्तन होंगे। पक्षान्त में शुक्रोदय के दूसरे दिन ही मंगल अस्त हो रहा है-यह ग्रह स्थिति अनुकूल वर्षा एवं अन्य सभी प्रकार से सुख समृद्धिप्रद है—'शुक्रोदये ग्रहो याति प्रवास यदि कश्चन। क्षेमं सुभिक्ष माप्नोति महावर्षणकं तथा॥'

ग्रहचाल एवं बाजार का रुख—पक्षारम्भ से सुत रुण एवं रूई में मन्दे का रुख बनेगा। जौ घी चावल मसूर गुड़ खाण्ड तिल एरण्ड अफीम तेज हों, नवम्बर के तीसरे सप्ताह तक तेजी स्थिर रह सकती है।

कुं. सूर्योदये



कार्ति. शु. १५ मंगल, इष्ट ५६।३८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	७	७	३	६	४	५	११
२८	१५	२१	१५	१७	१८	०	०
४२	४८	५	१८	२७	५७	९	९
१०	४५	५३	१७	३६	१७	१२	१२
६०	४३	६२	२	३०	४	३	३
२५	५२	३०	१	०	४	११	११
	मा	मा	मा	व.	मा	व.	व.
	उ.	प्र.	उ.	उ.	उ.	प्र.	प्र.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण—१३, १४ नवं. के लगभग उ.प्र. लंका एवं हि.प्र. में बादलचाल एवं कहीं बूंदाबांदी हो।

शकुन विचार—कार्तिक शु. प्रतिपदा को यदि सूर्य के चारों ओर परिवेष दिखाई दे, तो समझें, कि तिल तेल तेज होंगे, ऐसी स्थिति में स्टाक करके आगे लाभ ले सकते हैं।

श्री वि.सं.२०३५.शाक१९००,मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष१६। तारीखें। चन्द्र-। भा. स्टै. टा.। उदय-कालिक (१५ से ३० नवं. तक, सन् १९७८ई.),द.प्र.-गो., हेमन्त ऋतु,

दि. मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. कार्ति.	अं. पूर्ण.	श. कार्ति.	मु. जिल्हि.	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.
२६	१३	१	बु.	४७	३०	कृ.	४०	१०	प.	५७	१५	बा.	१७	४	३०	१५	२४	१३	वृष	६	५२	५	२१	६	२८	४५	३७
२६	१०	२	गु.	४९	४२	रो.	४३	३५	शि.	५६	१२	तै.	१८	३६	मा.१	१६	२५	१४	वृष	६	५३	५	२१	६	२९	४६	४
२६	६	३	शु.	५३	१२	मृ.	४८	२२	सि.	५६	१०	ब.	२१	२७	२	१७	२६	१५	मि१५।५८	६	५४	५	२०	७	०	४६	३४
२६	३	४	श.	५८	०	आ.	५४	१०	सा.	५७	८	ब.	२५	३६	३	१८	२७	१६	मिथुन	६	५५	५	२०	७	१	४७	५
२५	५९	५	र.	६०	०	पुन.	६०	०	शु.	५८	४८	कौ.	३०	५४	४	१९	२८	१७	क.४४।२०	६	५६	५	१९	७	२	४७	३७
२५	५६	५	चं.	३	४८	पुन.	१	२	शु.	६०	०	तै.	३	४८	५	२०	२९	१८	कर्क	६	५६	५	१९	७	३	४८	११
२५	५४	६	मं.	१०	१२	पु.	८	३८	शु.	१	०	व.	१०	१२	६	२१	३०	१९	कर्क	६	५७	५	१९	७	४	४८	४७
२५	५२	७	बु.	१६	४३	आश्ले.	१६	८	ब्र.	३	२०	ब.	१६	४३	७	२२	मा.१	२०	सि१६।८	६	५८	५	१९	७	५	४९	२४
२५	४९	८	गु.	२२	४०	म.	२३	१५	ऐं.	५	१७	कौ.	२२	४०	८	२३	२	२१	सिंह	६	५९	५	१८	७	६	५०	३
२५	४६	९	शु.	२७	३०	पू.फा.	२९	१०	वं.	६	२८	ग.	२७	३०	९	२४	३	२२	क.४५।१५	७	०	५	१८	७	७	५०	४३
२५	४३	१०	श.	३०	३०	उ.फा.	३३	३०	वि.	६	३०	वि.	३०	३०	१०	२५	४	२३	कन्या	७	१	५	१८	७	८	५१	२४
२५	४०	११	र.	३१	३५	ह.	३५	५२	प्री.	५	८	ब.	१	३	११	२६	५	२४	कन्या	७	२	५	१८	७	९	५२	८
२५	३८	१२	चं.	३०	३८	चि.	३६	१८	आ.	२ ४७	१० ३५	कौ.	१	७	१२	२७	६	२५	तु. ६।५	७	२	५	१७	७	१०	५२	५४
२५	३५	१३	मं.	२७	३८	स्वा.	३४	४२	सौ.	५१	३०	व.	२७	३८	१३	२८	७	२६	तुला	७	३	५	१७	७	११	५३	४१
२५	३३	१४	बु.	२२	५५	वि.	३१	३०	अ.	४४	१०	श.	२२	५५	१४	२९	८	२७	वृ.१७।१८	७	४	५	१७	७	१२	५४	३०
२५	३०	३०	गु.	१६	५०	अनु.	२७	०	सु.	३५	४७	ना.	१६	५०	१५	३०	९	२८	वृश्चिक	७	५	५	१७	७	१३	५५	२०

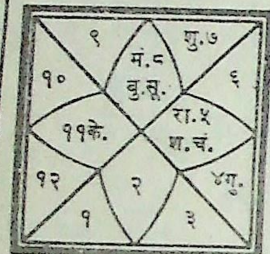
ग्रह दर्शन:-२९ नवं. को बुध पश्चिम में अस्त होगा। १५ नवं. को मंगल भी अस्त होगा। प्रातः गुरु को खमध्य से पश्चिम की ओर झुका हुआ देखें। शनि को पूर्वकपाल में तथा शुक्र को पूर्व में देख सकेंगे।

- मंगल अस्त २०।२५,
- सं.सूर्य वृश्चिक में१३।५०,पुण्य सारा दिन,मु.४५,मंगल ज्येष्ठा में६।३७
- भ.२१।२७उ.,५३।१२या.,शुक्र बाल्य स.४८।०,राहु उ.फा१सिंह, केतु पू.भा.३ कुम्भ में५०।१२,
- श्री गणेश ४ व्र.
- सूर्य अनु. में ३२।५,
- बलिदान दिन श्री लाला लाजपतराय जी
- भ.१०।१२ उ., ४३।२८ या.,
- सूर्य सा. धनु में ३६।३०, शक मार्गशीर्ष प्रा.,
- श्री महाकाल भैरवाष्टमी,
- भ. ५९।० उ.,
- भ. ३०।३० या., बुध वक्री ४३।२८, गुरु वक्री ३६।१२,
- उत्पन्ना ११ व्र. स.,
- मल्ल १२,
- भ. २७।३८ उ., ५५।१७ या., शुक्र मार्गी १।१०, भौम प्रदोष व्र.
- बुध पश्चिम में अस्त ४७।२,मेला पुरमण्डल, देविका-स्नान(काश्मीर)

मार्ग. कृ.८ गुरु, इष्ट ५६।१८

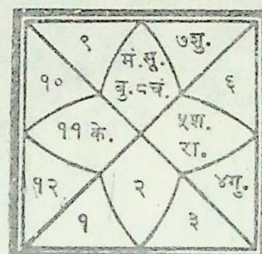
सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	७	३	६	४	४	१०
७	२२	२७	१५	१४	१९	२९	२९
४६	२५	४७	२९	११	३०	४०	४०
५६	३७	२३	३२	५७	४०	३६	३६
६०	४४	१२	०	१०	३	३	३
४०	२९	५१	१६	२	१४	११	११
	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये



लोक भविष्य—१७ नवं. को राहु सिंह राशि मे जाकर शनि के साथ युति करता है।शनि,राहु की युति व्यापारिक क्षेत्र में हलचल पैदा करेगी। कुछ समय के लिए सरकार मूल्यवृद्धि पर नियन्त्रण पाने मे असमर्थ सी अनुभव करेगी शासक बेरोजगारी मुद्रास्फीति एवं मूल्यवृद्धि से चिन्तित होंगे।—"**शनि-राहू यदैकत्र भवेतां सहितौ तदा। सर्व-धान्य महर्घत्वं राजानो भय-विह्वलाः॥**" लेकिन शासन शीघ्र ही स्थिति पर नियन्त्रण पा लेगा। सिंह के राहु में राजनैतिक स्थिति सुदृढ़ होगी। देश में नए भाव एवं उन्नतिप्रद विचारों का उदय होगा।शिक्षा में प्रगति होगी।

कुं. सूर्योदये



मार्ग. कृ.३० गुरु, इष्ट ५६।३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	७	३	६	४	४	१०
१४	२७	२५	१५	१३	१९	२९	२९
५२	३७	४७	२७	५३	५१	१८	१८
१२	२९	३१	१४	४०	१५	२०	२०
६०	४४	५९	१	७	२	३	३
५१	४७	७	८	४	३२	११	११
	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	अ.	उ	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ से गेहूं अलसी जौ चना गुड़ तांबा चांदी सोना एवं ऊनी वस्त्र तेज रहेंगे। लेकिन २५नवं. के लगभग अनाजों अलसी एवं घी में मन्दा बनेगा, बाजार का रुख देखकर काम करें। तांबा चांदी सोना आदि धातु अधिक तेज होंगे। धान्य गुड़ घी का स्टाक करें, आगे लाभ रहेगा। अदरक, सोंठ मिर्च पीपल स्टाक करें, ६ मास बाद उत्तम लाभ मिले।

आकाश लक्षण—१५ से १७ एवं २५,२९,३० नवं को मद्रास लंका हि.प्र. आदि में कहीं बादल चाल वर्षा बूंदाबांदी से तापमान गिरे, वायु का जोर रहे।

शकुन विचार—यदि मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष चतुर्दशी एवं अमावस को सूर्य बादलों से आच्छादित रहे तो अन्न शीघ्र ही तेज होगा।

(१ से १४ दिसंबर तक, सन् १९७८ई.), द. प्र.-गो., हेमन्त ऋतु,

श्री वि.सं.२०३५,शाक १९००,मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १७ — तारीखें — चन्द्र-संचार — भा. स्टै. टा. — उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य — (१ से १४ दिसंबर तक, सन् १९७८ई.), द. अ.-गो., हेमन्त ऋतु

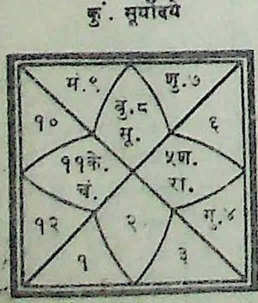
ग्रह दर्शन:-उष:काल में शुक्र पूर्व में, गुरु पश्चिम कपाल में तथा शनि याम्योत्तर लंघन करता दीखेगा, मंगल अस्त है, बुध ११दिसं. को सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखना शुरुहो जाएगा । १४दिसं.को

बि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. मार्ग.	अं. दिसं.	श. मार्ग.	मु. जिल्हि.	चन्द्र-संचार घ. प.	सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२५	२८	१	शु.	९	४७	ज्ये.	२१	३५	धृ.	२६	४७	ब.	९	४७	१६	१	१०	२९	ध.३१।३५	७	६	५	१७	७	१४	५६	१२	चन्द्र दर्शन मु. ३०, दिसम्बर प्रा.
२५	२६	२	श.	२	१५	मू.	१५	५०	शू.	१७	३०	कौ.	२	१५	१७	२	११	मु.१	धनु	७	६	५	१७	७	१५	५७	५	सूर्य ज्येष्ठा में ४२।१८, मुहर्रम मु. (हिजरी सन् १३९९) प्रा.
अव	म	३	श.	५४	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया तिथि क्षय शुक्र की चमक अधिकतम होगी ।
२५	२४	४	र.	४७	१०	पू.षा.	१०	०	गं.	५८/४	१३/८	व.	२०	५२	१८	३	१२	२	म.२३।३७	७	७	५	१७	७	१६	५७	५९	म. २०।५२ उ. ४७।१० या., (वि. मु.-उ. षा.)
२५	२२	५	चं.	४०	२०	उ.षा.	५८/४	४५/३०	ध्रु.	५०	४०	ब.	१३	४५	१९	४	१३	३	मकर	७	८	५	१७	७	१७	५८	५४	मंगल मूल-धनुमें ६।३५, शनि पू.फा. ३ में ३५।५,(वि.मु.अव.)
२५	२०	६	मं.	३४	१८	ध.	५५	५०	व्या	४२	५२	कौ.	७	१९	२०	५	१४	४	कु.२७।४८	७	९	५	१७	७	१८	५९	४९	पञ्चक प्रा. २७।४८, चम्पा ६,
२५	१८	७	बु.	२९	१८	श.	५३	०	ह.	३५	५५	ग.	१	४८	२१	६	१५	५	कुम्भ	७	१०	५	१७	७	२०	०	४५	म. २९।१८ उ. ५७।२२ या.,
२५	१६	८	गु.	२५	२५	पू.भा.	५१	१५	व.	२९	५५	ब.	२५	२५	२२	७	१६	६	मी३६।४१	७	१०	५	१७	७	२१	१	४३	बलिदान दिन श्रीगुरु तेग बहादुर जी
२५	१४	९	शु.	२२	४०	उ.भा.	५०	३२	सि.	२४	३८	कौ.	२२	४०	२३	८	१७	७	मीन	७	११	५	१७	७	२२	२	४१	व. बुध अनु. में १२।२७,
२५	१२	१०	श.	२०	५५	रे.	५०	५२	व्य.	२०	१५	ग.	२०	५५	२४	९	१८	८	मे.५०।५२	७	१२	५	१७	७	२३	३	३९	म. ५०।३५ उ., पंचक स. ५०।५२,
२५	१०	११	र.	२०	१५	अ.	५२	१०	व.	१६	४०	वि.	२०	१५	२५	१०	१९	९	मेष	७	१२	५	१७	७	२४	४	३७	म. २०।१५ या, मोक्षदा ११ व्र. स., श्री गीता जयन्ती,
२५	८	१२	चं.	२०	३०	भ.	५४	२०	प.	१३	५०	बा.	२०	३०	२६	११	२०	१०	मेष	७	१३	५	१७	७	२५	५	३७	बुध पूर्व में उदित ५४।१५, सोम प्रदोष व्र., मुहर्रम,
२५	७	१३	मं.	२१	४३	कृ.	५७	२२	शि.	११	४०	तै.	२१	४३	२७	१२	२१	११	वृ.१०।५	७	१४	५	१८	७	२६	६	३७	
२५	६	१४	बु.	२३	४८	रो.	६०	०	सि.	१०	१५	व.	२३	४८	२८	१३	२२	१२	वृष	७	१५	५	१८	७	२७	७	३९	म. २३।४८ उ. २५।२० या., पिशाच मोचन श्राद्ध,
२५	५	१५	गु.	२६	५५	रो.	१	२०	सा.	९	३२	ब.	२६	५२	२९	१४	२३	१३	मि.३३।४९	७	१५	५	१८	७	२८	८	४१	सत्य व्र., श्री दत्त जयन्ती

मार्ग. शु. ८ गुरु, इष्ट ५५।५०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	८	७	३	६	४	४	१०
२१	२	१७	१५	१५	२०	२८	२८
५९	५२	०	१५	२८	६	५६	५६
२६	३	२५	१३	२७	४८	४	४
६०	४५	७३	२	२१	१	३	३
५६	८	२९	३०	४१	४८	११	११
	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

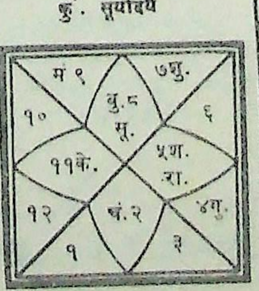
कुं. सूर्योदये



लोक भविष्य—इस पक्ष में कर्क का गुरु वक्री चल रहा है साथ ही बुध भी वक्र है, कुछ प्रदेशों में अनाज की कमी से चिन्ता हो, अनाज का आयात करना पड़े । —"कर्क-राशि गतो जीवो यदा वक्री भवेत्तदा दुर्भिक्षं जायते घोरं राजानो युद्ध तत्पराः ॥" कहीं शासक राजनैतिक विषमता में उलझें । ११ दिसं. को बुधोदय भी पूर्वीय प्रान्त एवं देशों के लिए नेष्ट है ।

ग्रहचाल एवं बाजार का रुख—३ दिसम्बर के बाद चावल चना जौ सरसों घी गुड़ खाण्ड एरण्ड बिनौला उड़द मूंग एवं तिल तेज होंगे । नोट करें, कि मार्ग कृष्ण में बुधास्त के समय जो वस्तु विशेष मन्दी रही है, उनमें तेजी आ जाएगी तथा जो चीजें तेज थीं, वे मन्दी हो जावेंगी ।

कुं. सूर्योदये



मार्ग. शु.१५ ,गुरु इष्ट ५५।३८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	८	७	३	६	४	४	१०
२९	८	११	१४	१८	२०	२८	२८
५	९	४९	५३	३७	१७	३३	३३
१३	१	५५	४२	२०	७	४८	४८
६१	४५	१	३	३३	१	३	३
१	३९	४२	५१	२९	२	११	११
	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	प.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण—इस पक्ष में शीत का जोर रहेगा । कुछ स्थानों पर बादलचाल एवं बूंदाबांदी होगी । ४-५ एवं ११ दिसं. को अनेकत्र बादलचाल रहे एवं कहीं वायु का जोर तथा खण्डवृष्टि हो ।

शकुन विचार—यदि मार्ग. शु. ८ को वर्षा हो तो आगे श्रावण में निश्चय ही वर्षा हो । कहीं जल एवं आग से हानि का समाचार मिले, वस्तुएं महंगी हों, जनता में असन्तोष रहे ।—"नोत्पात परिदृष्टस्त: कदाचिदपि पर्वणि । यात्युदयम् । जलवहन पवहृद् सारतार्थ अथ-विवृद्धये ॥"

श्री वि.सं.२०३५.शाक१९००,मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष१६। तारीखें । चन्द्र- ।भा. स्टै. टा. ।उदय-कालिक (१५ से ३० नवं. तक, सन् १९७८ई.),द.ग्र.-गो., हेमन्त ऋतु,

ग्रह दर्शन:-२९ नवं. को बुध पश्चिम में अस्त होगा । १५ नवं. को मंगल भी अस्त होगा । प्रातः गुरु को खमध्य से पश्चिम की ओर झुका हुआ देखें । शनि को पूर्वकपाल में तथा शुक्र को पूर्व में देख सकेंगे।

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. कार्तिक	अं. पूस	श. कार्तिक	मु. जिलहिज	चन्द्र-संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	
२६	१३	१	बु.	४७	३०	कृ.	४०	१०	प.	५७	१५	बा.	१७	४	३०	१५	२४	१३	वृष	६	५२	५	२१	६	२८	४५	३७	मंगल अस्त २०।२५,
२६	१०	२	गु.	४९	४२	रो.	४३	३५	शि	५६	१२	तै.	१८	३६	मा.१	१६	२५	१४	वृष	६	५३	५	२१	६	२९	४६	४	सं.सूर्य वृश्चिक में१३।५०,पुण्य सारा दिन,मु.४५,मंगल ज्येष्ठा में६।३७
२६	६	३	शु.	५३	१२	मृ.	४८	२२	सि	५६	१०	ब.	२१	२७	२	१७	२६	१५	मि१५।५८	६	५४	५	२०	७	०	४६	३४	भ.२१।२७उ.,५३।१२या.,शुक्र बाल्य स.४८।०,राहु उ.फा१सिह,
२६	३	४	श.	५८	०	आ.	५४	१०	सा.	५७	८	ब.	२५	३६	३	१८	२७	१६	मिथुन	६	५५	५	२०	७	१	४७	५	श्री गणेश ४ व्र. केतु पू.भा.३ कुम्भ में५०।१२, बलिदान★
२५	५९	५	र.	६०	०	पुन	६०	०	शु.	५८	४८	कौ.	३०	५४	४	१९	२८	१७	क.४४।२०	६	५६	५	१९	७	२	४७	३७	सूर्य अनु. में ३२।५, ★दिन श्री लाला लाजपतराय जी
२५	५६	५	सं.	३	४८	पुन.	१	२	शु.	६०	०	तै.	३	४८	५	२०	२९	१८	कर्क	६	५६	५	१९	७	३	४८	११	
२५	५४	६	मं.	१०	१२	पु.	८	३८	शु.	१	०	ब.	१०	१२	६	२१	३०	१९	कर्क	६	५७	५	१९	७	४	४८	४७	भ.१०।१२ उ., ४३।२८ या.,
२५	५२	७	बु.	१६	४३	आश्ले.	१६	८	ब.	३	२०	ब.	१६	४३	७	२२	मा.१	२०	सि१६।८	६	५८	५	१९	७	५	४९	२४	सूर्य सा. धनु में ३६।३०, शक मार्गशीर्ष प्रा.,
२५	४९	८	गु.	२२	४०	म.	२३	१५	ऐं.	५	१७	कौ.	२२	४०	८	२३	२	२१	सिंह	६	५९	५	१८	७	६	५०	३	श्री महाकाल भैरवाष्टमी,
२५	४६	९	शु.	२७	३०	पू.फा.	२९	१०	वं.	६	२८	ग.	२७	३०	९	२४	३	२२	क.४५।१५	७	०	५	१८	७	७	५०	४३	भ. ५९।१० उ.,
२५	४३	१०	श	३०	३०	उ.फा.	३३	३०	वि.	६	३०	वि.	३०	३०	१०	२५	४	२३	कन्या	७	१	५	१८	७	८	५१	२४	भ. ३०।३० या., बुध वक्री ४३।२८, गुरु वक्री ३६।१२,
२५	४०	११	र.	३१	३५	ह.	३५	५२	प्री.	५	८	ब.	१	३	११	२६	५	२४	कन्या	७	२	५	१८	७	९	५२	८	उत्पन्ना ११ व्र. स.,
२५	३८	१२	सं.	३०	३८	चि.	३६	१८	आ	४७	३४	कौ.	१	७	१२	२७	६	२५	तु. ६।५	७	२	५	१७	७	१०	५२	५४	मल्ल १२,
२५	३५	१३	मं.	२७	३८	स्वा.	३६	४२	शो	५१	३०	ब.	२७	३८	१३	२८	७	२६	तुला	७	३	५	१७	७	११	५३	४१	भ. २७।३८ उ., ५५।१७ या., शुक्र मार्गी १।१०, भौम प्रदोष व्र.
२५	३३	१४	बु.	२२	५५	वि.	३१	३०	अ.	४४	१०	श.	२२	५५	१४	२९	८	२७	वृ.१७।१८	७	४	५	१७	७	१२	५४	३०	बुध पश्चिम में अस्त ४७।२,मेला पुरमण्डल, देविका-स्नान(काश्मीर)
२५	३०	३०	गु.	१६	५०	अनु.	२३	०	सु.	३५	४७	ना.	१६	५०	१५	३०	९	२८	वृश्चिक	७	५	५	१७	७	१३	५५	२०	

मार्ग. कृ.८ गुरु, इष्ट ५६।१८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	७	३	६	४	४	१०
३	२२	२७	१५	१४	१९	२९	२९
४६	२५	४७	२९	११	३०	४०	४०
५६	२७	२३	३२	५७	४०	३६	३६
६०	४४	१२	०	१०	३	३	३
४०	२१	५१	१६	२	१४	११	११
	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२	२	४	४	३	२	२	३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये

९ | शु.७ | १० | मं.८ बु.सू. | ६ | ११के. | रा.५ श.चं. | १२ | २ | ४गु. | १ | ३

लोक भविष्य—१७ नवं. को राहु सिंह राशि में जाकर शनि के साथ युति करता है।शनि,राहु की युति व्यापारिक क्षेत्र में हलचल पैदा करेगी । कुछ समय के लिए सरकार मूल्यवृद्धि पर नियन्त्रण पाने में असमर्थ सी अनुभव करेगी शासक बेरोजगारी मुद्रास्फीति एवं मूल्यवृद्धि से चिन्तित होंगे ।—"शनि-राहू यदैकत्र भवेतां सहितौ तदा । सर्व-धान्य महर्घत्वं राजानो भय-विह्वलाः ॥" लेकिन शासन शीघ्र ही स्थिति पर नियन्त्रण पा लेगा । सिंह के राहु में राजनैतिक स्थिति सुदृढ़ होगी । देश में नए भाव एवं उन्नतिप्रद विचारों का उदय होगा ।शिक्षा में प्रगति होगी।

कुं. सूर्योदये

९ | ७शु. | १० | मं.सू. बु.८चं. | ६ | ११ के. | ५श. रा. | १२ | २ | ४गु. | १ | ३

मार्ग. कृ.३० गुरु, इष्ट ५६।३

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	७	३	६	४	४	१०
१४	२७	२५	१५	१३	१९	२९	२९
५२	३७	४७	२७	५३	५१	१८	१८
१२	२९	३१	१४	४०	१५	२०	२०
६०	४४	५९	१	७	२	३	३
५१	४७	७	८	४	३२	११	११
	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	अ.	उ	उ.	उ.	अ.	अ.
४	४	३	४	३	२	२	३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ से गेहूं अलसी जौ चना गुड़ तांबा चांदी सोना एवं ऊनी वस्त्र तेज रहेंगे । लेकिन २५नवं. के लगभग अनाजों अलसी एवं घी में मन्दा बनेगा, बाजार का रुख देखकर काम करें । तांबा चांदी सोना आदि धातु अधिक तेज होंगे । धान्य गुड़ घी का स्टाक करें, आगे लाभ रहेगा । अदरक, सोंठ मिर्च पीपल स्टाक करें, ६ मास बाद उत्तम लाभ मिले ।

आकाश लक्षण—१५ से १७ एवं २५,२९,३० नवं को मद्रास लंका हि.प्र. आदि में कहीं बादल चाल वर्षा बूंदाबांदी से तापमान गिरे, वायु का जोर रहे ।

शकुन विचार—यदि मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष चतुर्दशी एवं अमावस को सूर्य बादलों से आच्छादित रहे तो अन्न शीघ्र ही तेज होगा ।

(१ से १४ दिसंबर तक, सन् १९७८ई.), द. ग्र.-गो., हेमन्त ऋतु,

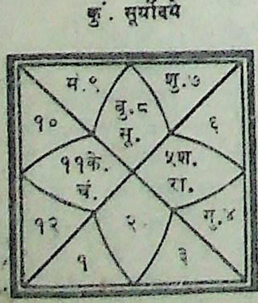
श्री वि.सं.२०३५, शाक १९००, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १७ — तारीखें — चन्द्र-संचार — भा. स्टै. टा. — उदय-कालिक (१ से १४ दिसंबर तक, सन् १९७८ई.), द. अ.-गो., हेमन्त ऋतु.

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. मार्ग.	अं. दिसं.	शा. मार्ग.	मु. जिल्हिज्जा	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन:-उष:काल में शुक्र पूर्व में, गुरु पश्चिम कपाल में तथा शनि याम्योत्तर लंघन करता दीखेगा, मंगल अस्त है, बुध ११दिसं. को सूर्योदय से पहिले पूर्व में दीखना शुरु हो जाएगा। १४दिसं.को
२५	२८	१	शु.	९	४७	ज्ये.	२१	३५	धृ.	२६	४७	ब.	९	४७	१६	१	१०	२९	ध.३१।३५	७	६	५	१७	७	१४	५६	१२	चन्द्र दर्शन मु. ३०, दिसम्बर प्रा.
२५	२६	२	श.	२	१५	मू.	१५	५०	शू.	१७	३०	कौ.	२	१५	१७	२	११	मु.१	धनु	७	६	५	१७	७	१५	५७	५	सूर्य ज्येष्ठा में ४२।१८, मुहर्रम मु. (हिजरी सन् १३९९) प्रा.
अवम	म	३	श.	५४	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया तिथि क्षय — शुक्र की चमक अधिकतम होगी।
२५	२४	४	र.	४७	१०	पू.षा.	१०	०	गं.	५८	१३	ब.	२०	५२	१८	३	१२	२	म.२३।३७	७	७	५	१७	७	१६	५७	५९	भ. २०।५२ उ. ४७।१० या., (बि. मु.-उ. षा.)
२५	२२	५	चं.	४०	२०	उ.षा.	४/५८	३०/४५	ध्रु.	५०	४०	ब.	१३	४५	१९	४	१३	३	मकर	७	८	५	१७	७	१७	५८	५४	मंगल मूल-धनुमें ६।३५, शनि पू.फा. ३ में ३५।१५, (बि.मु.षव.)
२५	२०	६	मं.	३४	१८	ध.	५५	५०	व्या	४२	५२	कौ.	७	१९	२०	५	१४	४	कु.२७।४८	७	९	५	१७	७	१८	५९	४९	पञ्चक प्रा. २७।४८, चम्पा ६,
२५	१८	७	बु.	२९	१८	श.	५३	०	ह.	३५	५५	ग.	१	४८	२१	६	१५	५	कुम्भ	७	१०	५	१७	७	२०	०	४५	भ. २९।१८ उ. ५७।२२ या.,
२५	१६	८	गु.	२५	२५	पू.भा.	५१	१५	व.	२९	५५	ब.	२५	२५	२२	७	१६	६	मी३६।४१	७	१०	५	१७	७	२१	१	४३	बलिदान दिन श्रीगुरु तेग बहादुर जी
२५	१४	९	शु.	२२	४०	उ.भा.	५०	३२	सि.	२४	३८	कौ.	२२	४०	२३	८	१७	७	मीन	७	११	५	१७	७	२२	२	४१	व. बुध अनु. में १२।२७,
२५	१२	१०	श.	२०	५५	रे.	५०	५२	व्य	२०	१५	ग.	२०	५५	२४	९	१८	८	मे.५०।५२	७	१२	५	१७	७	२३	३	३९	भ. ५०।३५ उ., पंचक स. ५०।५२,
२५	१०	११	र.	२०	१५	अ.	५२	१०	व.	१६	४०	वि.	२०	१५	२५	१०	१९	९	मेष	७	१२	५	१७	७	२४	४	३७	भ. २०।१५ या, मोक्षदा ११ व्र. स., श्री गीता जयन्ती,
२५	८	१२	चं.	२०	३०	भ.	५४	२०	प.	१३	५०	बा	२०	३०	२६	११	२०	१०	मेष	७	१३	५	१७	७	२५	५	३७	बुध पूर्व में उदित ५४।१५, सोम प्रदोष व्र,, मुहर्रम,
२५	७	१३	मं.	२१	४३	कृ.	५७	२२	शि.	११	४०	तै.	२१	४३	२७	१२	२१	११	वृ.१०।५	७	१४	५	१८	७	२६	६	३७	
२५	६	१४	बु.	२३	४८	रो.	६०	०	सि.	१०	१५	व.	२३	४८	२८	१३	२२	१२	वृष	७	१५	५	१८	७	२७	७	३९	भ. २३।४८ उ. २५।२० या,, पिशाच मोचन श्राद्ध,
२५	५	१५	गु.	२६	५५	रो.	१	२०	सा.	९	३२	ब.	२६	५२	२९	१४	२३	१३	मि३३।४९	७	१५	५	१८	७	२८	८	४१	सत्य व्र., श्री दत्त जयन्ती

मार्ग. शु. ८ गुरु, इष्ट ५५।५०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	८	७	३	६	४	४	१०
२१	२	१७	१५	१५	२०	२८	२८
५८	५२	०	१५	२८	६	५६	५६
२६	३	२५	१३	२७	४८	४	४
६०	४५	७३	२	२१	१	३	३
५६	८	२९	३०	४१	४८	११	११
	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

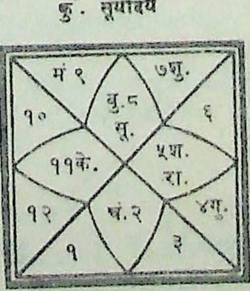
कुं. सूर्योदये



लोक भविष्य—इस पक्ष में कर्क का गुरु वक्री चल रहा है साथ ही बुध भी वक्र है, कुछ प्रदेशों में अनाज की कमी से चिन्ता हो, अनाज का आयात करना पड़े।—"कर्क-राशि गतो जीवो यदा वक्री भवेत्तदा दुर्भिक्षं जायते घोरं राजानो युद्ध तत्परा॥" कहीं शासक राजनैतिक विषमता में उलझें। ११ दिस. को बुधोदय भी पूर्वीय प्रान्त एवं देशों के लिए नेष्ट है।

ग्रहचाल एवं बाजार का रुख—३ दिसम्बर के बाद चावल चना जौ सरसों घी गुड़ खाण्ड एरण्ड बिनौला उड़द मूंग एवं तिल तेज होंगे। नोट करें, कि मार्ग कृष्ण में बुधास्त के समय जो वस्तु विशेष मन्दी रही हैं, उनमें तेजी आ जायगी तथा जो चीजें तेज थीं, वे मन्दी हो जावेंगी।

कुं. सूर्योदये



मार्ग. शु.१५, गुरु इष्ट ५५।३८

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	८	७	३	६	४	४	१०
२९	८	११	१४	१८	२०	२८	२८
५	९	४९	५३	३७	१७	३३	३३
१३	१	५५	४२	२०	७	४८	४८
६१	४५	१	३	३३	१	३	३
१	३९	४२	५१	२९	२	११	११
	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण—इस पक्ष में शीत का जोर रहेगा। कुछ स्थानों पर बादलचाल एवं बूंदाबांदी होगी। ४-५ एवं ११ दिस. को अनेकत्र बादलचाल रहे एवं कहीं वायु का जोर तथा खण्डवृष्टि हो।

शकुन विचार—यदि मार्ग. शु. ८ को वर्षा हो तो आगे श्रावण में निश्चय ही वर्षा हो। कहीं जल एवं आग से हानि का समाचार मिले, वस्तुएं महंगी हों, जनता में असन्तोष रहे।—"मोत्थाल परिरवक्त: कदाचिदपि चन्द्रजौ धान्युदयम्। अलवहन नवकृद् वात्यार्घ क्षय-विवृद्धयेव॥"

श्री वि.सं. २०३५, शाक १९००, पौष कृष्ण पक्ष १८ | तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टे. टा. | उदय-कालिक (१५से२९दिसं.तक,सन्१९७८ई.),द.उ.अ.,द.गो., हेमन्त-शिशिर ऋतु

वि.मा. घ. प.	तिथि	वार	घ. प.	नक्षत्र	घ. प.	योग	घ. प.	करण	घ. प.	प्र. पौष	अं. दिसं.	श. मार्ग.	मु. जुल्क.	संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	स्पष्ट सूर्य रा. अं. क. वि.	
२५ ४	१	शु	३१ ०	मृ.	६ १८	शु.	९ ३५	कौ.	३१ ०	१	१५	२४	१४	मिथुन	७ १६	५ १८	७ २९ ९ ४३	सं.सूर्य भूल धनु में४९।२५,पुण्य अगले दिन मध्याह्न से पूर्व,मु.१५, ★ ★बुध मार्गी १६।२२
२५ ३	२	श	३६ २	आ.	१२ ८	शु.	१० २२	तै.	३ ३१	२	१६	२५	१५	मिथुन	७ १७	५ १८	८ ० १० ४६	
२५ २	३	र	४२ ०	पुन.	१८ ५२	ब्र.	११ ४४	व	९ १	३	१७	२६	१६	क. २।११	७ १८	५ १९	८ १ ११ ५०	भ. ९।१ उ. ४२।० या. शुक्र विशा. में १९।२,
२५ १	४	चं	४८ ३५	पु.	२६ २२	ऐं	१३ ५५	ब.	१५ १८	४	१८	२७	१७	कर्क	७ १८	५ १९	८ २ १२ ५४	श्री गणेश ४ व्र.
२५ ०	५	मं.	५५ २५	आश्ले.	३४ १०	वै	१६ १७	कौ	२२ ००	५	१९	२८	१८	सिं३४।१०	७ १९	५ १९	८ ३ १३ ५९	
२४ ५९	६	बु.	६० ०	म.	४१ ५२	वि.	१८ ४२	ग.	२८ ३८	६	२०	२९	१९	सिंह	७ १९	५ १९	८ ४ १५ ४	
२४ ५९	६	गु.	१ ५०	पू.फा.	४८ ४५	प्री.	२० ३७	व.	१ ५०	७	२१	३०	२०	सिंह	७ २०	५ २०	८ ५ १६ १०	भ. ११५० उ., ३४।३५ या., मंगल पू.षा. में ४४।२८
२५ ०	७	शु.	७ २०	उ.फा.	५४ २८	आ	२१ ५२	ब.	७ २०	८	२२	पौ.१	२१	क. ५।११	७ २०	५ २०	८ ६ १७ १६	सूर्य सा. मकर में ८।४८ उत्तरायण-शिशिर ऋतु प्रा., शक पौष-प्रा.
२५ १	८	श	११ २६	ह.	५८ २२	सौ	२१ ५२	कौ.	११ २६	९	२३	२	२२	कन्या	७ २१	५ २१	८ ७ १८ २४	
२५ २	९	र.	१३ ३८	चि.	६० ०	शो	२० १५	ग.	१३ ३८	१०	२४	३	२३	तु.२९।१७	७ २१	५ २२	८ ८ १९ ३२	भ.४३।२८उ., बुध ज्येष्ठा में १४।२८, शनि वक्री २१।५.
२५ ३	१०	चं.	१३ २५	चि.	[illegible]	अ.	१७ २	वि.	१३ २५	११	२५	४	२४	तुला	७ २२	५ २३	८ ९ २० ४१	भ. १३।२५ या., क्रिसमस-डे,
२५ ४	११	मं.	११ २	वि.	५७ ३०	सु.	१२ ०	बा	११ २	१२	२६	५	२५	वृ. ४३।७	७ २२	५ २३	८ १० २१ ५१	सफला ११ व्र. स., जोड़ मेला (फतेहगढ़ साहिब प्रा.
२५ ५	१२	बु.	६ ४०	अनु.	५३ १७	धृ.	[illegible]	तै.	६ ४०	१३	२७	६	२६	वृश्चिक	७ २२	५ २४	८ ११ २३ २	प्रदोष व्र., मेल बाबा हरवल्लभ (जालंधर) प्रा., श्री बोधायनाचार्य★
२५ ६	१३	गु	० २५	ज्ये.	४७ ३५	शू.	४८ ०	व.	० २५	१४	२८	७	२७	ध. ४७।१५	७ २३	५ २५	८ १२ २४ १३	भ. ०।२५ उ. २६।३८ या., सूर्य पू.षा. में ५४।४२, जोड़ मेला स.,
क्षयम	१४	गु.	५२ ५०	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	०	० ०	० ०	० ० ० ०	चतुर्दशी तिथिक्षय, ★जयन्ती (पिण्डोरी धाम)
२५ ७	३०	शु.	४६ १५	मू.	४० ५५	वृ.	३८ ०	च.	१८ ३३	१५	२९	८	२८	धनु	७ २३	५ २६	८ १३ २५ २४	

ग्रह दर्शन:-मंगल अस्तहै। उष:कालमें बुध पूर्वमें, शुक्र पूर्व-कपालके मध्य में, शनि पश्चिम कपाल में तथा गुरु पश्चिम की ओर झुका होगा। प्रात: शुक्र-चन्द्र बिल्कुल समीप होंगे।

पौष कृ.८ शनि, इष्ट ५५।२२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	७	३	६	४	४	१०
८	१५	१६	१४	२४	२०	२८	२८
१४	०	२१	१३	२६	२२	५	५
५१	०	१३	२	३२	२९	११	११
६१	४५	५९	५	४४	०	३	३
८	५४	०	७१	४२	३	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये

१० | बु.८ | मं.९ सू. | ११के. | शु.७ | १२ | ६ चं. | १ | ३ | ५श. रा. | २ | ४गु.

लोक भविष्य—इस पक्ष में मंगल पू.षा. नक्षत्र में प्रविष्ट होता है, वर्षा पर्याप्त हो, अनाज पर्याप्त हो, तिलहन महंगे रहें—"पू.षा. कुजे भूरिजला: पयोदा: गावोल्प दुग्धा वसुधान्न पूर्णा ॥" २४ दिसम्बर को पू.फा. नक्षत्र का शनि वक्री होकर पश्चिमस्थ देशों में अनेक प्रकार की राजनैतिक उलझनें पैदा करेगा। अफ्रीकी देश, अरब देश एवं अन्य यावन देशों की स्थिति चिन्तनीय होगी।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में रूई कपास सूत में कुछ तेजी का वातावरण रहेगा। पशुओं के व्यापारी विचार पूर्वक काम करें, पशु संग्रह हो तो निकाल दें। आगे हानिमय है। २१ दिसं. से मंगल के पू.षा. में आने पर सोना चांदी चावल उड़द घी दूध तिल तेल सरसों मूंगफली में तेजी आएगी। अनाजों में मन्दे का रुख रहे। २४ दिस.को शनि वक्री होकर मार्केट में अनिश्चितता का वातावरण बनाएगा, समझ से काम करें, झटकेकी तेजी-मन्दी आ सकतीहै।

कुं. सूर्योदये

१० | बु.८ | मं.९ सू.च. | ११के. | शु.७ | १२ | ६ | १ | ३ | ५श. रा. | २ | गु.४

पौष कृ.३० शुक्र, इष्ट ५५।१७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	७	३	६	४	४	१०
१४	१९	२३	१३	२९	२०	२७	२७
२१	३६	१	३८	९	२१	४६	४६
४७	४	२१	३६	५	३	६	६
६१	४६	७५	६	५०	०	३	३
१०	१०	३	१६	१०	३७	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	अ.	उ.	उ	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण—इस पक्ष में शीत का प्रभाव अधिक बढ़ेगा। १५ एवं २१ से २४ दिसम्बर तक कई स्थानों पर बादलचाल एवं कुछ स्थानों पर बिजली की कड़कड़ाहट के साथ खण्डवृष्टि होगी।

शकुन विचार—यदि धनु संक्रान्ति के दिन वर्षा हो [illegible]

उदय-कालिक (२१ दिसं १९७८ई से १३ जन १९७९ई.तक) उ.अ., द.-गो. शिशिरऋतु

शकुन विचार --यदि धनु संक्रान्ति के दिन वर्षा हो तो आगे गेहूं एवं चना की खेती अच्छी होती है।

...१९३५, शाका १९००, पौष शुक्ल पक्ष १६ | तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टै. टा. | उदय-कालिक | (२९दिसं.१९७८ई.से१३जन १९७९ई.तक) उ.अ.,द.-गो. शिशिर ऋतु

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.प.	नक्षत्र	घ.प.	योग	घ.प.	करण	घ.प.	प्र. पौष	अं. जन.	श. पौष	मु. मुह.	चन्द्र संचार घ.प.	चण्डीगढ़ सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	स्पष्ट सूर्य रा. अं. क. वि.	ग्रह दर्शन:—मंगल अस्त है। सूर्योदय से पहिले बुध पूर्व क्षितिज की ओर जाता, शुक्र पूर्व कपाल में, गुरु पश्चिम क्षितिज की ओर जाता तथा शनि पश्चिम कपाल में देखा जा सकता है।
२५	८	१	श.	३५ ८	पू.षा.	३३ ४८	ध्रु.	२७ ३२	कि.	९ ४१	१६	३०	९	२९	स.४७।०	७ २३	५ २६	८ १४ २६ ३५	शुक्र वृश्चिक में ५६।१०
२५	९	२	र.	२६ १५	उ.षा.	२६ ३५	व्या	१७ ०	बा.	० ४१	१७	३१	१०	३०	मकर	७ २४	५ २७	८ १५ २७ ४४	चन्द्र दर्शन मु. ४५, ईस्वी सन् १९७८ पूर्ण
२५	११	३	चं.	१७ ४०	श्र.	११ ५२	ह.	६ ४५ / ५७ ५०	ग.	१७ ४०	१८	ज१	११	स.१	कु.४६।५६	७ २४	५ २८	८ १६ २८ ५६	म.४३।४८ उ., पंचक प्रा. ४६।५६, व. गुरु पुष्य ३ में ४९।५३,
२५	१२	४	मं.	९ ५५	ध.	१९ ०	सि	४८ २८	वि.	९ ५५	१९	२	१२	२	कुम्भ	७ २४	५ २९	८ १७ ३० ७	म.९।५५या., जनवरी सन् १९७९ ई. प्रा. इंगलिस नववर्ष
२५	१३	५	बु.	३ २२	श.	९ २०	व्य.	४० ५०	बा.	३ २२	२०	३	१३	३	मी५१।५०	७ २४	५ २९	८ १८ ३१ १८	शुक्र अनु में ४६।४५, /दिन, सफर मु. प्रा.,
अवम		६	बु.	५८ ८	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	०	० ०	० ०	० ० ० ०	षष्ठी तिथि क्षय
२५	१४	७	गु.	५४ ३२	पू.भा.	६ ०	व	३४ २२	ग.	२६ २०	२१	४	१४	४	मीन	७ २५	५ ३०	८ १९ ३२ २८	म.५४।३२उ., बुध मूल धनु में १५।४०, जन्म दिन श्री ★
२५	१५	८	शु.	५२ ३०	उ.भा.	४ १५	प.	२९ १२	वि.	२३ ३१	२२	५	१५	५	मीन	७ २५	५ ३१	८ २० ३३ ३८	म. २३।३१ या., ★गुरु गोविंद सिंह जी
२५	१६	९	श.	५२ ०	रे.	४ ०	शि.	२५ १५	बा.	२२ १५	२३	६	१६	६	मे. ४।०	७ २५	५ ३२	८ २१ ३४ ४८	पंचक स. ४।०,
२५	१७	१०	र.	५२ ५२	अ.	५ १८	सि.	२१ ५८	तै.	२२ २६	२४	७	१७	७	मेष	७ २५	५ ३३	८ २२ ३५ ५७	
२५	१९	११	चं.	५५ २	भ.	७ ५२	सा.	२० ४०	व.	२३ ५७	२५	८	१८	८	वृ. २३।४८	७ २५	५ ३३	८ २३ ३७ ५	म.२३।५७उ.५५।२ या., मंगल उ.षा. में ४।२८, पुत्रदा ११ व्र.स.
२५	२१	१२	मं.	५८ १५	कृ.	११ ३५	शु	१९ ४८	ब.	२६ ३८	२६	९	१९	९	वृष	७ २५	५ ३४	८ २४ ३८ १३	
२५	२४	१३	बु.	६० ०	रो.	१६ २०	शु.	१९ ३८	कौ.	३० २०	२७	१०	२०	१०	मि.४९।४	७ २५	५ ३५	८ २५ ३९ २१	सूर्य उ.षा. में ५९।३०, प्रदोष व्र. स.
२५	२६	१३	गु.	० २५	मृ	२१ ५५	ब्र.	२० १०	तै.	२ २५	२८	११	२१	११	मिथुन	७ २५	५ ३६	८ २६ ४० २९	✲हि.प्र.-जम्मू-काश्मीर), माघ स्नान प्रा.
२५	२८	१४	गु.	७ १८	आ.	२८ १५	ऐं	२१ १८	व.	७ १८	२९	१२	२२	१२	मिथुन	७ २५	५ ३६	८ २७ ४१ ३६	म. ७।१८ उ., ४०।१० या., मंगल मकर में २२।१८, सत्य. व्र.
२५	३०	१५	श.	१३ २	पुन.	३५ १२	वै.	२२ ४८	ब.	१३ २	३०	१३	२३	१३	क.१८।२८	७ २५	५ ३७	८ २८ ४२ ४२	बुध पू.षा. में ३५।२२, यूरेनस विशा. ३ में ५७।१५, लोहड़ी (पंजाब-✲

पौष शु. ८ शुक्र. इष्ट ५५।१२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	८	३	७	८	४	१०
२१	२४	२	१२	५	२०	२७	२७
२९	५९	१७	५२	१५	१४	२३	२३
५४	५८	६	८	४७	२२	५१	५१
६१	४६	८३	७	५५	१	३	३
०	२६	५६	८	५	२३	११	११
	मा.	मा	व	मा	व	व.	व.
	अ.	उ	उ	उ	उ.	अ	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

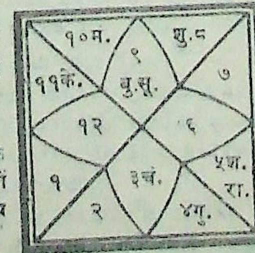
कुं. सूर्योदये

१० | मं.९ | शु.८ | ११के. | बु.सू. | ७ | १२चं. | ६ | ५श. रा. | १ | ३ | २ | ४गु.

लोक भविष्य —इस मास में पांच शनिवार है, पश्चिमोत्तरी देशों में कहीं विप्लव, आगजनी की घटना से हानि, कहीं प्राकृतिक प्रकोप भूकम्प आदि से जनधनकी हानिका समाचार मिले:— "शनिवारा यदा पञ्च पातालें कम्पते फणी। ईशान देश भंगश्च वह्निदाहो महर्घता॥" कहीं यान दुर्घटना से भी हानि का योग बनता है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में ही शुक्र वृश्चिक में आकर उड़द मूंग मोठ बाजरा आदि अनाजों में तेजी करेगा।—"वृश्चिके तु गते शुक्रे सर्व धान्य महर्घता। लोकास्तु निर्भयास्तत्र सुखं स्वस्थं प्रवर्धते॥" ८ जन. १९७९ ई. से पहिले अनाजों में तेजी एवं अन्य वस्तुओं में प्राय: घटाबढ़ी चलेगी। लेकिन ८ जनवरी के लगभग से ही धान्य घी सरसों उड़द तेज होंगे, रूई में विशेष तेजी आने का योग है। १२ जनवरी तक रूई सोना चांदी घी तेल सरसों में तेजी रहेगी।

कुं. सूर्योदये



पौष शु.१५ शनि. इष्ट ५५।१२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	९	८	२	७	४	४	१०
२९	११	१३	११	१२	२०	२६	२६
३८	१२	४१	५२	५२	०	५८	५८
५६	११	२४	५८	१०	२१	२४	२४
६१	४६	८९	७	५९	२	३	३
६	४०	२८	४८	२१	१३	११	११
	मा	मा	व.	मा	व.	व.	व.
	अ	उ.	उ	उ	उ.	अ	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण —दिस. ३०, जनवरी ३,४,८,१२ को बादल वर्षा के योग हैं। शीत लहर से अनेकत्र हानि होगी।

शकुन विचार —यदि पौष शुक्ल १५ को बिजली चमके और आकाश में घने बादल हो तो आगे अनाज की फसल अच्छी होती है।

श्री वि.सं. २०३५, शाक १९००, माघ कृष्ण पक्ष २० | तारीखें | चन्द्र-संचार | भा. स्टै. टा. उदय-कालिक (१४ से २८ जन. तक, सन् १९७९ई.),उ.अ.,व.शो., शिशिर ऋतु

ग्रह दर्शन:-मं. अस्त है। बु.१९जन.को पूर्व में अस्त होगा। उष:काल में शु. पूर्व कपाल में तथा श.पश्चिम कपाल में होगा, गु.लगभग सूर्यास्त के समय उदित होने पर सारी रात देखा जा सकेगा। १८जन.को★

वि.का. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. माघ	अं. जन.	श.	मु.	चन्द्र संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि	
२५	३३	१	र.	१९	१८	पु.	४२	४०	वि.	२४	५८	कौ.	१९	१८	१	१४	२४	१४	कर्क	७	२५	५	३८	८	२९	४३	४९	सं सूर्य मकर में १५।५२,पुण्य सारा दिन मु.३०,व.शनि.पू.फा.२म
२५	३६	२	चं.	२५	५५	आश्ले.	५०	२२	प्री.	२७	१८	ग.	२५	५५	२	१५	२५	१५	सिं५०।२२	७	२५	५	३९	९	०	४४	५५	म,५९।१८उ., १२।०, मेला मुक्तसर ★प्रात: शुक्र का सूर्य
२५	३९	३	मं.	३२	४२	म.	५८	१२	आ.	२९	४५	वि.	३२	४२	३	१६	२६	१६	सिंह	७	२५	५	४०	९	१	४६	१	म.३२।४२या.,(वि.मु.मघा) से अन्तर लगभग४७°होगा।
२५	४२	४	बु.	३९	१८	पू.फा.	६०	०	सौ.	३२	०	ब.	६	०	४	१७	२७	१७	सिंह	७	२४	५	४१	९	२	४७	५	शुक्र ज्ये. में४३।१०,श्री गणेश४व्र.,संकट हारिणी४व्र.,(संकट चौथ)
२५	४४	५	गु.	४५	७	पू.फा.	५	३२	सौ.	३३	४२	कौ.	१२	१२	५	१८	२८	१८	क.२२।११	७	२४	५	४२	९	३	४८	११	[वि.मु.-उ.फा.] चन्द्रोदय रात्रि ९ घ. २४ मि.
२५	४६	६	शु.	४९	५०	उ.फा.	१२	७	अ.	३४	४५	ग.	१७	२८	६	१९	२९	१९	कन्या	७	२४	५	४२	९	४	४९	१५	म.४९।५०उ.,बुध पूर्व में अस्त३७।३०,राहु पू.फा.४,केतु पू.भा.२में
२५	४८	७	श.	५२	५२	ह.	१७	२२	सु.	३४	३५	वि.	२१	२१	७	२०	३०	२०	तु ४९।१	७	२४	५	४३	९	५	५०	१८	म.२१।२१या.,सूर्य अभिजित् में४८।५८,सूर्य सा.कुम्भ में३५।२०,
२५	५१	८	र.	५४	०	चि.	२०	५५	धृ.	३३	२	बा.	२३	२६	८	२१	मा.१	२१	तुला	७	२४	५	४४	९	६	५१	२०	वेंकटेश व्रत४९।४५,शक माघ प्रा., [वि.मु.स्वा.]
२५	५४	९	चं.	५३	२	स्वा.	२२	३५	शू.	२९	५५	तै.	२३	३१	९	२२	२	२२	तुला	७	२३	५	४५	९	७	५२	२२	बुध उ.षा. में २०।१२, ४२।५८[वि.मु.उ फा.,ह.]
२५	५८	१०	मं.	४९	५५	वि.	२२	२	गं.	२५	२	व.	२१	२८	१०	२३	३	२३	वृ. ७।१०	७	२३	५	४६	९	८	५३	२४	म. २१।२८ उ., ४९।५५ या., जन्मदिन नेता जी श्री सुभाष,
२६	१	११	बु.	४४	४५	अनु.	१९	३०	वृ.	१८	३५	ब.	१७	२०	११	२४	४	२४	वृश्चिक	७	२३	५	४७	८	९	५४	२५	सूर्य श्रवण में५।२७,सूर्य अभिजित् से निवृत्त५७।५२,बुध मकर में +
२६	४	१२	गु.	३७	५२	ज्ये.	१५	८	ध्रु.	१०	३५	कौ.	११	१८	१२	२५	५	२५	ध.१५।८	७	२३	५	४८	९	१०	५५	२६	मंगल श्रवण में११।३२, + २७।०, षट्तिला११व्र.स.
२६	७	१३	शु.	२९	४५	मू.	९	१५	व्या.	[illegible]	[illegible]	ग.	३	४९	१३	२६	६	२६	धनु	७	२२	५	४९	९	११	५६	२८	म.२९।४५उ.५५।१३या, प्रदोष व्र. भारतीय गणतन्त्र दिवस.
२६	९	१४	श.	२०	४०	पू.षा.	[illegible]	[illegible]	व.	४०	३०	श.	२०	४०	१४	२७	७	२७	म.१५।२७	७	२२	५	४९	९	१२	५७	२७	जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य जयन्ती, जन्म दिन श्री विवेकानन्द
२६	१२	३०	र.	११	१२	श्र.	४७	१०	सि.	२९	३५	ना.	११	१२	१५	२८	८	२८	मकर	७	२१	५	५०	९	१३	५८	२९	व.गुरु पुष्य२में७।८,मौनी३०, जन्म दिन श्री लाला लाजपत राय जी

माघ कृ.८ रवि, इष्ट ५५।१५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	८	३	७	४	४	१०
७	७	२६	१०	२०	१९	२६	२६
४७	२६	०	४९	५८	३९	३३	३३
३३	२५	५८	४८	४३	५८	००	००
६१	४६	२६	८	६२	२	३	३
३	५५	०	२	३२	५८	११	११
	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये

११के. | ९बु. | १२ | मं.१० सू. | ८शु. | १ | चं ७ | २ | ४गु. | ६ | ३ | श. रा.५

लोक भविष्य-इस पक्ष में शनि-राहु का मंगल के साथ षडष्टक नेष्ट है। शासकों को विषम स्थिति का सामना करना होगा। पड़ोसी देश के साथ किसी प्रकार का विवाद खड़ा हो। लेकिन मंगल पर गुरु की दृष्टि है अत: किसी दूरदर्शी नेता के हस्ताक्षेप से समस्या का हल निकलेगा। पश्चिम में भी विस्फोटक स्थिति के समाधानार्थ प्रयत्न होंगे। पूर्वी देश कहीं अशान्ति का वातावरण पैदा करें।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में ही मंगल मकर में है;—'मकरे च स्थितो भौम: घृत तैल महर्घता। दुर्भिक्षं तत्र धान्यानां लोकानां दुख पीड़नम्॥' घी तेल गुड़ शक्कर खांड रुई आदि तेज रहें। गेहूं आदि में कुछ मन्दा रहे। पक्षान्त में २५ जनवरी को मंगल के श्रवण में आने पर अनाजों में भारी तेजी आने का योग है, जौ चना तिल अफीम एवं सोना चांदी तेज रहेंगे।

कुं. सूर्योदये

११के. | १० बु.चं. सू.मं. | ९ | १२ | ८शु. | १ | ७ | २ | ४गु. | ६ | ३ | ५श. रा.

माघ कृ.३० रवि, इष्ट ५५।२२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	९	३	७	४	४	१०
१४	१२	७	९	२८	१९	२६	२६
५४	५५	११	५३	२३	१७	१०	१०
४२	२१	४१	३४	९	२६	४४	४४
६०	४७	९८	७	४	२	२	३
५८	४	२२	५९	३९	३३	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व	व.	व.
	अ.	अ.	उ	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण—१४,२१,२४,२५ जनवरी को पंजाब, हि.प्र., हरयाणा में शीत लहर चलेगी। बादलचाल वर्षा व शीत का प्रकोप रहे। १९ जनवरी को भी अनेकत्र वायु का जोर एवं कहीं धुन्द पड़े।

शकुन विचार—माघ कृष्ण तृतीया को यदि मेघ गरजें [illegible] आकाश एवं दिशाएं निर्मल रहें [illegible]

एव कहीं धुन्द पड़े ।

शकुन विचार—माघ कृष्ण तृतीया को यदि ... को यदि आकाश एवं दिशाएं निर्मल रहें ...

श्री वि. सं. २०३५, शाक १९००, माघ शुक्ल पक्ष २१ | तारीखें | चन्द्र-संचार | भा. स्टैं. टा. | उदय-कालिक | (२९ जन. से १२ फर. तक सन् १९७९ई.) उ.प्र., द.-गो. शिशिर ऋतु

ग्रह दर्शन:-मंगल एवं बुध अस्त हैं। उष:काल में शुक्र पूर्व में तथा शनि को पश्चिम कपाल में देखें। सायं गुरु पूर्व क्षितिज से ऊपर उठता दीखेगा।

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ. प.	नक्षत्र	घ. प.	योग	घ. प.	करण	घ. प.	प्र. माघ	अं. फाल्गु.	श. माघ	मु. फाल्गु.	चन्द्र-संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	स्पष्ट सूर्य रा. अं. क. वि.	
२६	१५	१	चं.	१ ४५	ध.	३९ ५०	व्य.	१८ ४८	ब.	१ ४५	१६	२९	९	२९	कु. १३।३०	७ २१	५ ५१	९ १४ ५९ २४	पंचक प्रा., १३।३०, चन्द्र दर्शन मु. ३०,
प्रव	म	२	चं.	५२ ४०	०	० ०	०	० ०	०	० ०	०	०	०	०	०	० ०	० ०	० ० ० ०	द्वितीय तिथि क्षय,
२६	१८	३	मं.	४४ ३२	श.	३३ २०	व.	४६ ३२	तै.	१८ ३६	१७	३०	१०	र. १	कुम्भ	७ २०	५ ५२	९ १६ ० २२	बुध श्रवण में ३७।४८, शुक्र मूल धनु में २५।२५, रवी-उल-अव्वल
२६	२२	४	बु.	३७ ३८	पू.भा.	२८ ०	शि.	५० ४२	ब.	११ ५	१८	३१	११	२	मी १४।२०	७ २०	५ ५३	९ १७ १ १८	म.११।५उ., ३७।३८ या., तिल ४, (वि. मु.-उ. भा.)
२६	२५	५	गु.	३२ २०	उ.भा.	२४ ८	सि.	४३ ४२	ब.	४ ५९	१९	फ १	१२	३	मीन	७ १९	५ ५३	९ १८ २ १३	फरवरी प्रा., बसन्त (श्री) पंचमी, मेला मस्तुआणा, [वि.मु.उ.भा., रे.]
२६	२८	६	शु.	२८ ५०	रे.	२२ ३	सा.	३८ ५	कौ.	० ३५	२०	२	१३	४	मे. २२।३	७ १९	५ ५४	९ १९ ३ ५	पंचक स. २२।३, मु.प्रा., निधन दिन श्री महात्मा गांधी
२६	३२	७	श.	२७ १०	अ.	२१ ४२	शु.	३३ ५८	ब.	२७ १०	२१	३	१४	५	मेष	७ १८	५ ५५	९ २० ३ ५६	म.२७।१०उ., ५७।१६या., रथ ७ (पहिले अरुणोदय वाली), आरोग्य७
२६	३५	८	र.	२७ २२	भ.	२३ १२	शु.	३१ १८	ब.	२७ २२	२२	४	१५	६	वृ. ३९।१	७ १८	५ ५६	९ २१ ४ ४७	श्री भीष्माष्टमी,
२६	३९	९	चं.	२९ १५	कृ.	२६ २८	ब्र.	३० ०	कौ.	२९ १५	२३	५	१६	७	वृष	७ १७	५ ५७	९ २२ ५ ३६	[वि.मु.रोहि.] रवि दास जी
२६	४३	१०	मं.	३२ ४५	रो.	३१ ८	ऐं.	२९ ४५	तै.	१ ०	२४	६	१७	८	वृष	७ १६	५ ५८	९ २३ ६ २३	सूर्य धनि. में १३।२८, [वि.मु.रोहि.]
२६	४७	११	बु.	३७ २५	मृ.	३६ ५८	वै.	३० २७	व.	५ ५	२५	७	१८	९	मि. ४।३	७ १५	५ ५९	९ २४ ७ ९	म.५।५उ., ३७।२५या., बुध धनि. में २८।४२, जया ११ व्र. स.
२६	५२	१२	गु.	४३ ०	आ.	४३ ४५	वि.	३१ ५५	ब.	१० १३	२६	८	१९	१०	मिथुन	७ १४	५ ५९	९ २५ ७ ५३	श्री भीष्म द्वादशी,
२६	५६	१३	शु.	४९ १५	पुन.	५१ २	प्री	३३ ५८	कौ.	१६ ७	२७	९	२०	११	क. ३४।१३	७ १३	६ ०	९ २६ ८ ३५	प्रदोष व्र., ★ में ३०।२८, सत्य व्र., माघ स्नान सं., जन्म दिन श्री गुरु
२७	०	१४	श.	५५ ४५	पु.	५८ ३८	आ.	३६ १०	ग.	२२ ३०	२८	१०	२१	१२	कर्क	७ १३	६ १	९ २७ ९ १६	म. ५५।४५ उ., मेला जयन्ती देवी, ईद-ए-मिलाद
२७	५	१५	र.	६० ०	आश्ले.	६० ०	सौ.	३८ ३२	वि.	२९ ५	२९	११	२२	१३	कर्क	७ १२	६ २	९ २८ ९ ५६	म.२९।५या, मंगल धनि. में १०।१५, बुध कुम्भ में १४।३२, शुक्र पू.षा. ★
२७	९	१५	चं.	२ २५	आश्ले.	६ २५	शो.	४० ५२	ब	२ २५	फा. १	१२	२३	१४	सि. ६।२५	७ ११	६ ३	९ २९ १० ३४	सं सूर्य कुम्भ में ४८।५५, पुण्य अगले दिन, मध्याह्न से पूर्व, मु. ३०

माघ शु. ८ रवि, इष्ट ५५।३०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	९	३	८	४	४	१०
२२	१८	१८	८	६	१८	२५	२५
१	२५	५४	५८	०	५१	४८	४८
५	१६	४६	४१	३६	४	२९	२९
६०	४७	१०३	७	५३	३	३	३
४९	१२	२१	३७	४६	५८	११	११
	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.
	प्र.	प्र.	उ.	उ.	उ.	प्र.	प्र.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुं. सूर्योदये

११के. | ९शु. | १२ | सू.१० बु.मं. | ८ | १चं. | ७ | २ | ४गु. | ६ | ३ | रा. श.५

लोक भविष्य—३० जन. को बुध श्रवण में आकर घोर गति से चलेगा। पश्चिमी देशों में अनीति, अशान्ति व्यापक रूप से बढ़ेगी। बंगाल देहली आदि में चोरी और हत्या आदि की घटनाएं अधिक होंगी। अन्नाभाव एवं मुद्रास्फीति की समस्या से शासक चिन्तित रहें।

ग्रहचाल एवं बाजार का रुख—३० जन. को शुक्र धनु में आकर गेहूं जौ चना आदि अनाज, सोना तांबा चांदी आदि धातुओं में तेजी करेगा। "यदा च धन राशिस्थो दैत्याचार्यः प्रवर्तते। महर्घं च विजानीयात् सर्वं सस्यं विनश्यति॥" ११ फरवरी को ही शनि-राहु से दृष्ट बुध अलसी आदि तथा कुछ अन्य वस्तुओं में विशेष मन्दी कर सकता है—व्यापारी बाजार का रुख देखकर काम करें।

कुं. सूर्योदये

११के. | शु.९ | बु. | १०मं. सू. | १२ | ८ | १ | ७ | २ | ४गु. च. | ६ | ३ | ५श. रा.

माघ शु. १५ चन्द्र, इष्ट ५५।४७

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	९	१०	३	८	४	४	१०
०	२४	३	८	१४	१८	२५	२५
६	४३	२	०	५५	१७	२३	२३
५८	९	३२	११	५७	१७	३	३
६०	४७	१०६	६	६७	४	३	३
३८	१६	१०	५२	४३	२७	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	प्र.	प्र.	उ.	उ.	उ.	प्र.	प्र.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण—इस पक्ष में शीत का प्रभाव जोरों पर होगा। जन. ३०, फर. ११, १२ को पंजाब हरयाणा हि. प्र. आदि में बूंदाबांदी और वर्षा का योग है।

शकुन विचार—माघ पूर्णिमा के दिन यदि बादल हों तो अन्न संग्रह से सातवें मास लाभ रहे।

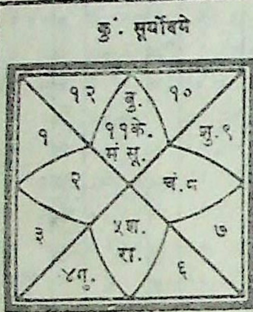
श्री वि.सं. २०३५ शाक १९००, फाल्गुन कृष्ण पक्ष २२ | तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टै. टा. | उदय-कालिक | (१३से२६फर.तक, सन् १९७९ई.), उ.ग्र., द.गो., शिशिर-वसन्त ऋतु

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. फाल्गु.	अ. फर.	श. [illegible]	मु. [illegible]	संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन:—मंगल अस्त है। बुध २५ फरवरी को पश्चिम में उदित होगा। उष काल में शुक्र पूर्व क्षितिज से ऊपर तथा शनि पश्चिम क्षितिज से ऊपर दीखेगा। साय काल गुरु को पूर्व कपाल में देखें।
२७	१३	१	मं.	८	५५	म.	१२	५८	अ.	४३	०	कौ.	८	५५	२	१३	२४	१५	सिंह	७	१०	६	३	१०	०	११	१०	(वि.मु.मघा)
२७	१८	२	बु.	१५	०	पू.फा.	२१	७	सु.	४४	४२	ग.	१५	०	३	१४	२५	१६	क.३७।४५	७	९	६	४	१०	१	११	४५	भ. ४७।४४ उ., बुध शत. में ५५।१५,
२७	२२	३	गु.	२०	२८	उ.फा.	२७	३८	धृ.	४५	५२	वि.	२०	२८	४	१५	२६	१७	कन्या	७	८	६	५	१०	२	१२	१८	भ. २०।२८ या., श्री गणेश ४ व्र., [वि.मु.ह.]
२७	२९	४	शु.	२४	५५	ह.	३३	१२	शू.	४६	१२	बा.	२४	५५	५	१६	२७	१८	कन्या	७	७	६	६	१०	३	१२	५०	[वि.मु.ह.]
२७	३१	५	श.	२८	१०	चि.	३७	३५	गं.	४५	३५	तै.	२८	१०	६	१७	२८	१९	तु.५।२४	७	६	६	७	१०	४	१३	२१	[वि.मु.स्वा.]
२७	३५	६	र.	२९	५५	स्वा.	४०	२५	वृ.	४३	४२	व.	२९	५५	७	१८	२९	२०	तुला	७	६	६	८	१०	५	१३	५१	भ. २९।५५ उ. ५९।५६ या., [वि.मु.स्वा.]
२७	४०	७	चं.	२९	५७	वि.	४१	३७	ध्रु.	४०	३०	व.	२९	५७	८	१९	३०	२१	वृ.२६।१९	७	५	६	९	१०	६	१४	२०	सूर्य शत. में २५।२२, सूर्य सा. मीन में ११।३५, वसन्त ऋतु प्रा., मंगल ★
२७	४५	८	मं.	२८	१०	अनु.	४१	०	व्या.	३५	५५	कौ.	२८	१०	९	२०	फा.१	२२	वृश्चिक	७	४	६	१०	१०	७	१४	४७	नेप्च्यून ज्येष्ठा ४ में १६।१५, शक फाल्गु प्रा., [वि.मु.अनु.]
२७	५०	९	बु.	१४	३७	ज्ये.	३८	५२	ह.	२९	५५	ग.	२४	३७	१०	२१	२	२३	ध.३८।५२	७	३	६	११	१०	८	१५	१३	भ. ५१।५९ उ., (वि.मु.मू.) ★ कुम्भ में ३७।४८
२७	५४	१०	गु.	१९	२२	मू.	३५	५५	व.	२२	३८	वि.	१९	२२	११	२२	३	२४	धनु	७	२	६	१२	१०	९	१५	३८	भ. १९।२२ या., बुध पू.भा. में ७।३२, [वि.मु.मू.]
२७	५९	११	शु.	१२	४०	पू.षा.	२९	४५	सि.	१४	७	बा.	१२	४०	१२	२३	४	२५	म.४३।११	७	१	६	१३	१०	१०	१६	२	शुक्र उ.षा. में २२।२२, विजया ११ व्रत सं.
२८	३	१२	श.	४	५५	उ.षा.	२३	३०	व्य.	४ / ४	४२ / ३८	शै.	४	५५	१३	२४	५	२६	मकर	७	०	६	१३	१०	११	१६	२५	भ. ५६।१५ उ., यूरेनस वक्री ४।४८, शनि प्रदोष व्र.
अ	बम	१३	श.	५६	१५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथि क्षय ✿ श्री महाशिवरात्रि व्र.,
२८	७	१४	र.	४७	१०	श्र.	१६	३२	व.	४४	१२	वि.	२१	४२	१४	२५	६	२७	कु.४२।५८	६	५९	६	१४	१०	१२	१६	४६	भ. २१।४३ या., पंचक प्रा. ४२।५८, बुध पश्चिम में उदित ३।३८
२८	११	३०	चं.	३८	१०	ध.	९	२५	शि.	३३	४८	च.	१२	४०	१५	२६	७	२८	कुम्भ	६	५८	६	१४	१०	१३	१७	६	व गुरु पुष्य १ में ५।४०, शुक्र मकर में ७।१०, सोमवती ३०,

फाल्गु. कृ.८ मंगल इष्ट ५६।१५

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	१०	३	८	४	४	१०
८	१	१७	७	२४	१७	२४	२४
११	९	४८	८	१	४०	५७	५७
२३	४२	०	३२	५७	३५	४०	४०
६०	४७	१११	५	६८	४	३	३
२७	१९	३	५२	५२	४३	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	द	व.	व.
	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

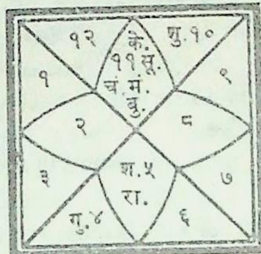
कुं. सूर्योदये



लोक भविष्य:—इस पक्ष में कुम्भ राशि के मंगल पर श.रा. की दृष्टि है। साथ ही कुम्भ राशि में मं.चं.सू.के. एवं बुध पांच ग्रह मिलकर पंचग्रही योग बना रहे हैं,—कहीं से अशुभ समाचार मिले। कुछ देशों में सोना की गतिविधि से वातावरण अशान्त होगा। कहीं किसी व्यक्ति के अस्वस्थ किंवा पदरिक्त होने का समाचार मिले। कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो—एक राशौ यदा यान्ति: पंच खेचरा:। प्लावयन्ति मही सर्वां रुधिरेण जलेन वा ॥"

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्ष के मध्य में १९ फरवरीके लगभग रुई और चांदी में काफी घटाबढ़ी चलेगी। अनाजों गुड़ खांड सोना में तेजी रहेगी। २३ फर. के लगभग रसकस एवं तेलवाना में मन्दी का वातावरण रहेगा। २६ फर.से पुन: गुड़ घी खांड गेहूं चना आदि सब अनाजों में तेजी रहे।

कुं. सूर्योदये



फाल्गु.कृ.३० चन्द्र, इष्ट ५६।२०

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	१०	३	९	४	४	१०
१४	५	२८	६	०	१७	२४	२४
१३	४५	३८	३५	५६	१२	३८	३८
४७	४५	५६	४१	५७	०	३५	३५
६०	४७	१०२	०	६९	४	३	३
१८	२२	१७	५५	३५	४९	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण —१९,२५,२६ फर. को कहीं बादलबाल और कहीं बूंदाबांदी होगी। शीत अधिक रहेगा।

शकुन विचार—फाल्गुन में यदि बादल हो परन्तु वर्षा न हो तो आगे वर्षा काल में अच्छी वर्षा हो। "वदभ्रं फाल्गुने नित्यं न तु पातयते जलम्। वृष्टि गर्भो भवत्येव प्रावृट् कालस्य बोधक: ॥"

भा. स्टै. टा. | उदय-कालिक | (२७ फर. से १३ मार्च तक सन१९७९ई.) द.ग्र., द.-गो. वसन्त ऋतु

शकुन विचार —फाल्गुन में यदि बादल हो ... तो आगे वर्षा काल में अच्छी वर्षा हो। ...
कालस्य बोहक ॥

श्री वि.सं. २०३५, शाक १९००, फाल्गुन शुक्ल पक्ष २३ | तारीखें | चन्द्र-संचार | भा. स्टै. टा. चण्डीगढ़ | उदय-कालिक स्पष्ट सूर्य | (२७ फर. से १३ मार्च तक सन् १९७९ई.) द.अ., द.-गो. वसन्त ऋतु

ग्रह दर्शन:—मंगल अस्त है। उषःकाल में शुक्र को पूर्व में देखें। सूर्यास्त बाद शनि को पूर्व क्षितिजासन्न एवं गुरु को पूर्व कपाल में देखें। इस समय बुध पश्चिम में दीखेगा।

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र. फाल्गु.	अं. फर.	श. फाल्गु.	मु. मार्च	संचार घ. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२८	१६	१	मं.	२९	३५	श.	५६	२२	सि.	२३	४०	कि.	३	५२	१६	२७	८	२९	मी४२।३८	६ ५७	६ १५	१०	१४	१७	२२	बुध मीन में ४३।५५, चन्द्र दर्शन मु. ३०,
२८	२१	२	बु.	२१	५०	उ.भा.	५०	४०	सा.	१४	१०	कौ.	२१	५०	१७	२८	९	१	मीन	६ ५६	६ १५	१०	१५	१७	३१	मंगल शत. में ५।८, रवी-उत्सानी मु.प्रा., [वि.मु.उ.भा.] जन्म
२८	२६	३	गु.	१५	१८	रे.	४६	४५	शु.	५८	४०	ग.	१५	१८	१८	मा.	१०	२	मे.४६।४५	६ ५४	६ १६	१०	१६	१७	५३	भ.४२।४६उ.; पंचक स., ४६।४५, बुध उ.भा. में ४६।२०, मार्च प्रा.,
२८	३०	४	शु.	१०	१५	अ.	४४	३०	ब्र.	५२	३०	वि.	१०	१५	१९	२	११	३	मेष	६ ५३	६ १७	१०	१७	१८	५	भ. १०।१५ या. [वि.मु.रे.]
२८	३५	५	श.	७	२	भ.	४४	८	ऐ.	४८	८	बा.	७	२	२०	३	१२	४	वृ.५९।३१	६ ५२	६ १८	१०	१८	१८	१५	दिन श्री रामकृष्ण परमहंस
२८	३९	६	र.	५	४७	कृ.	४५	४०	वै.	४५	२२	तै.	५	४७	२१	४	१३	५	वृष	६ ५१	६ १८	१०	१९	१८	२३	सूर्य पू.भा. में ४१।३२,
२८	४३	७	चं.	६	३२	रो.	४९	८	वि.	४४	५	ब.	६	३२	२२	५	१४	६	वृष	६ ५०	६ १९	१०	२०	१८	२८	भ.६।३२उ. ३२।५१ या., व. शनि पू.फा.१में ३५।५८, [वि.मु.रोहि.]
२८	४८	८	मं.	९	१०	मृ.	५४	१५	प्री.	४४	१२	ब.	९	१०	२३	६	१५	७	मि२१।४२	६ ४९	६ २०	१०	२१	१८	३२	शुक्र श्रवण में ४३।१०, होलाष्टक प्रा.,
२८	५२	९	बु.	१३	२५	आ.	६०	०	आ.	४५	२०	कौ	१३	२५	२४	७	१६	८	मिथुन	६ ४८	६ २१	१०	२२	१८	३३	
२८	५७	१०	गु.	१९	०	आ.	०	४७	सौ.	४७	२०	ग.	१९	०	२५	८	१७	९	क.५१।१५	६ ४६	६ २१	१०	२३	१८	३२	भ. ५२।१० उ.,
२९	२	११	शु.	२५	२०	पुन.	८	५	शो.	५९	४२	वि.	२५	२०	२६	९	१८	१०	कर्क	६ ४५	६ २२	१०	२४	१८	२९	भ. २५।२० या., आमलकी ११ व्र. स.
२९	६	१२	श.	३२	०	पु.	१५	५२	अ.	५२	१५	बा	३२	०	२७	१०	१९	११	कर्क	६ ४४	६ २२	१०	२५	१८	२३	
२९	१०	१३	र.	३८	३५	आश्ले.	२३	३८	सु.	५४	३८	कौ	५	१८	२८	११	२०	१२	सि२३।३८	६ ४३	६ २३	१०	२६	१८	१६	प्रदोष व्रत ★होलाष्टक समाप्त, चन्द्र ग्रहण
२९	१५	१४	चं.	४४	४२	म.	३१	२	धृ.	५६	३७	ग.	११	३८	२९	१२	२१	१३	सिंह	६ ४२	६ २४	१०	२७	१८	६	भ. ४४।४२ उ.,
२९	२०	१५	मं.	५०	७	पू.फा.	३७	५२	शू.	५८	२	वि.	१७	२५	३०	१३	२२	१४	क ५४।२२	६ ४१	६ २४	१०	२८	१७	५४	भ.१७।२५ या., सत्य व्र. होलिका दहन, होली.★

फाल्गु. शु. ८ मंगल, इष्ट ५६।४२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	११	३	९	४	४	१०
२२	१२	१०	६	१०	१६	२४	२४
१५	४	२१	१	१५	३३	१३	१३
१८	२८	५७	८	४८	३४	८	८
६०	४३	६२	३	७०	४	३	३
२	१८	३४	३२	१३	४६	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	प्र.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

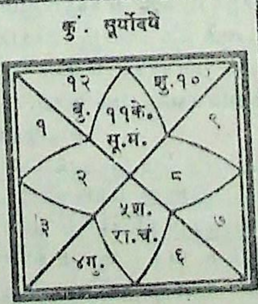
कुं. सूर्योदये



लोक भविष्य—इस पक्ष में सू. मं. के. का शनि-राहु के साथ सम सप्तक योग एवं गुरु के साथ षडष्टक, कहीं अन्तर्द्वन्द अराजकता हिंसा काण्ड आदि का संकेत देते है। अफ्रीका, कोरिया, अरब, पाक देशों में अशान्ति का वातावरण रहेगा। कहीं यान-दुर्घटना किंवा प्राकृतिक प्रकोप से जन धन की हानि भी होगी।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में रुई गुड़ खाण्ड शक्कर में मन्दा चलेगा। सोना चांदी में कुछ घटावढ़ी के साथ अच्छा मन्दा आ सकता है। ४-५ मार्च को गेहूं जौ चना चावल ज्वार बाजरा उड़द मूंग सरसों घी तिल रेशम सोना चांदी में तेजी बनेगी।

कुं. सूर्योदये



फाल्गु.शु.१५, मंगल इष्ट ५७।२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	११	३	९	४	४	१०
२९	१७	१४	५	१८	१६	२३	२३
१४	३५	५२	४०	२८	१	५०	५०
४८	१९	३९	२१	५९	४०	५४	५४
५९	४७	४	२	७०	५	३	३
४७	१२	६५	१३	४४	३६	११	११
	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
	प्र.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण—फरवरी २७, २८, मार्च ४, ५ के लगभग कहीं बादलचाल व दांवी हो एवं वायु का जोर रहे। शीत का प्रभाव कुछ कम हो।

शकुन विचार—फाल्गुन शु. १५ को यदि वर्षा हो व मेघ गरजें तो अन्न संग्रह से मानवें मास लाभ हो।

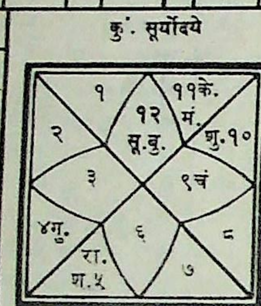
श्री वि. सं. २०३५, शाक १९००, चैत्र कृष्ण पक्ष २४ । तारीखें | चन्द्र- | भा. स्टै. टा | उदय-कालिक (१४ से २८ मार्च तक, सन् १९७९ई.), उ.ग्र., द.गो., वसन्त ऋतु

दि.मा. घ.	प.	तिथि	वार	घ.	प.	नक्षत्र	घ.	प.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	प्र.	अं.	श.	मु.	संचार घ. प.	चण्डीगढ़ सू. उ. घं.	मि.	सू. अ. घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य रा.	अं.	क.	वि.	ग्रह दर्शन—मगल अस्त है। बुध १६ मार्च को पश्चिम में अस्त होकर २८ मार्च को उदित होगा। उषःकाल में शुक्र पूर्व में होगा। सायंकाल शनि को पूर्व में तथा गुरु को पूर्व कपाल में देख सकेंगे।
२९	२५	१	बु	५४	४०	उ.फा.	४३	५२	गं.	५८	५३	बा.	२२	२४	१	१४	२३	१५	कन्या	६	३९	६	२५	१०	२९	१७	४१	सं सूर्य मीनमें ४२।३० पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर, मु. ४५, धुलण्डी, होला ★
२९	३०	२	गु.	५८	१२	ह.	४८	५५	वृ.	५८	५२	तै.	२६	२६	२	१५	२४	१६	कन्या	६	३८	६	२६	११	०	१७	२४	बुध वक्री ३।५८ ★मेला श्री आनन्दपुर साहिब (पंजाब)
२९	३५	३	शु	६०	०	चि.	५२	५०	ध्रु.	५८	०	व.	२९	५५	३	१६	२५	१७	तु. २०।५२	६	३७	६	२६	११	१	१७	५	भ. २९।२५ उ., बुध पश्चिम में अस्त ३०।२
२९	४०	३	श.	०	३७	स्वा.	५५	४०	व्या	५६	१८	वि.	०	३७	४	१७	२६	१८	तुला	६	३५	६	२७	११	२	१६	४५	भ. ०।३७ या., मंगल पू.भा. में १।१०, श्री गणेश ४ व्रत,
२९	४६	४	र.	१	५२	वि.	५७	१८	ह.	५३	३०	बा.	१	५२	५	१८	२७	१९	वृ. ४१।५४	६	३४	६	२७	११	३	१६	२४	सूर्य उ.भा. में ३।३५, शुक्र धनि. में ३।५०, श्री भगवन्नारायण जयन्ती
२९	५१	५	चं.	१	४५	अनु.	५७	४०	व.	४९	४५	तै.	१	४५	६	१९	२८	२०	वृश्चिक	६	३२	६	२९	११	४	१६	३	मेला श्री गुरु रामराय जी (देहरादून) पिण्डोरी धाम
२९	५७	६	मं.	०	२२	ज्ये.	५६	४५	सि	४५	०	व.	१	२२	७	२०	२९	२१	ध. ५६।३५	६	३१	६	३०	११	५	१५	३८	भ. ०।२२ उ. २९।१ या.,
अव	म	७	मं.	५७	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथिक्षय,
३०	२	८	बु.	५३	५०	मू.	५४	४०	व्य	३९	१५	बा.	२५	४५	८	२१	३०	२२	धनु	६	२९	६	३०	११	६	१५	१२	सूर्य सा. मेष में ११।०, उत्तर गोल प्रा., महा विषुव दिन,
३०	७	९	गु.	४८	४८	पू.षा.	५१	२२	व.	३२	३२	तै.	२१	१९	९	२२	चै१	२३	धनु	६	२८	६	३१	११	७	१४	४३	शक चैत्र (शक सं. १९०१) प्रा., मेला शीतला माता (कुराली, पंजाब)
३०	११	१०	शु.	४२	४२	उ.षा.	४७	५	प.	२५	०	व.	१५	४५	१०	२३	२	२४	म. ५।१५	६	२७	६	३२	११	८	१४	१३	भ. १५।४५ उ. ४२।४२ या., शुक्र कुम्भ में ४१।२८ राहु पू.फा.३, केतु
३०	१६	११	श.	३५	४७	श्र.	४२	०	शि.	१६	४०	ब.	९	१५	११	२४	३	२५	मकर	६	२६	६	३२	११	९	१३	४२	पाप मोचिनी ११ व्र.स., पू भा. १ में ४०।४०, व. यूरेनस विशा. २ में ४३।०
३०	२०	१२	र.	२८	१८	ध.	३६	२०	सि	५८	४६	को.	२	२	१२	२५	४	२६	कु. ९।१०	६	२५	६	३३	११	१०	१३	१०	पञ्चक प्रा. ९।१०, गुरु मार्गी ३०।२८, प्रदोष व्र.
३०	२४	१३	चं.	२०	३०	श.	३०	२७	शु	४९	१८	व.	२०	३	१३	२६	५	२७	कुम्भ	६	२४	६	३४	११	११	१२	३५	भ. २०।३० उ. ४६।३६ या., नेपच्यून वक्री ४९।१०, वारुणी पर्व
३०	२८	१४	मं.	१२	४२	पू.भा.	२४	३७	शु.	४०	१०	श.	१२	४२	१४	२७	६	२८	मी. ११।५	६	२३	६	३४	११	१२	११	५७	मेला पृथूदक (पिहोवा तीर्थ)
३०	३२	३०	बु	५	१७	उ.भा.	१९	१५	ब्र.	३१	३१	ना.	५	१७	१५	२८	७	२९	मीन	६	२२	६	३५	११	१३	११	१७	बुध पूर्व में उदित ४९।१८, वि. सं. २०३५ पूर्ण

चैत्र कृ. ८ बुध इष्ट ५७।३२

सू.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	१०	११	३	९	४	४	१०
७	२३	११	५	२७	२३	२३	२३
१२	५२	५६	२७	५६	२५	२५	२५
१९	४६	३२	५८	१४	२	२८	२८
५९	४७	६६	०	७०	४	३	३
३४	४	३७	३९	५५	१७	११	११
	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा.२	पू.भा.२	उ.भा.३	पुष्य.४	धनि.२	पू.फा.४	पू.फा.४	पू.भा.२

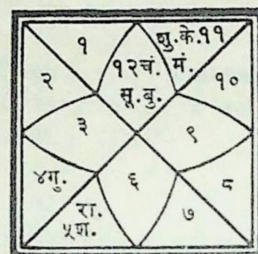
कुं. सूर्योदये



लोक भविष्य—इस पक्ष में भारत की राजनीति में शान्ति का वातावरण रहेगा। समृद्धि-प्रद योजनाएं बनेंगी, कुम्भ राशि का शुक्र भारत के लिए शुभ है—"**कुम्भ राशौ गते शुक्रे सुभिक्षं प्रचुरं जलम्। भवत्यत्र न संदेहो लोकाः सर्वे निरामयाः॥**" लेकिन श.मं. का दृष्टि सम्बन्ध कहीं यावन देशों में अशान्ति का सूचक अवश्यक है।

ग्रहचाल और बाजार का रुख—पक्षारम्भ में तिल तेल अलसी सरसों गुड़ खाण्ड शक्कर रूई सोना में तेजी का रुख रहेगा। सब तरह के अनाजों में पहले कुछ तेजी बाद में मन्दे की ओर झुकाव होगा। २३ मार्च के लगभग से रूई चांदी गुड़ खाण्ड गेहूं चना जौ मूंग ज्वार बाजरा मन्दे होंगे।

कुं सूर्योदये



चैत्र कृ. ३० बुध, इष्ट ५७।५०

सू.	मं	बु.	गु	शु	श.	रा.	के.
११	१०	११	३	१०	४	४	१०
१४	२९	०	५	६	१४	२३	२३
८	२२	४१	२७	१०	५५	३	३
३६	६	५८	३६	२८	५०	११	११
५६	४७	३६	०	७०	४	३	३
२२	०	२	४४	२१	१	११	११
	मा.	व.	मा	मा.	व	व.	व.
	अ.	उ.	उ	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा.४	पू.भा.३	पू.भा.४	पुष्य.४	धनि.४	पू.फा.४	पू.फा.३	पू.भा.१

आकाश लक्षण—१४ से १६, २३ से २५ एवं ३० मार्च के लगभग लंका के पश्चिमी छोर, बंगला देश, सिक्कम बंगाल एवं म.प्र. के कुछ भाग में कहीं बादल चाल कहीं बूंदाबांदी हो। वायु का जोर रहे।

शकुन विचार—चैत्र कृ. ७ को यदि आकाश मेघाच्छन्न रहे तो लाल रंग की चीजें तेज होती हैं।

"चन्द्र मौली शंकर चरण बार बार सिरनाय। संवत् यह पूरण कियो गिरा गणेश मनाय॥"

भा. स्टैं. टा. में दिए गए तिथि-नक्षत्र आदि को समझाने के लिए आवश्यक निर्देशन

क्योंकि घड़ी पलों में दिए गए तिथि-नक्षत्र आदि के काल एक ही स्थान के सूर्योदय से सम्बन्ध रखते हैं अत: वे देश में सर्वत्र ग्राह्य नहीं हो सकते। भारतीय स्टैंडर्ड टाईम में यदि इन्हें दिया जाए तो ये भारत के किसी भी स्थान पर बिना किसी परिवर्तन के स्वीकार किए जा सकते हैं। इसी बात को ध्यान में रखकर हमने भा. स्टैं. टा. में तिथि-नक्षत्रों का समाप्ति-काल, चन्द्रमा का राशि प्रवेश काल, ग्रहों के नक्षत्र राशि-प्रवेश आदि का काल एवं भद्रा का प्रारम्भ एवं समाप्ति काल देना प्रारम्भ किया है। इन्हे समझने के लिए कुछ निर्देशन आवश्यक है इसे समझ लेना चाहिए :—

दिन के १२ बजे के बाद रात के १२ बजे तक के टाईम (घण्टों) को क्रमश: १३ से २४ तक के अङ्कों द्वारा प्रकट किया जाता है। अर्थात्-दिन के १ बजे को १३ बजे, २ बजे को १४ बजे इत्यादि ढंग से लिखते हुए रात के १२ बजे को २४ बजे लिखा गया है। किंच रात्रि के १२ बजे (अर्थात् २४ बजे) के बाद सूर्योदय तक के टाईम (घण्टों) को क्रमश: २५, २६, २७, २८, २९, ३०, एवं ३१ अङ्कों द्वारा प्रकट किया गया हैं। अर्थात्—इस नियम के अनुसार रात के १ बजे को २५ बजे, २ बजे को २६ बजे इत्यादि लिखते हुए सूर्योदय से पहिले बजने वाले ७ को ३१ बजे लिखा गया है। ध्यान रहे—सूर्योदय के बाद ६, ७ घण्टों को ६, ७ही लिखा गया है। नीचे दिए गए उदाहरणों को पढ़ने से यह सब बिलकुल स्पष्ट हो जाएगा :—

(१) २२ मई चन्द्रवार को वैशाख शुक्ल पूर्णिमा के आगे लस्टर में भद्रा ८ घं. १७ मि. लिखा है। इसका अर्थ है, कि-इस दिन सुबह ८ बजकर १७ मि. तक भद्रा रहेगी।

(२) १३ अप्रैल (गुरुवार) को नक्षत्र वाले कालम में मृगशिर १६ घं. ५६ मि. लिखा है। इसका अर्थ है, कि-१३ अप्रैल को मृगशिर नक्षत्र शाम के ४ बजकर ५६ मि. तक रहेगा।

(३) १३ अप्रैल को चैत्र शु. ६ गुरुवार के आगे २७ घं. ४८ मि. लिखा है। इस का अर्थ है, कि-१३ अप्रैल की समाप्ति (रात के १२ बजे) के बाद १४ अप्रैल को रात के ३ बजकर ४८ मि. पर चैत्र शुक्ल छठ तिथि समाप्त होगी। ध्यान रहे;—यद्यपि यहां छठ तिथिकी समाप्ति के समय तारीख १४अप्रैल होगी तथा अंग्रेजी की पद्धतिके अनुसार वार शुक्रवार माना जाना जाएगा। परन्तु भारतीय ज्योतिषके अनुसार उस समय गुरुवारही रहेगा। क्योंकि भारतीय पद्धति के अनुसार वार अर्धरात्रि में न बदलकर सूर्योदय से ही बदलता है। यही कारण है—इसे गुरुवार के आगे ही लिखा गया है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं—**कि यहां पंचांग में तिथि आदि के घण्टे जहां २४ से अधिक हों, वहां घण्टों में से २४ घटाकर शेष घण्टा-मिनटों को अग्रिम तारीख का टाईम समझें।** स्पष्टीकरण के लिए इसी तरह का एक और उदाहरण लीजिए—

१२ अप्रैल बुधवार को मिथुन में चन्द्र का प्रवेश काल २७घं, ३५मि. लिखा है। इसका अर्थ है, कि १३ मई को सूर्योदय से पूर्व ३ बजकर ३५ मि. पर चन्द्र मिथुन राशिमें प्रविष्ट होगा। भारतीय पद्धति के अनुसार इस समय बुधवार ही है।

घंटा-मिनटात्मक नक्षत्र से चन्द्र-स्पष्ट करने की विधि:—

भभोग एवं भयात के मिनट बनाओ। मिनटात्मक भयात को ४० से गुणा करके ३ से गुणित मिनटात्मक भभोग से भाग देकर तीन लब्धियां क्रमश: अंश, कला, विकला प्राप्त करो। इस अंशादि फल में इष्ट कालिक वर्तमान नक्षत्र की राशि, अंश, कलाओं को नीचे दिए गए "नक्षत्र-राश्यादि बोधक कोष्ठक" से लेकर जोड़ दो—बस यही आप का इष्टकालिक स्पष्ट चन्द्र होगा।

भभोग कैसे बनाएं ?

अभीष्ट समय में (जिस समय चन्द्र स्पष्ट करना है उस समय) भा. स्टैं. टा.के वक्त जो वर्तमान नक्षत्र हो उसे 'वर्तमान-नक्षत्र' एवं 'वर्तमान नक्षत्र से पूर्व वर्ती नक्षत्र को 'गत नक्षत्र' समझें। वर्तमान नक्षत्र के पंचांग में दिए गए घण्टा मिन्टों में २४ घंटा जोड़ कर (यदि वर्तमान नक्षत्र की वृद्धि हो तो ४८ घंटा जोड़कर तथा यदि वर्तमान नक्षत्र क्षय तो उसमें बिना कुछ जोड़े ही) उसमें से गत नक्षत्र के घटा मिन्ट घटाने पर घंटा मिनटात्मक भभोग बनेगा। संक्षेप से इस तरह कह सकते हैं—वर्तमान नक्षत्र के वार,घंटा मिनटों में से गत नक्षत्र के वार घंटा, मिनटों को घटाने से शेष दिनादि भभोग होगा।

भयात कैसे बनाएं ?

भयात बनाने से पूर्व अभीष्ट भा. स्टैं. टा. के घण्टा मिनटों को ठीक उसी तरह लिखें जैसे इस पञ्चांग में तिथि आदि के घण्टा मिनट लिखे गए हैं। अर्थात्—दिन के १२ बजे के बाद रात्रि १२ बजे तक के घण्टों को १३, १४, आदि एवं रात्रि के १२ बजे के बाद सूर्योदय (पंचांग में दिए गए चण्डीगढ़ के सूर्योदय) तक के घण्टों को २५, २६ आदि लिखें (देखें—इसी पृष्ठ के पहिले कालम का दूसरा प्रघट्टक) इस अभीष्ट भा. स्टैं. टा. को वार सहित लिखकर उसमें से गत नक्षत्र के वार,घण्टा,मिनट घटाने पर शेष दिनादि भयात होगा।भयात की दिन संख्या को २४ से गुणा करके उनमें घण्टों को जोड़ देने पर घण्टादि भयात बन जाएगा। अथवा यूं कहिए—यदि इष्ट काल (भा. स्टैं. टा.) गत नक्षत्र के वार से एक वार आगे का हो तो इष्ट काल (भा. स्टैं. टा.) में २४ घण्टा जोड़ कर दो वार आगे का हो तो ४८ घण्टे जोड़कर उसमें से गत नक्षत्र के घं. मि. घटाने से भयात के घं. मि. प्राप्त होंगे।

—नक्षत्र-राश्यादि बोधक कोष्ठक:—

नक्षत्र	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्लेषा	म.	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
रा. अं. क.	० ० ०	० १३ २०	० २६ ४०	१ १० ०	१ २३ २०	२ ६ ४०	२ २० ०	३ ३ २०	३ १६ ४०	४ ० ०	४ १३ २०	४ २६ ४०	५ १० ०	५ २३ २०
नक्षत्र	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	श्रव.	ध.	श.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	
रा. अ. क.	६ ६ ४०	६ २० ०	७ ३ २०	७ १६ ४०	८ ० ०	८ १३ २०	८ २६ ४०	९ १० ०	९ २३ २०	१० ६ ४०	१० २० ०	११ ३ २०	११ १६ ४०	

भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि (सं. २०३५)

मास पक्ष	ता. १९७८ई.	ति.	वा.	घ. मि.	नक्षत्र	घ. मि.	चन्द्र संचार घ. मि.	भद्रा आदि
चैत्र शुक्ल पक्ष	अप्रै. ८	१	श.	२०।३९	रे.	७।५६	मी. ७।५६	पंचक स. ७।५६ (A)
	९	२	र.	२१। ५	अ.	८।४४	मेष	
	१०	३	चं.	२२। ३	भ.	१०। ३	वृ. १६।३१	
	११	४	मं.	२३।३४	कृ.	११।५४	वृष	भ. १०।४८ उ., २३।३४ या.,
	१२	५	बु.	२५।३२	रो.	१४।१३	मि. २७।३५	
	१३	६	गु.	२७।४८	मृ.	१६।५६	मिथुन	सं. सूर्य अश्वि. मेष में २६।७ (B)
	१४	७	शु.	... ...	आ.	१९।५०	मिथुन	
	१५	७	श.	६।१४	पुन.	२२।४५	क. १६।१	भ. ६।१४ उ., १९।२८ या.,
	१६	८	र.	८।३५	पु.	२५।२६	कर्क	
	१७	९	चं.	१०।३६	आ.	२७।४३	सि २७।४३	
	१८	१०	मं.	१२। ७	म.	२९।२६	सिंह	भ. २४।३४ उ.,
	१९	११	बु.	१३। १	पू.फा.	... ...	सिंह	भ. १३।१ या., (C)
	२०	१२	गु.	१३।१२	पू.फा.	६।२७	क. १२।३८	सूर्य सा. वृष में १६।१९, (D)
	२१	१३	शु.	१२।४०	उ.फा.	६।४८	कन्या	
	२२	१४	श.	११।२८	ह.	२$\frac{६}{८}$।$\frac{३}{३}\frac{५}{२}$	तु. १८।०	भ. ११।२८ उ., २२।३४ या.,(E)
	२३	१५	र.	९।४१	स्वा.	२८। ६	तुला	
वैशाख कृष्ण पक्ष	२४	१	चं.	२$\frac{६}{८}$।$\frac{३}{५}\frac{६}{२}$	वि.	२६।२०	वृ. २०।४२	शनि मार्गी २९।३०
	२५	३	मं.	२६। ६	अनु.	२४।२२	वृश्चिक	भ. १५।२९ उ., २६।६ या.,(F)
	२६	४	बु.	२३।१६	ज्ये.	२२।१९	ध. २२।१९	
	२७	५	गु.	२०।३०	मू.	२०।२०	धनु	सूर्य भर. में १८।२,
	२८	६	शु.	१७।५५	पू.षा.	१८।३१	म. २४।८	भ. १७।५५ उ. २८।४५ या.,
	२९	७	श.	१५।३५	उ.षा.	१६।५९	मकर	
	३०	८	र.	१३।३४	श्र.	१५।४४	कुं. २७।१८	पंचक प्रा. २७।१८. (G)
	मई १	९	चं.	११।५५	ध.	१५।५२	कुम्भ	भ. २३।१७ उ., मई प्रा.,
	२	१०	मं.	१०।३९	श.	१४।२८	कुम्भ	भ. १०।३९ या.,
	३	११	बु.	९।४७	पू.भा.	१४।१८	मी. ८।२०	गुरु आर्द्रा २ में २५।३०
	४	१२	गु.	९।१८	उ.भा.	१४।३६	मीन	
	५	१३	शु.	९।१४	रे.	१५।१७	मे. १५।१७	भ. ९।१४ उ., २१।२३ या., (H)
	६	१४	श.	९।३२	अ.	१६।२२	मेष	मंगल आश्ले. में ५।४२
	७	३०	र.	१०।१७	भ.	१७।५१	वृ. २४।२०	

मास पक्ष	ता. १९७८ई.	ति.	वा.	घ. मि.	नक्षत्र	घ. मि.	चन्द्र-संचार घ. मि.	भद्रा आदि
वैशाख शुक्ल पक्ष	मई ८	१	चं.	११।२५	कृ.	१९।४४	वृष	चन्द्र दर्शन
	९	२	मं.	१२।५८	रो.	२२। १	वृष	
	१०	३	बु.	१४।५४	मृ.	२४।३८	मि. ११।१९	भ. २८।१ उ., (A)
	११	४	गु.	१७। ८	आ.	२७।३०	मिथुन	भ. १७।८या., सूर्य कृत्ति. में १२।८(B)
	१२	५	शु.	१९।३३	पुन.	... ...	क. २३।४५	
	१३	६	श.	२१।५८	पुन.	६।२९	कर्क	राहु उ.फा. ४ केतु उ.भा. २ में ९।४६
	१४	७	र.	२४।११	पु.	९।२३	कर्क	भ. २४।११ उ. (C)
	१५	८	चं.	२५।५८	आश्ले.	१२। १	सि. १२।१	भ. १३।४ या.,
	१६	९	मं.	२७।११	म.	१४।११	सिंह	शुक्र मिथुन में २३।१०,
	१७	१०	बु.	२७।४१	पू.फा.	१५।४१	क. २१।५२	
	१८	११	गु.	२७।२०	उ.फा.	१६।२५	कन्या	भ. १५।३१ उ., २७।२० या.,
	१९	१२	शु.	२६।११	ह.	१६।४१	तु. २८।६	
	२०	१३	श.	२४।१८	चि.	१५।३१	तुला	
	२१	१४	र.	२१।४७	स्वा.	१४। ०	तुला	भ. २१।४७ उ., (D)
	२२	१५	चं.	१८।४७	वि.	११।५७	वृ. ६।२७	भ. ८।१७ या., (E)
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	२३	१	मं.	१५।२६	अनु.	९।३१	वृश्चिक	
	२४	२	बु.	११।५८	ज्ये.	२$\frac{६}{८}$।$\frac{५}{१}\frac{२}{३}$	ध. ६।५२	भ. २२।१४ उ.,
	२५	३	गु.	२$\frac{५}{६}$।$\frac{३}{१}\frac{०}{३}$	पू.षा.	२५।४३	धनु	भ. ८।३०या. सूर्य रोहि. में ८।२६(F)
	२६	५	शु.	२६।१६	उ.षा.	२३।३०	म. ७।१०	
	२७	६	श.	२३।४६	श्र.	२१।४४	मकर	भ. २३।४६ उ.,
	२८	७	र.	२१।४६	ध.	२०।२९	कु. ९।७	भ. १०।४६ या., पंचक प्रा. ९।७,
	२९	८	चं.	२०।२२	श.	१९।४८	कुम्भ	बुध कृत्ति. में १६।४९
	३०	९	मं.	१९।३२	पू.भा.	१९।४३	मी. १३।४४	
	३१	१०	बु.	१९।१६	उ.भा.	२०।१०	मीन	भ. ७।२४ उ., १९।१६ या.,(G)
	जून १	११	गु.	१९।३१	रे.	२१। ६	मे. २१।६	पंचक स. २१।६, जून प्रा.,
	२	१२	शु.	२०।१३	अ.	२२।३०	मेष	मंगल मघा सिंह में ७।४२, (H)
	३	१३	श.	२१।१९	भ.	२४।१६	मेष	भ.२१।१९उ. बुध पूर्व में अस्त
	४	१४	र.	२२।४६	कृ.	२६।२२	वृ. ६।४८	भ. १०।३ या. १३।३०,
	५	३०	चं.	२४।३१	रो.	२८।४६	वृष	बुध रोहि. में १५।१६

(A) व. बुध रेवती मीन में २३।३, शुक्र भर. में १६।४९, चन्द्र दर्शन, (B) गुरु आर्द्रा १ में १८।२५ (C) बुध पूर्व में उदित २०।२५, शुक्र कृत्ति. में १३।२०, (D) ग्रीष्म ऋतु प्रा. अगस्त्य अस्त २४।१७, (E) शुक्र वृष में ६।४४, (F) बुध मार्गी १९।३५, (G) शुक्र रोहि. में ११।२२, (H) पंचक स. १५।१७

(A) बुध अश्वि. मेष में २४।१०, (B) शुक्र मृग. में १०।४९, (C) सं. सूर्य वृष में २२।५९ (D) सूर्य सा. मिथुन में १५।३८, बुध भर. में १३।२५, गुरु आर्द्रा ३ में १०।२६, (E) शुक्र आर्द्रा में ११।५९, (F) व. यूरेनस स्वा. ४ में १९।४, (G) बुध वृष में १२।४२, (H) शुक्र पुन. में १५।१९,

में ११।२२, (H) पंचक म. १५।१७

भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि (सं. २०३५)

मास पक्ष	ता. १९७८ई.	ति.	वा.	घं. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	चन्द्र संचार घं. मि.	भद्रा आदि
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	जून ६	१	मं.	२६।३३	मृ.	....	मि.१८।६	गुरु आर्द्रा ४ में ९।५४
	७	२	बु.	२८।४८	मृ.	७।२७	मिथुन	चन्द्र दर्शन,
	८	३	गु.	......	आ.	१०।१८	मिथुन	सूर्य मृग. में ६।१६,
	९	३	शु.	७।१३	पुन.	१३।१९	क. ६।३४	भ. २०।२७ उ.,
	१०	४	श.	९।४०	पु.	१६।१९	कर्क	भ. ९।४० या., (A)
	११	५	र.	१२। २	आ.	१९।११	सि.१९।११	बुध मृग. में २३।९
	१२	६	चं.	१४। ६	म.	२१।४४	सिंह	
	१३	७	मं.	१५।४०	पू.फा.	२३।४५	सिंह	भ. १५।४० उ., २८।८ या., (B)
	१४	८	बु.	१६।३६	उ.फा.	२५। ५	क. ६।५	बुध मिथुन में २२।४०
	१५	९	गु.	१६।४४	ह.	२५।३९	कन्या	सं. सूर्य मिथुन में ५।३७
	१६	१०	शु.	१६। २	चि.	२५।२२	तु. १३।३०	भ. २७।१६ उ.,
	१७	११	श.	१४।३०	स्वा.	२४।१५	तुला	भ. १४।३० या., (C)
	१८	१२	र.	१२।११	वि.	२२।२६	वृ. १६।५३	
	१९	१३	चं.	९।१३	अनु.	२०। १	वृश्चिक	
	२०	१४	मं.	५।४४/२६।००	ज्ये.	१७।१३	ध. १७।१३	भ. ५।४४ उ., १५।५२ या.,
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	२१	१	बु.	२२। ६	मू.	१४।११	धनु	सूर्य आर्द्रा में २९।१६ (D)
	२२	२	गु.	१८।१६	पू.षा.	११। ९	म. १६।२६	भ. २८।२८ उ., शक आषाढ़ प्रा.
	२३	३	शु.	१४।४१	उ.षा.	८।१७	मकर	भ. १४।४१ या.,
	२४	४	श.	११।३०	श्र.	५।४५/२३।४६	कु. १६।३७	पंचक १६।३७. (E)
	२५	५	र.	८।५१	ध.	२६।२८	कुम्भ	बुध पश्चिम में उदित २३।२७(F)
	२६	६	चं.	६।५२	पू.भा.	२५।४९	मी.१९।५९	भ. ६।५२ उ., १८।१३ या., (G)
	२७	७	मं.	५।३५/२६।१२	उ.भा.	२५।५४	मीन	शनि मघा २ में १८।३३
	२८	९	बु.	२९। २	रे.	२६।३९	मे. २६।३९	पंचक स. २६।३९ (H)
	२९	१०	गु.	......	अ.	२८। १	मेष	भ. १७।३२ उ., (I)
	३०	१०	शु.	५।५५	भ.	....	मेष	भ. ५।५५ या.,
	जुलाई १	११	श.	७।१२	भ.	५।५३	वृ. १२।२७	बुध पुष्य में ९।६,
	२	१२	र.	८।५०	कृ.	८।१०	वृष	
	३	१३	चं.	१०।४९	रो.	१०।४३	मि. २४।७	भ. १०।४९ उ. २३।५४ या.,
	४	१४	मं.	१३। ०	मृ.	१३।२०	मिथुन	
	५	३०	बु.	१५।२०	आ.	१६।२५	मिथुन	सूर्य पुन. में २८।४८

(A)शुक्र कर्क में२४।५८,व नेप्च्यून ज्येष्ठा२में१२।१०,(B)शुक्र पुष्य में२०।३४,(C)बुध आर्द्रा
में२३।४७,(D) सूर्य सा. कर्क में२३।४०,दक्षिणायन वर्षा ऋतु प्रा., गुरु पुन१में१५।३०, (E)
बुध पुन में८।९,शुक्र आश्ले में२८।५४,यंकटेश (प्लूटो) मार्गी१२।५८,(F)गुरु वार्धक्य प्रा.१२।३६,
(G) मंगल पू.फा. में १९।४३,(H)गुरु अस्त१२।३६, (I) बुध कर्क में १२।४७,

मास पक्ष	ता. १९७८ई.	ति.	वा.	घं. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	जुला. ६	१	गु.	१७।४५	पुन.	१९।२५	क. १२।४०	गुरु पुन. २ में १२।४५ (A)
	७	२	शु.	२०।११	पु.	२२।२४	कर्क	चन्द्र दर्शन
	८	३	श.	२२।३१	आश्ले.	२५।१९	सि.२५।१९	
	९	४	र.	२४।३८	म.	२८। ०	सिंह	भ. ११।३५ उ., २४।३८ या.,(B)
	१०	५	चं	२६।२५	पू.फा.	.....	सिंह	
	११	६	मं.	२७।४०	पू.फा.	६।१९	क. १२।४६	
	१२	७	बु.	२८।१७	उ.फा.	८। ७	कन्या	भ. २८।१७ उ.,
	१३	८	गु.	२८। ८	ह.	९।१७	तु. २१।२८	भ. १६।१३ या.,
	१४	९	शु.	२७।१२	चि.	९।४०	तुला	
	१५	१०	श.	२५।२७	स्वा.	९।१७	वृ. २६।२३	राहु उ.फा. ३,केतु उ.भा.१में७।३८
	१६	११	र.	२३। ०	वि.	८। ६	वृश्चिक	भ. १२।१४ उ., २३।१० या., (C)
	१७	१२	चं.	१९।५६	अनु.	५।१४/२७।४७	ध. २७।४७	
	१८	१३	मं.	१६।२२	मू.	२४।५६	धनु	शुक्र पू.फा. में ९।२५,
	१९	१४	बु.	१२।३२	पू.षा.	२१।५२	म. २७।५	भ.१२।३२ उ., २२।३३ या., (D)
	२०	१५	गु.	५।३५/२८।४२	उ.षा.	१८।४७	मकर	
श्रावण कृष्ण पक्ष	२१	२	शु.	२५। ३	श्र.	१५।५१	कु. २६।३४	पंचक प्रा. २६।३४, (E)
	२२	३	श.	२१।५४	ध.	१३।१८	कुम्भ	भ. ११।२८ उ., २१।५४ या.,(F)
	२३	४	र.	१९।१९	श.	११।१६	मी.२८।१४	सूर्य सा. सिंह में १०।२९,
	२४	५	चं.	१७।२४	पू.भा.	९।५३	मीन	मंगल कन्या में २६।४
	२५	६	मं.	१६।१४	उ.भा.	९।१६	मीन	भ. १६।१४ उ., २८।४ या. (G)
	२६	७	बु.	१५।५४	रे.	९।२६	मे. ९।२६	पंचक स. ९।२६,
	२७	८	गु.	१६।१९	अ.	१०।१९	मेष	
	२८	९	शु.	१७।२३	भ.	११।५३	वृ. १८।२५	शनि मघा ३ में १५।१०
	२९	१०	श.	१९। ०	कृ.	१४। १	वृष	भ. ६।११ उ., १९।१० या.,
	३०	११	र.	२१। २	रो.	१६।३५	वृष	शुक्र उ.फा. में ८।३५
	३१	१२	चं.	२३।२०	मृ.	१९।२५	मि. ६।०	
	अग. १	१३	मं.	२५।४५	आ.	२२।२३	मिथुन	भ. २५।४५ उ.,
	२	१४	बु.	२८।१०	पुन.	२५।२२	क. १८।३७	भ. १४।५७ या. (H)
	३	३०	गु.	.....	पु.	२८।१९	कर्क	
	४	३०	शु.	६।३१	आश्ले.	....	कर्क	बुध वक्री २७।३४,

(A) शुक्र मघा सिंह में १६।५०, (B) बुध आश्ले. में १४।०, (C) सं. सूर्य कर्क में १६।२६
(D) सूर्य पुष्य में २८।१८, मंगल उ.फा. में १३।३३, बुध मघा सि. में २५।२, (E) गुरु
पुन. ३ में ८।४१, यूरेनस मार्गी २९।३०, (F) गुरु उदित २०।१, (G) गुरु बाल्य स. २०।१,
(H) सूर्य आश्ले. में २७।८, शुक्र कन्या में ९।३८,

भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि (सं. २०३५)

मास पक्ष	ता. १९७८ई.	ति.	वा.	घं. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	चन्द्र संचार घं. मि.	भद्रा आदि
श्रावण शुक्ल पक्ष	अग. ५	१	श.	८।४२	आश्ले.	७। ६	मि. ७।६	गुरु पुन. ४ कर्क में १०।८. (A)
	६	२	र.	१०।४१	म.	९।४१	सिंह	
	७	३	चं.	१२।२१	पू.फा.	११।५८	क. १८।२६	भ. २४।५९ उ.,
	८	४	मं.	१३।३७	उ.फा.	१३।५२	कन्या	भ. १३।३७ या.,
	९	५	बु.	१४।२३	ह.	१५।१६	तु. २७।४१	शनि अस्त २१।३२
	१०	६	गु.	१४।३३	चि.	१६। ६	तुला	मंगल हस्त में ७।५३
	११	७	शु.	१४। ६	स्वा.	१६।१८	तुला	भ. १४।६ उ., (B)
	१२	८	श.	१२।५९	वि.	१५।५०	वृ. ९।५७	
	१३	९	र	११। ९	अनु.	१४।४१	वृश्चिक	
	१४	१०	चं.	८।४३ २६।४६	ज्ये.	१२।५९	ध. १२।५९	भ. १९।१६ उ. २९।४९ या.,
	१५	१२	मं.	२६।२९	मू.	१०।४६	धनु	
	१६	१३	बु.	२२।५५	पू.षा.	८।१० २६।२४	म. १३।२८	सं. सूर्य मघा सिंह में २४।४६
	१७	१४	गु.	१९।१८	श्र.	२६।३६	मकर	भ. १९।१८ उ., २९।३१ या.,
	१८	१५	शु.	१५।४४	ध.	२३।५६	कुं. १३।१६	पंचक प्रा. १३।१६.
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	१९	१	श.	१२।२६	श.	२१।३०	कुम्भ	
	२०	२	र.	९।३३	पू.भा.	१९।४४	मी. १४।११	भ. २०।२२ उ., (C)
	२१	३	चं.	७।१२ २६।३३	उ.भा.	१८।३०	मीन	भ. ७।१२ या., (D)
	२२	५	मं.	२८।३९	रे.	१७।५८	मे. १७।५८	पंचक स. १७।५८,
	२३	६	बु.	२८।३२	अ.	१८।१३	मेष	भ. २८।३२ उ., (E)
	२४	७	गु.	२९।१२	भ.	१९।१५	वृ. २५।४०	भ. १६।५२ या. (F)
	२५	८	शु.	... ...	कृ.	२०।५६	वृष	
	२६	८	श.	६।३२	रो.	२३।१३	वृष	
	२७	९	र.	८।२४	मृ.	२५।५६	मि. १२।३५	भ. २१।३२ उ., (G)
	२८	१०	चं.	१०।४०	आ.	२८।५२	मिथुन	भ. १०।४० या., (H)
	२९	११	मं.	१३। ५	पुन.	... ..	क. २५।७	
	३०	१२	बु.	१५।३२	पुन.	७।५३	कर्क	सूर्य पू.षा. में २०।४५ (I)
	३१	१३	गु.	१७।५०	पु.	१०।४९	कर्क	भ. १७।५० उ., (J)
	सितं. १	१४	शु.	१९।५४	आश्ले.	१३।२७	सिं. १३।२७	भ. ६।५२ या.
	२	३०	श.	२१।२९	म.	१५।५२	सिंह	

मास पक्ष	ता. १९७८ई.	ति.	वा.	घं. मिं.	नक्षत्र	घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	सितं. ३	१	र.	२३। ०	पू.फा.	१७।५५	क. २४।२०	अगस्त्य उदित २१।२०
	४	२	चं.	२३।५७	उ.फा.	१९।३३	कन्या	बुध मघा सिंह में १७।२०, (A)
	५	३	मं.	२४।२७	ह.	२०।४६	कन्या	
	६	४	बु.	२४।२८	चि.	२१।३२	तु. ९।९	भ. १२।२७ उ., २४।२८ या., (B)
	७	५	गु.	२४। २	स्वा.	२१।५०	तुला	शुक्र स्वाती में १६।४२.
	८	६	शु.	२३। ७	वि.	२१।४०	वृ. १५।४२	
	९	७	श.	२१।४३	अनु.	२१। १	वृश्चिक	भ. २१।४३ उ.
	१०	८	र.	१९।५१	ज्ये.	१९।५४	ध. १९।५४	भ. ८।४७ या., (C)
	११	९	चं.	१७।३५	मू.	१८।२४	धनु	
	१२	१०	मं.	१४।५८	पू.षा.	१६।३३	म. २२।२	भ. २५।३३ उ.,
	१३	११	बु.	१२। ७	उ.षा.	१४।२८	मकर	भ. १२।७ या., (D)
	१४	१२	गु.	६।५ ३०।६	श्र.	१२।१५	कु. २३।८	पंचक प्रा. २३।८, (E)
	१५	१४	शु.	२७।११	ध.	१०। ०	कुम्भ	भ. २७।११ उ., (F)
	१६	१५	श.	२४।३१	श.	७।४४ ३०।४६	मी. २४।३३	भ. १३।५१ या., (G)
आश्विन कृष्ण पक्ष	१७	१	र.	२२।१३	उ.भा.	२८।४१	मीन	
	१८	२	चं.	२०।२६	रे.	२७।४९	मे. २७।४९	पंचक स. २७।४९,
	१९	३	मं.	१९।१५	अ.	२७।३५	मेष	भ. ७।५१ उ., (H)
	२०	४	बु.	१८।४६	भ.	२८। २	मेष	मंगल स्वाती में १०।३३.
	२१	५	गु.	१९। २	कृ.	२९।१३	वृ. १०।२०	बुध उ.फा. में १५।१४.
	२२	६	शु.	२०। ०	रो.	... ...	वृष	भ. २०।० उ.,
	२३	७	श.	२१।३७	रो.	७। ४	मि. २०।१६	भ. ८।४८ या. (I)
	२४	८	र.	२३।४३	मृ.	९।२८	मिथुन	शुक्र विशा. में ९।५९
	२५	९	चं.	२६। ७	आ.	१२।१५	मिथुन	गुरु पुष्य ३ में १४।४६
	२६	१०	मं.	२८।३६	पुन.	१५।१४	क. ८।२९	भ. १५।२२ उ., २८।३६ या., (J)
	२७	११	बु.	... ..	पु.	१८।१०	कर्क	
	२८	११	गु.	६।५६	आश्ले.	२०।५४	सिं. २०।५४	बुध हस्त में २१।१६.
	२९	१२	शु.	८।५८	म.	२३।१५	सिंह	
	३०	१३	श.	१०।३३	पू.फा.	२५। ७	सिंह	भ. १०।३३ उ., २३।५ या.,
	अक्तू. १	१४	र.	११।३८	उ.फा.	२६।३०	क. ७।२९	
	२	३०	चं.	१२।१०	ह.	२७।२१	कन्या	

(A) चन्द्र दर्शन, (B) २५।३२या.,बुध पश्चिम में अस्त १२।८, शुक्र हस्त में १६।५०, (C) गुरु पुष्य १में५।५९, (D) व बुध आश्ले.कर्क में ११।२३, (E) सूर्य सा. कन्या में १७।२६ शरद् ऋतु प्रा., (F) शुक्र चित्रा में १५।४३, शनि मघा ४में १३।१०, (G) बुध पूर्व में उदित ८।३ नेप्च्यून मार्गी २१।३०. (H) बुध मार्गी १२।४५., (I) मंगल चित्रा मे ३०।१, (J) शुक्र तुला में ११।४४,

(A) चन्द्र दर्शन, (B) गुरु पुष्य २में १२।३, (C) मंगल तुला में १०।१९, (D) सूर्य उ.फा. में १४।३३, यूरेनस विशा.१में २८।४३ (E) बुध पू.फा.में ७।२५, शनि उदित १४।५५ (F) बुध पूर्व में अस्त १४।३९, राहु उ.फा.२ केतु पू.भा.४में २९।१५, (G) स.सूर्य कन्या में २४।४०, (H) १९।१५या., शनि पू.फा. १में २७।२२ (I) सूर्य सा. तुला में १४।५५ दक्षिण गोल प्रा.बुध कन्या में १०।१६ (J) सूर्य हस्त में १०।५.

भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि (सं. २०३५)

भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि (सं. २०३५)

मास पक्ष	ता. १९७८ ई.	ति.	वा.	घं. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	चन्द्र संचार घं. मि.	भद्रा आदि
आश्विन शुक्ल पक्ष	अक्तू. ३	१	मं.	१२।११	चि.	२७।४२	तु. १५।३१	चन्द्र दर्शन
	४	२	बु.	११।४८	स्वा.	२७।३७	तुला	
	५	३	गु.	१०।५०	वि.	२७।११	वृ. २१।१९	भ. २२।१२ उ.,
	६	४	शु.	९।३५	अनु.	२६।२३	वृश्चिक	भ. ९।३५ या., (A)
	७	५	श.	३०।१८	ज्ये.	२५।२१	ध. २५।२१	
	८	७	र.	२८।१४	मू.	२८। ६	धनु	भ. २८।१४ उ.,
	९	८	चं.	२६। २	पू.षा.	२२।४२	म. २८।१९	भ. १५।१८ या., (B)
	१०	९	मं.	२३।४६	उ.षा.	२१।१२	मकर	सूर्य चित्रा में १०।०. (C)
	११	१०	बु.	२१।२८	श्र.	१९।३८	मकर	
	१२	११	गु.	१९।११	ध.	१८। ५	कु. ६।५२	भ. ८।१९ उ. १९।११ या. पंचक प्रा. ६।५२
	१३	१२	शु.	१६।५८	श.	१६।३६	कुम्भ	
	१४	१३	श.	१४।५५	पू.भा.	१५।१६	मी. ९।३६	बुध स्वा. में १४।२३,
	१५	१४	र.	१३। ६	उ.भा	१४।१२	मीन	भ. १३।६ उ., २४।२२ या.,
	१६	१५	च.	११।३९	रे.	१३।२८	मे. १३।२८	पंचक स. १३।२८.
कार्तिक कृष्ण पक्ष	१७	१	मं.	१०।३८	अ.	१३।११	मेष	स. सूर्य तुला में १२।३७, (D)
	१८	२	बु.	१०।१०	भ.	१३।२६	वृ. १९।३९	भ. २२।१४ उ., (E)
	१९	३	गु.	१०।१८	कृ.	१४।१७	वृष	भ. १०।१८ या., (F)
	२०	४	शु.	११। ६	रो.	१५।४५	मि. २८।४६	बुध पश्चिम में उदित १४।३२,
	२१	५	श.	१२।३०	मृ.	१७।४८	मिथुन	
	२२	६	र.	१४।२७	आ.	२०।२३	मिथुन	भ. १४।२७ उ., २७।३७ या., (G)
	२३	७	चं.	१६।४८	पुन.	२३।१७	क. १६।३४	सूर्य स्वा. में २९।३५. (H)
	२४	८	मं.	१९।२०	पु.	२६।१७	कर्क	
	२५	९	बु.	२१।४८	आश्ले.	२९। ९	सि. २९।९	
	२६	१०	गु.	२३।५७	म.	.....	सिंह	भ. १०।५३ उ., (I)
	२७	११	शु.	२५।३८	म.	७।४१	सिंह	
	२८	१२	श.	२६।३८	पू.फा.	९।४१	क. १६।१	मंगल अनु. में २२।४२
	२९	१३	र.	२६।५६	उ.फा.	११। ३	कन्या	भ. २६।५६ उ., (J)
	३०	१४	चं.	२६।३५	ह.	११।४४	तु. २३।४५	भ. १४।४७ या.,
	३१	३०	मं.	२५।३६	चि.	११।४७	तुला	

(A) बुध चित्रा में १२।१९, (B) मंगल विशा. में ११।५६, (C) बुध तुला में ११।४२, (D) बंकटेश (प्लूटो) चित्रा १ में २१।४८, (E) शुक्र वक्री १३।३७, (F) गुरु पुष्य ४ में १९।१०, मंगल शनि पू.फा. २ में १५।१९, (G) बुध विशा. में २८।४७, (H) सूर्य सा. वृश्चि. में २४।१७ मंगल वृश्चि. में ३०।१८, (I) २३।५७ या. (J) बुध वृश्चि. में २३।४४, शुक्र वार्धक्य प्रा. ११।२९.

मास पक्ष	ता. १९७८ ई.	ति.	वा.	घं. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
कार्तिक शुक्ल पक्ष	नवं. १	१	बु.	२४। ६	स्वा.	११।१५	वृ. २८।३०	बुध अनु. में ७।५५, शुक्र (A)
	२	२	गु.	२२।१२	वि.	१०।१५	वृश्चिक	चन्द्र दर्शन
	३	३	शु.	२०। २	अनु.	८।५४	वृश्चिक	
	४	४	श.	१७।४३	ज्ये.	२६।५४	ध. ७।२२	भ. ६।५२ उ., १७।४३ या.,
	५	५	र.	१५।२०	पू.षा.	२८। ६	धनु	
	६	६	चं.	१३। २	उ.षा.	२६।३४	म. ९।४३	सूर्य विशा. में १३।३९,
	७	७	मं.	१०।४९	श्र.	२५।११	मकर	भ. १०।४९ उ., २१।४९ या.,
	८	८	बु.	८।४९	ध.	२४। ०	कु. १२।३६	पंचक प्रा. १२।३६, (B)
	९	९	गु.	२६।२२	श.	२३। ०	कुम्भ	
	१०	११	शु.	२८। ०	पू.भा.	२२।१८	मी. १६।२६	भ. १६।४१ उ., २८।० या., (C)
	११	१२	श.	२६।५४	उ.भा.	२१।४५	मीन	बुध ज्येष्ठा में ८।५१
	१२	१३	र.	२६। ५	रे.	२१।२९	मे. २१।२९	पंचक स. २१।२९, (D)
	१३	१४	चं.	२५।३५	अ.	२१।३६	मेष	भ. २५।३५ उ.,
	१४	१५	मं.	२५।३०	भ.	२२। २	वृ. २८।१५	भ. १३।३३ या., (E)
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	१५	१	बु.	२५।५२	कृ.	२२।५६	वृष	मंगल अस्त १५।२
	१६	२	गु.	२६।४६	रो.	२४।१९	वृष	सं. सूर्य वृश्चिक में १२।२५, (F)
	१७	३	शु.	२८।११	मृ.	२६।१५	मि. १३।१७	भ. १५।२८ उ., २८।११ या., (G)
	१८	४	श.	३०। ७	आ.	२८।३५	मिथुन	
	१९	५	र.	.....	पुन.	.....	क. २४।३४	सूर्य अनु. में १९।४६,
	२०	५	चं.	८।२७	पुन.	७।२१	कर्क	
	२१	६	मं.	११। २	पु.	१०।२४	कर्क	भ. ११।२ उ., २४।२० या.,
	२२	७	बु.	१३।३९	आश्ले.	१३।२५	सि. १३।२५	सूर्य सा. धनु में २१।३४,
	२३	८	गु.	१६। ३	म.	१६।१७	सिंह	
	२४	९	शु.	१८। ०	पू.फा.	१८।४०	क. २५।६	भ. ३०।३६ उ.,
	२५	१०	श.	१९।१३	उ.फा.	२०।२५	कन्या	भ. १९।१३ या., (H)
	२६	११	र.	१९।४०	ह.	२१।२३	कन्या	
	२७	१२	चं.	१९।१७	चि.	२१।३३	तु. ९।२८	
	२८	१३	म.	१८। ६	स्वा.	२०।५६	तुला	भ. १८।६ उ., २९।१० या., (I)
	२९	१४	बु.	१६।१३	वि.	१९।४०	वृ. १३।५९	बुध पश्चिम में अस्त २५।५३,
	३०	३०	गु	१३।४९	अनु.	१७।५३	वृश्चिक	

(A) पश्चिम में अस्त ११।२९, (B) नेप्च्यून ज्येष्ठा २ में ३०।४१, (C) व. शुक्र स्वाती में १२।७, (D) यूरेनस विशाखा २ में १२।१३, (E) शुक्र पूर्व में उदित २६।३, (F) मंगल ज्येष्ठा में ९।३२, (G) राहु उ.फा. १ सिंह, केतु पू.भा. ३ कुम्भ में २६।५९, शुक्र बाल्य स. २६।३, (H) बुध वक्री २४।०४, गुरु वक्री २१।३०, (I) शुक्र मार्गी ७।३१.

भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि (सं. २०३५)

मास पक्ष	ता. १९७८ ई.	ति.	वा.	घं. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	चन्द्र संचार घं. मि.	भद्रा आदि
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	दिसं. १	१	शु.	११। १	ज्ये..	१५।४४	ध. १५।४४	चन्द्र दर्शन,
	२	२	श.	२८।५६	मू.	१३।२६	धनु	सूर्य ज्येष्ठा में २४।१.
	३	४	र.	२५।५९	पू.षा.	११। ७	म. १६।३४	भ. १५।२७ उ., २५।५९या.,
	४	५	चं.	२३।१५	उ.षा.	३१।४६	मकर	मंगल मूल धनु. में ९।४६ (A)
	५	६	मं.	२०।५२	ध.	२९।२९	कुं. १८।१६	पंचक प्रा. १८।१६
	६	७	बु.	१८।५३	श.	२८।२२	कुम्भ	भ. १८।५३ उ., ३०।६ या.,
	७	८	गु.	१७।२०	पू.भा.	२७।४०	मी. २१।५०	
	८	९	शु.	१६।१५	उ.भा.	२७।२४	मीन	व. बुध अनु. में १२।१०,
	९	१०	श.	१५।३४	रे.	२७।३२	मे. २७।३२	भ. २७।२६ उ., पंचक स. २७।३२
	१०	११	र.	१५।१८	अ.	२८। ४	मेष	भ. १५।१८ या.,
	११	१२	चं.	१५।२५	भ.	२८।५७	मेष	बुध पूर्व में उदित २८।५५.
	१२	१३	मं.	१५।५५	कृ.	३०।११	वृ. ११।१६	
	१३	१४	बु.	१६।४६	रो.	... ..	वृष	भ. १६।४६ उ., २९।२३ या.,
	१४	१५	गु.	१८। ०	रो.	७।४७	मि. २०।४७	
पौष कृष्ण पक्ष	१५	१	शु.	१९।४०	मृ.	९।४७	मिथुन	सं. सूर्य मूल धनु में २७।२, (B)
	१६	२	श.	२१।४२	आ.	१२। ८	मिथुन	
	१७	३	र.	२४। ६	पुन.	१४।५१	क. ८।१०	भ. १०।५४ उ., २४।६ या., (C)
	१८	४	चं.	२६।४४	पु.	१७।५१	कर्क	
	१९	५	मं.	२९।२९	आश्ले.	२०।५९	सि. २०।५९	
	२०	६	बु.	... ..	म.	२४। ४	सिंह	
	२१	६	गु.	८। ४	पू.फा.	२६।५०	सिंह	भ. ८।४ उ., २१।१० या., (D)
	२२	७	शु.	१०।१६	उ.फा.	२९। ७	क. ९।२४	सूर्य सा. मकर में १०।५१, (E)
	२३	८	श.	११।५५	ह.	३०।४२	कन्या	
	२४	९	र.	१२।४६	चि.	... ..	तु. १९।१४	भ. २४।४५ उ., (F)
	२५	१०	चं.	१२।४८	चि.	३१।२१	तुला	भ. १२।४८ या.,
	२६	११	मं.	११।४७	वि.	३०।२२	वृ. २४।३७	
	२७	१२	बु.	१०। २	अनु.	२८।४१	वृश्चिक	
	२८	१३	गु.	२८।३३	ज्ये.	२६।२५	ध. २६।२५	भ. ७।३३ उ., १८।२ या., (G)
	२९	३०	शु.	२५। ५	मू.	२३।४५	धनु	

(A) शनि पू.फा. ३ में २१।१०, (B) बुध मार्गी १३।४९, (C) शुक्र विशा. में १४।५५, (D) मंगल पू.षा. में २५।७, (E) उत्तरायण शिशिर ऋतु प्रा., शक पौष प्रा., (F) बुध ज्येष्ठा में १३।८, शनि वक्री १५।४७, (G) सूर्य पू.षा. में २९।१६,

मास पक्ष	ता. १९७८-७९ ई.	ति.	वा.	घं. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
पौष शुक्ल पक्ष	दिसं. ३०	१	श.	२१।२६	पू.षा.	२०।५४	म. २६।११	शुक्र वृश्चिक में २९।५१
	३१	२	र.	१७।५४	उ.षा.	१८। २	मकर	चन्द्र दर्शन
	जन. १	३	चं.	१४।२८	श्र.	१५।२१	कु. २६।१०	भ.२४।५५उ., पंचकप्रा.२६।१०(A)
	'७९ २	४	मं.	११।२२	ध.	१३। ०	कुम्भ	भ. १२।२२ या.,
	३	५	बु.	३०।३४	श.	११। ८	मी. २८।८	शुक्र अनु. में २६।६,
	४	७	गु.	२९।१४	पू.भा.	९।४९	मीन	भ २९।१४उ., बु.मूल धनु में१३।४१,
	५	८	शु.	२८।२५	उ.भा.	९। ७	मीन	भ. १६।५० या.,
	६	९	श.	२८।१३	रे.	९। १	मे ९।१	पंचक स. ९।१,
	७	१०	र.	२८।३४	अ.	९।३२	मेष	
	८	११	चं.	२९।२६	भ.	१०।३४	वृ. १६।५६	भ. १७।० उ., २९।२६ या., (B)
	९	१२	मं.	३०।४३	कृ.	१२। ३	वृष	
	१०	१३	बु.	... ..	रो.	१३।५७	मि. २७।४	सूर्य उ.षा. में ३१।१३,
	११	१३	गु.	८।२३	मृ.	१६।११	मिथुन	
	१२	१४	शु.	१०।२०	आ.	१८।४३	मिथुन	भ. १०।२० उ., २३।२९या., (C)
	१३	१५	श.	१२।३८	पुन.	२१।३०	क. १४।४८	बुध पू.षा. में २१।३४, (D)
माघ कृष्ण पक्ष	१४	१	र.	१५। ८	पु.	२४।२९	कर्क	सं. सूर्य मकर में १३।४६, (E)
	१५	२	चं.	१७।४७	आश्ले.	२७।३४	सि. २७।३४	भ. ३१।८ उ.,
	१६	३	मं.	२०।३०	म.	३०।४२	सिंह	भ. २०।३० या.,
	१७	४	बु.	२३। ८	पू.फा.	... ..	सिंह	शुक्र ज्येष्ठा में २४।४०,
	१८	५	गु.	२५।२७	पू.फा.	९।३७	क. १६।१६	
	१९	६	शु.	२७।२०	उ.फा.	१२।१५	कन्या	भ. २७।२० उ., बुध पूर्व में (F)
	२०	७	श.	२८।३३	ह.	१४।२१	तु. २७।४	भ. १५।५६ या., (G)
	२१	८	र.	२९। ०	चि.	१५।४६	तुला	वेंकटेश वक्री २७।१८, (H)
	२२	९	चं.	२८।३६	स्वा.	१६।२५	तुला	बुध उ.षा. में १५।२८,
	२३	१०	मं.	२७।२१	वि.	१६।१२	वृ. १०।१५	भ. १५।५८ उ., २७।२१ या.,
	२४	११	बु.	२५।१७	अनु.	१५।११	वृश्चिक	सूर्य श्रव. में ९।३४, (I)
	२५	१२	गु	२२।३२	ज्ये.	१३।२६	ध. १३।२६	मंगल श्रव. में १२।०
	२६	१३	शु.	१९।१६	मू.	११। ४	धनु	भ.१९।१६ उ. २९।२७ या.,
	२७	१४	श.	१५।३८	पू.षा.	२८।१५	म. १३।३३	
	२८	३०	र.	११।५०	श्र.	२६।१३	मकर	व. गुरु पुष्य २ में १०।१२,

(A) व. गुरु पुष्य ३ में २७।२१, जनवरी १९७९ ई. प्रा., (B) मंगल उ.षा. में ९।१२, (C) मंगल मकर में १६।२०, (D) यूरेनस विशा. ३ में ३०।१५, (E) व. शनि पू.फा. २ में १०।१३, (F) ग्रस्त २२।२४, राहु पू.फा. ४ केतु पू.भा. २ में २४।३५, (G) सूर्य अभिजित् में २६।५९, सूर्य सा. कुम्भ में २१।३२, (H) शक माघ प्रा., (I) सूर्य अभिजित में निवल ३०।३२ बुध मकर में १०।११

भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि (सं. २०३५)

भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में तिथि, नक्षत्र, चन्द्र-संचार एवं भद्रा आदि (सं. २०३५)

मास पक्ष	ता. १९७९ई.	ति	वा	घं. मि.	नक्षत्र	घं. मि.	चन्द्र संचार घं. मि.	भद्रा आदि
माघ शुक्ल पक्ष	जन. २९	१	चं.	८।३/२६।२४	ध.	२३।१७	कु. १२।४५	पंचक प्रा. १२।४५ (A)
	३०	३	मं.	२५। ९	श.	२०।४०	कुम्भ	बुध श्रवण में २२।२७ (B)
	३१	४	बु.	२२।२३	पू.भा.	१८।३२	मी. १३। ४	भ. ११।४६ उ., २२।२३ या.,
	फर. १	५	गु.	२०।१४	उ.भा.	१६।५८	मीन	फरवरी प्रा.,
	२	६	शु.	१८।५१	रे.	१६। ८	मि. १६। ८	पंचक स. १६।८,
	३	७	श.	१८।१०	अ.	१५।५९	मेष	भ. १८।१० उ., ३०।१३ या.,
	४	८	र.	१८।१५	भ.	१६।३५	वृ. २२।५४	
	५	९	चं.	१८।५९	कृ.	१७।५२	वृष	
	६	१०	मं.	२०।२२	रो.	१९।४३	वृष	सूर्य धनि. में १२।३९,
	७	११	बु.	२२।१३	मृ.	२२। २	मि. ८।५२	भ. ९।१८ उ., २२।१३ या., (C)
	८	१२	गु.	२४।२६	आ.	२४।४४	मिथुन	
	९	१३	शु.	२६।५५	पुन.	२७।३८	क. २०।५४	
	१०	१४	श.	२९।३१	पु.	३०।४०	कर्क	भ. २९।३१ उ.,
	११	१५	र.	... ..	आश्ले.	... ...	कर्क	भ. १८।५० या., (D)
	१२	१५	चं.	८। ९	आश्ले.	९।४५	सि. ९।४५	सं. सूर्य कुम्भ में २६।४५,
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	१३	१	मं.	१०।४४	म.	१२।४५	सिह	
	१४	२	बु.	१३। ९	पू.फा.	१५।३६	क. २२।१५	भ. २६।१४ उ., (E)
	१५	३	गु.	१५।१९	उ.फा.	१८।११	कन्या	भ. १५।१९ या.,
	१६	४	शु.	१७। ५	ह.	२०।२४	कन्या	
	१७	५	श.	१८।२२	चि.	२२। ८	तु. ९।१६	
	१८	६	र.	१९। ४	स्वा.	२३।१६	तुला	भ. १९।४ उ., ३१।४ या.,
	१९	७	चं.	१९। ५	वि.	२३।४४	वृ. १७।३७	सूर्य शत. में १७।१४, (F)
	२०	८	मं.	१८।२०	अनु.	२३।३१	वृश्चिक	नेप्च्यून ज्ये. ४ में १३।३०,
	२१	९	बु.	१६।५४	ज्ये.	२२।३६	ध. २२।३६	भ. २७।५० उ.,
	२२	१०	गु.	१४।४७	मू.	२१। ०	धनु	भ. १४।४७ या., (G)
	२३	११	शु.	१२। ५	पू.पा.	१८।५५	म. २४।१७	शुक्र उ.पा. में १५।५८,
	२४	१२	श.	८।५८/२६।३०	उ.पा.	१६।२४	मकर	भ. २९।३० उ. (H)
	२५	१४	र.	२५।५१	श्र.	१३।३६	कु. २४।१०	भ. १५।४० या., (I)
	२६	३०	चं.	२२।१५	ध.	१०।४४	कुम्भ	व. गुरु पुष्य १ में (J)

(A) चन्द्र दर्शन, (B) शुक्र मूल धनु में१७।३०, (C) बुध धनि.में१८।४४, (D) मंगल धनि में ११।१८, बुध कुम्भ में१३।१, शुक्र पू.षा. में१९।२३, (E) बुध शत. में२९।११, (F) सूर्य सा. मीन में११।४३, वसन्त प्रा., मंगल कुम्भ में२२।१२, (G) बुध पू.भा.में१०।३, (H) यूरेनस वक्री ८।५५, (I) पंचक प्रा. २४।१०, बुध पश्चिम में उदित ८।२६, (J) ९।१४, शुक्र मकर में ९।५०,

मास पक्ष	ता. १९७९ई.	ति.	वा.	घं. मिं.	नक्षत्र	घं. मि.	चन्द्र-संचार घं. मि.	भद्रा आदि
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	फर. २७	१	मं.	१८।४७	श.	७।५५/२६।२२	मी. २४।०	बुध मीन में २४।३१, चन्द्र दर्शन,
	२८	२	बु.	१५।४०	उ.भा.	२७।१२	मीन	मंगल शत. में ८।५९
	मार्च १	३	गु.	१३। १	रे.	२५।३६	मे. २५।३६	भ.२३।५९उ., पंचक स.२५।३६ (A)
	२	४	शु.	१०।५८	अ.	२४।४१	मेष	भ. १०।५८ या.,
	३	५	श.	९।४१	भ.	२४।३१	वृ. ३०।४०	
	४	६	र.	९।१०	कृ.	२५। ७	वृष	सूर्य पू.भा. में २३।२८,
	५	७	चं.	९।२७	रो.	२६।२९	वृष	भ. ९।२७ उ., २१।५८या., (B)
	६	८	मं.	१०।२९	मृ.	२८।३१	मि. १५।३०	शुक्र श्रव. में २४।५,
	७	९	बु.	१२।१०	आ.	.. ...	मिथुन	
	८	१०	गु.	१४।२२	आ.	७। ५	क. २७।१६	भ. २७।३७ उ.,
	९	११	शु.	१६।५३	पुन.	९।५९	कर्क	भ. १६।५३ या.,
	१०	१२	श.	१९।३२	पु.	१३। ५	कर्क	
	११	१३	र.	२२। ९	आश्ले.	१६।१०	सि. १६।१०	
	१२	१४	चं.	२४।३६	म.	१९। ७	सिंह	भ. २४।३६ उ.,
	१३	१५	मं.	२६।४४	पू.फा.	२१।५०	क. २८।२६	भ. १३।४० या.,
चैत्र कृष्ण पक्ष	१४	१	बु.	२८।३१	उ.फा.	२४।१२	कन्या	सं. सूर्य मीन में २३।३९
	१५	२	गु.	२९।५५	ह.	२६।१२	कन्या	बुध वक्री ८।१३
	१६	३	शु.	... ..	चि.	२७।४५	तु. १४।५८	भ. १८।२२ उ., (C)
	१७	३	श.	६।५०	स्वा.	२८।५१	तुला	भ. ६।५० या., (D)
	१८	४	र.	७।१९	वि.	२९।२९	वृ. २३।२०	सूर्य उ.भा. में ८।०, (E)
	१९	५	चं.	७।१४	अनु.	२ ।३६	वृश्चिक	
	२०	६	मं.	५।४०/२६।३५	ज्ये.	२९।१३	ध. २९।१३	भ. ६।४० उ., १८।७ या.,
	२१	८	बु.	२८। १	मू.	२९।२१	धनु	सूर्य सा. मेष में १०।५३,
	२२	९	गु.	२५।५९	पू.षा.	२८। १	धनु	शक चैत्र (शक सं.१९०१प्रा.), प्रा.
	२३	१०	शु.	२३।३२	उ.षा.	२७।१७	म. ८।३३	भ.१२।४५उ., २३।३२ या., (F)
	२४	११	श.	२०।४५	श्र.	२५।१४	मकर	
	२५	१२	र.	१७।४४	ध.	२३।५७	कु. १०।५	पंचक प्रा.१०।५, गुरु मार्गी१८।३६,
	२६	१३	चं.	१४।३६	श.	१०।३५	कुम्भ	भ. १४।३६ उ., २५।२ या., (G)
	२७	१४	मं.	११।२८	पू.भा.	१६।१४	मी. १०।४९	
	२८	३०	बु.	८।२९	उ.भा.	१४। ४	मीन	बुध पूर्व में उदित २६।१३, (H)

(A) बुध उ.भा. में २५।२६, मार्च प्रा., (B) व. शनि पू.फा. में २१।१३, (C) बुध पश्चिम में अस्त १८।३८, (D) मंगल पू.भा. में७।३, (E) शुक्र धनि. में ८।६, (F) शुक्र कुम्भ में२३।२, राहु पू.फा. ३ केतु पू.भा. १ में २२।४३, व. यूरे. विशा. २ में २३।३९, (G) नेप्च्यून वक्री २६।४, (H) वि. सं. २०३५ पूर्ण ।

भा. स्टैं. टा. के स्पष्ट-ग्रहों की व्यापक उपयोगिता

कुछ पञ्चाङ्गों में किसी विशेष स्थल के मिश्रकाल या अन्य घट्यादि इष्ट के स्पष्ट ग्रह दिए रहते हैं, जिनसे किसी अन्य स्थल के घट्यादि इष्टकाल पर ग्रह स्पष्ट करने के लिए चरान्तर-देशान्तर-संस्कारों का काफी झंझट करना पड़ता है। इसी झंझट से अपने पाठकों को बचाने के लिए हम श्री मार्तण्ड पञ्चाङ्ग में भा. स्टैं. टा. के अनुसार ही स्पष्ट-ग्रह देते आ रहे हैं। यहां दिए गये ये स्पष्ट ग्रह भारत के सभी शहरों में प्रातः ५ घं. ३० मि. बजे के ही माने जाएंगे, क्योंकि भा. स्टैं. टा. सारे भारत के लिए एक ही है।

इष्टकालिक सर्वथा शुद्ध-ग्रह कैसे स्पष्ट करें ?

'लघुरिक्थ-पद्धति' अथवा ज्योतिषियों में प्रचलित अन्य गो-मूत्रिका तथा त्रैराशिक-पद्धतियों द्वारा स्पष्ट किए गए इष्टकालिक ग्रहों में पूर्ण शुद्धता नहीं आ सकती। तीव्र-गति वाले ग्रहों (चन्द्र-बुध-शुक्र) में तो इन पद्धतियों द्वारा अशुद्धि अक्सर रहती ही है। सर्वथा शुद्ध इष्ट-कालिक-ग्रह स्पष्ट करने के लिए एक नवीन-वैज्ञानिक पद्धति, जिसे 'अन्तर्न्यास' (Interpolation) कहते हैं, प्रचलित है। हम इस पद्धति का परिचय अपने पाठकों को यहां दे रहे हैं—यहां दैनिक ५ घं. ३० मि. (भा. स्टैं. टा.) के ग्रहों से सूक्ष्म अभीष्ट-कालिक ग्रह-स्पष्ट करने के लिए अभीष्ट-घंटा-मिनटों में दिन के १बजे को १३, २बजे को १४, ३ बजे को १५ आदि लिखते हुए रात के १बजे को २५, रात के २ बजे को २६ ... आदि लिखें। इस प्रकार लिखे अभीष्ट-घण्टा-मिनटात्मक समय का ही यहां उपयोग होगा। सूक्ष्म-ग्रह स्पष्ट करने के लिए अन्तर्न्यास पद्धति का उपयोग आवश्यक है। विशेषतया चन्द्र, बुध और शुक्र में सूक्ष्मता लाने के लिए इस पद्धति का उपयोग अनिवार्य है। अन्तर्न्यास करने के लिए सबसे पहिले 'परान्तर का ज्ञान' आवश्यक है।

परान्तर-साधन—अभीष्ट समय जिस दिन का हो, उस दिन के ग्रहस्पष्ट को प्रथम-पंक्ति, अगले दिन के ग्रह स्पष्ट को द्वितीय-पंक्ति, तथा उससे अगले दिन के ग्रहस्पष्ट को तृतीय-पंक्ति कहेंगे। द्वितीय-पंक्ति में से प्रथम पंक्ति घटाने पर (ग्रह के वक्री होने पर प्रथम पंक्ति में से द्वितीय-पंक्ति घटाने पर) प्रथम दिन की गति प्राप्त होगी। एवं तृतीय-पंक्ति में से द्वितीय पंक्ति घटाने पर (ग्रह के वक्री होने पर द्वितीय-पंक्ति में से तृतीय-पंक्ति घटाने पर) दूसरे दिन की गति प्राप्त होगी। इन दोनों गतियों को ठीक चिह्न (मार्गी के लिए '+' एवं वक्री के लिए '—' चिह्न) के साथ लिखें। दूसरे दिन की गति एवं प्रथम दिन की गति का अन्तर करें। यदि द्वितीय दिन की गति प्रथम-दिन की गति से अधिक हो तो '+' चिह्न एवं यदि द्वितीय दिन की गति प्रथम दिन की गति से कम हो तो '—' चिह्न लगाएं। ठीक चिह्न के साथ लिखे गतियों के अन्तर को ही परान्तर कहते हैं। चिह्न बदल देने पर व्यस्त-परान्तर प्राप्त होगा।

प्रथम-पंक्ति तथा द्वितीय-पंक्ति को जोड़कर आधा करें। इसमें व्यस्त-परान्तर का आठवां भाग चिह्नानुसार जोड़ें या घटाएं;—यह प्रथम दिन के शाम का ५ घं. ३० मि. भा. स्टैं. टा. (१७घं.३० मिं. I.S.T.) पर ग्रहस्पष्ट होगा। इसे प्रथम एवं द्वितीय पंक्ति के मध्य लिखें, जैसा कि नीचे उदाहरण के गणित-न्यास से स्पष्ट है। अब देखें, कि—हमारा अभीष्टकाल प्रातः ५ घं. ३० मि. से सायं ५ घं. ३० मि. के बीच है, अथवा सायं ५ घं. ३० मि. से अगले दिन प्रातः ५ घं. ३० मि. के मध्य है। जिन अवधियों के मध्य ग्रहस्पष्ट करना हो, उन दोनों अवधियों के ग्रहों को जोड़ कर व्यस्त परान्तर के आठवें भाग का चौथा भाग चिह्नानुसार इसमें जोड़ें, या घटावें। इस प्रकार दोनों अवधियों के मध्यकाल (अर्थात् प्रथम अवधि से ६ घन्टे बाद) का सूक्ष्म ग्रहस्पष्ट ज्ञात होगा। इसके बाद अपने इष्टकाल के ग्रहस्पष्ट करने के लिए इस मध्यगत ग्रह एवं समीप की अवधि के ग्रह का अन्तर करें। यह ग्रह की ६ घन्टा की सूक्ष्म गति होगी। गणितन्यास का प्रथम कालम ऐसे ही लिखें, जैसा उदाहरण में दिया है। इस प्रथम कालम में दिए गए अवधियों के पहिले ग्रह-स्पष्ट-काल एवं अपने अभीष्ट-काल का अन्तर करें। अब अनुपात करें, कि ६ घन्टा में अगर गति इतनी है, तो इस अन्तर में चालन कितना होगा ? इस चालन से अभीष्ट-कालिक सूक्ष्म ग्रह-स्पष्ट होगा।

उदाहरण—१९ जुलाई १९७८ ई. को शाम के ८ बजकर ३५ मि. पर बुध स्पष्ट करना है। गणित-न्यास इस प्रकार है—

ग्रहस्पष्ट-काल	घं.मि.		रा. अं. क. वि.	गति क. वि.	परान्तर	
प्रथम दिन	५।३०	प्रथम पंक्ति	३।२९। ७।४६			
	११।३०		....		क. वि.	
	१७।३०		३।२९।४०।१२	+६४।१०	— २।४८	
	२३।३०		३।२९।५६। ९			क. वि.
द्वितीय दिन	२९।३०	द्वितीय पंक्ति	४। ०।११।५६		व्यस्त परान्तर	+२।४८
	.. ...		....	+६१।२२	अष्टमांश	+०।२१
	......		....		अष्टमांश का भी चतुर्थांश	
तृतीय दिन		तृतीय पंक्ति	४। ११३।१८			+०।५

हमारा अभीष्ट काल २० घं. ३५ मि. है। यह १७ घं. ३० मि. और २३ घं. ३० मि. के मध्य है। १७ घं. ३० मि. पर अन्तर्न्यास पद्धति से प्राप्त बुधस्पष्ट ३।२९।४०।१२ है। इसका आगे वाली पंक्ति के साथ अन्तर १५ कला ५७ वि. ६ घण्टा की सूक्ष्म गति है।

अपना इष्टकाल २० घं. ३५ मि. एवं १७ घं. ३० मि. का अन्तर ३ घं. ५ मि. हुआ। अब अनुपात किया:—यदि ६ घं. में १५ कला और ५७ वि. चले तो ३ घं. ५ मि. में कितना चलेगा ? प्राप्त चालन ८ कला ११ विकला १७ घं ३० मि. वाले स्पष्ट बुध में जोड़ने से ३ रा. २९ अं. ४८ क. २३ वि. अभीष्ट कालिक बुध स्पष्ट हुआ। ध्यान रहे,—ऊपर जहां '...' लगाया है, वहां गणित करने की जरूरत न थी, क्योंकि हमारा अभीष्ट-काल उन अवधियों के मध्य नहीं पड़ता। इस पद्धति से चन्द्रमा भी काफी सूक्ष्म आ जाता है परन्तु इसमें विकलान्त सूक्ष्मता लाने के लिए 'प्रपरान्तर' का प्रयोग अपेक्षित है, कभी समय पर इसका विवेचन भी किया जाएगा। अन्य सभी ग्रहों के लिए तो ऊपर दी गई पद्धति से ही सूक्ष्मतम परिणाम मिलते हैं।

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मिं. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ अप्रै. को अयनांश, २३°।३३'।१२", वेंकटेश (प्लूटो) ५ रा. २१ अं. ५४ क.)

तारीख सन् १९७८ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि	यूरेनस रा. अं. क. वि.	नेप्च्यून रा. अं. क. वि.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं. मि.	चन्द्रास्त घं. मि.
अप्रै. ७	११।२३।१५।५१	११।१५।२७।२३	३। ५।१०।३७	०। १। २।३३	२। ५।४५।२७	०।११।३९।१२	४। ०।२४। ३	५।११।५४।५९	६।२९।५७।४३	७।२४।४१।१६		१८।३५
८	११।२४।१४।५२	११।२८।३९।२९	३। ५।३०।१५	०। ०।२८। ३	२। ५।५३।२६	०।१२।४५। ९	४। ०।२२। ९	५।११।५१।४८	६।२९।५५।३५	७।२४।४०।४२		१९।३३
९	११।२५।१३।५३	०।११।३६।२७	३। ५।५०।१४	११।२९।४९।४०	२। ६। १।३२	०।१३।५१। २	४। ०।२०।२१	५।११।४८।३७	६।२९।५३।२६	७।२४।४०। ५		२०।२९
१०	११।२६।१२।५१	०।२४।१७।३१	३। ६।१०।३४	११।२९। ८।१४	२। ६। ९।४७	०।१५।१२।५४	४। ०।१८।४०	५।११।४५।२६	६।२९।५१।१५	७।२४।३९।२७		२१।२३
११	११।२७।११।४६	१। ६।४३।२५	३। ६।३१।१५	११।२८।२४।३४	२। ६।१८। ९	०।१६।२६।४४	४। ०।१७। ५	५।११।४२।१५	६।२९।४९। ३	७।२४।३८।४७		२२।१७
१२	११।२८।१०।४०	१।१८।५६।१३	३। ६।५२।१६	११।२७।२९।३४	२। ६।२६।३९	०।१७।४०।३१	४। ०।१५।३६	५।११।३९। ५	६।२९।४६।४९	७।२४।३८। ५		२३। ८
१३	११।२९। ९।३१	२। ०।५८।३८	३। ७।१३।३७	११।२६।५४। ६	२। ६।३५।१७	०।१८।५४।१४	४। ०।१४।१३	५।११।३५।५४	६।२९।४४।३४	७।२४।३७।२२		२३।५५
१४	०। ०। ८।१९	२।१२।५४।११	३। ७।३५।१७	११।२६। १। ०	२। ६।४४। ३	०।२०। ७।५६	४। ०।१२।५७	५।११।३२।४३	६।२९।४२।१७	७।२४।३६।३८		... ...
१५	०। १। ७। ५	२।२४।४६।५७	३। ७।५७।१६	११।२५।२५। ७	२। ६।५२।५५	०।२१।२१।३६	४। ०।११।४७	५।११।२९।३३	६।२९।३९।५९	७।२४।३५।५०		०।४२
१६	०। २। ५।४८	३। ६।४१।२७	३। ८।१९।३३	११।२४।४३।१२	२। ७। १।५४	०।२२।३५।१४	४। ०।१०।४३	५।११।२६।२२	६।२९।३७।३९	७।२४।३५। १		१।२३
१७	०। ३। ४।३०	३।१८।४२।२४	३। ८।४२। ८	११।२४। ३।५६	२। ७।११। ०	०।२३।४८।४९	४। ०। ९।४५	५।११।२३।११	६।२९।३३।१८	७।२४।३४।१२		२। ३
१८	०। ४। ३। ९	४। ०।५४।३०	३। ९। ५। ०	११।२३।२७।५५	२। ७।२०।१३	०।२५। २।२३	४। ०। ८।५३	५।११।२०। ०	६।२९।३२।५५	७।२४।३३।२१		२।४०
१९	०। ५। १।४७	४।१३।२२। ०	३। ९।२८।१०	११।२२।५५।४०	२। ७।२९।३२	०।२६।१५।५४	४। ०। ८। ८	५।११।१६।५९	६।२९।३०।३३	७।२४।३२।२७		३।१७
२०	०। ६। ०।२२	४।२६। ८।३१	३। ९।५१।३६	११।२२।२७।३५	२। ७।३८।४८	०।२७।२९।२२	४। ०। ७।२९	५।११।१३।४०	६।२९।२८। ९	७।२४।३१।३३		३।५४

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम) चण्डीगढ़

दैनिक स्पष्ट ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भारतीय स्टैंडर्ड टाइम) — चण्डीगढ़ भा. स्टे. टा.

(१ मई को अयनांश २३°।३३'।१५" वेंकटेश (प्लूटो) ५ रा. २१ अं. ६ क.)

तारीख सन् १९७८ ई.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहू	यूरेनस	नेप्च्यून	चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि.	घं. मि.
अप्रै २१	०।६।५८।५५	५।९।१६।३१	३।१०।१५।१८	११।२२।४।०	२।७।४८।३१	०।२८।४२।४९	४।०।६।५७	५।११।१०।२९	६।२१।२६।४४	७।२४।३०।३७		४।३२
२२	०।७।५७।२६	५।२२।४६।५५	३।१०।३९।१६	११।२१।४५।९	२।७।५८।१०	०।२९।५६।१३	४।०।६।३१	५।११।७।१९	६।२१।२३।१८	७।२४।२९।३९		५।११
२३	०।८।५५।५५	६।६।३८।५१	३।११।३।३०	११।२१।३१।१२	२।८।७।५६	१।१।९।३५	४।०।६।११	५।११।४।८	६।२१।२०।५१	७।२४।२८।३९		५।५२
२४	०।९।५४।२२	६।२०।४९।२५	३।११।२७।५९	११।२१।२२।१५	२।८।१७।४८	१।२।२२।५६	४।०।५।५८	५।११।०।५७	६।२१।१८।२४	७।२४।२७।३८	२०।१८	
२५	०।१०।५२।४७	७।५।१३।५७	३।११।५२।४२	११।२१।१८।१९	२।८।२७।४६	१।३।३६।१२	४।०।५।५२	५।१०।५७।४७	६।२१।१५।५५	७।२४।२६।३६	२१।२२	
२६	०।११।५१।१०	७।१९।४६।३०	३।१२।१७।४०	११।२१।१९।२३	२।८।३७।५०	१।४।४९।२७	४।०।५।५२	५।१०।५४।३६	६।२१।१३।२६	७।२४।२५।३३	२२।२४	
२७	०।१२।४९।३२	८।४।२०।४५	३।१२।४२।५२	११।२१।२५।२४	२।८।४८।०	१।६।२।४०	४।०।५।५८	५।१०।५१।२५	६।२१।१०।५७	७।२४।२४।२९	२३।२३	
२८	०।१३।४७।५२	८।१८।५०।४९	३।१३।८।१९	११।२१।३६।१६	२।८।५८।१६	१।७।१५।४१	४।०।६।१०	५।१०।४८।१५	६।२१।८।२६	७।२४।२३।२३	......	
२९	०।१४।४६।११	९।३।१२।२	३।१३।३३।५९	११।२१।५१।५२	२।९।८।३७	१।८।२९।०	४।०।६।२९	५।१०।४५।४	६।२१।५।५५	७।२४।२२।१५	०।१७	
३०	०।१५।४४।२८	९।१७।२१।१७	३।१३।५९।५३	११।२२।१२।४	२।९।१९।५	१।९।४२।७	४।०।६।५४	५।१०।४१।५३	६।२१।३।२४	७।२४।२१।५	१।६	
मई १	०।१६।४२।४४	१०।१।१६।५७	३।१४।२६।१	११।२२।३६।४२	२।९।२९।३७	१।१०।५५।११	४।०।७।२६	५।१०।३८।४२	६।२१।०।५३	७।२४।१९।५३	१।५१	
२	०।१७।४०।५९	१०।१४।५८।३७	३।१४।५२।२१	११।२३।५।३८	२।९।४०।१५	१।१२।८।१४	४।०।८।४	५।१०।३५।३२	६।२०।५८।२१	७।२४।१८।४०	२।३२	
३	०।१८।३९।११	१०।२८।२६।३५	३।१५।१८।५४	११।२३।३८।४२	२।९।५०।५९	१।१३।२१।१४	४।०।८।४९	५।१०।३२।२१	६।२०।५५।४९	७।२४।१७।२७	३।१०	
४	०।१९।३७।२२	११।११।४१।२९	३।१५।४५।३९	११।२४।१५।४५	२।१०।१।४८	१।१४।३४।१२	४।०।९।४०	५।१०।२९।१०	६।२०।५३।१६	७।२४।१६।१३	३।४८	
५	०।२०।३५।३२	११।२४।४३।५७	३।१६।१२।३७	११।२४।५६।२६	२।१०।१२।४२	१।१५।४७।८	४।०।१०।३७	५।१०।२६।०	६।२०।५०।४४	७।२४।१४।५७	४।२६	
६	०।२१।३३।४०	०।७।३४।२७	३।१६।३९।४७	११।२५।४१।७	२।१०।२३।४१	१।१७।०।२	४।०।११।४०	५।१०।२२।४९	६।२०।४८।१२	७।२४।१३।३९	५।५	
७	०।२२।३१।४७	०।२०।१३।२४	३।१७।७।९	११।२६।२९।१०	२।१०।३४।४५	१।१८।१२।५३	४।०।१२।५०	५।१०।१९।३८	६।२०।४५।४०	७।२४।१२।२१	५।४३	
८	०।२३।२९।५३	१।२।४१।६	३।१७।३४।४३	११।२७।२०।३६	२।१०।४५।५४	१।१९।२५।४२	४।०।१४।६	५।१०।१६।२८	६।२०।४३।८	७।२४।११।२		२०।९
९	०।२४।२७।५६	१।१५।५८।१४	३।१८।२।२९	११।२८।१५।१७	२।१०।५७।८	१।२०।३८।२८	४।०।१५।२९	५।१०।१३।१७	६।२०।४०।३६	७।२४।९।४१		२१।०
१०	०।२५।२५।५८	१।२८।५।३९	३।१८।३०।२६	११।२९।१३।६	२।११।८।२६	१।२१।५१।१२	४।०।१६।५८	५।१०।१०।६	६।२०।३८।५	७।२४।८।१९		२१।४९
११	०।२६।२३।५८	२।१०।५।१०	३।१८।५८।३४	०।०।१३।५६	२।११।१९।४९	१।२३।३।५४	४।०।१८।३३	५।१०।६।५५	६।२०।३५।३४	७।२४।६।५७		२२।३६
१२	०।२७।२१।५७	२।२१।५९।१०	३।१९।२६।५३	०।१।१७।४१	२।११।३१।१७	१।२४।१६।३३	४।०।२०।१५	५।१०।३।४५	६।२०।३३।१	७।२४।५।३३		२३।१९
१३	०।२८।१९।५४	३।३।५०।४४	३।१९।५५।२२	०।२।२४।१६	२।११।४२।४८	१।२५।२९।१०	४।०।२२।३	५।१०।०।३४	६।२०।३०।३०	७।२४।४।६		२३।५९
१४	०।२९।१७।४९	३।१५।४४।४२	३।२०।२४।२	०।३।३३।३६	२।११।५४।२४	१।२६।४१।४४	४।०।२३।५७	५।९।५७।२३	६।२०।२८।०	७।२४।२।३९		......
१५	१।०।१५।४२	३।२६।४२।३६	३।२०।५२।५२	०।४।४५।३६	२।१२।६।५	१।२७।५४।१५	४।०।२५।५७	५।९।५४।१२	६।२०।२५।३०	७।२४।१।१२		०।३८
१६	१।१।१३।३३	४।८।५२।१४	३।२१।२१।५१	०।६।०।११	२।१२।१७।४९	१।२९।६।४३	४।०।२८।२	५।९।५१।१	६।२०।२३।१	७।२३।५९।४४		१।१५
१७	१।२।११।२२	४।२१।१७।३७	३।२१।५१।०	०।७।१७।१९	२।१२।२९।३८	२।०।१९।८	४।०।३०।१४	५।९।४७।५१	६।२०।२०।३२	७।२३।५८।१६		१।५१
१८	१।३।९।९	५।४।३।२७	३।२२।२०।१९	०।८।३६।५६	२।१२।४१।३०	२।१।३१।३०	४।०।३२।३२	५।९।४४।४०	६।२०।१८।४	७।२३।५६।४७		२।२८
१९	१।४।६।५४	५।१७।१३।३७	३।२२।४९।४७	०।१०।५९।०	२।१२।५३।२६	२।२।४३।४९	४।०।३४।५६	५।९।४१।२९	६।२०।१५।३७	७।२३।५५।१८		३।५
२०	१।५।४।३८	६।०।५०।३१	३।२३।१९।२४	०।११।२३।२९	२।१३।५।२६	२।३।५६।३	४।०।३७।२६	५।९।३८।१८	६।२०।१३।११	७।२३।५३।४८		३।४५
२१	१।६।२।२१	६।१४।५४।२५	३।२३।४९।१०	०।१२।५०।२२	२।१३।१७।२९	२।५।८।२०	४।०।४०।१	५।९।३५।७	६।२०।१०।४६	७।२३।५२।१६		४।२८
२२	१।७।०।१	६।२९।२२।४३	३।२४।१९।४	०।१४।१९।३३	२।१३।२९।३६	२।६।२०।३०	४।०।४२।४१	५।९।३१।५७	६।२०।८।२३	७।२३।५०।४३		५।१५
२३	१।७।५७।४१	७।१४।९।५५	३।२४।४९।७	०।१५।५१।१०	२।१३।४१।४७	२।७।३२।३८	४।०।४५।२७	५।९।२८।४६	६।२०।६।१	७।२३।४९।११	२०।९	
२४	१।८।५५।१९	७।२९।७।५६	३।२५।१९।१९	०।१७।२५।४	२।१३।५४।१	२।८।४४।४३	४।०।४८।२०	५।९।२५।३५	६।२०।३।३९	७।२३।४७।३९	२१।११	
२५	१।९।५२।५६	८।१४।७।३६	३।२५।४९।३९	०।१९।१।१८	२।१४।६।१८	२।९।५६।४५	४।०।५१।१७	५।९।२२।२४	६।२०।१।१९	७।२३।४६।६	२२।९	
२६	१।१०।५०।३२	७।२८।५९।४२	३।२६।२०।७	०।२०।३९।५०	२।१४।१८।३९	२।११।८।४३	४।०।५४।२०	५।९।१९।१४	६।१९।५८।५९	७।२३।४४।३१	२३।२	
२७	१।११।४८।७	९।१३।३७।१	३।२६।५०।४३	०।२१।२०।४१	२।१४।३१।३	२।१२।२०।३९	४।०।५७।२९	५।९।१६।३	६।१९।५६।४१	७।२३।४२।५७	२३।४८	
२८	१।१२।४५।४१	९।२७।५४।५४	३।२७।२१।२८	०।२४।३।५०	२।१४।४३।२९	२।१३।३२।३२	४।१।०।४५	५।९।१२।५२	६।१९।५४।२४	७।२३।४१।२३		

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मिं. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ जून अयनांश २३°।३३'।१९" बेंकटेश (प्लूटो) ५ रा. २० अं. ३० क.) (१ जुला. को अयनांश २३°।३३'।२३" बेंकटेश (प्लूटो) ५ रा. २० अं. २२ क.)

तारीख सन् १९७८ ई.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस	नेप्च्यून	चण्डीगढ़ भा. स्टे. टा. चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि.	घं. मि.
मई २९	१।१३।४३।१४	१०।११।५१।१५	३।२७।५२।२०	०।२५।४९।१७	२।१४।५५।५०	२।१४।४४।१९	४।११। ४। ५	५। ९। ९।४२	६।१९।५२। ९	७।२३।३९।४८	०।३३	
३०	१।१४।४०।४७	१०।२५।२६।२५	३।२८।२३।२०	०।२७।३७। १	२।१५। ८।३१	२।१५।५६। ६	४।११। ७।३१	५। ९। ६।३१	६।१९।४९।५५	७।२३।३८।१२	१।१२	
३१	१।१५।३८।११	११। ८।४२।१०	३।२८।५४।२८	०।२९।२७। १	२।१५।२१। ७	२।१७। ७।५०	४।११।११। २	५। ९। ३।२०	६।१९।४७।४३	७।२३।३६।३६	१।५०	
जून १	१।१६।३५।५२	११।२१।४०।५९	३।२९।२५।४४	१। १।१९।१७	२।१५।३३।४५	२।१८।१९।३३	४।११।१४।३९	५। ९। ०।१०	६।१९।४५।३२	७।२३।३५। ०	२।२८	
२	१।१७।३३।२३	०। ४।२५।३०	३।२९।५७। ७	१। ३।१३।४६	२।१५।४६।२७	२।१९।३१।११	४।११।१८।२२	५। ८।५६।५९	६।१९।४३।२२	७।२३।३३।२४	३। ६	
३	१।१८।३०।५३	०।१६।५८। ६	४। ०।२८।३८	१। ५।१०।२६	२।१५।५९।११	२।२०।४२।४६	४।११।२२।१०	५। ८।५३।४८	६।१९।४१।१४	७।२३।३१।४८	३।४५	
४	१।१९।२८।२२	०।२९।२०।४२	४। १। ०।१६	१। ७। ९।१३	२।१६।११।५७	२।२१।५४।१८	४।११।२६। २	५। ८।५०।३७	६।१९।३९। ८	७।२३।३०।११	४।२४	
५	१।२०।२५।५०	१।११।३४।४४	४। १।३२। २	१। ९।१०। ४	२।१६।२४।४६	२।२३। ५।४६	४।११।३०। ०	५। ८।४७।२७	६।१९।३७। ४	७।२३।२८।३४	५। ६	
६	१।२१।२३।१८	१।२३।४१।२३	४। २। ३।५५	१।११।१२।५१	२।१६।३७।३८	२।२४।१७।११	४।११।३४। ३	५। ८।४४।१६	६।१९।३५। २	७।२३।२६।५७		१९।४४
७	१।२२।२०।४५	२। ५।४१।४३	४। २।३५।५५	१।१३।१७।३०	२।१६।५०।३२	२।२५।२८।३३	४।११।३८।११	५। ८।४१। ५	६।१९।३३। २	७।२३।२५।२०		२०।३२
८	१।२३।१८।११	२।१७।३६।५३	४। ३। ८। २	१।१५।२३।४७	२।१७। ३।२८	२।२६।३९।५२	४।११।४२।२४	५। ८।३७।५५	६।१९।३१। ३	७।२३।२३।४२		२१।१७
९	१।२४।१५।३५	२।२९।२८।३४	४। ३।४०।१६	१।१७।३१।३६	२।१७।१६।२७	२।२७।५१। ७	४।११।४६।४२	५। ८।३४।४४	६।१९।२९। ६	७।२३।२२। ४		२१।५८
१०	१।२५।१२।५९	३।११।२०। २	४। ४।१२।३७	१।१९।४०।४४	२।१७।२९।२७	२।२९। २।१८	४।११।५१। ५	५। ८।३१।३३	६।१९।२७।१२	७।२३।२०।२७		२२।३८
११	१।२६।१०।२२	३।२३।१२।१४	४। ४।४५। ४	१।२१।५०।५६	२।१७।४२।२९	३। ०।१३।२५	४।११।५५।३२	५। ८।२८।२३	६।१९।२५।२०	७।२३।१८।५०		२३।१४
१२	१।२७। ७।४४	४। ५। ९।५६	४। ५।१७।३८	१।२४। १।५९	२।१७।५५।३३	३। १।२४।२८	४।१२। ०। ४	५। ८।२५।१२	६।१९।२३।३०	७।२३।१७।१२		२३।५०
१३	१।२८। ५। ५	४।१७।१६।३२	४। ५।५०।१८	१।२६।१३।३८	२।१८। ८।३९	३। २।३५।२७	४।१२। ४।४१	५। ८।२२। १	६।१९।२१।४२	७।२३।१५।३५		... ...
१४	१।२९। २।२५	४।२९।३८।५४	४। ६।२३। ५	१।२८।२५।३५	२।१८।२१।४८	३। ३।४६।२४	४।१२। ९।२२	५। ८।१८।५०	६।१९।१९।५६	७।२३।१३।४८		०।२५
१५	१।२९।५९।४४	५।१२।२१। ४	४। ६।५५।५८	२। ०।३७।३५	२।१८।३४।५८	३। ४।५७।१५	४।१२।१४। ८	५। ८।१५।४०	६।१९।१८।१२	७।२३।१२।२१		१। १
१६	२। ०।५७। ३	५।२५।२७।४२	४। ७।२८।५७	२। २।४९।२१	२।१८।४८। ९	३। ६। ८। ४	४।१२।१८।५९	५। ८।१२।२९	६।१९।१६।३०	७।२३।१०।४५		१।३८
१७	२। १।५४।२१	६। ९। २।२४	४। ८। २। १	२। ५। ०।३६	२।१९। १।२२	३। ७।१८।४६	४।१२।२३।५४	५। ८। ९।१८	६।१९।१४।५१	७।२३। ९। ८		२।१८
१८	२। २।५१।३८	६।२३। ६।४५	४। ८।३५।१०	२। ७।११। ७	२।१९।१४।३६	३। ८।२९।२५	४।१२।२८।५४	५। ८। ६। ७	६।१९।१३।१५	७।२३। ७।३१		३। २
१९	२। ३।४८।५३	७। ७।३९।३८	४। ९। ८।२६	२। ९।२०।३६	२।१९।२७।५२	३। ९।३९।५९	४।१२।३३।५८	५। ८। २।५६	६।१९।११।४१	७।२३। ५।५५		३।५१
२०	२। ४।४६। ८	७।२२।३६। ७	४। ९।४१।४९	२।११।२८।५४	२।१९।४१। ९	३।१०।५०।२८	४।१२।३९। ६	५। ७।५९।४५	६।१९।१०।१०	७।२३। ४।२०		४।४८
२१	२। ५।४३।२१	८। ७।४८। ०	४।१०।१५।१७	२।१३।३५।५०	२।१९।५४।२७	३।१२। ०।५३	४।१२।४४।१८	५। ७।५६।३४	६।१९। ८।४०	७।२३। २।४६	१९।५४	
२२	२। ६।४०।३४	८।२३। ४।३९	४।१०।४८।५१	२।१५।४१।१२	२।२०। ७।४७	३।१३।११।१४	४।१२।४९।३४	५। ७।५३।२३	६।१९। ७।१४	७।२३। १।१२	२०।५२	
२३	२। ७।३७।४८	९। ८।१४।५१	४।११।२२।३०	२।१७।४४।५३	२।२०।२१। ७	३।१४।२१।२९	४।१२।५४।५५	५। ७।५०।१२	६।१९। ५।४९	७।२२।५९।३९	२१।४२	
२४	२। ८।३५। २	९।२३। ८।५४	४।११।५६।१५	२।१९।४६।४६	२।२०।३४।२९	३।१५।३१।३९	४।१३। ०।१९	५। ७।४७। २	६।१९। ४।१७	७।२२।५८। ६	२२।२९	
२५	२। ९।३२।१६	१०। ७।४०। २	४।१२।३०। ६	२।२१।४६।४६	२।२०।४७।५२	३।१६।४१।४४	४।१३। ५।४७	५। ७।४३।५१	६।१९। ३। ८	७।२२।५६।३४	२३।११	
२६	२।१०।२९।२९	१०।२१।४४।५६	४।१३। ४। १	२।२३।४४।४८	२।२१। १।१५	३।१७।५१।४४	४।१३।११।१९	५। ७।४०।४१	६।१९। १।५२	७।२२।५५। २	२३।५१	
२७	२।११।२६।४२	११। ५।२३।२४	४।१३।३८। २	२।२५।४०।४९	२।२१।१४।४०	३।१९। १।४०	४।१३।१६।५५	५। ७।३७।३०	६।१९। ०।३८	७।२२।५३।३०	... ...	
२८	२।१२।२३।५५	११।१८।३७।२५	४।१४।१२। ९	२।२७।३४।४८	२।२१।२८। ५	३।२०।११।३१	४।१३।२२।३५	५। ७।३४।१९	६।१८।५९।२७	७।२२।५१।५९	०।२९	
२९	२।१३।२१। ८	०। १।३०।१८	४।१४।४६।२१	२।२९।२६।४२	२।२१।४१।३२	३।२१।२१।१८	४।१३।२८।१९	५। ७।३१। ९	६।१८।५८।१८	७।२२।५०।२८	१। ७	
३०	२।१४।१८।२१	०।१४। ५।४९	४।१५।२०।३९	३। १।१६।२८	२।२१।५५। ०	३।२२।३१। ०	४।१३।३४। ७	५। ७।२७।५८	६।१८।५७।१२	७।२२।४८।५९	१।४५	
जुला. १	२।१५।१५।३४	०।२६।२७।४२	४।१५।५५। २	३। ३। ४। ९	२।२२। ८।२७	३।२३।४०।३७	४।१३।३९।५८	५। ७।२४।४८	६।१८।५६। ९	७।२२।४७।३०	२।२४	
२	२।१६।१२।४७	१। ८।३९।१२	४।१६।२९।३०	३। ४।४९।४४	२।२२।२१।५५	३।२४।५०। ९	४।१३।४५।५२	५। ७।२१।३७	६।१८।५५।१०	७।२२।४६। २	३। ५	
३	२।१७।१०। ०	१।२०।४३। १	४।१७। ४। ४	३। ६।३३। ८	२।२२।३५।२४	३।२५।५९।३५	४।१३।५१।५०	५। ७।१८।२६	६।१८।५४।११	७।२२।४४।३५	३।४९	
४	२।१८। ७।१४	२। २।४१।१८	४।१७।३८।४३	३। ८।१४।२६	२।२२।४८।५४	३।२७। ८।५६	४।१३।५७।५२	५। ७।१५।१६	६।१८।५३।१७	७।२२।४३।१०	४।३४	
५	२।१९। ४।२७	२।१४।३५।४७	४।१८।१३।२८	३। ९।५१।३५	२।२३। २।२४	३।२८।१८।११	४। ४। ३।५७	५। ७।१२। ५	६।१८।५२।२५	७।२२।४१।४५	५।२२	

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मिं. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम) चण्डीगढ़ भा. स्टे. टा.

दैनिक स्पष्ट विवरण ग्रह (प्रात: ५ घ. ३० मि. भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम)

(१ अगस्त को अयनांश २३°।३३'।२७", वेंकटेश (प्लूटो) ५ रा. २० अं. ४५ क.)

तारीख सन् १९७८ ई.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस	नेप्च्यून	चण्डीगढ़ भा. स्टै. टा. चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि.	घं. मि.
जुला. ६	२।२०। १।४१	२।२६।२७।४१	४।१८।४८।१७	३।११।३०।३६	२।२३।१५।५५	३।२९।२७।२१	४। ४।१०। ६	५। ७। ८।५४	६।१८।५१।३७	७।२२।४०।२१		१९।५९
७	२।२०।५८।५४	३। ८।१८।४१	४।१९।२३।१२	३।१३। ५।२८	२।२३।२९।२५	४। ०।३६।२६	४। ४।१६।१८	५। ७। ५।४३	६।१८।५०।५२	७।२२।३८।५८		२०।३८
८	२।२१।५६। ८	३।२०।१०।२४	४।१९।५८।११	३।१४।३८।१०	२।२३।४२।५६	४। १।४५।२४	४। ४।२२।३३	५। ७। २।३३	६।१८।५०।१०	७।२२।३७।३६		२१।१६
९	२।२२।५३।२१	४। २। ५। १	४।२०।३३।१६	३।१६। ८।४२	२।२३।५६।२६	४। २।५४।१६	४। ४।२८।५२	५। ६।५९।२२	६।१८।४९।३०	७।२२।३६।१५		२१।५२
१०	२।२३।५०।३५	४।१४। ५।२०	४।२१। ८।२६	३।१७।३७। २	२।२४। ९।५७	४। ४। ३। १	४। ४।३५।१३	५। ६।५६।११	६।१८।४८।५४	७।२२।३४।५४		२२।२७
११	२।२४।४७।४९	४।२६।१४।५०	४।२१।४३।४१	३।१९। ३। ९	२।२४।२३।२७	४। ५।११।४०	४। ४।४१।३८	५। ६।५३। १	६।१८।४८।२०	७।२२।३३।३४		२३। २
१२	२।२५।४५। ३	५। ८।३७।२७	४।२२।१९। ०	३।२०।२७। २	२।२४।३६।५७	४। ६।२०।१२	४। ४।४८। ५	५। ६।४९।५०	६।१८।४७।५०	७।२२।३२।१६		२३।३८
१३	२।२६।४२।१६	५।२१।१८। ९	४।२२।५४।२४	३।२१।४८।३७	२।२४।५०।२७	४। ७।२८।३७	४। ४।५४।३५	५। ६।४६।३९	६।१८।४७।२१	७।२२।३०।५९		... ...
१४	२।२७।३९।२९	६। ४।२०।५३	४।२३।२९।५३	३।२३। ७।५४	२।२५। ३।५६	४। ८।३६।५६	४। ५। १। ८	५। ६।४३।२८	६।१८।४६।५७	७।२२।२९।४३		०।१५
१५	२।२८।३६।४२	६।१७।४९।४१	४।२४। ५।२७	३।२४।२४।५०	२।२५।१७।२५	४। ९।४५। ७	४। ५। ७।४४	५। ६।४०।१७	६।१८।४६।३५	७।२२।२८।२८		०।५६
१६	२।२९।३३।५६	७। १।४६।५९	४।२४।४१। ५	३।२५।३९।२१	२।२५।३०।५४	४।१०।५३।११	४। ५।१४।२२	५। ६।३७। ७	६।१८।४६।१७	७।२२।२७।१५		१।४१
१७	३। ०।३१।१०	७।१६।१२।४८	४।२५।१६।४८	३।२६।५१।२३	२।२५।४४।२३	४।१२। १। ८	४। ५।२१। ३	५। ६।३३।५६	६।१८।४६। १	७।२२।२६। ४		२।३१
१८	३। १।२८।२४	८। १। ३।५६	४।२५।५२।३६	३।२८। ०।५३	२।२५।५७।५१	४।१३। ८।५७	४। ५।२७।४६	५। ६।३०।४५	६।१८।४५।४९	७।२२।२४।५४		३।२८
१९	३। २।२५।३८	८।१६।१३।३६	४।२६।२८।२७	३।२९। ७।४६	२।२६।११।१९	४।१४।१६।३८	४। ५।३४।३२	५। ६।२७।३५	६।१८।४५।३९	७।२२।२३।४४		४।३१
२०	३। ३।२२।५३	९। १।३३। ४	४।२७। ४।२३	४। ०।११।५६	२।२६।२४।४६	४।१५।२४।१०	४। ५।४१।२०	५। ६।२४।२४	६।१८।४५।३३	७।२२।२२।३५		५।३७
२१	३। ४।२०। ८	९।१६।४८। ५	४।२७।४०।२४	४। १।१३।१८	२।२६।३८।१३	४।१६।३१।३३	४। ५।४८।११	५। ६।२१।१४	६।१८।४५।३१	७।२२।२१।२८	२०।१९	
२२	३। ५।१७।२३	१०। १।५०।५६	४।२८।१६।२९	४। २।११।४६	२।२६।५१।३८	४।१७।३८।४७	४। ५।५५। ४	५। ६।१८। ३	६।१८।४५।३१	७।२२।२०।२२	२१। ४	
२३	३। ६।१४।३९	१०।१६।३२।१४	४।२८।५२।३८	४। ३। ७।१४	२।२७। ५। २	४।१८।४५।५६	४। ६। १।५९	५। ६।१४।५२	६।१८।४५।३३	७।२२।१९।१८	२१।४७	
२४	३। ७।११।५६	११। ०।४६।५७	४।२९।२८।५२	४। ३।५९।३४	२।२७।१८।२५	४।१९।५२।५१	४। ६। ८।५७	५। ६।११।४१	६।१८।४५।३९	७।२२।१८।१६	२२।२७	
२५	३। ८। ९।१३	११।१४।३३।२०	५। ०। ५।११	४। ४।४८।३७	२।२७।३१।४७	४।२०।५९।४१	४। ६।१५।५७	५। ६। ८।३१	६।१८।४५।४९	७।२२।१७।१५	२३। ७	
२६	३। ९। ६।३१	११।२७।५२।३३	५। ०।४१।३४	४। ५।३४।१७	२।२७।४५। ९	४।२२। ६।२२	४। ६।२३। १	५। ६। ५।२०	६।१८।४६। २	७।२२।१६।१५	२३।४५	
२७	३।१०। ३।५०	०।१०।४७।२६	५। १।१८। २	४। ६।१६।२३	२।२७।५८।२९	४।२३।१२।५३	४। ६।३०। ५	५। ६। २।१०	६।१८।४६।१७	७।२२।१५।१७	... ...	
२८	३।११। १।१०	०।२३।२१।५८	५। १।५४।३४	४। ६।५४।४५	२।२८।११।४८	४।२४।१९।१५	४। ६।३७।११	५। ५।५८।५९	६।१८।४६।३६	७।२२।१४।२१	०।२४	
२९	३।११।५८।३१	१। ५।४०।२७	५। २।३१।११	४। ७।२९।१५	२।२८।२५। ५	४।२५।२५।२८	४। ६।४४।१९	५। ५।५५।४८	६।१८।४६।५८	७।२२।१३।२६	१। ५	
३०	३।१२।५५।५३	१।१७।४७। ४	५। ३। ७।५२	४। ७।५९।४२	२।२८।३८।२२	४।२६।३१।३१	४। ६।५१।२९	५। ५।५२।३७	६।१८।४७।२३	७।२२।१२।३२	१।४८	
३१	३।१३।५३।१७	१।२९।४५।३५	५। ३।४४।३८	४। ८।२५।५४	२।२८।५१।३६	४।२७।३७।२५	४। ६।५८।४१	५। ५।४९।२७	६।१८।४७।५१	७।२२।११।४०	२।३३	
अगस्त १	३।१४।५०।४२	२।११।३९।१४	५। ४।२१।२८	४। ८।४७।४१	२।२९। ४।५०	४।२८।४३। ९	४। ७। ५।५३	५। ५।४६।१६	६।१८।४८।२३	७।२२।१०।५०	३।२०	
२	३।१५।४८। ८	२।२३।३०।४१	५। ४।५८।२३	४। ९। ४।५४	२।२९।१८। २	४।२९।४८।४३	४। ७।१३। ८	५। ५।४३। ६	६।१८।४८।५८	७।२२।१०। २	४। ९	
३	३।१६।४५।३४	३। ५।२२। ४	५। ५।३५।२२	४। ९।१७।२०	२।२९।३१।१२	५। ०।५४। ५	४। ७।२०।२५	५। ५।३९।५५	६।१८।४९।३५	७।२२। ९।१५	४।५९	
४	३।१७।४३। २	३।१७।१५।१२	५। ६।१२।२६	४। ९।२४।४८	२।२९।४४।२१	५। १।५९।१६	४। ७।२७।४३	५। ५।३६।४४	६।१८।५०।१४	७।२२। ८।३०	५।४९	
५	३।१८।४०।३१	३।२९।११।४४	५। ६।४९।३३	४। ९।२७।१२	२।२९।५७।२८	५। ३। ४।१६	४। ७।३५। ३	५। ५।३३।३३	६।१८।५०।५८	७।२२। ७।४७		१९।५४
६	३।१९।३८। ०	४।११।१३।२१	५। ७।२६।४५	४। ९।२४।२३	३। ०।१०।३३	५। ४। ९। ४	४। ७।४२।२४	५। ५।३०।२२	६।१८।५१।४७	७।२२। ७। ५		२०।२९
७	३।२०।३५।३०	४।२३।२२। २	५। ८। ४। १	४। ९।१६।१७	३। ०।२३।३६	५। ५।१३।४१	४। ७।४९।४७	५। ५।२७।११	६।१८।५२।३७	७।२२। ६।२५		२१। ४
८	३।२१।३३। १	५। ५।४०। ५	५। ८।४१।२२	४। ९। २।५०	३। ०।३६।३७	५। ६।१८। ५	४। ७।५७।१०	५। ५।२४। ०	६।१८।५३।३०	७।२२। ५।४६		२१।३९
९	३।२२।३०।३३	५।१८।१०।२०	५। ९।१८।४७	४। ८।४४। ४	३। ०।४९।३६	५। ७।२२।१६	४। ८। ४।३५	५। ५।२०।४९	६।१८।५४।२५	७।२२। ५। ९		२२।१६
१०	३।२३।२८। ६	६। ०।५५।५६	५। ९।५६।१६	४। ८।२०। ३	३। १। २।३३	५। ८।२६।१५	४। ८।१२। १	५। ५।१७।३८	६।१८।५५।२५	७।२२। ४।३४		२२।५४
११	३।२४।२५।४०	६।१४। ०।१०	५।१०।३३।४९	४। ७।५०।५८	३। १।१५।२८	५। ९।२९।५९	४। ८।१९।२८	५। ५।१४।२७	६।१८।५६।२८	७।२२। ४। १		२३।३७
१२	३।२५।२३।१५	६।२७।२६। ०	५।११।११।२६	४। ७।१७। ४	३। १।२८।२०	५।१०।३३।३१	४। ८।२६।५६	५। ५।११।१६	६।१८।५७।३३	७।२२। ३।२९		.. ...

(४५)

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मिं. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ सितम्बर को अयनांश २३°।३३'।३१",वेंकटेश (प्लूटो) ५ रा. २० अं. ३४ क.)

तारीख सन् १९७८ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क. वि.	नेप्च्यून रा. अं. क. वि.	चण्डीगढ़ भा. स्टे. टा. चन्द्रोदय घं. मि.	चण्डीगढ़ भा. स्टे. टा. चन्द्रास्त घं. मि.
अगस्त १३	३।२६।२०।५१	७।११।१५।२२	५।११।४९।७	४।६।३८।४३	३।१।४१।१०	५।११।३६।४८	४।८।३४।२६	५।५।८।५	६।१८।५८।४१	७।२२।३।१		०।२३
१४	३।२७।१८।२७	७।२५।२९।१९	५।१२।२६।५३	४।५।५६।२३	३।१।५३।५८	५।१२।३९।४९	४।८।४१।५६	५।५।४।५५	६।१८।५९।५३	७।२२।२।३३		१।१५
१५	३।२८।१६।४	८।१०।५।२६	५।१३।४।४२	४।५।१०।३९	३।२।६।४३	५।१३।४२।३५	४।८।४९।२७	५।५।१।४४	६।१९।१।७	७।२२।२।७		२।१३
१६	३।२९।१३।४२	८।२४।५९।१६	५।१३।४२।३६	४।४।२२।१४	३।२।१९।२४	५।१४।४५।४	४।८।५६।५९	५।४।५८।३३	६।१९।२।२५	७।२२।१।४२		३।१६
१७	४।०।११।२१	९।१०।३।२३	५।१४।२०।३३	४।३।३१।५७	३।२।३२।४	५।१५।४७।१७	४।९।४।३१	५।४।५५।२३	६।१९।३।४६	७।२२।१।२०		४।२२
१८	४।१।९।१	९।२५।९।१२	५।१४।५८।३५	४।२।४०।४२	३।२।४४।४०	५।१६।४९।१४	४।९।१२।४	५।४।५२।१२	६।१९।५।९	७।२२।१।०		५।३०
१९	४।२।६।४३	१०।१०।६।४१	५।१५।३६।४१	४।१।४९।२७	३।२।५७।१४	५।१७।५०।५३	४।९।१९।३८	५।४।४९।१	६।१९।६।३६	७।२२।०।४२	१९।४०	
२०	४।३।४।२६	१०।२४।४७।३५	५।१६।१४।५०	४।०।५९।१३	३।३।९।४५	५।१८।५२।१४	४।९।२७।१३	५।४।४५।५१	६।१९।८।५	७।२२।०।२५	२०।२२	
२१	४।४।२।११	११।९।५।४६	५।१६।५३।४	४।०।११।३	३।३।२२।१३	५।१९।५३।१७	४।९।३४।४८	५।४।४२।४०	६।१९।९।३६	७।२२।०।१०	२१।२	
२२	४।४।५९।५७	११।२२।५७।५४	५।१७।३१।२१	३।२९।२५।५७	३।३।३४।३८	५।२०।५४।२	४।९।४२।२४	५।४।३९।२९	६।१९।११।१२	७।२१।५९।५७	२१।४२	
२३	४।५।५७।४५	०।६।२३।१९	५।१८।९।४३	३।२८।४४।५४	३।३।४७।०	५।२१।५४।२७	४।९।५०।०	५।४।३६।१९	६।१९।१२।५०	७।२१।५९।४६	२२।२२	
२४	४।६।५५।३५	०।१९।२३।३५	५।१८।४८।९	३।२८।८।४९	३।३।५९।१८	५।२२।५४।३३	४।९।५७।३५	५।४।३३।८	६।१९।१४।३०	७।२१।५९।३७	२३।२	
२५	४।७।५३।२६	१।२।१।४९	५।१९।२६।३९	३।२७।३८।२९	३।४।११।३४	५।२३।५४।१८	४।१०।५।११	५।४।२९।५७	६।१९।१६।१४	७।२१।५९।३०	२३।४५	
२६	४।८।५१।१९	१।१४।२२।३	५।२०।५।१३	३।२७।१४।४०	३।४।२३।४६	५।२४।५३।४३	४।१०।१२।४७	५।४।२६।४७	६।१९।१८।०	७।२१।५९।२४	... ...	
२७	४।९।४९।१४	१।२६।२८।३८	५।२०।४३।५१	३।२६।५७।५६	३।४।३५।५५	५।२५।५२।४६	४।१०।२०।२४	५।४।२३।३६	६।१९।१९।४९	७।२१।५९।२१	०।२९	
२८	४।१०।४७।१०	२।८।२६।४	५।२१।२२।३४	३।२६।४८।४६	३।४।४८।०	५।२६।५१।२७	४।१०।२८।०	५।४।२०।२६	६।१९।२१।४१	७।२१।५९।२०	१।१६	
२९	४।११।४५।८	२।२०।१८।२७	५।२२।१।२१	३।२६।४७।३२	३।५।०।२	५।२७।४९।४५	४।१०।३५।३७	५।४।१७।१५	६।१९।२३।३६	७।२१।५९।२२	२।३	
३०	४।१२।४३।८	३।२।९।३२	५।२२।४०।१२	३।२६।५४।२८	३।५।१२।०	५।२८।४७।३९	४।१०।४३।१३	५।४।१४।५	६।१९।२५।३४	७।२१।५९।२५	२।५४	
३१	४।१३।४१।९	३।१४।२।३१	५।२३।१९।७	३।२७।९।४१	३।५।२३।५५	५।२९।४५।९	४।१०।५०।४८	५।४।१०।५४	६।१९।२७।३४	७।२१।५९।२९	३।४८	
सितं. १	४।१४।३९।१२	३।२६।०।२	५।२३।५८।६	३।२७।३३।१४	३।५।३५।४४	६।०।४२।१४	४।१०।५८।२४	५।४।७।४३	६।१९।२९।३७	७।२१।५९।३५	४।३६	
२	४।१५।३७।१७	४।८।४।१७	५।२४।३७।१०	३।२८।५।२	३।५।४७।३०	६।१।३८।५३	४।११।५।५९	५।४।४।३२	६।१९।३१।४२	७।२१।५९।४४	५।३०	
३	४।१६।३५।२४	४।२०।१६।५९	५।२५।१६।१७	३।२८।४४।५६	३।५।५९।१२	६।२।३५।४	४।११।१३।३४	५।४।१।२१	६।१९।३३।५०	७।२१।५९।५५		१९।५
४	४।१७।३३।३२	५।२।३९।३७	५।२५।५५।२९	३।२९।३२।४२	३।६।१०।५०	६।३।३०।४८	४।११।२१।९	५।३।५८।१०	६।१९।३६।१	७।२२।०।८		१९।४१
५	४।१८।३१।४२	५।१५।१३।२८	५।२६।३४।४४	४।०।२८।२	३।६।२२।२४	६।४।२६।२	४।११।२८।४३	५।३।५४।५९	६।१९।३८।१५	७।२२।०।२२		२०।१८
६	४।१९।२९।५३	५।२७।५९।४८	५।२७।१४।४	४।१।३०।३३	३।६।३३।५३	६।५।२०।४६	४।११।३६।१७	५।३।५१।४८	६।१९।४०।३१	७।२२।०।३८		२०।५५
७	४।२०।२८।६	६।१०।५९।५५	५।२७।५३।२७	४।२।३९।५१	३।६।४५।१८	६।६।१४।५८	४।११।४३।५०	५।३।४८।३७	६।१९।४२।४९	७।२२।०।५६		२१।३७
८	४।२१।२६।२१	६।२४।१५।३	५।२८।३२।५५	४।३।५५।२७	३।६।५६।३८	६।७।८।३८	४।११।५१।२३	५।३।४५।२६	६।१९।४५।१०	७।२२।१।१६		२२।२१
९	४।२२।२४।३७	७।७।४६।२०	५।२९।१२।२६	४।५।१६।५१	३।७।७।५३	६।८।१।४३	४।११।५८।५५	५।३।४२।१५	६।१९।४७।३३	७।२२।१।३८		२३।१०
१०	४।२३।२२।५५	७।२१।३४।२५	५।२९।५२।३	४।६।४३।३०	३।७।१९।४	६।८।५४।१३	४।१२।६।२६	५।३।३९।४	६।१९।४९।५९	७।२२।२।३		.. ...
११	४।२४।२१।१५	८।५।३३।७	६।०।३१।४३	४।८।१४।५०	३।७।३०।१०	६।९।४६।७	४।१२।१३।५७	५।३।३५।५३	६।१९।५२।२७	७।२२।२।३०		०।३
१२	४।२५।१९।३६	८।१९।५९।४	६।१।११।२६	४।९।५०।२०	३।७।४१।१०	६।१०।३७।२२	४।१२।२१।२६	५।३।३२।४२	६।१९।५४।५८	७।२२।२।५८		१।२
१३	४।२६।१७।५८	९।४।३१।२३	६।१।५१।१३	४।११।२९।२६	३।७।५२।७	६।११।२७।५७	४।१२।२८।५४	५।३।२९।३१	६।१९।५७।३१	७।२२।३।२७		२।५
१४	४।२७।१६।२२	९।१९।११।३५	६।२।३१।४	४।१३।११।३७	३।८।२।५८	६।१२।१७।५०	४।१२।३६।२१	५।३।२६।२०	६।२०।०।५	७।२२।३।५९		३।१०
१५	४।२८।१४।४८	१०।३।५३।५०	६।३।१०।५९	४।१४।५६।२२	३।८।१३।४३	६।१३।७।१	४।१२।४३।४७	५।३।२३।९	६।२०।२।४१	७।२२।४।३४		४।१५
१६	४।२९।१३।१५	१०।१८।३१।३१	६।३।५०।५८	४।१६।४३।११	३।८।२४।२३	६।१३।५५।२७	४।१२।५१।१२	५।३।१९।५८	६।२०।५।२९	७।२२।५।१०		५।२१
१७	५।०।११।४४	११।२।५८।७	६।४।३१।१	४।१८।३१।३९	३।८।३४।५८	६।१४।४३।६	४।१२।५८।३६	५।३।१६।४७	६।२०।८।३	७।२२।५।४८	१८।५४	
१८	५।१।१०।१५	११।१७।८।१	६।५।११।७	४।२०।२१।२३	३।८।४५।२८	६।१५।२९।५७	४।१३।५।५८	५।३।१३।३६	६।२०।१०।४६	७।२२।६।२८	१९।३५	
१९	५।२।८।४८	०।०।५७।११	६।५।५१।१७	४।२२।१२।०	३।८।५५।५२	६।१६।१५।५८	[illegible]	५।३।१०।२५	[illegible]	[illegible]		

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मिं. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम) — चण्डीगढ़ भा. स्टे. टा.

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मिं. भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम)

(१ अक्तूबर को अयनांश २३°३३'३५" वेंकटेश (प्लूटो) ५ रा. २२ अं. ४१ क.)

तारीख सन् १९७८ ई.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस	नेप्च्यून	[illegible] भा. स्टैं. टा. [illegible]	[illegible]
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि.	घं. मि.
सितं. २०	५। ३। ७।२३	०।१४।२३।३०	६। ६।३१।३१	४।२४। ३।१३	३। ९। ६।११	६।१७।११। ८	४।१३।२०।३९	५। ३। ७।१४	६।२०।१६।२०	७।२२। ७।५४	२०।५६	
२१	५। ४। ६। १	०।२७।२६।४७	६। ७।११।५०	४।२५।१५।४५	३। ९।१६।२४	६।१७।४५।२४	४।१३।२७।५७	५। ३। ४। ३	६।२०।१९।१३	७।२२। ८।३९	२१।३९	
२२	५। ५। ४।४१	१।१०। ८।३७	६। ७।५२।१३	४।२७।४६।२२	३। ९।२६।३१	६।१८।२८।४४	४।१३।३५।१४	५। ३। ०।५२	६।२०।२२। ४	७।२२। ९।२६	२२।२४	
२३	५। ६। ३।२३	१।२२।३१।५४	६। ८।३२।४०	४।२९।३७।५२	३। ९।३६।३२	६।१९।११। ६	४।१३।४२।२९	५। २।५७।४१	६।२०।२४।५७	७।२२।१०।१५	२३।१०	
२४	५। ७। २। ७	२। ४।४०।२९	६। ९।१३।१०	५। १।२९। ६	३। ९।४६।२७	६।१९।५२।२८	४।१३।४९।४२	५। २।५४।३१	६।२०।२७।५४	७।२२।११। ७	२३।५८	
२५	५। ८। ०।५३	२।१६।३८।४६	६। ९।५३।४५	५। ३।१९।५५	३। ९।५६।१५	६।२०।३२।४७	४।१३।५६।५३	५। २।५१।२०	६।२०।३०।५३	७।२२।१२। ०	... ...	
२६	५। ८।५९।४२	२।२८।३१।२३	६।१०।३४।२४	५। ५।१०।१३	३।१०। ५।५८	६।२१।१२। ३	४।१४। ४। ३	५। २।४८। ९	६।२०।३३।५४	७।२२।१२।५५	०।४७	
२७	५। ९।५८।३३	३।१०।२२।५६	६।११।१५। ७	५। ६।५९।५४	३।१०।१५।३४	६।२१।५०।१०	४।१४।११।१०	५। २।४४।५८	६।२०।३६।५६	७।२२।१३।५१	१।३८	
२८	५।१०।५७।२६	३।२२।१७।४३	६।११।५५।५३	५। ८।४८।५४	३।१०।२५। ४	६।२२।२७। २	४।१४।१८।१६	५। २।४१।४७	६।२०।४०। ०	७।२२।१४।५०	२।३०	
२९	५।११।५६।२०	४। ४।१९।३३	६।१२।३६।४३	५।१०।३७।१०	३।१०।३४।२६	६।२३। २।५१	४।१४।२५।२०	५। २।३८।३७	६।२०।४३। ६	७।२२।१५।५०	३।२२	
३०	५।१२।५५।१७	४।१६।३९।३९	६।१३।१७।३८	५।१२।२४।४०	३।१०।४३।४३	६।२३।३७।१९	४।१४।३२।२१	५। २।३५।२६	६।२०।४६।१४	७।२२।१६।५२	४।१६	
अक्तू. १	५।१३।५४।१५	४।२८।५६।३०	६।१३।५८।३७	५।१४।११।२२	३।१०।५२।५२	६।२४।१०।२९	४।१४।३९।२०	५। २।३२।१५	६।२०।४९।२३	७।२२।१७।५६	५।११	
२	५।१४।५३।१६	५।११।३५।४३	६।१४।३९।४०	५।१५।५७।१४	३।११। १।५४	६।२४।४२।१५	४।१४।४६।१६	५। २।२९। ४	६।२०।५२।३४	७।२२।१९। २	६। ६	
३	५।१५।५२।२०	५।२४।३०। २	६।१५।२०।४७	५।१७।४२।१७	३।११।१०।५०	६।२५।१२।३६	४।१४।५३।११	५। २।२५।५३	६।२०।५५।४७	७।२२।२०।१०		१८।५४
४	५।१६।५१।२६	६। ७।३९।२३	६।१६। १।५८	५।१९।२६।२९	३।११।१९।३९	६।२५।४९।२८	४।१५। ०। ४	५। २।२२।४३	६।२०।५९। १	७।२२।२१।२१		१९।३५
५	५।१७।५०।३३	६।२१। ३। १	६।१६।४३।१२	५।२१। ९।५१	३।११।२८।२०	६।२६। ८।४८	४।१५। ६।५४	५। २।१९।३२	६।२०। २।१६	७।२२।२२।३३		२०।२०
६	५।१८।४९।४२	७। ४।३९।३८	६।१७।२४।३०	५।२२।५२।२४	३।११।३६।५४	६।२६।३४।३०	४।१५।१३।४२	५। २।१६।२१	६।२०। ५।३४	७।२२।२३।४६		२१। ८
७	५।१९।४८।५३	७।१८।२७।३२	६।१८। ५।५३	५।२४।३४। ७	३।११।४५।२०	६।२६।५८।३४	४।१५।२०।२४	५। २।१३।१०	६।२१। ८।५४	७।२२।२४।५९		२२। ०
८	५।२०।४८। ६	८। २।२४।५८	६।१८।४७।२०	५।२६।१५। २	३।११।५३।३९	६।२७।२०।५३	४।१५।२७। ७	५। २। ९।५९	६।२१।१२।१५	७।२२।२६।१५		२२।५६
९	५।२१।४७।२१	८।१६।३०। ४	६।१९।२८।५०	५।२७।५५। ९	३।१२। १।५०	६।२७।४९।३४	४।१५।३३।४६	५। २। ६।४९	६।२१।१५।३७	७।२२।२७।३३		२३।५६
१०	५।२२।४६।३८	९। ०।४०।५४	६।२०।१०।२४	५।२९।३४।३०	३।१२। ९।५३	६।२८। ०। ३	४।१५।४०।२२	५। २। ३।३८	६।२१।१९। ०	७।२२।२८।५३		... ...
११	५।२३।४५।५६	९।१४।५५।२६	६।२०।५२। २	६। १।१३। ५	३।१२।१७।४८	६।२८।१६।४६	४।१५।४६।५५	५। २। ०।२७	६।२१।२२।२४	७।२२।३०।१४		०।५९
१२	५।२४।४५।१६	९।२९।११।१७	६।२१।३३।४३	६। २।५०।४४	३।१२।२५।३६	६।२८।३१।२९	४।१५।५३।२६	५। १।५७।१६	६।२१।२५।४९	७।२२।३१।३७		२। २
१३	५।२५।४४।३७	१०।१३।२५।४४	६।२२।१५।२८	६। ४।२८।१२	३।१२।३३।१५	६।२८।४४। ९	४।१५।५९।५३	५। १।५४। ६	६।२१।२९।१६	७।२२।३३। १		३। ५
१४	५।२६।४४। १	१०।२७।३५।३३	६।२२।५७।१६	६। ६। ४।३६	३।१२।४०।४६	६।२८।५४।४२	४।१६। ६।१७	५। १।५०।५५	६।२१।३२।४४	७।२२।३४।२७		४। ८
१५	५।२७।४३।२५	११।११।३७।१५	६।२३।३९। ८	६। ७।४०। ९	३।१२।४८। ९	६।२९। ३। ४	४।१६।१२।३८	५। १।४७।४५	६।२१।३६।१३	७।२२।३५।५५		५।१०
१६	५।२८।४२।५२	११।२५।२७।१४	६।२४।२१। ४	६। ९।१५।११	३।१२।५५।२३	६।२९। ९।१४	४।१६।१८।५६	५। १।४४।३४	६।२१।३९।४३	७।२२।३७।२४		६।१३
१७	५।२९।४२।२१	०। ९। २।१९	६।२५। ३। ४	६।१०।४९।३४	३।१३। २।२९	६।२९।१३। ७	४।१६।२५।११	५। १।४१।२४	६।२१।४३।१५	७।२२।३८।५५	१८।४८	
१८	६। ०।४१।५२	०।२२।२०। ७	६।२५।४५। ८	६।१२।२३।१७	३।१३। ९।२६	६।२९।१४।४२	४।१६।३१।२३	५। १।३८।१३	६।२१।४६।४८	७।२२।४०।२७	१९।३१	
१९	६। १।४१।२५	१। ५।१९।२२	६।२६।२७।१५	६।१३।५६।२३	३।१३।१६।१४	६।२९।१३।५४	४।१६।३७।३१	५। १।३५। २	६।२१।५०।२२	७।२२।४२। १	२०।१६	
२०	६। २।४१। १	१।१८। ०। ७	६।२७। ९।२७	६।१५।२८।५२	३।१३।२२।५४	६।२९।१०।४४	४।१६।४३।३५	५। १।३१।५१	६।२१।५३।५७	७।२२।४३।३६	२१। १	
२१	६। ३।४०।३९	२। ०।२३।५१	६।२७।५१।४२	६।१७। ०।४५	३।१३।२९।२४	६।२९। ५। ९	४।१६।४९।३६	५। १।२८।४०	६।२१।५७।३२	७।२२।४५।१२	२१।४९	
२२	६। ४।४०।१९	२।१२।३३।१३	६।२८।३४। २	६।१८।३२। २	३।१३।३५।४६	६।२८।५७।१०	४।१६।५५।३३	५। १।२५।२९	६।२२। १। ८	७।२२।४६।५०	२२।३८	
२३	६। ५।४०। १	२।२४।३१।५५	६।२९।१६।२५	६।२०। २।४३	३।१३।४२। ०	६।२८।४६।४७	४।१७। १।२६	५। १।२२।१८	६।२२। ४।४५	७।२२।४८।३०	२३।२८	
२४	६। ६।३९।४६	३। ६।२४।२१	६।२९।५८।५३	६।२१।३२।४९	३।१३।४८। २	६।२८।३३।५९	४।१७। ७।१६	५। १।१९। ७	६।२२। ८।२३	७।२२।५०।११	... ...	
२५	६। ७।३९।३३	३।१८।१५।२३	७। ०।४१।२४	६।२३। २।१९	३।१३।५४। ४	६।२८।१८।४९	४।१७।१३। २	५। १।१५।५६	६।२२।१२। २	७।२२।५१।५३	०।१९	
२६	६। ८।३९।२२	४। ०।१०। ४	७। १।२३।५९	६।२४।३१।१२	३।१३।५९।३८	६।२८। १।१८	४।१७।१८।४४	५। १।१२।४५	६।२२।१५।४१	७।२२।५३।३७	१।११	
२७	६। ९।३९।१३	४।१२।१३।१९	७। २। ६।३८	६।२५।५९।३०	३।१४। ५।१२	६।२७।४१।३०	४।१७।२४।२२	५। १। ९।३४	६।२२।१९।२१	७।२२।५५।२२	२। ४	

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ नवम्बर को अयनांश २३°।३३'।३९' वेंकटेश (प्लूटो) ५ रा. २३ अं. ५४ क.) (१ दिसम्बर को अयनांश २३°।३३'।४३' ,वेंकटेश (प्लूटो) ५ रा. २४ अं. ५४ क.)

तारीख सन् १९७८ ई.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस	नेप्च्यून	चण्डीगढ़ भा. स्टै. टा. चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि	रा. अं. क. वि	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि.	घं. मि.
अक्तू. २८	६।१०।३९। ६	४।२४।२९।४०	७। २।४९।२१	६।२७।२७।११	३।१४।१०।३७	६।२७।१९।३०	४।१७।२९।५६	५। १। ६।२४	६।२२।२३। २	७।२२।५७। ८	२।५८	
२९	६।११।३९। १	५। ७। २।५१	७। ३।३२। ८	६।२८।५४।१६	३।१४।१५।५०	६।२६।५५।२२	४।१७।३५।२६	५। १। ३।१३	६।२२।२६।४३	७।२२।५८।५५	३।५४	
३०	६।१२।३८।५९	५।१९।५५।३२	७। ४।१४।५९	७। ०।२०।४०	३।१४।२०।५५	६।२६।२९।१४	४।१७।४०।५२	५। १। ०। २	६।२२।३०।२५	७।२३। ०।४३	४।५१	
३१	६।१३।३८।५७	६। ३। ८।५१	७। ४।५७।५३	७। १।४६।२५	३।१४।२५।५०	६।२६। १।१३	४।१७।४६।१३	५। ०।५६।५१	६।२२।३४। ७	७।२३। २।३३	५।५०	
नवं. १	६।१४।३८।५८	६।१६।४२।१६	७। ५।४०।५२	७। ३।११।२९	३।१४।३०।३५	६।२५।३१।२९	४।१७।५१।३०	५। ०।५३।४०	६।२२।३७।५०	७।२३। ४।२४		१८।१४
२	६।१५।३९। १	७। ०।३३।२९	७। ६।२३।५४	७। ४।३५।४८	३।१४।३५। ९	६।२५। ०।१०	४।१७।५६।४३	५। ०।५०।२९	६।२२।४१।३३	७।२३। ६।१६		१९। २
३	६।१६।३९। ७	७।१४।३८।४०	७। ७। ७। ०	७। ५।५९।२०	३।१४।३९।३३	६।२४।२७।२६	४।१८। १।५१	५। ०।४७।१९	६।२२।४५।१७	७।२३। ८।१०		१९।५३
४	६।१७।३९।१४	७।२८।५३। १	७। ७।५०। ९	७। ७।२२। १	३।१४।४३।४६	६।२३।५३।३०	४।१८। ६।५५	५। ०।४४। ९	६।२२।४९। १	७।२३।१०। ५		२०।४९
५	६।१८।३९।२२	८।१३।११।३०	७। ८।३३।२२	७। ८।४३।४८	३।१४।४७।४९	६।२३।१८।३५	४।१८।११।५४	५। ०।४०।५८	६।२२।५२।४६	७।२३।१२। ०		२१।५०
६	६।१९।३९।३३	८।२७।२९।३५	७। ९।१६।३९	७।१०। ४।३५	३।१४।५१।४१	६।२२।४२।५४	४।१८।१६।४८	५। ०।३७।४७	६।२२।५६।२९	७।२३।१३।५७		२२।५२
७	६।२०।३९।४५	९।११।४३।४४	७। ९।५९।५९	७।११।२४।१७	३।१४।५५।२२	६।२२। ६।४२	४।१८।२१।३८	५। ०।३४।३६	६।२३। ०।१३	७।२३।१५।५५		२३।५५
८	६।२१।३९।५८	९।२५।५१।३९	७।१०।४३।२३	७।१२।४२।४८	३।१४।५८।५२	६।२१।३०।१३	४।१८।२६।२३	५। ०।३१।२६	६।२३। ३।५८	७।२३।१७।५४		... ...
९	६।२२।४०।१२	१०। ९।५२। ३	७।११।२६।५०	७।१४। ०। ०	३।१५। २।१२	६।२०।५३।४०	४।१८।३१। ३	५। ०।२८।१५	६।२३। ७।४३	७।२३।१९।५४		०।५८
१०	६।२३।४०।२८	१०।२३।४४।१८	७।१२।१०।२०	७।१५।१५।४६	३।१५। ५।२१	६।२०।१७।२१	४।१८।३५।३८	५। ०।२५। ४	६।२३।११।२७	७।२३।२१।५५		२। ०
११	६।२४।४०।४५	११। ७।२७।५८	७।१२।५३।५४	७।१६।२९।५३	३।१५। ८।१८	६।१९।४१।३०	४।१८।४०। ८	५। ०।२१।५४	६।२३।१५।१२	७।२३।२३।५७		३। १
१२	६।२५।४१। ४	११।२१। २।३२	७।१३।३७।३२	७।१७।४२।११	३।१५।११। ४	६।१९। ६।२२	४।१८।४४।३३	५। ०।१८।४३	६।२३।१८।५७	७।२३।२५।५९		४। २
१३	६।२६।४१।२४	०। ४।२७। ४	७।१४।२१।१३	७।१८।५२।२८	३।१५।१३।४०	६।१८।३२।१२	४।१८।४८।५२	५। ०।१५।३३	६।२३।२२।४०	७।२३।२८। २		५। १
१४	६।२७।४१।४६	०।१७।४०।२२	७।१५। ४।५८	७।२०। ०।२८	३।१५।१६। ४	६।१७।५९।१२	४।१८।५३। ७	५। ०।१२।२३	६।२३।२६।२२	७।२३।३०। ६		६। ०
१५	६।२८।४२।१०	१। ०।४१। ६	७।१५।४८।४५	७।२१। ५।५३	३।१५।१८।१७	६।१७।२७।३६	४।१८।५७।१७	५। ०। ९।१२	६।२३।३०। ३	७।२३।३२।११	१८। ८	
१६	६।२९।४२।३५	१।१३।२८।११	७।१६।३२।३७	७।२२। ८।२३	३।१५।२०।१८	६।१६।५७।३६	४।१९। १।२१	५। ०। ६। २	६।२३।३३।४५	७।२३।३४।१६	१८।५३	
१७	७। ०।४३। २	१।२६। १। ८	७।१७।१६।३२	७।२३। ७।३७	३।१५।२२। ८	६।१६।२९।२२	४।१९। ५।२०	५। ०। २।५१	६।२३।३७।२७	७।२३।३६।२२	१९।४१	
१८	७। १।४३।३१	२। ८।२०।२३	७।१८। ०।३१	७।२४। ३। ९	३।१५।२३।४७	६।१६। ३। ४	४।१९। ९।१४	४।२९।५९।४०	६।२३।४१।१९	७।२३।३८।२९	२०।२९	
१९	७। २।४४। १	२।२०।२७।१७	७।१८।४४।३३	७।२४।५४।२९	३।१५।२५।१४	६।१५।३८।४९	४।१९।१३। ३	४।२९।५६।२९	६।२३।४५। २	७।२३।४०।३६	२१।२०	
२०	७। ३।४४।३३	३। २।२४।२६	७।१९।२८।३९	७।२५।४१। ७	३।१५।२६।२९	६।१५।१६।४६	४।१९।१६।४६	४।२९।५३।१८	६।२३।४८।४५	७।२३।४२।४४	२२।११	
२१	७। ४।४५। ७	३।१४।१५।२४	७।२०।१२।४८	७।२६।२२।२४	३।१५।२७।३३	६।१४।५७। ०	४।१९।२०।२३	४।२९।५०। ७	६।२३।५२।२८	७।२३।४४।५३	२३। १	
२२	७। ५।४५।४२	३।२६। ४।३६	७।२०।५७। १	७।२६।५७।४१	३।१५।२८।२४	६।१४।३९।३५	४।१९।२३।५५	४।२९।४६।५७	६।२३।५६।१०	७।२३।४७। ३	२३।५४	
२३	७। ६।४६।१९	४। ७।५७। ४	७।२१।४१।१७	७।२७।२६।१७	३।१५।२९। ४	६।१४।२४।३५	४।१९।२७।२१	४।२९।४३।४६	६।२३।५९।५१	७।२३।४९।१४	... ...	
२४	७। ७।४६।५६	४।१९।५८।१३	७।२२।२५।३७	७।२७।४७।२३	३।१५।२९।३२	६।१४।११।५७	४।१९।३०।४०	४।२९।४०।३६	६।२४। ३।३१	७।२३।५१।२५	०।४६	
२५	७। ८।४७।३६	५। २।१३।२८	७।२३। ९।५८	७।२८। ०।१४	३।१५।२९।४८	६।१४। १।५५	४।१९।३३।५४	४।२९।३७।२५	६।२४। ७।११	७।२३।५३।३७	१।४०	
२६	७। ९।४८।१८	५।१४।४७।५२	७।२३।५४।२५	७।२८। ४। ४	३।१५।२९।५२	६।१३।५४।२२	४।१९।३७। २	४।२९।३४।१४	६।२४।१०।५०	७।२३।५५।४९	२।३५	
२७	७।१०।४९। २	५।२७।४५।३१	७।२४।३८।५६	७।२७।५८। ८	३।१५।२९।४४	६।१३।४९।२१	४।१९।४०। ४	४।२९।३१। ४	६।२४।१४।२८	७।२३।५८। २	३।३३	
२८	७।११।४९।४७	६।११। ८।५७	७।२५।२३।३०	७।२७।४९।४९	३।१५।२९।२४	६।१३।४६।४८	४।१९।४३। ०	४।२९।२७।५३	६।२४।१८। ५	७।२४। ०।१५	४।३३	
२९	७।१२।५०।३४	६।२४।५८।२९	७।२६। ८। ६	७।२७।१४।३९	३।१५।२८।५३	६।१३।४६।४२	४।१९।४५।५१	४।२९।२४।४२	६।२४।२१।४१	७।२४। २।२८	५।३५	
३०	७।१३।५१।२२	७। ९।११।४५	७।२६।५२।४६	७।२६।३६।२९	३।१५।२८। ९	६।१३।४८।५९	४।१९।४८।३६	४।२९।२१।३१	६।२४।२५।१६	७।२४। ४।४२	६।३८	
दिसं. १	७।१४।५२।१२	७।२३।४३।३३	७।२७।३७।२९	७।२५।४७।३१	३।१५।२७।१४	६।१३।५३।४०	४।१९।५१।१५	४।२९।१८।२०	६।२४।२८।५१	७।२४। ६।५७		१८।२७
२	७।१५।५३। ३	८। ८।२७।४१	७।२८।२२।१६	७।२४।४८।२४	३।१५।२६। ६	६।१४। ०।४४	४।१९।५३।४७	४।२९।१५। ९	६।२४।३२।२५	७।२४। ९।१२		१९।३९
३	७।१६।५३।५५	८।२३।१३।५२	७।२९। ७। ५	७।२३।४०।२९	३।१५।२४।४७	६।१४।१०। ०	४।१९।५६।१३	४।२९।११।५८	६।२४।३५।५९	७।२४।११।२७		२०।४२
४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

चण्डीगढ

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम)

चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा.

(१ जन. १९७९ ई. को अयनांश २३°।३३"।४७' वेंकटेश (प्लूटो) ५ रा. २५ अं. ३२ क.)

तारीख सन् १९७८-७९ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क. वि.	नेप्च्यून रा. अं. क. वि.	चन्द्रोदय घं. मि.	चन्द्रास्त घं. मि.
दिसं. ५	७।१८।५५।४१	९।२२।२४।३६	८। ०।३६।५५	७।२१। ४।४३	३।१५।२१।३३	६।१४।३५। ८	४।२०। ०।४६	४।२९। ५।३७	६।२४।४३। १	७।२४।१५।५८		२२।५०
६	७।१९।५६।३५	१०। ६।४०। ९	८। १।२१।५५	७।१९।४१।५९	३।१५।१९।३८	६।१४।५०।५३	४।२०। २।५३	४।२९। २।२६	६।२४।४६।३०	७।२४।१८।१४		२३।५४
७	७।२०।५७।३०	१०।२०।३९।१४	८। २। ६।५७	७।१८।१९।३७	३।१५।१७।३१	६।१५। ८।४०	४।२०। ४।५४	४।२८।५९।१५	६।२४।४९।५८	७।२४।२०।२९		... ...
८	७।२१।५८।२६	११। ४।२२। २	८। २।५२। ३	७।१७। ०।२४	३।१५।१५।१३	६।१५।२८।२७	४।२०। ६।४८	४।२८।५६। ४	६।२४।५३।२५	७।२४।२२।४५		०।५५
९	७।२२।५९।२२	११।१७।४९।४६	८। ३।३७।११	७।१५।४८।५६	३।१५।१२।४३	६।१५।५०। ८	४।२०। ८।३६	४।२८।५२।५३	६।२४।५६।५१	७।२४।२५। १		१।५५
१०	७।२४। ०।१९	०। १। ४। २	८। ४।२२।२१	७।१४।४१।१९	३।१५।१०। ०	६।१६।१३।४२	४।२०।१०।१७	४।२८।४९।४२	६।२५। ०।१६	७।२४।२७।१७		२।५४
११	७।२५। १।१६	०।१४। ६।१७	८। ५। ७।३५	७।१३।४५।१२	३।१५। ७। ६	६।१६।३९। ४	४।२०।११।५२	४।२८।४६।३१	६।२५। ३।३८	७।२४।२९।३२		३।५२
१२	७।२६। २।१४	०।२६।५७।३१	८। ५।५२।५३	७।१२।५९।२९	३।१५। ४। २	६।१७। ६।१०	४।२०।१३।२०	४।२८।४३।२०	६।२५। ६।५९	७।२४।३१।४८		४।४९
१३	७।२७। ३।१३	१। ९।३८।१७	८। ६।३८।१२	७।१२।२५।१५	३।१५। ०।४७	६।१७।३४।५७	४।२०।१४।४२	४।२८।४०। ९	६।२५।१०।१९	७।२४।३४। ४		५।४४
१४	७।२८। ४।१३	१।२२। ८।४५	८। ७।२३।३६	७।१२। २। ५	३।१४।५७।२०	६।१८। ५।२२	४।२०।१५।५८	४।२८।३६।५८	६।२५।१३।३८	७।२४।३६।२०		६।३८
१५	७।२९। ५।१३	२। ४।२९। ०	८। ८। ९। १	७।११।४९।५५	३।१४।५३।४२	६।१८।३७।२०	४।२०।१७। ७	४।२८।३३।४८	६।२५।१६।५५	७।२४।३८।३५	१८।२२	
१६	८। ०। ६।१४	२।१६।३९।२२	८। ८।५४।३०	७।११।४८।१३	३।१४।४९।५१	६।१९।१०।४९	४।२०।१८। ९	४।२८।३०।३७	६।२५।२०।११	७।२४।४०।४९	१९।१२	
१७	८। १। ७।१६	२।२८।४०।४२	८। ९।४०। २	७।११।५६।१९	३।१४।४५।५२	६।१९।४५।४५	४।२०।१९। ४	४।२८।२७।२६	६।२५।२३।२५	७।२४।४३। ४	२०। २	
१८	८। २। ८।१९	३।१०।३४।३८	८।१०।२५।३५	७।१२।१३।२५	३।१४।४१।४१	६।२०।२२। ५	४।२०।१९।५३	४।२८।२४।१६	६।२५।२६।३७	७।२४।४५।१९	२०।५३	
१९	८। ३। ९।२३	३।२२।२३।४०	८।११।११।१३	७।१२।३८।४१	३।१४।३७।२०	६।२०।५९।४५	४।२०।२०।३६	४।२८।२१। ५	६।२५।२९।४७	७।२४।४७।३४	२१।४५	
२०	८। ४।१०।२८	४। ४।११।१६	८।११।५६।५३	७।१३।११।२३	३।१४।३२।४९	६।२१।३८।४३	४।२०।२१।१२	४।२८।१७।५४	६।२५।३२।५५	७।२४।४९।४८	२२।३८	
२१	८। ५।११।३१	४।१६। १।४१	८।१२।४२।३६	७।१३।५०।४१	३।१४।२८। ७	६।२२।१८।५६	४।२०।२१।४१	४।२८।१४।४३	६।२५।३६। २	७।२४।५२। ३	२३।३०	
२२	८। ६।१२।३७	४।२७।५९।५४	८।१३।२८।२१	७।१४।३५।५१	३।१४।२३।१५	६।२३। ०।२०	४।२०।२२। ३	४।२८।११।३२	६।२५।३९। ७	७।२४।५४।१७	... ...	
२३	८। ७।१३।४४	५।१०।११।२२	८।१४।१४।१०	७।१५।२६।१४	३।१४।१८।१४	६।२३।४२।५३	४।२०।२२।१९	४।२८। ८।२१	६।२५।४२।१०	७।२४।५६।३१	०।२४	
२४	८। ८।१४।५१	५।२२।४९।३४	८।१५। ०। ०	७।१६।२१।१३	३।१४।१३। २	६।२४।२६।३२	४।२०।२२।२९	४।२८। ५।११	६।२५।४५।१०	७।२४।५८।४४	१।१९	
२५	८। ९।१५।५९	६। ५।३५।३७	८।१५।४५।५४	७।१७।२०।१५	३।१४। ७।४१	६।२५।११।१४	४।२०।२२।३२	४।२८। २। ०	६।२५।४८। ९	७।२५। ०।५७	२।१६	
२६	८।१०।१७। ८	६।१८।५७।२९	८।१६।३१।५१	७।१८।२२।५२	३।१४। २।१०	६।२५।५६।५५	४।२०।२२।२८	४।२७।५८।४९	६।२५।५१। ६	७।२५। ३। ९	३।१६	
२७	८।११।१८।१७	७। २।४९। ६	८।१७।१७।५०	७।१९।२८।३८	३।१३।५६।२९	६।२६।४३।३५	४।२०।२२।१७	४।२७।५५।३८	६।२५।५४। ०	७।२५। ५।२१	४।१७	
२८	८।१२।१९।२६	७।१७। ९।३५	८।१८। ३।५३	७।२०।३७।११	३।१३।५०।३९	६।२७।३१।१३	४।२०।२२। ०	४।२७।५२।२८	६।२५।५६।५३	७।२५। ७।३२	५।२०	
२९	८।१३।२०।३६	८। १।५४।३७	८।१८।४९।५६	७।२१।४८।११	३।१३।४४।४२	६।२८।१९।४८	४।२०।२१।३५	४।२७।४९।१७	६।२५।५९।४४	७।२५। ९।४३	६।२३	
३०	८।१४।२१।४७	८।१६।५६।३७	८।१९।३६। ४	७।२३। १।२१	३।१३।३८।३६	६।२९। ९। ५	४।२०।२१। ३	४।२७।४६। ६	६।२६। २।३३	७।२५।११।५३		१८।२२
३१	८।१५।२२।५७	९। २। ५।३९	८।२०।२२।१४	७।२४।१६।२४	३।१३।३२।२०	६।२९।५९।१५	४।२०।२०।२६	४।२७।४२।५५	६।२६। ५।१९	७।२५।१४। २		१९।२९
जन. १	८।१६।२४। ७	९।१७।११।१५	८।२१। ८।२५	७।२५।३३।१३	३।१३।२५।५६	७। ०।५०।१८	४।२०।१९।४२	४।२७।३९।४४	६।२६। ८। ३	७।२५।१६।११		२०।३७
१९७९ ई. २	८।१७।२५।१७	१०। २। ४।१३	८।२१।५४।४०	७।२६।५१।३०	३।१३।१९।२५	७। १।४१।५७	४।२०।१८।५१	४।२७।३६।३३	६।२६।१०।४५	७।२५।१८।२०		२१।४५
३	८।१८।२६।२७	१०।१६।३८। ०	८।२२।४०।५७	७।२८।११।१८	३।१३।१२।४६	७। २।३४।२३	४।२०।१७।५४	४।२७।३३।२३	६।२६।१३।२५	७।२५।२०।२९		२२।५४
४	८।१९।२७।३७	११। ०।४९। ९	८।२३।२७।१५	७।२९।३२। ६	३।१३। ६। १	७। ३।२७।३१	४।२०।१६।५०	४।२७।३०।१२	६।२६।१६। ०	७।२५।२२।२९		
५	८।२०।२८।४६	११।१४।३७। २	८।२४।१३।३५	८। ०।५४।४६	३।१२।५९। ८	७। ४।२१। ७	४।२०।१५।४०	४।२७।२७। १	६।२६।१८।३३	७।२५।२४।३८		०। ४
६	८।२१।२९।५५	११।२८। २।५४	८।२४।५९।५८	८। २।१७। ६	३।१२।५२। ८	७। ५।१५।४३	४।२०।१४।२२	४।२७।२३।५०	६।२६।२१। ४	७।२५।२६।४६		१।१३
७	८।२२।३१। ४	०।११। ९।१९	८।२५।४६।२२	८। ३।४१। २	३।१२।४५। ४	७। ६।१०।५२	४।२०।१२।५६	४।२७।२०।४०	६।२६।२३।३४	७।२५।२८।५१		२।२२
८	८।२३।३२।१२	०।२३।५९। ७	८।२६।३२।४९	८। ५। ५।४०	३।१२।३७।५२	७। ७। ६।३३	४।२०।११।३०	४।२७।१७।२९	६।२६।२६। ०	७।२५।३०।५६		३।३१
९	८।२४।३३।२०	१। ६।३५। ९	८।२७।१९।१८	८। ६।३१।२१	३।१२।३०।३५	७। ८। २।४९	४।२०। ९।५३	४।२७।१४।१८	६।२६।२८।२४	७।२५।३३। ०		४।३८
१०	८।२५।३४।२८	१।१८।५९।४७	८।२८। ५।५०	८। ७।५७।३८	३।१२।२३।१३	७। ८।५९।३८	४।२०। ८।११	४।२७।११। ७	६।२६।३०।४७	७।२५।३५। ४		५।४४
११	८।२६।३५।३६	२। १।१४।५७	८।२८।५२।२३	८। ९।२४।३६	३।१२।१५।४७	७। ९।५६।५७	४।२०। ६।२७	४।२७। ७।५६	६।२६।३३। ९	७।२५।३७। ६		६।४८

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: ५ घं. ३० मिं. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ नवम्बर को अयनांश २३°।३३'।३९" वेंकटेश (प्लूटो) ५ रा. २३ अं. ५४ क.) (१ दिसम्बर को अयनांश २३°।३३'।४३" वेंकटेश (प्लूटो) ५ रा. २४ अं. ५४ क.)

तारीख सन् १९७८ ई.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस	नेप्च्यून	चन्द्रोदय (अलीगढ़ भा. स्टै. टा.)	चन्द्रास्त (अलीगढ़ भा. स्टै. टा.)
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि.	घं. मि.
अक्तू. २८	६।१०।३९।६	४।२४।२९।४०	७।२।४९।२१	६।२७।२७।११	३।१४।१०।३७	६।२७।१९।३०	४।१७।२९।५६	५।१।६।२४	६।२२।२३।२	७।२२।५७।८	२।५८	
२९	६।११।३९।१	५।७।२।५१	७।३।३२।८	६।२८।५४।१६	३।१४।१५।५०	६।२६।५५।२२	४।१७।३५।२६	५।१।३।१३	६।२२।२६।४३	७।२२।५८।५५	३।५४	
३०	६।१२।३८।५९	५।१९।५५।३२	७।४।१४।५९	७।०।२०।४०	३।१४।२०।५५	६।२६।२९।१४	४।१७।४०।५२	५।१।०।२	६।२२।३०।२५	७।२३।०।४३	४।५१	
३१	६।१३।३८।५७	६।३।८।५१	७।४।५७।५३	७।१।४६।२५	३।१४।२५।५०	६।२६।१।१३	४।१७।४६।१३	५।०।५६।५१	६।२२।३४।७	७।२३।२।३३	५।५०	
नवं. १	६।१४।३८।५८	६।१६।४२।१६	७।५।४०।५२	७।३।११।२९	३।१४।३०।३५	६।२५।३१।२९	४।१७।५१।३०	५।०।५३।४०	६।२२।३७।५०	७।२३।४।२४		१८।१४
२	६।१५।३९।१	७।०।३३।२९	७।६।२३।५४	७।४।३५।४८	३।१४।३५।९	६।२५।०।१०	४।१७।५६।४३	५।०।५०।२९	६।२२।४१।३३	७।२३।६।१६		१९।२
३	६।१६।३९।७	७।१४।३८।४०	७।७।७।०	७।५।५९।२०	३।१४।३९।३३	६।२४।२७।२६	४।१८।१।५१	५।०।४७।१९	६।२२।४५।१७	७।२३।८।१०		१९।५३
४	६।१७।३९।१४	७।२८।५३।१	७।७।५०।९	७।७।२२।१	३।१४।४३।४६	६।२३।५३।३०	४।१८।६।५५	५।०।४४।९	६।२२।४९।१	७।२३।१०।५		२०।४९
५	६।१८।३९।२३	८।१३।११।३०	७।८।३३।२२	७।८।४३।४८	३।१४।४७।४९	६।२३।१८।३५	४।१८।११।५४	५।०।४०।५८	६।२२।५२।४४	७।२३।१२।०		२१।५०
६	६।१९।३९।३३	८।२७।२९।३५	७।९।१६।३९	७।१०।४।३५	३।१४।५१।४१	६।२२।४२।५४	४।१८।१६।४८	५।०।३७।४७	६।२२।५६।२९	७।२३।१३।५७		२२।५२
७	६।२०।३९।४५	९।११।४३।४४	७।९।५९।५९	७।११।२४।१७	३।१४।५५।२२	६।२२।६।४२	४।१८।२१।३८	५।०।३४।३६	६।२३।०।१३	७।२३।१५।५५		२३।५५
८	६।२१।३९।५८	९।२५।५१।३९	७।१०।४३।२३	७।१२।४२।४८	३।१४।५८।५२	६।२१।३०।१३	४।१८।२६।२३	५।०।३१।२६	६।२३।३।५८	७।२३।१७।५४		.. ...
९	६।२२।४०।१२	१०।९।५२।३	७।११।२६।५०	७।१४।०।०	३।१५।२।१२	६।२०।५३।४०	४।१८।३१।३	५।०।२८।१५	६।२३।७।४३	७।२३।१९।५४		०।५८
१०	६।२३।४०।२८	१०।२३।४४।१८	७।१२।१०।२०	७।१५।१५।४६	३।१५।५।२१	६।२०।१७।२१	४।१८।३५।३८	५।०।२५।४	६।२३।११।२७	७।२३।२१।५५		२।०
११	६।२४।४०।४५	११।७।२७।५८	७।१२।५३।५४	७।१६।२९।५३	३।१५।८।१८	६।१९।४१।३०	४।१८।४०।८	५।०।२१।५४	६।२३।१५।१२	७।२३।२३।५७		३।१
१२	६।२५।४१।४	११।२१।२।३२	७।१३।३७।३२	७।१७।४२।११	३।१५।११।४	६।१९।६।२२	४।१८।४४।३३	५।०।१८।४३	६।२३।१८।५७	७।२३।२५।५९		४।२
१३	६।२६।४१।२४	०।४।२७।४	७।१४।२१।१३	७।१८।५२।२८	३।१५।१३।४०	६।१८।३२।१२	४।१८।४८।५२	५।०।१५।३३	६।२३।२२।४०	७।२३।२८।२		५।१
१४	६।२७।४१।४६	०।१७।४०।२२	७।१५।४।५८	७।२०।०।२८	३।१५।१६।४	६।१७।५९।१२	४।१८।५३।७	५।०।१२।२२	६।२३।२६।२२	७।२३।३०।६		६।०
१५	६।२८।४२।१०	१।०।४१।६	७।१५।४८।४५	७।२१।५।५३	३।१५।१८।१७	६।१७।२७।३६	४।१८।५७।१७	५।०।९।१२	६।२३।३०।३	७।२३।३२।११	१८।८	
१६	६।२९।४२।३५	१।१३।२८।११	७।१६।३२।३७	७।२२।८।२३	३।१५।२०।१८	६।१६।५७।३६	४।१९।१।२१	५।०।६।२	६।२३।३३।४५	७।२३।३४।१६	१८।५३	
१७	७।०।४३।२	२।२६।१।८	७।१७।१६।३२	७।२३।७।३७	३।१५।२२।८	६।१६।२९।२२	४।१९।५।२०	५।०।२।५१	६।२३।३७।२७	७।२३।३६।२२	१९।४१	
१८	७।१।४३।३१	२।८।२०।२३	७।१८।०।३१	७।२४।३।९	३।१५।२३।४७	६।१६।३।४	४।१९।९।१४	४।२९।५९।४०	६।२३।४१।१९	७।२३।३८।२९	२०।२९	
१९	७।२।४४।१	२।२०।२७।१७	७।१८।४४।३३	७।२४।५४।२९	३।१५।२५।१४	६।१५।३८।४९	४।१९।१३।३	४।२९।५६।२९	६।२३।४५।२	७।२३।४०।३६	२१।२०	
२०	७।३।४४।३३	३।२।२४।२६	७।१९।२८।३९	७।२५।४१।७	३।१५।२६।२९	६।१५।१६।४६	४।१९।१६।४६	४।२९।५३।१८	६।२३।४८।४५	७।२३।४२।४४	२२।११	
२१	७।४।४५।७	३।१४।१५।२४	७।२०।१२।४८	७।२६।२२।२४	३।१५।२७।३३	६।१४।५७।०	४।१९।२०।२३	४।२९।५०।७	६।२३।५२।२८	७।२३।४४।५३	२३।१	
२२	७।५।४५।४२	३।२६।४।३६	७।२०।५७।१	७।२६।५७।४१	३।१५।२८।२४	६।१४।३९।३५	४।१९।२३।५५	४।२९।४६।५७	६।२३।५६।१०	७।२३।४७।३	२३।५४	
२३	७।६।४६।१९	४।७।५७।४	७।२१।४१।१७	७।२७।२६।१७	३।१५।२९।४	६।१४।२४।३५	४।१९।२७।२१	४।२९।४३।४६	६।२३।५९।५१	७।२३।४९।१४	.. ...	
२४	७।७।४६।५६	४।१९।५८।१३	७।२२।२५।३७	७।२७।४७।२३	३।१५।२९।३२	६।१४।११।५७	४।१९।३०।४०	४।२९।४०।३६	६।२४।३।३१	७।२३।५१।२५	०।४६	
२५	७।८।४७।३६	५।२।१३।२८	७।२३।९।५८	७।२८।०।१४	३।१५।२९।४८	६।१४।१।५५	४।१९।३३।५४	४।२९।३७।२५	६।२४।७।११	७।२३।५३।३७	१।४०	
२६	७।९।४८।१८	५।१४।४७।५२	७।२३।५४।२५	७।२८।४।४	३।१५।२९।५२	६।१३।५४।२२	४।१९।३७।२	४।२९।३४।१४	६।२४।१०।५०	७।२३।५५।४९	२।३५	
२७	७।१०।४९।२	५।२७।४५।३१	७।२४।३८।५६	७।२७।५८।८	३।१५।२९।४४	६।१३।४९।२१	४।१९।४०।४	४।२९।३१।४	६।२४।१४।२८	७।२३।५८।२	३।३३	
२८	७।११।४९।४७	६।११।८।५७	७।२५।२३।३०	७।२७।४९।४९	३।१५।२९।२४	६।१३।४६।४८	४।१९।४३।०	४।२९।२७।५३	६।२४।१८।५	७।२४।०।१५	४।३३	
२९	७।१२।५०।३४	६।२४।५८।२९	७।२६।८।६	७।२७।१४।३९	३।१५।२८।५३	६।१३।४६।४२	४।१९।४५।५१	४।२९।२४।४२	६।२४।२१।४१	७।२४।२।२८	५।३५	
३०	७।१३।५१।२२	७।९।११।४५	७।२६।५२।४६	७।२६।३६।२९	३।१५।२८।९	६।१३।४८।५९	४।१९।४८।३६	४।२९।२१।३१	६।२४।२५।१६	७।२४।४।४२	६।३८	
दिसं. १	७।१४।५२।१२	७।२३।४३।३३	७।२७।३७।२९	७।२५।४७।३१	३।१५।२७।१४	६।१३।५३।४०	४।१९।५१।१५	४।२९।१८।२०	६।२४।२८।५१	७।२४।६।५७		१८।२७
२	७।१५।५३।३	८।८।२७।४१	७।२८।२२।१६	७।२४।४८।२४	३।१५।२६।६	६।१४।०।४८	४।१९।५३।४७	४।२९।१५।९	६।२४।३२।२५	७।२४।९।१२		१९।१९
३	७।१६।५३।५५	८।२३।१३।५२	७।२९।७।५	७।२३।४०।२१	३।१५।२४।४७	६।१४।१०।०	४।१९।५६।१३	४।२९।११।५८	६।२४।३५।५९	७।२४।११।२७		२०।१२
४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ जन. १९७९ ई. को अयनांश २३°।३३'।१८" वेंकटेश (प्लूटो) ५ रा. २५ अं. ३२ क.)

तारीख सन् १९७८-७९ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क. वि.	नेप्च्यून रा. अं. क. वि.	चण्डीगढ़ भा. स्टै. टा. चन्द्रोदय घं. मि.	चन्द्रास्त घं. मि.
दिसं. ५	७।१८।५५।४१	९।२२।२४।३७	८। ०।३६।५५	७।२१। ४।४३	३।१५।२१।३३	६।१४।३५। ८	४।२०। ०।४६	४।२९। ५।३७	६।२४।४३। १	७।२४।१५।५८		२२।५०
६	७।१९।५६।३५	१०। ६।४०। ९	८। १।२१।५५	७।१९।४९।५९	३।१५।१९।३८	६।१४।५०।५३	४।२०। २।५३	४।२९। २।२६	६।२४।४६।३०	७।२४।१८।१४		२३।५४
७	७।२०।५७।३०	१०।२०।३९।१४	८। २। ६।५७	७।१८।१९।३७	३।१५।१७।३१	६।१५। ८।४०	४।२०। ४।५४	४।२८।५९।१५	६।२४।४९।५८	७।२४।२०।२९		......
८	७।२१।५८।२६	११। ४।२२। २	८। २।५२। ३	७।१७। ०।२५	३।१५।१५।१३	६।१५।२८।२७	४।२०। ६।४८	४।२८।५६। ४	६।२४।५३।२५	७।२४।२२।४५		०।५५
९	७।२२।५९।२२	११।१७।४९।४६	८। ३।३७।११	७।१५।४६।५६	३।१५।१२।४३	६।१५।५०। ८	४।२०। ८।३६	४।२८।५२।५३	६।२४।५६।५१	७।२४।२५। १		१।५५
१०	७।२४। ०।१९	०। १। ४। २	८। ४।२२।२१	७।१४।४१।१९	३।१५।१०। ०	६।१६।१३।४२	४।२०।१०।१७	४।२८।४९।४२	६।२५। ०।१६	७।२४।२७।१७		२।५४
११	७।२५। १।१६	०।१४। ६।१७	८। ५। ७।३५	७।१३।४५।१२	३।१५। ७। ६	६।१६।३९। ४	४।२०।११।५२	४।२८।४६।३१	६।२५। ३।३८	७।२४।२९।३२		३।५२
१२	७।२६। २।१४	०।२६।५७।३१	८। ५।५२।५२	७।१२।५९।२९	३।१५। ४। २	६।१७। ६।१०	४।२०।१३।२०	४।२८।४३।२०	६।२५। ६।५९	७।२४।३१।४८		४।४९
१३	७।२७। ३।१३	१। ९।३८।१७	८। ६।३८।१२	७।१२।२५।१५	३।१५। ०।४७	६।१७।३४।५७	४।२०।१४।४२	४।२८।४०। ९	६।२५।१०।१९	७।२४।३४। ४		५।४४
१४	७।२८। ४।१३	१।२२। ८।४५	८। ७।२३।३६	७।१२। २। ५	३।१४।५७।२०	६।१८। ५।२२	४।२०।१५।५८	४।२८।३६।५८	६।२५।१३।३८	७।२४।३६।२०		६।३८
१५	७।२९। ५।१३	२। ४।२९। ०	८। ८। ९। १	७।११।४९।५५	३।१४।५३।४२	६।१८।३७।२०	४।२०।१७। ७	४।२८।३३।४८	६।२५।१६।५५	७।२४।३८।३५	१८।२२	
१६	८। ०। ६।१४	२।१६।३९।२२	८। ८।५४।३०	७।११।४८।१३	३।१४।४९।५१	६।१९।१०।४९	४।२०।१८। ९	४।२८।३०।३७	६।२५।२०।११	७।२४।४०।४९	१९।१२	
१७	८। १। ७।१६	२।२८।४०।४२	८। ९।४०। २	७।११।५६।१९	३।१४।४५।५२	६।१९।४५।४५	४।२०।१९। ४	४।२८।२७।२६	६।२५।२३।२५	७।२४।४३। ४	२०। २	
१८	८। २। ८।१९	३।१०।३४।३८	८।१०।२५।३५	७।१२।१३।२५	३।१४।४१।४१	६।२०।२२। ५	४।२०।१९।५३	४।२८।२४।१६	६।२५।२६।३७	७।२४।४५।१९	२०।५३	
१९	८। ३। ९।२३	३।२२।२३।४०	८।११।११।१३	७।१२।३८।४१	३।१४।३७।२०	६।२०।५९।४५	४।२०।२०।३६	४।२८।२१। ५	६।२५।२९।४७	७।२४।४७।३४	२१।४५	
२०	८। ४।१०।२६	४। ४।११।१६	८।११।५६।५३	७।१३।११।२३	३।१४।३२।४९	६।२१।३८।४३	४।२०।२१।१२	४।२८।१७।५४	६।२५।३२।५५	७।२४।४९।४८	२२।३८	
२१	८। ५।११।३१	४।१६। १।४१	८।१२।४२।३६	७।१३।५०।४१	३।१४।२८। ७	६।२२।१८।५६	४।२०।२१।४१	४।२८।१४।४३	६।२५।३६। २	७।२४।५२। ३	२३।३०	
२२	८। ६।१२।३७	४।२७।५९।५४	८।१३।२८।२१	७।१४।३५।४१	३।१४।२३।१५	६।२३। ०।२०	४।२०।२२। ३	४।२८।११।३२	६।२५।३९। ७	७।२४।५४।१७	......	
२३	८। ७।१३।४४	५।१०।११।२२	८।१४।१४।१०	७।१५।२६।१४	३।१४।१८।१४	६।२३।४२।५२	४।२०।२२।१९	४।२८। ८।२२	६।२५।४२।१०	७।२४।५६।३१	०।२४	
२४	८। ८।१४।५१	५।२२।४१।३४	८।१५। ०। ०	७।१६।२१।१३	३।१४।१३। २	६।२४।२६।३२	४।२०।२२।२९	४।२८। ५।११	६।२५।४५।१०	७।२४।५८।४६	१।१९	
२५	८। ९।१५।५९	६। ५।३५।२७	८।१५।४५।५४	७।१७।२०।१५	३।१४। ७।४१	६।२५।११।१४	४।२०।२२।३२	४।२८। २। ०	६।२५।४८। ९	७।२५। ०।५७	२।१६	
२६	८।१०।१७। ८	६।१८।५७।२९	८।१६।३१।५१	७।१८।२२।५२	३।१४। २।१०	६।२५।५६।५५	४।२०।२२।२८	४।२७।५८।४९	६।२५।५१। ६	७।२५। ३। ९	३।१६	
२७	८।११।१८।१७	७। २।४९। ६	८।१७।१७।५०	७।१९।२८।३८	३।१३।५६।२९	६।२६।४३।३५	४।२०।२२।१७	४।२७।५५।३८	६।२५।५४। ०	७।२५। ५।२१	४।१७	
२८	८।१२।१९।२६	७।१७। ९।३५	८।१८। ३।५३	७।२०।३७।११	३।१३।५०।३९	६।२७।३१।१३	४।२०।२२। ०	४।२७।५२।२८	६।२५।५६।५३	७।२५। ७।३२	५।२०	
२९	८।१३।२०।३६	८। १।५४।३७	८।१८।४९।५६	७।२१।४८।११	३।१३।४४।४२	६।२८।१९।४४	४।२०।२१।३५	४।२७।४९।१७	६।२५।५९।४४	७।२५। ९।४३	६।२३	
३०	८।१४।२१।४७	८।१६।५६।३७	८।१९।३६। ४	७।२३। १।२१	३।१३।३८।३६	६।२९। ९। ५	४।२०।२१। ३	४।२७।४६। ६	६।२६। २।३३	७।२५।११।५३		१८।२२
३१	८।१५।२२।५७	९। २। ५।३९	८।२०।२२।१४	७।२४।१६।२४	३।१३।३२।२०	६।२९।५९।१५	४।२०।२०।२६	४।२७।४२।५५	६।२६। ५।१९	७।२५।१४। २		१९।२९
जन. १	८।१६।२४। ७	९।१७।११।१५	८।२१। ८।२५	७।२५।३३।१३	३।१३।२५।५६	७। ०।५०।१४	४।२०।१९।४२	४।२७।३९।४४	६।२६। ८। ३	७।२५।१६।११		२०।३७
१९७९ई. २	८।१७।२५।१७	१०। २। ४।१३	८।२१।५४।४०	७।२६।५१।३२	३।१३।१९।२५	७। १।४१।५०	४।२०।१८।५१	४।२७।३६।३३	६।२६।१०।४५	७।२५।१८।२०		२१।४५
३	८।१८।२६।२७	१०।१६।३८। ०	८।२२।४०।५७	७।२८।११।१२	३।१३।१२।४६	७। २।३४।२३	४।२०।१७।५४	४।२७।३३।२३	६।२६।१३।२५	७।२५।२०।२९		२२।५४
४	८।१९।२७।३७	११। ०।४९। ९	८।२३।२७।१५	७।२९।३२। ६	३।१३। ६। १	७। ३।२७।३१	४।२०।१६।५०	४।२७।३०।१२	६।२६।१६। ०	७।२५।२२।२९		
५	८।२०।२८।४६	११।१४।३७। २	८।२४।१३।३५	८। ०।५४। ६	३।१२।५९। ८	७। ४।२१।४३	४।२०।१५।४०	४।२७।२७। १	६।२६।१८।३२	७।२५।२४।३८		०। ४
६	८।२१।२९।५५	११।२८। २।५४	८।२४।५९।५८	८। २।१७। ६	३।१२।५२। ८	७। ५।१५।४०	४।२०।१४।२२	४।२७।२३।५१	६।२६।२१। ४	७।२५।२६।४६		१।१३
७	८।२२।३१। ४	०।११। ९।१९	८।२५।४६।२२	८। ३।४१। २	३।१२।४५। ४	७। ६।१०।५२	४।२०।१२।५६	४।२७।२०।४०	६।२६।२३।३४	७।२५।२८।५१		२।२३
८	८।२३।३२।१२	०।२३।५९। ७	८।२६।३२।४९	८। ५। ५।४०	३।१२।३७।५२	७। ७। ६।३३	४।२०।११।३०	४।२७।१७।२९	६।२६।२६। ०	७।२५।३०।५६		३।३१
९	८।२४।३३।२०	१। ६।३५। ९	८।२७।१९।२०	८। ६।३१।२१	३।१२।३०।३५	७। ८। २।४१	४।२०। ९।५३	४।२७।१४।१८	६।२६।२८।२४	७।२५।३३। ०		४।३८
१०	८।२५।३४।२८	१।१८।५९।४७	८।२८। ५।५०	८। ७।५७।३८	३।१२।२३।१३	७। ८।५९।३८	४।२०। ८।११	४।२७।११। ७	६।२६।३०।४७	७।२५।३५। ४		५।४४
११	८।२६।३५।३६	२। १।१४।५७	८।२८।५२।२३	८। ९।२४।३६	३।१२।१५।४७	७। ९।५७। ०	४।२०। ६।२७	४।२७। ७।५७	६।२६।३३। ९	७।२५।३७। ६		६।४८

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मिं. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ फर. १९७९ ई. को अयनांश २३°।३३'।५१" वेंकटेश (प्लूटो) ५ रा. २५ अं. ३८ क.)

तारीख सन् १९७९ ई.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस	नेप्च्यून	चण्डीगढ़ भा. स्टै. टा. चन्द्रोदय	चन्द्रास्त
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि.	घं. मि.
जन. १२	८।२७।३६।४३	२।१३।२२। ९	८।२९।३८।५७	८।१०।५२।१५	३।१२। ८।१५	७।१०।५४।५४	४।२०। ४।२८	४।२७। ४।४७	६।२६।३५।२९	७।२५।३९। ५		६।१५
१३	८।२८।३७।५०	२।२५।२२।३६	९। ०।२५।३३	८।१२।२०।३१	३।१२। ०।३९	७।११।५३।१७	४।२०। २।२७	४।२७। १।३६	६।२६।३७।४५	७।२५।४१। २		७। ०
१४	८।२९।३८।५६	३। ७।१७।२८	९। १।१२।११	८।१३।४९।२४	३।११।५२।५८	७।१२।५२।१०	४।२०। ०।२१	४।२६।५८।२६	६।२६।३९।५५	७।२५।४२।५८	१८।४८	
१५	९। ०।४०। २	३।१९। ८।११	९। १।५८।५१	८।१५।१८।५२	३।११।४५।१४	७।१३।५१।३१	४।१९।५८। ८	४।२६।५५।१५	६।२६।४२। ४	७।२५।४४।५४	१९।३९	
१६	९। १।४१। ८	४। ०।५६।३४	९। २।४५।३४	८।१६।४८।५३	३।११।३७।२७	७।१४।५१।१९	४।१९।५५।५०	४।२६।५२। ४	६।२६।४४। ६	७।२५।४६।४९	२०।३१	
१७	९। २।४२।१३	४।१२।४५। ६	९। ३।३२।१८	८।१८।१९।२९	३।११।२९।३६	७।१५।५१।३२	४।१९।५३।२६	४।२६।४८।५४	६।२६।४६। ८	७।२५।४८।४३	२१।२४	
१८	९। ३।४३।१८	४।२४।३६।५६	९। ४।१९। ५	८।१९।५०।३९	३।११।२१।४३	७।१६।५२।१३	४।१९।५०।५६	४।२६।४५।४३	६।२६।४८।१०	७।२५।५०।३७	२२।१६	
१९	९। ४।४४।२३	५। ६।३३।५५	९। ५। ५।५२	८।२१।२२।२४	३।११।१३।४७	७।१७।५३।१४	४।१९।४८।२०	४।२६।४२।३२	६।२६।५०। ७	७।२५।५२।३१	२३।२०	
२०	९। ५।४५।२७	५।१८।४६।३३	९। ५।५२।४१	८।२२।५४।४१	३।११। ५।५०	७।१८।५४।४२	४।१९।४५।३९	४।२६।३९।२२	६।२६।५२। ०	७।२५।५४।२१	... ...	
२१	९। ६।४६।३०	६। १।१३।३९	९। ६।३९।३३	८।२४।२७।३४	३।१०।५७।४९	७।१९।५६।३२	४।१९।४२।५१	४।२६।३६।११	६।२६।५३।५१	७।२५।५६।१०	०। ४	
२२	९। ७।४७।३३	६।१४। २। ६	९। ७।२६।२५	८।२६। ०।५८	३।१०।४९।४८	७।२०।५८।४३	४।१९।३९।५८	४।२६।३३। ०	६।२६।५५।४१	७।२५।५७।५९	१। १	
२३	९। ८।४८।३६	७।२७।१६।१४	९। ८।१३।२०	८।२७।३४।५८	३।१०।४१।४६	७।२२। १।१५	४।१९।३७। ०	४।२६।२९।४९	६।२६।५७।२२	७।२५।५९।४८	१।५९	
२४	९। ९।४९।३८	७।१०।५९। ५	९। ९। ०।१७	८।२९। ९।३५	३।१०।३३।४३	७।२३। ४। ७	४।१९।३३।५७	४।२६।२६।३८	६।२६।५९। ४	७।२६। १।३१	२।५८	
२५	९।१०।५०।४१	७।२५।११।३१	९। ९।४७।१६	९। ०।४४।४५	३।१०।२५।४०	७।२४। ७।२०	४।१९।३०।४९	४।२६।२३।२७	६।२७। ०।५३	७।२६। ३।१६	४। ०	
२६	९।११।५१।४३	८। ९।५१।२२	९।१०।३४।१४	९। २।२०।३४	३।१०।१७।३७	७।२५।१०।५५	४।१९।२७।३५	४।२६।२०।१६	६।२७। २।२९	७।२६। ५। १	५। ३	
२७	९।१२।५२।४३	८।२४।५२।५९	९।११।२१।१४	९। ३।५६।५८	३।१०। ९।३५	७।२६।१४।४३	४।१९।२४।१७	४।२६।१७। ६	६।२७। ४। ३	७।२६। ६।४२	६। २	
२८	९।१३।५३।४३	९।१०। ७।४२	९।१२। ८।१७	९। ५।३४। १	३।१०। १।३४	७।२७।१८।४८	४।१९।२०।५४	४।२६।१३।५५	६।२७। ५।३३	७।२६। ८।२२	६।५९	
२९	९।१४।५४।४२	९।२५।२४।५२	९।१२।५५।२१	९। ७।११।४१	३। ९।५३।३४	७।२८।२३। ९	४।१९।१७।२६	४।२६।१०।४४	६।२७। ७। १	७।२६।१०। ०		१९।२१
३०	९।१५।५५।४०	१०।१०।३३।५०	९।१३।४२।२५	९। ८।५०। ३	३। ९।४५।३५	७।२९।२७।४८	४।१९।१३।५३	४।२६। ७।३३	६।२७। ८।२६	७।२६।११।३९		२०।२९
३१	९।१६।५६।३८	१०।२५।२५।३५	९।१४।२९।३०	९।१०।२९। ३	३। ९।३७।३९	८। ०।३२।४०	४।१९।१०।१५	४।२६। ४।२२	६।२७। ९।४८	७।२६।१३।१३		२१।३३
फर. १	९।१७।५७।३४	११। ९।५३।५८	९।१५।१६।३७	९।१२। ८।४७	३। ९।२९।४५	८। १।३७।४६	४।१९। ६।३२	४।२६। १।१२	६।२७।११। ६	७।२६।१४।५०		२२।३७
२	९।१८।५८।२८	११।२३।५५।५७	९।१६। ३।४६	९।१३।४९।१०	३। ९।२१।५४	८। २।४३। ८	४।१९। २।४६	४।२५।५७। १	६।२७।१२।२१	७।२६।१६।२२		२३।३७
३	९।१९।५९।२१	०। ७।३१।२२	९।१६।५०।५५	९।१५।३०।२०	३। ९।१४। ६	८। ३।४८।४४	४।१८।५८।५६	४।२५।५४।५०	६।२७।१३।३३	७।२६।१७।५२		... ...
४	९।२१। ०।१४	०।२०।४२। ०	९।१७।३८। ५	९।१७।१२।१०	३। ९। ६।२१	८। ४।५४।३४	४।१८।५५। २	४।२५।५१।३९	६।२७।१४।४२	७।२६।१९।२१		०।३७
५	९।२२। १। ५	१। ३।३०।५६	९।१८।२५।१६	९।१८।५४।४६	३। ८।५८।४१	८। ६। ०।३६	४।१८।५१। ४	४।२५।४८।२९	६।२७।१५।५०	७।२६।२०।४९		१।३४
६	९।२३। १।५४	१।१६। १।५०	९।१९।१२।२८	९।२०।३८। ७	३। ८।५१। ४	८। ७। ६।५०	४।१८।४७। ६	४।२५।४५।१७	६।२७।१६।५४	७।२६।२२।१७		२।२८
७	९।२४। २।४२	१।२८।१८।२४	९।१९।५९।४१	९।२२।२२।१२	३। ८।४४।३६	८। ८।१३।१९	४।१८।४३। ०	४।२५।४२। ७	६।२७।१७।५१	७।२६।२३।४४		३।२१
८	९।२५। ३।२८	२।१०।२४। ८	९।२०।४६।५४	९।२४। ७। ३	३। ८।३६। ८	८। ९।१९।५६	४।१८।३८।५१	४।२५।३८।५७	६।२७।१८।४५	७।२६।२५।१०		४।११
९	९।२६। ४।१३	२।२२।२२। ८	९।२१।३४। ७	९।२५।५२।४२	३। ८।२८।४५	८।१०।२६।४७	४।१८।३४।३९	४।२५।३५।४६	६।२७।१९।३७	७।२६।२६।३३		४।५७
१०	९।२७। ४।५६	३। ४।१५। ३	९।२२।२१।२२	९।२७।३९। ४	३। ८।२०।२८	८।११।३३।४९	४।१८।३०।२४	४।२५।३२।३५	६।२७।२०।२५	७।२६।२७।५२		५।४०
११	९।२८। ५।३८	३।१६। ५। ९	९।२३। ८।३५	९।२९।२६।१०	३। ८।१४।१६	८।१२।४१। १	४।१८।२६। ५	४।२५।२९।२५	६।२७।२१।१०	७।२६।२९।११		६।२२
१२	९।२९। ६।१९	३।२७।५४।२४	९।२३।५५।५२	१०। १।१४। १	३। ८। ७।११	८।१३।४८।२४	४।१८।२१।४२	४।२५।२६।१४	६।२७।२१।५२	७।२६।३०।२८		७। १
१३	१०। ०। ६।५८	४। ९।४४।४४	९।२४।४३। ९	१०। ३। ३।२२	३। ८। ०।११	८।१४।५५।५७	४।१८।१७।१७	४।२५।२३। ३	६।२७।२२।३२	७।२६।३१।४१	१९।२०	
१४	१०। १। ७।३६	४।२१।३८। ८	९।२५।३०।२५	१०। ४।५१।४२	३। ७।५३।१९	८।१६। ३।४०	४।१८।१२।५०	४।२५।१९।५२	६।२७।२३। ९	७।२६।३२।५३	२०।१२	
१५	१०। २। ८।११	५। ३।३६।४९	९।२६।१७।४३	१०। ६।४१।३०	३। ७।४६।३१	८।१७।११।३३	४।१८। ८।१९	४।२५।१६।४२	६।२७।२३।४३	७।२६।३४। ५	२१। ५	
१६	१०। ३। ८।४६	५।१५।४३।१९	९।२७। ५। २	१०। ८।३१।५१	३। ७।३९।५२	८।१८।१९।३६	४।१८। ३।४६	४।२५।१३।३१	६।२७।२४।१३	७।२६।३५।१६	२१।५९	
१७	१०। ४। ९।२०	५।२८। ०।३८	९।२७।५२।२१	१०।१०।२२।४०	३। ७।३३।२१	८।१९।२७।४७	४।१७।५९।१२	४।२५।१०।२१	६।२७।२४।३७	७।२६।३६।२५	२०।५३	
१८	१०। ५। ९।५३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मिं., भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम)

(१ मार्च १९७९ ई. को अयनांश २३°।३३'।५४" वेंकटेश (प्लूटो) ५ रा. २५ अं. १८ क.)

तारीख सन् १९७९ ई.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	यूरेनस रा. अं. क. वि.	नेप्च्यून रा. अं. क. वि.	चण्डीगढ़ भा. स्टै. टा. चन्द्रोदय घं. मि.	चन्द्रास्त घं. मि.
फर. १९	१०। ६।१०।२४	६।२३।२१। ३	९।२९।२७। १	१०।१४। ५।१३	३। ७।२०।४०	८।२१।४४।३६	४।१७।४९।५६	४।२५। ४। १	६।२७।२५।२१	७।२६।३८।३६	... ...	
२०	१०। ७।१०।५४	७। ६।३१। २	१०। ०।१४।२२	१०।१५।५६।३८	३। ७।१४।३२	८।२२।५३।१२	४।१७।४५।१६	४।२४। ०।५०	६।२७।२५।३७	७।२६।३९।४०	०।४८	
२१	१०। ८।११।२३	७।२०। ४।३८	१०। १। १।४२	१०।१७।४८। ०	३। ७। ८।३२	८।२४। १।५७	४।१७।४०।३५	४।२४।५७।४०	६।२७।२५।४९	७।२६।४०।४०	१।४७	
२२	१०। ९।११।५०	८। ४। ३।२३	१०। १।४९। १	१०।१९।३९। ३	३। ७। २।४०	८।२५।१०।४२	४।१७।३५।५२	४।२४।५४।२९	६।२७।२५।५९	७।२६।४१।३८	२।४७	
२३	१०।१०।१२।१७	८।१८।२६।४५	१०। २।३६।२१	१०।२१।२९।२८	३। ६।५६।५८	८।२६।१९।४९	४।१७।३१। ७	४।२४।५१।१८	६।२७।२६। ६	७।२६।४२।३४	३।४५	
२४	१०।११।१२।४१	९। ३।११।४६	१०। ३।२३।४१	१०।२३।१९। ४	३। ६।५१।२५	८।२७।२८।५६	४।१७।२६।२१	४।२४।४८। ७	६।२७।२६।१०	७।२६।४३।२९	४।४२	
२५	१०।१२।१३। ५	९।१८।१२।३८	१०। ४।११। २	१०।२५। ७।२४	३। ६।४६। १	८।२८।३८। ९	४।१७।२१।३५	४।२४।४४।५६	६।२७।२६। ७	७।२६।४४।२३	५।३४	
२६	१०।१३।१३।२७	१०। ३।२१।२१	१०। ४।५८।२४	१०।२६।५४।१२	३। ६।४०।४६	८।२९।४७।३०	४।१७।१६।४८	४।२४।४१।४६	६।२७।२६। ४	७।२६।४५।१४	६।२३	
२७	१०।१४।१३।४७	१०।१८।२८।३४	१०। ५।४५।४५	१०।२८।३८।५६	३। ६।३५।४१	९। ०।५६।५७	४।१७।१२। ०	४।२४।३८।३५	६।२७।२५।५८	७।२६।४६। ५		१९।११
२८	१०।१५।१४। ५	११। ३।२५। ०	१०। ६।३३। ७	११। ०।२१।१२	३। ६।३०।४६	९। २। ६।३२	४।१७। ७।११	४।२४।३५।२४	६।२७।२५।४९	७।२६।४६।५६		२०।१७
मार्च १	१०।१६।१४।२१	११।१८। २।५०	१०। ७।२०।२८	११। २। ०।२९	३। ६।२६। ०	९। ३।१६। ९	४।१७। २।२२	४।२४।३२।१३	६।२७।२५।३५	७।२६।४७।३८		२१।२०
२	१०।१७।१४।३५	०। २।१६।३९	१०। ८। ७।४९	११। ३।३६।१४	३। ६।२१।२५	९। ४।२५।५४	४।१६।५७।३३	४।२४।२९। २	६।२७।२५।१८	७।२६।४८।२१		२२।२५
३	१०।१८।१४।४९	०।१६। ३।४७	१०। ८।५५।११	११। ५। ७।५२	३। ६।१७। १	९। ५।३५।४२	४।१६।५२।४५	४।२४।२५।५१	६।२७।२४।५९	७।२६।४९। ३		२३।२४
४	१०।१९।१४।५९	०।२९।२४। ६	१०। ९।४२।३०	११। ६।३४।५१	३। ६।१२।४६	९। ६।४५।३६	४।१६।४७।५६	४।२४।२२।४०	६।२७।२४।३७	७।२६।४९।४३		... ...
५	१०।२०।१५। ७	१।१२।१९।३०	१०।१०।२९।४९	११। ७।५६।३५	३। ६। ८।४३	९। ७।५५।३८	४।१६।४३। ८	४।२४।१९।२९	६।२७।२४।१०	७।२६।५०।२०		०।२१
६	१०।२१।१५।१४	१।२४।५३।१६	१०।११।१७। ९	११। ९।१२।२७	३। ६। ४।५०	९। ९। ५।३९	४।१६।३८।२१	४।२४।१६।१९	६।२७।२३।४१	७।२६।५०।५५		१।१४
७	१०।२२।१५।१८	२। ७। ९।२९	१०।१२। ४।२८	११।१०।२१।५७	३। ६। १। ८	९।१०।१५।४८	४।१६।३३।३४	४।२४।१३। ८	६।२७।२३। ८	७।२६।५१।३०		२। ७
८	१०।२३।१५।२०	२।१९।१२।३०	१०।१२।५१।४६	११।११।२४।३१	३। ५।५७।३६	९।११।२६। १	४।१६।२८।४८	४।२४। ९।५८	६।२७।२२।३३	७।२६।५२। ४		२।५४
९	१०।२४।१५।२०	३। १। ६।४३	१०।१३।३९। २	११।१२।१९।४३	३। ५।५४।१५	९।१२।३६।२१	४।१६।२४। ४	४।२४। ६।४७	६।२७।२१।५१	७।२६।५२।३४		३।३९
१०	१०।२५।१५।१८	३।१२।५६। ७	१०।१४।२६।१८	११।१३। ७। ६	३। ५।५१। ६	९।१३।४६।४३	४।१६।१९।२०	४।२४। ३।३६	६।२७।२१। ९	७।२६।५३। २		४।२०
११	१०।२६।१५।१४	३।२४।४४।२३	१०।१५।१३।३४	११।१३।४६।१७	३। ५।४८। ८	९।१४।५७।१०	४।१६।१४।३८	४।२४। ०।२६	६।२७।२०।२५	७।२६।५३।२७		४।५९
१२	१०।२७।१५। ७	४। ६।३४।३९	१०।१६। ०।५०	११।१४।१७। ३	३। ५।४५।२१	९।१६। ७।४१	४।१६।१०।५७	४।२३।५७।१५	६।२७।१९।४०	७।२६।५३।५१		५।३७
१३	१०।२८।१४।५९	४।१८।२९।३४	१०।१६।४८। ५	११।१४।३९।१२	३। ५।४२।४६	९।१७।१८।१९	४।१६। ६।१७	४।२३।५४। ५	६।२७।१८।४८	७।२६।५४।१२		६।११
१४	१०।२९।१४।४८	५। ०।३१।१९	१०।१७।३५।१९	११।१४।५२।३९	३। ५।४०।२१	९।१८।२८।५९	४।१६। १।४०	४।२३।५०।५४	६।२७।१७।५४	७।२६।५४।३१	१८।५९	
१५	११। ०।१४।३५	५।१२।४१।४९	१०।१८।२२।३१	११।१४।५७।२४	३। ५।३८। ८	९।१९।३९।४३	४।१५।५६। ४	४।२३।४७।४३	६।२७।१६।५७	७।२६।५४।४९	१९।५३	
१६	११। १।१४।२१	५।२५। २।२६	१०।१९। ९।४३	११।१४।५३।३७	३। ५।३६। ६	९।२०।५०।३०	४।१५।५१।३१	४।२३।४४।३३	६।२७।१५।५९	७।२६।५५। ४	२०।४८	
१७	११। २।१४। ५	६। ७।३४।५२	१०।१९।५६।५६	११।१४।४१।३३	३। ५।३४।१७	९।२२। १।२२	४।१५।४७। ०	४।२३।४१।२२	६।२७।१४।५५	७।२६।५५।१६	२१।४५	
१८	११। ३।१३।४७	६।२०।२०।२७	१०।२०।४४। ७	११।१४।२१।३९	३। ५।३२।३८	९।२३।१२।१७	४।१५।४२।३१	४।२३।३८।११	६।२७।१३।५०	७।२६।५५।२७	२२।४२	
१९	११। ४।१३।२८	७। ३।२०।३३	१०।२१।३१।१८	११।१३।५४।२६	३। ५।३१।१०	९।२४।२३।१८	४।१५।३८। ५	४।२३।३५। १	६।२७।१२।४१	७।२६।५५।३७	२३।४०	
२०	११। ५।१३। ७	७।१६।३६।३२	१०।२२।१८।२६	११।१३।२०।३६	३। ५।२९।५५	९।२५।३४।१९	४।१५।३३।४१	४।२३।३१।५०	६।२७।११।२९	७।२६।५५।३६	... ...	
२१	११। ६।१२।४४	८। ०। ९।३१	१०।२३। ५।३८	११।१२।४१।४८	३। ५।२८।५१	९।२६।४५।२६	४।१५।२९।२०	४।२३।२८।३९	६।२७।१०।१४	७।२६।५५।५१	०।३९	
२२	११। ७।१२।१९	८।१४। ०।१२	१०।२३।५२।४६	११।११।५६।२८	३। ५।२७।५८	९।२७।५६।३७	४।१५।२५। २	४।२३।२५।२८	६।२७। ८।५८	७।२६।५५।५५	१।३५	
२३	११। ८।११।५३	८।२८। ८।२४	१०।२४।३९।५१	११।११। ८।२०	३। ५।२७।१९	९।२९। ७।५२	४।१५।२०।४७	४।२३।२२।१७	६।२७। ७।३९	७।२६।५५।५८	२।३०	
२४	११। ९।११।२४	९।१२।३२।४४	१०।२५।२६।५६	११।१०।१७।१८	३। ५।२६।५२	१०। ०।१९।११	४।१५।१६।३४	४।२३।१९। ६	६।२७। ६।१७	७।२६।५५।५८	३।२२	
२५	११।१०।१०।५५	९।२७।१०। ८	१०।२६।१४। १	११। ९।२४।४०	३। ५।२६।३७	१०। १।३०।३०	४।१५।१२।२४	४।२३।१५।५५	६।२७। ४।५२	७।२६।५५।५६	४।११	
२६	११।११।१०।२३	१०।११।५५।५८	१०।२७। १। ४	११। ८।३१।३२	३। ५।२६।३०	१०। २।४१।५०	४।१५। ८।१९	४।२३।१२।४४	६।२७। ३।२४	७।२६।५५।५०	४।५७	
२७	११।१२। ९।४९	१०।२६।४३।५९	१०।२७।४८। ५	११। ७।३९। ०	३। ५।२६।३२	१०। ३।५३।१२	४।१५। ४।१८	४।२३। ९।३३	६।२७। १।५३	७।२६।५५।४४	५।४२	
२८	११।१३। ९।१३	११।११।२७। ८	१०।२८।३५। ६	११। ६।४८। ४	३। ५।२६।४६	१०। ५। ४।४०	४।१५। ०।२३	४।२३। ६।२२	६।२७। ०।२२	७।२६।५५।३९	६।२४	

ग्रहों के उदयास्त

तारीख १९७८ ई.-७९ ई.	ग्रह	दिशा
१५नव. '७८	मं.	प.अ.
१९अप्रै. '७८	बु.	पू.उ.
३ जून	,,	पू.अ.
२५ ,,	,,	प.उ.
११ अग.	,,	प.अ.
२७ ,,	,,	पू.उ.
१५ ,,	,,	पू.अ.
२० अक्तू.	,,	प.उ.
३० नव.	,,	प.अ.
१२ दिस.	,,	पू.उ.
१२जन. '७९	,,	पू.अ.
२५ फर.	,,	प.उ.
१६ मार्च	,,	प.अ.
२८जून '७८	गु.	प.अ.
२२ जुला.	,,	पू.उ.
१ नवं.	शु.	प.अ.
१४ ,,	,,	पू.उ.
९ अग.	श.	प.अ.
१४ सितं.	,,	पू.उ.

ग्रहों के वक्र-मार्ग

तारीख १९७८ ई.-७९ ई.	ग्रह	वक्र मार्ग
२५अप्रै. '७८	बु.	मार्गी
५ अग.	,,	वक्री
२८ ,,	,,	मार्गी
२५ नवं.	,,	वक्री
१५ दिस	,,	मार्गी
१५मार्च '७९	,,	वक्री
२५नव. '७८	गु.	वक्री
२५मार्च '७९	,,	मार्गी
१८अक्तू '७८	यू.	वक्री
२८ नवं.	,,	मार्गी
२५अप्रै. '७८	श.	मार्गी
२४ दिस.	,,	वक्री
२२ जुला.	यू.	मार्गी
२४फर. '७९	,,	वक्री
२७अग. '७८	ने.	मार्गी
२६मार्च '७९	,,	वक्री
२४ जून '७८	वें.	मार्गी
२१जन. '७९	,,	वक्री

ग्रहों की समकल युतियां

तारीख १९७८ ई.-७९ ई.	युत-ग्रह	तारीख १९७८ ई.-७९ ई.	युत-ग्रह
२०जन. '७९	सू.मं.	२१मार्च '७९	मं.के.
११अप्रै. '७८	सू.बु.	११ अक्तू ७८	मं.यूरे.
१४ जून	,,	२६ नवं.	मं.ने.
१९ अग.	,,	२७ अग.	मं.वेंक.
३० सितं.	,,	२५ जून	बु.गु.
७ दिस.	,,	२८ अक्तू.	बु.शु.
९ फर. '७९	,,	२७ जुला.	बु.श.
२४ मार्च	,,	१० अग.	,,
१० जुला ७८	सू.गु.	१३ सितं.	,,
८ नवं.	सू.शु.	२४ सितं.	बु.रा.
२७ अग.	सू.श.	२४फर. '७९	बु.के.
२० सितं.	सू.रा.	२४ अक्तू ७८	बु.यूरे.
९ मार्च ७९	सू.के.	१ जन. '७९	बु.नेप.
१०नवं. '७८	सू.यूरे.	६ अक्तू. '७८	बु.वेंक.
१० दिस.	सू.ने.	३० मई	गु.शु.
११ अक्तू.	सू.वेंक.	१० जुला.	शु.श.
४ नवं.	मं.बु.	७ अग.	शु.रा.
२९ नवं.	,,	२५ सितं.	शु.यूरे.
४ फर. '७९	,,	६ नवं.	,,
१५अग. '७८	मं.शु.	२६ दिसं.	,,
२२ अक्तू.	,,	२५जन. '७९	शु.ने.
५ जून	मं.श.	२२ अग.	शु.वेंक.
३ अग.	मं.रा.	... ...	... ...

चन्द्रमा का यत्र तत्र दृश्य रोहिणी शकट भेद की तारीखें

११ अप्रै. '७८
९ मई
२ जुला.
२९ ,,
२६ अग.
२२ सितं.
१३ दिसं.

ग्रहों का उदयास्त—ग्रहों का उदयास्त दो प्रकार का है—(१) दैनिक (क्षैतिज) उदयास्त, (२) सूर्य कैन्द्रिक उदयास्त। दैनिक उदयास्त भूभ्रमण के कारण होता है। पृथ्वी के अक्ष-भ्रमण के कारण प्रत्येक ग्रह सूर्य चन्द्र के समान प्रतिदिन उदित होकर अस्त होता है। सूर्य-चन्द्र के दैनिक उदयास्त काल इस पंचांग में दिए रहते है, अन्य ग्रहों के दैनिक उदयास्त फलित एवं धार्मिक कृत्यों में निरुपयोगी होने से नहीं दिए जाते। सूर्य के समीप होने से ग्रह कुछ दिनों के लिए अदृश्य (अस्त) हो जाता है, एवं सूर्य से दूर हो जाने पर दृश्य (उदित) हो जाता है—इसको सूर्य कैन्द्रिक उदयास्त कहते हैं। इस पृष्ठ पर दिए गए ग्रहों के उदयास्त सूर्य कैन्द्रिक है।

चन्द्र-दर्शन—स्वगति अनुसार चलता हुआ जब कोई ग्रह सूर्य के निकट आ जाता है, तब वह कुछ सूर्य के तेज में कुछ दिन के लिए अदृश्य हो जाता है, इसी प्रकार चन्द्रमा अमावस्या के लगभग सूर्य के निकट आ जाने के कारण अदृश्य हो जाता है। तदनन्तर वह शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा या द्वितीया को साय पश्चिम क्षितिज से कुछ ऊपर दीखने लगता है। इसे चन्द्र दर्शन कहते हैं। अक्षांश भेद से विभिन्न स्थलों पर चन्द्र दर्शन एक दिन आगे पीछे हो जाता है। आकाशीय वातावरण आदि अनेक कारणों से कई बार चन्द्र दर्शन की तारीख का गणित द्वारा प्रतिज्ञा पूर्वक निश्चय करना कठिन हो जाता है। यहां दिए गए चन्द्र-शृङ्गोन्नति के अंश लगभग हैं इनमें एक अंश तक की स्थूलता कहीं-कहीं सम्भव है।

☛सीमावर्ती अन्य प्रदेशों में २७फरवरी को चन्द्रदर्शन की कम ही सम्भावना है।

(+उत्तर शृङ्ग) अक्षांश भेद से समस्त भारत में चन्द्र दर्शन की तारीखें एवं उन्नत शृङ्ग (सं. २०३५) (—दक्षिण शृङ्ग)

मास→	चैत्र		वैशाख		ज्येष्ठ		आषाढ़		श्रावण		भाद्रपद		आश्विन		कार्तिक		मार्ग.		पौष		माघ		फाल्गु.	
भारतीय अक्षांश ↓	चन्द्र दर्शन ता. १९७८	शृङ्गोन्नति अंश	चन्द्र दर्शन ता. १९७८	शृङ्गोन्नति अंश	चन्द्र दर्शन ता. १९७८	शृङ्गोन्नति अंश	चन्द्र दर्शन ता. १९७८	शृङ्गोन्नति अंश	चन्द्र दर्शन ता. १९७८	शृङ्गोन्नति अंश	चन्द्र दर्शन ता. १९७८	शृङ्गोन्नति अंश	चन्द्र दर्शन ता. १९७८	शृङ्गोन्नति अंश	चन्द्र दर्शन ता. १९७८	शृङ्गोन्नति अंश	चन्द्र दर्शन ता. १९७८	शृङ्गोन्नति अंश	चन्द्र दर्शन ता. १९७८	शृङ्गोन्नति अंश	चन्द्र दर्शन ता. १९७९	शृङ्गोन्नति अंश	चन्द्र दर्शन ता. १९७९	शृङ्गोन्नति अंश
	अप्रैल		मई		जून		जुला.		अग.		सितं.		अक्तू.		नव.		दिसं.		दिसं.		जन.		फर.	
५°	८	—५	८	+५	७	+१७	७	+२३	५	+३०	४	+२७	३	+२०	२	+१२	१	—५	३१	—९	२९	—१६	२७	—१६
१५°	८	+५	८	+१५	७	+२७	७	+३३	५	+४१	४	+३७	३	+३०	२	+२२	१	+५	३१	+२	२९	—५	२७	—६
२५°	८	+१५	८	+२५	७	+३७	७	+४३	६	+४७	४	+४७	३	+४०	२	+३२	१	+१५	३१	+१३	२९	+५	२७	+४
३५°	९	+२२	८	+३६	७	+४७	७	+५३	६	+५७	४	+५७	४	+५३	२	+४२	१	+२६	३१	+२४	२९	+१६	२७	+१४

भारत के केन्द्र स्थल पर ८ अप्रैल को चन्द्र दर्शन की पर्याप्त सम्भावना है। उत्तरी भारत के कुछ भाग में ९अप्रैल को चन्द्र दर्शन होगा।

भारतीय केन्द्र स्थल पर ५ अगस्त को ही चन्द्र दर्शन की सम्भावना है।

उत्तरी पंजाब, हि. प्र., और काश्मीर में चन्द्रदर्शन ४ अक्तूबर को होगा।

२७ फर. को समस्त भारत में चन्द्रदर्शन की पर्याप्त सम्भावना है। बिहार बंगाल तथा भारत के पूर्वी☛

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (सं.२०३५ वि.)

सूर्य चार								मंगल चार				बुध चार			
तारीख सन् १९७८ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९७८ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९७८-७९ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९७९ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९७८ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९७९ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९७८ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९७८ ई.	नक्षत्र चरण राशि
अप्रै. ७	रेव. ३	अग. २	आश्ले. १	नवं. २३	अनु. २	मार्च ८	२	सितं. ५	चित्रा २	फर. ३	श्रव. ३	जून ३	४ वृष	अग. २८	मार्गी २८
१०	४	६	२	२६	३	११	३	१०	३ तुला	७	४	५	रो. १	सितं. ४	मघा १ सिंह
१३	अश्वि.१ मेष	१०	३	२९	४	१४	४ मीन	१५	४	११	धनि. १	७	२	७	२
१७	२	१३	४	दिसं. २	ज्ये. १	१८	उ.भा. १	२०	स्वा. १	१५	२	८	३	१०	३
२०	३	१६	मघा १ सिंह	६	२	२१	२	२५	२	१९	३ कुम्भ	१०	४	१२	४
२४	४	२०	२	९	३	२५	३	३०	३	२४	४	११	मृग. १	१४	पू.फा. १
२७	भर. १	२३	३	१२	४	२८	४	अक्तू. ५	४	२८	शत. १	१३	२	१६	२
मई १	२	२७	४	१५	मूल १ धनु	**मंगल चार**		९	विशा. १	मार्च ४	२	१४	मृग. ३ मिथुन	१८	३
४	३	३०	पू.फा. १	१९	२			१४	२	८	३	१६	मृग. ४	१९	४
८	४	सितं. ३	२	२२	३	अप्रै. ११	पुष्य २	१९	३	१३	४	१७	आर्द्रा १	२१	उ.फा. १
११	कृत्ति. १	६	३	२५	४	'७८ई. २०	३	२४	४ वृश्चि.	१७	पू.भा. १	१९	२	२३	उ.फा २ कन्या
१४	२ वृष	१०	४	२९	पू.षा. १	२८	४	२८	अनु. १	२१	२	२१	३	२५	३
१८	३	१३	उ.फा. १	जन. १	२	मई ६	आश्ले. १	नवं. २	२	२५	३	२२	४	२७	४
२१	४	१६	२ कन्या	'७९ई. ४	३	१३	२	७	३	**बुध चार**		२४	पुन. १	२८	हस्त १
२५	रोहि. १	२०	३	८	४	२०	३	११	४			२६	२	३०	२
२८	२	२३	४	११	उ.षा. १	२६	४	१६	ज्ये. १	अप्रै. ८	व. बुध रेव.	२७	३	अक्तू. २	३
जून १	३	२७	हस्त १	१४	२ मकर	जून २	मघा १ सिंह	२०	२	'७८ई.	४ मीन	२९	पुन. ४ कर्क	४	४
४	४	३०	२	१७	३	८	२	२५	३	१३	व.बु.रेव. ३	जुला. १	पुष्य १	६	चित्रा १
८	मृग. १	अक्तू. ४	३	२१	४	१४	३	२९	४	१८	२	३	२	८	२
१५	३ मिथुन	७	४	२४	श्रव. १	२०	४	दिसं. ४	मूल १ धनु	२५	मार्गी	५	३	१०	चित्रा ३ तुला
१८	४	१०	चित्रा १	२७	२	२६	पू.फा. १	८	२	मई २	रेव. ३	७	४	१२	४
२२	आर्द्रा १	१४	२	३०	३	जुला. ३	२	१३	३	७	४	९	आश्ले. १	१४	स्वा. १
२५	२	१७	३ तुला	फर. ३	४	८	३	१७	४	११	अश्वि. १ मेष	११	२	१६	२
२९	३	२०	४	६	धनि. १	१३	४	२२	पू.षा. १	१४	२	१४	३	१८	३
जुला. २	४	२४	स्वा. १	९	२	१९	उ.फा. १	२६	२	१६	३	१७	४	२१	४
५	पुन. १	२७	२	१२	३ कुम्भ	२५	२ कन्या	३०	३	१८	४	१९	मघा १ सिंह	२३	विशा. १
९	२	३०	३	१६	४	३०	३	जन. ४	४	२१	भर. १	२३	२	२५	२
१३	३	नवं. ३	४	१९	शत. १	अग. ४	४	'७९ई. ८	उ.षा. १	२३	२	२७	३	२७	३
१६	४ कर्क	६	विशा. १	२२	२	१०	हस्त १	१२	२ मकर	२५	३	अग. ५	वक्री	२९	४ वृश्चिक
१९	पुष्य १	९	२	२६	३	१५	२	१६	३	२७	४	१३	व.बु.मघा २	नवं. १	अनु. १
२३	२	१३	३	मार्च १	४	२०	३	२१	४	२९	कृत्ति १	१७	व.बु मघा १	३	२
२६	३	१६	४ वृश्चिक	४	पू.भा. १	२५	४	२५	श्रव. १	३१	२ वृष	२१	व.बु.आश्ले.	६	३
३०	४	१९	अनु. १			३१	चित्रा १	२९	२	जून २	३		४ कर्क	८	४

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (सं.२०३५ वि.)

बुध चार

तारीख सन् १९७८ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९७८ ई.	नक्षत्र चरण राशि
नवं. ११	ज्ये. १	फर. ५	४
१४	२	७	धनि. १
१७	३	९	२
२१	४	११	३ कुम्भ
२५	वक्री	१३	४
२९	व.बुध ज्ये. ३	१४	शत. १
दिसं. ३	व.बुध ज्ये. २	१७	२
५	व.बुध ज्ये. १	१८	३
८	व.बु.अनु. ४	२०	४
११	व.बु.अनु. ३	२२	पू.भा. १
१५	मार्गी	२४	२
२०	अनु. ४	२६	३
२४	ज्ये. १	२७	४ मीन
२७	२	मार्च १	उ.भा. १
३०	३	४	२
[illegible]	४	६	३
७९ई. [illegible]	मूल १ धनु	१०	४
[illegible]	२	१२	वक्री
[illegible]	३	२०	व बु.उ.भा. ३
[illegible]	४	२४	व बु.उ.भा. २
[illegible] पू.षा.	१	२८	व बु.उ.भा. १
[illegible]	२		
[illegible]	३		
[illegible]	४		
२२ उ.षा.	१		
२४	२ मकर		
२६	३		
२८	४		
३० श्रव.	१		
फर. १	२		
३	३		

गुरु चार

तारीख सन् १९७८ ई.	नक्षत्र चरण राशि
जुला. २१	पुन. ३
अग. ५	४ कर्क
२०	पुष्य १
सितं. ६	२
२५	३
अक्तू. १९	४
नवं. २५	वक्री
जन. १	व.गु.पुष्य ३
७९ई. २८	व.गु.पुष्य २
फर. २६	व.गु.पुष्य १
मार्च २५	मार्गी

गुरु चार

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
अप्रै. १३	आर्द्रा १
मई ३	२
२१	३
जून ६	४
२१	पुन. १
जुला. ६	२

शुक्र चार

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
अप्रै. ८	भर. १
७८ई. ११	२
१४	३
१६	४
१९	कृत्ति. १
२२	२ वृष
२४	३
२७	४
३०	रोहि. १
मई ३	२
५	३
८	४
११	मृग. १
१४	२
१६	३ मिथुन
१९	४
२२	आर्द्रा १
२५	२

शुक्र चार

तारीख सन् १९७८ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९७८ ई.	नक्षत्र चरण राशि	तारीख सन् १९७९ ई.	नक्षत्र चरण राशि
मई २८	आर्द्रा ३	अग. २८	चित्रा २	फर. ५	३
३०	४	३१	३ तुल	८	४
जून २	पुन. १	सितं. ४	४	११	पू.षा. १
५	२	७	स्वा. १	१४	२
८	३	११	२	१७	३
११	४ कर्क	१५	३	२०	४
१३	पुष्य १	१९	४	२३	उ.षा. १
१६	२	२४	विशा. १	२६	२ मकर
१९	३	२९	२	मार्च १	३
२२	४	अक्तू. ६	३	४	४
२५	आश्ले. १	१८	वक्री	६	श्रव. १
२८	२	२९	व.शु.विशा २	९	२
३०	३	नवं. ५	व.शु.विशा १	१२	३
जुला. ३	४	१०	व.शु.स्वा. ४	१५	४
६	मघा १ सिंह	१६	व.शु.स्वा. ३	१८	धनि. १
९	२	२८	मार्गी	२१	२
१२	३	दिसं. ११	स्वा. ४	२३	३ कुम्भ
१५	४	१७	विशा. १	२६	४
१८	पू.फा. १	२२	२	२९	शत. १
२१	२	२७	३		
२४	३	३१	४ वृश्चिक		
२७	४	जन. ३	अनु. १		
३०	उ.फा. १	७९ई. ७	२		
अग. २	२ कन्या	११	३		
५	३	१४	४		
८	४	१७	ज्ये. १		
११	हस्त १	२१	२		
१४	२	२४	३		
१८	३	२७	४		
२१	४	३०	१ धनु		
२४	चित्रा १	फर. २	२		

शनि चार

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
७८अप्रै २५	मार्गी
जून २७	मघा २
जुला. २८	३
अग. २४	४
सितं. २०	पू.फा. १
अक्तू. १९	२
दिस. ४	३
२४	वक्री
७९जन १४	व.पू.फा. २
मार्च ५	व.पू.फा. १

राहु चार

तारीख सन् १९७८ ई.	नक्षत्र चरण राशि
७८मई १३	उ.फा. ४
जुला. १५	३
सितं. १५	२
नवं. १७	१ सिंह
७९जन १९	पू.फा. ४
मार्च २३	३

नेपच्यून चार

तारीख सन् १९७८ ई.	नक्षत्र चरण राशि
जून १०	व.ने.ज्ये. २
अग. २७	मार्गी
नवं. ९	ज्ये. ३
फर. २० ७९ई.	ज्ये. ४
मार्च २६	वक्री

केतु चार

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
७८मई १३	उ.भा. २
जुला. १५	उ.भा. ३
सितं. १५	पू.भा. ४
नवं. १७	पू.भा. ३ कु.
७९जन १९	पू.भा. २
मार्च २३	पू.भा. १

प्लूटो चार

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
जून २४ ७८ई.	मार्गी
अक्तू. १७	चित्रा
जन. २१ ७९ई.	वक्री

यूरेनस चार

तारीख	नक्षत्र चरण राशि
७८मई २५	व.स्वा. ४
जुला. २२	मार्गी
सितं. १३	विशा. १
नवं. १२	२
७९जन १४	३
फर. २४	वक्री
मार्च २३	व.विशा. २

यहां दिए गए ग्रहों के राशि-नक्षत्र-चरणों में प्रवेश कालिक तारीखें अंग्रेजी पद्धति के अनुसार ही है। अर्थात् रात्रि के १२ बजे के बाद यदि ग्रह ने राश्यादि बदली है तो उसे अंग्रेज़ी पद्धति के अनुसार आगे की तारीख में ही दर्शाया गया है। भले ही वह काल सूर्योदय से पूर्व का हो।

—दैनिक लग्न सारणी से लग्न ज्ञान—

आगे दी गई दैनिक लग्न सारणी में अंग्रेजी तारीख और प्रविष्टों के अनुसार चण्डीगढ़ (पं.) में निरयण लग्नों का समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) दिया गया है। किसी अंग्रेजी तारीख या प्रविष्टे को कौन सा लग्न कब समाप्त होता है—यह इस सारणी से तुरन्त जाना जा सकता है। कई बार सारणी में दिए गए प्रविष्टे और अंग्रेजी तारीखों में परस्पर एक दिन का अन्तर पाया जाएगा, इस से गणक को भ्रान्ति नहीं होनी चाहिए। अधिक सूक्ष्मता चाहने वाले गणक को इन सारणियों का प्रयोग अंग्रेजी तारीख के अनुसार ही करना चाहिए।

ध्यान रहे—लग्न सारणी में दुहरी लाईन से दाईं ओर छपे घ.मि. अगली अंग्रेजी तारीख के हैं। जैसे १३ अप्रै. के आगे धनु से मीन तक के घं. मि. १४ अप्रै. के हैं।

अयन चलन आदि के कारण दैनिक लग्न सारणी में दिए गए लग्न के समाप्ति कालों में प्रतिवर्ष थोड़ी २ स्थूलता आती जाती है। इस स्थूलता को दूर करने के लिए यहां दाईं ओर एक कोष्ठक (वार्षिक संस्कार कोष्ठक) दिया गया है। अपने अभीष्ट ईस्वी सन् के अनुसार इस कोष्ठक से लिया गया संस्कार दैनिक सारणी के लग्न समाप्ति काल में देने पर लग्न की समाप्ति का काल पर्याप्त सूक्ष्मता से ज्ञात हो जाएगा। इस संस्कार के अनन्तर लग्न के समाप्ति काल में एक मिनट से कम ही स्थूलता रहेगी। इस वार्षिक संस्कार कोष्ठक में लीप इयर दो बार दिया गया है, एक के पहिले‡ ऐसा और दूसरे के पहिले *ऐसा चिह्न लगाया गया है। ‡ इस चिह्न के आगे लिखा संस्कार १ जन. से २८ फर. तक के लिए तथा * इस चिन्ह के आगे लिखा संस्कार २९ फर. से ३१ दिस. तक के लिए है। **२९ फर. के लिए दैनिक लग्न सारणी में २८ फर. को प्रयोग में लाइए।**

यहां वार्षिक संस्कार कोष्ठक द्वारा शुद्ध लग्न समाप्ति काल जानने के उदाहरण देते हैं:—

(i) १३ अप्रैल सन् १९७५ को चण्डीगढ़ में मिथुनलग्न का प्रारम्भ काल, दूसरे शब्दों में वृषलग्न का समाप्ति काल बतलाइए?—दैनिक लग्न सारणी में १३ अप्रै. को वृष का समाप्ति काल ९ घं. ३० मि. लिखा है। "वार्षिक संस्कार कोष्ठक" में सन् १९७५ के आगे वृष के नीचे +२ मिनट लिखा है। अतः ९ घं ३० मि. में २ मि. जोड़ने पर ९ घं. ३२ मि. वृष लग्न का सूक्ष्म समाप्ति काल ज्ञात हो गया।

(ii) सन् १९७२ की १ जन. को चण्डीगढ़ में मकर लग्न कब समाप्त हुआ?—दैनिक लग्न सारणी में १ जन. को मकर का समाप्ति काल ९ घ. ५७ मि. लिखा है। "वार्षिक संस्कार कोष्ठक" में सन् १९७२ दो बार लिखा है। जैसा कि पहिले बतलाया गया है कि ‡ इस चिन्ह वाला संस्कार १ जन. से २८ फर तक के लिए है। ‡इस चिन्ह वाले सन् १९७२ के आगे मकर के नीचे +३ मिनट दिए हैं। इन्हें चिन्हानुसार ९ घ. ५७ मि. में जोड़ने पर १० घं. ० मि. मकर का सूक्ष्म समाप्ति काल हुआ।

(iii) २९ फर. सन् १९७२ को चण्डीगढ़ में कुम्भ लग्न कब समाप्त हुआ?—**दैनिक लग्न सारणी में २९ फर. नहीं है, इसके लिए २८ फर. को प्रयोग में लाएंगे।** २८ फर. के आगे कुम्भ का समाप्ति काल ७ घ. ३४ मि. लिखा है। "वार्षिक संस्कार कोष्ठक" में इस चिन्ह वाले सन् १९७२ के आगे कुम्भ के नीचे −१ मिनट लिखा है। इसे चिन्हानुसार ७ घं. ३४ मि. में से घटाने पर ७ घ. ३३ मि. कुम्भ का सूक्ष्म समाप्तिकाल हुआ।

वार्षिक संस्कार कोष्ठक

ईस्वी सन् ↓	मेष	वृष	मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ मीन	ईस्वी सन् ↓	मेष	वृष	मिथुन कर्क सिंह कन्या तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ मीन
	मि.	मि.	मि.	मि:	मि.	मि.	मि.		मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.
‡ १९५६	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	‡ १९७२	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९५६	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	* १९७२	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
* १९५७	०	०	०	०	०	०	०	१९७३	०	०	०	०	०	०	०
१९५८	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	१९७४	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९५९	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	१९७५	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९६०	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	‡ १९७६	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९६०	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	* १९७६	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९६१	०	०	०	०	०	०	०	१९७७	०	०	०	०	०	०	०
१९६२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	१९७८	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९६३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	१९७९	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९६४	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	‡ १९८०	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९६४	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	* १९८०	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१
१९६५	०	०	०	०	०	०	०	१९८१	०	०	०	०	०	०	०
१९६६	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	१९८२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
१९६७	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	१९८३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
‡ १९६८	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	‡ १९८४	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
* १९६८	−१	−१	−१	−१	−१	−१	−१	* १९८४	−१	−१	०	०	−१	−१	−१
१९६९	०	०	०	०	०	०	०	१९८५	०	०	+१	+१	०	०	०
१९७०	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	१९८६	+१	+१	+२	+२	+१	+१	+१
१९७१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	१९८७	+२	+२	+३	+३	+२	+२	+२

(यह 'वार्षिक संस्कार कोष्ठक' मेरे **"गणकमार्त्तण्ड'** के लग्न प्रकरण में दिए गए एकबड़े कोष्ठक का एक भाग है जिसमें सन्१९००से सन्२२०० तक का सूक्ष्मतम वार्षिक संस्कार दिया गया है। दुनिया के किसी भी नगर में लग्नों का सूक्ष्म समाप्ति काल तुरन्त जानने के लिए **"गणक मार्त्तण्ड"** में एक अद्भुत सारणी दी गई है)।

यह दैनिक लग्न सारिणी चण्डीगढ़ (पं) के लिए है। समस्त पंजाब, हि. प्र., हरियाणा, दिल्ली, जम्मू काश्मीर के किसी भी नगर में लग्नों का लगभग समाप्ति काल जानने के लिए इस सारणी को प्रयोग में लाया जा सकता है। इसी पंचांग में आगे दी गई **'पंचांग परिवर्तन सारणी'** की सहायता से भारत के प्रसिद्ध २४ नगरों में किसी भी दिन किसी भी लग्न का समाप्ति काल पर्याप्त सूक्ष्मता से जाना जा सकता है।

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं०) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा० स्टै० टा०]

	अंग्रेजी तारीख	वैशाख प्रविष्टे	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.
अप्रैल	१३	१	७।३६	९।३०	११।४४	१४। ७	१६।२७	१८।४४	२१। ६	२३।२६	१।३१	३।१२	४।३७	५।५९
	१४	२	७।३२	९।२६	११।४०	१४। ३	१६।२३	१८।४०	२१। २	२३।२२	१।२७	३। ८	४।३३	५।५५
	१५	३	७।२८	९।२२	११।३७	१३।५९	१६।१९	१८।३६	२०।५८	२३।१८	१।२३	३। ४	४।२९	५।५१
	१६	४	७।२४	९।१८	११।३३	१३।५५	१६।१५	१८।३३	२०।५४	२३।१४	१।१९	३। ०	४।२५	५।४७
	१७	५	७।२०	९।१४	११।२९	१३।५१	१६।११	१८।२९	२०।५०	२३।१०	१।१५	२।५६	४।२१	५।४३
	१८	६	७।१६	९।११	११।२५	१३।४७	१६। ७	१८।२५	२०।४६	२३। ६	१।११	२।५२	४।१७	५।३९
	१९	७	७।१२	९। ७	११।२१	१३।४३	१६। ३	१८।२१	२०।४२	२३। २	१। ७	२।४८	४।१३	५।३५
	२०	८	७। ८	९। ३	११।१७	१३।३९	१५।५९	१८।१७	२०।३८	२२।५८	१। ३	२।४४	४। ९	५।३१
	२१	९	७। ४	८।५९	११।१३	१३।३५	१५।५५	१८।१३	२०।३४	२२।५५	०।५९	२।४०	४। ५	५।२८
	२२	१०	७। ०	८।५५	११। ९	१३।३१	१५।५१	१८। ९	२०।३०	२२।५१	०।५५	२।३६	४। १	५।२४
	२३	११	६।५६	८।५१	११। ५	१३।२७	१५।४७	१८। ५	२०।२७	२२।४७	०।५१	२।३२	३।५७	५।२०
	२४	१२	६।५२	८।४७	११। १	१३।२३	१५।४३	१८। १	२०।२३	२२।४३	०।४७	२।२८	३।५३	५।१६
	२५	१३	६।४८	८।४३	१०।५७	१३।१९	१५।३९	१७।५७	२०।१९	२२।३९	०।४३	२।२४	३।४९	५।१२
	२६	१४	६।४४	८।३९	१०।५३	१३।१६	१५।३६	१७।५३	२०।१५	२२।३५	०।३९	२।२०	३।४५	५। ८
	२७	१५	६।४१	८।३५	१०।४९	१३।१२	१५।३२	१७।४९	२०।११	२२।३१	०।३५	२।१६	३।४२	५। ४
	२८	१६	६।३७	८।३१	१०।४५	१३। ८	१५।२८	१७।४५	२०। ७	२२।२७	०।३२	२।१३	३।३८	५। ०
	२९	१७	६।३३	८।२७	१०।४२	१३। ४	१५।२४	१७।४१	२०। ३	२२।२३	०।२८	२। ९	३।३४	४।५६
	३०	१८	६।२९	८।२३	१०।३८	१३। ०	१५।२०	१७।३७	१९।५९	२२।१९	०।२४	२। ५	३।३०	४।५२
मई	१	१९	६।२५	८।१९	१०।३४	१२।५६	१५।१६	१७।३४	१९।५५	२२।१५	०।२०	२। १	३।२६	४।४८
	२	२०	६।२१	८।१६	१०।३०	१२।५२	१५।१२	१७।३०	१९।५१	२२।११	०।१६	१।५७	३।२२	४।४४
	३	२१	६।१७	८।१२	१०।२६	१२।४८	१५। ८	१७।२६	१९।४७	२२। ७	०।१२	१।५३	३।१८	४।४०
	४	२२	६।१३	८। ८	१०।२२	१२।४४	१५। ४	१७।२२	१९।४३	२२। ३	०। ८	१।४९	३।१४	४।३६
	५	२३	६। ९	८। ४	१०।१८	१२।४०	१५। ०	१७।१८	१९।३९	२१।५९	०। ४	१।४५	३।१०	४।३२
	६	२४	६। ५	८। ०	१०।१४	१२।३६	१४।५६	१७।१४	१९।३५	२१।५६	०। ०	१।४१	३। ६	४।२९
	७	२५	६। १	७।५६	१०।१०	१२।३२	१४।५२	१७।१०	१९।३२	२१।५२	२३।५६	१।३७	३। २	४।२५
	८	२६	५।५७	७।५२	१०। ६	१२।२८	१४।४८	१७। ६	१९।२८	२१।४८	२३।५२	१।३३	२।५८	४।२१
	९	२७	५।५३	७।४८	१०। २	१२।२४	१४।४४	१७। २	१९।२४	२१।४४	२३।४८	१।२९	२।५४	४।१७
	१०	२८	५।४९	७।४४	९।५८	१२।२०	१४।४०	१६।५८	१९।२०	२१।४०	२३।४४	१।२५	२।५०	४।१३
	११	२९	५।४६	७।४०	९।५४	१२।१७	१४।३६	१६।५४	१९।१६	२१।३६	२३।४०	१।२१	२।४६	४। ९
	१२	३०	५।४२	७।३६	९।५०	१२।१३	१४।३३	१६।५०	१९।१२	२१।३२	२३।३७	१।१८	२।४३	४। ५
	१३	३१	५।३८	७।३२	९।४६	१२। ९	१४।२९	१६।४६	१९। ८	२१।२८	२३।३३	१।१४	२।३९	४। १
	१४	ज्ये० १	५।३४											

	अंग्रेजी तारीख	ज्येष्ठ प्रविष्टे	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.
मई	१४	१	७।२८	९।४३	१२। ५	१४।२५	१६।४२	१९। ४	२१।२४	२३।२९	१।१०	२।३५	३।५७	५।३०
	१५	२	७।२४	९।३९	१२। १	१४।२१	१६।३८	१९। ०	२१।२०	२३।२५	१। ६	२।३१	३।५३	५।२६
	१६	३	७।२०	९।३५	११।५७	१४।१७	१६।३५	१८।५६	२१।१६	२३।२१	१। २	२।२७	३।४९	५।२२
	१७	४	७।१७	९।३१	११।५३	१४।१३	१६।३१	१८।५२	२१।१२	२३।१७	०।५८	२।२३	३।४५	५।१८
	१८	५	७।१३	९।२७	११।४९	१४। ९	१६।२७	१८।४८	२१। ८	२३।१३	०।५४	२।१९	३।४१	५।१४
	१९	६	७। ९	९।२३	११।४५	१४। ५	१६।२३	१८।४४	२१। ४	२३। ९	०।५०	२।१५	३।३७	५।१०
	२०	७	७। ५	९।१९	११।४१	१४। १	१६।१९	१८।४०	२१। १	२३। ५	०।४६	२।११	३।३४	५। ६
	२१	८	७। १	९।१५	११।३७	१३।५७	१६।१५	१८।३६	२०।५७	२३। १	०।४२	२। ७	३।३०	५। २
	२२	९	६।५७	९।११	११।३३	१३।५३	१६।११	१८।३३	२०।५३	२२।५७	०।३८	२। ३	३।२६	४।५८
	२३	१०	६।५३	९। ७	११।२९	१३।४९	१६। ७	१८।२९	२०।४९	२२।५३	०।३४	१।५९	३।२२	४।५४
	२४	११	६।४९	९। ३	११।२५	१३।४५	१६। ३	१८।२५	२०।४५	२२।४९	०।३०	१।५५	३।१८	४।५०
	२५	१२	६।४५	८।५९	११।२२	१३।४१	१५।५९	१८।२१	२०।४१	२२।४५	०।२६	१।५१	३।१४	४।४७
	२६	१३	६।४१	८।५५	११।१८	१३।३८	१५।५५	१८।१७	२०।३७	२२।४२	०।२२	१।४८	३।१०	४।४३
	२७	१४	६।३७	८।५१	११।१४	१३।३४	१५।५१	१८।१३	२०।३३	२२।३८	०।१९	१।४४	३। ६	४।३९
	२८	१५	६।३३	८।४७	११।१०	१३।३०	१५।४७	१८। ९	२०।२९	२२।३४	०।१५	१।४०	३। २	४।३५
	२९	१६	६।२९	८।४४	११। ६	१३।२६	१५।४३	१८। ५	२०।२५	२२।३०	०।११	१।३६	२।५८	४।३१
	३०	१७	६।२५	८।४०	११। २	१३।२२	१५।४०	१८। १	२०।२१	२२।२६	०। ७	१।३२	२।५४	४।२७
	३१	१८	६।२२	८।३६	१०।५८	१३।१८	१५।३६	१७।५७	२०।१७	२२।२२	०। ३	१।२८	२।५०	४।२३
जून	१	१९	६।१८	८।३२	१०।५४	१३।१४	१५।३२	१७।५३	२०।१३	२२।१८	२३।५९	१।२४	२।४६	४।१९
	२	२०	६।१४	८।२८	१०।५०	१३।१०	१५।२८	१७।४९	२०। ९	२२।१४	२३।५५	१।२०	२।४२	४।१५
	३	२१	६।१०	८।२४	१०।४६	१३। ६	१५।२४	१७।४५	२०। ५	२२।१०	२३।५१	१।१६	२।३८	४।११
	४	२२	६। ६	८।२०	१०।४२	१३। २	१५।२०	१७।४१	२०। २	२२। ६	२३।४७	१।१२	२।३५	४। ७
	५	२३	६। २	८।१६	१०।३८	१२।५८	१५।१६	१७।३७	१९।५८	२२। २	२३।४३	१। ८	२।३१	४। ३
	६	२४	५।५८	८।१२	१०।३४	१२।५४	१५।१२	१७।३४	१९।५४	२१।५८	२३।३९	१। ४	२।२७	३।५९
	७	२५	५।५४	८। ८	१०।३०	१२।५०	१५। ८	१७।३०	१९।५०	२१।५४	२३।३५	१। ०	२।२३	३।५५
	८	२६	५।५०	८। ४	१०।२६	१२।४६	१५। ४	१७।२६	१९।४६	२१।५०	२३।३१	०।५६	२।१९	३।५१
	९	२७	५।४६	८। ०	१०।२३	१२।४३	१५। ०	१७।२२	१९।४२	२१।४६	२३।२७	०।५२	२।१५	३।४८
	१०	२८	५।४२	७।५६	१०।१९	१२।३९	१४।५६	१७।१८	१९।३८	२१।४३	२३।२३	०।४९	२।११	३।४४
	११	२९	५।३८	७।५२	१०।१५	१२।३५	१४।५२	१७।१४	१९।३४	२१।३९	२३।२०	०।४५	२। ७	३।४०
	१२	३०	५।३४	७।४९	१०।११	१२।३१	१४।४८	१७।१०	१९।३०	२१।३५	२३।१६	०।४१	२। ३	३।३६
	१३	३१	५।३०	७।४५	१०। ७	१२।२७	१४।४५	१७। ६	१९।२६	२१।३१	२३।१२	०।३७	१।५९	३।३२
	१४	आ० १	५।२६											

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं०) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा० स्टै० टा०]

आषाढ़

मास	अंग्रेजी तारीख	आषाढ़ प्रविष्टे	मिथुन घं.मि.	कर्क घं.मि.	सिंह घं.मि.	कन्या घं.मि.	तुला घं.मि.	वृश्चिक घं.मि.	धनु घं.मि.	मकर घं.मि.	कुम्भ घं.मि.	मीन घं.मि.	मेष घं.मि.	वृष घं.मि.
जून	१४	१	७।४१	१०।१३	१२।२३	१४।४१	१७। २	१९।२२	२१।२७	२३। ८	०।३३	१।५५	३।२८	५।२३
	१५	२	७।३७	९।५६	१२।१९	१४।३७	१६।५८	१९।१८	२१।२३	२३। ४	०।२९	१।५१	३।२४	५।१९
	१६	३	७।३३	९।५५	१२।१५	१४।३३	१६।५४	१९।१४	२१।१९	२३। ०	०।२५	१।४७	३।२०	५।१५
	१७	४	७।२९	९।५१	१२।११	१४।२९	१६।५०	१९।१०	२१।१५	२२।५६	०।२१	१।४३	३।१६	५।११
	१८	५	७।२५	९।४७	१२। ७	१४।२५	१६।४६	१९। ६	२१।११	२२।५२	०।१७	१।३९	३।१२	५। ७
	१९	६	७।२१	९।४३	१२। ३	१४।२१	१६।४२	१९। २	२१। ७	२२।४८	०।१३	१।३६	३। ८	५। ३
	२०	७	७।१७	९।३९	११।५९	१४।१७	१६।३९	१८।५९	२१। ३	२२।४४	०। ९	१।३२	३। ४	४।५९
	२१	८	७।१३	९।३५	११।५५	१४।१३	१६।३५	१८।५५	२०।५९	२२।४०	०। ५	१।२८	३। ०	४।५५
	२२	९	७। ९	९।३१	११।५१	१४। ९	१६।३१	१८।५१	२०।५५	२२।३६	०। १	१।२४	२।५६	४।५१
	२३	१०	७। ५	९।२७	११।४७	१४। ५	१६।२७	१८।४७	२०।५१	२२।३२	२३।५७	१।२०	२।५३	४।४७
	२४	११	७। १	९।२४	११।४४	१४। १	१६।२३	१८।४३	२०।४८	२२।२८	२३।५४	१।१६	२।४९	४।४३
	२५	१२	६।५७	९।२०	११।४०	१३।५७	१६।१९	१८।३९	२०।४४	२२।२५	२३।५०	१।१२	२।४५	४।३९
	२६	१३	६।५३	९।१६	११।३६	१३।५३	१६।१५	१८।३५	२०।४०	२२।२१	२३।४६	१। ८	२।४१	४।३५
	२७	१४	६।५०	९।१२	११।३२	१३।४९	१६।११	१८।३१	२०।३६	२२।१७	२३।४२	१। ४	२।३७	४।३१
	२८	१५	६।४६	९। ८	११।२८	१३।४६	१६। ७	१८।२७	२०।३२	२२।१३	२३।३८	१। ०	२।३३	४।२७
	२९	१६	६।४२	९। ४	११।२४	१३।४२	१६। ३	१८।२३	२०।२८	२२। ९	२३।३४	०।५६	२।२९	४।२४
	३०	१७	६।३८	९। ०	११।२०	१३।३८	१५।५९	१८।१९	२०।२४	२२। ५	२३।३०	०।५२	२।२५	४।२०
जुलाई	१	१८	६।३४	८।५६	११।१६	१३।३४	१५।५५	१८।१५	२०।२०	२२। १	२३।२६	०।४८	२।२१	४।१६
	२	१९	६।३०	८।५२	११।१२	१३।३०	१५।५१	१८।११	२०।१६	२१।५७	२३।२२	०।४४	२।१७	४।१२
	३	२०	६।२६	८।४८	११। ८	१३।२६	१५।४७	१८। ८	२०।१२	२१।५३	२३।१८	०।४१	२।१३	४। ८
	४	२१	६।२२	८।४४	११। ४	१३।२२	१५।४३	१८। ४	२०। ८	२१।४९	२३।१४	०।३७	२। ९	४। ४
	५	२२	६।१८	८।४०	११। ०	१३।१८	१५।४०	१८। ०	२०। ४	२१।४५	२३।१०	०।३३	२। ५	४। ०
	६	२३	६।१४	८।३६	१०।५६	१३।१४	१५।३६	१७।५६	२०। ०	२१।४१	२३। ६	०।२९	२। १	३।५६
	७	२४	६।१०	८।३२	१०।५२	१३।१०	१५।३२	१७।५२	१९।५६	२१।३७	२३। २	०।२५	१।५७	३।५२
	८	२५	६। ६	८।२९	१०।४९	१३। ६	१५।२८	१७।४८	१९।५२	२१।३३	२२।५८	०।२१	१।५४	३।४८
	९	२६	६। २	८।२५	१०।४५	१३। २	१५।२४	१७।४४	१९।४८	२१।२९	२२।५५	०।१७	१।५०	३।४४
	१०	२७	५।५८	८।२१	१०।४१	१२।५८	१५।२०	१७।४०	१९।४५	२१।२६	२२।५१	०।१३	१।४६	३।४०
	११	२८	५।५५	८।१७	१०।३७	१२।५४	१५।१६	१७।३६	१९।४१	२१।२२	२२।४७	०। ९	१।४२	३।३६
	१२	२९	५।५१	८।१३	१०।३३	१२।५०	१५।१२	१७।३२	१९।३७	२१।१८	२२।४३	०। ५	१।३८	३।३२
	१३	३०	५।४७	८। ९	१०।२९	१२।४७	१५। ८	१७।२८	१९।३३	२१।१४	२२।३९	०। १	१।३४	३।२९
	१४	३१	५।४३	८। ५	१०।२५	१२।४३	१५। ४	१७।२४	१९।२९	२१।१०	२२।३५	२३।५७	१।३०	३।२५
	१५	३२	५।३९	८। १	१०।२१	१२।३९	१५। ०	१७।२०	१९।२५	२१। ६	२२।३१	२३।५३	१।२६	३।२१
	१६	श्रा १	५।३५											

श्रावण

मास	अंग्रेजी तारीख	श्रावण प्रविष्टे	कर्क घं.मि.	सिंह घं.मि.	कन्या घं.मि.	तुला घं.मि.	वृश्चिक घं.मि.	धनु घं.मि.	मकर घं.मि.	कुम्भ घं.मि.	मीन घं.मि.	मेष घं.मि.	वृष घं.मि.	मिथुन घं.मि.
जुलाई	१६	१	७।५७	१०।१७	१२।३५	१४।५६	१७।१६	१९।२१	२१। २	२२।२७	२३।४९	१।२२	३।१७	५।३१
	१७	२	७।५३	१०।१३	१२।३१	१४।५२	१७।१२	१९।१७	२०।५८	२२।२३	२३।४५	१।१८	३।१३	५।२७
	१८	३	७।४९	१०। ९	१२।२७	१४।४८	१७। ९	१९।१३	२०।५४	२२।१९	२३।४१	१।१४	३। ९	५।२३
	१९	४	७।४५	१०। ५	१२।२३	१४।४५	१७। ५	१९। ९	२०।५०	२२।१५	२३।३८	१।१०	३। ५	५।१९
	२०	५	७।४१	१०। १	१२।१९	१४।४१	१७। १	१९। ५	२०।४६	२२।११	२३।३४	१। ६	३। १	५।१५
	२१	६	७।३७	९।५७	१२।१५	१४।३७	१६।५७	१९। १	२०।४२	२२। ७	२३।३०	१। २	२।५७	५।११
	२२	७	७।३३	९।५३	१२।११	१४।३३	१६।५३	१८।५७	२०।३८	२२। ३	२३।२६	०।५८	२।५३	५। ७
	२३	८	७।३०	९।५०	१२। ७	१४।२९	१६।४९	१८।५३	२०।३४	२१।५९	२३।२२	०।५५	२।४९	५। ३
	२४	९	७।२६	९।४६	१२। ३	१४।२५	१६।४५	१८।५०	२०।३०	२१।५६	२३।१८	०।५१	२।४५	४।५९
	२५	१०	७।२२	९।४२	११।५९	१४।२१	१६।४१	१८।४६	२०।२७	२१।५२	२३।१४	०।४७	२।४१	४।५६
	२६	११	७।१८	९।३८	११।५५	१४।१७	१६।३७	१८।४२	२०।२३	२१।४८	२३।१०	०।४३	२।३७	४।५२
	२७	१२	७।१४	९।३४	११।५२	१४।१३	१६।३३	१८।३८	२०।१९	२१।४४	२३। ६	०।३९	२।३३	४।४८
	२८	१३	७।१०	९।३०	११।४८	१४। ९	१६।२९	१८।३४	२०।१५	२१।४०	२३। २	०।३५	२।३०	४।४४
	२९	१४	७। ६	९।२६	११।४४	१४। ५	१६।२५	१८।३०	२०।११	२१।३६	२२।५८	०।३१	२।२६	४।४०
	३०	१५	७। २	९।२२	११।४०	१४। १	१६।२१	१८।२६	२०। ७	२१।३२	२२।५४	०।२७	२।२२	४।३६
	३१	१६	६।५८	९।१८	११।३६	१३।५७	१६।१७	१८।२२	२०। ३	२१।२८	२२।५०	०।२३	२।१८	४।३१
अगस्त	१	१७	६।५४	९।१४	११।३२	१३।५३	१६।१३	१८।१८	१९।५९	२१।२४	२२।४७	०।१९	२।१४	४।२८
	२	१८	६।५०	९।१०	११।२८	१३।४९	१६।१०	१८।१४	१९।५५	२१।२०	२२।४३	०।१५	२।१०	४।२४
	३	१९	६।४६	९। ६	११।२४	१३।४६	१६। ६	१८।१०	१९।५१	२१।१६	२२।३९	०।११	२। ६	४।२०
	४	२०	६।४२	९। २	११।२०	१३।४२	१६। २	१८। ६	१९।४७	२१।१२	२२।३५	०। ७	२। २	४।१६
	५	२१	६।३८	८।५८	११।१६	१३।३८	१५।५८	१८। २	१९।४३	२१। ८	२२।३१	०। ३	१।५८	४।१२
	६	२२	६।३४	८।५४	११।१२	१३।३४	१५।५४	१७।५८	१९।३९	२१। ४	२२।२७	०। ०	१।५४	४। ८
	७	२३	६।३१	८।५१	११। ८	१३।३०	१५।५०	१७।५५	१९।३५	२१। १	२२।२३	२३।५६	१।५०	४। ४
	८	२४	६।२७	८।४७	११। ४	१३।२६	१५।४६	१७।५१	१९।३२	२०।५७	२२।१९	२३।५२	१।४६	४। ०
	९	२५	६।२३	८।४३	११। ०	१३।२२	१५।४२	१७।४७	१९।२८	२०।५३	२२।१५	२३।४८	१।४२	३।५७
	१०	२६	६।१९	८।३९	१०।५६	१३।१८	१५।३८	१७।४३	१९।२४	२०।४९	२२।११	२३।४४	१।३८	३।५३
	११	२७	६।१५	८।३५	१०।५३	१३।१४	१५।३४	१७।३९	१९।२०	२०।४५	२२। ७	२३।४०	१।३४	३।४९
	१२	२८	६।११	८।३१	१०।४९	१३।१०	१५।३०	१७।३५	१९।१६	२०।४१	२२। ३	२३।३६	१।३१	३।४५
	१३	२९	६। ७	८।२७	१०।४५	१३। ६	१५।२६	१७।३१	१९।१२	२०।३७	२१।५९	२३।३२	१।२७	३।४१
	१४	३०	६। ३	८।२३	१०।४१	१३। २	१५।२२	१७।२७	१९। ८	२०।३३	२१।५५	२३।२८	१।२३	३।३७
	१५	३१	५।५९	८।१९	१०।३७	१२।५८	१५।१८	१७।२३	१९। ४	२०।२९	२१।५१	२३।२४	१।१९	३।३३
	१६	भा १	५।५५											

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं०) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा० स्टै० टा०]

भाद्रपद

मास	अंग्रेजी तारीख	भाद्रपद प्रविष्टे	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.
अगस्त	१६	१	८।१५	१०।३३	१२।५४	१५।१५	१७।१९	१९। ०	२०।२५	२१।४८	२३।२०	१।१५	३।२६	५।५१
	१७	२	८।११	१०।२९	१२।५०	१५।११	१७।१५	१८।५६	२०।२१	२१।४४	२३।१६	१।११	३।२५	५।४७
	१८	३	८। ७	१०।२५	१२।४७	१५। ७	१७।११	१८।५२	२०।१७	२१।४०	२३।१२	१। ७	३।२१	५।४३
	१९	४	८। ३	१०।२१	१२।४३	१५। ३	१७। ७	१८।४८	२०।१३	२१।३६	२३। ८	१। ३	३।१७	५।३९
	२०	५	७।५९	१०।१७	१२।३९	१४।५९	१७। ३	१८।४४	२०। ९	२१।३२	२३। ४	०।५९	३।१३	५।३६
	२१	६	७।५६	१०।१३	१२।३५	१४।५५	१६।५९	१८।४०	२०। ५	२१।२८	२३। १	०।५५	३। ९	५।३२
	२२	७	७।५२	१०। ९	१२।३१	१४।५१	१६।५६	१८।३६	२०। २	२१।२४	२२।५७	०।५१	३। ५	५।२८
	२३	८	७।४८	१०। ५	१२।२७	१४।४७	१६।५२	१८।३३	१९।५८	२१।२०	२२।५३	०।४७	३। २	५।२४
	२४	९	७।४४	१०। १	१२।२३	१४।४३	१६।४८	१८।२९	१९।५४	२१।१६	२२।४९	०।४३	२।५८	५।२०
	२५	१०	७।४०	९।५७	१२।१९	१४।३९	१६।४४	१८।२५	१९।५०	२१।१२	२२।४५	०।३९	२।५४	५।१६
	२६	११	७।३६	९।५४	१२।१५	१४।३५	१६।४०	१८।२१	१९।४६	२१। ८	२२।४१	०।३६	२।५०	५।१२
	२७	१२	७।३२	९।५०	१२।११	१४।३१	१६।३६	१८।१७	१९।४२	२१। ४	२२।३७	०।३२	२।४६	५। ८
	२८	१३	७।२८	९।४६	१२। ७	१४।२७	१६।३२	१८।१३	१९।३८	२१। ०	२२।३३	०।२८	२।४२	५। ४
	२९	१४	७।२४	९।४२	१२। ३	१४।२३	१६।२८	१८। ९	१९।३४	२०।५६	२२।२९	०।२४	२।३८	५। ०
	३०	१५	७।२०	९।३८	११।५९	१४।१९	१६।२४	१८। ५	१९।३०	२०।५२	२२।२५	०।२०	२।३४	४।५६
	३१	१६	७।१६	९।३४	११।५५	१४।१६	१६।२०	१८। १	१९।२६	२०।४९	२२।२१	०।१६	२।३०	४।५२
सितम्बर	१	१७	७।१२	९।३०	११।५२	१४।१२	१६।१६	१७।५७	१९।२२	२०।४५	२२।१७	०।१२	२।२६	४।४८
	२	१८	७। ८	९।२६	११।४८	१४। ८	१६।१२	१७।५३	१९।१८	२०।४१	२२।१३	०। ८	२।२२	४।४४
	३	१९	७। ४	९।२२	११।४४	१४। ४	१६। ८	१७।४९	१९।१४	२०।३७	२२। ९	०। ४	२।१८	४।४०
	४	२०	७। ०	९।१८	११।४०	१४। ०	१६। ४	१७।४५	१९।१०	२०।३३	२२। ६	०। ०	२।१४	४।३७
	५	२१	६।५७	९।१४	११।३६	१३।५६	१६। ०	१७।४१	१९। ६	२०।२९	२२। २	२३।५६	२।१०	४।३३
	६	२२	६।५३	९।१०	११।३२	१३।५२	१५।५७	१७।३८	१९। ३	२०।२५	२१।५८	२३।५२	२। ६	४।२९
	७	२३	६।४९	९। ६	११।२८	१३।४८	१५।५३	१७।३४	१८।५९	२०।२१	२१।५४	२३।४८	२। ३	४।२५
	८	२४	६।४५	९। २	११।२४	१३।४४	१५।४९	१७।३०	१८।५५	२०।१७	२१।५०	२३।४४	१।५९	४।२१
	९	२५	६।४१	८।५९	११।२०	१३।४०	१५।४५	१७।२६	१८।५१	२०।१३	२१।४६	२३।४०	१।५५	४।१७
	१०	२६	६।३७	८।५५	११।१६	१३।३६	१५।४१	१७।२२	१८।४७	२०। ९	२१।४२	२३।३७	१।५१	४।१३
	११	२७	६।३३	८।५१	११।१२	१३।३२	१५।३७	१७।१८	१८।४३	२०। ५	२१।३८	२३।३३	१।४७	४। ९
	१२	२८	६।२९	८।४७	११। ८	१३।२८	१५।३३	१७।१४	१८।३९	२०। १	२१।३४	२३।२९	१।४३	४। ५
	१३	२९	६।२५	८।४३	११। ४	१३।२४	१५।२९	१७।१०	१८।३५	१९।५७	२१।३०	२३।२५	१।३९	४। १
	१४	३०	६।२१	८।३९	११। ०	१३।२१	१५।२५	१७। ६	१८।३१	१९।५४	२१।२६	२३।२१	१।३५	३।५७
	१५	३१	६।१७	८।३५	१०।५६	१३।१७	१५।२१	१७। २	१८।२७	१९।५०	२१।२२	२३।१७	१।३१	३।५३
	१६	आ१	६।१३											

आश्विन

मास	अंग्रेजी तारीख	आश्विन प्रविष्टे	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.
सितम्बर	१६	१	८।३१	१०।५३	१३।१३	१५।१७	१६।५८	१८।२३	१९।४६	२१।१८	२३।१३	१।२७	३।४९	६। ९
	१७	२	८।२७	१०।४९	१३। ९	१५।१३	१६।५४	१८।१९	१९।४२	२१।१४	२३। ९	१।२३	३।४५	६। ५
	१८	३	८।२३	१०।४५	१३। ५	१५। ९	१६।५०	१८।१५	१९।३८	२१।१०	२३। ५	१।१९	३।४२	६। १
	१९	४	८।१९	१०।४१	१३। १	१५। ५	१६।४६	१८।११	१९।३४	२१। ७	२३। १	१।१५	३।३८	५।५८
	२०	५	८।१५	१०।३७	१२।५७	१५। २	१६।४२	१८। ८	१९।३०	२१। ३	२२।५७	१।११	३।३४	५।५४
	२१	६	८।११	१०।३३	१२।५३	१४।५८	१६।३९	१८। ४	१९।२६	२०।५९	२२।५३	१। ७	३।३०	५।५०
	२२	७	८। ७	१०।२९	१२।४९	१४।५४	१६।३५	१८। ०	१९।२२	२०।५५	२२।४९	१। ४	३।२६	५।४६
	२३	८	८। ३	१०।२५	१२।४५	१४।५०	१६।३१	१७।५६	१९।१८	२०।५१	२२।४५	१। ०	३।२२	५।४२
	२४	९	८। ०	१०।२१	१२।४१	१४।४६	१६।२७	१७।५२	१९।१४	२०।४७	२२।४१	०।५६	३।१८	५।३८
	२५	१०	७।५६	१०।१७	१२।३७	१४।४२	१६।२३	१७।४८	१९।१०	२०।४३	२२।३८	०।५२	३।१४	५।३४
	२६	११	७।५२	१०।१३	१२।३३	१४।३८	१६।१९	१७।४४	१९। ६	२०।३९	२२।३४	०।४८	३।१०	५।३०
	२७	१२	७।४८	१०। ९	१२।२९	१४।३४	१६।१५	१७।४०	१९। २	२०।३५	२२।३०	०।४४	३। ६	५।२६
	२८	१३	७।४४	१०। ५	१२।२५	१४।३०	१६।११	१७।३६	१८।५८	२०।३१	२२।२६	०।४०	३। २	५।२२
	२९	१४	७।४०	१०। १	१२।२२	१४।२६	१६। ७	१७।३२	१८।५५	२०।२७	२२।२२	०।३६	२।५८	५।१८
	३०	१५	७।३६	९।५७	१२।१८	१४।२२	१६। ३	१७।२८	१८।५१	२०।२३	२२।१८	०।३२	२।५४	५।१४
अक्तूबर	१	१६	७।३२	९।५४	१२।१४	१४।१८	१५।५९	१७।२४	१८।४७	२०।१९	२२।१४	०।२८	२।५०	५।१०
	२	१७	७।२८	९।५०	१२।१०	१४।१४	१५।५५	१७।२०	१८।४३	२०।१५	२२।१०	०।२४	२।४६	५। ६
	३	१८	७।२४	९।४६	१२। ६	१४।१०	१५।५१	१७।१६	१८।३९	२०।११	२२। ६	०।२०	२।४३	५। ३
	४	१९	७।२०	९।४२	१२। २	१४। ६	१५।४७	१७।१२	१८।३५	२०। ८	२२। २	०।१६	२।३९	४।५९
	५	२०	७।१६	९।३८	११।५८	१४। ३	१५।४३	१७। ९	१८।३१	२०। ४	२१।५८	०।१२	२।३५	४।५५
	६	२१	७।१२	९।३४	११।५४	१३।५९	१५।४०	१७। ५	१८।२७	२०। ०	२१।५४	०। ८	२।३१	४।५१
	७	२२	७। ८	९।३०	११।५०	१३।५५	१५।३६	१७। १	१८।२३	१९।५६	२१।५०	०। ५	२।२७	४।४७
	८	२३	७। ५	९।२६	११।४६	१३।५१	१५।३२	१६।५७	१८।१९	१९।५२	२१।४६	०। १	२।२३	४।४३
	९	२४	७। १	९।२२	११।४२	१३।४७	१५।२८	१६।५३	१८।१५	१९।४८	२१।४३	२३।५७	२।१९	४।३९
	१०	२५	६।५७	९।१८	११।३८	१३।४३	१५।२४	१६।४९	१८।११	१९।४४	२१।३९	२३।५३	२।१५	४।३५
	११	२६	६।५३	९।१४	११।३४	१३।३९	१५।२०	१६।४५	१८। ७	१९।४०	२१।३५	२३।४९	२।११	४।३१
	१२	२७	६।४९	९।१०	११।३०	१३।३५	१५।१६	१६।४१	१८। ३	१९।३६	२१।३१	२३।४५	२। ७	४।२७
	१३	२८	६।४५	९। ६	११।२६	१३।३१	१५।१२	१६।३७	१७।५९	१९।३२	२१।२७	२३।४१	२। ३	४।२३
	१४	२९	६।४१	९। २	११।२३	१३।२७	१५। ८	१६।३३	१७।५६	१९।२८	२१।२३	२३।३७	१।५९	४।१९
	१५	३०	६।३७	८।५९	११।१९	१३।२३	१५। ४	१६।२९	१७।५२	१९।२४	२१।१९	२३।३३	१।५५	४।१५
	१६	का१	६।३३											

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं०) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा० स्टै० टा०]

कार्तिक

मास	अंग्रेजी तारीख	कार्तिक प्रविष्टे	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं.मि.	धनु घं.मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि	मीन घं.मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं.मि.	कर्क घं.मि.	सिंह घं.मि.	कन्या घं.मि.
अक्तूबर	१६	१	८।५५	११।१५	१३।१९	१५। ०	१६।२५	१७।४८	१९।२०	२१।१५	२३।२९	१।५१	४।११	६।२९
	१७	२	८।५१	११।११	१३।१५	१४।५६	१६।२१	१७।४४	१९।१६	२१।११	२३।२५	१।४७	४। ७	६।२५
	१८	३	८।४७	११। ७	१३।११	१४।५२	१६।१७	१७।४०	१९।१३	२१। ७	२३।२१	१।४४	४। ४	६।२१
	१९	४	८।४३	११। ३	१३। ८	१४।४८	१६।१४	१७।३६	१९। ९	२१। ३	२३।१७	१।४०	४। ०	६।१७
	२०	५	८।३९	१०।५९	१३। ४	१४।४५	१६।१०	१७।३२	१९। ५	२०।५९	२३।१३	१।३६	३।५६	६।१३
	२१	६	८।३५	१०।५५	१३। ०	१४।४१	१६। ६	१७।२८	१९। १	२०।५५	२३। ९	१।३२	३।५२	६। ९
	२२	७	८।३१	१०।५१	१२।५६	१४।३७	१६। २	१७।२४	१८।५७	२०।५१	२३। ६	१।२८	३।४८	६। ६
	२३	८	८।२७	१०।४७	१२।५२	१४।३३	१५।५८	१७।२०	१८।५३	२०।४७	२३। २	१।२४	३।४४	६। २
	२४	९	८।२३	१०।४३	१२।४८	१४।२९	१५।५४	१७।१६	१८।४९	२०।४४	२२।५८	१।२०	३।४०	५।५८
	२५	१०	८।१९	१०।३९	१२।४४	१४।२५	१५।५०	१७।१२	१८।४५	२०।४०	२२।५४	१।१६	३।३६	५।५४
	२६	११	८।१५	१०।३५	१२।४०	१४।२१	१५।४६	१७। ८	१८।४१	२०।३६	२२।५०	१।१२	३।३२	५।५०
	२७	१२	८।११	१०।३१	१२।३६	१४।१७	१५।४२	१७। ४	१८।३७	२०।३२	२२।४६	१। ८	३।२८	५।४६
	२८	१३	८। ७	१०।२८	१२।३२	१४।१३	१५।३८	१७। १	१८।३३	२०।२८	२२।४२	१। ४	३।२४	५।४२
	२९	१४	८। ३	१०।२४	१२।२८	१४। ९	१५।३४	१६।५७	१८।२९	२०।२४	२२।३८	१। ०	३।२०	५।३८
	३०	१५	८। ०	१०।२०	१२।२४	१४। ५	१५।३०	१६।५३	१८।२५	२०।२०	२२।३४	०।५६	३।१६	५।३४
	३१	१६	७।५६	१०।१६	१२।२०	१४। १	१५।२६	१६।४९	१८।२१	२०।१६	२२।३०	०।५२	३।१२	५।३०
नवम्बर	१	१७	७।५२	१०।१२	१२।१६	१३।५७	१५।२२	१६।४५	१८।१७	२०।१२	२२।२६	०।४८	३। ९	५।२६
	२	१८	७।४८	१०। ८	१२।१३	१३।५३	१५।१८	१६।४१	१८।१३	२०। ८	२२।२२	०।४५	३। ५	५।२२
	३	१९	७।४४	१०। ४	१२। ९	१३।४९	१५।१५	१६।३७	१८। ९	२०। ४	२२।१८	०।४१	३। १	५।१८
	४	२०	७।४०	१०। ०	१२। ५	१३।४६	१५।११	१६।३३	१८। ६	२०। ०	२२।१५	०।३७	२।५७	५।१४
	५	२१	७।३६	९।५६	१२। १	१३।४२	१५। ७	१६।२९	१८। २	१९।५६	२२।११	०।३३	२।५३	५।१०
	६	२२	७।३२	९।५२	११।५७	१३।३८	१५। ३	१६।२५	१७।५८	१९।५२	२२। ७	०।२९	२।४९	५। ७
	७	२३	७।२८	९।४८	११।५३	१३।३४	१४।५९	१६।२१	१७।५४	१९।४९	२२। ३	०।२५	२।४५	५। ३
	८	२४	७।२४	९।४४	११।४९	१३।३०	१४।५५	१६।१७	१७।५०	१९।४५	२१।५९	०।२१	२।४१	४।५९
	९	२५	७।२०	९।४०	११।४५	१३।२६	१४।५१	१६।१३	१७।४६	१९।४१	२१।५५	०।१७	२।३७	४।५५
	१०	२६	७।१६	९।३६	११।४१	१३।२२	१४।४७	१६। ९	१७।४२	१९।३७	२१।५१	०।१३	२।३३	४।५१
	११	२७	७।१२	९।३२	११।३७	१३।१८	१४।४३	१६। ५	१७।३८	१९।३३	२१।४७	०। ९	२।२९	४।४७
	१२	२८	७। ८	९।२९	११।३३	१३।१४	१४।३९	१६। २	१७।३४	१९।२९	२१।४३	०। ५	२।२५	४।४३
	१३	२९	७। ५	९।२५	११।२९	१३।१०	१४।३५	१५।५८	१७।३०	१९।२५	२१।३९	०। १	२।२१	४।३९
	१४	३०	७। १	९।२१	११।२५	१३। ६	१४।३१	१५।५४	१७।२६	१९।२१	२१।३५	२३।५७	२।१७	४।३५
	१५	मा।१	६।५७											

मार्गशीर्ष

मास	अंग्रेजी तारीख	मार्ग. प्रविष्टे	वृश्चिक घं.मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि	कर्क घं. मि.	सिंह घं.मि.	कन्या घं.मि.	तुला घं.मि.
नवम्बर	१५	१	९।१७	११।२१	१३। २	१४।२७	१५।५०	१७।२२	१९।१७	२१।३१	२३।५३	२।१३	४।३१	६।५३
	१६	२	९।१३	११।१७	१२।५८	१४।२३	१५।४६	१७।१८	१९।१३	२१।२७	२३।५०	२।१०	४।२७	६।४९
	१७	३	९। ९	११।१३	१२।५४	१४।१९	१५।४२	१७।१५	१९। ६	२१।२३	२३।४६	२। ६	४।२३	६।४५
	१८	४	९। ५	११।१०	१२।५०	१४।१६	१५।३८	१७।११	१९। ५	२१।१९	२३।४२	२। २	४।१९	६।४१
	१९	५	९। १	११। ६	१२।४७	१४।१२	१५।३४	१७। ७	१९। १	२१।१६	२३।३८	१।५८	४।१५	६।३७
	२०	६	८।५७	११। २	१२।४३	१४। ८	१५।३०	१७। ३	१८।५७	२१।१२	२३।३४	१।५४	४।१२	६।३३
	२१	७	८।५३	१०।५८	१२।३९	१४। ४	१५।२६	१६।५९	१८।५३	२१। ८	२३।३०	१।५०	४। ८	६।२९
	२२	८	८।४९	१०।५४	१२।३५	१४। ०	१५।२२	१६।५५	१८।५०	२१। ४	२३।२६	१।४६	४। ४	६।२५
	२३	९	८।४५	१०।५०	१२।३१	१३।५६	१५।१८	१६।५१	१८।४६	२१। ०	२३।२२	१।४२	४। ०	६।२१
	२४	१०	८।४१	१०।४६	१२।२७	१३।५२	१५।१४	१६।४७	१८।४२	२०।५६	२३।१८	१।३८	३।५६	६।१७
	२५	११	८।३७	१०।४२	१२।२३	१३।४८	१५।१०	१६।४३	१८।३८	२०।५२	२३।१४	१।३४	३।५२	६।१३
	२६	१२	८।३३	१०।३८	१२।१९	१३।४४	१५। ७	१६।३९	१८।३४	२०।४८	२३।१०	१।३०	३।४८	६। ९
	२७	१३	८।३०	१०।३४	१२।१५	१३।४०	१५। ३	१६।३५	१८।३०	२०।४४	२३। ६	१।२६	३।४४	६। ६
	२८	१४	८।२६	१०।३०	१२।११	१३।३६	१४।५९	१६।३१	१८।२६	२०।४०	२३। २	१।२२	३।४०	६। २
	२९	१५	८।२२	१०।२६	१२। ७	१३।३२	१४।५५	१६।२७	१८।२२	२०।३६	२२।५८	१।१८	३।३६	५।५८
	३०	१६	८।१८	१०।२२	१२। ३	१३।२८	१४।५१	१६।२३	१८।१८	२०।३२	२२।५४	१।१४	३।३२	५।५४
दिसम्बर	१	१७	।१४	१०।१८	११।५९	१३।२४	१४।४७	१६।२०	१८।१४	२०।२८	२२।५१	१।११	३।२८	५।५०
	२	१८	८।१०	१०।१५	११।५५	१३।२१	१४।४३	१६।१६	१८।१०	२०।२४	२२।४७	१। ७	३।२४	५।४६
	३	१९	८। ६	१०।११	११।५२	१३।१७	१४।३९	१६।१२	१८। ६	२०।२०	२२।४३	१। ३	३।२०	५।४२
	४	२०	८। २	१०। ७	११।४८	१३।१३	१४।३५	१६। ८	१८। २	२०।१७	२२।३९	०।५९	३।१६	५।३८
	५	२१	७।५८	१०। ३	११।४४	१३। ९	१४।३१	१६। ४	१७।५८	२०।१३	२२।३५	०।५५	३।१३	५।३४
	६	२२	७।५४	९।५९	११।४०	१३। ५	१४।२७	१६। ०	१७।५४	२०। ९	२२।३१	०।५१	३। ९	५।३०
	७	२३	७।५०	९।५५	११।३६	१३। १	१४।२३	१५।५६	१७।५१	२०। ५	२२।२७	०।४७	३। ५	५।२६
	८	२४	७।४६	९।५१	११।३२	१२।५७	१४।१९	१५।५२	१७।४७	२०। १	२२।२३	०।४३	३। १	५।२२
	९	२५	७।४२	९।४७	११।२८	१२।५३	१४।१५	१५।४८	१७।४३	१९।५७	२२।१९	०।३९	२।५७	५।१८
	१०	२६	७।३८	९।४३	११।२४	१२।४९	१४।११	१५।४४	१७।३९	१९।५३	२२।१५	०।३५	२।५३	५।१४
	११	२७	७।३५	९।३९	११।२०	१२।४५	१४। ८	१५।४०	१७।३५	१९।४९	२२।११	०।३१	२।४९	५।१०
	१२	२८	७।३१	९।३५	११।१६	१२।४१	१४। ४	१५।३६	१७।३१	१९।४५	२२। ७	०।२७	२।४५	५। ७
	१३	२९	७।२७	९।३१	११।१२	१२।३७	१४। ०	१५।३२	१७।२७	१९।४१	२२। ३	०।२३	२।४१	५। ३
	१४	३०	७।२३	९।२७	११। ८	१२।३३	१३।५६	१५।२८	१७।२३	१९।३७	२१।५९	०।१९	२।३७	४।५९
	१५	पौ.१	७।१९											

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं०) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा० स्टै० टा०]

पौष

मास	अंग्रेजी तारीख	पौष प्रविष्टे	धनु घं.मि.	मकर घं.मि.	कुम्भ घं.मि.	मीन घं.मि.	मेष घं.मि.	वृष घं.मि.	मिथुन घं.मि.	कर्क घं.मि.	सिंह घं.मि.	कन्या घं.मि.	तुला घं.मि.	वृश्चिक घं.मि.
दिसम्बर	१५	१	९।२३	११। ४	१२।२९	१३।५२	१४।२४	१७।१९	१९।३३	२१।५६	०।१६	२।३३	४।५५	७।१५
	१६	२	९।१९	११। ०	१२।२५	१३।४८	१४।२१	१७।१५	१९।२९	२१।५२	०।१२	२।२९	४।५१	७।११
	१७	३	९।१६	१०।५६	१२।२२	१३।४४	१४।१७	१७।११	१९।२५	२१।४८	०। ८	२।२५	४।४७	७। ७
	१८	४	९।१२	१०।५३	१२।१८	१३।४०	१४।१३	१७। ७	१९।२२	२१।४४	०। ४	२।२१	४।४३	७। ३
	१९	५	९। ८	१०।४९	१२।१४	१३।३६	१४। ९	१७। ३	१९।१८	२१।४०	०। ०	२।१७	४।३९	६।५९
	२०	६	९। ४	१०।४५	१२।१०	१३।३२	१४। ५	१६।५९	१९।१४	२१।३६	२३।५६	२।१४	४।३५	६।५५
	२१	७	९। ०	१०।४१	१२। ६	१३।२८	१४। १	१६।५६	१९।१०	२१।३२	२३।५२	२।१०	४।३१	६।५१
	२२	८	८।५६	१०।३७	१२। २	१३।२४	१४।५७	१६।५२	१९। ६	२१।२८	२३।४८	२। ६	४।२७	६।४७
	२३	९	८।५२	१०।३३	११।५८	१३।२०	१४।५३	१६।४८	१९। २	२१।२४	२३।४४	२। २	४।२३	६।४३
	२४	१०	८।४८	१०।२९	११।५४	१३।१६	१४।४९	१६।४४	१८।५८	२१।२०	२३।४०	१।५८	४।१९	६।३९
	२५	११	८।४४	१०।२५	११।५०	१३।१२	१४।४५	१६।४०	१८।५४	२१।१६	२३।३६	१।५४	४।१५	६।३६
	२६	१२	८।४०	१०।२१	११।४६	१३। ९	१४।४१	१६।३६	१८।५०	२१।१२	२३।३२	१।५०	४।१२	६।३२
	२७	१३	८।३६	१०।१७	११।४२	१३। ५	१४।३७	१६।३२	१८।४६	२१। ८	२३।२८	१।४६	४। ८	६।२८
	२८	१४	८।३२	१०।१३	११।३८	१३। १	१४।३३	१६।२८	१८।४२	२१। ४	२३।२४	१।४२	४। ४	६।२४
	२९	१५	८।२८	१०। ९	११।३४	१२।५७	१४।२९	१६।२४	१८।३८	२१। ०	२३।२०	१।३८	४। ०	६।२०
	३०	१६	८।२४	१०। ५	११।३०	१२।५३	१४।२६	१६।२०	१८।३४	२०।५७	२३।१७	१।३४	३।५६	६।१६
	३१	१७	८।२०	१०। १	११।२६	१२।४९	१४।२२	१६।१६	१८।३०	२०।५३	२३।१३	१।३०	३।५२	६।१२
जनवरी	१	१८	८।१६	९।५७	११।२२	१२।४४	१४।१७	१६।११	१८।२५	२०।४८	२३। ८	१।२५	३।४७	६। ७
	२	१९	८।१२	९।५३	११।१८	१२।४०	१४।१३	१६। ७	१८।२२	२०।४४	२३। ४	१।२१	३।४३	६। ३
	३	२०	८। ८	९।४९	११।१४	१२।३६	१४। ९	१६। ३	१८।१८	२०।४०	२३। ०	१।१७	३।३९	५।५९
	४	२१	८। ४	९।४५	११।१०	१२।३२	१४। ५	१५।५९	१८।१४	२०।३६	२२।५६	१।१४	३।३५	५।५५
	५	२२	८। ०	९।४१	११। ६	१२।२८	१४। १	१५।५६	१८।१०	२०।३२	२२।५२	१।१०	३।३१	५।५१
	६	२३	७।५६	९।३७	११। २	१२।२४	१३।५७	१५।५२	१८। ६	२०।२८	२२।४८	१। ६	३।२७	५।४७
	७	२४	७।५२	९।३३	१०।५८	१२।२०	१३।५३	१५।४८	१८। २	२०।२४	२२।४४	१। २	३।२३	५।४३
	८	२५	७।४८	९।२९	१०।५४	१२।१६	१३।४९	१५।४४	१७।५८	२०।२०	२२।४०	०।५८	३।१९	५।३९
	९	२६	७।४४	९।२५	१०।५०	१२।१३	१३।४५	१५।४०	१७।५४	२०।१६	२२।३६	०।५४	३।१५	५।३६
	१०	२७	७।४०	९।२१	१०।४६	१२। ९	१३।४१	१५।३६	१७।५०	२०।१२	२२।३२	०।५०	३।१२	५।३२
	११	२८	७।३६	९।१७	१०।४२	१२। ५	१३।३७	१५।३२	१७।४६	२०। ८	२२।२८	०।४६	३। ८	५।२८
	१२	२९	७।३२	९।१३	१०।३८	१२। १	१३।३३	१५।२८	१७।४२	२०। ४	२२।२४	०।४२	३। ४	५।२४
	१३	मा१	७।२८											

माघ

मास	अंग्रेजी तारीख	माघ प्रविष्टे	मकर घं.मि.	कुम्भ घं.मि.	मीन घं.मि.	मेष घं.मि.	वृष घं.मि.	मिथुन घं.मि.	कर्क घं.मि.	सिंह घं.मि.	कन्या घं.मि.	तुला घं.मि.	वृश्चिक घं.मि.	धनु घं.मि.
जनवरी	१३	१	९। ९	१०।३४	११।५७	१३।२९	१५।२४	१७।३८	२०। ०	२२।२०	०।३८	३। ०	५।२०	७।२४
	१४	२	९। ५	१०।३०	११।५३	१३।२६	१५।२०	१७।३४	१९।५७	२२।१७	०।३४	२।५६	५।१६	७।२०
	१५	३	९। १	१०।२७	११।४९	१३।२२	१५।१६	१७।३०	१९।५३	२२।१३	०।३०	२।५२	५।१२	७।१७
	१६	४	८।५८	१०।२३	११।४५	१३।१८	१५।१२	१७।२६	१९।४९	२२। ९	०।२६	२।४८	५। ८	७।१३
	१७	५	८।५४	१०।१९	११।४१	१३।१४	१५। ८	१७।२३	१९।४५	२२। ५	०।२२	२।४४	५। ४	७। ९
	१८	६	८।५०	१०।१५	११।३७	१३।१०	१५। ४	१७।१९	१९।४१	२२। १	०।१९	२।४०	५। ०	७। ५
	१९	७	८।४६	१०।११	११।३३	१३। ६	१५। १	१७।१५	१९।३७	२१।५७	०।१५	२।३६	४।५६	७। १
	२०	८	८।४२	१०। ७	११।२९	१३। २	१४।५७	१७।११	१९।३३	२१।५३	०।११	२।३२	४।५२	६।५७
	२१	९	८।३८	१०। ३	११।२५	१२।५८	१४।५३	१७। ७	१९।२९	२१।४९	०। ७	२।२८	४।४८	६।५३
	२२	१०	८।३४	९।५९	११।२१	१२।५४	१४।४९	१७। ३	१९।२५	२१।४५	०। ३	२।२४	४।४४	६।४९
	२३	११	८।३०	९।५५	११।१७	१२।५०	१४।४५	१६।५९	१९।२१	२१।४१	२३।५९	२।२०	४।४१	६।४५
	२४	१२	८।२६	९।५१	११।१४	१२।४६	१४।४१	१६।५५	१९।१७	२१।३७	२३।५५	२।१६	४।३७	६।४१
	२५	१३	८।२२	९।४७	११।१०	१२।४२	१४।३७	१६।५१	१९।१३	२१।३३	२३।५१	२।१३	४।३३	६।३७
	२६	१४	८।१८	९।४३	११। ६	१२।३८	१४।३३	१६।४७	१९। ९	२१।२९	२३।४७	२। ९	४।२९	६।३३
	२७	१५	८।१४	९।३९	११। २	१२।३४	१४।२९	१६।४३	१९। ५	२१।२५	२३।४३	२। ५	४।२५	६।२९
	२८	१६	८।१०	९।३५	१०।५८	१२।३०	१४।२५	१६।३९	१९। २	२१।२२	२३।३९	२। १	४।२१	६।२५
	२९	१७	८। ६	९।३१	१०।५४	१२।२७	१४।२१	१६।३५	१८।५८	२१।१८	२३।३५	१।५७	४।१७	६।२२
	३०	१८	८। २	९।२८	१०।५०	१२।२३	१४।१७	१६।३१	१८।५४	२१।१४	२३।३१	१।५३	४।१३	६।१८
	३१	१९	७।५९	९।२४	१०।४६	१२।१९	१४।१३	१६।२८	१८।५०	२१।१०	२३।२७	१।४९	४। ९	६।१४
फरवरी	१	२०	७।५५	९।२०	१०।४२	१२।१५	१४। ९	१६।२४	१८।४६	२१। ६	२३।२३	१।४५	४। ५	६।१०
	२	२१	७।५१	९।१६	१०।३८	१२।११	१४। ५	१६।२०	१८।४२	२१। २	२३।२०	१।४१	४। १	६। ६
	३	२२	७।४७	९।१२	१०।३४	१२। ७	१४। २	१६।१६	१८।३८	२०।५८	२३।१६	१।३७	३।५७	६। २
	४	२३	७।४३	९। ८	१०।३०	१२। ३	१३।५८	१६।१२	१८।३४	२०।५४	२३।१२	१।३३	३।५३	५।५८
	५	२४	७।३९	९। ४	१०।२६	११।५९	१३।५४	१६। ८	१८।३०	२०।५०	२३। ८	१।२९	३।४९	५।५४
	६	२५	७।३५	९। ०	१०।२२	११।५५	१३।५०	१६। ४	१८।२६	२०।४६	२३। ४	१।२५	३।४५	५।५०
	७	२६	७।३१	८।५६	१०।१९	११।५१	१३।४६	१६। ०	१८।२२	२०।४२	२३। ०	१।२१	३।४२	५।४६
	८	२७	७।२७	८।५२	१०।१५	११।४७	१३।४२	१५।५६	१८।१८	२०।३८	२२।५६	१।१७	३।३८	५।४२
	९	२८	७।२३	८।४८	१०।११	११।४३	१३।३८	१५।५२	१८।१४	२०।३४	२२।५२	१।१४	३।३४	५।३८
	१०	२९	७।१९	८।४४	१०। ७	११।३९	१३।३४	१५।४८	१८।१०	२०।३०	२२।४८	१।१०	३।३०	५।३४
	११	३०	७।१५	८।४०	१०। ३	११।३५	१३।३०	१५।४४	१८। ६	२०।२६	२२।४४	१। ६	३।२६	५।३०
	१२	फा.१	७।११											

दैनिक लग्न सारणी, चण्डीगढ़ (पं०) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा० स्टै० टा०]

फाल्गुन

अंग्रेजी तारीख		फाल्गुन प्रविष्टे	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
फरवरी	१२	१	८।३६	९।५९	११।३२	१३।२६	१५।४०	१८।३	२०।२३	२२।४०	१।२	३।२२	५।२६	७।७
	१३	२	८।३३	९।५५	११।२८	१३।२२	१५।३६	१७।५९	२०।१९	२२।३६	०।५८	३।१८	५।२३	७।४
	१४	३	८।२९	९।५१	११।२४	१३।१८	१५।३२	१७।५५	२०।१५	२२।३२	०।५४	३।१४	५।१९	७।०
	१५	४	८।२५	९।४७	११।२०	१३।१४	१५।२९	१७।५१	२०।११	२२।२८	०।५०	३।१०	५।१५	६।५६
	१६	५	८।२१	९।४३	११।१६	१३।१०	१५।२५	१७।४७	२०।७	२२।२५	०।४६	३।६	५।११	६।५२
	१७	६	८।१७	९।३९	११।१२	१३।६	१५।२१	१७।४३	२०।३	२२।२१	०।४२	३।२	५।७	६।४८
	१८	७	८।१३	९।३५	११।८	१३।३	१५।१७	१७।३९	१९।५९	२२।१७	०।३८	२।५८	५।३	६।४४
	१९	८	८।९	९।३१	११।४	१२।५९	१५।१३	१७।३५	१९।५५	२२।१३	०।३४	२।५४	४।५९	६।४०
	२०	९	८।५	९।२७	११।०	१२।५५	१५।९	१७।३१	१९।५१	२२।९	०।३०	२।५०	४।५५	६।३६
	२१	१०	८।१	९।२३	१०।५६	१२।५१	१५।५	१७।२७	१९।४७	२२।५	०।२६	२।४६	४।५१	६।३२
	२२	११	७।५७	९।२०	१०।५२	१२।४७	१५।१	१७।२३	१९।४३	२२।१	०।२२	२।४३	४।४७	६।२८
	२३	१२	७।५३	९।१६	१०।४८	१२।४३	१४।५७	१७।१९	१९।३९	२१।५७	०।१९	२।३९	४।४३	६।२४
	२४	१३	७।४९	९।१२	१०।४४	१२।३९	१४।५३	१७।१५	१९।३५	२१।५३	०।१५	२।३५	४।३९	६।२०
	२५	१४	७।४५	९।८	१०।४०	१२।३५	१४।४९	१७।११	१९।३१	२१।४९	०।११	२।३१	४।३५	६।१६
	२६	१५	७।४१	९।४	१०।३६	१२।३१	१४।४५	१७।७	१९।२७	२१।४५	०।७	२।२७	४।३१	६।१२
	२७	१६	७।३७	९।०	१०।३३	१२।२७	१४।४१	१७।४	१९।२४	२१।४१	०।३	२।२३	४।२८	६।८
	२८	१७	७।३४	८।५६	१०।२९	१२।२३	१४।३७	१७।०	१९।२०	२१।३७	२३।५९	२।१९	४।२४	६।५
मार्च	१	१८	७।३०	८।५२	१०।२५	१२।१९	१४।३३	१६।५६	१९।१६	२१।३३	२३।५५	२।१५	४।२०	६।१
	२	१९	७।२६	८।४८	१०।२१	१२।१५	१४।३०	१६।५२	१९।१२	२१।२९	२३।५१	२।११	४।१६	५।५७
	३	२०	७।२२	८।४४	१०।१७	१२।११	१४।२६	१६।४८	१९।८	२१।२६	२३।४७	२।७	४।१२	५।५३
	४	२१	७।१८	८।४०	१०।१३	१२।८	१४।२२	१६।४४	१९।४	२१।२२	२३।४३	२।३	४।८	५।४९
	५	२२	७।१४	८।३६	१०।९	१२।४	१४।१८	१६।४०	१९।०	२१।१८	२३।३९	१।५९	४।४	५।४५
	६	२३	७।१०	८।३२	१०।५	१२।०	१४।१४	१६।३६	१८।५६	२१।१४	२३।३५	१।५५	४।०	५।४१
	७	२४	७।६	८।२८	१०।१	११।५६	१४।१०	१६।३२	१८।५२	२१।१०	२३।३१	१।५१	३।५६	५।३७
	८	२५	७।२	८।२४	९।५७	११।५२	१४।६	१६।२८	१८।४८	२१।६	२३।२७	१।४८	३।५२	५।३३
	९	२६	६।५८	८।२१	९।५३	११।४८	१४।२	१६।२४	१८।४४	२१।२	२३।२४	१।४४	३।४८	५।२९
	१०	२७	६।५४	८।१७	९।४९	११।४४	१३।५८	१६।२०	१८।४०	२०।५८	२३।२०	१।४०	३।४४	५।२५
	११	२८	६।५०	८।१३	९।४५	११।४०	१३।५४	१६।१६	१८।३६	२०।५४	२३।१६	१।३६	३।४०	५।२१
	१२	२९	६।४६	८।९	९।४१	११।३६	१३।५०	१६।१२	१८।३२	२०।५०	२३।१२	१।३२	३।३६	५।१७
	१३	३०	६।४२	८।५	९।३८	११।३२	१३।४६	१६।९	१८।२९	२०।४६	२३।८	१।२८	३।३२	५।१३
	१४	चै. १	६।३८											

चैत्र

अंग्रेजी तारीख		चैत्र प्रविष्टे	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
मार्च	१४	१	८।१	९।३४	११।२८	१३।४२	१६।५	१८।२५	२०।४२	२३।४	१।२४	३।२९	५।९	६।३५
	१५	२	७।५७	९।३०	११।२४	१३।३८	१६।१	१८।२१	२०।३८	२३।०	१।२०	३।२५	५।६	६।३१
	१६	३	७।५३	९।२६	११।२०	१३।३५	१५।५७	१८।१७	२०।३४	२२।५६	१।१६	३।२१	५।२	६।२७
	१७	४	७।४९	९।२२	११।१६	१३।३१	१५।५३	१८।१३	२०।३०	२२।५२	१।१२	३।१७	४।५८	६।२३
	१८	५	७।४५	९।१८	११।१२	१३।२७	१५।४९	१८।९	२०।२७	२२।४८	१।८	३।१३	४।५४	६।१९
	१९	६	७।४१	९।१४	११।९	१३।२३	१५।४५	१८।५	२०।२३	२२।४४	१।४	३।९	४।५०	६।१५
	२०	७	७।३७	९।१०	११।५	१३।१९	१५।४१	१८।१	२०।१९	२२।४०	१।०	३।५	४।४६	६।११
	२१	८	७।३३	९।६	११।१	१३।१५	१५।३७	१७।५७	२०।१५	२२।३६	०।५६	३।१	४।४२	६।७
	२२	९	७।२९	९।२	१०।५७	१३।११	१५।३३	१७।५३	२०।११	२२।३२	०।५२	२।५७	४।३८	६।३
	२३	१०	७।२५	८।५८	१०।५३	१३।७	१५।२९	१७।४९	२०।७	२२।२८	०।४९	२।५३	४।३४	५।५९
	२४	११	७।२२	८।५४	१०।४९	१३।३	१५।२५	१७।४५	२०।३	२२।२५	०।४५	२।४९	४।३०	५।५५
	२५	१२	७।१८	८।५०	१०।४५	१२।५९	१५।२१	१७।४१	१९।५९	२२।२१	०।४१	२।४५	४।२६	५।५१
	२६	१३	७।१४	८।४६	१०।४१	१२।५५	१५।१७	१७।३७	१९।५५	२२।१७	०।३७	२।४१	४।२२	५।४७
	२७	१४	७।१०	८।४२	१०।३७	१२।५१	१५।१३	१७।३३	१९।५१	२२।१३	०।३३	२।३७	४।१८	५।४३
	२८	१५	७।६	८।३८	१०।३३	१२।४७	१५।१०	१७।३०	१९।४७	२२।९	०।२९	२।३३	४।१४	५।३९
	२९	१६	७।२	८।३५	१०।२९	१२।४३	१५।६	१७।२६	१९।४३	२२।५	०।२५	२।३०	४।१०	५।३६
	३०	१७	६।५८	८।३१	१०।२५	१२।३९	१५।२	१७।२२	१९।४०	२२।१	०।२१	२।२६	४।७	५।३२
	३१	१८	६।५४	८।२७	१०।२१	१२।३६	१४।५८	१७।१८	१९।३६	२१।५७	०।१७	२।२२	४।३	५।२८
अप्रैल	१	१९	६।५०	८।२३	१०।१७	१२।३२	१४।५४	१७।१४	१९।३२	२१।५३	०।१३	२।१८	३।५९	५।२४
	२	२०	६।४६	८।१९	१०।१३	१२।२८	१४।५०	१७।१०	१९।२८	२१।४९	०।९	२।१४	३।५५	५।२०
	३	२१	६।४२	८।१५	१०।१०	१२।२४	१४।४६	१७।६	१९।२४	२१।४५	०।५	२।१०	३।५१	५।१६
	४	२२	६।३८	८।११	१०।६	१२।२०	१४।४२	१७।२	१९।२०	२१।४१	०।१	२।६	३।४७	५।१२
	५	२३	६।३४	८।७	१०।२	१२।१६	१४।३८	१६।५८	१९।१६	२१।३७	२३।५७	२।२	३।४३	५।८
	६	२४	६।३०	८।३	९।५८	१२।१२	१४।३४	१६।५४	१९।१२	२१।३३	२३।५३	१।५८	३।३९	५।४
	७	२५	६।२७	७।५९	९।५४	१२।८	१४।३०	१६।५०	१९।८	२१।२९	२३।५०	१।५४	३।३५	५।०
	८	२६	६।२३	७।५५	९।५०	१२।४	१४।२६	१६।४६	१९।४	२१।२६	२३।४६	१।५०	३।३१	४।५६
	९	२७	६।१९	७।५१	९।४६	१२।०	१४।२२	१६।४२	१९।०	२१।२२	२३।४२	१।४६	३।२७	४।५२
	१०	२८	६।१५	७।४७	९।४२	११।५६	१४।१८	१६।३८	१८।५६	२१।१८	२३।३८	१।४२	३।२३	४।४८
	११	२९	६।११	७।४३	९।३८	११।५२	१४।१४	१६।३४	१८।५२	२१।१४	२३।३४	१।३८	३।१९	४।४४
	१२	३०	६।७	७।४०	९।३४	११।४८	१४।११	१६।३१	१८।४८	२१।१०	२३।३०	१।३५	३।१५	४।४१
	१३	वै. १	६।३											

अक्षांशादि सारिणी

भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	मि. स.		अं. क.	अं. क.	मि. से.		अं. क.	अं. क.	मि. से.
अकोला (म. रा.)	२०।४२	७७। २	—२१।५२	कुमारी अन्तरीप	८। ५	७७।३४	—१९।४४	झालरापाटन	२४।३२	१६।१२	—२५।१२
अजमेर	२६।२७	७४।४२	—३१।१२	कुम्भकोणम्	१०।५८	७९।२५	—१२।२०	झांसी	२५।२७	१८।३७	—१५।३२
अगरतला	२३।४९	९१।१७	+३५।०८	कोटा (राज.)	२५।१०	७५।५२	—२६।३२	झालावाड़	२४।३६	७४। ९	—३३।२४
अमृतसर	३१।३७	७४।४८	—३०।४८	कोहिमा	२५।४१	९४। ७	+४६।२८	ट्रावनकोर	९। ०	७७। ०	—२२। ०
अम्बाला	३०।२१	७६।५२	—२२।३२	कोल्हापुर	१६।४२	७४।१६	—३२।५६	टोंक (राज.)	२६।११	७५।५०	—२६।४०
अयोध्या	२६।४८	८२।१४	— १। ४	कोचीन बंदर	९।५८	७६।१७	—२४।५२	डिबाई	२८।१२	७८।१५	—१७। ०
अलमोड़ा	२९।३७	७९।४०	—११।२०	खभात	२२।१९	७२।३६	—३९।३६	डूंगरपुर (राज.)	२३।५०	७३।४३	—३५। ८
अलवर	२७।३४	७६।३८	—२३।२८	गया	२४।४९	८५। १	+१०। ४	डिब्रूगढ़	२७।२९	९४।५६	—४९।४४
अहमदनगर	१९। ५	७४।४८	—३०।४८	गंगटोक	२७।२०	८८।४०	+२४।४०	त्रिवेन्द्रम्	८।३०	७६।५७	—२२।१२
अहमदाबाद	२३। २	७२।३८	—३९।२८	ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	—१७।२०	तलागंग	३२।५६	७२।२८	—४०। ८
अलीगढ़ (यू. पी.)	२७।५४	७८। ९	—१७।३६	गाजीपुर (यू. पी.)	२५।३४	८३।३५	+ ४।२०	त्रिचनापल्ली	१०।५०	७८।४६	—१४।५६
आगरा (,,)	२७।१०	७८। ५	—१७।४०	गिलगित	३५।५५	७४।२२	—३२।३२	दरभंगा	२६।१०	८५।५७	+१३।४८
आजमगढ़ (,,)	२६। ५	८३।१२	+ २।४८	गोंडा (उ. प्र.)	२७।१०	८१।५७	— २।१२	द्वारिका	२२।१४	६९। १	—५३।५६
आबू	२४।४०	७२।४५	—३९। ०	गोहाटी	२६।११	९१।४५	+३७। ०	दार्जिलिंग	२७। ३	८८।१८	+२३।१२
इटावा	२६।४७	७९। २	—१३।५२	गुरदासपुर	३२। ३	७५।२७	—२८।१२	दिल्ली	२८।३८	७७।१२	—२१।१२
इन्दौर	२२।४४	७५।५०	—२६।४०	गोरखपुर	२६।४५	८३।२४	+ ३।३६	देहरादून	३०।१९	७८। ४	—१७।४४
उज्जैन	२३। ९	७५।४३	—२७। ८	गोवा	१५।३०	७३।५७	—३४।१२	धौलपुर	२६।४२	७७।५३	—१८।२८
उदयपुर (मेवाड़)	२४।३५	७३।४२	—३५।१२	चम्बा	३२।२९	७६।१०	—२५।२०	नडियाद (गुज.)	२२।४१	७२।५५	—३८।२०
एलिचपुर (म. रा)	२१।१८	७७।३३	—१९।४८	चण्डीगढ़	३०।४४	७६।५२	—२२।३२	नसीराबाद (राज.)	२६।१८	७४।४६	—३०।५६
औरङ्गाबाद (हैद.)	१९।५३	७५।२३	—२८।२८	चीरापुञ्जी	२५।१७	९१।४७	+३७।८	नागपुर	२१। ९	७९। ९	—१३।२४
कठूआ (कश्मीर)	३२।१७	७५।३६	—२७।३६	छतरपुर	२४।५४	७९।३८	—११।२८	नाभा	३०।२५	७६। ९	—२५।२४
कपूरथला	३१।२३	७५।२५	—२८।२०	छपरा (बिहार)	२५।४७	८४।४१	+ ८।४४	नाथद्वारा	२४।५६	७३।५२	—३४।३२
करनाल	२९।४२	७७। २	—२१।५२	जलपाइगुड़ी	२६।३२	८८।४६	+२५। ४	नासिक	२०। २	७३।५०	—३४।४०
कटक	२०।२८	८५।५४	+१३।३६	जम्मू	३२।४४	७४।५४	—३०।२४	नैनीताल	२९।२३	७९।३०	—१२। ०
कलकत्ता	२२।३४	८८।२४	+२३।३६	जब्बलपुर	२३।१०	७९।५९	—१०। ४	पटना (बिहार)	२५।३७	८५।१३	+१०।५२
कोडकनाल	१०।१३	७७।२८	—२०।०८	जयपुर	२६।५५	७५।५२	—२६।३२	पटियाला	३०।२०	७६।२५	—२४।२०
कानपुर	२६।२७	८०।२४	— ८।२४	जालन्धर	३१।१९	७५।३४	—२७।४४	पठानकोट	३२।१७	७५।४२	—२७।१२
कटनी (म. प्र.)	२३।५०	८०।२३	— ८।२८	जामनगर	२२।२७	७०। ७	—४९।३२	प्रयागराज	२५।२८	८१।५४	— २।२४
काशी	२५।२०	८३। ०	+ २। ०	जीन्द	२९।१९	७६।२३	—२४।२८	पाण्डीचेरी	११।५६	७९।५३	—१०।२८
कांगड़ा	३२। ५	७६।१८	—२४।४८	जूनागढ़	२१।३१	७०।३६	—४७।३६	पुञ्छ (का.)	३३।५१	७४। ८	—३३।२८
कांकरोली	२५। २	७३।५४	—३४।२४	जैसलमेर	२६।५५	७०।५७	—४६।१२	पूना	१८।३०	७३।५३	—३५।२८
कुरुक्षेत्र	३०। ०	७६।४८	—२२।४८	जोधपुर	२६।१८	७३। ४	—३७।४४	पोर्टब्लेअर (अण्ड.)	११।४०	९२।४६	+४१। ४
जहाँगीराबाद	२८।२४	७८।५६		जोनपुर	२५।४६	८२।४४	+ ०।५६				

जहाँगीराबाद २८।२४

अक्षांशादि सारिणी — भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि

नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर	नगर	अक्षांश उत्तर	रेखांश पूर्व	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अ. क.	अ. क.	मि. से.		अ. क.	अ. क.	मि. से.
पजिम	१५।२९	७३।४६	—३४।४४	रतलाम	२३।२०	७५। ७	—२९।३२
पोरबन्दर	२१।३७	६९।४६	—५०।४४	रत्नगिरि	१७। ८	७३।१९	—३६।४४
फर्रुखाबाद	२७।२४	७९।३७	—११।३२	रामेश्वरम्	९।१७	७९।२२	—१२।३२
फरीदकोट	३०।४०	७४।४५	—३१।००	रायबरेली	२६।१५	८१।१६	— ४।५६
फिरोजपुर	३०।५५	७४।४०	—३१।२०	राजमहेन्द्री (आंध्र)	१७। ५	८१।४८	— २।४८
बड़ौदा	२२।२०	७३।१०	—३६। ०	रिवाड़ी	२८।१२	७६।४०	—२३।२०
बम्बई	१८। ०	७२।५४	—३८।२४	रीवां	२४।३१	८१।१९	— ४।४४
बरेली	२८।२२	७९।२७	—१२।१२	रायपुर (म. प्र.)	२१।१५	८१।४१	— ३।१६
बद्रीनाथ	३०।४४	७९।३२	—११।५२	राजकोट	२२।१८	७०।५६	—४६।१६
बर्दवान	२३।१६	८७।५२	+२१।२८	रोहतक	२८।५४	७६।३८	—२३।२८
बुलन्दशहर	२८।२४	७७।५४	—१८।२४	रोपड (पंजाब)	३०।५७	७६।३०	—२४।००
बिलासपुर (म. प्र)	२२। ५	८२।१३	— १। ८	लखनऊ	२६।५५	८०।५९	— ६। ४
बीकानेर	२८। १	७३।२२	—३६।३२	लश्कर	२६।११	७८। ८	—१७।२८
बीजापुर	१६।५०	७५।४७	—२६।५२	लाचेन (सिक्किम)	२७।४४	८८।३४	+२४।१६
बंगलौर	१२।५८	७७।३८	—१९।२८	लोहारु	२८।२६	७५।४७	—२६।५२
भटिण्डा	३०।११	७५। ०	—३०। ०	लुधियाना	३०।५५	७५।५४	—२६।२४
भरतपुर	२७।१५	७७।३०	—२०। ०	शिलांग	२५।३४	९१।५४	+३७।३६
भागलपुर	२५।१४	८६।५६	+१७।५६	शिमला	३१। ६	७७।१३	—२१। ८
भोपाल	२३।१६	७७।२३	—२०।२८	श्रीनगर (का.)	३४। ६	७४।५१	—३०।३६
भुज	२३।१६	६९।४८	—५०।४८	सवाई माधोपुर	२६। ०	७६।३०	—२४।००
मद्रास	१३। ४	८०।१७	— ८।५२	सहारनपुर	२९।५८	७७।२३	—२०।२८
मथुरा	२७।२४	७७।४१	—१९।१६	सिकन्दराबाद	१७।२७	७८।३३	—१५।४८
मालेरकोटला	३०।३१	७५।५६	—२६। ४	सतारा (बम्बई)	१७।४२	७४। २	—३३।५२
मन्दसौर	२४। ४	७५। ५	—२९।४०	सागर (म. प्र.)	२३।५०	७८।४५	—१५। ०
मछलीपट्टण	१६।०९	८१।०८	— ५।२८	सूरत	२१।१२	७२।५२	—३८।३२
मिर्जापुर	२५।१०	८२।३३	+ ०।१२	सोलन (हि. प्र)	३०।५५	७७। ९	—२१।२४
मुजफ्फरपुर (बि.)	२६। ७	८५।२७	+११।४८	हरिद्वार	२९।५८	७८।१३	—१७। ८
मणिपुर (स्टेट)	२४।४४	९३।५८	+४५।५२	हिसार	२९।१०	७५।४६	—२६।५६
मुरादाबाद	२८।५१	७८।४९	—१४।४४	हाथरस	२७।३६	७८। ६	—१७।३६
मेरठ	२९। १	७७।४५	—१९। ०	हैदराबाद (द.)	१७।२०	७८।३०	—१६। ०
मैसूर (स्टेट)	१२।१८	७६।४२	—२३।१२	होशियारपुर	३१।३२	७५।५७	—२६।१२
मण्डी (हि. प्र.)	३१।४३	७६।५८	—२२। ८	होशंगाबाद (म. प्र.)	२२।४६	७७।४५	—१९। ०
रांची	२३।२०	८५।२०	+११।२०				

कुछ विदेशीय नगरों के अक्षांशादि

नगर देश	अक्षांश	रेखांश	भारतीय स्टै. टा. से देशीय स्टै. टा. का अन्तर	स्टैण्डर्ड अन्तर
	अं. क.	अं. क.	घ. मि.	मि. से.
काबुल (अफगा.)	उ.३४।३३	पू. ६९।१२	— १। ०	+ ६।४८
कन्दहार	उ.३१।३७	पू. ६५।३०	— १। ०	— ८। ०
बैंगकाक (स्याम)	उ.१३।४२	पू. १००।३०	+ १।३०	—१८। ०
इस्तंबूल (टर्की)	उ.१४। ०	पू. २६। ०	— ३।३०	— ४। ०
बगदाद (इराक)	उ.३३।२०	पू. ४४।२७	— २।३०	— २।१२
मक्का (अरब)	उ.२१।२५	पू. ३९।५४	— २।३०	—२०।२४
तेहरान (ईरान)	उ.३५।४१	पू. ५१।२५	— २। ०	— ४।२०
काहिरा (मिस्र)	उ.३०। २	पू. ३१।१५	— ३।३०	+ ५। ०
जेनेवा(स्विट्जर पू.	उ.४६।१३	पू. ६। ७	— ४।३०	—३५।३२
जेरुशलम (इजरा.)	उ.३१।४६	पू. ३५।१४	— ३।३०	+२०।५६
न्यूयार्क (अमेरिका)	उ.४०।४३	प. ७४। ०	—१०।३०	+ ४।००
वाशिंगटन ,,	उ.३८।५५	प. ७७। ४	—१०।३०	— ८।१६
बर्लिन (पू. जर्मनी)	उ.५२।३२	पू. १३।२५	— ४।३०	— ६।२०
बुडापेस्ट (हंगरी)	उ.४७।२९	पू. १९। ३	— ४।३०	+१६।१२
लन्दन (इंगलैण्ड)	उ.५१।३०	प. ०। ५	— ५।३०	— ०।२०
ग्रीनविच ॥	उ.५१।३०	०। ०	— ५।३०	— ०।०
लिस्बन (पुर्तगाल)	उ.३८।४४	पू. ६। ६	— ५।३०	—३६।३६
नरोबी (केन्या)	द. १।१८	पू. ३६।५२	— २।३०	—३७।३२
मोम्बासा ,,	द. ४। ०	पू. ३९।४०	— २।३०	—२१।२०
म्वांजा (टांगानिका)	द. २।३५	पू. ३२।५६	— २।३०	—४८।१६
मोशी ,,	द, ३।२१	पू. ३७।२०	— २।३०	—३०।४०
टोकियो (जापान)	उ.३५।४०	पू.१३९।३२	+ ३।३०	+ १८। ८
पेरिस (फ्रांस)	उ.४८।५०	पू. २।२०	— ४।३०	—५०।४०
मास्को (रूस)	उ.५५।५५	पू. ३७।३७	— २।३०	—२९।३२
रोम इटली।	उ.४१।५५	पू. १२।२८	— ४।३०	—१०। ८
हांगकांग (चीन)	उ.२२।१२	पू.११४।१०	+ २।३०	—२३।२०
पीकिंग ,,	उ.३९।५५	पू.११६।२४	+ २।३०	—१४।२४

विश्व के सभी नगरों के अक्षांश आदि जानने के लिए हमारा 'गणक मार्तण्ड' देखें, जिसमें विश्व के लगभग सात हजार नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैण्डर्ड अन्तर दिए गए है।

लग्न सारणी (अक्षांश २९ उत्तर)

(पलभा ६।३९।६)

अंश→		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	[illegible]
वृष १	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७
मिथुन २	घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
	प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३७	४८	०
कर्क ३	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८
सिंह ४	घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
	प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	[illegible]
कन्या ५	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४
तुला ६	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
	प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	३
वृश्चिक ७	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
	प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८
धनु ८	घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
	प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१
मकर ९	घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
	प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३
कुम्भ १०	घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
	प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६
मीन ११	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०

दिल्ली, मेरठ, रोहतक, हिसार, जीन्द, नैनीताल, मुरादाबाद आदि के लिए।

लग्न सारणी (अक्षांश ३० उत्तर)

(पलभा ६।५५।४२)

अंश→		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
	प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१
वृष १	घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
	प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६
मिथुन २	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
	प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०
कर्क ३	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
	प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२
सिंह ४	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
	प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१
कन्या ५	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८
तुला ६	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
	प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०
वृश्चिक ७	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
	प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८
धनु ८	घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
	प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०
मकर ९	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९
कुम्भ १०	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८
मीन ११	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७

अम्बाला, करनाल, कुरुक्षेत्र, देहरादून, नाभा, पटियाला, भटिण्डा, जैसलमेर, अलमोड़ा, सहारनपुर

लग्न सारणी (अक्षांश ३१ उत्तर)

(पलभा ७।१२।३७)

अंश→		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
०	प.	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२७	३५
वृष	घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१	प.	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२	प.	२१	३१	४१	५१	१	१०	२०	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६
कर्क	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३	प.	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३८	५०
सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४	प.	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५	प.	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२
तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६	प.	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६
वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
७	प.	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५
धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८	प.	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९	प.	२६	३६	४६	५६	६	१५	२५	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	३३	४१
कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१०	प.	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	८	१५
मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११	प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३४	४१

कपूरथला, चण्डीगढ़, जालन्धर, फरीदकोट, फिरोजपुर, रोपड, लुधियाना, शिमला आदि के लिए

दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अंश→		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष	घ.	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
०	प.	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृष	घ.	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
१	प.	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
मिथुन	घ.	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
२	प.	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
कर्क	घ.	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३	प.	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
सिंह	घ.	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
४	प.	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
कन्या	घ.	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
५	प.	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८
तुला	घ.	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
६	प.	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृश्चिक	घ.	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
७	प.	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
धनु	घ.	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
८	प.	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
मकर	घ.	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९	प.	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
कुम्भ	घ.	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१०	प.	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
११	प.	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८

—:लग्न एवं तिथ्यादि के समाप्ति-काल तथा सूर्य-चन्द्रोदयास्त के परिवर्तन की पद्धति:—

इस पञ्चाङ्ग में दी गई दैनिक लग्न सारिणी, सूर्य चन्द्र के उदयास्त एवं तिथ्यादि
के समाप्ति काल चण्डीगढ़ एवं रोपड़ (पंजाब) तथा इनके निकटवर्ती स्थानों के लिए
है। इन पर से भारत के समय २४ नगरों के लग्न समाप्ति काल, तिथ्यादि समाप्ति काल
तथा सूर्य चन्द्र के उदयास्त ज्ञात करने के लिए आगे दो पृष्ठों पर ''पञ्चाङ्ग परिवर्तन
सारिणी'' दी गई है। इस सारिणी के आधार पर इन २४ नगरों में किसी भी दिन
किसी भी लग्न की समाप्ति-काल तिथ्यादि समाप्ति काल एवं सूर्य चन्द्र के उदयास्त
काल, अत्यन्त सरलता पूर्वक बिना किसी प्रकार की गणित के ज्ञात किए जा सकते हैं।
विधियां नीचे दी जा रही हैं—

लग्न समाप्ति काल के परिवर्तन की विधि:—'पञ्चाङ्ग परिवर्तन सारिणी'
में अभीष्ट नगर के नीचे एवं अभीष्ट लग्न (जो सारिणी के बाईं ओर सर्व प्रथम
कालम में है) के आगे लिखे मिनटों को दैनिक लग्न सारिणी में दिए गए अभीष्ट
प्रविष्टे (या तारीख) को अभीष्ट लग्न के समाप्ति काल में चिह्नानुसार जोड़ने से
अभीष्ट नगर में अभीष्ट प्रविष्टे (तारीख) को अभीष्ट लग्न का समाप्ति काल प्राप्त
होगा। जैसे—१ वैशाख (१३ अप्रै.) को कलकत्ता में सिंह लग्न का समाप्ति काल
जानना है। पञ्चाङ्ग परिवर्तन सारिणी में कलकत्ता के नीचे एवं सिंह लग्न के आगे—
४५ मिनट प्राप्त हुए। इन्हें ''दैनिक लग्न सारिणी'' में १ वैशाख को दिए गए सिंह के
समाप्ति काल १६ घट्टा २७ मिनट में से घटाने पर कलकत्ता में इस दिन सिंह लग्न का
समाप्ति काल १५ घंटा ४२ मिनट निकल आया।

सूर्योदयास्त के परिवर्तन की विधि:—अभीष्ट तारीख का सूर्योदय और
तात्कालिक (सूर्योदय-कालिक) सूर्य-क्रान्ति इस पञ्चाङ्ग से ज्ञात करें। तदनन्तर
''पञ्चाङ्ग परिवर्तन सारिणी'' में अभीष्ट नगर के नीचे एवं सूर्योदयकालिक दक्षिण या
उत्तर क्रान्ति (जो सारिणी के बाईं ओर दूसरे कालम में दी गई है) के आगे दिए गए मिनटों
को इस पञ्चाङ्ग में दिए गए चण्डीगढ़ सूर्योदय में चिह्नानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट
तारीख को अभीष्ट नगर से सूर्योदय काल ज्ञात होगा। जैसे बम्बई में १० मई को सूर्योदय
काल ज्ञात करना है—इस पञ्चाङ्ग में १० मई को सूर्योदय ५ घं० ३५ मि० लिखा
है। इस समय सूर्यक्रान्ति + १७ अंश (उत्तर क्रान्ति १७ अंश) है। सारिणी में उदय
कालिक उत्तर क्रान्ति १७ अंश के आगे बम्बई के नीचे + ३३ मिनट प्राप्त हुए। इन्हें ५ घं०
३५ मि० में जोड़ने पर इस दिन बम्बई में सूर्योदय काल ६ घं० ८ मि० प्राप्त हुआ।
इसी प्रकार सूर्यास्तकालिक सूर्य की क्रान्ति से अभीष्ट तारीख को अभीष्ट नगर में
सूर्यास्त काल जाना जा सकता है। सूर्यास्तकाल जानने के लिए सारिणी का प्रयोग
करते समय क्रान्ति के अंश सारिणी के दाईं ओर अन्तिम कालम में देखने चाहिए।
जैसे—बम्बई में १० मई को सूर्यास्त ज्ञात करना है। इस पञ्चाङ्ग में इस दिन सूर्यास्त
काल ७ घं० ३ मि० लिखा है। इस समय सूर्य क्रान्ति + १८ अंश (उत्तर क्रान्ति १८ अंश)
है। सारिणी में अस्तकालिक उत्तर क्रान्ति १८ अंश (जो सारिणी के दाईं ओर अन्तिम
कालम में दिए गए हैं) के बाईं ओर बम्बई के नीचे—३ मिनट लिखे हैं। इन्हें इस
पञ्चाङ्ग से उपलब्ध सूर्यास्त काल ७ घं० ३ मि० में से घटाने पर १० मई को बम्बई
में सूर्यास्त काल ७ घं. ० मि. आया।

चन्द्रोदयास्त के परिवर्तन की विधि—सूर्योदयास्त के परिवर्तन की तरह
चन्द्रोदयास्त भी चन्द्रक्रान्ति के आधार पर परिवर्तित किए जा सकते हैं। यहां भी
सूर्योदयास्त के परिवर्तन की भांति चन्द्रोदय परिवर्तन के लिए उदयकालिक चन्द्रक्रान्ति
को सारिणी के बाईं और दूसरे कालम में एवं चन्द्रास्त परिवर्तन के लिए अस्तकालिक
चन्द्रक्रान्ति को सारिणी के दाईं ओर अन्तिम कालम में देखें।

जैसे—२४ मार्च १९७३ को मद्रास में चन्द्रोदय ज्ञात करना है। सं० २०२९ के
पञ्चाङ्ग में चण्डीगढ़ में चन्द्रोदय २३ घं. ४९ मि. लिखा है। इसी समय चन्द्र क्रान्ति—
२५ अं. (दक्षिण क्रान्ति २५) है। सारिणी में मद्रास के नीचे एवं उदय-कालिक दक्षिण-
क्रान्ति २५ के आगे—५३ मि. लिखा है। इस पञ्चाङ्ग में दिये चन्द्रोदय २३ घं. ४९
मि. में से ५३ मि. घटाने पर २२ घं. ५६ मि. मद्रास में २४ मार्च १९७३ को चन्द्रोदय
काल हुआ। चन्द्रास्तकाल-परिवर्तन का उदाहरण भी लीजिए—१६ मार्च १९७२ को
इस वर्ष के पञ्चाङ्ग में चन्द्रास्त १९ घं. ४५ मि. लिखा है। इस समय चन्द्रक्रान्ति + ९
(उत्तर क्रान्ति ९ अंश) है। सारिणी में मद्रास के नीचे अस्तकालिक उत्तर-क्रान्ति ९ के
आगे—२७ मि. लिखा है। चण्डीगढ़ के इस दिन के चन्द्रास्त १९ घं. ४२ मि. में से २७
मि. घटाने पर १९ घं १५ मि. (भा. स्टै टा.) १६ मार्च १९७२ को मद्रास में चन्द्रास्त
का समय प्राप्त हुआ।

तिथ्यादि समाप्ति काल के परिवर्तन की विधि:—जिस दिन तिथि, नक्षत्र
योग के समाप्ति काल को अभीष्ट नगरीय बनाना हो उस दिन की सूर्योदय कालिक सूर्य
क्रान्ति ज्ञात करो। तदनन्तर सारिणी में अभीष्ट नगर के नीचे एवं सूर्योदय कालिक सूर्य
क्रान्ति के आगे दिए गए मिनटों को घडी पल बनाकर चिह्न के विपरीत तिथ्यादि के
समाप्ति काल में जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगरीय तिथ्यादि समाप्ति काल प्राप्त होवे।

नोट—इस पञ्चाङ्ग में सूर्य चन्द्र की दैनिक क्रान्ति दैनिक स्पष्ट ग्रहों के बाद
दी गई है। क्रान्ति के साथ दिया गया + यह चिह्न उत्तर कान्ति एवं – यह चिन्ह
दक्षिण क्रान्ति को बतलाता है। इस पञ्चांग में दी गई क्रान्तियां ५ घं ३० मि. प्रात:
की है। इन्हें उदयकालिक या अस्तकालिक बनाने के लिए जबानी ही अनुपात बड़ी
सरलता से किया जा सकता है।

स्थूल चन्द्रोदयास्त जानने की विधि—तिथिप्रमाणेन हतं निशायां: प्रमाणमाणं
च युतं भुजाभ्याम्। कृष्णे सिते यास्तिथि भक्तनाड्यश्चन्द्रोदये चास्तमये च ता: स्यु:॥१॥
भावार्थ—जिस तिथि का चन्द्रोदयास्त मालूम करना हो उस तिथि की संख्या से उस दिन
के रात्रिमान की घट्यादि को गुणे. शुक्लपक्ष की तिथि हो तो उन में से घटी २ जोड़ना.
यदि कृष्ण पक्ष की हो तो गुणन की हुई अंक संख्या में से दो घटी निकाल देना. तदनन्तर
उनमें १५ का भाग देकर दो फल घटीपलात्मक लाना। यदि शुक्लपक्ष की तिथि हो तो
लब्ध घट्यादि के समय सूर्यास्त के अनन्तर चंद्रास्त होगा। यदि कृष्णपक्ष हो तो लब्ध
पलात्मक फल को दिनमान में [illegible] करने से जो घट्यादि होवे, उतनी घटी सूर्योदय के

पञ्चाङ्ग परिवर्तन सारिणी (भाग १ म)

लग्न एवं तिथ्यादि के समाप्तिकाल तथा चन्द्रोदयास्त के परिवर्तन के लिए

लग्न	उदय कालिक दक्षिण क्रान्ति	अमृतसर	उज्जैन	उदयपुर	कलकत्ता	काशी	कांगड़ा	कुरुक्षेत्र	ग्वालियर	जम्मू	जयपुर	दिल्ली	नागपुर	पटना	पटियाला	पठानकोट	प्रयाग	बम्बई	मण्डी (हि. प्र.)	मद्रास	रोहतक	शिमला	श्रीनगर (का.)	हरिद्वार	हिसार	अस्त कालिक उत्तर क्रान्ति
	अं.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	अं.
	०	+८	+५	+१३	−४६	−२५	+२	+१	−५	+८	+४	−१	−९	−३३	+२	+५	−२०	+१६	०	−१४	+१	−१	+८	−५	+४	०
	१	८	४	१२	४७	२५	२	०	६	८	४	२	१०	३४	२	५	२१	१५	०	१५	१	१	८	५	४	१
कुम्भ	२	८	३	१२	४७	२५	३	०	६	८	३	२	११	३४	२	५	२१	१४	०	१७	+१	१	९	६	४	२
	३	८	३	११	४८	२६	३	०	६	८	३	२	१२	३५	२	५	२१	१३	०	१८	०	१	९	६	४	३
	४	९	२	१०	४९	२६	३	०	७	९	३	२	१२	३५	२	५	२२	१२	०	१९	०	१	९	६	४	४
	५	९	१	१०	५०	२७	३	०	७	९	२	२	१३	३६	२	५	२२	११	०	२१	०	१	१०	६	४	५
	६	९	+१	९	५०	२७	३	०	८	९	२	२	१४	३६	२	६	२३	१०	०	२२	०	१	१०	६	४	६
	७	९	०	९	५१	२८	३	०	८	९	२	२	१५	३७	२	६	२३	९	०	२४	०	१	१०	६	३	७
	८	९	−१	८	५२	२८	३	०	९	९	१	३	१६	३७	२	६	२४	८	०	२५	०	१	११	६	३	८
कन्या	९	९	१	८	५३	२९	३	०	९	१०	१	३	१७	३८	२	६	२४	७	०	२७	०	१	११	६	३	९
	१०	९	२	७	५३	२९	४	०	९	१०	+१	३	१८	३८	२	६	२५	६	०	२८	−१	१	११	६	३	१०
	११	९	३	७	५४	३०	४	०	१०	१०	०	३	१८	३८	२	६	२५	५	+१	३०	१	१	१२	६	३	११
	१२	९	३	६	५५	३०	४	०	१०	१०	०	४	१९	३९	२	६	२६	४	१	३१	१	१	१२	६	३	१२
मकर	१३	९	४	५	५६	३१	४	०	११	११	०	४	२०	३९	२	७	२६	३	१	३३	१	१	१२	६	३	१३
	१४	९	५	५	५६	३१	४	०	११	११	−१	४	२१	४०	२	७	२७	+२	१	३४	१	१	१३	६	२	१४
	१५	१०	५	४	५७	३२	४	०	११	११	१	४	२२	४०	२	७	२७	०	१	३६	१	१	१३	६	२	१५
	१६	१०	६	४	५८	३२	४	०	१२	११	२	४	२३	४१	२	७	२८	−१	१	३८	२	१	१४	६	२	१६
	१७	१०	७	३	५९	३३	५	−१	१२	११	२	५	२४	४१	२	७	२८	२	१	३९	२	१	१४	६	२	१७
	१८	१०	८	२	६०	३४	५	१	१३	१२	२	५	२५	४२	१	८	२९	३	१	४१	२	१	१४	७	२	१८
तुला	१९	१०	८	२	६०	३४	५	१	१३	१२	३	५	२६	४२	१	८	२९	४	२	४३	२	१	१५	७	२	१९
	२०	१०	९	+१	६१	३५	५	१	१४	१२	३	५	२७	४३	१	८	३०	५	२	४४	२	१	१५	७	१	२०
	२१	१०	१०	०	६२	३५	५	१	१४	१२	३	६	२८	४४	१	८	३०	६	२	४६	३	१	१५	७	१	२१
धनु	२२	१०	११	०	६३	३६	५	१	१५	१२	४	६	२९	४४	१	८	३१	८	२	४८	३	१	१६	७	१	२२
	२३	१०	१२	−१	६४	३६	५	१	१५	१३	४	६	३०	४५	१	९	३१	९	२	४९	३	१	१६	७	१	२३
वृश्चिक	२४	१०	१३	२	६५	३७	६	१	१६	१३	५	६	३१	४५	१	९	३१	१०	२	५१	३	१	१७	७	१	२४
	२५	१०	१४	२	६६	३८	६	१	१६	१३	५	७	३२	४६	१	९	३३	११	२	५३	३	−१	१७	७	+१	२५
	२६	११	१४	३	६७	३८	६	१	१७	१४	६	७	३३	४६	१	९	३३	१३	२	५५	४	०	१८	७	०	२६
	२७	११	१५	४	६८	३९	६	१	१७	१४	६	७	३४	४७	१	१०	३४	१४	३	५७	४	०	१८	७	०	२७
	२८	११	१६	५	६९	४०	६	१	१८	१४	७	८	३६	४८	१	१०	३६	१५	३	५९	४	०	१९	७	०	२८
	२९	११	१७	५	७०	४०	७	२	१९	१४	७	८	३७	४८	१	१०	३६	१७	३	६१	४	०	१९	७	०	२९
	३०	+११	−१८	−६	−७१	−४१	+७	−२	−१९	+१५	−८	−८	−३८	−४९	+१	१०	−३६	−१८	+३	−६३	−४	−०	+२०	−८	+०	३०

पञ्चाङ्ग परिवर्तन सारिणी (भाग २ब)

लग्न	उदय कालिक उत्तर क्रान्ति	अमृतसर	उज्जैन	उदयपुर	कलकत्ता	काशी	कांगड़ा	कुरुक्षेत्र	ग्वालियर	जम्मू	जयपुर	दिल्ली	नागपुर	पटना	पटियाला	पठानकोट	प्रयाग	बम्बई	मण्डी (हि. प्र)	मद्रास	रोहतक	शिमला	श्रीनगर (का.)	हरिद्वार	हिसार	अस्त कालिक दक्षिण क्रान्ति
	अं.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	अं.
	०	+८	+५	+१३	−४६	−२५	+२	+१	−५	+८	+४	−१	−९	−३३	+२	+५	−२०	+१६	०	−१४	+१	−१	+८	−५	+४	०
	१	८	५	१३	४५	२४	२	१	५	८	४	१	८	३३	२	४	२०	१७	०	१२	१	१	८	५	५	१
सिंह	२	८	६	१४	४५	२४	२	१	४	७	५	१	७	३२	२	४	१९	१८	−१	१	१	१	७	५	५	२
	३	८	७	१४	४४	२३	२	१	४	७	५	१	७	३२	२	४	१८	१९	१	९	१	१	७	५	५	३
	४	८	७	१५	४३	२३	२	१	४	७	५	−१	६	३१	२	४	१८	२०	१	८	२	२	७	५	५	४
	५	८	८	१५	४२	२२	२	१	३	७	६	०	५	३१	२	४	१८	२१	१	६	२	२	६	५	५	५
	६	८	९	१६	४२	२२	१	१	३	७	६	०	४	३०	२	४	१७	२२	१	५	२	२	६	५	५	६
	७	८	९	१६	४१	२१	१	१	२	६	६	०	३	३०	२	४	१६	२३	१	३	२	२	६	५	५	७
	८	८	१०	१७	४०	२१	१	१	२	६	७	०	२	३०	२	३	१६	२४	१	−२	२	२	५	५	५	८
मीन	९	७	११	१८	४०	२०	१	१	२	६	७	०	२	२९	२	३	१६	२५	१	०	२	२	५	५	६	९
	१०	७	११	१८	३९	२०	१	१	१	६	७	+१	−१	२९	२	३	१५	२६	१	+१	२	२	५	५	६	१०
	११	७	१२	१९	३८	१९	१	१	−१	६	८	१	०	२८	२	३	१५	२७	१	३	३	२	४	५	६	११
	१२	७	१३	१९	३७	१९	१	१	०	६	८	१	+१	२८	२	३	१४	२८	२	४	३	२	४	५	६	१२
कर्क	१३	७	१३	२०	३६	१८	+१	१	०	५	८	१	२	२७	२	३	१४	२९	२	६	३	२	४	५	६	१३
	१४	७	१४	२०	३६	१८	०	१	+१	५	९	२	३	२७	२	२	१४	३०	२	७	३	२	३	४	६	१४
	१५	७	१५	२१	३५	१७	०	१	१	५	९	२	४	२६	२	२	१३	३१	२	९	३	२	३	४	७	१५
	१६	७	१५	२२	३४	१७	०	२	२	५	१०	२	५	२६	२	२	१३	३२	२	१०	३	२	३	४	७	१६
	१७	७	१६	२२	३३	१६	०	२	२	४	१०	२	६	२५	२	२	१२	३३	२	१२	४	२	२	४	७	१७
	१८	७	१७	२३	३३	१५	०	२	२	४	१०	२	७	२५	२	२	११	३५	२	१४	४	२	२	४	७	१८
मेष	१९	७	१८	२४	३२	१५	०	२	३	४	११	३	८	२४	२	१	११	३६	२	१५	४	२	१	४	७	१९
	२०	७	१८	२४	३१	१४	०	२	३	४	११	३	९	२४	२	१	१०	३७	३	१७	४	२	१	४	७	२०
मिथुन	२१	६	१९	२५	३०	१४	−१	२	४	४	११	३	१०	२३	२	१	१०	३८	३	१९	४	२	+१	४	७	२१
	२२	६	२०	२५	२९	१३	१	२	४	३	१२	३	११	२३	२	१	९	३९	३	२०	५	२	०	४	८	२२
वृष	२३	६	२१	२६	२८	१३	१	२	५	३	१२	३	११	२२	२	+१	९	४१	३	२२	५	२	०	४	८	२३
	२४	६	२२	२७	२७	१२	१	२	५	३	१३	४	१३	२१	२	०	८	४२	३	२४	५	२	−१	४	८	२४
	२५	६	२३	२८	२६	११	१	२	६	२	१३	४	१४	२१	२	०	८	४३	३	२६	५	२	१	४	८	२५
	२६	६	२४	२८	२६	११	१	२	६	२	१४	४	१५	२०	२	०	७	४४	३	२८	५	२	२	४	८	२६
	२७	६	२५	२९	२५	१०	२	२	७	२	१४	५	१६	२०	२	०	६	४६	३	३०	६	२	२	३	९	२७
	२८	६	२५	३०	२४	९	२	३	७	२	१५	५	१७	१९	२	−१	६	४७	४	३२	६	२	२	३	९	२८
	२९	६	२६	३१	२२	९	२	३	८	१	१५	५	१८	१८	२	१	५	४९	४	३४	६	२	३	३	९	२९
	३०	+५	+२७	+३२	−२१	−८	−२	+३	+९	+१	+१६	+५	+२०	−१७	+२	−१	−४	+५०	−४	+३६	+६	−३	−४	−३	+९	३०

अथ महर्षि-पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान-चक्रम्

सूर्यदशा वर्ष ६ एक घड़ी में ३६ दिन				चंद्रदशा वर्ष १० एक घड़ी में ६० दिन				भौमदशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन				राहुदशा वर्ष १८ एक घड़ी में १०८ दिन				गुरुदशा वर्ष १६ एक घड़ी में ९६ दिन				शनिदशा वर्ष १९ एक घड़ी में ११४ दिन				बुधदशा वर्ष १७ एक घड़ी में १०२ दिन				केतुदशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन				शुक्रदशा वर्ष २० एक घड़ी में १२० दिन			
कृ.उ.फा.उ.षा.				रो. ह. श्रवण.				मृ. चि. ध.				आ. स्वा. श.				पुन. वि. पू.भा.				पु. अनु. उ.भा.				श्ले. ज्ये. रे.				म. मू. अश्वि.				पू.फा. पूषा. भ.			
तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्				तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	च.	०	१०	०	मं.	०	४	२७	रा.	२	८	१२	बृ.	२	१	१८	श.	३	०	३	बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
च.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८	बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९	के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	र.	१	०	०
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६	श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९	शु.	२	१०	०	र.	०	४	६	च.	१	८	०
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९	बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०	र.	०	१०	६	च.	०	७	०	म.	१	२	०
बृ.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७	के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	र.	०	११	१२	च.	१	५	०	म.	०	४	२७	रा.	३	०	०
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७	शु.	३	०	०	र.	०	९	१८	च.	१	७	०	म.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०	र.	०	१०	२४	च.	१	४	०	म.	१	१	९	रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	र.	०	४	६	च.	१	६	०	म.	०	११	६	रा.	२	१०	६	बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
शु.	१	०	०	र.	०	६	०	च.	०	७	०	म.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२	श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

शिवोक्त योगिनी-दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थं चक्रमिदम्

मङ्गला व. १			पिंगला व. २			धान्या: व. ३			भ्रामरी व. ४			भद्रा व. ५			उल्का व. ६			सिद्धा व. ७			संकटा व. ८			दशा तथा वर्ष
चन्द्र			सूर्य			गुरु			मंगल			बुध			शनि			शुक्र			केतु			दशेश ग्रहा:
आर्द्रा चि. श्र.			पुन. स्वा. ध.			पुष्य. वि. श.			आश्ले. अनु. पू.भा.			म. मू. ज्ये. उ.भा.			कृ. पू.फा. मू. रे.			रो. उ.फा. पू.षा.			मृ. ह. उषा			जन्म नक्षत्र
मं.	०	१०	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०	अन्तर्दशा मासादि शुभदशा—म.धा.भ्र.सि. नेष्टदशा—पि.भ्रा.उ.सं.
पि.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	म.	२	२०	
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०	सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पि.	५	१०	
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०	सं.	१३	१०	मं.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०	
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०	म.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०	
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०	पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०	
सि.	२	१०	मं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०	
सं.	२	२०	म.	०	२०	पि.	२	०	धा.	४	०	भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०	

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर ईष्ट घटी पल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाए हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें. भयात के पलों को दशा के वर्ष से गुणा करें भोग के पलों से भाग देवें। लब्ध वर्ष, अंक फिर शेषांक को १२ से गुणा करें, भभोग के पलों से भाग दें। लब्ध मास फिर ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें. लब्ध दिन. फिर ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें. लब्धांक घटी, फिर शेष को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें, लब्ध पल होंगे। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में घटाने से भोग्य दशा होगी।

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ-ग्रहफलबोध चक्रम्

ग्रहा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृप भी:	धनलाभ:	हानि:	कष्टम्	शत्रुनाश:	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाश:	सुखम्	धनला.	पीड़ा
चन्द्र	पीड़ा	धनलाभ:	हर्ष:	शत्रुनाश:	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दु:खम्	भाग्योदय:	विजय:	धनला.	व्यय
भौम	व्रज:	धननाश:	जय:	व्यसन	दुर्गति:	शत्रुनाश:	स्त्रीकष्टम्	पीड़ा	पुण्योदय:	राज्यला.	धनला.	विरोध
बुध	सौख्यम्	धनलाभ:	सुखम्	द्रव्यलाभ:	पुत्रलाभ:	कलह:	धनलाभ:	व्यग्रता	सुखम्	मानला.	सुखला.	विग्रह
गुरु	सुखम्	धनलाभ:	जय:	वाह. ला.	पुत्रप्रा	कष्टम्	सुखम्	रोग:	धर्मलाभ	राज्यला.	धनला.	शोक
शुक्र	मानप्रा.	धनप्राप्ति	कीर्तिला.	सुखला.	धनलाभ:	शत्रुभीति:	स्त्रीसुखम्	कष्टम्	धर्मोदय	मानला.	धनला.	व्यय
शनि	वातार्ति:	पीड़ा	धनलाभ:	दु:खम्:	पुत्रप्री.	जय:	स्त्रीकष्टम्	रोग:	भाग्यहा.	धनहा:	धनला.	चिन्ता
राहु	शिरोर्ति	राजभी.	सुखम्	दु:खम्:	बुद्धि नाश	शत्रुनाश:	रोगभी:	कष्टम्	धर्महा.	विजय:	सुलाभ:	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश:	आरोग्य	राजभी:	दुर्बुद्धि	सुखम्	क्लेश:	पीड़ा	भाग्यना.	धनला.	लाभ:	शोक:
मुन्था	सुखम्	यशोऽर्थ:	पुष्टि:	दुखम्:	सुखाप्ति:	कष्टम्	व्यसनम्	दु:खम्	भाग्योद.	राज्यप्रा:	लाभ:	कष्टम्

सूर्यसिद्धान्तीय वर्ष प्रवेश सारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

सूचना वेध सिद्ध वर्षमान सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान से ८।। पल कम है । अतः सूक्ष्म-वर्ष-प्रवेश-कालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८।। से गुणा करके पलात्मक फल को सारिणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए । यही सूक्ष्म-वर्ष मानानुसारी इष्ट होगा, चाहो तो इस इष्ट पर भी फल अनुभव करें ।

वर्षफल-साधन प्रकारः—(१) अभीष्ट संवत् (जिस संवत् का वर्ष करना हो) में से जन्म समय का संवत् हीन करने से जो शेष बचे वह गत वर्ष(गताब्द)जाने । स्मरण रहे कि मेषार्क प्रवेश के प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनन्तर का यदि वर्ष करना हो तो पिछाड़ी संवत् से करना (वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्) इस प्रकार गतवर्ष लाकर उसी गताब्द अंक के नीचे सारिणी में वारादि अंक है उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी पल जोड़ने से वर्षप्रवेश कालिक वारादि इष्ट ज्ञान हो जाता है । यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना । ऊपर से वारांक में सात से अधिक आजाय तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट होगा । (२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट सूर्यवत् वर्ष में सूर्य मिले उसी दिन वर्ष प्रवेश जानना । प्रविष्टों के अनुसार कभी-कभी वार नहीं मिलता । वहां पर वार को ठीक जाने । इस इष्ट के अनुसार पीछे लिखी स्वदेशीय लग्न सारिणी से लग्न साधन करके वर्ष कुण्डली लगाना । **मुन्थानयनप्रकारः** गताब्दवृन्द में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे वह मुन्था जानना, यह मुन्था प्रतिदिन पाच कला चलती है ।

मुद्दा दशा गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें दो घटायें, ९ का भाग देने से जो शेष बचे सो दशा जाननी. १ बचे तो सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मंगल, ४ से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, ९ से शुक्र की दशा जाने ।

दशा दिनानि - सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल २१, राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५७, बुध ५१, केतु २१, शुक्र ६० यह दशा के दिन हैं ।

हर्ष स्थान बल सूर्य वर्ष लग्न से ९वें, चन्द्रमा ३, मंगल ३, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५वें, शनि १२वें स्थान में हो तो ५ वर्ष बल देते हैं ।

स्वोच्च बल—सू० १।५, च० २।४, म० १।८।१०, बु० ३।६, गु० ६।१।२।४, शु० २।७।१२, श० १०।११।७ इन स्थानों में ५ बल देते हैं । **पुरुष स्त्री बल** स्त्रीग्रह (च० बु० शु० श०) १।२।३।७।८।९ और पुरुषग्रह (सू० म० बृ०) ४।५।६।१०।११।१२ के स्थानों में ५ बल देते हैं । **दिनरात्रिबल**—दिन के वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते है और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं ।

त्रिराशिपति चक्र

मे	वृ.	मि	क.	सि.	क	तु.	वृ.	ध	म.	कु.	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु	गु.	च.	बु.	म.	श	म.	बृ.	च	दिनलग्नपति
बृ.	च	बु.	म	सू.	शु.	श.	शु.	श.	म.	गु.	च	रात्रिलग्नपति

वर्ष में दृष्टि ज्ञान और फल

वर्ष में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो उस भाव से पांचवें ९वें भाग को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है । **फल**—कार्य में शीघ्र सफलता, सुख, प्रेम, लाभ और जिन मनुष्यों के साथ पहिले शत्रुता होती है, उनसे प्रेम होता है । तीसरे ग्यारहवें गुप्तमित्र दृष्टि से देखता है । **फल**—कार्य कठिनता एवं गुप्त भाव से सफल हो, पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि होती है । **फल**—शत्रुता उत्पन्न करे, मित्र से वैर, धन हानि, बनते काम को बिगाड़ना आदि फल होते हैं । ४-१० गुप्तशत्रु दृष्टि से देखते हैं । फल—कार्य बड़ी कठिनता से सफल हो, गुप्तरूप से शत्रु भी उत्पन्न होते हैं ।

अथ वर्षेश निर्णयः—जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५, दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी इन पाचों अधिकारियों में से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे यह वर्षेश होगा, यदि पाचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उन में से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा । कई ग्रहों का बल समान हो तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह बल, दृष्टि, अधिकार यह तीनों समान हो तो मुन्थेश ही वर्षेश होगा । यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे वा जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश होगा ।। **फल**—वर्षेश ६।८।१२ व अस्तगत हीन बली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भय विशेष होगा । यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में हो तो ... की वृद्धि हो ।

ग्रहशील-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।६	३।६	ग्रहाणां एकपाद दृष्टि:
५।६	५।६	५।६	५।६	०	५।६	५।६	२।१०	२।१०	द्विपाददृष्टि
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	१	१	त्रिपाददृष्टि
७	७	४।७।८	७	५।७।६	७	३।७।१०	५, ७	५, ७	सम्पूर्ण दृष्टि
चं. मं. बृ.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. च. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बु.	मित्र-ग्रहा:
बृ.	मं. श. गु. शु.	शु. श.	मं. श. गु.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहा:
श. रा. शु.	रा	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. च. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहा:
मेष १०	वृष ३	मकर १८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५	उच्चराशय: परमोच्चांशा:
तुला १०	वृश्चिक ३	कर्क १८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धनु १५	मिथुन १५	नीचराशय: नीचांशा:
सिंह	कर्क	मे. वृश्चि.	मि. क.	ध. मी.	वृष. तु.	म. कु	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्ण
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुमक	पुरुष	स्त्री	नपुसक	पुरुष	पुरुष	पुं. स्त्री. नपुसक
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपरा.	अपरा.	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्य	नैऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कास्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षिस्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्व रस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभु.	दुग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थान

वर्ष में योगिनी के लिए जन्म-नक्षत्र संख्या में गताब्द जोड़ें ३ और जोड़ें ८ से शेष करें तो मंगलादि योगिनी दशा होती है।

वर्षाधिपतिनिर्णय मुद्दाहा

म.	मि.	धा	श्रा.	भ.	ल	गो	स
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

गर्भ योग-वर्ष कुण्डली में लग्नेश पाँचवें या सातवें पड़ा हो वा पचमेश और सप्तमेश लग्न मे पड़ा हो तो उस वर्ष गर्भयोग होता है

मुथेश और चन्द्रमा बली होकर पाँचवें हो और पंचमेश भी बली हो तो गर्भ होता है।

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की रीति

स्पष्ट प्रश्न लग्न की राशि को छोड़कर अशादिक की कला करना. फिर उसमें १५०(डेढ़ सौ) का भाग देना। लब्ध जो राश्यादि चार फल आवे उसकी राशि के अंक में प्रश्न लग्न की राशि अंक मिलाना. यहमुथा का स्पष्ट लग्न जानना। और प्रश्नलग्न से चतुर्थ राशि का स्वामी जन्म लग्नेश जानना अर्थात् पंचाधिकारियों में जन्म लग्न पति के स्थान में प्रश्न लग्न से चतुर्थ राशि का स्वामी जो हो वह लिखना। प्रश्न पत्र पर वर्ष बनाने में इतना ही विशेष जानना।अन्य सर्व रीति में कुछ न्यूनाधिक नहीं है।

अरिष्ट योग यदि जन्म लग्न ही वर्ष लग्न हो और जन्म नक्षत्र भी वर्ष में वही आ जाय तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है। वर्ष में गुरु चन्द्र शुभ हो तो अशुभ कष्ट भयप्रद होता है। वर्ष में गुरु चन्द्र शुभ हो तो अशुभ फल नहीं होगा।

आवश्यक मुहूर्त

कोई भी कार्य हो, वह शास्त्र-सम्मत शुभ-मुहूर्त में करें, तो अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त

शुभ-तिथियां— १.२.३.५.७.१०.११.१२.१३। **शुभ-नक्षत्र**—तीनों उत्तरा, मृ. ह. अनु. रा. स्वा. श्र. ध. श.। **शुभ लग्न** जब लग्न और ४, ५, ७, ९.१० स्थानों में शुभ-ग्रह हों, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, सूर्य मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांशक में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से पहली चार रात्रि छोड़ १६ रात्रि तक समरात्रि में गर्भ हो तो पुत्र, विषम में कन्या होती है।

चित्रा, पुन.. पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिए मध्यम है।

गर्भाधान के लिए अशुभ-काल

भद्रा.४. ६. ८. ९. १४. १५. ३०तिथियाँ, संक्रान्ति का दिन। सन्ध्याकाल.मंगल. रवि. शनिवार. रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां. ज्येष्ठा. रेवती और अश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो घड़ी. मूल. अश्विनी और मघा के आदि की २ घड़ी ४. ८. १२ लग्नों के अन्त की आधी घड़ी. ५, ९. १. लग्नों की आधी घड़ी. ५. १. १५ तिथियों के अन्त की एक घड़ी. ६. ११. १तिथियों के आदि की एक घड़ी. निधन तारा. जन्म नक्षत्र मूल. भरणी. अश्विनी. रेवती. मघा-नक्षत्र. ग्रहण के दिन व्यतिपात वैधृतियोग. माता-पिता के श्राद्ध का दिन. दिन का समय. परिघ योग का आधा भाग. उत्पात से हत-नक्षत्र. जन्मराशि से अष्टमलग्न. पापयुक्त-लग्न तथा नक्षत्र गर्भाधान के लिये वर्जित हैं।

गर्भ के मासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६		८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधानसमय का लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

विवाह और गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चंद्रबल देखना चाहिए, और अन्य कर्मों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए, यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन का मुहूर्त— यह गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु. रवि. मंगलवार को मृ. पुन. पु. ह. मूल और श्रवण नक्षत्र में १. २. ३. ५. ७. १०. ११ १३ १५ तिथियों में जब लग्न से १. ४. ५. ७. ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३. ६. ११ स्थान में पापग्रह हों तब शुभ होता है। तीनों उत्तरा. रोहिणी और रेवती नक्षत्र तथा सोम. बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमन्त संस्कार का मुहूर्त— गर्भाधान से छठे या आठवें मास में, जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त में कही गई तिथियां. वारों नक्षत्रों और लग्नों में सीमन्त शुभ होता है।

सीमन्तजातकादीनि प्राशनान्तानि यानि [illegible]

गर्भ-रक्षा के लिए विष्णुपूजा—गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में, शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधा-जनन संस्कार— बालक उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्ण सहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर "ॐ भूस्त्वयि दधामि. ॐ भुवस्त्वयि दधामि. ॐ स्वस्त्वयि दधामि. ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि" इन चारों मन्त्रों से बालक को थोड़ा-थोड़ा चार बार मधु चटावें। ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तन-पान कराने व सूतिका पथ्य का मुहूर्त— रिक्तामा. भद्रा. व्यतिपात. वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों. वार चं. बु. गु. श. हों. नक्षत्र मृग. पुन. पु. श्र. रे. म. हों. तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त— रेवती तीनों उत्तरा.रो. मृ. ह. स्वा. अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में रवि गुरु और भौम वारों में. १.२.३.५ ७.१०.११.१३.१५ तिथियां शुभ हैं। आर्द्रा पुन. पु. श्र. म. भ. कृ. वि. मू.और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री के जलपूजन का मुहूर्त—मास समाप्त होने पर बुध. गुरु या चन्द्रवार को ४. ९. १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में. श्र. पुन. पु. मृ. ह. मू. अनु. नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है। परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में चैत्र. पौष या अधिक मास में (मास पूरा होने पर भी) जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकरण का मुहूर्त—संक्रान्ति का दिन. भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १. २. ३. ५. ७. १०. ११. १२. १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२वें दिन सोम. बुध और शुक्रवार को मृ. रे. चि. अनु. तीनों उत्तरा. रो. ह. अश्विनी पुष्य. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. नक्षत्रों में जब लग्न से १. ४. ५. ७. १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३. ६. ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहण मुहूर्त

सूर्यनक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५	५	५	५	७
राज्य	मरण	कृशता	व्याधि	सौख्य

जन्म-दिन से १०।१२।१६।१८।३२ दिन शुभवार में. मृ. रे. चि. अनु ह. अश्वि. पुष्य. अभि. तीनों उत्तरा. रो. नक्षत्रों में ४।९।१४।३० इनसे रहित तिथियों में १।४।७।१० इन लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर १।४।५।६।७।९।१०। ११वें शुभ ग्रह हों ३।६।११वें पापग्रह हों तो उत्तम होता है।

निष्क्रमण मुहूर्त— स्वा. अश्वि. पुन. ह. मू. पु. अनु. श्र. रो. ध. नक्षत्रों में भौम. शनि को छोड़कर अन्य वारों में. रिक्ता अमा भद्रादि से रहित शुभ दिन में तीसरे चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होवे तो १२वें दिन बालक का निष्क्रमण करे। इसी दिन [illegible] का दर्शन करावें।

भूम्युपवेशन मुहूर्त—पांचवें महीने में पृथ्वी वराह का पूजन करके भौम के पूर्णबल में तीनों उत्तरा. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य. अभि. इन नक्षत्रों में ४।६।१४।३० इन तिथियों को छोड़कर स्थिर लग्न में शुभ दिन में बालक के करधनी का त्रिसूत्र बांध कर पृथ्वी पर बिठलावें ।

भूम्युपवेशन के लिए मन्त्र रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे । आयुःप्रमाण सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये ! इति ।। इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखे, जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी जीविका होती है ।

अन्नप्राशन का मुहूर्त – जन्म मास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११वें में कन्या का भद्रादि-दोष रहित १, ३,५,७, १०, १३, १५ तिथियों में सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पु. अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा. रोहिणी नक्षत्रों में, जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़ कर ऐसे लग्न में कि १, ३, ४. ५. ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों या शुभग्रह की दृष्टि हो, ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों दशम स्थान पापग्रह-रहित हो, १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है । किसी किसी के मत से जन्म-नक्षत्र अनु. शत-तारका और स्वाती अशुभ हैं ।

कर्णवेध का मुहूर्त चैत्र पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) जन्म मास, जन्म-नक्षत्र ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा क्षयतिथि और समवर्षों को छोड़कर जन्म से १२वें दिन या १६वें दिन, ६वें ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को, श्र. ध. पुन. मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पु. अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो,१, ४, ५, ७, ९, १०, स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३, ६ ११ स्थानों में पाप ग्रह हों तुला, वृष, धनु, या मीन लग्न में बृहस्पति हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ है । इस संस्कार के समय पर करने से मनुष्य के हानिया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है ।

कन्या की नासिका छेदन का मुहूर्त – कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत., स्वा. में शुभ तिथ्यादिक शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका-वेध शुभ है ।

मुण्डन मुहूर्त – गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३ रे. ५वें. ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़ २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रांति के दिन को छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रह रहित) हो, ३, ६ व ११ स्थानों में पापग्रह हों. ज्ये. मृ. रे. चि. स्वा. पुन. श्र. ध. शत. ह. अश्वि. पुष्य और अभिजित नक्षत्रों में शुभ है । लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है,परन्तु ५ वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है । जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए ।

मुण्डन कर्म में विशेष – स्व-कुल शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र तिथ्यादि शुभ समय में अपने अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, सो "यथाकुलधर्म वा" इस स्मृति के स्मरण से ठीक ही है ।।

क्षौर बनवाने का मुहूर्त मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाए गये हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं । वर्जित काल-शनि, रवि, भौमवार, हजामत में तीन दिन, मध्याकाल, ४, ६, ९, १४, १५, ३ तिथियां, संक्रांति का दिन, रात्रि में बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर या भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है ।

विशेष फल – यज्ञ विवाह, मृतक कर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय हजामत बनवाई जा सकती है । किसी किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे रूपजीवी जैसे नट, भांड आदि किसी दिन हजामत बनवा सकते हैं । वर्णभेद से क्षौर का वार – ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं ।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को ह., अश्वि., पुष्य, अभि. श्र. स्वा. रे. पुन. आर्द्रा. चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों के बुरे योगों और भद्रा को छोड़ कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है, लग्न में मेष, कर्क, तुला, और मकर राशियां नहीं होनी चाहिए ।

विद्यारम्भ का मुहूर्त – उत्तरायण में (कुम्भ का सूर्य छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में म, आर्द्रा, पुन., हस्त, चि., स्वा., श्र. ध. शत., अश्विनी, मू. तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रो. पुष्य, आश्ले., अनु., रेवती नक्षत्रों में, जब लग्न से १,४,५,७,९,१० स्थान में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है ।

फारसी अंग्रेजी विद्यारम्भ का मुहूर्त – सूर्य, भौम, शनिवार हों,४।९।१४ तिथि हों, ज्ये. आश्ले. में तीनों पूर्वा. भ. कृ. वि. आर्द्रा उ. षा. शत. नक्षत्र शुभ हैं ।

सीने पिरोने (सूचिकर्म) का मुहूर्त – अश्वि पु. चि. अनु. ध. ये नक्षत्र, सूर्य, बुध, चन्द्र, बृ., श. ये वार. १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ ये तिथियां शुभ हैं ।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त यज्ञ और उपवीत इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हो,उसे यज्ञ कहते हैं । उपवीत का अर्थ है पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु-धागा-विशेष) यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ । बालक को गुरु, चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से (गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः) ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें, इन वर्षों में यदि न किया जाय तो ब्राह्मण १६ तक, क्षत्रिय २२ तक और वैश्य २४ वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं, उसके बाद सावित्री पतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं । माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह. अश्वि, पुष्य. अभि. ३ उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र. ध., मू., मृ. रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेधरहित इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू. चं. बु. (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श. गुरुवार को, शुक्ल २।३।५।१०।११।१२ तथा कृष्ण २।३।५ तिथियों में शुभ है । किन्तु सोपपदा तिथि जैसे आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २ पौष शुक्ल ११ माघशुक्ल १२ को और संक्रांति दिन को तथा रोग बाण को छोड़कर मध्याह्न से पहले शुभ है । शु. गु. चं. और लग्नेश ६।८ वें स्थान में, चं. शु. १२वें स्थान में और १।५।८वें में, पापग्रह अशुभ हैं । शुभग्रह ६।८।१२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में, पापग्रह ३।६।११ स्थानों में, वृष या कर्क का पूर्ण-चन्द्रमा, लग्न में हो तो शुभ होता है । गुरु शुक्र के बाल्य, वृद्धत्व, अस्त के समय को छोड़कर उपनयन शुभ है । यदि गोचराष्टक वर्ग से बालक के उपनयन संस्कार के लिए समय शुद्धि न मिले । अथवा सिंह मकर किंवा अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र में उपनयन संस्कार किया जा सकता है ऐसी शास्त्र की आज्ञा है ।

योनि-नाड्यादि-ज्ञान चक्र

नक्षत्र	योनि	महावैर योनि	नाडी	गण	मुख	नेत्र	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारा साथ में	पंच शलाका में विद्ध	सप्त शलाका में विद्ध
अ.	अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	अश्वमुख	३	पू.फा.	पू.फा
भ.	गज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	योनि	३	अनु.	म
कृ.	मेष	वानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	सुलो.	मिश्रसाधा	क्षुर	६	वि.	श्र.
रो.	सर्प	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व.	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि.	अभि
मृ.	सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	मृगमुख	३	उषा	उषा
आ.	श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	मध्य	तीक्ष्णदारु	मणि	१	पूषा	पूषा
पुन.	मार्जार	मूषक	आदि	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	गृह	४	मू.	मू.
पुष्य	मेष	वानर	मध्य	देव	ऊर्ध्व	अंध	क्षिप्रलघु	बाण	३	ज्ये	ज्ये
आश्ले	मार्जार	मूषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्ष्णदारु	चक्र	५	ध.	अनु.
म.	मूषक	मार्जार	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	गृह	५	श्र.	भ.
पू.फा.	मूषक	मार्जार	मध्य	मनुष्य	अधो.	सुलो.	उग्रक्रूर	मंचक	२	अश्वि.	अश्वि.
उ.फा.	गौ	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे
ह.	महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	कर	५	उभा	उभा
चि.	व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदुमैत्र	मुक्ता	१	पूभा	पूभा
स्वा.	महिष	अश्व	अन्त्य	देव	तिर्यक्	सुलो.	चरचल	मूंगा	१	श.	श.
वि.	व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मृदुमैत्र	तोरण	४	कृ.	ध.
अनु.	मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मिश्रसाधा	बलिनिभ	४	म.	आश्ले.
ज्ये.	मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारु	कुंडल	३	पुष्य	पु.
मू.	श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	सुलो.	तीक्ष्णदारु	सिंहपुच्छ	११	पुन	पुन.
षा.	वानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	उग्रक्रूर	गजदन्त	२	आ	आ.
षा.	नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.
अभि.	नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्रलघु	त्रिकोण	३	रो.	रो.
.	वानर	मेष	अन्त्य	देव	ऊर्ध्व	सुलो.	चरचल	वामन	३	म.	कृ.
.	सिंह	गज	मध्य	राक्षस	ऊर्ध्व	अंध	चरचल	मर्दल	४	आश्ले.	वि.
.	अश्व	महिष	आदि	राक्षस	ऊर्ध्व	मंद	चरचल	वर्तुल	१००	स्वा.	स्वा.
भा.	सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	मंचक	२	चित्रा.	चित्रा
भा.	गौ	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	सुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाभ	२	ह.	ह.
	गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक्	अंध	मृदुमैत्र	मृदंग	३२	उफा.	उफा

नामाक्षरों के वर्ग देखने का कोष्ठक । स्वकीय वर्ग से पंचम वर्ग वैरी समझना

ई उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	[illegible]	[illegible]	[illegible]

वर्ण ज्ञान चक्र

वर्ण→	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि→	१२।४।८	१।५।९	२।६।१०	३।७।११

मेलापक सारिणी देखने की रीति

मुहूर्त शास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारिणी एकत्र की हुई दी जाती है। देखने वाले को वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है। कन्या के नक्षत्र पड़े और वर के खड़े स्तम्भ मे मिलेंगे। जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं। जिस कोष्ठक में मिलें उस में गुण: की संख्या दी हुई है।बस उतने ही गुण मिलते हैं।गुणोंवाली संख्या के नीचे उसी खाने मे प्राय: कोई संख्या वा चिह्न भी है। उसका विवरण यह है कि—एक नाड़ी दोष की जगह (३).गणमहादोष की जगह (१).भकूट महादोष षडष्टक में (६).नवपञ्च में(५)द्विर्द्वादश में (४).और योनिवैर में(२).जहां कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र मे पहले है वहां शून्य (०) रखा है। जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां ऋण का (–)और जहां अधिक समझा गया वहां धन का चि (+) दिया गया है। गुणों की संख्या के नीचे कोई अंक व चिह्न नही है वहा निर्दोष समझना चाहिए। जैसे वर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में और कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरण में हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहां मिलते है वहा ऊपर १२ और नीचे १३५ लिखा है. जिससे यह समझना चाहिए कि ३६ गुण में केवल १२ मिलते हैं और गण महादोष, नाड़ीदोष और भकूट का नवम पञ्चम दोष है इसलिए सम्बन्ध अशुभ है। यदि भकूट दोष न हो तो२०गुण मिलने पर मध्य और इससे अधिक मिले तो श्रेष्ठ है।परन्तु दुष्ट भकूट में२५गुण तक मध्यम और उसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिए। शुभ भकूट मे १६ गुण से कम हो और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हो तो विवाह के लिए विचार नहीं करना चाहिए। क्योंकि अशुभ है।

नाड़ी दोष-परिहार–यदि वर कन्या की राशि एक हो और जन्म नक्षत्र भिन्न हो. अथवा दोनों का जन्मनक्षत्र एक हो राशि भिन्न हो तो नाड़ीदोष एवं गणदोष नहीं होता। यदि दोनो का नक्षत्र एक हो. परन्तु चरणभेद हो तो भी नाड़ीदोष नहीं होता। **आवश्यके दोष शान्ति**–द्विर्द्वादश दोष होने पर ताम्र-सुवर्ण.वर्णादि दोष में अन्न वस्त्र,सुवर्ण,नव पंचम में कांसी चांदी.अशुभ षडष्टक में गोमिथुन अथवा गाय अन्न वस्त्र सुवर्णादि का दान करने पर पाणिग्रहण करें। "गावोऽन्नं वसनं हेम सर्वं दोषापहारकम्। –(गुरुः)।**महादोष एकनाड़ी हो तो** अत्यावश्यकता में शान्त्यर्थ महामृत्युंजय का जप तथा कम से कम३१रत्ती स्वर्ण की नाड़ी एवं गोदान करने पर ही पाणिग्रहण करे अन्यथा नहीं।

अपवाद—न वर्गवर्णो न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा। तारा विरुद्धो नव पञ्चमे वा राशीशमैत्री शुभदा विवाहे॥ राशीशयो: सुहृद्भावे मित्रत्वे वांशनाथयो:। गणादि दौष्ट्येऽप्युद्वाह: पुत्रपौत्रप्रवर्धन:॥

मिलान के बिना ही विवाह–जो कन्या स्वयं वर का वरण करे, अथवा जहां वर-कन्या को परस्पर देखने से ही वर-कन्या के मन एवं नेत्रों को सन्तोषानुभूति हो, अथवा पुनर्भू एवं क्रीता-स्त्री के साथ सम्बन्ध स्थापित करने [illegible]

(१२४)

मेलापक सारिणी

(कन्याया ↓, वरस्य →)

कन्याया / भानि	मेष अ १	मेष भ १	मेष कृ ।	वृष कृ ।।।	वृष रो १	वृष मृ ।।	मिथुन मृ ।।	मिथुन आ १	मिथुन पुन ।।।	कर्क पुन ।	कर्क पु १	कर्क श्ले १
मेष अ १	२८ ३	३३ ०	२७॥	१७॥ ४	२३॥ -४	२२॥ -४	२५॥	१६॥ ३	१७॥ ३	२२॥ ३	३०॥	२७
मेष भ १	३३	२८ ३	२८ ०१	१८ ०४१	२६॥ -४	१४॥ ३४	१७॥ ३	२५॥	२५॥	३०॥	२२॥ ३	२४॥ १
मेष कृ ।	२६॥	२८ १	२८ ३	१८ ३४	१० ०१३४	१६॥ ४	१६॥	१६॥ १	१६॥	२४॥	२६॥	२२॥ ३
वृष कृ ।।।	१९ ४	१६ १४	१६ ३४	२८ ३	१८॥ १३	२६॥	१७ ४+	१७ १४	१७ ४+	२१	२३	१६ ३
वृष रो १	२३॥ -४	२३॥ -४	१९ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२६॥ ०४	२३ ४+	२२ ४+	२६	२७	१२ ३१
वृष मृ ।।	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ०४	२२॥ ४+	२६	१६ ३	२१
मिथुन मृ ।।	२६॥	१७॥ ३	२१॥	१६ +४	२६॥ ४+	१६॥ ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१८॥ -४	११॥ ३४	१३॥ ४
मिथुन आ १	१८॥ ३	२६॥	२१॥ १	१६ +१४	२४ +४	२५॥ ४+	३४	२८ ३	२५ ३०	१२ ०३४	२०॥ -४	१२॥ १४
मिथुन पुन ।।।	१८॥ ३	२५॥	२१॥	१९ ४+	२२ ४+	२३ ४+	३१॥	२४ ३	२८ ३	१४ -३४	२१ ४०	१५॥ -४
कर्क पुन ।	२१॥ ३	२८॥	२४॥	२१	२४	२५	१६ ४	१० ३४	१३ ३४	२८ ३	३४ ०	२८॥
कर्क पु १	२६॥	२०॥	२६॥	२३	२५	१८ ३	१०॥ ३४	१८॥ ४	२४ ४	३४	२८ ३	२६ ०
कर्क श्ले १	२५	२३ १	२१॥ ३	१९॥ ३	११ ३१	१६	११॥ ४	११॥ १४	१३ ४	२७॥	२८	२८ ३
सिंह म १	१९ +५	१९ १५	१५॥ ३५	१६॥ ३	९॥ ३१	१७॥	२०॥	२०॥ १	१६॥ -२	१६ +२४	१८॥ ४+	१६ ३४२
सिंह पूफा १	२५ ५+	१७ ३५	१६ -१५	२० १	२३॥	१५॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२५॥ -२	२३॥ २४	१६॥ ३४	१६॥ -१२४
सिंह उफा ।	१५॥ ३५	२५ ५+	२१ -१५	२१ १	२६	२४॥	२७॥	१९॥ ३	१७॥ ३	१४॥ ३४	२५॥ ४+	१८॥ -१४
कन्या उफा ।।।	११ ३६	२१ ६	१६ १६	२०॥ +१५	२५॥ ५+	२४ ५+	२१॥	२३॥ ३	२३॥ ३	१७॥ ३	२७॥	२०॥ १
कन्या ह १	११ २३६	१८॥ ६	१७॥ १६	२०॥ +५	२३॥ ५+	२४॥ ५+	३२	२२॥ ३	२३॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२१॥
कन्या चि ।।	१२॥ ६	४॥ १३६	१८॥ ६	२३ ५+	१८॥ १५	१०॥ ३५	२८ ३	२२ १	२४॥	१६॥	११॥ ३	२५॥

कन्याया / भानि	सिंह म १	सिंह पूफा १	सिंह उफा ।	कन्या उफा ।।।	कन्या ह १	कन्या चि ।।	तुला चि ।।	तुला स्वा १	तुला वि ।।।	वृश्चिक वि ।	वृश्चिक अनु १	वृश्चिक ज्ये १
मेष अ १	२० +५	२४ ५+	१४॥ ३५	९॥ ३६	१०॥ २३६	१२॥ ६	२२	२८ -२	२२	१८॥ -६	२४॥ -६	१३ ३६
मेष भ १	१९ -१५	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१०॥ ६	३॥ १३६	१३ १३	२८	२१ -१	१८॥ -१६	१७॥ ३६	१९॥ -१६
मेष कृ ।	१५॥ ३५	१९ १५	२० १५	१५ १६	१४ ६	१७॥ ६	२७	१४ ३	१६ ३	१६॥ ३६	१६॥ -६	२५॥ -६
वृष कृ ।।।	१६ ३	२१ १	२२ १	२० १५	१८ ५+	२३ ५+	२२ -६	९ ३६	१४ ३६	२१॥ ३	२४॥	३०॥
वृष रो १	१०॥ ३१	२४॥	२७	२५॥ ५+	२५॥ ५+	१८॥ -१५	१७॥ -१६	१५ ३६	८ ३१६	१४॥ ३१	२६॥	२३॥ १
वृष मृ ।।	१६॥	१५॥ ३	२४॥	२३ ५+	२५॥ ५+	११॥ ३५	१०॥ ३६	२४॥ -६	१७ -६	२३॥	२१॥ ३	२४॥
मिथुन मृ ।।	२३॥	८॥ ३	२७॥	३१॥	३४	२० ३	१३ ३५	२७ +५	१६॥ ५+	१३ ६	१३ ३६	१४ ६
मिथुन आ १	२१॥ १	२७॥	२०॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १	२० -१५	२७ ५+	२० १५	१३॥ १६	१९ २६	५ १३६२
मिथुन पुन ।।।	२१॥ +२	२५॥ +२	१९॥ ३	२३॥ ३	२४॥ ३	२६॥	१६॥ ५+	२७ ५+	२१ ५+	१४॥ ६	२०॥ ६	६ ३६
कर्क पुन ।	१६॥ +२४	२०॥ २४	१४॥ ३४	१६॥ ३	१७॥ ३	१६॥	१९	२६॥	२०॥	१६ ५+	२५ ५+	१०॥ ३५
कर्क पु १	१८॥ +४	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२५॥	२५॥	११॥ ३	११ ३	२५	२०॥	१६ -५	१७ ३५	२० -५
कर्क श्ले १	१५ ०३४२	१५॥ १४२	१७॥ १४	१६॥ १	१६॥	२४॥	२४	११ ३	१६ ३	१४॥ ३५	१६ -५	२५ -५
सिंह म १	२८ ३	३० ०१	२६॥ १	१४॥ १४	१४॥ ४+	१६॥ ४	२३॥	१०॥ ३	१५॥ ३	२४॥ ३	२४॥	३२
सिंह पूफा १	३० -१	२८ ३	३४ ०	२४ ०४	२०॥ ४+	५॥ १३४	९॥ १३	२४॥	१७॥ १	२३॥ -१	२२॥ ३	२४॥ -१
सिंह उफा ।	२६॥ १	३४	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१२॥ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३०॥	१६॥ १३
कन्या उफा ।।।	१५॥ १४	२३ ४+	१७ ३४	२८ ३	२७ ३०	२४॥ १२+	१६॥ १२४	२५॥ ४+	१६॥ १२४	१८ १२	२६	१२ १३
कन्या ह १	१६ +४	२०॥ ४+	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०	२० ०४	२६॥ ४+	१८॥ ४+	२०	२६	१३॥ ३
कन्या चि ।।	२०॥ -४	६॥ १३४	१३॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३	१९ ३४	१२ ०४	२५॥ ४+	२७	३१	२५

कन्याया / भानि	धनु मू १	धनु पूषा १	धनु उषा ।	मकर उषा ।।।	मकर श्र १	मकर ध ।।	कुम्भ ध ।।	कुम्भ शत १	कुम्भ पूभा ।।।	मीन पूभा ।	मीन उभा १	मीन रे. १
मेष अ १	१२॥ ३५	२४॥ +५	२३ ५+	२५	२६	२०	२६॥	१४॥ ३	१५॥ ३	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२६ ४+
मेष भ १	१९॥ -१५	१७॥ ३५	२५॥ ५+	२७॥	२६	१० १२३	६॥ १३२	१६॥ -१	२३ -२	२२॥ २४+	१६॥ ३४	२५॥ ४+
मेष कृ ।	२५ ५+	१६ १२५	११॥ ३१५	१३॥ १३	१३॥ २३	२५	२४॥	२५॥	१८॥ १	१७॥ १४	१६॥ १४	१०॥ ३४
वृष कृ ।।।	२२ ६	१५ १२६	७ १३६	१२ १३५	१०॥ ३५२	२४॥ +५	२६	३०	२३ १	२० १	२२ १	१३ ३
वृष रो १	१३॥ १६	१६॥ ६	११ ३६२	१६ ३५२	१८ ३५	१६ -१५	२४॥ -१	२४ -१	२६	२६	२७	१६ ३
वृष मृ ।।	१४॥ ६	१०॥ ३६	१६॥ २६	२१॥ २५+	२६ ५+	१२ ३५	१७॥ ३	२६॥	२८	२५	१८ ३	२७
मिथुन मृ ।।	२३	१६ ३	२५ २+	१६॥ -२६	२४ -६	१० ३६	१२ ३५	२१ ५+	२२॥ ५+	२४	१७ ३	२६
मिथुन आ १	१५ १३	२८	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१७ -१६	१६ १५+	१२ १३५	१७ ३५	१८॥ ३	२६	२६
मिथुन पुन ।।।	१४ ३	२७	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१६॥ -६	१८॥ +५	१३ ३५	१६ ३५	१७॥ ३	२६॥	२६
कर्क पुन ।	७॥ ३६	२०॥ -६	२७॥ -६	२६	२७	२१	१२ ६	५॥ ३६	६॥ ३६	१६ ३५	२५ ५+	२४॥ १+
कर्क पु १	१७ ६	१२॥ २३६	२०॥ ६	२६	२७ -२	१३ ३	४ ३६	१३ ६	१७॥ ६	२६ ५+	१८ ३५	२६ ५+
कर्क श्ले १	२२॥ ६	१५॥ १६	७॥ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७ ६	१८ ६	११ १६	१७॥ १५	२० १५	१२ ३५
सिंह म १	२४ -५	१६ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१७॥ ६	२३॥	२४॥	१७॥ १	१७॥ १६	१८॥ १६	१२ ३६
सिंह पूफा १	२० १५+	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१८॥ ६	५॥ १३६	९॥ १३	१०॥ १	२३॥	२३॥ -६	१६॥ ३६	२४॥ -६
सिंह उफा ।	९॥ १३५	२५ ५+	२५ ५+	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	१०॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२४॥ ६-
कन्या उफा ।।।	१४ १३	२६॥	२६॥	२४ +५	२४ ५+	१५॥ +१५	१६॥ -१६	६॥ ३१६	१४॥ ३६	१७ ३	२८	२६
कन्या ह १	१५ ३	२७	२८॥	२३ १+	२४ ५+	१८ ५+	१६ -६	१०॥ ३६२	१३॥ ३६	१६ ३	२६	२६
कन्या चि ।।	२७	१३ १३	२१ १	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	१६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१६ १	१० १३२	१६

योनि-नाड्यादि-ज्ञान चक्र

नक्षत्र	योनि	महावैर योनि	नाडी	गण	मुख	नेत्र	संज्ञा	स्वरूप	कितने तारा साथ में	पंच शलाका में विद्ध	सप्त शलाका में विद्ध
अ.	अश्व	महिष	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	अश्वमुख	३	पू. फा.	पू. फा
भ.	गज	सिंह	मध्य	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	योनि	३	अनु.	म
कृ.	मेष	वानर	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मुलो.	मिश्रसाधा	क्षुर	६	वि.	श्र.
रो.	सर्प	नकुल	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व.	अंध	ध्रुवस्थिर	शकट	५	अभि.	अभि
मृ.	सर्प	नकुल	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मृदुमैत्र	मृगमुख	३	उषा	उषा
आ	श्वान	मृग	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	मध्य	तीक्ष्णदारु	मणि	१	पूषा	पूषा
पुन.	मार्जार	मूषक	आदि	देव	तिर्यक्	मुलो.	चरचल	गृह	४	मू.	मू.
पुष्य	मेष	वानर	मध्य	देव	ऊर्ध्व	अंध	क्षिप्र लघु	बाण	३	ज्ये	ज्ये
आश्ले	मार्जार	मूषक	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मंद	तीक्ष्णदारु	चक्र	५	ध.	अनु.
म.	मूषक	मार्जार	अन्त्य	राक्षस	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	गृह	५	श्र.	भ.
पू.फा.	मूषक	मार्जार	मध्य	मनुष्य	अधो.	मुलो.	उग्रक्रूर	मंचक	२	अश्वि.	अश्वि.
उ.फा.	गौ	व्याघ्र	आदि	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	ध्रुवस्थिर	शय्या	२	रे.	रे
ह.	महिष	अश्व	आदि	देव	तिर्यक्	मंद	क्षिप्रलघु	कर	५	उभा	उभा
चि.	व्याघ्र	गौ	मध्य	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	मृदुमैत्र	मुक्ता	१	पूभा	पूभा
स्वा.	महिष	अश्व	अन्त्य	देव	तिर्यक्	मुलो.	चरचल	मूंगा	१	श.	श.
वि.	व्याघ्र	गौ	अन्त्य	राक्षस	अधो.	अंध	मृदुमैत्र	तोरण	४	कृ.	ध
अनु.	मृग	श्वान	मध्य	देव	तिर्यक्	मंद	मिश्रसाधा	बलिनिभ	४	म.	आश्ले.
ज्ये.	मृग	श्वान	आदि	राक्षस	तिर्यक्	मध्य	तीक्ष्णदारु	कुंडल	३	पुष्य	पु.
मू.	श्वान	मृग	आदि	राक्षस	अधो.	मुलो.	तीक्ष्णदारु	सिंहपुच्छ	११	पुन	पुन.
पू.षा.	वानर	मेष	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	अंध	उग्रक्रूर	गजदन्त	२	आ	आ.
उ.षा.	नकुल	सर्प	अन्त्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	मंद	ध्रुवस्थिर	मंचक	२	मृ.	मृ.
अभि.	नकुल	सर्प	०	०	०	मध्य	क्षिप्रलघु	त्रिकोण	३	रो.	रो.
श्र.	वानर	मेष	अन्त्य	देव	ऊर्ध्व	मुलो.	चरचल	वामन	३	म.	कृ.
ध.	सिंह	गज	मध्य	राक्षस	ऊर्ध्व	अंध	चरचल	मर्दल	४	आश्ले.	वि.
श.	अश्व	महिष	आदि	राक्षस	ऊर्ध्व	मंद	चरचल	वर्तुल	१००	स्वा.	स्वा.
पू.भा.	सिंह	गज	आदि	मनुष्य	अधो.	मध्य	उग्रक्रूर	मंचक	२	चित्रा.	चित्रा
उ.भा.	गौ	व्याघ्र	मध्य	मनुष्य	ऊर्ध्व	मुलो.	ध्रुवस्थिर	यमलाभ	२	ह.	ह.
रे.	गज	सिंह	अन्त्य	देव	तिर्यक्	अंध	मृदुमैत्र	मृदंग	३२	उफा.	उफा

नामाक्षरों के वर्ग देखने का कोष्ठक । स्वकीय वर्ग से पंचम वर्ग वैरी समझना

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	[illegible]	[illegible]	[illegible]

वर्ण ज्ञान चक्र

वर्ण→	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि→	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११

मेलापक सारिणी देखने की रीति

मुहूर्त शास्त्रोक्त गुण दोषों के अनुसार आगे वर-कन्या मेलापक सारिणी एकत्र की हुई दी जाती है । देखने वाले को वर-कन्या के नक्षत्र और चरणमात्र के जानने की आवश्यकता है । कन्या के नक्षत्र पड़े और वर के खड़े स्तम्भ मे मिलेंगे । जब नक्षत्र और चरण दोनों के मिलें तो देखिये कि खड़े और पड़े स्तम्भ किस कोष्ठक पर जाकर मिलते हैं । जिस कोष्ठक में मिलें उस में गुण की संख्या दी हुई है।बस उतने ही गुण मिलते हैं।गुणोंवाली संख्या के नीचे उसी खाने में प्रायः कोई संख्या वा चिह्न भी है । उसका विवरण यह है कि—एक नाड़ी दोष की जगह (३).गणमहादोष की जगह (१).भकूट महादोष षडष्टक में (६).नवपञ्च में(५)द्विर्द्वादश में (४).और योनिवैर में(२).जहां कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहले है वहां शून्य (०) रखा है । जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां ऋण का (−)और जहां अधिक समझा गया वहां धन का चि (+) दिया गया है । गुणों की संख्या के नीचे कोई अंक व चिह्न नहीं है वहां निर्दोष समझना चाहिए । जैसे वर का जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण मे और कन्या का जन्म आर्द्रा के दूसरे चरण में हुआ हो तो इन नक्षत्रों के पड़े और खड़े स्तम्भ जहां मिलते है वहां ऊपर १२ और नीचे १३५ लिखा है. जिससे यह समझना चाहिए कि ३६ गुण में केवल १२ मिलते हैं और गण महादोष, नाडीदोष और भकूट का नवम पञ्चम दोष है इसलिए सम्बन्ध अशुभ है । यदि भकूट दोष न हो तो२०गुण मिलने पर मध्य और इससे अधिक मिले तो श्रेष्ठ है।परन्तु दुष्ट भकूट में२५गुण तक मध्यम और उसके ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिए । शुभ भकूट में १६ गुण से कम हो और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हो तो विवाह के लिए विचार नहीं करना चाहिए । क्योंकि अशुभ है ।

नाड़ी दोष-परिहार–यदि वर कन्या की राशि एक हो और जन्म नक्षत्र भिन्न हो. अथवा दोनों का जन्मनक्षत्र एक हो राशि भिन्न हो तो नाड़ीदोष एवं गणदोष नहीं होता । यदि दोनों का नक्षत्र एक हो. परन्तु चरणभेद हो तो भी नाड़ीदोष नहीं होता । **आवश्यके दोष शान्ति**–द्विर्द्वादश दोष होने पर ताम्र-सुवर्ण.वर्णादि दोष में अन्न वस्त्र,सुवर्ण,नव पंचम में कांसी चांदी.अशुभ षडष्टक में गोमिथुन अथवा गाय अन्न वस्त्र सुवर्णादि का दान करने पर पाणिग्रहण करें । "गावोऽन्नं वसनं हेम सर्व दोषापहारकम्। –(गुरुः)।**महादोष एकनाड़ी हो तो** अत्यावश्यकता में शान्त्यर्थ महामृत्युंजय का जप तथा कम से कम ३१रत्ती स्वर्ण की नाड़ी एवं गोदान करने पर ही पाणिग्रहण करें अन्यथा नहीं ।

अपवाद—न वर्गवर्णौ न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा । तारा विरुद्धो नव पञ्चमे वा राशीशमैत्री शुभदा विवाहे ॥ राशीशयोः सुहृद्भावे मित्रत्वे वांशनाथयोः । गणादि दौष्ट्येऽप्युद्वाहः पुत्रपौत्रप्रवर्धनः ॥

मिलान के बिना ही विवाह–जो कन्या स्वयं वर का वरण करे, अथवा जहां वर-कन्या को परस्पर देखने से ही वर-कन्या के मन एवं नेत्रों को सन्तोषानुभूति हो, अथवा पुनर्भू एवं क्रीता-स्त्री के साथ सम्बन्ध स्थापित करने [illegible]

मेलापक सारिणी

कन्याराशि	वरराशि →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
	भानि	अ १	भ १	कृ ।	कृ ।।।	रो १	मृ ।।	मृ ।।	आ १	पुन ।।।	पुन ।	पु १	श्ले १	म १	पूफा १	उफा ।	उफा ।।।	ह १	चि ।।
मेष	अ १	२८ ३	३३ ०	२७॥	१७॥ ४	२३॥ -४	२२॥ -४	२५॥	१६॥ ३	१७॥ ३	२२॥ ३	३०॥	२७	२० +५	२४ ५+	१४॥ ३५	९॥ ३६	१०॥ २३६	१२॥ ६
	भ १	३३	२८ ३	२८ ०१	१८ ०४१	२६॥ -४	१४॥ ३४	१७॥ ३	२५॥	२५॥	३०॥	२२॥ ३	२४॥ १	१९ -१५	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१०॥ ६	३॥ १३६
	कृ १	२६।	२८ १	२८ ३	१८ ३४	१० ०१३४	१६॥ ४	१६॥	१६॥ १	१६॥	२४॥	२६॥	२२॥ ३	१५॥ ३५	१९ १५	२० १५	१५ १६	१४ ६	१७॥ ६
वृष	कृ ।।।	१९ ४	१६ १४	१६ ३४	२८ ३	१८॥ १३	२६।	१७ ४+	१७ १४	१७ ४+	२१	२३	१६ ३	१६ ३	२१ १	२२ १	२० १५	१८ ५+	२३ ५+
	रो १	२३॥ -४	२३॥ -४	१९ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२६॥ ०४	२३ ४+	२२ ४+	२६	२७	१२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२५॥ ५+	२५॥ ५+	१८॥ -१५
	मृ ।।	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ०४	२२॥ ४+	२६	१९ ३	२१	१६॥	१५॥ ३	२४॥	२३ ५+	२५॥ ५+	११॥ ३५
मिथुन	मृ ।।	२६॥	१७॥ ३	२१॥	१६ +४	२६॥ ४+	१६॥ ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१८॥ -४	११॥ ३४	१३॥ ४	२२॥	१८॥ ३	२७॥	३१॥	३४	२० ३
	आ १	१८॥ ३	२६॥	२१॥ १	१६ +१४	२४ +४	२५॥ ४+	३४	२८ ३	२५ ३०	१२ ०३४	२०॥ -४	१२॥ १४	२१॥ १	२७॥	२०॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १
	पुन ।।।	१८॥ ३	२५॥	२१॥	१९ ४+	२२ ४+	२३ ४+	३१॥	२४ ३	२८ ३	१४ -३४	२१ ४०	१५॥ -४	२१॥ +२	२५॥ +२	१९॥ ३	२३॥ ३	२४॥ ३	२६॥
कर्क	पुन ।	२१॥ ३	२८॥	२४॥	२१	२४	२५	१६ ४	१० ३४	१३ ३४	२८ ३	३४ ०	२८॥	१६॥ १२४	२०॥ २४	१४॥ ३४	१६॥ ३	१७॥ ३	१६॥
	पु १	२६॥	२०॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	१०॥ ३४	१८॥ ४	२४ ४	३४	२८ ३	२६ ०	१८॥ +४	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२५॥	२५॥	११॥ ३
	श्ले १	२५	२३ १	२१॥ ३	२२॥ ३	११ ३१	१६	११॥ ४	११॥ १४	१३ ४	२७॥	२८	२८ ३	१५ ०३४२	१५॥ १४२	१७॥ १४	१६॥ १	१६॥	२४॥
सिंह	म १	१९ +५	१९ १५	१५॥ ३५	१६॥ ३	९॥ ३१	१७॥	२०॥	२०॥ १	१६॥ -२	१६ +२४	१८॥ ४+	१६ ३४२	२८ ३	३० ०१	२६॥ १	१४॥ १४	१४॥ ४+	१६॥ ४
	पूफा १	२५ ५+	१७ ३५	१६ -१५	२० १	२३॥	१५॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२५॥ -२	२२॥ २४	१६॥ ३४	१६॥ -१२४	३० १	२८ ३	३४ ०	२४ ०४	२०॥ ४+	५॥ १३४
	उफा १	१५॥ ३५	२५ ५+	२१ -१५	२१ १	२६	२४॥	२७॥	१९॥ ३	१७॥ ३	१४॥ ३४	२५॥ ४+	१८॥ -१४	२६॥ -१	३४	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१२॥ १४२
कन्या	उफा ।।।	११ ३६	२१ ६	१६ १६	२०॥ +१५	२५॥ ५+	२४ ५+	३१॥	२३॥ ३	२३॥ ३	१७॥ ३	२७॥	२०॥ १	१५॥ १४	२३ ४+	१७ ३४	२८ ३	२७ ३०	२४॥ १२+
	ह १	११ २३६	१८॥ ६	१७॥ १६	२०॥ +५	२३॥ ५+	२४॥ ५+	३२	२२॥ ३	२३॥ ३	१८॥ ३	२६॥	२१॥	१६ +४	२०॥ ४	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०
	चि ।।	१२॥ ६	४॥ १३६	१८॥ ६	२३ ५+	१८॥ १५	१०॥ ३५	१८ ३	२२ १	२४॥	१६॥	११॥ ३	२५॥	२०॥ -४	६॥ १३४	१३॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३

कन्याराशि	वरराशि →	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	भानि	चि ।।	स्वा १	वि ।।।	वि ।	अनु १	ज्ये १	मू १	पूषा १	उषा ।	उषा ।।।	श्र १	ध ।।	ध ।।	शत १	पूभा ।।।	पूभा ।	उभा १	रे १
मेष	अ १	२२	२८ -२	२२	१८॥ -६	२४॥ -६	१३ ३६	१२॥ ३५	२४॥ +५	२३ ५+	२५	२६	२०	१६॥	१४॥ ३	१५॥ ३	१४॥ ३४	२३॥ ४+	२६ ४+
	भ १	१३ १३	२८	२१ -१	१८॥ -१६	१७॥ ३६	१९॥ -१६	१९॥ -१५	१७॥ ३५	२५। ५+	२७॥	२६	१०॥ १२३	६॥ १३२	१६॥ -१	२३ -२	२२॥ २४+	१६॥ ३४	२५॥ ४+
	कृ १	२७	१४ ३	१६ ३	१६॥ ३६	१६॥ -६	२५॥ -६	२५ ५+	१६ १२५	११॥ ३१५	१३॥ १३	१३॥ २३	२५	२४॥	२५॥	१८॥ १	१७॥ १४	१६॥ १४	१०॥ ३४
वृष	कृ ।।।	२२ -६	९ ३६	१४ ३६	२१॥ ३	२४॥	३०॥	२२ ६	१५ १२६	७ १३६	१२ १३५	१०॥ ३५२	२४॥ +५	२९	३०	२३ १	२० १	२२ १	१३ ३
	रो १	१७॥ -१६	१५ ३६	८ ३१६	१४॥ ३१	२६॥	२३॥ १	१३॥ १६	१६॥ ६	११ ३६३	१६ ३५२	१८ ३५	१६ -१५	२४॥ -१	२४ -१	२९	२६	२७	१९ ३
	मृ ।।	१०॥ ३६	२४॥ -६	१७ -६	२३॥	२१॥ ३	२४॥	१४॥ ६	१०॥ ३६	१६॥ २६	२१॥ २५+	२६ ५+	१२ ३५	१७॥ ३	२६॥	२८	२५	१८ ३	२७
मिथुन	मृ ।।	१३ ३५	२७ +५	१६॥ ५+	१३ ६	१३ ३६	१४ ६	२३	१६ ३	२५ २+	१६॥ -२६	२४ -६	१० ३६	१२ ३५	२१ ५+	२२॥ ५+	२४	१७ ३	२६
	आ १	२० -१५	२७ ५+	२० १५	१३॥ १६	१९ २६	५ १३६२	१५ १३	२८	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१७ -१६	१६ १५+	१२ १३५	१७ ३५	१८॥ ३	२६	२६
	पुन ।।।	१६। ५+	२७ ५+	२१ ५+	१४॥ ६	२०॥ ६	६ ३६	१४ ३	२७	२७	२१॥ -६	२२॥ -६	१६॥ -६	१८॥ +५	१३ ३५	१६ ३५	१७॥ ३	२६॥	२६
कर्क	पुन ।	१९	२६॥	२०॥	१६ ५+	२५ ५+	१०॥ ३५	७॥ ३६	२०॥ -६	२०॥ -६	२६	२७	२१	१२ ६	५॥ ३६	६॥ ३६	१६ ३५	२५ ५+	२४॥ १+
	पु १	११ ३	२५	२०॥	१६ -५	१७ ३५	२० -५	१७ ६	१२॥ २३६	२०॥ ६	२६	२७ -२	१३ ३	४ ३६	१३ ६	१७॥ ६	२६ ५+	१८ ३५	२६ ५+
	श्ले १	२४	११ ३	१६ ३	१४॥ ३५	१६ -५	२५ -५	२२॥ ६	१५॥ १६	७॥ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७ ६	१८ ६	११ १६	१७॥ १५	२०॥ १५	१२ ३५
सिंह	म १	२३॥	१०॥ ३	१५॥ ३	२४॥ ३	२४॥	२२	२४ -५	१६ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१७॥ ६	२३॥	२४॥	१७॥ १	१७॥ १६	१८॥ १६	१२ ३६
	पूफा १	९॥ १३	२४॥	१७॥ १	२३॥ -१	२२॥ ३	२४॥ -१	२० १५+	१७ ३५	२४ ५+	१९ ६	१८॥ ६	५॥ १३६	९॥ १३	१०॥ १	२३॥	२३॥ -६	१६॥ ३६	२४॥ -६
	उफा १	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३०॥	१६॥ १३	९॥ १३५	२५ ५+	२५ ५+	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	१०॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२४॥ ६-
कन्या	उफा ।।।	१६॥ १२४	२५॥ ४+	१६॥ १२४	१८ १३	२६	१२ १३	१४ १३	२६॥	२६॥	२४ +५	२४ ५+	१५॥ +१५	१६॥ -१६	६॥ ३१६	१४॥ ३६	१७ ३	२८	२६
	ह १	२० ०४	२६॥ ४+	१८॥ ४+	२०	२६	१३॥ ३	१५ ३	२७	२८॥	२३ १+	२४ ५+	१८ ५+	१६ -६	१०॥ ३६२	१३॥ ३६	१६ ३	२६	२६
	चि ।।	१९ ३४	१२ ०४	२५॥ ४+	२७	३१	२५	२७	१३ १३	२१ १	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	१६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१९ १	१० १३२	१९

मेलापक सारिणी

कन्याराशि	वर / कन्या	मेष अ १	मेष भ १	मेष कृ ।	वृष कृ ।॥	वृष रो १	वृष मृ ॥	मिथुन मृ ॥	मिथुन आ १	मिथुन पुन ।॥	कर्क पुन ।	कर्क पु १	कर्क श्ले १	सिंह म १	सिंह पूफा १	सिंह उफा ।	कन्या उफा ।॥	कन्या ह १	कन्या चि ॥	तुला चि ॥	तुला स्वा १	तुला वि ।॥	वृश्चिक वि ।	वृश्चिक अनु १	वृश्चिक ज्ये १	धनु मू १	धनु पूषा १	धनु उषा ।	मकर उषा ।॥	मकर श्र १	मकर ध ॥	कुम्भ ध ॥	कुम्भ शत १	कुम्भ पूभा ।॥	मीन पूभा ।	मीन उभा १	मीन रे १
तुला	चि ॥	२८	१४ १३	२८	२३ ६+	१८॥ १६	१०॥ ३६	१२ ३५	२० १५	१८॥ ५+	१९	११ ३	२५	२४॥	१०॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० ४+	२० ३४	२८ ३	२७॥ ०	३३॥	२२॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१३ १३	२१ १	२३॥ १	२५	२३ ३	१८ ३५	२६ ५+	१८॥ १५	१२ १६	३ १२६२	१२ ६
	स्वा १	२६ २+	२८	१६ ३	११ ३६	१४ ३६	२४ -६	२६ ५+	२६ ५+	२७ ५+	२७॥	२६	२३ ३	२२॥ ३	२४	२५॥	२५॥ ४	२७॥ ४+	२१ ४+	२८	२८ ३	२० ०३	९ ३४०	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	३२ ३	२१॥ ३	२२॥ ३	२६	२१ ५+	२२ ५२+	२५ ५+	१८॥ ६	१६ ६	११ ३६
	वि ।॥	२१	२२ १	२० ३	१५ ३६	९ १३६	१७ -६	१६॥ ५+	२८ १५	२० ५+	२०॥	२०॥	१७ ३	१६॥ ३	१८॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ ४+	२६ ४-	३३॥	१९ ३	२८ ३	१६ ३४	१६ ०४	२१॥ ४	२७	२१ १	१३ १३	१५॥ १३	१५॥ ३	२९॥	२४ ५+	२६ ५+	२० १५	१३॥ १६	१२॥ १६२	८
वृश्चिक	वि ।	१६॥ ६+	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१३॥ १३	२६॥	११ ६	१२॥ १६	१७॥ ६	१८ -५	१८ ५-	१४॥ -३५	२४॥ ३	२२॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२६	२१॥ ४	७ ३४	१५ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ ४+	१५॥ ४१	७॥ १३४	११ १३	११ ३	२५	२४	२५॥	१६॥ १	१६ १५	१८ १५२	९॥ ३५
	अनु १	२३॥ ६	१४॥ ३६	१८॥ -६	२३॥	२७॥	२७॥ ३	१० ३६	१५ २६	१६॥ ६	२५ -५	१७ ३५	२० -५	२४॥	२०॥ ३	२८॥	२४	२५	२१ ३	६॥ ३४	२०॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ ४+	२५	२६	१२ ३	११ ३	२०	२४॥	२४ ५+	३७ ३५	२६ ५+
	ज्ये १	१० ३६	१७॥ १६	२३॥ -६	२८॥	२२॥ १	२६॥	१२ ६	२ ३१६२	४ ६३	१९॥ ५३	१६ ५+	२५ -५	३१	२३॥ १	१५॥ १३	११ १३	११ ३	२४	१६॥ ४	१४॥ ४	१६ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१७ ३	१० १३	६॥ १३५	२० १५	२० +५
धनु	मू १	११॥ ३५	१६ १५	२५ ५+	१६॥ ६	१२॥ १६	१२॥ ६	२१	१४ १३	१२ ३	७॥ ३६	१७॥ ६	२३ ६	२४ ५+	१८ १५	१६॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२६	२६	२१	२६	२२॥ ४+	१६॥ +२४	१६ ३४२	२८ ३	२८ ०१	१५॥ १	१३॥ १४	१४॥ ४	१६॥ ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६॥ १३	२४॥ १	३६
	पूषा १	२५॥ -५	१७॥ ३५	१९॥ -१२५	१४ १६२	१८॥ ६	१०॥ ३६	१६ ३	२६	२७	२२॥ ६	१४॥ २३६	१६॥ १६	१६ -१५	१७ ३५	२५ ५+	२८॥	२७	१२ १३	१२ १३	२७	२० १	१६॥ -१४	१५॥ ३४	१७॥ -१४	२७ १+	२८ ३	३४ ०	२२ ०४	२२॥ ४	५॥ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	२६॥	२२॥ ३	३०॥
	उषा ।	२४ ५+	२५॥ ५+	११॥ १३५	६ १३६	१० २३६	१६॥ २६	२५ ५+	२६	२७	२२॥ ६	२२॥ ६	८॥ १६३	८॥ १५३	२४ ५+	२ ५+	२८॥	२८॥	२० १	२० १	१६ ३	१२ १३	८॥ १३४	२३॥ ४+	१७॥ -१४	२५ -१	३५	२८ ३	१६ ३४	१५ ०३४	१३॥ १८	२२॥ १	२३॥ १	२८॥	२६॥	३०॥	२२॥ ३
मकर	उषा ।॥	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	१६॥ २६+	२४॥ -६	२१॥ -६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४ ५+	२४ ५	१५॥ १५	२२॥ -१	२१॥ ३	१४॥ १३	१२ ३१	२७	२१ १	१४॥ १४	२४ ४	१७ ३४	२८ ३	२७ ०३	२५॥ १+	१५॥ +१४	१६॥ १४+	२१॥ ४+	२९॥	३०॥	२२॥ ३
	श्र १	२८	२७	१४॥ ३२	१२ ३५२	१७ ३५	२६ ५+	२३ -६	१६॥ -६	२१॥ -६	२८	२८ २+	१४ ३	५॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३ ५+	२४ ५+	१६ ५	२४	२१॥ ३	१४॥ ३	१२ ३	२७	२१	१४ ४	२२॥ ४	१५ ३४	२६ ३	२८ ३	२७ -०	१७ ०४	१७॥ ४+	२०॥ ४+	२८॥	२६॥	३३॥ ३
	ध ॥	२०	११ १३२	२६	२३॥ ५॥	१५ १५	११ ३५	८ ३६	१६ १६	१४॥ -६	२२	१३ ३	२७	१८॥ ६	४॥ १३६	२०॥ १६	१५॥ १५	१७ ५+	१५ ३५	१९ ३	२४	२८॥	२६	१२ ३	२६	२०॥ ४	६॥ ३४१	१४॥ ४१	२५॥ १	२७	२८ ३	१७ ३४	२३ ०४	१७॥ १४	२४॥ १	१५ १३	२३॥ +२
कुम्भ	ध ॥	१९॥	१०॥ १३२	२५॥	३०	२५॥ १	१७॥ ३	११ ३५	१८ १५	१७ -५	१२ ६	४ ३६	१८ ६	२४॥	१०॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१६ ६+	१७ ३६	१८ ३५	२० -५	२४॥ -५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२३॥ १	१६॥ १४	१८ ४+	१८ ३४	२८ ३	३३ ०	२७॥ १	१६॥ १४	६॥ १३४	१३॥ ४२
	शत १	१४॥ ३	२०॥ १	२६॥	३१	२५ १	२६॥	२० ५+	१२ १३५	१२ -३५	६॥ ३६	१३ ६	१६ ६	२५॥	१९॥ १	११॥ १३	२०॥ १३६	२०॥ २३६	२५ ६	२६ +५	२१ २५	२६ ५+	२६॥	२०	१८ ३	२३॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१७ १४	१७॥ ४+	२४ ४+	३३	२८ ३	१६ ०१३	८ १३४०	१४॥ १४	१५॥ ४
	पूभा ।॥	१७॥ ३	२४॥ २+	१६॥ -१	२४ -१	३०	३०	२३॥ ५+	१७ ३५	१७ ३५	११॥ ३६	१९॥ ६	१२ १६	१८॥ १	२४॥	१६॥ ३	१५॥ १६	१५॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ १५-	२६ ५+	२० -१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५ १३	२१॥	२९॥	२३॥ +४	२२॥ +४	१८॥ -१४	२० -१	१६ १३	२८ ३	१६ ०४	२२ ०४	१६॥ ४२
मीन	पूभा ।	१४॥ ३४	२१॥ ४२	१६॥ -१४	१६ १	२५	२५	२४	१७॥ ३	१७॥ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१६॥ -१६	२२॥ ६+	१४॥ ३६	१६ ३	१६ ३	१८ १+	११ १६	१८॥ ६	१२॥ १६	१६ -१५	२५ +५	६॥ १३५	१४ १२	२८॥	२८॥	२८॥	२८॥	२४॥ १	१५॥ १४	७ १३४	१५ ३४	२८ ३	३३ ०	३०॥ +२
	उभा १	२३॥ ४+	१५॥ ३४	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७ ३	२५	२६॥	२६ ५	१६ ३५	२० १५	१७॥ -१६	१५ ३६	२५॥ ६+	२७	२६	९ १३२	२ १३६२	१६ ६	११॥ १६२	१८ १५२	१८ ३५	२० -१५	२३॥ -१	२१॥ ३	२६॥	२९॥	२६॥	१४॥ १३	५॥ १३४	२४॥ १४	२१ ४	३३	२८ ३	३३ ०
	रे १	२५ ६+	२३॥ ४+	१०॥ ३४	१३ ३	१७ ३	२६	२५	२४	२५	२४॥ ५	२६ ५	१३ ३५	१२ ३६	२२॥ ६+	२२॥ ६+	२४	२५	११	१२ ६	१० ३६	४ ३६	२०॥ ३५	२६ ५+	१ ५+	२६	२८॥	२०॥ ३	१६॥ ३	२१॥ ३	२२॥ -२	१३॥ ४२	१५॥ ४	१७॥ ४२	२६॥ २	३३	२८

ग्रह-मेलापक-विचार--वर की कुण्डली में जन्म लग्न, चन्द्रमा से यदि १।४।७।८।१२ इन स्थानों में मंगल पड़ा हो तो कन्या का नाशक जानना, यदि कन्या के जन्मलग्न अथवा चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ स्थानों में मंगल हो तो वर का नाशक होता है।

अपवाद--वर की कुण्डली में यदि पूर्वोक्त स्थानों में मंगल हो और कन्या की जन्म-कुण्डली में उन्हीं स्थानों में मंगल पड़ा हो तो उसका दोष नहीं होता। यदि एक की कुण्डली में मंगल हो दूसरे की कुण्डली में उन स्थानों में से किसी स्थान में शनि पड़ जाय तो भी मंगल का दोष दूर हो जाता है और जितने ग्रह कन्या की कुण्डली में अशुभ होकर पड़े हों उतने या उनसे ज्यादा वर की कुण्डली में अशुभ ग्रह पड़े हों तो शुभ जाने। इसी प्रकार कन्या के जन्मलग्न में ७।८ स्थान तथा वर का २।७ स्थान अवश्य विचार लेना चाहिए और दोनों का पंचम भाव विशेषता से देखना चाहिए। कन्या के सप्तमेश तथा शुक्र आदि शुभ ग्रहों के शुभ स्थान में होने तथा शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि होने से सौभाग्य योग का विचार अत्यावश्यक है। अथवा-वैधव्य योग वाली कन्या को शालिग्राम या कुम्भ से यथाविधि विवाह करके दीर्घायु वाले वर के साथ विवाह करे।

विवाहार्थ वर के गुण--कुल, शीलस्वभाव, अवस्था, शरीर का रूप, विद्या, धन, सनाथता ये सात गुण जिस वर में उत्तम मिलें उसको कन्या देनी चाहिए।

वर के दोष--दूरदेश वाला, द्वीपान्तरवासी, अत्यन्त समीपस्थ, जाति से पतित, आचारहीन नास्तिक, आजीविका से रहित अत्यन्त गरीब, अत्यन्त धनाढ्य, मूर्ख, शूर, मोक्ष की चाह वाला, संसार से विरक्त, वृद्ध, कन्या से छोटा ऐसे २ दोषों से युक्त वर कन्या नहीं देनी चाहिए।

विवाहार्थ कन्या के दोष--अत्यन्त चौड़े मस्तक वाली, कुबड़ी, लज्जाहीन, झूठ बोलने वाली, रोगग्रस्त, अंगहीन, अतिस्थूल अथवा अतिदुर्बल, लम्बी व पतली झगड़ालू अन्धी तथा बहिरी (बोली) ऐसे व किसी भी दोषवाली कन्या को सुखार्थी वर्जित करे।

गोत्रमें विवाह निषेध--समान गोत्रप्रवर में विवाह से उत्पन्न सन्तान चाण्डाल होती है तथा वर वधू जाति से च्युत हो जाते है तुल्य मातृगोत्र या तुल्य पितृगोत्र का सम्बन्ध भाई-बहन का सा होता है।

वाग्दान--(कुड़माई सगाई) से पहले नीचे लिखी बातों का विचार कर लेना जरूरी है सपिण्डता, ऋषिगोत्रशुद्धि, शील, सामुद्रिक तथा ज्योतिष-शास्त्र में कहे हुए कादिका मेलापक सारिणी में विचार लेना, और कुण्डली मिलान के समय निम्नलिखित पांच महादोष भी यत्नपूर्वक वर्जित करने चाहिए:--(१) दारिद्र्य, (२) मृत्यु, (३) वैधव्य, (४) व्यभिचार (५) सन्तान का अभाव।

वर-वरण-मुहूर्त्त--उ० ३, रो० कृ० पूर्वा ३, रिक्ता-अमावस्या को छोड़कर शुभ तिथि तथा शुभवार में चन्द्रबल देखकर शुभ लग्न में पुरोहित अथवा कन्या का भ्राता वर के घर पर उत्तर वा पश्चिमाभिमुख बैठकर पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशर चन्दनादि से तिलक लगाये। तदनन्तर वस्त्र यज्ञोपवीत तथा यथोचित द्रव्य से वर को सत्कृत करे और वर के मुख में एक छुवारा या मीठा, (गुड़, बतासा) देकर यह मन्त्र पढ़े "तस्मिन् कालेऽग्निसान्निध्ये स्नातः स्नाते ह्यरोगिणे। अव्यंगेऽपतितेऽक्लीबे पिता तुभ्य प्रदास्यति॥" यदि भ्राता से भिन्न पुरोहितादि वाग्दान करे तो "पिता तुभ्य प्रदास्यति" के स्थान में "दाता तुभ्य प्रदास्यति" कहे।

कन्या-वरण मुहूर्त--उ०षा०, स्वा०, श्र०, पूर्वा० ३, अनु०, ध०, कृ० विवाहोक्त नक्षत्रों में शुभ समय देखकर वस्त्रालंकार फलपुष्पों से कन्यावरण (सगाई) करना चाहिए।

विवाह काल-निर्णय--२० वर्ष पहले पुरुष का और ८ वर्ष से पहले तथा रजोदर्शन के पीछे कन्या का विवाह करने में दोष लगता है। अतः रजोदर्शन पूर्व (कुचों के प्रादुर्भाव से रजोदर्शन का अनुमान कर) ८ वर्ष से लेकर १६ वर्ष तक सर्वसम्मत श्रीपतिनिबन्धोक्त वर्षों में गुरुचन्द्र शुद्धि देखकर विवाह कर देवे। तद्यथा "**मासत्रयादूर्ध्वमयुग्म वर्षे युग्मे तु मासत्रयमेव यावत्। विवाहशुद्धिं प्रवदन्ति सन्तो वात्स्यादयो गर्गवराहमुख्याः**॥" द्विरागमन रजोधर्म होने पर करना योग्य है। यदि किसी योग्य वर के अन्वेषण में पिता के लगे रहने से देर हो जाने पर कन्या रजस्वला होने लगे तो माता पितादि को कोई विशेष दोष नहीं लगता। वात्स्यः--"**रजस्वलायाः कन्यायाः गुरु-शुद्धिं न चिन्तयेत्**। वशिष्ठः:-**तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहोमतः**॥ **विवाह लग्न समय कन्या ऋतुमती हो तो**--स्नापयित्वा तु तां कन्यामर्चयित्वा यथाविधि। युञ्जानामाहुतिं हुत्वा ततः कर्मणि योजयेत्॥

आजकल वर से कितनी कम उमर कन्या की हो--विवाह के समय पति की उमर को दो से भाग देवें जो आवे उसमें ६ जोड़ने से जो वर्ष आवे वह विवाह के समय पत्नी की उमर होनी चाहिए। यथा वर की उमर यदि ३० वर्ष की हो तो वधू की उमर २१ वर्ष की होनी चाहिए, यह सुखी विवाह का फार्मूला है।

विवाह के पहले कन्या का नाम बदलना--यदि कन्या और वर के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हों तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है, वर का नहीं। कन्या का नाम रखने के लिए मेलापक सारिणी में वर के नक्षत्र के नीचे जहां दोषांक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझ कर ऋण (—) का चिह्न लिखा हो उसी खाने में ऊपर गुण संख्या भी १८ से अत्याधिक मिले उसी के बाईं ओर जो नक्षत्र लिखा हो उसी अक्षर के अनुसार निर्दोष शुद्ध नाम रख लेना चाहिए। बहुत से विद्वान् कन्या संकल्प के समय "**वरस्य पञ्चमे कन्या, कन्यायाः नवमे वरः**" बोलते हुए नाम बदल लेते हैं। ऐसे नाम बदलना व्यर्थ है अतः पहिले सारिणी आदि देखें।

प्रयोग चक्रम्

सूर्य के नक्षत्र से प्रयोग प्रारम्भ नक्षत्र तक गणना कर।

स्थान	नक्षत्र	फलानि
शीर्षे	३	नार्थसिद्धिः
मुखे	३	सुमंत्रसिद्धिः
कंठे	३	मृत्यदायकः
हस्ते	४	शत्रुभीतिः
हृदि	४	इष्टाप्तिः
उदरे	३	धनहानिः
कटयां	३	साधनादर्थः
चरणे	४	साधनाद्धितः

मंत्र-दीक्षा मुहूर्त्त--अधिक मास रहित वै० श्रा० आश्वि० का० मार्ग० मा० फा० इन मासों में, शुक्लपक्ष की २।३।५।७।१०।१३।१५ तिथियों में तथा कृष्ण पक्ष की २।३।५ तिथियों में, शुभवारों में वृष० मि० सिंह० कं० तु० ध० मी० लग्न हो, लग्न से १।५।७।१० वें शुभग्रह हों, ३।६।११ वें पापग्रह हो तब मन्त्रदीक्षा लेना उत्तम है। **विशेष**--सत्तीर्थ पर, सूर्यचन्द्रग्रहण के समय तथा श्रावणीपर्व में मंत्रदीक्षा लेते समय, मास तथा पञ्चांगशुद्धि का विचार नहीं करना चाहिए।

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्त्त--वै० श्रा० आश्वि० का० मार्ग० मा० फा० मासों की २।६।७।१०।१३।१५ तिथियों में (अथवा या तिथिर्यस्य देवस्य तस्यां वा) रो० मृ० पुन० पु० उ० ३, ह० स्वा० वि० अनु० ज्ये० श्र० ध० श० रे० (स्वस्वामि नक्षत्रे वा) चन्द्रतारा अनुकूल होने पर गुरु शुक्रके उदय में शुभ लग्न से १२वां स्थान शुद्ध होने पर (विष्णुभक्तो स्थिरे शिवस्य चरे दुर्गायाः द्विस्वभावे लग्ने) प्रारम्भ करना श्रेष्ठ है।

लग्न-गण्डान्त—कर्क सिंह वृश्चिक धनु मीन और मेष के अन्त एवं आदि की आधी घड़ी लग्न गण्डान्त होता है। वह भी जन्म में भयप्रद होता है।

अथ विवाहमासाः—आचार्य चूडामणौ—माङ्गल्येषु विवाहेषु कन्या-संवरणेषु च। दश मासाः प्रशस्यन्ते चैत्र-पौष-विवर्जिताः॥ वपोमु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद् वदन्तीत्यपरो विमर्षः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र॥१॥केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया॥२॥

अथ जन्म-मासादिषु निषेधः—सबसे बड़े(जेठे)लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की(जेठी) के जन्ममास(अर्थात् जन्मतिथि से ३० दिन),जन्मनक्षत्र अथवा जन्म तिथि में विवाह करना शुभ नहीं है।द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं।**अत्यावश्यके परिहारः**—जातं दिनं दूषयते वसिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो—एक घर में दो शुभ काम करना मना है परन्तु अति आवश्यकता में ६ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग २ **मण्डप** गाड़कर वर और जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका है, उसी से दूसरा कार्य **न** करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मंडप गाड़ कर कार्य को करे।

अथ ज्येष्ठ विचारः—ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृतिका सूर्य को छोड़कर दानादिपूर्वक करें।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय—दो सगी बहिनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करे तो निस्सन्देह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट् मास तक कन्या का विवाह न करे और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करे अर्थात् पहले करले और मंगल कार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्धतिलतर्पण भी न करे और मुण्डन भी विवाह जनेऊ के पीछे न करे। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभ कार्य करले। वहां छः मास का विचार नहीं है। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी तक ही है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच—साहे चिट्ठी (कुकुम पत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चय हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से १ साल, स्त्री के मरण से ३ मास भाई व पुत्र के मरण से १॥ मास कुलवालों के मरण से २२॥ दिन तक कोई शुभ कार्य न करे। अति संकट में ३० दिन के बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करे।

विवाह के शुद्ध मुहूर्त पचांग के अन्त में दिये गये हैं। **उनमें से उत्तम मुहूर्त देखकर और उसी दिन वर की राशि में सूर्य चन्द्र देखिए और कन्या राशि से चन्द्र गुरु देखिए बस इसी को त्रिबलशुद्धि कहते हैं।** यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह-दिन उत्तम है। यदि रवि, गुरु पूज्य हो तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ट हो तो विवाह नहीं बनेगा ऐसा कहना। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु. सू. च.) शुद्धि प्रथम देखें। "अज-चाप-कुलीरस्थो जीवोप्यशुभगोचरः। अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु॥ बृहस्पतिः॥ अत्यावश्यकता में "द्विरर्च्यो द्वादशस्तुर्योऽथाष्टमस्त्रिगुणार्चनात्। उच्च उच्चांशके ग्राह्यः चन्द्रादष्टमगो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यःअरिसा भादिगोऽपि चेत्॥ (रणवीर ज्यो. नि.)

तुलाराशौ अपूज्यःरविः—धर्म-धी-धन-गतो दिवाकरस्तौलिराशि-जनितस्य शोभनः। **आवश्यके पूज्य रवि परिहारः**—गार्ग्याङ्गिरोवत्स वशिष्ठ गौतम पराशराद्या मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहः॥ (मु०प्र०सा०)।

विवाहादौ त्रिबल-शोधनम्

पूज्यगुरुः—१०।६।३।१
श्रेष्ठगुरुः—२।५।११।२।७
नेष्टगुरुः—४।८।१२
श्रेष्ठरविः—३।६।१०।११
पूज्यरविः—२।५।६
विशेष पूज्य रविः—१।७
नेष्टरविः—४।८।१२
नेष्टचन्द्रः—४।८
श्रेष्ठचन्द्रः—१।२।३।५।६।७।६।१०।११।१२

ध.मी.कर्क राशि में हो तो नेष्ट गुरु भी श्रेष्ठ है।

कन्या-वरयोः तैलादि-लापन (बन्न) दिन संख्या

राशि→	१	२	३	४	५	६	७	८	६	१०	११	१२
तैल सं.→	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

अथ विवाहे तिथि वार नक्षत्राणि

रो. मृ. उत्तरा ३. भ. ह. स्वा. अनु. मू. रे. एतद्वेध-रहितेषु शुभेऽह्नि अमाक्षय-रहितेषु तिथिषु कात्यायन-मते अश्वि. चि श्र. धनि. ष्ठास्वपि शुभम्॥

अथ विवाहाङ्गकृत्यारम्भ मुहूर्त—वर कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाह दिन से पहिले३।६।९इन दिनों को छोड़कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ.दलना पीसना,कूटना, मंगलकलशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगन सफाई भूषण घढ़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध मंगल स्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाह-मुहूर्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चबाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रांतिसाम्य और दग्धातिथि—इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सब का विचार करके इस वर्ष के विवाह मुहूर्त लग्न दिये हुये हैं। इन दसों दोषों में जो जिस मुहूर्त में है वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा में सूचित किये गये हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

(१) लत्तादोष-ज्ञानाय चक्रम्

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहा
१२	२२	३	७	६	५	८	९	लग्ननक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दिशा
धननाश:	भयम्	मृत्यु:	भयम्	बन्धुनाश:	कार्यहानि:	कुलक्षय:	मरण	फलम्

यथा—सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ. फा. का हो, सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ. फा. १२ वां हुआ यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें।

...अन्य ग्रहों का लेना भी जाने।

(२) पातदोष-ज्ञानाय चक्रम्

रो.	मृ	मघा	उफा	ह.	स्वा.	अनु	मू.	उषा.	उभा.	रे	वि.नक्षत्र	
आद्र पुन श पूफा चि मू.	मृ आ ज्ये ध म ह	अ मृ ज्ये पुष्य ह रे	कृ आ वि पूफा. उ.भा. पूभा.	भ मृ श पूभा. स्वा. म	कृ श्र ध पुष्य ह रे	अ आ उषा पूभा पूषा पूफा	रो ज्ये ध श्ले मृ. उभा	भ पुन श वि अनु उषा	भ श वि उफा. पूफा. मू	अ ज्ये ध म पूफा स्वा.	सूर्याधिष्ठित नक्षत्र	हर्षण वैधृति साध्य व्यतिपात गंड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।

(३) युति—जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता किन्तु श्रेष्ठ है। सू. म. शु. श. रा. के. की युति दारिद्र्य मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

(४) वेध दोष चक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.
अभि.	उषा.	पूषा.	रे.	उभा.	श.	भ.	पुन.	मृ.	ह.	उफा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेध दोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग करना चाहिए।

(५) जामित्र दोष चक्रम्

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा	अनु	मू.	उषा.	उभा.	रे.	वि.न.
अनु	ज्ये	ध.	पूभा.	उभा.	अ	कृ.	मृ.	पुन	उफा.	ह.	ग्रह नक्षत्र

विवाह लग्न से सातवें ग्रह होने पर जामित्र दोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र है और नीचे ग्रह नक्षत्र है, यानें १४वें नक्षत्र में पापग्रह का जामित्र दोष वर्जनीय है।

(७) एकार्गल-दोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड ये योग हो और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

(८) उपग्रह

सूर्य के नक्षत्र से ५वें, ७वें, ८वें, १०वें, १४वें, १५वें, १८वें, १९वें, २१वें, २२वें, २३वें, २४वें और २५वें नक्षत्रपर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

(९) स्थूल-क्रांतिसाम्य-दोष चक्रम्

मे०	वृ०	मि०	क०	क०	तुला
सिंह०	म०	ध०	वृश्चि.	मी०	कु०

नीचे और ऊपर की राशि पर सूर्य एवं चन्द्रमा हो तो स्थूल रूप से क्रांतिसाम्य दोष होता है यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे मेष के सूर्य, सिंह के चन्द्रमा में वा सिंह के सूर्य, मेष के चन्द्रमा में। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित है, जिसका निर्णय महापात गणित से करना चाहिए।

(६) बाणज्ञानाय सुलभ चक्रम्

बाण नाम	गतांशाः प्रति राशौ अर्कस्य	कर्मसु वर्ज्याः	वारेषु वर्ज्याः	समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोग	८।१७।२६	व्रतबन्ध	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
वह्नि	२।११।२०।२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृप	४।१३।२२	नृपसेवायां	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चौर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१६।२८	विवाहे	बुधे	संध्ययोः वर्ज्यम्

(१०) दग्धातिथि दोषः

९ १२	२ ११	४ १	६ ३	९ ८	१० ७	सूर्य राशयः
२	४	६	८	१०	१२	तिथयः

इन संक्रातियों में ये तिथियां दग्धा होती है। विशेषतः ये मध्य प्रदेश में ही वर्ज्य है। —कश्यप

भुजग क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेध तथैव च। लग्नहीन विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्॥

लत्तादि-दोषाणां परिहार वाक्यानि—लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्त) देशे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्रे, बागर) जांगले (फिरोजपुर भटिण्डा प्रान्त)। एकार्गल च काश्मीरे वेध सर्वत्र वर्जयेत्॥ उपग्रहर्क्षं कुरु वाल्हीकेषु (आगरा प्रान्त) कलिंगबंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम्। सौराष्ट्र (काठियावाड़) शाल्वे (उज्जैन प्रान्ते) च लत्तित भ त्योजेत्तुविद्ध किल सर्वदेशे॥ युतिदोषो भवेद् गौडे (बंगाले) यामित्रस्य च यामने (मथुरादि प्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः॥

विशेष परिहार—चित्रां गते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धा। पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजगपातः॥

युति-परिहार—स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः। युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा॥ **अत्यावश्यके वेधपरिहारः**—पादमेकं शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः (नारदः)॥ ग्रह प्रथम चरण में हो तो दूसरे नक्षत्र के चतुर्थ चरण में वेध होता है, यदि चतुर्थ चरण में हो तो प्रथम चरण विद्ध होता है। द्वितीय में हो तो तृतीय, तथा तृतीय चरण में ग्रह हो तो द्वितीय चरण विद्ध होता है। आवश्यकता में चरण मात्र का त्याग किया जाता है। भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः॥ **अस्थापवादः**—ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। शुक्ला चन्द्रेण युक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते। —एकार्गलोपग्रहपात लत्ता-जामित्रकर्तयुं दग्धास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्क बलोपपन्ना लग्ने यथार्कोऽभ्युदये तु दोषाः॥ मु.चि.।

उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः।
केन्द्रसंस्थः सितो वाऽपि पन्नगान् गरुडो यथा॥

विवाहे लग्न-शुद्धि चक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु
चं. पाप	०	शु.	रा.	०	चं. शु लग्नेशः	सर्वे	चं.म शुभाः लग्नेशः	०	मं.	०	श.	त्याज्याः
चं म.	कुलिकं क्रान्तिसाम्यञ्च				चं.	मं.	चं.मं.	विषभञ्च				गोधूली त्याज्याः

लग्न भंग-योगा—व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे च सर्वे (अस्तेऽब्जगुरुसमौ)॥ वर्गोत्तम विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादि वृद्धिदः॥ दम्पत्योरष्टम लग्नं स्वष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः॥ गन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः. बादरायण —मासशून्याह्वयास्तारा राशयो नृधिरादय।.गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः।

कर्तरी दोष:—लग्नस्य पष्ठायगयोश्च साध्वोः मा कर्तरी स्याद्जुवक्रगत्योः। तावच्च शीघ्रौ यदि वक्रचारी न कर्तरी चेति पितामहोक्तः॥ "इय कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या" केन्द्राङ्कितलग्नदोषाणां परिहारः—पापौ कर्तरीकारकौ रिपुगृहनीचास्तगौ कर्तरी दोषो नैवं सितेऽरिनीचगृहगे तत्पष्ठदोषोऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे—दोषाश्च बहवः सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह॥ अपवादान्तरम्—उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा॥ मुहूर्तलग्न-षड्वर्गकुनवांश ग्रहोद्भवा। ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगः शशी॥ अब्दायनर्तुभा-सोत्था पक्षतिथ्यर्क्ष सम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रेलग्नादेकादशालये। सर्वग्रहकृत रिष्टमेकोपि विलयं नयेत॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम्। ज्ञं न विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिराः॥ स्मरण रहे, कि—पूर्वोक्त अपवाद वाक्यो मे सप्तम रहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद स्थानानि

र.	च.	म	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	केतु	ग्रहाः	मुहूर्त गणपतौ
३ ६ ८ ११	२ ३ ११	३ ६ ११	१ २ ३ ४ ५ ६ ९ १० ११	१ २ ३ ४ ५ ६ ९ १० ११	१ २ ४ ५ ९ १० ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	स्थानानि	लग्नं शुभं विवाहे स्याद्दश विशोपकाधिकम्।
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विशोपका बलम्

अथ गोधूलि लग्न विचार—लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै मत्रं वर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति। लग्ने विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते॥ मार्ग.. माघ.

फाल्गुन मे सध्या समय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चै. वै. मे गौओ की धूली से आकाश आच्छादित होने पर. ज्येष्ठ आषाढ मे सूर्य आधा अस्त होने पर. श्रा. भा. अश्वि. का. में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है।

गोधूलिके त्याज्य दोषः—कुलिकं क्रातिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तथा गोधूलिके त्याज्यः पञ्चदोषैस्तु दूषितः। "अस्त याते गुरुदिवसे सौरे सार्के" अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्य अस्त मे पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योकि सूर्य अस्त हो जाने मे कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्तः—कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र योगो मे संकीर्ण जाति वालो का विवाह धन. पुत्र. आयु. प्रीति लाभ देता है। ऐसा शौनकादि मुनि कहते है।

पुनर्विवाहे (रीत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्।

३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग	श्री	उन्नति	फल

अन्यच्च—सूर्यभात् ४।११।१८।२५ सद्यकसाभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्यु। अत्र तिथि-मासवेध भृगु-गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीयः।

वधू प्रवेश का मुहूर्त—जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहले आती है, वह वधूप्रवेश कहा जाता है। विवाह से १६ दिन के भीतर सम दिनों मे अथवा ५, ७, ९वे दिन, इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनो मे, एक वर्ष के भीतर विषम मास मे और एक वर्ष के उपरान्त ३रे, ५वे वर्ष मे भी स्थिर लग्न मे वधूप्रवेश शुभ है। ५ वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त मे हो सकता। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनो मे तिथ्यादि पचांगशुद्धि चन्द्रबल गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना। व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा। अमामक्रांति-तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत्॥ रे. अश्वि. रो. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा ३, पुष्य. अनु. इन नक्षत्रो मे और च. बु. बृ. शु. श. इन वारो में १। २। ३। ५। ६। ७। ८। १०। ११। १२। १३। १५ तिथियो मे ५। ८। ११ लग्नों मे चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधूप्रवेश शुभ है।

वधू-प्रवेश-समयः—वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः॥

विवाहतः प्रथम वर्ष वधू-निवास फलम्—विवाह के बाद आषाढ मास मे कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को. क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास मे पति को नाश करती है। विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नही।

द्विरागमन का मुहूर्त—प्योके (पितृगृह) से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते है। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक. कुम्भ, मेष के १४ में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम. बुध. गुरु. शुक्रवार को २, ३, ६, ७ या १२ वी राशि के लग्न में ह. अश्वि. पु. अभिजित्. तीनो उत्तरा. रो. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मू. मृ. रे. चि. अनुराधा नक्षत्रों मे शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेष:—द्विरागमः षोडशवासरान्ते एकादशाह् समवासरेषु । न चात्र कृश न निर्धिर्नयोगा न वारशुद्धयादि विचारणीयम् ॥

मतान्तरेण शुक्रस्य सम्मुखे दक्षिणे निषेधः—जिस दिशा मे शुक्र उदय हो, वह दिशा सम्मुख होती है । अथवा मेष. सिंह. धनु मे शुक्र हो तो पूर्व मे; वृष. कन्या. मकर मे हो तो दक्षिण मे; मिथुन. तुला. कुम्भ मे हो तो पश्चिम में कर्क. वृश्चिक. मीन मे हो तो उत्तर में शुक्र का वास माना जाता है । ऐसे सम्मुख या दक्षिण शुक्र मे यदि युवति वधू जावे तो वन्ध्या हो । छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो । गर्भिणी जावे तो गर्भ का मुख न पावे । यदि ऐसे समय राजविद्रोह राजपीडन आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पडे एवं विवाह सम्बन्धी यात्रा मे या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध मे जाना पडे तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नही होता । यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नही. क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है ।

नोट—यात्रा के समय शुक्र की पूर्व पश्चिम कपाट मे स्थिति के अनुसार ही पूर्व पश्चिम समझें ।

विशेष: सिंहस्थे वा मृगे शुक्रे सम्मुखेऽस्तगतेऽपि वा । शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे ॥ अत्यावश्यकेऽभिमुख शुक्रदोष-नाशाय शान्तिः—राजते वाऽथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः । शुक्लपुष्पाम्बरयुते श्वेत-तण्डुल-पूरिते ॥ निधाय राजत शुक्र शचिमुक्ता-फलान्वितम् । महाश्वेतगवा युक्त सामगाय निवेदयेत् ।

प्रथम स्त्रीसंगम मुहूर्त—रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त ४ रात्रि के बाद समरात्रि मे, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि)रो. मृ. पुष्य ह. चि. अनु. ध. उत्तरा-३. रिक्ता-अमावस रहित तिथि मे शुभवार. रात्रि के प्रथम पहर को छोडकर शुभ समय मे चित्त को प्रसन्न कर प्रथम दिन स्त्री संगम करे । **मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्तव्य**—स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करे. आदर-सत्कार करे । विशेष गुप्त बात न कहे । और विशेषाधिकार भी न दे,क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि मे नही आ सकती अपवाद मे एक दो हो सकती है । प्रभकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है. उसे समझना चाहिए । उनका दिल और दिमाग तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है । पशु-पक्षियों मे भी तोता. चिडा तथा बंदर आदि अपनी स्त्री पर पूर्ण प्रभुत्व रखते है ।

नववध्वाः पाक-कर्म मुहूर्तः—द्विरागमनोत्तर म. उत्तरा. पुष्य. कृ. ज्ये. श्र. ध. श. रो. चि. एषु नक्षत्रेषु शुभावसरे (रविभौमवर्जिते) रिक्ताक्षयरहित तिथौ, २।५।८।११ लग्नेषु. चतुर्थाष्टशुद्धे मरणभावे. च बलान्विते सति पाककर्म शुभम् ।

सधवा-स्त्रीणां वस्त्र-सुवर्ण-रत्नभूषण-विधारण मुहूर्तः ह. चि. स्वा. अनु. धनि. रे. अश्वि. एषु भेषु बु. गु. शु. वारेषु रिक्तामावस्या-रहित तिथिषु, नूतनवस्त्र सौवर्णरत्न रजतदन्तादिभूषणानां धारण प्रशस्तम् ॥

चूडीचक्रम्—सूर्य-नक्षत्राद् गणना ८ अशुभ । ११ तक श्रेष्ठ. १३ तक नेष्ट. २० तक श्रेष्ठ. २२ तक नेष्ट २६ तक श्रेष्ठ. २७ तक नेष्ट । गुरुशुक्रोदय मे शुभ वार भी हो ।

वस्त्रधारणे विशेष:—विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्ष्मापालेन समर्पितम् । निन्द्येऽपि धिष्ण्ये वारादौ धार्यंञ्चेनवाम्बरम् ।

भूषण-घट्टन मुहूर्त—ह. अ. पुष्य. अभि. स्वा पुन. श्र. ध श. उत्तरा ३. रो. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहित तिथौ. शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषण कार्यम् ॥

दुकान खोलने का मुहूर्त :—ह. चि. रो. रे. उत्तरा ३, पुष्य. अश्वि. अभि. इन नक्षत्रों मे ४।६।१४।३० इन तिथियों को छोडकर अन्य तिथियो मे. मंगलवार को छोडकर अन्य वारो मे. कुम्भ लग्न को छोड कर अन्य स्थिर लग्नों में. २।१०।११ स्थानों मे शुभ ग्रह बैठे हों. ३।६ मे पापग्रह हों, ८।१२ वां स्थान पाप रहित हो. अपनी शुभ दशा भी चलती हो तो दुकान करना शुभ है. चन्द्र लग्न मे हो तो अत्यन्त शुभ है ।

भर्तृ गृहात्पितृगृहागमन मुहूर्त:—पूर्वा ३ भ. मृ. म. ज्ये. आ. आश्ले. एतद्भिन्नेषु. भेषु चं. बु. शु. वारेषु सत्तियौ शुभलग्ने कुपांगादिराहित्ये प्रशस्तः ॥

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्तः—भ. आर्द्रा. आश्ले. म. पू. ३. ज्ये. मू. इन नक्षत्रों को छोड कर शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है ।

हट्टचक्र—सूर्य नक्षत्र मे दुकान खोलने के दिन तक नक्षत्र अभिजित सहित गिनकर चक्र से शुभाशुभ फल जाने ।

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैऋत	मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोर भय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाक्रम (नौकरी) मुहूर्तः—रिक्ता-अमा. रहित शुभ तिथि. र. च. बु. गु. शु. वार अश्वि. मृ. चि. ह. पुष्य. अनु. रे. नक्षत्र. शुभ ग्रह लग्न मे हो तथा चन्द्र शुद्धि देखकर नौकरी करना चाहिये । स्वामी और सेवक मे परस्पर राशि स्वामी मे मैत्री हो तथा गुण मेलापक चक्र मे गुण योग २० से ऊपर हो तो नौकरी करनी श्रेष्ठ रहेगी ।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ-मुहूर्तः अश्वि. रो. मृ. पुन. उत्तरा ३. ह. चि. अनु. श्र. रे. एषु भेषु रिक्तामारहित तिथौ. सू. च. बु. वृ. श. वारेषु शुभयुते शुभ लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्ययाष्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगः शुभः स्यात् ।

द्रव्यप्रयोग मुहूर्त: पुन. स्वा. मृग. रे. चि. ऽनु. वि. पुष्य श्र. ध. श. अश्वि. एषु नक्षत्रेषु. १।४।७।१० लग्नेषु ६।५।८ शुद्धि रहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः । अत्रावसरे ९।५ शुभ ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः ।

ऋण लेने के लिए वर्जित काल—मंगलवार संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग,हस्त-नक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो । मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है । बुध. वार को धन नहीं देना चाहिए । कृ. रो. आर्द्रा. श्ले. उ. ३, वि. ज्ये. मू. नक्षत्रो मे भद्रा व्यतिपात और अमावस मे गया धन फिर मिलता नही या झगडे आदि पर उतारू होना पडता है ।

ईंट के भट्टा में आग देने का मुहूर्त—शाम का समय शुभ चौघडिया तथा मंगल रवि और शनैश्चर वार शुभ माने जाते है । बुधवार नई ईंट बनाने मे विशेष शुभ है ।

श्रीकाशीनाथ-मते क्रयविक्रय मुहूर्तः—पुष्य.. पू. भा., अनु. श्र. ह. म. स्वा. उत्तरा ३. आश्ले. रे. एषु भेषु, सत्तिथौ शुभदिने उत्तमशकुन विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम् ।

वस्तु खरीदने का नक्षत्र—रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि.. वारो मे बुध और रवि श्रेष्ठ माने गये है ।

वस्तु बेचने का नक्षत्र—पू. फा.. पू. भा., पू. षा., वि. कृ., श्ले., म.. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये है ।

नोट—बेचने के नक्षत्रो मे खरीदना और खरीदने के नक्षत्रो में बेचने वालो को१५फीसदी नुकसान रहेगा. इसमे संशय नही । पट्ट में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी

लग्न भंग-योगा.—व्यये शनि खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ता:। लग्नेट् ...विग्लो च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे च सर्वे (अस्तेऽब्जगुरुसमो)॥ वर्गोत्तम विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रद। वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांश: पुत्रपौत्रादि वृद्धिद:॥ दम्पत्योरष्टम लग्न स्वष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नगत: सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रद॥ सम्बन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्याग:. बादरायण —मासशून्याह्वयास्तारा राशयो वधिरादय।.गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिता:॥

कर्तरी दोष:—लग्नस्य पष्ठाग्रगयोश्च साध्वो: मा कर्तरी स्याद् जुवक्रगत्यो। तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारी न कर्तरी चेति पितामहोक्ति:॥ "इय कर्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या" केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहार:—पापौ कर्तरीकारकौ रिपुगृहनीचास्तगौ कर्तरी दोषो नैवं सितेऽरिनीचगृहगे तत्पष्ठदोषोऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रि:फाष्टारिदोषोऽपि न॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे दोषाश्च बहव: सन्ति गुणा: स्वल्पा: कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणै: सह॥ अपवादान्तरम्—उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरु। केन्द्रसंस्थ: सितो वापि प नगान्गरुडो यथा॥ मुहूर्तलग्न-षड्वर्गकुनवाश ग्रहोद्भवा। ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशग: शशी॥ अब्दायनर्तुभा-सोत्था पक्षतिथ्यर्क्ष सम्भवा:। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसस्थे शुभग्रहे॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रेलग्नादेकादशालये। सर्वग्रहकृत रिष्टमेकोपि विलयं नयेत॥ बलवान् केन्द्रग: सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम्। द्यून विहाय दैत्येज्य: सहस्र लक्षमंगिरा:॥ स्मरण रहे, कि—पूर्वोक्त अपवाद वाक्यो मे सप्तम रहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद स्थानानि

र.	च.	म	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	केतु	ग्रहाः	मुहूर्त गणपतौ
३ ६ ८ ११	२ ३ ११	३ ६ ११	१ २ ३ ४ ५ ६ ८ १० ११	१ २ ३ ४ ५ ६ ९ १० ११	१ २ ४ ५ ८ १० ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	३ ६ ८ ११	स्थानानि	लग्नं शुभं विवाहे स्याद्दश विशोपकाधिकम्।
३॥	४	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विशोपका बलम्

अथ गोधूलि लग्न विचार—लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै सर्व वर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति। लग्ने विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते॥ मार्ग.. माघ. फाल्गुन मे संध्या समय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चै. वै. में गौओ की धूली से आकाश आच्छादित होने पर. ज्येष्ठ आषाढ मे सूर्य आधा अस्त होने पर. श्रा. मा. अश्वि. का. में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है।

गोधूलिके त्याज्य दोषः- कुलिक क्रातिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तथा गोधूलिके त्याज्य पञ्चदोषैस्तु दूषित:। "अस्त याते गुरुदिवस सौरे सार्के" अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्य अस्त में पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिक मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्तः—कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र योगों मे संकीर्ण जाति वालो का विवाह धन. पुत्र. आयु. प्रीति लाभ देता है। ऐसा शौनकादि मुनि कहते है।

पुनर्विवाहे (रौत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्।

३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग	श्री	उन्नति	फल

अन्यच्च - सूर्यभात् ४।११।१८।२५ सङ्ख्यकसाभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्यु। अत्र तिथि-मासवेध भृगु-गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीय।

वधू प्रवेश का मुहूर्त—जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहले आती है वह वधूप्रवेश कहा जाता है। विवाह से १६ दिन के भीतर सम दिनों मे अथवा ५, ७, ९वे दिन, इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में, एक वर्ष के भीतर विषम मास मे और एक वर्ष के उपरान्त ३रे, ५वे वर्ष मे भी स्थिर लग्न मे वधूप्रवेश शुभ है। ५ वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनो मे तिथ्यादि पचांगशुद्धि चन्द्रबल गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना। व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा। अमामक्राति-तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत्॥ रे. अश्वि. रो. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. म. मू. उत्तरा ३, पुष्य. अनु. इन नक्षत्रो मे और च. बु. बृ. शु. श. इन वारो में १। २। ३। ५। ६। ७। ८। १०। ११। १२। १३। १५ तिथियो मे ५। ८। ११ लग्नों मे चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधूप्रवेश शुभ है।

वधू-प्रवेश-समयः-वधूप्रवेशो न दिवा प्रशस्त: राजप्रवेशो न निशि प्रशस्त।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेश: सत्कीर्तिद: स्यात्त्रिविध: प्रवेश:॥

विवाहतः प्रथम वर्ष वधू-निवास फलम्- विवाह के बाद आषाढ मास मे कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को. क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ मे ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को, अधिक मास मे पति को नाश करती है। विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नही।

द्विरागमन का मुहूर्त—प्योके (पितृगृह) से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक. कुम्भ, मेष के १४ में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब सोम. बुध. गुरु. शुक्रवार को २, ३, ६, ७ या १२ वी राशि के लग्न में ह. अश्वि. पु. अभिजित्. तीनो उत्तरा. रो. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मू. मृ. रे. चि. अनुराधा नक्षत्रों मे शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेष:—द्विरागमे षोडशवासराग्ने एकादशाहे समवासरेषु । न चात्र कृष्ण न निधिर्नयोगो न वारशुद्धचादि विचारणीयम् ॥

मतान्तरेण शुक्रस्य सम्मुखे दक्षिणे निषेधः—जिस दिशा मे शुक्र उदय हो, वह दिशा सम्मुख होती है । अथवा मेष. सिंह. धनु मे शुक्र हो तो पूर्व मे; वृष. कन्या. मकर मे हो तो दक्षिण मे; मिथुन. तुला. कुम्भ मे हो तो पश्चिम में कर्क. वृश्चिक. मीन मे हो तो उत्तर मे शुक्र का वास माना जाता है । ऐसे सम्मुख या दक्षिण शुक्र मे यदि युवति बधू जावे तो वन्ध्या हो । छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो । गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे । यदि ऐसे समय राजविद्रोह राजपीडन आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुख से यात्रा करनी पडे एवं विवाह सम्बन्धी यात्रा मे या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध मे जाना पडे तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नही होता । यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा मे भी जावे तो दोष नही, क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है ।

नोट—यात्रा के समय शुक्र की पूर्व पश्चिम कपाट मे स्थिति के अनुसार ही पूर्व पश्चिम समझें ।

विशेष:—सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तगतेऽपि वा । शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे ॥ अत्यावश्यकेऽभिमुख शुक्रदोष-नाशाय शान्तिः—राजते वाऽथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः । शुक्लपुष्पाम्बरयुत श्वेत-तण्डुल-पूरिते ॥ निधाय राजत शुक्र सचिमुक्ता-फलान्वितम् । महार्ण्वेतगवा युक्त सामगाय निवेदयेत् ।

प्रथम स्त्रीसंगम मुहूर्त—रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त ४ रात्रि के बाद समरात्रि मे, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो. मृ. पुष्य ह. चि. अनु. ध. उत्तरा-३. रिक्ता-अमावस रहित तिथि मे शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोडकर शुभ समय मे चित्त को प्रसन्न कर प्रथम दिन स्त्री संगम करे । **मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्तव्य**—स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करे, आदर-सत्कार करे । विशेष गुप्त बात न कहे । और विशेषाधिकार भी न दे, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि मे नही आ सकती अपवाद मे एक दो हो सकती है । प्रभकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए । उनका दिल और दिमाग तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है । पशु-पक्षियों मे भी तोता, चिडा तथा बंदर आदि अपनी स्त्री पर पूर्ण प्रभुत्व रखते है ।

नववध्वाः पाक-कर्म मुहूर्तः—द्विरागमनोत्तर म. उत्तरा. पुष्य. कृ. ज्ये. श्र.ध. श. रो. वि. एषु नक्षत्रेषु शुभावसरे (रविभौमवर्जिते) रिक्ताक्षयरहित तिथौ, २।५।८।११ लग्नेषु चतुर्थाष्टशुद्धे मन्मथभावे, च बलान्विते सति पाककर्म शुभम् ।

सधवा-स्त्रीणां वस्त्र-सुवर्ण-रत्नभूषण-विधारण मुहूर्तः—ह. चि. स्वा. अनु. धनि. रे. अश्वि. एषु भेषु बु. गु. शु. वारेषु रिक्तामावस्या-रहित तिथिषु, नूतनवस्त्र सौवर्णरत्न रजतदन्तादिभूषणाना धारण प्रशस्तम् ॥

चूडीचक्रम्—सूर्य-नक्षत्राद् गणना ८ अशुभ । ११ तक श्रेष्ठ. १३ तक नेष्ट. २० तक श्रेष्ठ २२ तक नेष्ट २६ तक श्रेष्ठ, २७ तक नेष्ट । गुरुशुक्रोदय मे शुभ वार भी हो ।

वस्त्रधारणे विशेष:—विप्रादेशात्स्वीढाहे क्ष्मापालेन समर्पितम् । निन्द्योऽपि धिष्ण्ये वारादौ धार्यश्चैव नवाम्बरम् ।

भूषण-घट्टन मुहूर्त—ह. अ. पुष्य. अभि. स्वा पुन. श्र. ध श. उत्तरा ३. रो. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहित तिथौ. शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषण कार्यम् ॥

दुकान खोलने का मुहूर्त:—ह. चि. रो. रे. उत्तरा ३, पुष्य. अश्वि. अभि. इन नक्षत्रो मे ४।६।१४।३० इन तिथियों को छोडकर अन्य तिथियों मे, मंगलवार को छोडकर अन्य वारो मे, कुम्भ लग्न को छोड कर अन्य स्थिर लग्नों मे, २।१०।११ स्थानो मे शुभ ग्रह बैठे हो, ३।६ मे पापग्रह हो, ८।१२ वा स्थान पाप रहित हो, अपनी शुभ दशा भी चलती हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र लग्न मे हो तो अत्यन्त शुभ है ।

भर्तृ गृहात्पितृगृहागमन मुहूर्त—पूर्वा ३ भ. मृ. म. ज्ये. आ. आश्ले. एतद्भिन्नेषु भेषु चं. बु. गु. शु. वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुपांगादिराहित्ये प्रशस्तः ॥

घोडे पर चढने का मुहूर्तः—भ. आर्द्रा. आश्ले. म. पू. ३. ज्ये. मू. इन नक्षत्रों को छोड कर शेष नक्षत्रों मे रविवार को शुभ है ।

हट्टचक्र—सूर्य नक्षत्र मे दुकान खोलने के दिन तक नक्षत्र अभिजित सहित गिनकर चक्र से शुभाशुभ फल जाने ।

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैऋत	मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोर भय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाक्रम (नौकरी) मुहूर्तः—रिक्ता-अमा. रहित शुभ तिथि. र. च. बु. गु. शु. वार अश्वि. मृ. चि. ह. पुष्य. अनु. रे. नक्षत्र. शुभ ग्रह लग्न मे हो तथा चन्द्र शुद्धि देखकर नौकरी करना चाहिये । स्वामी और सेवक मे परस्पर राशि स्वामी मे मैत्री हो तथा गुण मेलापक चक्र मे गुण योग २० मे ऊपर हो तो नौकरी करनी श्रेष्ठ रहेगी ।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ-मुहूर्तः अश्वि. रो. मृ. पुन. उत्तरा ३. ह. चि. अनु. श्र. रे. एषु भेषु रिक्तामारहित तिथौ. सू. च. बु. वृ. श. वारेषु शुभयुते शुभ लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्ययाष्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगः शुभः स्यात् ।

द्रव्यप्रयोग मुहूर्तः पुन. स्वा. मृग. रे. चि. ऽनु. वि. पुष्य श्र. ध. श. अश्वि. एषु नक्षत्रेषु. १।४।७।१० लग्नेषु ६।५।८ शुद्धि रहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः । अत्रावसरे ९।५ शुभ ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः ।

ऋण लेने के लिए वर्जित काल—मंगलवार संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्त-नक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो । मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है । बुध-वार को धन नही देना चाहिए । कृ. रो आर्द्रा श्ले. उ. ३. वि. ज्ये. मू. नक्षत्रों मे भद्रा व्यतिपात और अमावस मे गया धन फिर मिलता नही या झगडे आदि पर उतारू होना पडता है ।

ईंट के भट्टा में आग देने का मुहूर्त—शाम का समय शुभ चौघडिया तथा मंगल रवि और शनैश्चर वार शुभ माने जाते है । बुधवार नई ईंट बनाने मे विशेष शुभ है ।

श्रीकाशीनाथ-मते क्रयविक्रय मुहूर्तः—पुष्य.. पू. भा., अनु. श्र. ह. म. स्वा. उत्तरा ३. आश्ले. रे. एषु भेषु, सत्तिथौ शुभदिने उत्तमशकुन विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम् ।

वस्तु खरीदने का नक्षत्र—रे. शत. अश्वि. स्वा. श्र. चि.. वारों मे बुध और रवि श्रेष्ठ माने गये है ।

वस्तु बेचने का नक्षत्र—पू. फा.. पू. भा., पू. षा., वि. कृ., श्ले., म.. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये है ।

नोट—बेचने के नक्षत्रों मे खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालो को १५ फीसदी नुकसान रहेगा. इसमे संशय नही । पट्ट में भी प्रथम वार व्यापार करने वाले व्यापारी

अवश्य ध्यान करे तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहा तक सच है।

नालिश (अर्जी) का मुहूर्त—४।६।१४ तिथि हों, म.श.वार हो. कृ.आर्द्रा.भ.अ.श्ले म. ज्ये. मू. वि. पूर्वा ३ नक्षत्र हों, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

ग्राम-नक्षत्र से वासकर्ता के नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करे		
स्थान-नक्षत्र-फलम्		
मस्तक	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनै.स्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

गृहादि निर्माण में आय विचार

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई चौडाई को परस्पर गुणा कर आठ का भाग देवे. जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वजा, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ स्वान ५ वृषभ. ६ गदर्भः. ७ हस्ती. ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए राजवल्लभ ग्रन्थानुसार। ३२ हाथ लम्बे चौडे घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही! ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है।

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई चौडाई के गुणन) को आठ से गुणा कर २७ का भाग दे। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जाने। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवे। शेषांक तुल्य व्यय जाने। आय से व्यय कम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती मे गृहादि बनाना हो तो भूमिपूजनपूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा, एक हाथ लम्बा, एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर उसको जल से भर देवे। प्रातःकाल उसको देखे। यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभपरीक्षा

सूर्य राशि के अनुसार खात दिशा देख मकान की नीव को इतना गहरा खोदे कि दूसरी मिट्टी निकल आवे। अथवा साढ़े तीन हाथ गहरी खोदे। खोदते समय जो जमीन में पत्थर वा कान्नी ईंट निकले तो धन आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धन नाश हो और जो हाड राख कोला बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा हो।

गृहारम्भ मुहूर्त वैशा. श्रा. मार्ग. माघ. फाल्गुन और सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम है। २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं.बु.गु.शु.श. वारो मे, रो.मृ. चित्रा.ह.स्वा.अनु. उत्तरा ३. ध.श.रे. वेध रहित नक्षत्रों में. २।३।५।६।८।११।१२ लग्नों में, पञ्चबाण और भूमिशयन से रहित दिनो मे लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानो में शुभग्रह और ३।६।११ वें स्थान मे पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ मे वत्स चक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाह
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्ति
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा. अनन

विशेष—पुष्य. उ. ३ रो.म. आश्ले पू. षा. इनमे से जिस पर बृहस्पति हो उस नक्षत्र मे और बृहस्पति को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो. ह. अ. उफा. चि. इनमे से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र मे बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते है त्रि. बु. चि. ध. श. आर्द्रा इनमे से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र मे और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

प्रसुप्त-भूमि-ज्ञानम्—संक्राति मिति दिन, पाचवें सप्तम नवम जोय। दस इक्कीस २४में षट् दिन पृथ्वीसोय। **तत्रात्यावश्यके क्रमात्** ५।११।७।६।२।१०।एताःघटिका भूमिकर्मण्यवश्य वर्जनीयाः। अन्यच्च सूर्य के नक्षत्र से ५।७।९।१२।१९।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वीशयन के कारण मकान की नीव, तडाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता। (१३३)

गृहमध्ये कूप-विचार :

मध्ये	ई.	पू.	आ.	द.	नैं.	प.	उ.	वा.
अर्थहानि	सुपुष्टिः	सुप्राप्ति	पुत्रनाशः	स्त्रीनाशः	गृहेशनाशः	संपत्	सुखम्	शत्रुभयम्

नक्षत्रवारौ तिथिसंप्रयुक्तौ वेदाहतं तद्गणकेन कार्यम्। एकावशिष्टे च जल हि नागे द्वाभ्यां च शेषे सलिलं च स्वर्गे। त्रिशून्यशेषभुवि संस्थितं च भूसंस्थित सुष्ठु वदन्ति विज्ञाः॥

अथ चुल्लिचक्रविचार :

सूर्य के नक्षत्र से ४ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर-सुख भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक : २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डितजन विचार करे। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों मे चूल्हा तदूर बनावे तथा इन्ही शुभ नक्षत्रों मे प्रथम अग्नि जलावे।

नूतन-गृहप्रवेश मुहूर्त

माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठमासेषु शोभनः। प्रवेशो माध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग.) कार्तिकमासयोः॥ (यहां चान्द्रमास लेना) उत्तरा ३. अनु. रो. मृ चि. रे. इन नक्षत्रो में रिक्तामा रहित तिथियों में चं. बृ. श. इन वारो मे २।५।८।११ लग्नों में अत्यावश्यकता में ३।६।९।१२ लग्न मे भी. लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभग्रह हों. ३।६।११ में क्रूर हों. १।६।८।१२ में चन्द्रमा न हो. चौथा ८वां स्थान शुद्ध हो.जन्म लग्न या जन्म राशि से ८वीं राशि लग्न में न हो. चन्द्र तारा शुभ हो और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो तो आगे गौ कन्या जलपूर्ण पुष्पमाला युक्त कलश शखध्वनि मंगल गान के साथ दम्पति को गृहप्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त—पुराने अर्थात् जीर्ण या तृण कुटीर अथवा.अग्नि-वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वै. श्रा. का. मार्ग फा. मास मे शत. पुष्य. स्वा. और ध. नक्षत्रों में तथा गुरु शुक्र के अस्त में भी गृहप्रवेश हो सकता है।

... के अस्त में भी गृहप्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशि-वश-खात-ज्ञान

देवालय की नींव खोदनी हो तो सौर चैत्र, वैशा०, ज्ये० में आग्नेय, आषा., श्रा., भा. में ईशान, आश्वि. कार्ति., मार्ग. में वायव्य, पौ० माघ० फा० में नैऋत्य कोण में शुभ है।

जलाशयारम्भ समय—वैशा.ज्ये.आषा.ईशान श्रा. भा. आश्वि. में वायव्य कार्तिक मार्ग. पौष में नैऋत्य माघ फा. चैत्र में आग्नेय कोण में नींव खोदना।

गृहारम्भ समय-वैशाख में वायव्य, ज्येष्ठ श्रावण में नैऋत्य, भादों कार्तिक में आग्नेय, मार्ग. माघ में ईशान में और फाल्गुन में वायव्य कोण में नींव खोदना शुभ है।

द्वारशाखा (देहली) चक्रम् सूर्यनक्षत्रात्

स्थान.	न.	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोण	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाश
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वार विधेयं शुभम्।

गृहप्रवेश कुम्भचक्रम् सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

रोहिणीभात् वापी चक्रम्

ईशान अ.भ.कृ. मध्यजल	पूर्व पुन.पु.श्ले. जलाभाव	आग्नेय म.पूफा.उफा. मध्य जलम्
उत्तर भा.उभा.रे. मिष्ठ जलम्	मध्य रो.मृ.आर्द्रा शीघ्र जलम्	दक्षिण ह.चि.स्वा. जलाभाव
वायव्य श्र.ध.श. क्षार जलम्	पश्चिम मू.पू.षा.उषा. अमृत जलम्	नैऋत्य वि.अनु.ज्ये. बहु जलम्

जलाशयाराम देव-प्रतिष्ठा मुहूर्त

देवतारामवाप्यादि प्रतिष्ठामुत्तरायणे।
माघादि-पञ्च मासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने॥
मातृभैरव वाराहनारसिंह त्रिविक्रमाः।
महिषासुर हंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने॥

गुरु-शुक्र के अस्तादि रहित शुद्ध समय में शुक्लपक्ष उत्तरायण में रिक्ता-अमा. शनि-मंगल तिथि वार छोड़कर शुभ तिथि वारों में, अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा एवं रेवती नक्षत्र में, स्थिर लग्न में केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हो तथा ३।६।११ में पापग्रह हो, कृष्णपक्ष में पंचमी तक देव-प्रतिष्ठा तथा जलाशय, बाग आदि की प्रतिष्ठा भी शुभ है।

अपने अपने मास तिथि नक्षत्र में दक्षिणायन में भी प्रतिष्ठा के लिये शास्त्राज्ञा है। जैसे चतुर्दशी में शङ्कर की, चतुर्थी में गणेश की, भाद्रपद में कृष्ण की, आश्विन में देवी प्रतिष्ठा प्रशस्त है।

नलकूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त—अनु.ह.तीनों उ., रो. ध. श. म. पू. षा., रे. पुष्य, मृ. नक्षत्र हों, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १० वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हो तो शुभ है। यदि २।१०।४।११।१२ लग्न हों तो अत्युत्तम है। जलाशयखात सूर्य राशि से देखें।

सूर्यनक्षत्रात्कूप-नल चक्रम्

ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैऋत्य ३ अमृत जल

गणना क्रम—मध्यपूर्व आग्नेय दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्. जल का वास भी १३८, पृष्ठ से भूमि पर विचारें।

सूर्यभात्तडागचक्रम्

ई. २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आ. २ जलाधिक्य
उ. २ अमृत जल	मध्य ५ बहुजल	द. २ जलनाश
वा. २ जलनाश	प. २ बहुजल	नै. २ अमृतजल

अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति तस्फलम्-पारिवाहे वारिहानिः। गणना-क्रम—पूर्व आग्नेय द० नै० प० वा० उ० ई. मध्य वारिवाहः।

॥ श्री रामायणादि कथा प्रारम्भ का मुहूर्त ॥

गुरु के नक्षत्र से दिननक्षत्र १६ तक अर्थलाभ सिद्धि, २४ तक मृत्यु, राजभय, २७ तक मोक्षप्रद होता है। शुभवार तिथ्यादि विचारपूर्वक देवप्रीत्यर्थ शुक्ल पक्ष में और पितृ व प्रेतशान्त्यर्थ कृष्णपक्ष में करे।

वास्तुशान्ति मुहूर्त—श्र० ध० मृ० अनु० रे० ह० चि० स्वा० उत्तरा ३. पुन. पु. रो० अश्वि० एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदान पुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है—जिस दिन हवन करना हो उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़कर एक और जोड़ना पुनः ४ का भाग देना यदि पूरा भाग लग जाय (० शेष रहे) अथवा ३ शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राण हानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार गणना रविवार से करनी। इस के बाद आहुति-चक्र जरूर देखिए।

ग्रहमुखे होमाहुति ज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू.	बु०	शु०	श०	चं०	मं०	गु०	रा०	के०	ग्रहाः
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेष—यात्रा-विवाह-व्रत-गोचरेषु चौलोपनीताद्यखिल व्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुत-प्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्। महारुद्रव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कस्यराहुणा। नित्य-नैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्॥ दिग्दाहेप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्॥ लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणे महाविधौ। देवखातभवने सुरालयादग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः॥ दुर्गभंगे गृहे वाऽपि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकार्ये नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत॥

हवन में शाकल्य-विचार — तिल का आधा चावल, चावल का आधा यव. यव का आधा शक्कर और यव का आधा घृत. असमर्थता मे यथाशक्ति घृत लेना चाहिये ।

पापग्रहमुखे हवने कृते शान्ति: — क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे । शान्तिं विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखीम् ॥ गोमूत्र-मधुगन्धाद्यैरर्चिता प्रतिमा ततः। कुण्डेनिधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते ॥

अथ ऋणी-धनी विचार:—स्ववर्गं द्विगणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत् । अष्टभिश्च हरेद भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत् ॥

यथा— अपने नाम के 'अ' वर्गादिवर्ग को दूना कर दूसरे वर्ग को जोडना. फिर ८ से भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दुगुना करके अपना वर्ग जोड़ना. फिर ८ का भाग देना: जिसका भाग शेषांक अधिक बचे वह ही कम बचने वाले का ऋणी जानना । ऋणी नौकर रखना हितकर होता है। राशि के अनुसार अपने से उच्च वर्ग की राशि का नौकर रखना निषिद्ध है. समान वर्ण प्रीतिकारक है।

भूमि का लेन-देन — गुरु. शुक्रवार १ ५. ६. ११, १५ तिथि मृग. पुन. ऽश्ले: म: पू. फा.. वि., ऽनु., मूल. पू षा. उ. भा. नक्षत्र में घर-जमीन का सौदा करना शुभ है ।

हल-प्रवहण मुहूर्त —मृ. रे. चि अनु रो. उत्तरा ३ ह. अश्वि. पुष्य.अभि.स्वा पु.श्र ध. श म म् वि.एषु भेषु रिक्तामावष्टचष्टमीरहित सत्तिथौ शुभग्रहस्य वासरे, १।५।७।१०।११ लग्नेषु भूमिशयन-भद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्या हलप्रवहणं शुभम् ।

हलचक्रम् सूर्य-भुक्त नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने				
३	८	९	८	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्

बीजवपन राहुचक्रम् राहु नक्षत्रात दिनभं यावत् गणना कार्या								
८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीज वपने मुहूर्त—ह. अश्वि पुष्य. उत्तरा ३. वि अनु. मृ रे. स्वा. ध. एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्त-वारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभ: ।

विशेष:—रवौ रौद्रा(आर्द्रा)द्यपादस्थे भूमौ मजायतेरजः। तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत्

नवान्न भक्षण मुहूर्त—मृ. रे. चि. अनु. ह अश्वि. पुष्य अभि. स्वा. पु न. श्र ध. श. विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है; नन्दा रिक्ता तिथियों और पौष चैत्र को छोड़कर सू. बु. च. गु. शुक्रवार शुभ है ।

गाय बैल आदि पशु लेने का मुहूर्त

उ. फा. नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक गणना करे। यदि वर्तमान नक्षत्र उ. फा. नक्षत्र से चतुर्थ पंचम छब्बीसवां या सत्ताईसवां हो. तो गाय लेना अशुभ है। उ फा नक्षत्र से गणना करने पर उल्लिखित (४. ५. २६ २७ वें) नक्षत्रों को छोडकर शेष सभी नक्षत्रों में गाय लेना शुभ है **भैंस लेने के लिये** भी यही क्रम है. परन्तु वहां उ. फा. से न गिनकर सूर्य नक्षत्र से गणना करे. नक्षत्रों की यह शुभाशुभ व्यवस्था पूर्ववत् ही है। **बैल खरीदना हो तो** भी उ. फा. से वर्तमान नक्षत्र तक गणना करे परन्तु यहां उ.फा से तीसरे चौथे २६वें एवं २७वें नक्षत्र में बैल लेना अशभ है. शेष नक्षत्रों में बैल लेना लाभदायक समझें ।

"नौमी चौदस चौथ चौपाया। मगल हानि करे घर आया ॥"

सूर्यनक्षत्रात्मकाष्ठादि (गुहारा आदि) सम्थापन चक्रम्							
६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र
उत्तमपाक शुभ	शवदहन नेष्ट	सर्पभय नेष्ट	मित्रलाभ शुभ	रोगभय नेष्ट	क्वाथकर्म नेष्ट	सुख शुभ	नक्षत्र संख्या फलम्

लता-वृक्षाद्यारोपण मुहूर्त:—मृ. रे. चि. अनु उत्तरा ३, रो ह. पुष्य. अश्वि. श म वि. नक्षत्रों में रिक्तामा रहित शुभ तिथियों में और च बु. बृ. शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४।१०।११।१२ लग्न में शुभ है। **तृणकाष्ठादिसंग्रहनिषेध** —तृण काष्ठ का सञ्चय और पलग बुनवाना आदि काम कुम्भ. मीन के चन्द्रमा में नहीं करने चाहिए।

सिंगी (फस्त) लगाने का मुहूर्त —कृष्ण पक्ष में रिक्ता तिथि एवं क्रूरवार को सिंगी (फस्त) और जोंक लगवाना रोगी के लिए आरोग्यप्रद होता है।

कुलदेवता-स्थापन मुहूर्त—शुभ वार. तिथि अश्वि. रो. मृ. पुष्य. उफा. ह. चि. स्वा. ऽनु. उषा उभा. रे. नक्षत्र स्थिर लग्न भद्रादिदोष-रहित समय में शुभ है ।

मशीनरी चालू करने का मुहूर्त—धनि; अश्वि; हस्त; चित्रा; अनु; पुष्य; ज्ये; पुन एवं रेवती नक्षत्र में शनि की होरा में तथा मशीनरी चालू करने के लग्न में श. मं. शु. च. शुभ स्थान में हों तब चालू करनी चाहिए, इसके लिए वारों में बुधवार या बुध-शनि की होरा उत्तम है।

औषध सेवन का मुहूर्त—ह. अ. पुष्य. अभि. मृ. रे. चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल और जन्म नक्षत्र को छोड़कर इन नक्षत्रों में ४।९।१४ को छोड़कर शुभ तिथियों में, भौम. शनि को छोड़कर अन्य वारों में शुभ है।

अथ यात्रा मुहूर्त—

ह. मृ. श्र. अश्वि. पुष्य. पुन. ध. अनु. रे एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा., रो. उत्तरा ३. पूर्वा ३. एषु भेषु मध्या, भ. कृ. आर्द्रा, आश्ले. म. चि स्वा. वि. ज्ये. एषु भेषु निन्द्या । तत्रात्यावश्यकत्वेऽपि यात्रायां भरण्यादिभानां क्रमात् ७।२१।१४।१४।११।४०।१४।१४।१४ एता घटिका गमन-कर्मण्यवश्यं वर्जनीया:, २।३।५।७।१०।११।१२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु दिग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा ।

दिग्द्वार लग्नानि

१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२	शुभम्
२।६।१०	३।७।११	४।८।११	१।५।९	मध्यम्
४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	अधमम्
३।७।११	४।८।१२	१।५।९	२।६।१०	म० म०

यात्रा में शुभाशुभ लग्न—जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभ लग्न वह है जब १।४।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह और ३।६।१०।११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है जब १।६।८।१२ वें चन्द्रमा १० वें शनि, ६ वें शुक्र. १२।६।८ वें लग्नेश हो। अन्यच्च, यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने ॥

जन्म लग्नेश दशमेश अस्त हों व मारक दशा हो तो सुमुहूर्त में भी दूर की यात्रा न करे. प्रथम तीर्थ यात्रा वा देव-दर्शन गुरुशुक्रास्त मे वर्जित हैं।

दिक्शूल-ज्ञानाय चक्रम्								नक्षत्र-शूल चक्रम्			
पूर्व	आ.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय	उत्तर	ईशा.	दिशा पू.	द	प	उ.
चं. श.	चं. गु	गुरु	सू. शु.	सू. श	भौम	मं. बु.	बु. श.	नक्ष. ज्ये.	पू. भा.	रोहि.	उ. फा.

दिक्शूल-परिहार—न वारदोषा: प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्य-दैत्येज्य दिवाकराणाम् । दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवार दोष: ॥१॥

आवश्यकता में दिक्शूल शान्त्यर्थ-रविवार को घृत,सोमवार को दूध, मंगल को गुड़, बुध को तिल,गुरु को दधि,शुक्र को यवान्न, शनि को उडद तैलकी वस्तु खाकर जाए तो शुभ है।

यात्रा मे काल ज्ञान	
शनौ	पूर्वे
शुक्रे	आग्नेय्यां
गुरौ	दक्षिणे
बुधे	नैऋ॑त्ये
भौमे	पश्चिम
चन्द्रे	वायव्ये
रवौ	उत्तरे

सम्मुखेनष्ट: पृष्ठे शुभ:

योगिनी-वास चक्रम्

पू०	अग्नि०	दक्षि०	नैऋ	पश्चिम	वाय०	उत्तरे०	ईशा०	दिशा
१।९	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०	तिथि

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहने अशुभ होती है, पीछे और बाएं की शुभ युद्ध यात्रा की बाएं ओर की और संमुख की विशेष त्याज्य है। समयशूल :- उषाकाल में पूर्व को, गोधलि में पश्चिम को, अर्द्ध रात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए। गर्गगुरु अङ्गिरामुहूर्त :-गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे, गमन करे। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करे। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाए। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पञ्च पञ्च (५५) उष:काल: सप्तपञ्च (५७) अरुणोदय:।अष्टपञ्च (५८) भवेत्प्रात: शेषं सूर्योदयो भवेत्।

चन्द्र-वास चक्रम्

पूर्व	दक्षि	पश्चि	उत्तर
मेष सिंह धन	वृष कन्या मकर	मिथुन तुला कुम्भ	कर्क वृश्चि मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यके-तात्कालिक यात्रायां घट्यात्मक चन्द्र-वास चक्रम्

पू.	द०	प०	उ०	पू०	द०	पू०	उ०	दिशा
१७	१५	२१	१६	१७	१५	१०	१४	घटी

घट्यात्मकचन्द्रवास

जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जावे।

सम्मुखादि चन्द्रफलम् -सम्मुख अर्थ-लाभाय दक्षिण सुखसम्पद:।पृष्ठतो मरण चैव वामे चन्द्र धनक्षय: ॥१॥ सर्वे दोषा लयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे ॥इति। सम्मुखे चन्द्रप्रशसा-करण-भगणदोषं, वारसंक्रान्ति-दोषं, कुतिथिकुलिकदोषं, यामयामार्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमा:सम्मुखस्थ:।

सर्वाङ्क सिद्धि योग: —शुक्लादि तिथि वार की संख्या के जोड को तीन जगह रखे क्रमश: ७।८।३ का भाग दे। शेष प्रथम स्थान मे शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्रअंक आने से सौख्य, जय, लाभ हो। **विजयादशमी को बिना सर्वाङ्कादि मुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है।** बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैऋत को मत जाओ हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावे, क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है। नोट—श्वास खींचते हुए सवारी पर पैर रखें तो यात्रा सुरक्षित होती है।

वर्ण क्रमेण प्रस्थान विधानम्-यदि यात्रा मुहूर्त में किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाये तो उसी मुहूर्त मे ब्राह्मण जनेउ माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु घृत व रुपया और शूद्र-खरट फल को अपने वस्त्र में बांध किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान से पूर्व रक्खे। अथवा सब लोग मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख दें। प्रस्थान (पैना) रखने के दिन से तीन दिन के अन्दर ही चल देना चाहिए।

यात्रा से पहले त्याज्य वस्तु-यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दें, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तेल, सात दिन पूर्व मैथुन, सम्भव न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य करें। अशुभ मुहूर्त मे यात्रा करने पर हानि का भय रहता है। यदि यात्रा का मुहूर्त शुभ न हो और यात्रा भी न टाली जा सकती हो तो **चतुर्घटिका या होरा मुहूर्त देख यात्रा करें।**

दिने चतुर्घटिका मुहूर्तम्								रात्रौ चतुर्घटिका मुहूर्तम्						
सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह.	शुक्र	शनि	घटी	सू.	चं.	म	बु.	गु	शु	श.
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	१चौ	शु.	च	का.	उ.	अ.	रो	ला
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	२चौ	अ.	रो.	ला.	श.	चं.	का.	उ.
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	३चौ	चं.	का	उ.	अ	रो.	ला.	श
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	४चौ	रो	ला	शु	चं.	का.	उ.	अ
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	५चौ	का.	उ.	अ	रो	ला.	शु.	चं.
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	६चौ	ला.	शु	च	का.	उ	अ.	रो.
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	७चौ	उ	अ	रो	ला.	शु	च	का.
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	८चौ	श.	च.	का	उ.	अ.	रो.	ला

चौघड़िया (चतुर्घटिका) मुहूर्त में चर, लाभ, शुभ, अमृत, यह चौघड़िये शुभ है, शेष काल, रोग, उद्वेग यह अशुभ है। दिन और रात के आठ आठ समान हिस्से का एक एक चतुर्घटिका(चौघड़िया) मुहूर्त रहता है, जब दिनरात बराबर(३० घड़ीका दिन और ३० घडी की रात) होते है, तब एक चौघड़िया मुहूर्त पौने चार घड़ी (यानी डेढ घंटे का) होता है न्यूनाधिक दिनमान होने पर इसके घड़ी पल भी घटते बढ़ते रहते है। पञ्चाङ्ग में प्रत्येक दिन का घट्यादि दिनमान तो लिखा रहता ही है, अत: जिसदिन का रात्रिमान निकालना हो उस दिन के दिनमान को ६० घड़ी में घटा देने पर घट्यादिक रात्रिमान निकल आएगा। अब जिस रोज यात्रा करनी हो उस दिन के अष्टमांश घड़ी पल का घंटा मिंट बनाकर उसरोज के स्थानीय सूर्योदय मे जोड़ते जाएं तो क्रमश उस दिन की आठों चतुर्घटिका (चौघड़िया)के समय ज्ञात होते जाएंगे। ऐसे ही सूर्यास्त में रात्रिमान के अष्टमांश के घंटा मिंट बना कर जोड़ने से रात के चौघड़िया के समय ज्ञात होंगे। (२॥ घड़ी का १ घंटा तथा २॥ पल का १ मिंट होता है)। आवश्यकता के समय इस चौघड़िया के उत्तम मुहूर्त में श्रद्धालु जन सभी काम (जैसे यात्रा, बही लेखन, नया कार्य, बैंकखातारंभ आदि) करते है।

यात्रायां शुभ शकुनानि—मृग बायें दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बह मिले चलतें प्रात:काल। विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न दुग्ध, वीणा, श्वेत वृषभ, गोदधि सर्षप, कमल निर्मल वस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, रोदन रहित मृतक, मंगल गान, वेदध्वनि सपुत्रस्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्ध वाक्य, सजलपूर्णघट, पञ्चाङ्कित घट यात्रा समय देखने शुभ हैं। **अशुभ शकुनानि** – वन्ध्या स्त्री, चर्म अस्थि, इन्धन, सन्यासी, रिक्त घट भैंसों का युद्ध, सर्प शव, मार्जार युद्ध, कुटम्बकलह, विधवा, जातिभ्रष्ट अंगहीन छिक्का दुष्ट वाणी, दुखिया का रोना, भैंस पर सवार, नंगा मनुष्य, दक्षिण से गर्दभ शब्द, यात्रा समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

गवन समय जो स्वान फरफराय दे कान। एक शूद्र तो वैस असार।
तीन विप्र और क्षत्री चार। सनमुख आवें जो नौ नार। कह महुरगी अशुभ विचार।
स्वानधर्न जो अग अथवा लोटे भूमि पर। तो बिन कारज भग व निर्हि कुसगुन जानिये॥

दिशा शूल ले जावे वामे । राहु योगिनी पूठ ॥
सन्मुख लेवे चन्द्रमा । लावे लक्ष्मी लूट ॥

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पाव आगे उठाकर चले इसी तरह सवारी पर चढे, कार्यसिद्धि, यात्रा सफल होगी।

नौका यात्रा मुहूर्त—चि. ह. पु. मृ. पूर्वा ३. अनु. श्र. ध. एषु भेष सलिली शुभेऽहनि चन्द्रतारानुकूल्ये सति शुभम्।

यात्रा निवृत्तौ प्रवेश मुहूर्त-मृ. रे. चि. अनु. रो. उ. ३. ह. अ पुष्य, स्वा. श्र. ध. श. एषु भेषु च बु. गु. शु. श. वारेषु १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु ३।५।६।८।९।११।१२ एषु लग्नेषु. १।४।७।१०।५।९ स्थानेषु शुभैः ३।६।११ स्थानेषु पापैः ४।८ शुद्धौ शुभः। दि कृ. पू. ३ भ. म. मू ज्ये आर्द्रा आश्ले. नक्षत्राणि । ४।९।१४।६।१२।८।३० तिथयः सू. मं. वारौ १।४।७।१० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि। मंगल को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है। विशेष :–प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्यादिने वारे तिथाविति ॥

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	मं.	कु.	मी.	राशयः
मे.	क.	कु.	सि	मं.	मि.	ध.	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ	घातचन्द्र
र.	श.	च.	बु.	श.	श	वृ.	शु.	शु.	मं.	वृ.	शु	घातवार
म.	ह.	स्वा	अनु	मू.	श्र.	श	रे	भ.	रो	आ.	श्लेषा	घातनक्षत्र
मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि	वृश्चि	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि	मि	मेष	स्त्रीचंघात
का.	मार्ग	पौ.	माघ	फा.	चैत्र	वै.	ज्ये.	अ.	श्राव	भा.	आ.	घातमास
वि.	मृ.	प.	धृ	प्री.	मृ.	अ. गं.	वृद्धि	वैधृ.	गं.	व्या	व.	घातयोग
१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५	घातलग्न
१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५	घाततिथि
६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०	,,
११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५	,,

कार्य सिद्ध्यर्थं यात्रा में, युद्ध, विवाद, राजदर्शन, वाहन तथा रोगादि कार्यों में घातचन्द्र देखें। तीर्थयात्रा, विवाह एवं उपनयन आदि शुभ कार्यों में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं। "घात-तिथि घात-वार: घात-नक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञस्त्वन्य कर्मसु शोभनम् ॥"

छिपकली कोढ़-किरली गिरने का फल

अग्रिम चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना. पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का कहा है, वही सरट (गिरगिट) के चढ़ने का जाने। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथांग-विभागे पल्ली-(छिपकली कोढ़ किरली) पतन फलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्य सबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहु लाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्य लाभः
वामभुजे	राज्यक्षयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृप तुल्यता
जानुद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्र लाभ	पृष्ठदेशे	बुद्धि नाशः
कटिभागे	अश्व लाभः	वाममणिबंधे	कांति नाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्न भोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्री नाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धि	नेत्रयोः	धन प्राप्तिः	पादान्ते	मृत्यु
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	मरण
जघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्य लाभः
द. मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षागुष्ठे	धन लाभः

पल्ली-पतने प्रशस्त वार-तिथ्यक्षाणि—यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है। तथा च बु. गु. शु इन वारों में भी शुभ फल देती है। पु. अश्विनी. रो. मृ. पुनः उफा. ह. चि स्वा ध. रे. अनु. श ये नक्षत्र शुभ फलदायक है। अतोऽन्येषु भेषु निन्द्याः।

पल्लीपाते कर्त्तव्यं कर्म—पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्र सहित स्नान करे। जन्म नक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धा दिन भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रह युक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप. होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल-स्वर्ण दान पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छाया पात्र दान करना भी उत्तम है।

छिक्का फलम्—छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है. गौ की छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग अथवा छींक सूंघनी छल कर लीन्ही पीन सरदी घास फल हीनी। छींकि पीठि की कुशल उचारे. बाई. कारज सब सवारे ॥१॥ सन्मुख छींक लड़ाई भारे। छींक दाहिनी द्रव्य विनाशैं ॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी। नीची छींक होय भय कारी। अपनी छींक महा दुखदाई। ऐसे छींक विचारे भाई ॥३॥ कन्या विधवा मालन धोबिन रजस्वला वैश्या चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्का—आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजन। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहा ॥ सन्ध्या वन्दन जपादि के आरम्भ में भी छिक्का शुभ है। एक नाक दो छींक काम बने सब ठीक ॥

यात्रा में प्रथम बार अपशकुन होवे तो ११ स्वास तक ठहर कर चले द्वितीय बार १६ स्वास तक ठहरे और तीसरी बार के अपशकुन में कदापि न जावे। यदि एक कोस के बाद शुभाशुभ शकुन हो तो उसका कुछ फल न समझें।

अंग-स्फुरण-फल

पुरुषों का दाया अंग और स्त्रियों का बाया अंग फरकना शुभ है। मस्तक का स्फुरण (फड़कना) स्त्री पुरुष दोनों के शुभ है।

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्ष:स्थल	विजय	ओष्ट	प्रियवस्तु
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग
स्कन्ध	भोगसमृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाध:	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपाल	शुभाप्ति	आंत्रिक	कोपवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनाप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्षि	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोपलाभ	बस्तिदेश	अभ्युदय
नेत्रपक्ष्म	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोपरि	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्व-बुद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल, लसन, मस्सा हो व खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल वा खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

उत्पात-फल-चक्र

उत्पात	फल	उत्पात	फल	उत्पात	फल
दिग्दाह	वर्षा न हो	भूकम्प	प्रजा को भय	सर्वग्रहअतिचार	शुभ फल
धूल वर्षे	दुर्भिक्ष पड़े	पहाड़ टूटे	राजा की मृत्यु	मूसल निकले	युद्ध महर्घता
पत्थर वर्षे	अकाल हो	वृक्ष टूटे	राजा का भय	धूम्रकेतु उदय	राजभंग करे
तारे टूटें	जनक्षय	उलटी ऋतु	रोग विशेष	२।३।४ शूलोद	राजनाश
बिजली टूटे	जल सूखे	आदमीकेपशुहो	राजविघ्न	सुवर्ण पंक्ति	राजनाश
दिन अंधेरा	प्रजाक्षय	ग्रहयुद्ध	राजाओंमेंविग्रह	त्रिकोणतारा	प्रजानाश
ग्रहसंयुति	अकाल	सूर्यचंद्रमंद पड़ें	देश क्षय	वनपशुगांव बसे	मनु. शून्य
श्वेतमण्डल	भय हो	कृष्ण मंडल	राज नाश	घर उल्लू बोले	गह शून्य
पीतमंडल	रोग हो	धूम्र मंडल	बर्फ पत्थरपड़े	बांबी कबूतर	गहस्वा. ना·
नीलमंडल	वर्षा हो	बिना ऋतु फल	अन्न नाश	घर में बसे	
रक्तमंडल	युद्ध हो	सूखीभूमीगीली	बहुत वर्षा	सू. चं. बिम्ब	रोगभय
स्त्री वध हो	दुर्भिक्ष पड़े	विप्रबालक वध	दुर्भिक्ष पड़े	अधिक देख पड़े	राजनाश
देवध्वंस	राजनाश	सर्वग्रास	सबवस्तु महंगी	भूमिकम्प	दुर्भिक्ष
ग्रहास्तोदय	भयंकर वर्षा	भीमाधिक मास	दुर्भिक्ष पड़े	१३दिन का पक्ष	प्रजानाश

तैलमर्दन (मालिश)

रवि मंगल गुरु शुक्र इन वारों में तैलमालिश दुःख शोकादि अशुभ फलप्रद है, अन्य चन्द्र बुध शनिवारों को सुखप्रद होतीहै, **आवश्यकता में**—रविवार को तेल में पुष्प डालकर मालिश करे। मंगलवार को मृत्तिका, गुरुवार को दूर्वा, और शुक्रवार को गोमय डालकर मालिश करे, तो दोष नहीं।

विशेष:— यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातारोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल व सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

काक-स्पर्शादी फलम्— मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दही आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट वा इष्ट कार्य नाश करता है। विशेष कर दक्षिण दिशा में कुयोग के समय इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काक प्रतिमा मृण्मय पात्र में स्थापन कर उड़द, चावल, घी, मीठा, नैवेद्य देवे, ग्राम से दक्षिण की ओर बाहर चौरास्ते पर गन्ध पुष्प, धूप, चतुर्मुखदीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय का यथाशक्ति जप करे (या करादे) घृतच्छायापात्र दान और पञ्चगव्य से स्नान भी करे इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नाश होते हैं।

काक विष्ठा विचार— शिरसि–मृत्युः वा कष्टम्। स्कन्धयोः–**रोगः**। भुजयोः–प्रियार्तिः। उदरे-शोकः। गुह्ये-सन्तान-कष्टम्। जंघयोः–वाहनपीड़ा। पादयोः–प्रवासः।

कौवा उड़ता हुआ या किसी सूखे पेड़ पर बैठा हुआ, या पूर्व की तरफ बैठा हुआ अथवा दक्षिण दिशा की ओर मुंह किये किसी के ऊपर काली बीठ कर देवे तो अशुभ जानो। और यदि किसी हरे भरे या फूले फले या पीपल, बड़ आदि श्रेष्ठ पेड़ पर बैठा हुआ सफेदबीठ करदे तो शुभ जानो।

घर में उल्लू आदि—घर में उल्लू गिरे तो स्थान, मान, आयु की हानि हो। जंगली कबूतर घर में बसे–यह भी अशुभ है। शान्त्यर्थ हवन पूजन जप-दान आदि करना चाहिए।

अङ्क प्रश्न तथा फल वर्णन–प्रश्नकर्त्ता से एक सौ आठ अंक के भीतर कोई एक अंक मुख से कहलावें या लिखावें। उसमें बारह का भाग देकर पीछे यदि १।६।७ बचे तो देर से कार्यसिद्धि होवे। यदि ४।५।८।१० बचे तो कार्य नाश होवे। ११ बचे तो सिद्धि २ बचने से वृद्धि, ३।६।१२ (०) बचने से शीघ्र सिद्धि होवे यह फल कहे।

अथ स्वप्न-विचार

स्वप्न ७ प्रकार का होता है, प्रथम दृष्ट (दिन में देखे हुए को देखना) द्वितीय श्रुत (सुने हुए को सुनना) तृतीय अनुभूत (जागृतावस्था में परीक्षा की हुई वार्ता को स्वप्न में देखना) चतुर्थ प्रार्थित (जागृतावस्था में इच्छा की हुई बात को देखना), पञ्चम कल्पित

'दिन में कल्पना की हुई वस्तु का देखना) षष्ठ भाविक (न देखा न सुना उसमें विलक्षण) सप्तम दोषज (वात.पित्त कफ के दोष से)। पूर्वोक्त सात प्रकारों में से "दृष्ट, श्रुत, अनुभूत प्रार्थित कल्पित" ये पांच प्रकार के स्वप्न प्रायः निष्फल होते हैं। छठे भाविक स्वप्न का फल उत्तम मिलता है। सप्तम दोषज का फल रोगी के उत्तम मध्यम देखने में आता है। इतना विशेष है.कि–बहुत बड़ा तथा बहुत छोटा स्वप्न निष्फल होता है। सुज्ञ जन देखकर पुनः स्नानादि से शुद्ध हो देव या गुरु आदि के शुभ स्थान में जाकर किसी पूर्ण दैवज्ञ के सामने फल. पुष्प दक्षिणा रखे, स्वस्थ-चित्त से स्वप्न का वर्णन करे. शुभाशुभ तथा सामान्य फल का विचार करावे।

शुभस्वप्न — राजा,हाथी,गौ,बैल. विप्र, देवता. अनेक बालक,वृद्ध, गुरु-श्वेत-वस्त्र वाली स्त्री, रत्न. इनका दर्शन तथा आशीर्वाद मिलना. महल पर्वत. सिंह. अश्व एवं अन्न की ढेरी पर चढ़ना व दर्शन करना. रक्त से स्नान रथ शस्त्रादि का ज्वलन, स्व-शिर का छेदन. स्व-रुदन, अपना मरण, वेद-ध्वनि श्रवण. रक्त पीत पुष्प दर्शन. दर्पण प्राप्ति दही चावल भोजन.जुआ.रण विवाद में अपनी जय. इन्द्रधनुष का देखना. छाछ. अस्थि, कपास.नमक.इन चार वस्तुओं को छोड़कर अन्य सर्व श्वेत वस्तु,स्वप्न में देखना धनैश्वर्य की प्राप्ति तथा कष्ट की निवृत्ति करता है। यदि कोई क्लर्क या मुन्शी यह स्वप्न देखे कि उसने दफ्तर के रजिस्टरों वा बहियों में गल्तियां की हैं तो उसे उसके मालिक से अच्छा काम करने की शाबाश या तरक्की मिलेगी।

दर्पण में मुख देखें तो प्रेमी से मिलाप हो। यदि स्वप्न में फल-पुष्प सहित वृक्ष पर अथवा श्वेत वृषभ पर चढ़कर जाग जाय अथवा दक्षिण हाथ में श्वेत सर्प काट जाय तो निश्चय शीघ्र विशेष धन मिले। स्वप्न में बिच्छू. या सर्प के जल में पैर पर काटने से रक्त निकल आवे तो विपत्ति दूर होकर सुख हो। श्वेत वस्त्र वाली स्त्री का स्नान करना, हाथों में हथकड़ी पैरो में जंजीर का बन्धन पड़ना,नर या नारी के हाथ से जूता व खड़ाऊं छत्र. तीक्ष्ण तलवार का मिलना, टट्टी में सर्प का दीखना. अपने पैर व भुजा के मांस को खाना. अगर कपूर पान का मिलना. ऐसे स्वप्न दीखे तो लक्ष्मी की प्राप्ति व सुख मिले। मणि आदि पात्रों में भोजन करना, अपने शिर के मांस को खाना राज्य लाभ करता है। गौ का ताजा दूध उसी वक्त पीना.सूर्यमण्डल का दीखना. अपना मरना दीखे तो रोगी पुरुष का रोगनाश और नीरोग पुरुष को लाभ होता है। बगला.मुर्गी.कुञ्ज का दीखना चतुर स्त्री प्राप्ति का सूचक है। स्वप्न में रक्त व मद्य का पीना. विप्र को उत्तम विद्या लाभ, क्षत्रियादि को धन प्राप्ति करता है। मांस. चरबी का खाना. विष्ठा अपने अंग में लगाना. श्वेत चन्दन,श्वेत वस्त्र पुष्प से सुसज्जित अपनी देह व अन्य पुरुष की देह देखना. लाभ करता है। हरी सब्जी व सुन्दर अन्न कोई घर पर दे जाय तो भी लाभ हो नदी समुद्र में तैरना,तालाब में तैर कर पार जाना, सूर्योदय का देखना कष्टनिवृत्ति करता है। ऊंचे मन्दिर पर चढ़कर आग लगी देखना या तारों का देखना भाग्योदय करता है। राजा. गौ, ब्राह्मण को प्रसन्न देखना. पर्वत. वृक्ष. बगीचे. हरे सुन्दर फल संयुक्त देखना बिछड़े काम सिद्ध होंगे. ऐसा जानना। घर में किसी की मृत्यु पर सब रो रहे हों तो लक्ष्मी और सुख मिले। बेड़ी पर चढ़कर पार होने से परदेश गमन हो। अगर कोई दुकानदार स्वप्न में देखे कि ग्राहक उसके बिल चुकाए बिना भाग गया है तो उसको समझ लेना चाहिए कि रुपया कहीं से शीघ्र मिलेगा और नये ग्राहक भी बनेंगे. यदि किसी की बहन स्वप्न देखे कि उसके भाई पर भारी विपत्ति पड़ी है और उसकी जान खतरे में है तो यदि वह कुमारी है तो उसका किसी बड़े आदमी के साथ विवाह हो जाएगा और यदि वह विवाहित है तो उसके घरमें सब प्रकार से सुख शान्ति रहेगी। शुभ स्वप्न के बाद सोने से स्वप्न निष्फल हो जाता है अतः सोना नहीं।

अशुभ स्वप्न लाल-वस्त्र पहिनना, सूर्य चन्द्र का निस्तेज दीखना. तारों का चढ़ना अपने घर में हंस हंस के किसी स्त्री को मंगल गाते देखना. नीम पलाश के वृक्ष पर चढ़ना, रुई, कपास. भस्म. तेल. लोहा मिलना या देखना इसमें संकट व मृत्यु हो। शरीर में तेल मलना या किसी के द्वारा तेल से स्नान का होना मृत्यु व भारी कष्ट को सूचित करता है। शिर के सारे बालों का या मुख के दांतों का गिरना. द्रव्य या पुत्र का नाश करता है। मरे मनुष्य का अपने स्थान में भोजन करना व किसी वस्तु को मांगकर ले जाना द्रव्य हानि व कष्ट करना है। तैलपत्र गुलगुले तथा नाव के पैसे मिलना रोग संकट सूचक है। अपनी स्त्री की कमीज को मरी स्त्री ले जावे तो पुत्र कष्ट या मृत्यु हो। हाथ.नाक का कटना. कीच (पंक) में फंसना. ऊंट. गधे, भैंस पर चढ़कर तैल मलकर दक्षिण दिशा को जाना और विवाह-गीत मंगल सुनना. अपने घर को किसी के द्वारा गिराते हुए देखना, काले तथा रक्त वस्त्र वाली स्त्री का आलिंगन करना. बंदर सर्प पर चढ़ना, श्राद्ध आदि पितृकार्यों का करना, भूत प्रेत चांडालों के साथ मिलना. अथवा भूतादि द्वारा पकड़ा जाकर दक्षिण दिशा में जाना इत्यादि स्वप्न मृत्यु कारक होते हैं। नदी में डूबना अथवा नदी के प्रवाह में बह जाना, बिना ऋतु के वर्षा देखना. बाघ. रीछ, गीदड़ बिलाव. भैंस. सर्प मक्खी का दर्शन. पर्वत शिखा का तथा बड़ी महल-ध्वजा का गिरते देखना अशुभ कष्ट व चिन्ताकारक है। गौ, हस्ती, देव. विप्र इन के सिवा सब काले रंग की वस्तु देखना अशुभ व चिन्ताकारक है। अगर "विधवा स्त्री" यह स्वप्न देखे. कि उससे शादी करने का किसी ने सवाल किया है तो उस पर कोई सख्त बीमारी आवे या मृत्यु होवे। कुत्ता शरीर पर कूदकर दांत से मांस काटे तो शत्रु गुप्तभाव से अनिष्ट करेगा। यदि स्वप्न में कोई कुत्ता प्रेम से आपके साथ खेलता दिखाई दे तो लाभ हो। यदि अपने को कैद में देखे तो दुःख से छूटे। बकरी को चरती देखे तो शुभ दिन नजदीक समझे। तूफान देखे तो दुःख के अन्त की सूचना समझें। घर में आग लगी देखे तो जीवन में कोई विशेष परिवर्तन हो। स्वप्न में बिडाल (बिल्ला) दिखाई दे तो किसी से ठगा जाय। दीपक बहुत टिमटिमाता दिखाई दे तो नीरोग व्यक्ति के लिए रोग की सूचना तथा रोगी व्यक्ति के लिए मृत्यु की सूचना देता है। मुण्डित-केश नर. भिक्षुक तथा सूखी-नदी. सूखा पेड़ आदि का दिखाई देना भी रोग कष्ट एवं मृत्यु सूचक है।

स्वप्न का फल कब मिलेगा

रात्रि के प्रथम प्रहर का एक वर्ष में, द्वितीय का ८ मास में. तृतीय का ३ मास में तथा रात्रि के चतुर्थ प्रहर का एक मास में. अरुणोदय का १० दिन में तथा सूर्योदय से कुछ पहले का स्वप्न तत्काल ही फल देता है। **अथवा** — रात्रि में जिस समय स्वप्न दिखाई दे. उस समय से जितनी घड़ी रात्रिशेष रहे. उस घटी को चार से गुणा करे. जितनी संख्या हो उतने ही दिनों में स्वप्न फल मिलेगा।

अशुभ स्वप्न के दोष की शान्ति

दुष्ट स्वप्न के दोष को दूर करने के निमित्त मृत्युञ्जय का जप. होम, यथाशक्ति स्वर्ण तथा गोदान. अश्वत्थ-पूजन, विष्णुसहस्रनाम. गजेन्द्रमोक्ष व चण्डीपाठ. ब्राह्मण भोजनादि करवाना चाहिए। अशुभ स्वप्नों को देखकर फिर तत्काल सो जाना भी दुःस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है।

...और यदि वह विवाहित है तो उसके घर में सब प्रकार से सुख शान्ति रहेगी । | दुःस्वप्न के अनिष्ट फल को दूर करता है ।

सिद्ध होरा मुहूर्त :—यस्य ग्रहस्य वारेषु कर्म किञ्चित्प्रकीर्तितम् ।
तस्य ग्रहस्य होरायां सर्व कर्म विधीयते ॥

सूर्य की होरा—टेण्डर देने, नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है ।
चन्द्र की होरा—सब कार्यों के लिए अच्छी होती है ।
मंगल की होरा युद्ध, द्यूत, यात्रा, कर्ज देना, सभा सोसाइटी में जाना, मुकद्दमा के कार्यों में उत्तम होती है ।
बुध की होरा—विद्या (कला काव्य) का आरम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार करना, नवीन लेख पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत करने के लिये शुभ होती है ।
गुरु की होरा विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलन, कोष संग्रह, नवीन काव्य लेखन प्रकाशन आदि अनेक शुभ कार्यों के लिए शुभ है ।
शुक्र की होरा—यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, सौभाग्य-वर्धक कार्य व सिनेमा शूटिंग के लिए शुभ होता है । **शनिकी होरा**—द्रव्य संग्रह, भूमि मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी मिल्स कार्यारम्भ, समस्त स्थिर कार्यों के लिए शुभ होती है ।

सम्पूर्ण कार्यों की सिद्धि के लिए ज्योतिश्शास्त्र में होरा (क्षणवार) मुहूर्त पूर्ण फल-दायक माना है । सात ग्रहों की सात ही होरा हैं । प्रत्येक वार को एक घण्टे की सूर्योदय के समय उसी वार की पहली होरा होती है । फिर दिन रात के २४ घण्टों में २४ होरे व्यतीत होने से अगले वार के सूर्योदय के समय उसी वार के स्वामी की होरा आ जाती है । होरा का समय ढाई घटी, यानि एक घण्टा का होता है । दूसरे वार की होरा उसी वार के छठे छठे वार के क्रम से स्वामी की होती है । इसी प्रकार प्रत्येक घण्टे की होरा समझनी चाहिये ।

ध्यान रहे कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वराशि के स्वामी ग्रह के शत्रु ग्रहों की होरा में यात्रा-विवादादि तथा शुभ कर्मों का त्याग कर देना चाहिए, अन्यथा अशुभफल मिलेगा । स्वराशि के मित्र ग्रहों की होरा में कार्यारम्भ श्रेयस्कर रहेगा ।

निम्नलिखित चक्र द्वारा दिन-रात के जिस किसी घण्टे की, अभीष्ट कार्य-सिद्धयेर्थं ग्रह होरा देखनी हो, सहज में ज्ञात हो सकेगी ।

वार ↓	हो. १	हो. २	हो. ३	हो. ४	हो. ५	हो. ६	हो. ७	हो. ८	हो. ९	हो. १०	हो. ११	हो. १२	हो. १३	हो. १४	हो. १५	हो. १६	हो. १७	हो. १८	हो. १९	हो. २०	हो. २१	हो. २२	हो. २३	हो. २४
सू.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.
चं.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.
मं.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.
बु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.
बृ.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.
शु.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.
श.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	बृ.	मं.	सू.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.

उदाहरण—कल्पना करो, कि—आज मंगलवार है । आपने कार्य-सिद्धयर्थ किसी बड़े पुरुष से मिलने जाना है । तो इसके लिए उपरोक्त पंक्तियों में गुरु की होरा उत्तम होती है—ऐसा लिखा है । अत: उस दिन गुरु की होरा मालूम करनी है कि किस-किस समय पर होता है । उपरोक्त चक्र में मंगलवार के सामने खाने में देखा तो उस दिन सातवें चौदहवें और इक्कीसवें घण्टे में गुरु की होरा मिली । अत: मंगलवार को स्थानीय सूर्योदय से छठे व तेरहवें अथवा बीसवें घण्टे के बाद एक-एक घण्टे तक की गुरु होरा में आपको बड़े व्यक्ति से मिलने जाना फलप्रद है । इसी प्रकार अन्य दिनों में अन्य कार्यों के लिए भी समझ कर कार्य करना चाहिए । जिस वार को जो कार्य करना है, वह वार न मिले तो वह कार्य उस वार की होरा में कर सकते हैं । जैसे—दक्षिण में जरूरी यात्रा करनी है परन्तु उस दिन गुरुवार है । इस दिन दिक्शूल के कारण दक्षिण दिशा की ओर प्रस्थान अशुभ माना जाता है । ऐसी स्थिति में उस दिन गुरु की होरा छोड़ कर शुक्र की होरा में जाएं तो शुभ रहेगा ।

ठेकेदारों का टेंडर देने का समय—सू. चं. बु. गु. शु. की होरा में टेंडर देना लाभप्रद रहता है ।

सद्य: नई गद्दी स्थापना व नई बही लगाने का मुहूर्त—दीपमाला के दिन या जब भी समय नियत हो प्रात: सूर्योदय के बढ़ते सूर्य में मध्याह्न तक मंगलवार ४।९।१४ तिथि तथा भद्रा को छोड़ कर शुभ लाभ व अमृत के चौघड़ियों में या शुभग्रहों की होरा में करें, मध्याह्नोत्तर उतरते सूर्य में नहीं ।

सूर्यादि वारेषु कुयोग-सारिणी—

	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
सर्वकार्येषु वर्ज्या	ति. ५ न. ह.	ति. ६ न. मृ.	ति. ७ न. अ	ति. ८ न. अनु	ति. ९ न. पु	ति. १० न. रे	ति. ११ न. रो.
मृत्युयोग: (अधमा: तिथय:)	१।६।११	२।७ १२	१।६।११	३।८ १३	४।९। १४	२।७ १२	५।१०।१५
क्रकच योग	ति. १२	ति. ११	ति. १०	ति. ९	ति. ८	ति. ७	ति. ६
दग्धा तिथि	१२	११	५	३	६	८	९
विषाख्य तिथि	४	६	७	२	८	९	७
हुताशन तिथि:	१२	६	७	८	९	१०	११
क्षया जन्म तिथि	७	१४	१०	१२	९	८	१५
दग्ध नक्षत्र	भ	चि	उषा	ध.	उफा.	ज्ये.	रे.
कुलिक मुहूर्त	१४	१२	१०	८	६	४	२
कालवेलामुहूर्त	८	६	४	२	१४	१२	१०
यमघंटकमुहूर्त	१०	८	६	४	२	१४	८
कण्टकमुहूर्त	६	४	२	१४	१२	१०	१२
दुर्मुहूर्त	१४	९. १२	४.७	८	६	९	१२
यमघण्टयोग:	मूल	चित्रा	आर्द्रा	मघा	कृत्ति	रोहि	हस्त

सं. २०३५ वि. में विवाहादि मुहूर्त्त

समय शुद्धि

२८ जून. १९७८ ई. (आषाढ़ १४) से २१ जुलाई १९७८ ई. (श्रावण ६) तक गुरु और १ नवं. १९७८ ई. (कार्तिक १६) से १३ नवं. १९७८ ई.(कार्तिक २८) तक शुक्र अस्त रहेगा।

ध्यान रहे—यहां विवाहादि मुहूर्त्तों में गुरु-शुक्रास्तोदय की तारीखें पंजाब, हरयाणा, हि. प्र., दिल्ली की ही ली गई हैं। अन्य प्रान्तों के लिए मुहूर्त्तों का विचार करते समय अक्षांश के आधार पर उन प्रान्तों में गुरु एवं शुक्र के उदयास्त की तारीखों का विचार करना जरूरी है।

अक्षांश भेद से भारत के विभिन्न स्थानों पर गुरु-शुक्रोदयास्त की तारीखें (सं. २०३५ वि.)

अक्षांश	शुक्रास्त पश्चिम में	शुक्रोदय पूर्व में	गुरु अस्त	गुरु उदय
+१५°	३ नवं. १९७८	१३ नवं. १९७८	२९ जून १९७८	२२ जुला. १९७८
+२५°	२ नवं. १९७८	१४ नवं. १९७८	२८ जून १९७८	२२ जुला. १९७८
+३०°	१ नवं. १९७८	१४ नवं. १९७८	२८ जून १९७८	२२ जुला. १९७८
+३५°	३१ अक्तू. १९७८	१५ नवं. १९७८	२७ जून १९७८	२३ जुला. १९७८

यहां मुहूर्त्तों में क्रान्तिसाम्य (महापात) दोष का विचार सूक्ष्म गणित से किया गया है। सूर्य एवं चन्द्र की राशियों के आधार पर निर्णीत क्रान्तिसाम्य नितान्त स्थूल होता है। भास्कर आदि आचार्यों ने इसके निर्णय के लिए एक विशेष गणित-प्रक्रिया निर्दिष्ट की है। कई पञ्चाङ्गकार इसकी जटिल गणित-प्रक्रिया से डरकर स्थूल-क्रान्तिसाम्य के आधार पर ही मुहूर्त्तों का निर्णय कर देते हैं, जो सर्वथा भ्रामक है। इन मुहूर्तों में जां युति, वेध, दग्धा-तिथि, कर्त्तरी, षष्ठाष्टमस्थ भौम-चन्द्र आदि दोषों के परिहार मिल गए हैं, वहां मुहूर्त लगा दिए हैं।

विवाह के वेदोक्त नक्षत्र

अश्विनी, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा में चार विवाह के नक्षत्र-विशेष कात्यायन आर्ष-सूत्रोक्त होने से यजुर्वेदियों के लिए ग्राह्य हैं। अन्य ऋग्वेदी-सामवेदियों के लिए अशुभ होने से ग्राह्य नहीं। प्रमाणार्थ देखिये-पारस्कर गृह्य (कात्यायन) सूत्र-"उद्गयने आपूर्यमाण-पक्षे कुमार्याः पाणि गृह्णीयात् ॥१॥ त्रिषु २ उत्तरादिषु", हरिहर भाष्य में इस सूत्र का अर्थ इस प्रकार स्पष्ट किया है—

"उत्तरा आदिर्येषां तानि उत्तरादीनि, तेषु। कतिषु ? त्रिषु-त्रिषु, उ.फा.,ह., चि.। उ. षा., श्र, ध.। उ. भा., रे., अश्विनी।" इसी प्रमाण के अनुसार धर्मसिन्धु (निर्णय-सगर के छपे) पृष्ठ २१८ पर "विवाहे-नक्षत्र निर्णयः" में वेद-व्याख्याता आचार्य हरदत्त ने भी लिखा है—"चित्रा-श्रवण धनिष्ठाऽश्विन्यधिकानि चत्वारि, तत्रापि खलग्रहयुतं नक्षत्रं वर्ज्यम्।"

उपरोक्त, वेदोक्त प्रमाणानुसार अश्विनी आदि चार नक्षत्रों में भी विवाह-मुहूर्त लिखे हैं। पूज्य विद्वज्जन भ्रम न करते हुए स्वीकार करें।

मुहूर्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण दूषित है, उस लग्न के आगे कोष्ठक में भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम (रेलवे टाईम) के अनुसार यह निर्देश कर दिया गया है, कि—इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहिले ही मुहूर्त में स्वीकार करें।

शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (वि.सं.२०३५)

(कोष्ठकों में 'भा. स्टं. टा.' के घ. मि. दिए गए है)

ध्यान रहे—यहां दी गई अंग्रेजी तारीखें सूर्योदय से प्रारम्भ होकर अग्रिम सूर्योदय पर समाप्त होने वाली हैं।

तिथि, वार	प्रविष्टा	तारीख १९७८ ई.	विवाह नक्षत्र	दश दोष रेखाएं	लग्न, दान-पूजा एव अन्य विवरण
चैत्र शु. १० मं.	वैशा. ६	अप्रैल १८	मघा	।SS श.।।S नृ।S।।	दि.ल.२,३, गोधूलि
,, ,, १४ श.	,, १०	,, २२	चित्रा	।S।।Sबु.Sरो.।S।।	दि.ल.२,३ (रा.दा.)
,, ,, १५ र.	,, ११	,, २३	स्वा.	।।।।Sनृ.।SS।।	दि.ल.३(रा.दा.)
वैशा. कृ. ५ गु.	,, १५	,, २७	मूल	।।।।।।SS।।	दि.ल.३(रा.चं.दा.), गोधूलि, गोधू. में नृप-बाण,
,, ,, ७ श.	,, १७	,, २९	उ.षा.	Sचं.बु.रा.S।।।।।।।।	दि ल.२,
,, ,, ८ र.	,, १८	,, ३०	धनि.	।।।।।।SS।।	ल. गोधूलि
,, ,, ९ चं.	,, १९	मई १	धनि.	।।।।।।SS।।	दि.ल.२,३ (रा.दा.)
वैशा.शु. ३ बु.	,, २८	,, १०	मृग.	।।।।।।।।।।	दि.ल.३,(गोधू.में क्रान्ति साम्य)
,, ,, ८ चं.	ज्येष्ठ २	,, १५	मघा.	।।Sश.।।।।S।।	ल. गोधूलि
,, ,, १२ शु.	,, ६	,, १९	चित्रा	Sमू.।।।।Sनृ.।।।।	ल. गोधूलि
,, ,, १३ श.	,, ७	,, २०	स्वा.	।S।।Sबु.।S।।।	ल. १ (चं. दा.),
,, ,, १४ र.	,, ८	,, २१	स्वा.	।S।।S.बुSचोS।।।	दि. ल.३ (रा. दा.),
ज्ये. कृ. २ बु.	,, ११	,, २४	मूल	।।।।।।S।।।	दि.ल.३(६।५२उ.) (चं.रा.दा.),गोधूलि,
,, ,, ५ शु.	,, १३	,, २६	उ.षा.	।।।।।Sअ.।SS।	ल. गोधूलि,
,, ,, १२ शु.	,, २०	जून २	अश्वि.	।।।।।Sरो.।S।।	दि.ल३(रा.दा.),४,७(चं.दा.)
ज्ये. शु. १ मं.	,, २४	,, ६	मृग.	।।।।।Sनृ.।।।।	ल. १(२६।३३ उ.)
,, ,, ५ र.	,, २९	,, ११	मघा	।SSमं.श.।।Sरो.।।।।	ल.गोधू.,९(गु.दा.),१,
ज्ये. शु. ६ चं.	ज्येष्ठ ३०	जून १२	मघा	।SSम.श.।।।।।।।	दि.ल.२(रा.दा.),४,७(१७।४७उ.) गोधू., ९(२०।३२उ.) (गु.दा.)
,, ,, ११ श.	आषा. ३	,, १७	स्वाती	।।।।।Sअ.S।।।	ल. गोधूलि,
,, ,, १२ र.	,, ४	,, १८	अनु.	Sश.।।।।।S।।।	ल. १, २ (चं. दा.),
,, ,, १३ चं.	,, ५	,, १९	अनु.	Sश.।।।।Sनृ.S।।	दि. ल. ४, ७,
,, ,, १४ मं.	,, ६	,, २०	मूल	।।।।Sसू.।SSS।	ल. १,
आषा.कृ. २ गु.	,, ८	,, २२	उ.षा.	।।।।Sगु.।।।।।	दि. ल. ७, गोधू., १,
,, ,, ४ श.	,, १०	,, २४	धनि.	।।।।।Sरो.SS।।	दि.ल.४(चं.दा.),७, गोधू.,१(२६।३७ या.),
देशाचार से केवल पंजाब एवं त्रिगर्त्त (कांगड़ा आदि) प्रदेशों के लिए					
श्राव.कृ. ७ बु	श्राव. ११	जुला. २६	अश्वि.	।।।Sगु.।।।S।।	दि.ल.७(चं.दा),रा.ल.२,३ (गोधूलि में शुक्र पाद वेध)
,, ,, १० श.	,, १४	,, २९	रोहि.	Sबु.।।।।।SS।।	ल. गोधूलि, ३,
,, ,, ११ र.	,, १५	,, ३०	मृग.	।।।Sचं.।Sनृ.।S।।	ल.गोधू.,(मिथुन में चं.पाद वेध)
,, ,, १२ चं	,, १६	,, ३१	मृग.	।।।Sचं.।।।S।।	दि.ल.७,९(१८।१३ या.), (चं.गु.दा.)
श्राव.शु. १ श.	,, २१	अग. ५	मघा	।।Sश.।।।।।।।	दि.ल.७ (१३।३६ या.),
,, ,, ५ बु	,, २५	,, ९	चित्रा	Sमं.S।।।।।।।S	दि.ल.८(१५।१६उ.),गोधू.,२,३

शुद्ध विवाह मुहूर्त (सं.२०३५वि.)

तिथि, वार	प्रविष्टा	तारीख १९७८ ई	विवाह नक्षत्र	दश दोष रेखाएं	लग्न, दान-पूजा एवं अन्य विवरण
श्राव.शु. ६ गु.	श्राव. २६	अग. १०	चित्रा	।ऽ।।।।।।ऽ	दि.बु.८(१४।५४या.)
,, ,, ६ गु	,, २६	,, १०	स्वाती	ऽम.।।।।ऽचं।ऽऽ।।	ल. गोधू., ३ (ग. दा.)
,, ,, ७ शु.	,, २७	,, ११	स्वाती	ऽम ।।।।ऽचं।ऽऽ।।	दि. ल. ८ (१४।१६ या.)
,, ,, ८ श.	,, २८	,, १२	अनु.	ऽश.।।।।ऽरो।ऽ।।।	ल.२(च.दा.),३(ग.दा.), गोधूलि में क्रान्ति साम्य
,, ,, ९ र.	,, २९	,, १३	अनु.	ऽश.।।।।ऽगो।ऽ।।।	दि. ल ७
,, ,, १० च.	,, ३०	,, १४	मूल	।ऽ।ऽगु.।।ऽ।।।	ल.गोधू.(पाददृष्टि से गु.वेध नहीं)
भाद्र.कृ. ५ म.	भाद्र. ७	,, २२	अश्वि.	।ऽ।।।।ऽ।।	ल.गोधू., २,३,४,
,, ,, ६ बु.	,, ८	,, २३	अश्वि.	।ऽ।।।ऽचो।ऽ।।	दि.ल.७ (चं.दा.)
,, ,, ८ शु.	,, १०	,, २५	रोहि	।।।।।ऽगो।ऽऽ।।	ल. ३,४,
,, ,, ८ श.	,, ११	,, २६	रोहि.	।।।।।।ऽऽ।।	दि.ल.८(चं.दा.),गोधू.,
,, ,, ८ श.	,, ११	,, २६	मृग.	।ऽ।।।।ऽ।।	ल. ३,४,
भाद्र.शु. ४ बु.	,, २२	सित. ६	स्वाती	।।।।।ऽअ.ऽऽ।।	ल.३(२४।२८उ.)(ग.दा.),४.
,, ,, ५ गु.	,, २३	,, ७	स्वाती	।।।।।ऽअ.ऽऽ।।	दि.ल.८(गोधू.में शुक्रयुति)
,, ,, ८ र.	,, २६	,, १०	मूल	।।।।।ऽचो.ऽ।।।	ल.३(चं.दा.),
,, ,, ९ चं.	,, २७	,, ११	मूल	।।।।।ऽचो।ऽ।।।	दि. ल. ८
,, ,, १० म.	,, २८	,, १२	उ.षा.	।।।।।।।ऽ।।।	ल. गोधू.,
,, ,, ११ बु.	,, २९	,, १३	उ.षा.	।।।।।ऽरो.ऽ।।।	दि.ल.८(१२।७से१३।१६तक)
,, ,, १२ गु.	,, ३०	,, १४	धनि.	ऽमृ.।।।।।ऽ।।।	दि.ल.८,गोधू.,
आश्वि.शु. ७ र.	आश्वि २३	अक्तू. ८	मूल	।।।।।।ऽऽ।।	दि.ल.८,गोधूलि,३(२२।५४ या.) (च.दा.)
,, ,, ८ चं.	,, २४	,, ९	उ.षा.	।।।।।ऽनृ.ऽऽ।।	ल.३(२२।४२उ.) (च.दा.)
,, ,, ९ म.	,, २५	,, १०	उ.षा.	।।।।।।ऽ।।।	दि.ल.८,गोधू.
,, ,, ९ मं.	,, २५	,, १०	श्रव.	।।।।ऽगु.।।।।।	ल. ४ (चं दा.)
,, ,, १० बु.	,, २६	,, ११	श्रव.	।।।।ऽगु.।।।।।	दि.ल.८,गोधू.,
,, ,, १३ श.	,, २९	,, १४	उ.भा.	।।।।ऽगो.।।।।।	ल.३,४,
,, ,, १४ र.	,, ३०	,, १५	उ.भा.	।।।।ऽगो.।।।।।	दि.ल.८(१०।८ उ.).
कार्ति.कृ. ३ गु.	कार्ति. ३	,, १९	रोहि	।ऽ।।।ऽअ.ऽऽ।।	ल.३(२२।२३ उ.), ४,
,, ,, ४ शु.	,, ४	,, २०	रोहि.	।ऽ।।।ऽअ.ऽऽ।।	दि.ल.८(चं. दा.)
,, ,, ४ शु.	,, ४	,, २०	मृग.	।।।।।।ऽ।।	ल.गोधू.,३(२२।९या.)
,, ,, १० गु.	,, १०	,, २६	मघा	ऽबु.।।।।ऽगो.।ऽ।।	ल.गोधू.,४(२३।५७ उ.)
,, ,, १२ श.	,, १२	,, २८	उ.फा.	।।ऽगो।ऽके.ऽअ।ऽ।ऽ	ल. ४ (अन्यावश्यके)

समस्त प्रदेशों के लिए:—

मार्ग.कृ. ७ बु.	मार्ग. ७	नवं. २२	मघा	।।।।।ऽचं।ऽ।।	ल.गोधू.,४,७,
,, ,, १०,श	,, १०	,, २५	हस्त	ऽगु.।।।।।ऽऽ।।	ल. ४,७,

तिथि, वार	प्रविष्टा	तारीख १९७८ ई.	विवाह नक्षत्र	दश दोष रेखाएं	लग्न, दान-पूजा एवं अन्य विवरण
मार्ग.शु. १ शु.	मार्ग. १६	दिस. १	मूल	।।।।।ऽचो।ऽ।।।	ल.६,७,
,, ,, ४ र.	,, १८	,, ३	उ.षा.	।।।।।ऽरो.।।।।	ल.६(२५।१९उ.),७,
,, ,, ५ चं.	,, १९	,, ४	श्रव.	।।।।ऽगु.।।ऽ।।	ल.गोधू.,४(चं.दा.),६(श.दा.), ७(२७।२४ या.),
माघ कृ. ३ म.	माघ ३	जन. १६	मघा	।।।।।ऽअ.।।।।	ल.६(श.दा.),७,८,
,, ,, ५ गु	,, ५	'७९ई. १८	उ.फा.	।।ऽगो।ऽके ऽनृ।ऽ।।	ल. गोधू., ७,८.
,, ,, ६ शु.	,, ६	,, १९	उ.फा.	।।ऽगो.।ऽके.ऽनृ.।ऽ।।	ल.१२(११।३या.) (चं.दा.)
,, ,, ६ शु	,, ६	,, १९	हस्त	ऽच.गु.।।।।।ऽ।।।	ल.गोधू.,७,८,(२७।२० या.),
,, ,, ८ र.	,, ८	,, २१	स्वा.	।।।।।।।ऽ।।	ल.गोधू.,६(२२।३७उ.)(शु.श.दा.),८,
माघ शु. ४ बु.	,, १८	,, ३१	उ.भा.	।।।।।ऽगो ऽऽ।।	ल.६(२२।२३उ.)(चं.श.दा.),८,
,, ,, ५ गु.	,, १९	फर. १	उ.भा.	।।।।।।ऽऽ।।	दि.ल.१(मं.दा.)
,, ,, ५ गु.	,, १९	,, १	रेव.	।।।।।।।।।।	ल.गोधू.६(चं.श.दा.),८
,, ,, ९ चं.	,, २३	,, ५	रोहि.	।।।।।ऽनृ.।ऽ।।	ल.८(२६।१४तक क्रान्तिसाम्य) (चं.दा.)(कन्या,गोधू.में क्रा.सा.)
,, ,, १० म.	,, २४	,, ६	रोहि.	।।।।।।ऽ।।।	दि.ल.१२,१(मं.दा.), गोधू.,
फाल्गु.कृ. १ म.	फाल्गु. २	,, १३	मघा.	।।।।ऽ।ऽऽ।।	दि.ल.१(१०।४४उ.)(मं.दा.)
,, ,, ३ गु.	,, ४	,, १५	हस्त	ऽगु.।।।।ऽअ.।ऽ।ऽ.	ल.७,८(२५।२९ या.),
,, ,, ४ शु	,, ५	,, १६	हस्त	ऽगु.।।।।।।ऽ।ऽ	दि.ल.१२(चं.दा.),गोधू.
,, ,, ५ श.	,, ६	,, १७	स्वा.	ऽच.ऽ।ऽबु.।।।।।	ल.८(२५।३५ उ.),
,, ,, ६ र.	,, ७	,, १८	स्वा.	ऽच.ऽ।ऽबु.।।।।।	दि.ल.१(१०।३५या.)(मं.चं.दा.)
,, ,, ८ मं.	,, ९	,, २०	अनु.	।।।।।।ऽऽ।।	दि.ल.१२,१,गोधू., ७(२२।१९ या.) (शु.दा.)
,, ,, ९ बु.	,, १०	,, २१	मूल	ऽरा.।।।।ऽरो.ऽऽ।।	ल.७(२२।३६उ.), (शु.दा.),८,
,, ,, १० गु.	,, ११	,, २२	मूल	ऽबु.रा.।।।।।ऽऽ।।	ल.गोधूलि
फाल्गु.शु. २ बु.	,, १७	,, २८	उ.भा	ऽम.ऽ।।।ऽचो.ऽ।।।	दि.ल.१,२(म.दा.),रा.ल. ८(२६।० या.)
,, ,, ३ गु	,, १८	मार्च १	रेव.	।।।।।।।।।।	दि.ल.१,२(म.दा.)रा.ल. ८(२३।५९.या.)
,, ,, ७ चं.	,, २२	,, ५	रोहि.	।।।ऽशु.।ऽअ.ऽऽ।।	दि.ल.१२.

आगामी वर्ष (सं. २०३६) के लिए समय शुद्धि:—३ अग १९७९ ई से १२ अक्तूबर १९७९ ई. तक शुक्र और ३१ जुलाई १९७९ ई. से २५ अगस्त १९७९ ई. तक गुरु अस्त रहेगा। इस वर्ष (सं. २०३६) में अधिक मास नहीं है।

सं. २०३५ में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह-निर्णय के लिए त्रिबल-शुद्धि

(अर्थात्-किस राशि वाले वर और कन्या के लिए सं. २०३५ में कुल कितने विवाह मुहूर्त किन-किन तारीखों को बनते हैं ?)

लोग अक्सर अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास महीने की खास तारीख के आस पास ही विवाह मुहूर्त (साहा) निकालने के लिए ज्योतिषियों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाह मुहूर्तों में त्रिबल शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है। इस झंझट से ज्योतिषी लोगों को छुटकारा देने के लिए हम यहां नीचे 'त्रिबल शुद्धि कोष्ठक' दे रहे हैं। स. २०३५ के शुद्ध विवाह मुहूर्त इस पंचांग में पृ.१४०-४१ पर दिये गए हैं। किस-किस महीने की किस-किस तारीख वाले विवाह मुहूर्तों में किस राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं, यह त्रिबल-शुद्धि के अनुसार नीचे दिए गए "त्रिबल शुद्धि कोष्ठक" में लिख दिया गया है। **अमुक राशि वाले लड़के (वर) और लड़की (कन्या) के लिए इस वर्ष कुल कितने विवाह मुहूर्त किन-किन तारीखों को बनते हैं—यह इस कोष्ठक द्वारा सर्व साधारण व्यक्ति भी एक ही नजर में तुरन्त जान सकता है।** इस कोष्ठक से यह भी तुरन्त जाना जा सकता है, कि—अमुक राशि वाले लड़के से अमुक राशि वाली लड़की का विवाह इस वर्ष किन-किन तारीखों को हो सकता है। लड़का-लड़की की राशियों वाले दोनों कालमों में जो जो तारीखें समान रूप से मिलती हों, उन तारीखों में उस लड़के और लड़की का विवाह हो सकता है। जैसे—मकर राशि वाले लड़के और धनु राशि वाली लड़की का विवाह सं. २०३५ में मई के महीने में किन-किन तारीखों को हो सकता है?—यह मालूम करना है। नीचे "त्रिबल शुद्धि कोष्ठक" देखें। लड़के वाले कालम में मकर के आगे मई की केवल १९,२०,२१,२४,२६ तारीखें हैं, जब कि लड़की वाले कालम में धनु के आगे मई की १,१०,१५,१९,२०,२१,२४,२६ तारीखें हैं। इस लिए यह समझना चाहिए कि इन दोनों का विवाह १९,२०,२१,२४, एवं २६ तारीखों को ही हो सकता है क्योंकि मई की केवल यही पांच तारीखें दोनों में एक सी मिलती हैं।

क्योंकि आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अत: चतुर्थ-अष्टम-द्वादशस्थ गुरु को नेष्ट न मानकर पूज्य मानना चाहिए।

(यहां दी गई अंग्रेजी तारीखें सूर्योदय से प्रारम्भ होकर सूर्योदय पर समाप्त होने वाली हैं।)

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०३५)

(८ अप्रैल १९७८ ई. से २८ मार्च १९७९ ई. तक के लिए)

जन्म या नाम राशि ↓	लड़का	लड़की
मेष	अप्रै. १८,२२,२३,२७,२९,३०,मई१,१०,१५,१९,२०,२१,२४,२६,जून२,६,११,१२,१७,२०,२२,२४. अग.२२,२३,२५,२६. सितं.६,७,१०,११,१२,१३,१४. अक्तू.८,९,१०,११,१४,१५,२०,२६,२८. जन.१६,१८,१९,२१,३१.फर.१,५,६,१३,१५,१६,१७,१८,२१,२२,२८.मार्च१,५.	अप्रै.१८,२२,२३,२७,२९,३०, मई१,१०,१५,१९,२०,२१,२४,२६. जून २,६,११,१२,१७,२०,२२,२४, जुला. २६,२९,३०,३१. अग. ५,९,(२७।४१उ.),१०,११,१४,२२,२३,२५,२६.सितं.६,७,१०,११,१२,१३,१४. अक्तू.८,९,१०,११,१४,१५,२०,२६,२८. नवं.२२,२५.दिसं.१,३,४. जन.१६,१८,१९,२१,३१.फर.१,५,६,१३,१५,१६,१७,१८,२१,२२,२८.मार्च१,५.
वृष	मई१९,२०,२१,२६,जून२,६,१७,१८,१९,२२(१६।२६उ.),२४,जुला.२६,२९,३१.अग.९,१०,११,१२,१३,अक्तू.१०,११,१४,१५,२०,२८.नवं.२५,दिसं.३,४.जन.१८,१९,२१,३१,फर.१,५,६,१५,१६,१७,१८,२८.मार्च१,५.	अप्रै.२२,२३,२९,३०,मई१,१०,१९,२०,२१,२६.जून२,६,१७,१८,१९,२२, (१६।२६उ.),२४, जुला.२६,२९,३१,अग.९,१०,११,१२,१३,२२,२३,२५,२६.सितं.६,७,१३,१४. अक्तू.१०,११,१४,१५,२०,२८.नवं.२५. दिसं. ३,४.जन.१८,१९,२१,३१. फर.१,५,६,१५,१६,१७,१८,२८. मार्च१,५.
मिथुन	अप्रै.१८,२३,२७.मई१,१०जून१७,१८,१९,२०,२२(१६।२६या.),२४(१६।३७उ.).जुला.२६,२९,३०,३१. अग.५,९(२७।४१उ.),१०,११,१२,१३,१४,२२,२३,२५,२७.सितं.६,७,१०,११,१२.अक्तू.२०,२६. नवं.२२.दिसं.१. फर.१३,१७,१८,२०,२१,२२,२८.मार्च१,५.	अप्रै.१८,२३,२७ मई १,१०,१५,२०,२१,२४. जून२,६,११,१२,१७,१८,१९,२०,२२(१६।२६या.).२४(१६।३७उ.).जुला.२६,२९,३०,३१. अग.५,९(२७।४१उ.).१०,११,१२,१३,१४,२२,२३,२५,२६.सितं.६,७,१०,११,१२.अक्तू.८,९,१४,१५,२०,२६. नवं.२२,दिसं.१.जन.१६,२१,३१.फर.१,५,६,१३,१७,१८,२०,२१,२२,२८.मार्च१,५.
कर्क	अप्रै.१८,२२,२७,२९,३०.मई१०,१५,१९,२४,२६.जून२,६,११,१२.जुला.२६,२९,३०,३१.अग.५,९(२७।४१या.),१२,१३,१४,२२,२३,२५,२६. सितं.१०,११,१२,१३,१४.अक्तू.८,९,१०,११,१४,१५. नवं.२२,२५.दिसं.१,३,४, जन.१६,१८,१९,३१ फर.१,५,६	अप्रै.१८,२२,२७,२९,३० मई१०,१५,१९,२४,२६. जून२,६,११,१२,१८,१९,२०,२२,२४(१६।३७या.).जुला.२६,२९,३०,३१.अग.५,९(२७।४१या.),१२,१३,१४,२२,२३,२५,२६.सितं.१०,११,१२,१३,१४.अक्तू.८,९,१०,११,१४,१५,२०,२६,२८. नवं.२२,२५. दिसं.१,३,४.जन.१६,१८,१९,३१.फर.१,५,६,१३,१५,१६,२०,२१,२२,२८.मार्च१,५.

जन्म या नाम राशि	त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०३५)	
	लड़का	लड़की
सिंह	अप्रै.१८,२२,२३,२७,२९,३०, मई१,१०,१५,१९,२०,२१,२४,२६,जून २,६,११,१२,१७,२०,२२,२४, अग.२२,२३,२५,२६, सितं.६,७,१०,११,१२,१३,१४,अक्तू ८,९,१०,११,२०,२६,२८,जन.१६,१८,१९,२१,फर.५,६,१३,१५,१६,१७,१८,२१,२२, मार्च ५,	अप्रै.१८,२२,२३,२७,२९,३०,मई१,१०,१५,१९,२०,२१,२४,२६, जून २,६,११,१२,१७,२०,२२,२४,जुला.२६,२९,३०,३१,अग.५,९,१०,११,१४,२२,२३,२५,२६ सितं.६,७,१०,११,१२,१३,१४ अक्तू.८,९,१०,११,२०,२६,२८,नवं.२२,२५. दिसं.१,३,४, जन.१६,१८,१९,२१,फर.५,६,१३,१५,१६,१७,१८,२१,२२,मार्च ५,
कन्या	मई१५,१९,२०,२१,२६,जून ६,११,१२,१७,१८,१९,२२(१६।२६ उ.),२४, जुला.२९,३०,३१,अग.५,९,१०,११,१२,१३,अक्तू.१०,११,१४,१५,२०,२६,२८,नवं.२२,२५,दिसं.३,४, जन.१६,१८,१९,२१,३१, फर १,५,६,१३,१५,१६,१७,१८,२०,२८,मार्च१,५,	अप्रै. १८,२२,२३,२९,३०, मई १,१०,१५,१९,२०,२१,२६, जून ६,११,१२,१७,१८,१९,२२ (१६।२६ उ.),२४,जुला.२९,३०,३१, अग.५,९,१०,११,१२,१३,२५,२६, सितं.६,७,१३,१४, अक्तू.१०,११,१४,१५,२०,२६,२८,नवं.२२,२५,दिसं.३,४,जन.१६,१८,१९,२१,३१,फर.१,५,६,१३,१५,१६,१७,१८,२०,२८,मार्च१,५,
तुला	अप्रै.१८,२२,२३,२७, मई १, जून १७,१८,१९,२०,२२(१६।२६ या.),२४(१६।३७ उ.). जुला. २६,३१,अग.५,९,१०,११,१२,१३,१४,२२,२३ सितं. ६,७,१०,११,१२,अक्तू.२६,२८,नवं.२२,२५.दिसं.१. फर १३,१५,१६,१७,१८,२०,२१,२२,२८,मार्च१,	अप्रै.१८,२२,२३,२७, मई१,१५,१९,२०,२१,२४,जून२,६,११,१२,१७,१८,१९,२०,२२(१६।२६या.).२४(१६।३७ उ.),जुला.२६,३१. अग.५,९,१०,११,१२,१३,१४,२२,२३, सितं.६,७,१०,११,१२,अक्तू.८,९,१४,१५,२६,२८,नवं.२२,२५.दिसं.१ जन १६,१८,१९,२१,३१,फर.१,१३,१५,१६,१७,१८,२०,२१,२२,२८, मार्च १,
वृश्चिक	अप्रै १८,२२,२३,२७,२९,३०,मई१०,१५,१९,२०,२१,२४,२६, जून २,११,१२,जुला २६,२९,३०, अग. ५,९,१०,११,१२,१३,१४,२२,२३,२५,२६, सितं.६,७,१०,११,१२,१३,१४ अक्तू. ८,९,१०,११,१४,१५, नवं २२,२५. दिसं १,३,४,जन.१६,१८,१९,२१,३१,फर.१,५,६,	अप्रै.१८,२२,२३,२७,२९,३०, मई १०,१५,१९,२०,२१,२४,२६. जून२,११,१२,१७,१८,१९,२०,२२,२४(१६।३७या.),जुला.२६,२९,३०, अग.५,९,१०,११,१२,१३,१४,२२,२३,२५,२६, सितं.६,७,१०,११,१२,१३,१४,अक्तू.८,९,१०,११,१४,१५,२०,२६,२८,नवं.२२,२५. दिसं १,३,४,जन.१६,१८,१९,२१,३१,फर.१,५,६,१३,१५,१६,१७,१८,२०,२१,२२,२८,मार्च१,५,
धनु	अप्रै.१८,२२,२३,२७,२९,३०,मई१,१०,१५,१९,२०,२१,२४,२६, जून २,६,११,१२,१७,१८,१९,२०,२२,२४, अग.२२,२३,२५,२६, सितं.६,७,१०,११,१२,१३,१४,अक्तू.८,९,१०,११,२०,२६,२८,जन.१६,१८,१९,२१, फर ५,६,१३,१५,१६,१७,१८,२०,२१,२२,मार्च५,	अप्रै.१८,२२,२३,२७,२९,३०,मई१,१०,१५,१९,२०,२१,२४,२६. जून २,६,११,१२,१७,१८,१९,२०,२२,२४,जुला.२६,२९,३०,३१,अग.५,९,१०,११,१२,१३,१४,२२,२३,२५,२६. सितं. ६,७,१०,११,१२,१३,१४,अक्तू.८,९,१०,११,२०,२६,२८,नवं.२२,२५. दिसं १,३,४,जन.१६,१८,१९,२१,फर.५,६,१३,१५,१६,१७,१८,२०,२१,२२ मार्च ५,
मकर	मई१९,२०,२१,२४,२६. जून६,१७,१८,१९,२०,२२,२४, जुला.२९,३०,३१, अग ९,१०,११,१२,१३,१४. अक्तू. ८,९,१०,११,१४,१५,२०,२८, नवं.२५, दिसं.१,३,४,जन १८,१९,२१,३१, फर १,५,६,१५,१६,१७,१८,२०,२१,२२,२८,मार्च१,५,	अप्रै.२२,२३,२७,२९,३०,मई१,१०,१९,२०,२१,२४,२६जून६,१७,१८,१९,२०,२२,२४,जुला. २९,३०,३१,अग.९,१०,११,१२,१३,१४,२५,२६, सितं.६,७,१०,११,१२,१३,१४. अक्तू ८,९. १०,११,१४,१५,२०,२८,नवं.२५,दिसं.१,३,४,जन १८,१९,२१,३१, फर.१,५,६,१५,१६,१७,१८,२०,२१,२२,२८,मार्च१,५,
कुम्भ	अप्रै १८,२३,२७,२९,३०,मई१. जून१७,१८,१९,२०,२२,२४,जुला.२६,३१, अग.५,९(२७।४१उ.),१०,११,१२,१३,१४,२२,२३,सितं.६,७,१०,११,१२,१३,१४,अक्तू.२६,नवं २२, दिसं.१,३,४, फर.१३,१७,१८,२०,२१,२२,२८, मार्च १,	अप्रै.१८,२३,२७,२९,३० मई१,१५,२०,२१,२४,२६, जून २,६,११,१२,१७,१८,१९,२०,२२,२४,जुला.२६,३१, अग.५,९,(२७।४१उ.),१०,११,१२,१३,१४,२२,२३, सितं. ६,७,१०,११,१२,१३,१४,अक्तू.८,९,१०,११,१४,१५,२६,नवं.२२,दिसं.१,३,४, जन.१६,२१,३१, फर १,१३,१७,१८,२०,२१,२२,२८, मार्च १,
मीन	अप्रै १८,२२,२७,२९,३०,मई१,१०,१५,१९,२४,२६,जून२,११,१२,जुला.२६,२९,३०,अग.५,९(२७।४१या.),१२,१३,१४,२२,२३,२५,२६, सितं.१०,११,१२,१३,१४,अक्तू ८,९,१०,११,१४,१५ नवं २२,२५, दिसं.१,३,४,जन.१६,१८,१९,३१,फर.१,५,६,	अप्रै.१८,२२,२७,२९,३०, मई १,१०,१५,१९,२४,२६, जून २,११,१२,१८,१९,२०,२२,२४, जुला.२६,२९,३०, अग.५,९(२७।४१ या.),१२,१३,१४,२२,२३,२५,२६, सितं.१०,११,१२,१३,१४,अक्तू.८,९,१०,११,१४,१५,२०,२६,२८,नवं.२२,२५,दिसं.१,३,४, जन. १६,१८,१९,३१,फर.१,५,६,१३,१५,१६,२०,२१,२२,२८, मार्च १,५,

अशुद्ध-विवाह मुहूर्त (सं. २०३५ वि.)

नीचे अशुद्ध विवाह मुहूर्तों की सूची दी जा रही है। यहां साथ-साथ उन प्रमुख २ दोषों का निर्देश भी किया गया है जिन के कारण इन मुहूर्तों में विवाह नहीं हो सकते।

चैत्र शु. ५ बु. तक मीनस्थ सूर्य
चैत्र शु. ९ चं. मघा (गणित से क्रान्ति साम्य)
,, ,, १२ बु. उ.फा. ग्रहण नक्षत्र
,, ,, १२ बु. उ.फा. नक्षत्रान्त
,, ,, १३ शु. हस्त] केतुवेध
,, ,, १४ श. हस्त]
वैशा. कृ. १ चं. अनु. व्यतीपात
,, ,, ३ मं. अनु. रेखाल्पता
,, ,, ४ बु. मूल लग्नाभाव
,, ,, ६ शु. उ.षा., भद्रा, लग्नाभाव
,, ,, ७ श. श्रव.] शनिवेध
,, ,, ८ र. श्रव.]
,, ,, ११ बु. उ.भा.] राहुवेध
,, ,, १२ गु. उ.भा.]
वैशा. शु. १ चं. रोहि.] शुक्रयुति
,, ,, २ मं. रोहि.]
,, ,, २ मं. मृग. लग्नाभाव
,, ,, ९ मं. मघा मृत्युबाण
,, ,, १० बु. उ.फा.] ग्रहण नक्षत्र
,, ,, ११ गु. उ.फा.]
,, ,, ११ गु. हस्त] केतुवेध
,, ,, १२ शु. हस्त]
,, ,, १३ श. चित्रा व्यतीपात
,, ,, १५ चं. अनु. लग्नाभाव
ज्ये. कृ. १ मं अनु. लग्नाभाव
,, ,, ३ गु. उ.षा. मृत्युबाण
,, ,, ५ शु. श्रव.] शनिवेध
,, ,, ६ श. श्रव.]
,, ,, ६ श. धनि.] भौमवेध
,, ,, ७ र. धनि.]
,, ,, ९ मं. उ.भा.] अपरिहार्य
,, ,, १० बु. उ.भा.] केतुयुति
,, ,, १० बु. रेव.] राहुवेध
,, ,, ११ गु. रेव.]
,, ,, ११ गु. अश्वि. लग्नाभाव
ज्ये. शु. २ बु. मृग. लग्नाभाव

ज्ये. शु. ७ मं. उ.फा. ग्रहण नक्षत्र
,, ,, ८ बु. उ.फा. मासान्त
,, ,, ८ बु. हस्त मासान्त, केतुवेध
,, ,, ९ गु. हस्त-चित्रा संक्रान्ति केतुवेध
,, ,, १० शु. चित्रा, परिघार्ध, मृत्युबाण
,, ,, १० शु. स्वा. मृत्युबाण
आषा. कृ. १ बु. मूल लग्नाभाव
,, ,, ३ शु. उ.षा. भद्रा
,, ,, ३ शु. श्रव. शनि-भौम वेध
,, ,, ६ चं. उ.भा.] केतुयुति अपरिहार्य
,, ,, ७ मं. उ.भा.]
आषाढ़ कृ. ९ बु. से श्राव. कृ. २ शु.
तक गुरु अस्त
श्राव. कृ. ६ मं. रेव.] भौम-राहु वेध
,, ,, ७ बु. रेव.]
,, ,, ८ गु. अश्वि. मृत्युबाण
,, ,, ११ र. रोहि. लग्नाभाव
श्राव. शु. २ र. मघा परिघार्ध
,, ,, ३ चं. उ.फा.] शुक्रयुति
,, ,, ४ मं. उ.फा.]
,, ,, ४ मं. हस्त] केतुवेध
,, ,, ५ बु. हस्त]
,, ,, १२ मं. मूल मासान्त
,, ,, १३ बु. उ.षा. संक्रान्ति
,, ,, १४ गु. श्रव. शनि-सूर्य वेध:
,, ,, १४ गु. धनि. मृत्युबाण
,, ,, १५ शु. धनि. मृत्युबाण
भाद्र. कृ. २ र. उ.भा.] भौमवेध
,, ,, ३ चं. उ.भा.]
,, ,, ३ चं. रेव. भुजंगपात राहु वेध
,, ,, ५ मं. रेव. भुजंगपात, राहु वेध
,, ,, ९ र. मृग. लग्नाभाव,, मृत्यु
भाद्र. शु. १ र. उ.फा.] ग्रहण नक्षत्र
,, ,, २ चं. उ.फा.]
,, ,, २ चं. हस्त] केतुवेध
,, ,, ३ मं. हस्त]

भाद्र. शु. ३ मं. चित्रा] शुक्र युति
,, ,, ४ बु. चित्रा]
,, ,, ६ शु. अनु. वैधृति विष्कंभ,
,, ,, ७ श. अनु. रेखाल्पता
,, ,, ११ बु. श्रव.] शनिवेध
,, ,, १२ गु. श्रव.]
,, ,, १४ शु. धनि. ग्रहणवेध, मासान्त
श्राद्ध पक्ष
आश्वि. शु. १ मं. चित्रा केतुवेध
,, ,, १ मं. स्वा.] भौमयुति
,, ,, २ बु. स्वा.] अपरिहार्य
,, ,, ३ गु. अनु. भद्रा
,, ,, ४ शु. अनु. भद्रा, मृत्यु बाण
,, ,, ५ श. मूल लग्नाभाव
,, ,, १० बु. धनि.] भुजङ्गपात:
,, ,, ११ गु. धनि.]
,, ,, १४ र. रेव.] राहुवेध
,, ,, १२ चं. रेव.]
,, ,, १५ चं. अश्वि.] शनिवेध
काति. कृ. १ मं. अश्वि.]
,, ,, ५ श. मृग. लग्नाभाव
,, ,, ९ बु. मघा लग्नाभाव
काति. शु. १ बु. काति. शु. १४ चं.
तक शुक्र अस्त
मार्ग. कृ. ८ गु. मघा, वैधृति, लग्नाभाव
,, ,, ९ शु. उ.फा. राहुयुति, रेखाल्पता
,, ,, १० श. उ.फा. भद्रा
,, ,, ११ र. हस्त, मृत्यु पंचक, लग्नाभाव
,, ,, ११ र. चित्रा] केतुवेध
,, ,, १२ चं. चित्रा]
मार्ग. शु. २ श. मूल लग्नाभाव
,, ,, ५ चं. उ.षा. लग्नाभाव
,, ,, ६ मं. धनि. मृत्युबाण
,, ,, ८ गु. उ.भा. लग्नाभाव
,, ,, ९ शु. उ.भा., व्यतीपात लग्नाभाव
,, ,, ९ शु. रेव.] राहुवेध
,, ,, १० श. रेव.]

मार्ग. शु. १० श. अश्वि.] शनिवेध
,, ,, ११ र. अश्वि.]
,, ,, १३ मं. रोहि. लग्नाभाव
,, ,, १४ बु. रोहि., भद्रा, लग्नाभाव
,, ,, १५ गु. रोहि. मृग., मासान्त
धनुःस्थ सूर्य
माघ कृ. २ चं. मघा मृत्युबाण,
,, ,, ७ श. हस्त भद्रा
,, ,, ७ श. चित्रा] केतुवेध
,, ,, ८ र. चित्रा]
,, ,, ९ चं. स्वा. लग्नाभाव
,, ,, १० मं. अनु., भद्रा, मृत्यु, लग्नाभाव
,, ,, ११ बु. अनु. लग्नाभाव
,, ,, १२ गु. मूल रेखाल्पता
माघ शु. १ चं. धनि., व्यतीपात, लग्नाभाव
,, ,, ६ शु. रेव. मृत्युबाण
,, ,, ६ शु. अश्वि.] शनि-राहु वेध
,, ,, ७ श. अश्वि.]
,, ,, १० मं. मृग. वैधृति
,, ,, ११ बु. मृग. वैधृति-भद्रा
,, ,, १५ चं. मघा, संक्रान्ति
फाल्गु. कृ. २ बु. उ.फा. मृत्युबाण
,, ,, ३ गु. उ.फा., भद्रा, लग्नाभाव
,, ,, ४ शु. चित्रा] भुजंगपात केतुवेध
,, ,, ५ श. चित्रा]
,, ,, ७ चं. अनु., व्याघात, लग्नाभाव
,, ,, ११ शु. उ.षा.] शुक्रयुति
,, ,, १२ श. उ.षा.]
फाल्गु. शु. १ मं. उ.भा. लग्नाभाव
,, ,, २ बु. रेव. लग्नाभाव
,, ,, ३ गु. अश्वि.] राहु-शनि वेध
,, ,, ४ शु. अश्वि.]
,, ,, ६ र. रोहि. लग्नाभाव
,, ,, ७ चं. मृग. लग्नाभाव
होलाष्टक एवं मीनस्थ सूर्य

द्विरागमन मुहूर्त (सं. २०३५ वि.)

तिथि, वार	प्रविष्टा	तारीख १९७८ ई.	नक्षत्र	लग्न काल आदि
चैत्र शु. १२गु.	वैशा. ८	अप्रै. २०	उ.फा.	(६।२७ उ.)
,, ,, १३शु.	,, ९	,, २१	उ.फा.ह.	
वैशा कृ. ५ गु.	,, १५	,, २७	मूल	
,, ,, ९ च	,, १९	मई १	धनि.शत.	(११।५५ उ.)
,, ,, १२गु.	,, २२	,, ४	उ.भा.,रे.	
,, ,, १३शु.	,, २३	,, ५	रेव.	(९।१४ या.)
वैशा.शु. ३ बु.	,, २८	,, १०	मृग.	(११।०५ या.)
मार्ग.कृ. ३ शु.	मार्ग. २	नव. १७	मृग.	(१५।२८ या.)
,, ,, ५ च.	,, ४	,, २०	पुष्य	
,, ,, १२चं	,, १२	,, २७	चित्रा	(१९।१७ या.)
मार्ग.शु. ५ च	,, १९	दिस. ४	उ.षा.,श्र.	
,, ,, ७ बु	,, २१	,, ६	शत.	
,, ,, ९ शु	,, २३	,, ८	उ.भा	(१६।१५उ., १७।२या.)
फाल्गु.कृ.२बु.	फाल्गु. ३	फर. ९	उ.फा.	(१५।३६ उ.)
,, ,, ४ शु	,, ५	'७९ई. १६	हस्त	(१७।५ उ.)
,, ,, १०गु	,, ११	,, २२	मूल	(१४।४७ उ.)
फाल्गु.शु.२बु.	,, १७	,, २८	उ.भा.	
,, ,, ३ गु.	,, १८	मार्च १	रेव.	(१३।१ या.)
,, ,, ४ शु	,, १९	,, २	अश्वि.	(११।५२ उ.)
,, ,, ७ च.	,, २२	,, ५	रोहि.	(९।२७ या.)

सूचना—विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर उपरोक्त मुहूर्तों के बिना ही द्विरागमन हो सकता है। यदि नव-विवाहिता वधू का द्विरागमन दीपावली के दिन दीपकों के प्रकाश में हो तो घर में सुख व लक्ष्मी की वृ[illegible]होती है।

गृहारम्भ मुहूर्त (सं. २०३५ वि.)

चैत्र शु. १२गु.	वैशा ८	अप्रै. २० (१९७८ई.)	उ.फा.	अभिजित् में (पादवेध में बुध वेधाभाव)
ज्ये. कृ. ४ शु.	ज्ये. १३	मई २६	उ.षा.	अभिजित् में,
श्राव.शु.१५शु.	भाद्र. ३	अग. १८	धनि.	अभिजित् में,
भाद्र.कृ. १श.	,, ४	,, १९	शत.	अभिजित् में,
भाद्र.शु. ११बु.	,, [illegible]	सित. १३	उ.षा	(१२।०३ उ. १४।२८या.)
,, ,, १२गु.	,, [illegible]	,, १४	धनि.	अभिजित् में
मार्ग शु. ७बु.	मार्ग. २१	दिस. ६	शत.	(१५।१८या.) (पादवेध में शुक्र वेध नहीं)
फाल्गु कृ. ४शु.	फाल्गु. ५	७९ ई. फर. १६	हस्त	(१६।५उ., २०।२४या।)

यहां कोष्ठकों में शु. मुहूर्त, ह. के घ. मि. दिए हुए हैं।

गृह-प्रवेश मुहूर्त (सं. २०३५वि.)

तिथि, वार	प्रविष्टा	तारीख १९७८ ई.	नक्षत्र	लग्न काल आदि
वैशा.कृ. ९च.	वैशा. १९	मई १	धनि.	अभिजित् में (११।५५ उ.) (जीर्ण गृह में)
वैशा.शु.१२शु.	ज्ये. ६	,, १९	चित्रा	(१६।४१उ.२५।१७या.)
ज्ये. शु.१० शु.	आषा. २	जून १६	चित्रा	(११।३० या.)
,, ,, ११श.	,, ३	,, १७	स्वाती	(१४।३० उ.) (जीर्ण गृह में).
,, ,, १३चं.	,, ५	,, १९	अनु.	(९।१४ या.)
माघ शु. ६ शु.	माघ २०	७९फर. २	रेव.	अभिजित् में
फाल्गु.शु.७च.	फाल्गु. २२	मार्च ५	रोहि.	(९।२७या.) (पादवेध में शुक्र वेध नहीं)

देव प्रतिष्ठा मुहूर्त (सं. २०३५वि.)

वैशा.कृ. ७श.	वैशा. १७	अप्रै. २९	उ.षा.	अभिजित् में,
,, ,, ८ र.	,, १८	,, ३०	श्रव.	अभिजित् में,
,, ,, ९ च.	,, १९	मई १	धनि.	अभिजित् में(११।५५उ.)
वैशा.शु. ३ बु.	,, २८	,, १०	मृग.	ल. २,३
ज्ये. कृ. ५ शु	ज्ये. १३	,, २६	उ.षा.	अभिजित् में
,, ,, ६ श.	,, १४	,, २७	श्रव.	अभिजित् में
,, ,, ७ र.	,, १५	,, २८	धनि.	अभिजित् में
ज्ये. शु. ३ गु.	,, २६	जून ८	पुन.	अभिजित् में
,, ,, ३ शु	,, २७	,, ९	पुन.	(७।१३ या.)
,, ,, ४ श.	,, २८	,, १०	पुष्य	(९।४०उ., ११।५९या.)
,, ,, १०शु.	आषा. २	,, १६	चित्रा	(११।३० या.)
,, ,, १३च.	,, ५	,, १९	अनु.	(९।१३ या.)
आषा कृ. २गु.	,, ८	,, २२	उ.षा.	अभिजित् में(याम्यायन)
,, ,, ४ श.	,, १०	,, २४	धनि.	अभिजित् में(याम्यायन)
,, ,, ५ र.	,, ११	,, २५ ('७९ ई.)	शत.	अभिजित् में(१२।३६ या.)(याम्यायन)
माघ कृ. ६ शु.	माघ ६	जन१९	हस्त	अभिजित्में(१२।१५उ.)
माघ शु. ५ गु.	,, १९	फर. १	उ.भा.	अभिजित् में
,, ,, ६ शु.	,, २०	,, २	रेव.	अभिजित् में
,, ,, १३शु	,, २७	,, ९	पुन.	अभिजित् में (पादवेध में शुक्र वेध नहीं)
फाल्गु कृ. ६र	फाल्गु. ७	,, १८	स्वाती	ल.१२ (पाद वेध में बुध-वेध नहीं)
फाल्गु.श. २बु.	,, १७	,, २८	उ.भा	ल. २,
,, ,, ०३ गु.	,, १८	मार्च १	रेव.	अभिजित् में(१३।१या.)
,, ,, ७ च.	,, २२	,, ५	रोहि.	ल.१२(९।२७या)(पाद वेध में शुक्र वेध नहीं)

उपनयन मुहूर्त (सं. २०३५वि.)

यह बात प्रमाणित हो चुकी है, कि ब्राह्मणादि वर्णों में पैदा हुए बालक प्रायः स्वजाति युक्त गुण९०% वीर्यगत प्रभाव के कारण जन्म से ही साथ लाते हैं, यदि यज्ञोपवीतादि वैदिक संस्कार वर्णोचित आयु एवं शुभ मुहूर्त में करें तो उसमें सत्य शक्तिका क्रमशः विकास होता है।

विशेष—अत्यावश्यकता में चन्द्र-बल देखकर सत्तीर्थ पर बिना मुहूर्त के भी यज्ञोपवीत लिया जा सकता है। ऋषितर्पण (श्राव. शु. पूर्णिमा) का दिन भी यज्ञोपवीत लेने के लिए शुभ माना जाता है।

तिथि वार	प्रविष्टा	तारीख १९७८	नक्षत्र	लग्न काल आदि
चैत्र शु. २र.	चैत्र २७	अप्रै. ९	अश्वि.	
वैशा.कृ. ३म.	वैशा. १३	,, २५	अनु.	अभिजित् में (सामवेदियों के लिए)
,, ,, ५ गु	,, १५	,, २५	मूल	अभिजित् में
वैशा.शु. २म	,, २७	मई ९	रोहि.	अभिजित् में (सामवेदियों के लिए)
,, ,, ३ बु.	,, २८	,, १०	मृग.	ल.२,३,
,, ,, १०बु.	ज्ये ४	,, १७	पू.फा.	ल.२,३(पादवेध में बुध. वेध नहीं)
ज्ये. कृ. २ बु	,, ११	,, २४	मूल	(६।५२ उ.)
,, ,, ५ शु.	,, १३	,, २६	उ.षा.	अभिजित् में,
ज्ये. शु. ३ गु.	,, २६	जन ८	पुन.	अभिजित् में,
,, ,, ३ शु	,, २७	,, ९	पुन	(७।१३ या.)
,, ,, १०शु.	आषा. २	,, १६	चित्रा	(११।३० या.)
माघ कृ. २च.	माघ २	जन१५ १९७९ ई	आश्ले.	अभिजित् में(पादवेध में शुक्र वेध नहीं).
माघ शु. ३म	,, १७	,, ३०	शत.	(१०।४५ या. (सामवेदियों के लिए)
,, ,, ५ गु	,, १९	फर. १	उ.भा	अभिजित् में
,, ,, १०म.	,, २४	,, ६	रोहि.	अभिजित् में(सामवेदियों के लिए)
फाल्गु शु. २बु.	फाल्गु. १७	,, २८	उ.भा.	ल.२,
,, ,, ३ गु.	,, १८	मार्च १	रेव.	अभिजित् में

अभिजित् मुहूर्त—ऊपर दिए गए मुहूर्तों में अनेक स्थलों पर हमने 'अभिजित्' शब्द का प्रयोग किया है, यह अभिजित नक्षत्र नहीं अपितु एक मुहूर्त (समय विशेष) का नाम है। घण्टा मिनटात्मक-दिनमान के आधे को सूर्योदयकाल में जोड़ने पर स्पष्ट मध्याह्नकाल बन जाता है। स्पष्ट मध्याह्नकाल से२४मिनट पहिले और२४मि बाद के समय को 'अभिजित् मुहूर्त' कहा जाता है। इस मुहूर्त में अनेक दोष दूर करने की शक्ति मानी जाती है। इस लिए इसमें किए गए सभी काम सफल होते हैं:-'अभिजित् सर्वदेशेषु मुख्यदोषविनाशकृत्।

मध्यं दिने गते भानौ मुहूर्तोऽभिजिदाह्वय ॥

नाशयत्यखिलान् दोषान् पिनाकी त्रिपुरं यथा।

मुण्डन मुहूर्त (सं. २०३५)

कोष्ठकों में भा. स्टैं. टा. दिया गया है।

तिथि	वार	प्रविष्टा	तारीख १९७८-७९ ई.	नक्षत्र	लग्न काल आदि
चैत्र शु. १३	गु.	वैशा. ९	अप्रै. २१	हस्त	
वैशा कृ. ९	च.	,, १९	मई १	धनि. शत	(११।५५ उ.)
,, ,, १२	गु.	,, २२	,, ४	रेव.	
,, ,, १३	शु.	,, २३	,, ५	रेव.	(९।१४ या.)
वैशा. शु. ३	बु.	,, २८	,, १०	मृग.	(११।१५ या.)
ज्ये. कृ. २	बु.	ज्ये. ११	,, २४	ज्येष्ठा	
,, ,, ११	गु.	,, १९	जून १	रेव.	
ज्ये. शु. २	बु.	,, २५	,, ७	मृग.	
,, ,, ३	शु.	,, २७	,, ९	पुन.	(७।१३ या.)
,, ,, १०	शु.	आषा. २	,, १६	चित्रा	(११।२० या.)
माघ कृ. ११	बु.	माघ ११	जन. २४	ज्येष्ठा	
माघ शु. १	च.	,, १६	७९ई. २९	धनि.	(१४।५२ उ.)
,, ,, १३	शु.	,, २७	फर. ९	पुन.	
फाल्गु. शु. ३	गु.	फाल्गु. १८	मार्च १	रेव.	(१३।१ या.)
,, ,, ४	शु.	,, १९	,, २	अश्वि.	(११।५२ उ.)

अक्षरारम्भ मुहूर्त (सं. २०३५)

तिथि	वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	लग्न काल आदि
ज्ये. कृ. ११	गु.	ज्ये. १९	जून १	रेव.	
ज्ये. शु. २	बु.	,, २५	७८ई. ७	आर्द्रा	(११।३२ उ.)
,, ,, ३	गु.	,, २६	,, ८	आर्द्रा-पुन.	
,, ,, ३	शु.	,, २७	,, ९	पुन.	(७।१३ या.)
,, ,, १०	शु.	आषा. २	,, १६	चित्रा	(११।३० या.)
माघ कृ. ११	बु.	माघ ११	ज ७९ २४	अनु.	
माघ शु. ६	शु.	,, २०	फर. २	रेव.	
फाल्गु. शु. ३	गु.	फाल्गु. १८	मार्च १	रेव.	(१३।१ या.)

विपणि (दुकान) मुहूर्त (सं. २०३५)

तिथि	वार	प्रविष्टा	तारीख	नक्षत्र	लग्न काल आदि
चैत्र शु. ८	र.	वैशा. ४	अप्रै. १६	पुष्य	(८।३५ या.)
,, ,, १२	गु.	,, ८	७८ई. २०	उ.फा.	(१८।५५ या.)
,, ,, १३	शु.	,, ९	,, २१	उ.फा.हस्त	(१२।४० या.)
वैशा. कृ. ७	श.	,, १७	,, २९	उ.षा.	(१६।१५ या.)
,, ,, १२	गु.	,, २२	मई ४	उ.भा.	
वैशा. शु. ३	बु.	,, २८	,, १०	मृग.	(१४।५४ या.)
,, ,, १०	बु.	ज्ये. ४	,, १७	उ.फा.	

विपणि (दुकान) मुहूर्त (सं. २०३५)

तिथि	वार	प्रविष्टा	तारीख १९७८ ई.	नक्षत्र	लग्न काल आदि
वैशा. शु. ११	गु.	ज्ये. ५	मई १८	उ.फा.	(१५।३१ या.)
,, ,, १२	शु.	,, ६	,, १९	हस्त, चित्रा	
ज्येष्ठ कृ. ५	शु.	,, १३	,, २६	उ.षा.	
,, ,, १०	बु.	,, १८	,, ३१	उ.भा.	(७।२४ या.)
,, ,, ११	गु.	,, १९	जून १	रेव.	
,, ,, १२	शु.	,, २०	,, २	अश्वि.	
ज्येष्ठ शु. २	बु.	,, २५	,, ७	मृग.	
,, ,, ४	श.	,, २८	,, १०	पुष्य	(९।४० उ., ११।५९ या.)
,, ,, १०	शु.	आषा. २	,, १६	चित्रा	(११।३० या.)
,, ,, १३	चं.	,, ५	,, १९	अनु.	(९।१३ या.)
माघ कृ. ५	गु.	माघ ५	जन. १८	उ.फा.	
,, ,, ६	शु.	,, ६	७९ई. १९	उ.फा.; हस्त	
,, ,, ७	श.	,, ७	,, २०	चित्रा	(१५।५६ उ.)
,, ,, ११	बु.	,, ११	,, २४	अनु.	
माघ शु. ५	गु.	,, १९	फर. १	उ.भा., रेव.	
,, ,, ६	शु.	,, २०	,, २	रेव., अश्वि.	
,, ,, ७	श.	,, २१	,, ३	अश्वि.	
फाल्गु. कृ. २	बु.	फाल्गु. ३	,, १४	उ.फा.	
,, ,, ४	शु.	,, ५	,, १६	हस्त	(१७।५ उ.)
,, ,, ५	श.	,, ६	,, १७	चित्रा	
फाल्गु. शु. २	बु.	,, १७	,, २८	उ.भा.	
,, ,, ३	गु.	,, १८	मार्च १	रेव.	(१३।१ या.)
,, ,, ४	शु.	,, १९	,, २	अश्वि.	(११।५२ उ.)
,, ,, ७	चं.	,, २२	,, ५	रोहि.	(९।२७ या.)

चार स्वयंसिद्ध मुहूर्त

(१) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
(२) अक्षय (वैशाख शु.) तृतीया
(३) विजयादशमी
(४) दीपावली (प्रदोष-समय)

ये चार 'स्वयं सिद्ध मुहूर्त' कहलाते हैं। पंजाबी ग्रामीण जनता इन्हें "अणपुच्छ मुहूर्त" कहा करती है। इन में कोई भी शुभ-काम करने के लिए नक्षत्र आदि देखने की आवश्यकता नहीं होती।

दैनिक उपयोग में आने वाले शुभ मुहूर्त निकालना सरल बात है

ज्योतिष काल-शास्त्र है। शुभ-काल (मुहूर्त) में किया गया कार्य निर्विघ्न रूप से शीघ्र ही सम्पन्न एवं सफल होकर सुख समृद्धि कारक होता है—ज्योतिष की मुहूर्त-शाखा का यह सिद्धान्त है। मुण्डन, अक्षरारम्भ, उपनयन, विवाह, द्विरागमन, गृहारम्भ, गृह प्रवेश, देव प्रतिष्ठा आदि के मुहूर्तों का विस्तृत विवेचन पृ. १४०-१४१, १४५-१४६ पर दिया गया है। आभूषण, स्वर्ण, वस्त्र आदि खरीदना, पहिनना, यात्रा आरम्भ करना, मुकद्दमा दायर करना, ग्रह-शान्त्यर्थ रत्न धारण करना; किसी परीक्षा-प्रतियोगिता या नौकरी के लिए आवेदन पत्र भरना आदि आदि कार्यों के शुभ मुहूर्त जानने के लिए अब आपको किसी ज्योतिषी के पास जाने की आवश्यकता नहीं है। पृष्ठ १४८-१४९ पर हमने तीन शुभ योगों (सर्वार्थ सिद्धि, रवि, सिद्धि योगों) के प्रारम्भ और समाप्त होने की तारीखें एवं समय (भा. स्टैं. टा.) दिया है। इन योगों के समय जो कार्य किए जाएं वे सफल होते है। पृष्ठ १५१-१५२ पर छः (क्रकच, विष, दग्ध, यमघण्ट, मृत्यु और हुताशन) अशुभ योग भी दिए गए हैं। इन योगों के समय किए गए कार्य सफल नहीं होते, अतः इन छः योगों के समय को छोड़कर सर्वार्थ-सिद्धि आदि शुभ योगों के समय में शुभ काम करना चाहिए।

सर्वार्थ-सिद्धि आदि शुभ और क्रकच आदि अशुभ-योगों के बारे में आवश्यक विवरण नीचे दिया जा रहा है:—

सर्वार्थ सिद्धि एवं अमृत सिद्धि योग

वारों का विशेष-नक्षत्रों से सम्बन्ध होने पर 'सर्वार्थ-सिद्धि योग' बनते हैं। जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है, कि इस योग के समय कोई भी शुभ कार्य किया जाए तो वह सफल होता है। यात्रा गृह-प्रवेश, नूतन कार्यारम्भ आदि सभी कार्यों के लिए शीघ्रता या अन्य किसी अपरिहार्य कारणवश यदि व्यतीपात, वैधृति, गुरु-शुक्रास्त, अधिकमास एवं वेध आदि का विचार संभव न हो तो सर्वार्थ सिद्धि योगों का आश्रय लेना चाहिए। रविवार का हस्त, चन्द्रवार का मृगशिरा, मंगलवार का अश्विनी, बुधवार का अनुराधा, गुरुवार का पुष्य, शुक्रवार का रेवती और शनिवार का रोहिणी नक्षत्र से सम्बन्ध होने पर जो सर्वार्थ-सिद्धि योग बनता है, उसे 'अमृतसिद्धि योग' की विशेष संज्ञा दी गई है। अमृत सिद्धि योग के दिन कुछ तिथियां वर्जित मानी गई हैं, जिनका विचार हमने यहां किया है। अमृत सिद्धि योग संज्ञा वाले सर्वार्थ सिद्धि योग विशेष फलदायक माने गए हैं। ध्यान रहे—गुरुवार वाले अमृत सिद्धि योग के समय विवाह, मंगलवार वाले अमृतसिद्ध के समय नए घर में प्रवेश तथा शनिवार वाले अमृत सिद्धि योग के समय यात्रा नहीं करनी चाहिए। शेष सभी कार्यों के लिए इन्हें प्रयोग में लाइए। अमृतसिद्धि योगों को कोष्ठकों में दिया गया है। अमृतसिद्धि योग के समय जो वार है, उसे कोष्ठक के दाईं ओर लिखा गया है।

यद्यपि मुहूर्त-ग्रन्थों में (गुरुवार वाले अमृतसिद्धि को छोड़कर शेष सभी सर्वार्थ सिद्धियोगों में विवाह करने की भी आज्ञा है, परन्तु विशेष विवशता की स्थिति में ही इस योग में प्रणय आदि विवाह ही करना चाहिए—ऐसा हमारा मत है। इस योग में विवाह करने के लिए लग्न शुद्धि अवश्य देख लेनी चाहिए।

रवि योग

रवियोग भी सर्वार्थ सिद्धि योगों की भान्ति ही सभी शुभ कार्यों के लिए शुभ माने जाते हैं। शास्त्रों का कथन है—रवियोग सभी बुरे योगों को नष्ट करने की शक्ति रखता है ("कुयोग विध्वंस कराः शुभेषु") इस योग में वे सभी काम किए जा सकते हैं जो सर्वार्थ सिद्धि योगों में किए जा सकते हैं।

सिद्धि योग

सिद्धि योग भी सर्वार्थ सिद्धि और रवि-योगों की भान्ति ही महत्वशाली है। सर्वार्थ सिद्धि और रवियोगों में किए जाने वाले सभी कार्य इन में भी किए जा सकते हैं। शास्त्रों का कहना है कि सिद्धि योग में यमघण्ट, विष आदि कुयोगों का प्रभाव समाप्त हो जाता है।

अशुभ-योग

(क्रकच, विष, दग्ध, यम-घण्ट, मृत्यु, हुताशन)

पृष्ठ १५१, १५२ पर क्रकच आदि अशुभ योगों के प्रारम्भ और समाप्ति की तारीखें और समय (भा. स्टैं. टा.) दिया गया है। कोई भी शुभ काम करना हो तो इन योगों के समय को छोड़कर उसे प्रारम्भ करें। शास्त्र कहते हैं, कि इन योगो में प्रारम्भ किया गया काम या तो सफल होता ही नहीं, या फिर उस काम में भारी विघ्न बाधाएं उपस्थित होंगी। अतः ऊपर बतलाए गए सर्वार्थ सिद्धि, रवि और सिद्धि योगो के समय में यदि क्रकच आदि में से कोई योग आ पड़े तो उस समय को शुभ कार्य के लिए निषिद्ध समझना चाहिए। यात्रा में तो इन छः अशुभ योगों को विशेष रूप से बुरा माना गया है। यात्रा मुहूर्त का विशेष विचार आगे पृष्ठ १८८ पर देखें।

त्रिपुष्कर और द्विपुष्कर योग

(बहुमूल्य चीजें खरीदने के लिए विशेष मुहूर्त)

यद्यपि पूर्वोक्त तीन, (सर्वार्थ सिद्धि आदि) शुभ योगों में भी जमीन, हीरे जवाहरात, कार, ट्रक, ट्रैक्टर, टैलीविजन, आभूषण, घोड़ा, गाय, भैंस आदि बहुमूल्य चीजें खरीदी जा सकती हैं, तथापि इसके लिए त्रिपुष्कर तथा द्विपुष्कर योग ज्यादा महत्वपूर्ण माने जाते हैं। यदि कोई चीज त्रिपुष्कर योग के समय खरीदी जाए तो वह निकट भविष्य में तिगुनी, द्विपुष्कर योग में खरीदी जाए तो दुगुनी हो जाती है। अतः इन योगो में बहुमूल्य चीजें खरीदीए या बैंक में रुपया जमा करवाइए। इन योगों में मुकद्दमा दायर करना तथा दवा खरीदना अच्छा नहीं समझा जाता।

इन योगों के समय अपनी कोई कीमती चीज बेचिए नहीं, अन्यथा आगे चलकर उससे तिगुनी या दुगुनी बेचने की स्थिति पैदा हो सकती है। धन या अन्य सम्पत्ति के संचय के लिए ये योग अद्वितीय हैं।

सर्वार्थ सिद्धि और अमृतसिद्धि योग (सं. २०३५ वि.)

प्रारम्भ		समाप्ति		प्रारम्भ		समाप्ति		प्रारम्भ		समाप्ति		प्रारम्भ		समाप्ति	
तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा	तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.	तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.	तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.	तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.	तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.	तारीख १९७९ ई.	काल भा.स्टै.टा.	तारीख १९७९ ई.	काल भा.स्टै.टा.
९ अप्रै.	सूर्योदय	९ अप्रै.	८।४४	१२ जुला.	८।७	१३ जुला.	सूर्योदय	२ नवं.	१०।१५	३ नवं.	सूर्योदय	९ फर.	०।४४	१० फर.	३।३८
११ ,,	,,	११ ,,	११।५४	१५ ,,	सूर्योदय	१५ ,,	९।१७	६ ,,	४।६	६ ,,	,,	१७ ,,	२२।८	१८ ,,	सूर्योदय
१२ ,,	,,	१३ ,,	सूर्योदय	१७ ,,	,,	१७ ,,	६।१४	७ ,,	२।३४	७ ,,	,,	१९ ,,	२३।४४	२० ,,	,,
१४ ,,	१८।५०	१५ ,,	,,	२१ ,,	,,	२१ ,,	१५।५१	१२ ,,	२१।२९	१३ ,,	,,	२४ ,,	१६।२४	२५ ,,	,,
१६ ,,	सूर्योदय	१७ ,,	१।२६	२५ ,,	,,	२५ ,,	९।१६	१४ ,,	२२।२	१६ ,,	,,	२८ ,,	५।२२	२८ ,,	,,
२३ ,,	५।३२	२३ ,,	सूर्योदय	२७ ,,	,,	२७ ,,	१०।१९	२० ,,	७।२१	२१ ,,	,,	१ मार्च	सूर्योदय	३ मार्च	०।४१
२५ ,,	२।२०	२५ ,,	,,	(२९ ,,	१४।१	२९ ,,	१९।१०) श.	२१ ,,	१०।२४	२२ ,,	,,	५ ,,	,,	६ ,,	२।२९
२९ ,,	१६।५९	३० ,,	,,	(३१ ,,	सूर्योदय	३१ ,,	१९।२५)चं.	२४ ,,	सूर्योदय	२४ ,,	१८।४०	(६ ,,	२।२९	६ ,,	सूर्योदय)च.
४ मई	१४।३६	५ मई	,,	(३ अग.	,,	४ अग.	४।१९) गु.	(२६ ,,	,,	२६ ,,	२१।२३)र.	८ ,,	७।५	९ ,,	५।५९
(५ ,,	सूर्योदय	५ ,,	१५।१७)शु	९ ,,	,,	९ ,,	१५।१६	(२९ ,,	१९।४०	३० ,,	सूर्योदय)बु.	१५ ,,	०।१२	१५ ,,	सूर्योदय
८ ,,	१९।४४	९ ,,	सूर्योदय	२० ,,	१९।४४	२१ ,,	सूर्योदय	३० ,,	सूर्योदय	३० ,,	१७।५३	१७ ,,	सूर्योदय	१८ ,,	४।५१
११ ,,	सूर्योदय	११ ,,	०।३८	(२२ ,,	१७।५८	२३ ,,	सूर्योदय)म.	३ दिसं.	११।७	४ दिसं.	सूर्योदय	१९ ,,	,,	२० ,,	५।३६
१२ ,,	३।३०	१३ ,,	सूर्योदय	(२६ ,,	सूर्योदय	२६ ,,	२३।१३)श.	४ ,,	८।५६	५ ,,	७।२	२४ ,,	११।७	२४ ,,	२३।१४
१४ ,,	सूर्योदय	१४ ,,	९।२३	(३१ ,,	,,	३१ ,,	१०।४९)गु.	१० ,,	सूर्योदय	११ ,,	४।४	२७ ,,	१६।१४	२८ ,,	सूर्योदय
२० ,,	१५।३१	२१ ,,	सूर्योदय	३ सित.	१७।५५	४ सितं.	सूर्योदय	१२ ,,	,,	१३ ,,	६।११				
२२ ,,	११।५७	२३ ,,	,,	१० ,,	१९।५४	११ ,,	,,	१३ ,,	,,	१४ ,,	सूर्योदय				
२६ ,,	२३।३०	२७ ,,	२१।४४	१७ ,,	सूर्योदय	१८ ,,	४।४१	१७ ,,	१४।५१	१८ ,,	१७।५१				
३० ,,	१९।४३	३१ ,,	सूर्योदय	(१९ ,,	,,	२० ,,	३।३५) मं.	१९ ,,	सूर्योदय	१९ ,,	२०।५९				
१ जून	सूर्योदय	२ जून	२२।३०	२१ ,,	४।२	२१ ,,	सूर्योदय	(२७ ,,	,,	२८ ,,	४।४१) बु.				
५ ,,	,,	६ ,,	४।४६	(२३ ,,	सूर्योदय	२३ ,,	७।४) श.	३१ ,,	,,	३१ ,,	१८।२				
(६ ,,	४।४६	६ ,,	सूर्योदय)चं	२९ ,,	२३।१५	३० ,,	सूर्योदय	१ जन.'७९	,,	१ जन.'७९	१५।२१				
७ ,,	सूर्योदय	७ ,,	७।२७	१ अक्तू.	सूर्योदय	२ अक्तू.	२।३०	५ ,,	९।७	६ ,,	सूर्योदय)शु.				
८ ,,	१०।१८	९ ,,	१३।१९	(२ ,,	२।३०	२ ,,	सूर्योदय)र.	७ ,,	सूर्योदय	७ ,,	९।३२				
१५ ,,	१।५	१५ ,,	सूर्योदय	६ ,,	३।११	६ ,,	सूर्योदय	९ ,,	,,	९ ,,	१२।३				
१७ ,,	सूर्योदय	१८ ,,	०।१५	८ ,,	सूर्योदय	९ ,,	०।६	१० ,,	,,	११ ,,	सूर्योदय				
१९ ,,	,,	१९ ,,	२०।१	१५ ,,	,,	१५ ,,	१४।१२	१२ ,,	१८।४३	१३ ,,	,,				
२३ ,,	८।१७	२४ ,,	५।४८	(१७ ,,	,,	१७ ,,	१३।११)मं.	१४ ,,	सूर्योदय	१५ ,,	०।२९				
२७ ,,	सूर्योदय	२८ ,,	११।५४	१८ ,,	१३।२६	१९ ,,	सूर्योदय	(२४ ,,	,,	२४ ,,	१५।११)बु.				
२९ ,,	,,	३० ,,	४।१	२३ ,,	२३।१७	२४ ,,	,,	२८ ,,	५।१८	२८ ,,	सूर्योदय				
३ जुला.	,,	३ जुला.	१०।४३	२५ ,,	२।१७	२५ ,,	,,	१ फर.	१६।५८	२ फर.	,,				
(३ ,,	१०।४३	४ ,,	सूर्योदय)चं	२७ ,,	७।४१	२८ ,,	,,	(२ ,,	सूर्योदय	२ ,,	१६।८)शु.				
६ ,,	सूर्योदय	६ ,,	१९।२५	२९ ,,	सूर्योदय	२९ ,,	११।३	५ ,,	१७।५२	६ ,,	सूर्योदय				
(६ ,,	१९।२५	७ ,,	सूर्योदय)गु.	(२९ ,,	११।३	३० ,,	सूर्योदय)र.	७ ,,	सूर्योदय	७ ,	२२।२				

त्रिपुष्कर योग

१८अप्रै.७८	सूर्योदय	१५ अप्रै.	६।१४
२९ ,,	,,	२९ ,,	१५।३५
१८ जून	०।१५	१८ जून	सूर्योदय
१ जुला.	७।१२	२ जुला.	,,
१२ ,,	३।४०	१२ ,,	,,
१९ अग.	२१।३०	२० अग.	,,
२९ ,,	१३।१५	३० ,,	,,
३ सितं.	२३।०	४ सितं.	,,
२२ अक्तू.	२०।२३	२३ अक्तू.	,,
२८ ,,	९।४१	२९ ,,	२।३८
१६ दिसं.	१२।८	१६ दिसं.	२१।४२
२६ ,,	११।४७	२७ ,,	६।२२
३० ,,	२१।२६	३१ ,,	१७।५४
९ जन.'७९	सूर्योदय	९ जन.'७९	१२।३
१८ फर.	२३।१६	१९ फर.	सूर्योदय
२४ ,,	सूर्योदय	२४ ,,	५।५८
२७ ,,	१८।४७	२८ ,,	५।२२
४ मार्च	९।१०	५ मार्च	९।७

रवियोग (सं. २०३५)								सिद्धि योगाः				द्वि-पुष्कर योगाः			
प्रारम्भ		समाप्ति		प्रारम्भ		समाप्ति		प्रारम्भ		समाप्ति		प्रारम्भ		समाप्ति	
तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.	तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.	तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.	तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.	तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.	तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.	तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.	तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.
११ अप्रै.	सू.उ.	११ अप्रै.	१९।५४	७ अक्तू.	२।२३	८ अक्तू.	१।२१	२३ अप्रै.	३।३२	२३ अप्रै.	सू.उ.	२७ मई	२३।४६	२८ मई	२।२९
१२ ,,	१४।१३	१३ ,,	१६।५६	९ ,,	२२।४२	१० ,,	१०।१०	१२ मई	३।३०	१२ मई	,,	७ जून	२।३३	७ जून	सू.उ.
१३ ,,	२६।७	१४ ,,	१९।५०	१० ,,	२१।१२	१२ ,,	१८।१५	२० ,,	१५।३१	२१ ,,	,,	३० जुला.	२।१२	३१ जुलाई	,,
१७ ,,	१।२६	१९ ,,	५।२६	१४ ,,	१५।१६	१५ ,,	१४।१२	३० ,,	१९।४३	३१ ,,	,,	२३ सित.	७।४	२३ सितं.	२१।३७
२१ ,,	६।४८	२२ ,,	६।२८	२१ ,,	१७।४८	२२ ,,	२०।२३	८ जून	१०।१८	९ जून	,,	३ अक्तू.	१२।११	४ अक्तू.	३।४२
२८ ,,	१८।३१	२९ ,,	१६।५९	३ नवं.	८।५४	४ नवं.	७।२२	१७ ,,	सू.उ.	१८ ,,	०।१५	२६ नवं.	२१।२३	२७ नवं.	सू.उ.
९ मई	२२।१	११ मई	०।३८	५ ,,	[illegible]	६ ,,	४।६	२७ ,,	,,	२८ ,,	१।५४	५ दिसं.	२०।५२	६ दिसं.	५।२९
११ ,,	१२।८	१२ ,,	३।३०	६ ,,	१९।३९	७ ,,	२।३४	६ जुलाई	,,	६ जुलाई	१९।२५	२०जन '७९	१४।२१	२१जन '७९	४।३३
१३ ,,	६।२९	१४ ,,	९।२३	९ ,,	०।०	१० ,,	२२।१४	१५ ,,	,,	१५ ,,	९।१७	२४ मार्च	२३।१४	२५ मार्च	१७।४४
१६ ,,	१४।११	१८ ,,	१६।२५	१२ ,,	२१।२९	१३ ,,	२१।३६	२५ ,,	,,	२५ ,,	९।१६				
२० ,,	१५।३१	२१ ,,	१४।०	२१ ,,	१०।२४	२२ ,,	१३।२५	१० सितं.	१९।५४	११ सितं.	सू.उ.				
२७ ,,	२१।४४	२८ ,,	२०।२९	२ दिसं.	१३।२६	३ दिसं.	०।१	२१ ,,	४।२	२१ ,,	,,				
९ जून	१३।१९	१० ,,	१६।१९	३ ,,	११।७	४ ,,	८।५६	२९ ,,	२३।१५	३० ,,	,,				
११ ,,	१९।११	१२ ,,	२१।४१	५ ,,	७।२	६ ,,	५।२९	८ अक्तू.	सू.उ.	९ अक्तू.	०।६				
१५ ,,	१।५	१७ ,,	११।२२	८ ,,	३।४०	१० ,,	३।३२	१८ ,,	१३।२६	१९ ,,	सू.उ.				
१८ ,,	२२।२६	१९ ,,	२०।१	१२ ,,	४।५७	१३ ,,	६।१२	२७ ,,	७।४१	२८ ,,	,,				
२६ ,,	२।२८	२७ ,,	११।४९	२१ ,,	०।४	२२ ,,	२।५०	७ नवं.	२।३४	७ नवं.	,,				
९ जुला.	११।१९	१० जुला.	४।०	१जन.'७९	१५।२१	२जन.'७९	१३।१०	१५ ,,	सू.उ.	१५ ,,	२२।५६				
११ ,,	६।१९	१२ ,,	८।७	३ ,,	११।८	४ ,,	९।४९	२४ ,,	,,	२४ ,,	१८।४०				
१४ ,,	९।४०	१६ ,,	८।६	६ ,,	९।१	८ ,,	१०।३४	४ दिसं.	८।५६	५ दिसं.	७।२				
१८ ,,	३।४७	१९ ,,	०।५६	११ ,,	१६।११	१२ ,,	१८।४३	१जन.'७९	सू.उ.	१जन.'७९	१५।२१				
२५ ,,	९।१६	२६ ,,	९।२६	१९ ,,	१९।१५	२० ,,	१४।२१	१७ फर.	२२।८	१८ फर.	सू.उ.				
७ अग.	११।५८	८ अग	१३।५२	३० ,,	२०।४०	३१ ,,	१८।३२	२८ ,,	५।२२	२८ ,,	,,				
९ ,,	१५।१६	१० ,,	१६।६	१ फर.	१६।५८	२ फर.	१६।८	८ मार्च	७।५	९ मार्च	,,				
१३ ,,	१५।५०	१४ ,,	१२।५९	४ ,,	१६।३५	७ ,,	२२।२	१७ ,,	सू.उ.	१८ ,,	४।५१				
१६ ,,	८।१०	१७ ,,	२४।४६	१० ,,	३।३८	११ ,,	६।४०	२७ ,,	१६।१४	२८ ,,	सू.उ.				
१७ ,,	५।२४	१८ ,,	२।२६	१७ ,,	२२।८	१८ ,,	२३।१६								
२३ ,,	१८।१३	२४ ,,	१९।१५	१९ ,,	१७।१४	१९ ,,	२३।४४								
५ सित.	२०।४६	६ सित.	२१।३२	१ मार्च	३।१२	२ मार्च	१।३६								
७ ,,	२१।५०	८ ,,	२१।४०	३ ,,	०।४१	४ ,,	०।३१								
१० ,,	१९।५४	१२ ,,	१६।३३	४ ,,	२३।२८	५ ,,	१।७								
१५ ,,	१०।१०	१६ ,,	७।५५	७ ,,	४।३१	९ ,,	९।५९								
२२ ,,	५।१३	२३ ,,	७।४	११ ,,	१५।१०	१२ ,,	१९।७								
५ अक्तू.	३।३७	६ अक्तू.	३।११	२०	५।३६	२१ ,,	५।१३								

ककच-अधम योग (सं. २०३५)								यमघण्ट योग				मृत्यु योग			
प्रारम्भ		समाप्ति		प्रारम्भ		समाप्ति		प्रारम्भ		समाप्ति		प्रारम्भ		समाप्ति	
तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.	तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.	तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.	तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.	तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.	तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.	तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.	तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.
१४ अप्रै.	सू.उ.	१५ अप्रै.	सू.उ.	८ नव.	८।४९	९ नवं.	सू.उ.	२२ अप्रै.	सू.उ.	२२ अप्रै.	६।२८	१३ अप्रै.	सू.उ.	१३ अप्रै.	१६।५६
१८ ,,	,,	१८ ,,	१२।७	१५ ,,	सू.उ.	१६ ,,	१।५२	२४ ,,	,,	२५ ,,	२।२०	२२ ,,	,,	२२ ,,	६।२८
२८ ,,	१७।५५	२९ ,,	सू.उ.	२३ ,,	,,	२३ ,,	१६।३	२६ ,,	२२।१९	२७ ,,	सू.उ.	२ मई	,,	२ मई	१४।२४
२ मई	सू.उ.	२ मई	१०।३९	२६ ,,	१९।४०	२७ ,,	सू.उ.	२२ मई	सू.उ.	२२ मई	११।५७	१८ जून	२२।२६	१९ जून	सू.उ.
१३ ,,	,,	१३ ,,	२१।५८	७ दिसं.	सू.उ.	७ दिसं.	१२।२०	२४ ,,	६।५२	२५ ,,	४।१३	२९ ,,	२।३९	२९ ,,	,,
१४ ,,	,,	१५ ,,	०।११	१० ,,	१५।१८	११ ,,	सू.उ.	११ जून	१९।११	१८ जून	सू.उ.	७ जुला.	२२।२४	८ जुलाई	,,
१७ ,,	३।११	१७ ,,	सू.उ.	२२ ,,	सू.उ.	२२ ,,	१०।१६	२१ ,,	सू.उ.	२१ ,,	१४।११	१६ ,,	८।६	१७ ,,	,,
२७ ,,	सू.उ.	२७ ,,	२३।४६	२५ ,,	१२।४४	२६ ,,	सू.उ.	४ जुलाई	१३।३०	५ जुला.	सू.उ.	४ अग.	सू.उ.	५ अग.	,,
२८ ,,	,,	२८ ,,	२१।४६	५जन. '७९	५।१४	५जन. '७९	,,	९ ,,	सू.उ.	१० ,,	४।०	१३ ,,	,,	१३ ,,	१४।४१
३० ,,	१९।३२	३१ ,,	सू.उ.	८ ,,	सू.उ,	९ ,,	५।२६	१ अग.	,,	१ अग.	२२।२३	२३ ,,	,,	२३ ,,	१८।१३
१४ जून	१६।३६	१५ जून	,,	२० ,,	३।२०	२० ,,	सू.उ.	६ ,,	,,	६ ,,	९।४१	१ सितं.	,,	१ सितं.	१३।२७
१८ ,,	सू.उ.	१८ ,,	१२।११	२३ ,,	सू.उ.	२४ ,,	३।२१	२४ ,,	१९।१५	२५ ,,	सू.उ.	९ अक्तू.	२२।४२	१० अक्तू.	सू.उ.
२९ ,,	,,	२१ ,,	२२।६	२ फर.	१८।५१	३ फर.	सू.उ.	२५ ,,	२०।५६	२६ ,,	,,	६ नवं.	सू.उ.	७ नवं.	२।३४
२८ ,,	,,	२९ ,,	५।१०	६ ,,	सू.उ.	६ ,,	२०।२२	२१ सितं.	सू.उ.	२२ सितं.	५।१३	१७ ,,	०।१९	१७ ,,	सू.उ.
२ जुला.	,,	२ जुला.	८।५०	१७ ,,	१८।२२	१८ ,,	सू.उ.	२२ ,,	,,	२३ ,,	सू.उ.	४ दिसं.	सू.उ.	४ दिसं.	८।५६
५ ,,	१५।२०	६ ,,	सू.उ.	१८ ,,	१९।४	१९ ,,	,,	१९ अक्तू.	,,	१९ अक्तू.	१४।१७	६ ,,	२।२९	६ ,,	सू.उ.
१३ ,,	सू.उ.	१४ ,,	४।८	२१ ,,	सू.उ.	२१ ,,	१६।५४	२० ,,	,,	२० ,,	सू.उ.	१४ ,,	७।४७	१५ ,,	,,
१६ ,,	२३।१०	१७ ,,	सू.उ.	३ मार्च	९।४१	४ मार्च	सू.उ.	२५ नवं.	२०।२५	२६ नवं.	,,	२३ ,,	सू.उ.	२४ ,,	६।४२
२७ ,,	सू.उ.	२७ ,,	१६।१९	४ ,,	९।१०	५ ,,	,,	२३ दिसं.	सू.उ.	२४ दिसं.	६।४२	२जन. '७९	१३।०	३जन. '७९	सू.उ.
३० ,,	२१।२	३१ ,,	सू.उ.	७ ,,	सू,उ.	७ ,,	१२।१०	२६ ,,	७।२१	२६ ,,	सू.उ.	११ ,,	सू.उ.	११ ,,	१६।११
११ अग.	सू.उ.	११ अग.	१४।६	१४ ,,	,,	१५ ,,	४।३१	२०ज. '७९	सू.उ.	२०ज. '७९	१४।२१	२० ,,	,,	२० ,,	१४।२१
१४ ,,	८।४३	१५ ,,	५।४९	२२ ,,	[illegible]	२२ ,,	सू.उ.	२२ ,,	१६।२५	२३ ,,	सू.उ.	३० ,,	,,	३० ,,	२०।४०
२५ ,,	५।१२	२५ ,,	सू.उ.	२५ ,,	सू.उ.	२५ ,,	१७।४४	१९ फर.	सू.उ.	१९ फर.	२३।४४	२७ फर.	,,	२७ फर.	७।५५
२८ ,,	१०।४०	२९ ,,	,,					२१ ,,	२२।३६	२२ ,,	सू.उ.	१९ मार्च	५।२९	१९ मार्च	सू.उ.
१२ सितं.	सू.उ.	१२ सितं.	१४।५८					७ मार्च	४।३१	७ मार्च	,,				
२२ ,,	२०।०	२३ ,,	सू.उ.					११ ,,	१६।१०	१२ ,,	,,				
२६ ,,	सू.उ.	२७ ,,	४।३६					२१ ,,	सू.उ.	२२ ,,	४।२१				
७ अक्तू.	८।१	८ अक्तू.	४६।१												
८ ,,	सू.उ.	९ ,,	४।१४												
१० ,,	२२।४६	११ ,,	सू.उ.												
२१ ,,	१२।३०	२२ ,,	,,												
२२ ,,	१४।२७	२३ ,,	,,												
२५ ,,	सू.उ.	२५ ,,	२१।४८												
१ नवं.	,,	२ नवं.	०।६												

हुताशन-योग

प्रारम्भ		समाप्ति		प्रारम्भ		समाप्ति	
तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.	तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.	तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.	तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.
१२ जून	सू.उ.	१२ जून	१४।६	४ दिसं.	२३।१५	५ दिसं.	सू.उ.
१३ ,,	,,	१३ ,,	१५।४०	५ ,,	२०।५२	६ ,,	,,
१४ ,,	,,	१४ ,,	१६।३६	६ ,,	१८।५३	७ ,,	,,
१५ ,,	,,	१५ ,,	१३।४४	७ ,,	१७।२०	८ ,,	,,
१६ ,,	,,	१६ ,,	१६।२	८ ,,	१६।१५	९ ,,	,,
१७ ,,	,,	१७ ,,	१४।३०	९ ,,	१५।३४	१० ,,	,,
१८ ,,	,,	१८ ,,	१२।११	१० ,,	१५।१८	११ ,,	,,
२६ ,,	,,	२६ ,,	६।५२	१९मा'७९	७।१४	२०मा'७९	,,
२७ ,,	,,	२७ ,,	५।३४	२० ,,	६।४०	२१ ,,	५।३५
३० ,,	,,	३० ,,	५।५५	२१ ,,	सू.उ.	२२ ,,	४।१
१ जुला.	,,	१ जुला.	७।१२	२२ ,,	,,	२३ ,,	११।५९
२ ,,	,,	२ ,,	८।५०	२३ ,,	,,	२३ ,,	१३।२२
११ ,,	२।२५	११ ,,	सू.उ.	२४ ,,	,,	२४ ,,	२०।४५
१२ ,,	३।४०	१२ ,,	,,	२५ ,,	,,	२५ ,,	१७।४४
१३ ,,	४।१७	१३ ,,	,,				
१४ ,,	४।८	१४ ,,	,,				
१५ ,,	३।१२	१५ ,,	,,				
१६ ,,	१।२७	१६ ,,	,,				
१६ ,,	२३।०	१७ ,,	,,				
२४ ,,	१७।२४	२५ ,,	,,				
२५ ,,	१६।१४	२६ ,,	,,				
२६ ,,	१५।५४	२७ ,,	,,				
२७ ,,	१६।१५	२८ ,,	,,				
२८ ,,	१७।२३	२९ ,,	,,				
२९ ,,	१९।०	३० ,,	,,				
३० ,,	२१।२	३१ ,,	,,				
६ नवं.	सू.उ.	६ नवं.	१३।२				
७ ,,	,,	७ ,,	१०।४९				
८ ,,	,,	८ ,,	८।४९				
९ ,,	,,	९ ,,	६।५९				
२० ,,	८।२७	२१ ,,	सू.उ.				
२१ ,,	११।२	२२ ,,	,,				
२२ ,,	१३।३९	२३ ,,	,,				
२३ ,,	१६।३	२४ ,,	,,				
२४ ,,	१८।०	२५ ,,	,,				
२५ ,,	१९।१३	२६ ,,	,,				
२६ ,,	१९।४०	२७ ,,	,,				

दग्ध-योग

प्रारम्भ		समाप्ति	
तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.	तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.
४ अक्तू.	११।४४	५ अक्तू.	सू.उ.
१८ ,,	१०।१०	१९ ,,	,,
२६ नवं.	१३।४०	२७ नवं.	,,
१० दिसं.	१५।१८	११ दिसं.	,,
१९ ,,	सू.उ.	२० ,,	५।२९
२१ ,,	,,	२१ ,,	८।४
२२ ,,	१०।१६	२३ ,,	सू.उ.
२३ ,,	११।५५	२४ ,,	,,
२५ ,,	१२।४४	२६ ,,	,,
२जन.'७९	११।२२	३जन.'७९	,,
५ ,,	सू.उ.	६ ,,	४।२५
६ ,,	,,	७ ,,	४।१३
८ ,,	,,	९ ,,	५।२६
१९ ,,	१।२७	१९ ,,	सू.उ.
१ फर.	२०।१४	२ फर.	,,
१४ ,,	१३।१९	१५ ,,	,,
२८ ,,	१५।४०	१ मार्च	,,
२५ मार्च	सू.उ.	२५ ,,	१७।४४

दग्ध-योग

प्रारम्भ		समाप्ति	
११ अप्रै.	२३।३४	१२ अप्रै.	सू.उ.
१३ ,,	सू.उ.	१४ ,,	३।४८
२७ ,,	२०।३०	२८ ,,	सू.उ.
१० मई	सू.उ.	१० मई	१४।५४
२४ ,,	११।५८	२५ ,,	सू.उ.
८ जून	४।४८	८ जून	,,
१८ ,,	सू.उ.	१८ ,,	१२।११
२ जुलाई	,,	२ जुला.	८।५०
१६ ,,	२३।०	१७ ,,	सू.उ.
३० ,,	२१।२	३१ ,,	,,
८ अग.	१३।३७	९ अग.	,,
१० ,,	सू.उ.	१० ,,	१४।३३
११ ,,	१४।६	१२ ,,	सू.उ.
१२ ,,	१२।५९	१३ ,,	,,
१४ ,,	८।४३	१५ ,,	५।४९
२२ ,,	सू.उ.	२३ ,,	४।३९
२५ ,,	,,	२६ ,,	सू.उ.
२६ ,,	६।३२	२७ ,,	,,
२८ ,,	१०।४०	२९ ,,	,,
८ सितं.	०।२	९ सितं.	,,
[illegible]	१८।१०	[illegible]	[illegible]

विष-योग

प्रारम्भ		समाप्ति	
तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.	तारीख १९७८ ई.	काल भा.स्टै.टा.
२४ जुला.	१७।२४	२५ जुला.	सू.उ.
२५ ,,	१६।१४	२६ ,,	,,
२७ ,,	सू.उ.	२७ ,,	१६।१९
२८ ,,	,,	२८ ,,	१७।२३
२५ अग.	५।१२	२५ अग.	सू.उ.
९ सितं.	सू.उ.	९ सितं.	२१।४३
२३ ,,	,,	२३ ,,	२१।३७
४ अक्तू.	,,	४ अक्तू.	११।४४
८ ,,	६।१४	८ ,,	सू.उ.
१८ ,,	सू.उ.	१८ ,,	१०।१०
२ नवं.	०।६	२ नवं.	सू.उ.
६ ,,	सू.उ.	६ ,,	१३।२
७ ,,	,,	७ ,,	१०।४९
१६ ,,	१।५२	१६ ,,	सू.उ.
२० ,,	८।२७	२१ ,,	,,
२१ ,,	११।२	२२ ,,	,,
२३ ,,	सू.उ.	२३ ,,	१६।३
२४ ,,	,,	२४ ,,	१८।०
३ दिसं.	,,	४ दिसं.	१।५९
४ ,,	२३।१५	५ ,,	सू.उ.
५ ,,	२०।५२	६ ,,	,,
७ ,,	सू.उ.	७ ,,	१७।२०
८ ,,	,,	८ ,,	१६।१५
१८ ,,	०।६	१८ ,,	सू.उ.
५जन.'७९	५।१४	५जन.'७२	,,
६ ,,	४।२५	६ ,,	,,
२० ,,	सू.उ.	२१ ,,	४।३३
३ फर.	,,	३ फर.	१८।१०
१४ ,,	,,	१४ ,,	१३।१९
२८ ,,	,,	२८ ,,	१५।४०
१५ मार्च	४।३१	१५ मार्च	सू.उ.
१८ ,,	सू.उ.	१८ ,,	७।१९
१९ ,,	७।१४	२० ,,	सू.उ.
२० ,,	६।४०	२१ ,,	५।३५

विष-योग

प्रारम्भ		समाप्ति	
१५ अप्रै.	सू.उ.	१५ अप्रै.	६।१४
२९ ,,	,,	२९ ,,	१५।३५
१३ मई	२१।५८	१४ मई	सू.उ.
२४ ,,	सू.उ.	२४ ,,	११।५८
२७ ,,	२३।४६	२८ ,,	सू.उ.
७ जून	सू.उ.	८ जून	४।४८
१२ ,,	,,	१२ ,,	१४।६
१३ ,,	,,	१३ ,,	१५।४०
२१ ,,	२२।६	२२ ,,	सू.उ.
२६ ,,	सू.उ.	२६ ,,	६।५२
२७ ,,	,,	२७ ,,	५।३४
९ जुला.	,,	१० जुलाई	०।३८
११ ,,	२।२५	११ ,,	सू.उ.
१२ ,,	३।४०	१२ ,,	,,
१३ ,,	सू.उ.	१४ ,,	४।८
१४ ,,	,,	१५ ,,	३।१२
२३ ,,	,,	२३	१९।१९

साप्ताहिक-ग्रहों से इष्ट-कालिक ग्रह-साधन

सं. २०३४ के पंचांग में हमने साप्ताहिक ग्रहों से इष्टकालिक सूक्ष्म ग्रह स्पष्ट करने के लिए अन्तर्न्यास पद्धति का विवेचन किया था। अब हम यहां इष्टकालिक ग्रह स्पष्ट करने की एक और पद्धति का निर्देश कर रहे है, जिससे लगभग (कुछ स्थूल) इष्ट कालिक ग्रह सरलता से स्पष्ट किए जा सकते है। इस पद्धति से चन्द्र और बुध जैसे शीघ्र-गामी ग्रहों में अन्य ग्रहों की अपेक्षा कुछ स्थूलता रहती है।

विधि—यहां जिन तीन तारीखों के साप्ताहिक स्पष्ट ग्रह दिए गए है, उन तारीखों को हम 'पंक्ति' कहते हैं। जिस समय के स्पष्ट ग्रह है, उस समय को 'पंक्ति का समय' कहा गया है। जिन दो पंक्तियों के मध्य आपका इष्टकाल पड़ता है उनमें से पहिली को 'प्रथम पंक्ति' और दूसरी को 'द्वितीय पंक्ति' कहा जाएगा। 'प्रथम-पंक्ति' के समय से इष्ट काल का अन्तर जान लीजिए (अर्थात् आप जिस काल के ग्रह स्पष्ट करना चाहते है वह काल प्रथम पंक्ति के समय से कितने दिन, घण्टे, मिनट आगे है,—यह जान लीजिए।) इस अन्तर को हम "इष्ट अन्तर" कहेंगे। प्रथम और द्वितीय पंक्ति के ग्रहों का अन्तर, ग्रह की साप्ताहिक (७ दिन की) गति होगी। साप्ताहिक गति से कोष्ठक (१) या (२) से '१ दिन गति' जान लें। 'इष्ट अन्तर' के दिनों से १ दिन की गति को गुणा कर लें। यह 'दिन चालन' होगा। 'इष्ट अन्तर' के घण्टा-मिनटों और '१ दिन-गति' की अंश कलाओं द्वारा 'लघुरिक्थ कोष्ठक' (पृ. १५४-१५५) से दो अलग-अलग संख्याएं उठाकर उन्हें जोड़ दें। इस जोड के बराबर या लगभग संख्या लघुरिक्थ कोष्ठक में जहां हो कोष्ठक, में उसके ऊपर अंश और बाईं ओर पहिले कालम में जो कालाएं हों, वह 'घण्टा मिनट चालन' है। 'दिन चालन' और 'घण्टा मिनट चालन' को जोड़ने पर 'इष्ट चालन' होगा। ग्रह मार्गी हो तो इष्ट चालन को प्रथम पंक्ति के स्पष्ट ग्रह में जोड़ने पर, अन्यथा (वक्री हो तो) घटाने पर इष्टकालिक ग्रह स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण:—८ जनवरी १९७४ ई. को शाम के ६ बज कर ४५ मिनट (अर्थात् १८ घं ४५ मि.) पर बुध स्पष्ट करना है। हमारा यह इष्ट काल ६ और १३ जन. १९७४ ई. की पंक्तियों के बीच पड़ता है। अतः ६ जन. 'प्रथम पंक्ति' और १३ जन. 'द्वितीय पंक्ति' है। प्रथम पंक्ति (६ जन.) के समय (५ घण्टा ३० मि. प्रातः) से हमारा इष्ट काल २ दिन १३ घं. १५ मि. आगे है। अतः २ दिन १३ घं. १५ मि. यह हमारा "इष्ट अन्तर" है। प्रथम और द्वितीय पंक्तियों के स्पष्ट बुध का अन्तर ११ अंश २६ क. बुध की ७ दिन की गति हुई। कोष्ठक (१) में साप्ताहिक गति ११ अंश २६ क. के आगे '१ दिन गति' १ अंश ३८ क. है। इसे 'इष्ट अन्तर' की दिन-संख्या २ से गुणा करने पर ३ अंश १६ क. 'दिन चालन' हुआ। इष्ट अन्तर के घं. मि. (१३ घं. १५ मि.) द्वारा लघुरिक्थ कोष्ठक से २५८० संख्या मिली, और दिन गति की अंश कलाओं (१ अंश ३८ कला) द्वारा 'लघुरिक्थ कोष्ठक' से ही १·१६७१ संख्या मिली। इन दोनों का योग १.४२५१ हुआ। इस संख्या की समीपतम संख्या लघुरिक्थ कोष्ठक में १·४२६० है। कोष्ठक में इसके बिल्कुल ऊपर ० अंश और बाईं ओर पहिले कालम में ५४ कला है। अतः ० अंश ५४ कला 'घण्टा मिनट चालन' हुआ। इसे और दिन-चालन को जोड़ने पर ४ अं. १० क. हमारा 'इष्ट चालन' हुआ। क्योंकि बुध मार्गी है, अतः इस 'इष्ट चालन' को प्रथम पंक्ति के स्पष्ट बुध (८ रा. १९ अं. ४६ क.) में जोड़ने पर ८ रा. २३ अं. ५६ क. हमारा इष्टकालिक बुध स्पष्ट हो गया।

वार्षिक राहु से इष्टकालिक राहु का साधन

यहां हमने प्रत्येक सन् की पहिली जनवरी का (५ घं. ३० मि. प्रातः भा.स्टै.टा.का) राहु दिया है। इससे इष्ट दिन का इष्टकालिक-राहु आगे दिए गए कोष्ठक (१) (२) (३) से इस प्रकार स्पष्ट कर लीजिए:—

विधि—कोष्ठक (१) से अपने महीने की और कोष्ठक (२) से अपनी तारीख की अंश कलाओं को लेकर इन्हें पहिली जनवरी के राहु में से घटादें। फिर इसमें कोष्ठक (३) से अपने इष्टकालिक भा. स्टै. टा. के घण्टों द्वारा प्राप्त चालन कलाओं को चिह्न के अनुसार जोड़ या घटा दीजिए;—यह आपका इष्टकालिक राहु स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण—१५ मार्च सन् १९७४ को रात के ८ बजे (अर्थात् २० बजे) राहु स्पष्ट कीजिए। १ जनवरी १९७४ को स्पष्ट राहु ८ रा. ४ अं. २५ क. है। कोष्ठक (१) में मार्च महीने में ३ अं. ८ क. लिखा है। कोष्ठक (२) में १५ ता के आगे ० अं. ४५ क. है। इन दोनों को (अर्थात् इन दोनों के योग ३ अं. ५३ क. को) ८ रा. ४ अं. २५ क. में से घटाने पर ८ रा. ० अं. ३२ क. हुआ। कोष्ठक (३) में २० घं. के नीचे—२ कला है। ८ रा. ० अं. ३२ क. में से २ कला घटाने पर ८ रा. ० अं. ३० क. हमारा इष्टकालिक राहु स्पष्ट हो गया।

यहां एक बात ध्यान में रखिए—यदि आपका ईस्वी सन् लीप-इयर हो और आपकी तारीख फरवरी के बाद के किसी महीने की हो तब उपरोक्त ढंग से स्पष्ट किए गए राहु में से ३ कलाएं घटाने पर इष्टकालिक राहु स्पष्ट होगा।

कोष्ठक (१) (राहु के लिए)

जन.	फर.	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अग.	सितं.	अक्तू.	नव.	दिसं.
अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
०।०	१।३९	३।८	४।४६	६।२२	८।०	९।३५	११।१४	१२।५३	१४।२८	१६।७	१७।४२

कोष्ठक (२) (राहु के लिए)

तारीख	चालन अं. क.	तारीख	चालन अं. क.	तारीख	चालन अं. क.	तारीख	चालन अं. क.	तारीख	चालन अं. क.	तारीख	चालन अं. क.	तारीख	चालन अं. क.	तारीख	चालन अं. क.
१	०।०	५	०।१३	९	०।२५	१३	०।३८	१७	०।५१	२१	१।४	२५	१।१६	२९	१।२९
२	०।३	६	०।१६	१०	०।२९	१४	०।४१	१८	०।५४	२२	१।७	२६	१।१९	३०	१।३२
३	०।६	७	०।१९	११	०।३२	१५	०।४५	१९	०।५७	२३	१।१०	२७	१।२३	३१	१।३५
४	०।१०	८	०।२२	१२	०।३५	१६	०।४८	२०	१।१	२४	१।१३	२८	१।२६		

कोष्ठक (३) (राहु के लिए)

भा.स्टै.टा. के घण्टे	० घं.	४ घं.	८ घं.	१२ घं.	१६ घं.	२० घं.	२४ घं.
चालन कला	+ १	०	०	− १	− १	− २	− २

कोष्ठक (१)

(सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि स्पष्ट करने के लिए)

७ दिन गति	१ दिन गति	७ दिन गति	१ दिन गति	७ दिन गति	१ दिन गति	७ दिन गति	१ दिन गति	७ दिन गति	१ दिन गति
घं. क.	घं. क.	घं. क.	घं. क.	घं. क.	घं. क.	घं. क.	घं. क.	घं. क.	घं. क.
०।०	०।०	४।१२	०।३६	८।२४	१।१२	१२।३६	१।४८	१६।४८	२।२४
०।७	०।१	४।१९	०।३७	८।३१	१।१३	१२।४३	१।४९	१६।५५	२।२५
०।१४	०।२	४।२६	०।३८	८।३८	१।१४	१२।५०	१।५०	१७।२	२।२६
०।२१	०।३	४।३३	०।३९	८।४५	१।१५	१२।५७	१।५१	१७।९	२।२७
०।२८	०।४	४।४०	०।४०	८।५२	१।१६	१३।४	१।५२	१७।१६	२।२८
०।३५	०।५	४।४७	०।४१	८।५९	१।१७	१३।११	१।५३	१७।२३	२।२९
०।४२	०।६	४।५४	०।४२	९।६	१।१८	१३।१८	१।५४	१७।३०	२।३०
०।४९	०।७	५।१	०।४३	९।१३	१।१९	१३।२५	१।५५	१७।३७	२।३१
०।५६	०।८	५।८	०।४४	९।२०	१।२०	१३।३२	१।५६	१७।४४	२।३२
१।३	०।९	५।१५	०।४५	९।२७	१।२१	१३।३९	१।५७	१७।५१	२।३३
१।१०	०।१०	५।२२	०।४६	९।३४	१।२२	१३।४६	१।५८	१७।५८	२।३४
१।१७	०।११	५।२९	०।४७	९।४१	१।२३	१३।५३	१।५९	१८।५	२।३५
१।२४	०।१२	५।३६	०।४८	९।४८	१।२४	१४।०	२।०	१८।१२	२।३६
१।३१	०।१३	५।४३	०।४९	९।५५	१।२५	१४।७	२।१	१८।१९	२।३७
१।३८	०।१४	५।५०	०।५०	१०।२	१।२६	१४।१४	२।२	१८।२६	२।३८
१।४५	०।१५	५।५७	०।५१	१०।९	१।२७	१४।२१	२।३	१८।३३	२।३९
१।५२	०।१६	६।४	०।५२	१०।१६	१।२८	१४।२८	२।४	१८।४०	२।४०
१।५९	०।१७	६।११	०।५३	१०।२३	१।२९	१४।३५	२।५	१८।४७	२।४१
२।६	०।१८	६।१८	०।५४	१०।३०	१।३०	१४।४२	२।६	१८।५४	२।४२
२।१३	०।१९	६।२५	०।५५	१०।३७	१।३१	१४।४९	२।७	१९।१	२।४३
२।२०	०।२०	६।३२	०।५६	१०।४४	१।३२	१४।५६	२।८	१९।८	२।४४
२।२७	०।२१	६।३९	०।५७	१०।५१	१।३३	१५।३	२।९	१९।१५	२।४५
२।३४	०।२२	६।४६	०।५८	१०।५८	१।३४	१५।१०	२।१०	१९।२२	२।४६
२।४१	०।२३	६।५३	०।५९	११।५	१।३५	१५।१७	२।११	१९।२९	२।४७
२।४८	०।२४	७।०	१।०	११।१२	१।३६	१५।२४	२।१२	१९।३६	२।४८
२।५५	०।२५	७।७	१।१	११।१९	१।३७	१५।३१	२।१३	१९।४३	२।४९
३।२	०।२६	७।१४	१।२	११।२६	१।३८	१५।३८	२।१४	१९।५०	२।५०
३।९	०।२७	७।२१	१।३	११।३३	१।३९	१५।४५	२।१५	१९।५७	२।५१
३।१६	०।२८	७।२८	१।४	११।४०	१।४०	१५।५२	२।१६	२०।४	२।५२
३।२३	०।२९	७।३५	१।५	११।४७	१।४१	१५।५९	२।१७	२०।११	२।५३
३।३०	०।३०	७।४२	१।६	११।५४	१।४२	१६।६	२।१८	२०।१८	२।५४
३।३७	०।३१	७।४९	१।७	१२।१	१।४३	१६।१३	२।१९	२०।२५	२।५५
३।४४	०।३२	७।५६	१।८	१२।८	१।४४	१६।२०	२।२०	२०।३२	२।५६
३।५१	०।३३	८।३	१।९	१२।१५	१।४५	१६।२७	२।२१	२०।३९	२।५७
३।५८	०।३४	८।१०	१।१०	१२।२२	१।४६	१६।३४	२।२२	२०।४६	२।५८
४।५	०।३५	८।१७	१।११	१२।२९	१।४७	१६।४१	२।२३	२०।५३	२।५९

कोष्ठक (२)

(चन्द्र स्पष्ट करने के लिए)

७ दिन गति	१ दिन गति	७ दिन गति	१ दिन गति	७ दिन गति	१ दिन गति	७ दिन गति	१ दिन गति	७ दिन गति	१ दिन गति	७ दिन गति	१ दिन गति	७ दिन गति	१ दिन गति
घं. क.	घं. क.	घं. क.	घं. क.	घं. क.	घं. क.	घं. क.	घं. क.	घं. क.	घं. क.	घं. क.	घं. क.	घं. क.	घं. क.
७८।२४	११।१२	८२।३६	११।४८	८६।४८	१२।२४	९१।०	१३।०	९५।१२	१३।३६	९९।२४	१४।१२	१०३।३६	१४।४८
७८।३१	११।१३	८२।४३	११।४९	८६।५५	१२।२५	९१।७	१३।१	९५।१९	१३।३७	९९।३१	१४।१३	१०३।४३	१४।४९
७८।३८	११।१४	८२।५०	११।५०	८७।२	१२।२६	९१।१४	१३।२	९५।२६	१३।३८	९९।३८	१४।१४	१०३।५०	१४।५०
७८।४५	११।१५	८२।५७	११।५१	८७।९	१२।२७	९१।२१	१३।३	९५।३३	१३।३९	९९।४५	१४।१५	१०३।५७	१४।५१
७८।५२	११।१६	८३।४	११।५२	८७।१६	१२।२८	९१।२८	१३।४	९५।४०	१३।४०	९९।५२	१४।१६	१०४।४	१४।५२
७८।५९	११।१७	८३।११	११।५३	८७।२३	१२।२९	९१।३५	१३।५	९५।४७	१३।४१	९९।५९	१४।१७	१०४।११	१४।५३
७९।६	११।१८	८३।१८	११।५४	८७।३०	१२।३०	९१।४२	१३।६	९५।५४	१३।४२	१००।६	१४।१८	१०४।१८	१४।५४
७९।१३	११।१९	८३।२५	११।५५	८७।३७	१२।३१	९१।४९	१३।७	९६।१	१३।४३	१००।१३	१४।१९	१०४।२५	१४।५५
७९।२०	११।२०	८३।३२	११।५६	८७।४४	१२।३२	९१।५६	१३।८	९६।८	१३।४४	१००।२०	१४।२०	१०४।३२	१४।५६
७९।२७	११।२१	८३।३९	११।५७	८७।५१	१२।३३	९२।३	१३।९	९६।१५	१३।४५	१००।२७	१४।२१	१०४।३९	१४।५७
७९।३४	११।२२	८३।४६	११।५८	८७।५८	१२।३४	९२।१०	१३।१०	९६।२२	१३।४६	१००।३४	१४।२२	१०४।४६	१४।५८
७९।४१	११।२३	८३।५३	११।५९	८८।५	१२।३५	९२।१७	१३।११	९६।२९	१३।४७	१००।४१	१४।२३	१०४।५३	१४।५९
७९।४८	११।२४	८४।०	१२।०	८८।१२	१२।३६	९२।२४	१३।१२	९६।३६	१३।४८	१००।४८	१४।२४	१०५।०	१५।०
७९।५५	११।२५	८४।७	१२।१	८८।१९	१२।३७	९२।३१	१३।१३	९६।४३	१३।४९	१००।५५	१४।२५	१०५।७	१५।१
८०।२	११।२६	८४।१४	१२।२	८८।२६	१२।३८	९२।३८	१३।१४	९६।५०	१३।५०	१०१।२	१४।२६	१०५।१४	१५।२
८०।९	११।२७	८४।२१	१२।३	८८।३३	१२।३९	९२।४५	१३।१५	९६।५७	१३।५१	१०१।९	१४।२७	१०५।२१	१५।३
८०।१६	११।२८	८४।२८	१२।४	८८।४०	१२।४०	९२।५२	१३।१६	९७।४	१३।५२	१०१।१६	१४।२८	१०५।२८	१५।४
८०।२३	११।२९	८४।३५	१२।५	८८।४७	१२।४१	९२।५९	१३।१७	९७।११	१३।५३	१०१।२३	१४।२९	१०५।३५	१५।५
८०।३०	११।३०	८४।४२	१२।६	८८।५४	१२।४२	९३।६	१३।१८	९७।१८	१३।५४	१०१।३०	१४।३०	१०५।४२	१५।६
८०।३७	११।३१	८४।४९	१२।७	८९।१	१२।४३	९३।१३	१३।१९	९७।२५	१३।५५	१०१।३७	१४।३१	१०५।४९	१५।७
७०।४४	११।३२	८४।५६	१२।८	८९।८	१२।४४	९३।२०	१३।२०	९७।३२	१३।५६	१०१।४४	१४।३२	१०५।५६	१५।८
८०।५१	११।३३	८५।३	१२।९	८९।१५	१२।४५	९३।२७	१३।२१	९७।३९	१३।५७	१०१।५१	१४।३३	१०६।३	१५।९
८०।५८	११।३४	८५।१०	१२।१०	८९।२२	१२।४६	९३।३४	१३।२२	९७।४६	१३।५८	१०१।५८	१४।३४	१०६।१०	१५।१०
८१।५	११।३५	८५।१७	१२।११	८९।२९	१२।४७	९३।४१	१३।२३	९७।५३	१३।५९	१०२।५	१४।३५	१०६।१७	१५।११
८१।१२	११।३६	८५।२४	१२।१२	८९।३६	१२।४८	९३।४८	१३।२४	९८।०	१४।०	१०२।१२	१४।३६	१०६।२४	१५।१२
८१।१९	११।३७	८५।३१	१२।१३	८९।४३	१२।४९	९३।५५	१३।२५	९८।७	१४।१	१०२।१९	१४।३७	१०६।३१	१५।१३
८१।२६	११।३८	३५।३८	१२।१४	८९।५०	१२।५०	९४।२	१३।२६	९८।१४	१४।२	१०२।२६	१४।३८	१०६।३८	१५।१४
८१।३३	११।३९	८५।४५	१२।१५	८९।५७	१२।५१	९४।९	१३।२७	९८।२१	१४।३	१०२।३३	१४।३९	१०६।४५	१५।१५
८१।४०	११।४०	८५।५२	१२।१६	९०।४	१२।५२	९४।१६	१३।२८	९८।२८	१४।४	१०२।४०	१४।४०	१०६।५२	१५।१६
८१।४७	११।४१	८५।५९	१२।१७	९०।११	१२।५३	९४।२३	१३।२९	९८।३५	१४।५	१०२।४७	१४।४१	१०६।५९	१५।१७
८१।५४	११।४२	८६।६	१२।१८	९०।१८	१२।५४	९४।३०	१३।३०	९८।४२	१४।६	१०२।५४	१४।४२	१०७।६	१५।१८
८२।१	११।४३	८६।१३	१२।१९	९०।२५	१२।५५	९४।३७	१३।३१	९८।४९	१४।७	१०३।१	१४।४३	१०७।१३	१५।१९
८२।८	११।४४	८६।२०	१२।२०	९०।३२	१२।५६	९४।४४	१३।३२	९८।५६	१४।८	१०३।८	१४।४४	१०७।२०	१५।२०
८२।१५	११।४५	८६।२७	१२।२१	९०।३९	१२।५७	९४।५१	१३।३३	९९।३	१४।९	१०३।१५	१४।४५	१०७।२७	१५।२१
८२।२२	११।४६	८६।३४	१२।२२	९०।४६	१२।५८	९४।५८	१३।३४	९९।१०	१४।१०	१०३।२२	१४।४६	१०७।३४	१५।२२
८२।२९	११।४७	८६।४१	१२।२३	९०।५३	१२।५९	९५।५	१३।३५	९९।१७	१४।११	१०३।२९	१४।४७	१०७।४१	१५।२३

लघुरिक्थ कोष्ठक (१ म भाग)

मिनट या कला	घण्टा या अंश																							
	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
०	३.१५८४	१.३८०२	१.०७९२	९०३१	७७८१	६८१२	६०२१	५३५१	४७७१	४२६०	३८०२	३३८८	३०१०	२६६३	२३४१	२०४१	१७६१	१४९८	१२४९	१०१५	०७९२	०५८०	०३७८	०१८५
१	३.१५८४	१.३७३०	१.०७५६	९००७	७७६३	६७९८	६००९	५३४१	४७६२	४२५२	३७९५	३३८२	३००४	२६५७	२३३६	२०३६	१७५६	१४९३	१२४५	१०११	०७८८	०५७७	०३७४	०१८२
२	२.८५७३	१.३६६०	१.०७२०	८९८३	७७४५	६७८५	५९९७	५३३०	४७५३	४२४४	३७८८	३३७५	२९९८	२६५२	२३३०	२०३२	१७५२	१४८९	१२४१	१००७	०७८५	०५७३	०३७१	०१७९
३	२.६८१२	१.३५९०	१.०६८५	८९५९	७७२८	६७६९	५९८५	५३२०	४७४४	४२३६	३७८०	३३६८	२९९२	२६४६	२३२५	२०२७	१७४७	१४८५	१२३७	१००३	०७८१	०५७०	०३६८	०१७६
४	२.५५६३	१.३५२२	१.०६४९	८९३५	७७१०	६७५५	५९७३	५३१०	४७३५	४२२८	३७७३	३३६२	२९८६	२६४०	२३२०	२०२२	१७४३	१४८१	१२३३	०९९९	०७७७	०५६६	०३६५	०१७२
५	२.४५९४	१.३४५४	१.०६१४	८९१२	७६९२	६७४१	५९६१	५३००	४७२६	४२२०	३७६६	३३५५	२९८०	२६३५	२३१५	२०१७	१७३८	१४७६	१२२९	०९९६	०७७४	०५६३	०३६१	०१६९
६	२.३८०२	१.३३८८	१.०५८०	८८८८	७६७४	६७२६	५९४९	५२८९	४७१७	४२१२	३७५९	३३४९	२९७४	२६२९	२३१०	२०१२	१७३४	१४७२	१२२५	०९९२	०७७०	०५५९	०३५८	०१६६
७	२.३१३३	१.३३२३	१.०५४६	८८६५	७६५७	६७१२	५९३७	५२७९	४७०८	४२०४	३७५२	३३४२	२९६८	२६२४	२३०५	२००८	१७२९	१४६८	१२२१	०९८८	०७६६	०५५६	०३५५	०१६३
८	२.२५५३	१.३२५८	१.०५११	८८४२	७६३९	६६९८	५९२५	५२६९	४६९९	४१९६	३७४५	३३३६	२९६२	२६१८	२३००	२००३	१७२५	१४६४	१२१७	०९८४	०७६३	०५५२	०३५२	०१६०
९	२.२०४१	१.३१९५	१.०४७८	८८१९	७६२२	६६८४	५९१३	५२५९	४६९०	४१८८	३७३८	३३२९	२९५६	२६१३	२२९५	१९९८	१७२०	१४६०	१२१३	०९८०	०७५९	०५४९	०३४८	०१५७
१०	२.१५८४	१.३१३३	१.०४४४	८७९६	७६०४	६६७०	५९०२	५२४९	४६८२	४१८०	३७३१	३३२३	२९५०	२६०७	२२८९	१९९३	१७१६	१४५५	१२०९	०९७७	०७५६	०५४६	०३४५	०१५३
११	२.११७०	१.३०७१	१.०४११	८७७३	७५८७	६६५६	५८९०	५२३९	४६७३	४१७२	३७२३	३३१६	२९४४	२६०२	२२८४	१९८८	१७११	१४५१	१२०५	०९७३	०७५२	०५४२	०३४२	०१५०
१२	२.०७९२	१.३०१०	१.०३७८	८७५१	७५७०	६६४२	५८७८	५२२९	४६६४	४१६४	३७१६	३३१०	२९३८	२५९६	२२७९	१९८४	१७०७	१४४७	१२०१	०९६९	०७४९	०५३९	०३३९	०१४७
१३	२.०४४४	१.२९५०	१.०३४५	८७२८	७५५२	६६२८	५८६६	५२१९	४६५५	४१५६	३७०९	३३०३	२९३३	२५९१	२२७४	१९७९	१७०२	१४४३	११९७	०९६५	०७४५	०५३५	०३३५	०१४४
१४	२.०१२२	१.२८९१	१.०३१३	८७०६	७५३५	६६१४	५८५५	५२०९	४६४६	४१४८	३७०२	३२९७	२९२७	२५८५	२२६९	१९७४	१६९८	१४३८	११९३	०९६२	०७४२	०५३२	०३३२	०१४१
१५	१.९८२३	१.२८३३	१.०२८०	८६८३	७५१८	६६००	५८४३	५१९९	४६३८	४१४१	३६९५	३२९१	२९२१	२५८०	२२६४	१९६९	१६९४	१४३४	११८९	०९५८	०७३८	०५२९	०३२९	०१३८
१६	१.९५४२	१.२७७५	१.०२४८	८६६१	७५०१	६५८७	५८३२	५१८९	४६२९	४१३३	३६८८	३२८४	२९१५	२५७४	२२५९	१९६५	१६८९	१४३०	११८५	०९५४	०७३४	०५२५	०३२६	०१३४
१७	१.९२७९	१.२७१९	१.०२१६	८६३९	७४८४	६५७३	५८२०	५१७९	४६२०	४१२५	३६८१	३२७८	२९०९	२५६९	२२५४	१९६०	१६८५	१४२६	११८२	०९५०	०७३१	०५२२	०३२२	०१३२
१८	१.९०३१	१.२६६३	१.०१८५	८६१७	७४६७	६५५९	५८०९	५१६९	४६११	४११७	३६७४	३२७१	२९०३	२५६४	२२४९	१९५५	१६८०	१४२२	११७८	०९४७	०७२७	०५१८	०३१९	०१२९
१९	१.८७९६	१.२६०७	१.०१५३	८५९५	७४५१	६५४६	५७९७	५१५९	४६०३	४१०९	३६६७	३२६५	२८९७	२५५८	२२४४	१९५०	१६७६	१४१७	११७४	०९४३	०७२४	०५१५	०३१६	०१२५
२०	१.८५७३	१.२५५३	१.०१२२	८५७३	७४३४	६५३२	५७८६	५१४९	४५९४	४१०२	३६६०	३२५८	२८९१	२५५३	२२३९	१९४६	१६७१	१४१३	११७०	०९३९	०७२०	०५११	०३१३	०१२२
२१	१.८३६१	१.२४९९	१.००९१	८५५२	७४१७	६५१९	५७७४	५१३९	४५८५	४०९४	३६५३	३२५२	२८८५	२५४७	२२३४	१९४१	१६६७	१४०९	११६६	०९३५	०७१७	०५०८	०३०९	०११९
२२	१.८१५९	१.२४४५	१.००६१	८५३०	७४०१	६५०५	५७६३	५१२९	४५७७	४०८६	३६४६	३२४६	२८८०	२५४२	२२२९	१९३६	१६६३	१४०५	११६२	०९३२	०७१३	०५०५	०३०६	०११६
२३	१.७९६६	१.२३९३	१.००३०	८५०९	७३८४	६४९२	५७५२	५१२०	४५६८	४०७९	३६३९	३२३९	२८७४	२५३६	२२२३	१९३२	१६५८	१४०१	११५८	०९२८	०७०९	०५०१	०३०३	०११३
२४	१.७७८१	१.२३४१	१.००००	८४८७	७३६८	६४७८	५७४०	५११०	४५५९	४०७१	३६३२	३२३३	२८६८	२५३१	२२१८	१९२७	१६५४	१३९७	११५४	०९२४	०७०६	०४९८	०३००	०११०
२५	१.७६०४	१.२२८९	०.९९७०	८४६६	७३५१	६४६५	५७२९	५१००	४५५१	४०६३	३६२५	३२२७	२८६२	२५२६	२२१३	१९२३	१६४९	१३९३	११५०	०९२०	०७०२	०४९५	०२९६	०१०७
२६	१.७४३४	१.२२३९	०.९९४०	८४४५	७३३५	६४५१	५७१८	५०९०	४५४२	४०५५	३६१८	३२२०	२८५६	२५२०	२२०८	१९१७	१६४५	१३८८	११४६	०९१७	०६९९	०४९१	०२९३	०१०३
२७	१.७२७०	१.२१८८	०.९९१०	८४२४	७३१८	६४३८	५७०६	५०८१	४५३४	४०४८	३६११	३२१४	२८५०	२५१५	२२०३	१९१३	१६४०	१३८४	११४२	०९१३	०६९५	०४८८	०२९०	०१०१
२८	१.७११२	१.२१३९	०.९८८१	८४०३	७३०१	६४२५	५६९५	५०७१	४५२५	४०४०	३६०४	३२०८	२८४५	२५०९	२१९८	१९०८	१६३६	१३८०	११३८	०९०९	०६९२	०४८५	०२८७	००९८
२९	१.६९६०	१.२०९०	०.९८५२	८३८२	७२८५	६४१२	५६८४	५०६१	४५१६	४०३२	३५९७	३२०१	२८३९	२५०४	२१९३	१९०३	१६३२	१३७६	११३४	०९०५	०६८८	०४८१	०२८३	००९४

लघुरिक्थ कोष्ठक (२ य भाग)

मिनट या कला	घण्टा या अंश																						
	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
३०	१.६८१२	१.२०४१	०.९८२३	८३६१	७२७०	६३९८	५६७३	५०५१	४५०८	४०२५	३५९०	३१९५	२८३३	२४९८	२१८८	१८९९	१६२७	१३७२	११३०	०९०२	०६८५	०४७८	०२८०	००९१
३१	१.६६७०	१.१९९३	०.९७९४	८३४१	७२५४	६३८५	५६६२	५०४२	४४९९	४०१७	३५८३	३१८९	२८२७	२४९३	२१८३	१८९४	१६२३	१३६८	११२६	०८९८	०६८१	०४७४	०२७७	००८८
३२	१.६५३२	१.१९४६	०.९७६५	८३२०	७२३८	६३७२	५६५१	५०३२	४४९१	४०१०	३५७६	३१८३	२८२१	२४८८	२१७८	१८८९	१६१९	१३६३	११२३	०८९४	०६७८	०४७१	०२७४	००८५
३३	१.६३९८	१.१८९९	०.९७३७	८३००	७२२२	६३५९	५६४०	५०२३	४४८२	४००२	३५७०	३१७६	२८१६	२४८३	२१७३	१८८५	१६१४	१३५९	१११९	०८९१	०६७४	०४६८	०२७१	००८२
३४	१.६२६९	१.१८५२	०.९७०८	८२७९	७२०६	६३४६	५६२९	५०१३	४४७४	३९९४	३५६३	३१७०	२८१०	२४७७	२१६८	१८८०	१६१०	१३५५	१११५	०८८७	०६७०	०४६४	०२६७	००७९
३५	१.६१४३	१.१८०६	०.९६८०	८२५९	७१९०	६३३३	५६१८	५००३	४४६६	३९८७	३५५६	३१६४	२८०४	२४७२	२१६४	१८७५	१६०५	१३५१	११११	०८८३	०६६७	०४६१	०२६४	००७६
३६	१.६०२१	१.१७६१	०.९६५२	८२३९	७१७४	६३२०	५६०७	४९९४	४४५७	३९७९	३५४९	३१५७	२७९८	२४६७	२१५९	१८७१	१६०१	१३४७	११०७	०८८०	०६६३	०४५८	०२६१	००७३
३७	१.५९०२	१.१७१६	०.९६२५	८२१९	७१५९	६३०७	५५९६	४९८४	४४४९	३९७२	३५४२	३१५१	२७९३	२४६१	२१५४	१८६६	१५९७	१३४३	११०३	०८७६	०६६०	०४५४	०२५८	००७०
३८	१.५७८६	१.१६७१	०.९५९७	८१९९	७१४३	६२९४	५५८५	४९७५	४४४०	३९६४	३५३५	३१४५	२७८७	२४५६	२१४९	१८६२	१५९२	१३३९	१०९९	०८७२	०६५६	०४५१	०२५५	००६७
३९	१.५६७३	१.१६२७	०.९५७०	८१७९	७१२८	६२८२	५५७४	४९६५	४४३२	३९५७	३५२९	३१३९	२७८१	२४५१	२१४४	१८५७	१५८८	१३३५	१०९५	०८६८	०६५३	०४४८	०२५१	००६४
४०	१.५५६३	१.१५८४	०.९५४२	८१५९	७११२	६२६९	५५६३	४९५६	४४२४	३९४९	३५२२	३१३३	२७७५	२४४५	२१३९	१८५२	१५८४	१३३१	१०९२	०८६५	०६४९	०४४४	०२४८	००६१
४१	१.५४५६	१.१५४०	०.९५१५	८१४०	७०९७	६२५६	५५५२	४९४७	४४१५	३९४२	३५१५	३१२६	२७७०	२४४०	२१३४	१८४८	१५७९	१३२७	१०८८	०८६१	०६४६	०४४१	०२४५	००५८
४२	१.५३५१	१.१४९८	०.९४८८	८१२०	७०८१	६२४३	५५४१	४९३९	४४०७	३९३४	३५०८	३१२०	२७६४	२४३५	२१२९	१८४३	१५७५	१३२२	१०८४	०८५७	०६४२	०४३७	०२४२	००५५
४३	१.५२४९	१.१४५५	०.९४६२	८१०१	७०६६	६२३१	५५३१	४९२८	४३९९	३९२७	३५०१	३११४	२७५८	२४३०	२१२४	१८३८	१५७१	१३१८	१०८०	०८५४	०६३९	०४३४	०२३९	००५२
४४	१.५१४९	१.१४१३	०.९४३५	८०८१	७०५०	६२१८	५५२०	४९१८	४३९०	३९१९	३४९५	३१०८	२७५३	२४२४	२११९	१८३४	१५६६	१३१४	१०७६	०८५०	०६३५	०४३१	०२३५	००४८
४५	१.५०५१	१.१३७२	०.९४०९	८०६२	७०३५	६२०५	५५०९	४९०९	४३८२	३९१२	३४८८	३१०२	२७४७	२४१९	२११४	१८२९	१५६२	१३१०	१०७२	०८४६	०६३२	०४२८	०२३२	००४५
४६	१.४९५६	१.१३३१	०.९३८३	८०४३	७०२०	६१९३	५४९८	४९००	४३७४	३९०५	३४८१	३०९६	२७४१	२४१४	२१०९	१८२५	१५५८	१३०६	१०६८	०८४३	०६२९	०४२४	०२२९	००४२
४७	१.४८६३	१.१२९०	०.९३५६	८०२३	७००५	६१८०	५४८८	४८९०	४३६५	३८९७	३४७५	३०८९	२७३६	२४०९	२१०४	१८२०	१५५३	१३०२	१०६४	०८३९	०६२५	०४२१	०२२६	००३९
४८	१.४७७१	१.१२४९	०.९३३०	८००४	६९९०	६१६८	५४७७	४८८१	४३५७	३८९०	३४६८	३०८३	२७३०	२४०३	२०९९	१८१६	१५४९	१२९८	१०६१	०८३५	०६२१	०४१८	०२२३	००३६
४९	१.४६८२	१.१२०९	०.९३०५	७९८५	६९७५	६१५५	५४६६	४८७२	४३४९	३८८२	३४६१	३०७७	२७२४	२३९८	२०९५	१८११	१५४५	१२९४	१०५७	०८३२	०६१८	०४१४	०२२०	००३३
५०	१.४५९४	१.११७०	०.९२७९	७९६६	६९६०	६१४३	५४५६	४८६३	४३४१	३८७४	३४५४	३०७१	२७१९	२३९३	२०९०	१८०६	१५४०	१२९०	१०५३	०८२८	०६१४	०४११	०२१६	००३०
५१	१.४५०८	१.११३०	०.९२५४	७९४७	६९४५	६१३१	५४४५	४८५३	४३३३	३८६८	३४४८	३०६५	२७१३	२३८८	२०८५	१८०२	१५३६	१२८६	१०४९	०८२४	०६११	०४०८	०२१३	००२७
५२	१.४४२४	१.१०९१	०.९२२८	७९२९	६९३०	६११८	५४३५	४८४४	४३२४	३८६०	३४४१	३०५९	२७०७	२३८२	२०८०	१७९७	१५३२	१२८२	१०४५	०८२१	०६०८	०४०४	०२१०	००२४
५३	१.४३४१	१.१०५३	०.९२०३	७९१०	६९१५	६१०६	५४२४	४८३५	४३१६	३८५३	३४३४	३०५३	२७०२	२३७७	२०७५	१७९३	१५२८	१२७८	१०४१	०८१७	०६०४	०४०१	०२०७	००२१
५४	१.४२६०	१.१०१५	०.९१७८	७८९१	६९००	६०९४	५४१४	४८२६	४३०८	३८४६	३४२८	३०४७	२६९६	२३७२	२०७०	१७८८	१५२३	१२७४	१०३७	०८१४	०६०१	०३९८	०२०४	००१८
५५	१.४१८०	१.०९७७	०.९१५३	७८७३	६८८५	६०८१	५४०३	४८१७	४३००	३८३८	३४२१	३०४१	२६९१	२३६७	२०६५	१७८४	१५१९	१२७०	१०३४	०८१०	०५९७	०३९४	०२०१	००१५
५६	१.४१०२	१.०९३९	०.९१२८	७८५४	६८७१	६०६९	५३९३	४८०८	४२९२	३८३१	३४१५	३०३४	२६८५	२३६२	२०६१	१७७९	१५१५	१२६६	१०३०	०८०६	०५९४	०३९१	०१९८	००१२
५७	१.४०२५	१.०९०२	०.९१०४	७८३६	६८५६	६०५७	५३८२	४७९८	४२८४	३८२४	३४०८	३०२८	२६७९	२३५६	२०५६	१७७४	१५१०	१२६१	१०२६	०८०३	०५९०	०३८८	०१९५	०००९
५८	१.३९४९	१.०८६५	०.९०७९	७८१८	६८४१	६०४५	५३७२	४७८९	४२७६	३८१७	३४०१	३०२२	२६७४	२३५१	२०५१	१७७०	१५०६	१२५७	१०२२	०७९९	०५८७	०३८४	०१९१	०००६
५९	१.३८७५	१.०८२८	०.९०५५	७८००	६८२९	६०३३	५३६१	४७८०	४२६८	३८०९	३३९५	३०१६	२६६८	२३४६	२०४६	१७६५	१५०२	१२५३	१०१८	०७९५	०५८३	०३८१	०१८८	०००३

प्रत्येक रविवार के दृक्पक्षीय स्पष्ट निरयण ग्रह [प्रातः ५ घं. ३० मि. भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम]

(१ जन. १९५२ ई. को अयनांश २३°११'११")

ता. १९५२-५३ ई.	तिथि २००८-९ वि.	सूर्य रा. अं. क.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अं. क.	शनि रा. अं. क.
जन. ६	पौष शु. १०	८।२१।२७	०।१२।४७	६। ०। २	७।२८।२९	११।१३।२०	७।१०।४०	५।२९।३०
'५२ई. १३	माघ कृ. १	८।२८।३५	३। ७।१०	६। ३।३०	८। ६।२९	११।१४।१३	७।१९। ५	५।२९।४२
२०	८	९। ५।४२	६। २।३६	६। ६।४८	८।२५।५१	११।१५।१३	७।२७।३२	५।२९।४७
२७	शु. १	९।१२।५०	९।१३।४५	६। ९।५७	८।२५।५९	११।१६।२१	८। ६। २	५।२९।४८
फर. ३	८	९।१९।५६	०।२९।५२	६।१२।५६	९। ६।४३	११।१७।२४	८।१४।३४	५।२९।४४
१०	१५	९।२७। २	३।१५।५५	६।१६।४३	९।१८। ३	११।१८।५३	८।२३। ७	५।२९।३४
१७	फाल्गु. कृ. ६	१०। ४। ६	६।१९।२५	६।१८।१२	१०। ०। ३	११।२०।१६	९। १।४१	५।२९।२०
२४	१४	१०।११।१०	९।२१।५४	६।२०।२५	१०।१२।४५	११।२१।४३	९।१०।१७	५।२९। २
मार्च २	शु. ६	१०।१८।१२	१। ०।१३	६।२२।१८	१०।२६। २	११।२३।१४	९।१८।५३	५।२०।३८
९	१३	१०।२५।१२	३।२४।२३	६।२३।४६	११। ९। ९	११।२४।४७	९।२७।३०	५।२०।१२
१६	चैत्र कृ. ५	११। २।११	६।२२।३९	६।२४।४६	११।२०। ९	११।२६।२३	१०। ६। ६	५।१९।४१
२३	१२	११। ९। ९	१०। १। ०	६।२५।१६	११।२६।२६	११।२८। १	१०।१४।४४	५।१९।१०
३०	चैत्र शु. ५	११।१६। ४	१। ८। ०	६।२५।१०	११।२६।३२	११।२९।४०	१०।२३।२१	५।१८।३८
अप्रै. ६	'९वि. ११	११।२२।५७	४। २।२८	६।२४।२७	११।२१।५८	०। १।१९	११। १।५७	५।१८। ५
१३	वैशा. कृ. ३	११।२९।४९	७। २।४३	६।२३। ७	११।१७। ४	०। ३। ०	११।१०।३३	५।१७।३३
२०	११	०। ६।४०	१०।११। ८	६।२१।१५	११।१५।३२	०। ४।४२	११।१९।१०	५।१७। ३
२७	शु. ३	०।१३।३०	१।१६। २	६।१८।५५	११।१८। ०	०। ६।२३	११।२७।४६	५।१६।३४
मई ४	१०	०।२०।१७	४।१०।२०	६।१६।२१	११।२३।४२	०। ८। ३	०। ६।२३	५।१६। ९
११	ज्ये. कृ. २	०।२७। ३	७।१२।१४	६।१३।४९	०। १।५०	०। ९।४२	०।१४।५८	५।१५।४६
१८	९	१। ३।४८	१०।२१।५१	६।११।३३	०।११।५६	०।११।२०	०।२३।३३	५।१५।२७
२५	शु. २	१।१०।३२	१।२४।२४	६। ९।४३	०।२३।५२	०।१२।५६	१। २। ८	५।१५।१४
जून १	८	१।१७।१५	४।१८।१७	६। ८।३२	१। ७।३३	०।१४।२९	१।१०।४४	५।१५। ५
८	१५	१।२३।५७	७।२१। ३	६। ७।५९	१।२२।३६	०।१६। ०	१।१९।२१	५।१५। २
१५	आषा. कृ. ८	२। ०।३९	११। २।३२	६। ८। ६	२। ७।५०	०।१७।२८	१।२७।५७	५।१५। २
२२	३०	२। ७।२०	२। ३।१३	६। ८।५३	२।२२। १	०।१८।५३	२। ६।३२	५।१५। ६
२९	शु. ७	२।१४। १	४।२६।३५	६।१०।१४	३। ४।२९	०।२०।१२	२।१५। ८	५।१५।१७
जुला. ६	१४	२।२०।४१	७।२९।२४	६।१२। ३	३।१६। ७	०।२१।२७	२।२३।४५	५।१५।३३
१३	श्राव. कृ. ७	२।२७।२२	११।१२।४०	६।१४।१९	३।२३।४९	०।२२।३८	३। २।२२	५।१५।५२
२०	१४	३। ४। २	२।१२।१९	६।१६।५८	४। ०।१३	०।२३।४३	३।१०।५८	५।१६।१७
२७	शु. ५	३।१०।४४	५। ५।२२	६।१९।५७	४। ३।३८	०।२४।४२	३।१९।३५	५।१६।४५
अग. ३	१२	३।१७।२५	८। ७।४६	६।२३।१३	४। ३।१५	०।२५।३३	३।२८।१२	५।१७।१७
१०	भाद्र. कृ. ५	३।२४। ७	११।२१।५८	६।२६।४८	४।२८।५९	०।२६।१७	४। ६।५०	५।१७।५३
१७	१२	४। ०।५०	२।२१।२२	७। ०।३५	३।२३।३६	०।२६।५२	४।१५।२८	५।१८।३१
२४	शु. ४	४। ७।३४	५।१४।३४	७। ४।३५	३।२९।४९	०।२७।२०	४।२४। ४	५।१९।१२
३१	११	४।१४।२०	८।१६।४१	७। ८।४५	३।२६।१२	०।२७।३९	५। २।४२	५।१९।५६
सितं. ७	आश्वि. कृ. ४	४।२१। ७	०। ०।२८	७।१३। ६	४। ५।५८	०।२७।४७	५।११।२०	५।२०।४२
१४	११	४।२७।५५	३। ०। ६	७।१७।३५	४।१८।३५	०।२७।४६	५।१९।५७	५।२१।२९
२१	शु. २	५। ४।४६	५।२३।५४	७।२२।१२	५। १।४३	०।२७।३५	५।२८।३४	५।२२।१८
२८	९	५।११।३७	८।२६।३०	७।२६।५५	५।१४।२१	०।२७।१४	६। ७।१०	५।२३। ९
अक्तू. ५	कार्ति. कृ. २	५।१८।३०	०। ८।३३	८। १।४५	५।२६।१६	०।२६।४५	६।१५।४५	५।२४। ०
१२	९	५।२५।२५	३। ८।२३	८। ६।४१	६। ७।३२	०।२६। ६	६।२४।२०	५।२४।५२
१९	शु. १	६। २।२२	६। ३। ०	८।११।४२	६।१८।१३	०।२५।२१	७। २।५४	५।२५।४३
२६	८	६। ९।२१	९। ७। ८	८।१६।४७	६।२८।२१	०।२४।३०	७।११।२७	५।२६।३३
नवं. २	मार्ग. कृ. १	६।१६।२०	०।१६।४७	८।२१।५७	७। ७।४८	०।२३।३५	७।२०। ०	५।२७।२४
९	७	६।२३।२२	३।१६।१६	८।२७।१०	७।१६। ८	०।२२।३९	७।२८।३१	५।२८।१३

(१ जन. १९५३ ई. को अयनांश २३°१२'१२")

ता. १९५२-५३ ई.	तिथि २००९-१० वि.	सूर्य रा. अं. क.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अं. क.	शनि रा. अं. क.
नवं. १६	मार्ग. कृ. १४	७। ०।२४	६।११।३१	९। २।२६	७।२२। ३	०।२९।४३	८। ७। २	५।२९। ०
'५२ई. २३	शु. ६	७। ७।२८	९।१८। ४	९। ७।४४	७।२२।४५	०।२०।४९	८।१५।३०	५।२९।४५
३०	१४	७।१४।३४	०।२५।४१	९।१३। ३	७।१५।३७	०।१९।५८	८।२३।५६	६। ०।२८
दिसं. ७	पौष कृ. ६	७।२१।४०	३।२४। ३	९।१८।२४	७। ७।५६	०।१९।१५	९। २।१९	६। १। ८
१४	१२	७।२८।४६	६।१९।२८	९।२३।४७	७। ८।१६	०।१८।३८	९।१०।३९	६। १।४५
२१	शु. ५	८। ५।५४	९।२८।३३	९।२९।१०	७।१४।३०	०।१८।१२	९।१८।५५	६। २।१८
२८	१२	८।१३। २	११। ५।१७	१०। ४।३५	७।२३।१५	०।१७।५४	९।२७। ५	६। २।४८
जन. ४	माघ कृ. ४	८।२०।१०	४। २। ३	१०। ९।५९	८। ३। ४	०।१७।४७	१०। ५। ८	६। ३।१३
'५३ई. ११	११	८।२७।१८	६।२७।१६	१०।१५।२३	८।१३।२८	०।१७।५०	१०।१३। ३	६। ३।३४
१८	शु. ३	९। ४।२६	१०। ७।५९	१०।२०।४६	८।२४।१७	०।१८। ४	१०।२०।४९	६। ३।५०
२५	११	९।११।३३	१।१५।१४	१०।२६। ८	९। ५।३०	०।१८।२८	१०।२८।२०	६। ४। ०
फर. १	फाल्गु. कृ. २	९।१८।४०	४।१०।२८	११। १।२८	९।१७।१५	०।१९। ०	११। ५।३५	६। ४। ६
८	९	९।२५।४५	७। ५।३३	११। ६।४७	९।२९।३४	०।१९।४०	११।१२।२८	६। ४। ७
१५	शु. २	१०। २।५०	१०।१६।२१	११।१२। ५	१०।१२।१९	०।२०।३०	११।१८।५३	६। ४। २
२२	९	१०। ९।५४	१।२४।५४	११।१७।२१	१०।२४।४७	०।२१।२६	११।२४।४६	६। ३।५२
मार्च १	चैत्र कृ. १	१०।१६।५६	४।१९।१२	११।२२।३४	११। ५।५७	०।२२।३०	११।२९।५३	६। ३।३७
८	७	१०।२३।५७	७।१४।४०	११।२७।४७	११। ९।४३	०।२३।३९	०। ४। १	६। ३।१८
१५	३०	११। ०।५६	१०।२४।२१	०। २।५७	११। ७।२९	०।२४।५३	०। ६।५३	६। २।५५
२२	चैत्र शु. ८	११। ७।५४	२। ३।५५	०। ८। ४	११। १।२२	०।२६।१२	०। ८। ८	६। २।२९
२९	'१०वि. १४	११।१४।५०	४।२७।५७	०।१३।१०	१०।२७। ४	०।२७।३६	०। ७।२७	६। २। ०
अप्रै. ५	प्र.वै.कृ. ६	११।२१।४४	७।२४।३१	०।१८।१३	१०।२७।१६	०।२९। ४	०। ४।४९	६। १।३०
१२	१४	११।२८।३६	११। २।५२	०।२३।१४	११। १।२२	१। ०।३४	०। ०।४६	६। ०।५८
१९	शु. ६	०। ५।२७	२।१२।१५	०।२८।१२	११। ८।१६	१। २। ६	११।२६।२९	६। ०।२५
२६	१३	०।१२।१६	५। ६।२९	१। ३। ९	११।१७।१३	१। ३।४१	११।२३।१५	५।२९।५४
मई ३	द्वि.वै.कृ. ४	०।१९। ४	८। ४।३९	१। ८। ३	११।२७।४८	१। ५।१७	११।२१।५०	५।२९।२३
१०	१२	०।२५।५१	११।१२।२३	१।१२।५४	०। ९।५८	१। ६।५४	११।२२।२०	५।२८।५६
१७	शु. ४	१। २।३६	२।२०।१२	१।१७।४६	०।२३।४०	१। ८।३२	११।२४।३३	५।२८।३०
२४	११	१। ९।२०	५।१४।४०	१।२२।३२	१। ८।३९	१।१०।११	११।२८। ८	५।२८। ७
३१	ज्ये. कृ. ३	१।१६। ३	८।१४।३५	१।२७।१७	१।२३।५४	१।११।५०	०। २।४१	५।२७।५०
जून. ७	११	१।२२।४५	११।२२।४८	२। २। १	२। ८। ४	१।१३।२८	०। ८। ४	५।२७।३६
१४	शु. ३	१।२९।२६	२।२८।११	२। ६।४२	२।२०।१९	१।१५। ४	०।१४। १	५।२७।२६
२१	९	२। ६। ७	५।२२।२७	२।११।२२	३। ०।२८	१।१६।४०	०।२०।२६	५।२७।२१
२८	आषा. कृ. १	२।१२।४७	८।२३।५५	२।१६। ०	३। ८।१८	१।१८।१४	०।२७।११	५।२७।२१
जुला. ५	९	२।१९।२८	०। ३।४०	२।२०।३६	३।१३।२६	१।१९।४७	१। ४।१५	५।२७।२६
१२	शु. १	२।२६। ८	३। ६।३४	२।२५।१२	३।१५।१०	१।२१।१७	१।११।३५	५।२७।३६
१९	९	३। २।४९	६। ०।२७	२।२९।४६	३।१३। ७	१।२२।४३	१।१९। ४	५।२७।५१
२६	१५	३। ९।३०	९। २।३४	३। ४।१९	३। ८।३०	१।२४। ७	१।२६।४२	५।२८।११
अग. २	श्राव. कृ. ८	३।१६।१२	०।१४।२६	३। ८।५१	३। ४।४३	१।२५।२७	२। ४।२९	५।२८।३५
९	३०	३।२२।५४	३।१५।२२	३।१३।२३	३। ५।१४	१।२६।४४	२।१२।२५	५।२९। ३
१६	शु. ६	३।२९।३८	६। ८।५६	३।१७।५२	३।११।१०	१।२७।५५	२।२०।२५	५।२९।३४
२३	१४	४। ६।२२	९।१०।४४	३।२२।२१	३।२१।४४	१।२८।५९	२।२८।३२	६। ०।१०
३०	भाद. कृ. ६	४।१३। ७	०।२४।३६	३।२६।४९	४। ४।५५	१।२९।५९	३। ६।४४	६। ०।४९
सितं. ६	१३	४।१९।५४	३।२४।२६	४। १।१६	४।१८।३५	२। ०।५३	३।१५। १	६। १।२९
१३	शु. ५	४।२६।४२	६।१७।४५	४। ५।४३	५। १।३८	२। १।३८	३।२३।२२	६। २।१२
२०	१२	५। ३।३२	९।१८।५८	४।१०। ८	५।१३।४९	२। २।१६	४। १।४७	६। २।५८

प्रत्येक रविवार के दृक्पक्षीय स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि.) भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम

(१ जन. १९५४ ई. को अयनांश २३°१२'५२")

ता. १९५३ई.-५४ई.	तिथि २०१०-११वि.	सूर्य रा. अं. क.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अं. क.	शनि रा. अं. क.
सितं. २७	आश्वि. कृ. ५	५।१०।२३	१। ३।५०	४।१४।३२	५।२५।१०	२। २।४४	४।१०।१६	६। ३।४६
अक्तू. ४	१२	५।१७।१६	४। ३।२०	४।१८।५७	६। ५।४७	२। ३। ४	४।१८।४९	६। ४।३६
११	शु. ३	५।२४।११	६।२६।५८	४।२३।२१	६।१५।३९	२। ३।१४	४।२७।२४	६। ५।२६
१८	११	६। १। ७	९।२७।५३	४।२७।४३	६।२४।३८	२। ३।१४	५। ६। १	६। ६।१५
२५	कार्ति. कृ. ३	६। ८। ५	१।१२।११	५। २। ५	७। २।११	२। ३। ६	५।१४।४१	६। ७। ५
नवं. १	१०	६।१५। ४	४।१२।१३	५। ६।२७	७। ६।५६	२। २।४७	५।२३।२२	६। ७।५५
८	शु. २	६।२२। ५	७। ६।१४	५।१०।४८	७। ६।१२	२। २।२०	६। २। ७	६। ८।४६
१५	९	६।२९। ८	१०। ७।४८	५।१५। ८	६।२८।२८	२। १।४४	६।१०।५२	६। ९।३६
२२	मार्ग. कृ. २	७। ६।११	१।२०। ६	५।१९।२६	६।२१।४५	२। ०।५९	६।१९।३९	६।१०।२४
२९	९	७।१३।१६	४।२०।२७	५।२३।४४	६।२३।२५	२। ०। ९	६।२८।२५	६।११।११
दिसं. ६	३०	७।२०।२२	७।१५। ७	५।२८। ०	७। ०।४१	१।२९।१०	७। ७।१३	६।११।५५
१३	शु. ७	७।२७।२९	१०।१८।३२	६। २।१६	७।१०।१०	१।२८।१८	७।१६। १	६।१२।३८
२०	१५	८। ४।३७	१।२८।२०	६। ६।३१	७।२०।२७	१।२७।२१	७।२४।४९	६।१३।१७
२७	पौष कृ. ७	८।११।४४	४।२८।१६	६।१०।४४	८। १। ४	१।२६।२७	८। ३।३७	६।१३।५४
जन. ३	१३	८।१८।५२	७।२३।२२	६।१४।५५	८।११।५६	१।२५।३५	८।१२।२६	६।१४।२६
'५४ई. १०	शु. ६	८।२६। १	१०।२९।२५	६।१९। ४	८।२३। ६	१।२४।५०	८।२१।१४	६।१४।५५
१७	१३	९। ३। ८	२। ७।२१	६।२३।११	९। ४।३५	१।२४।१३	९। ०। २	६।१५।१९
२४	माघ कृ. ५	९।१०।१६	५। ६। ३	६।२७।१५	९।१६।३०	१।२३।४४	९। ८।४९	६।१५।३८
३१	१२	९।१७।२२	८। १। ८	७। १।१६	९।२८।४२	१।२३।२४	९।१७।३७	६।१५।५३
फर. ७	शु. ४	९।२४।२८	११। १।४२	७। ५।१४	१०।१०।२७	१।२३।१४	९।२६।२६	६।१६। ४
१४	१२	१०। १।३४	२।१७। ७	७। ९। ८	१०।१९।४२	१।२३।१४	१०। ५।१४	६।१६। ७
२१	फाल्गु. कृ. ४	१०। ८।३८	५।१४।१०	७।१२।५७	१०।२२।५३	१।२३।२५	१०।१४। ०	६।१६। ७
२८	१०	१०।१५।४४	८। ८।५८	७।१६।४०	१०।१८।३१	१।२३।४५	१०।२२।४४	६।१६। ४
मार्च ७	शु. ३	१०।२२।४१	११।१८।५८	७।२०।१८	१०।११।३७	१।२४।१३	११। १।२७	६।१५।५३
१४	१०	१०।२९।४१	२।२७। ७	७।२३।४९	१०। ८।३१	१।२४।४९	११।१०।१०	६।१५।३८
२१	चैत्र कृ. २	११। ६।३८	५।२२।४४	७।२७।१२	१०।१०।२३	१।२५।३४	११।१८।५२	६।१५।१९
२८	९	११।१३।३४	८।१७।२२	८। ०।२३	१०।१५।४८	१।२६।२७	११।२७।३३	६।१४।५५
अप्रै. ४	चैत्र शु. १	११।२०।२९	११।२७।२५	८। ३।२३	१०।२३।३६	१।२७।२६	०। ६।१२	६।१४।२९
११	'११वि. ९	११।२७।२२	३। ६।४५	८। ६। ९	११। ३। ६	१।२८।३१	०।१४।५०	६।१४। ०
१८	१५	०। ४।१३	६। १।३५	८। ८।४१	११।१४। १	१।२९।४१	०।२३।२६	६।१३।३०
२५	वैशा. कृ. ७	०।११। ३	८।२६।३४	८।१०।५३	११।२६।१६	२। ०।५६	१। २। १	६।१२।५८
मई २	३०	०।१७।५१	०। ५।४३	८।१२।४३	०। ९।५३	२। २।१५	१।१०।३४	६।१२।२६
९	शु. ७	०।२४।३८	३।१५।४३	८।१४। ६	०।२४।४२	२। ३।३८	१।१९। ६	६।११।५५
१६	१४	१। १।२३	६।१०।२५	८।१५।००	१। ९।५१	२। ५। ५	१।२७।३६	६।११।२५
२३	ज्ये. कृ. ५	१। ८। ७	९। ६।२२	८।१५।१८	१।२३।५२	२। ६।३३	२। ६। ४	६।१०।५८
३०	१३	१।१४।५१	०।१४।३३	८।१५। ५	२। ५।४७	२। ८। ४	२।१४।२९	६।१०।३४
जून ६	शु. ६	१।२१।३४	३।२४। २	८।१४।११	२।१५।१२	२। ९।३७	२।२२।५२	६।१०।१२
१३	१२	१।२८।१५	६।१८।५८	८।१२।४४	२।२१।५१	२।११।१०	३। १।११	६। ९।५४
२०	आषा. कृ. ४	२। ४।५६	९।१६।२४	८।१०।५३	२।२५।१६	२।१२।४५	३। ९।३१	६। ९।४०
२७	१२	२।११।३७	०।२४।१५	८। ८।४४	२।२५। ४	२।१४।२०	३।१७।४६	६। ९।३१
जुला. ४	शु. ४	२।१८।१७	४। २। १	८। ६।३७	२।२१।४६	२।१५।५६	३।२५।५७	६। ९।२५
११	११	२।२४।५८	६।२७। ७	८। ४।४४	२।१७।४०	२।१७।३१	४। ४। ४	६। ९।२८
१८	श्राव. कृ. ३	३। १।३८	९।२६।१३	८। ३।२०	२।१६। ७	२।१९। ५	४।१२। ६	६। ९।३३
२५	१०	३। ८।१९	१। ४।४४	८। २।३३	२।१८।५३	२।२०।३९	४।२०। ४	६। ९।४३
अग. १	शु. ३	३।१५। १	४।१०। ६	८। २।२६	[illegible]	२।२२।१०	४।२७।५६	६। ९।५८

(१ जन: १९५५ ई: को अयनांश २३°१३'४२")

ता. १९५५ई.-५६ई.	तिथि २०११-१२वि.	सूर्य रा. अं. क.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अं. क.	शनि रा. अं. क.
अग. ८	श्राव. शु. ९	३।२१।४३	७। ५। २	८। ३। ०	३। ७।३१	२।२३।४१	५। ५।४२	६।१०।१६
१५	भाद्र. कृ. १	३।२८।२६	१०। ५।२८	८। ४।१४	३।२१।१२	२।२५। ९	५।१३।१६	६।१०।४०
२२	९	४। ५।१०	१।१५।३६	८। ६। १	४। ५।२२	२।२६।३४	५।२०।४१	६।११। ९
२९	शु. १	४।११।५६	४।१८।३४	८। ८।१९	४।१८।४८	२।२७।५५	५।२७।५५	६।११।४०
सितं. ५	८	४।१८।४२	७।१२।५९	८।११। ४	५। १।१३	२।२९।१२	६। ४।५१	६।१२।१४
१२	१५	४।२५।३०	१०।१४। ०	८।१४।११	५।१२।४०	३। ०।२५	६।११।२९	६।१२।५३
१९	आश्वि.कृ. ७	५। २।१९	१।२६।१९	८।१७।३९	५।२३।१२	३। १।३४	६।१७।४४	६।१३।३३
२६	३०	५। ९।१०	४।२७।३०	८।२१।२४	६। २।४८	३। २।३९	६।२३।२७	६।१४।१६
अक्तू. ३	शु. ५	५।१६। ३	७।२१।१६	८।२५।२३	६।११।१५	३। ३।३६	६।२८।३१	६।१५। २
१०	१३	५।२२।५७	१०।२२। ६	८।२९।३५	६।१७।५६	३। ४।२९	७। २।३५	६।१५।४९
१७	कार्ति. कृ. ६	५।२९।५३	२। ६।१८	९। ३।५५	६।२१।२८	३। ५।१२	७। ५।२७	६।१६।३७
२४	१३	६। ६।५१	५। ६।४२	९। ८।२४	६।१९।१९	३। ५।४८	७। ६।५१	६।१७।२७
३१	शु. ५	६।१३।५०	८। ०। २	९।१३। २	६।११।१८	३। ६।१६	७। ६।१८	६।१८।१७
नव. ७	१२	६।२०।५१	११। ०।२०	९।१७।४४	६। ५।४७	३। ६।३५	७। ३।५२	६।१९। ८
१४	मार्ग. कृ. ४	६।२७।५३	२।१५।१४	९।२२।३२	६। ८।४५	३। ६।४४	७। ०। ०	६।१९।५८
२१	११	७। ४।५६	५।१५।५०	९।२७।२५	६।१६।५९	३। ६।४३	६।२५।५२	६।२०।४७
२८	शु. ३	७।१२। १	८। १। ७	१०। २।१९	६।२७।१०	३। ६।३२	६।२२।४४	६।२१।३६
दिसं. ५	१०	७।१९। ७	११। १।२४	१०। ७।१७	७। ७।५४	३। ६।१२	६।२१।२९	६।२२।२४
१२	पौष कृ. ३	७।२६।१३	२।२३।१५	१०।१२।१६	७।१९।४६	३। ५।४३	६।२२।११	६।२३।१०
१९	१०	८। ३।२०	५।२४।३१	१०।१७।१६	८। १।४३	३। ५। ४	६।२४।३७	६।२३।५३
२६	शु. १	८।१०।२८	८।१८। ८	१०।२२।१७	८।१३।४५	३। ४।१९	६।२८।२७	६।२४।३४
जन. २	८	८।१७।३६	११।१९।३०	१०।२७।१९	८।२५। ०	३। ३।३१	७। ३।२२	६।२५।१३
'५६ई. ९	माघ कृ. १	८।२४।४४	३। १। १	११। २।२१	९। ३।३२	३। २।३६	७। ९। ५	६।२५।४९
१६	८	९। १।५२	६। २।४१	११। ७।२२	९।१५। ९	३। १।४०	७।१५।२४	६।२६।२०
२३	३०	९। ९। ०	८।२६।४७	११।१२।२३	९।२६। ८	३। ०।४४	७।२२।१२	६।२६।४८
३०	शु. ७	९।१६। ७	०। ०।१८	११।१७।२३	१०। ४।२३	२।२९।५०	७।२९।११	६।२७।११
फर. ६	१४	९।२३।१३	३। १।२६	११।२२।२२	१०। ६। १	२।२९। ०	८। ६।४४	६।२७।३०
१३	फाल्गु.कृ. ६	१०। ०।१८	६।१०।२१	११।२७।१९	९।२९।४१	२।२८।१६	८।१४।२२	६।२७।४५
२०	१३	१०। ७।२२	९। ४।५४	०। २।१६	९।२२।५४	२।२७।३८	८।२२। ८	६।२७।५४
२७	शु. ५	१०।१४।२५	०।११। ५	०। ७।११	९।२१।१७	२।२७।११	९। ०। ५	६।२७।५९
मार्च ६	१३	१०।२१।२६	३।१८।४८	०।१२। ५	९।२४।३७	२।२६।५२	९। ८। ७	६।२७।५८
१३	चैत्र कृ. ५	१०।२८।२६	६।१८।२०	०।१६।५७	१०। १। ५	२।२६।४२	९।१६।१४	६।२७।५२
२०	११	११। ५।२४	९।१२।४४	०।२१।४७	१०। ९।३२	२।२६।४१	९।२४।२६	६।२७।४१
२७	चैत्र शु. ४	११।१२।२१	०।२१। ९	०।२६।३६	१०।१९।२५	२।२६।५०	१०। २।४०	६।२७।२६
अप्रै. ३	'१२वि. ११	११।१९।१६	३।२८।५१	१। १।२३	११। ०।३०	२।२७। ८	१०।१०।५८	६।२७। ६
१०	वैशा. कृ. ३	११।२६। ९	६।२६।३३	१। ६। ८	११।१२।४६	२।२७।३५	१०।१९।१८	६।२६।४३
१७	१०	०। ३। ०	९।२०।४५	१।१०।५२	११।२६।१३	२।२८।११	१०।२७।३९	६।२६।१६
२४	शु. २	०। ९।५१	१। ०।१७	१।१५।३४	०।१०।४७	२।२८।५३	११। ६। २	६।२५।४७
मई १	१०	०।१६।३९	४। ८।५९	१।२०।१५	०।२५।४२	२।२९।४३	११।१४।२६	६।२५।१७
८	ज्ये. कृ. २	०।२३।२६	७। ५। ९	१।२४।५४	१। ९।२९	३। ०।३८	११।२२।५१	६।२४।४६
१५	८	१। ०।११	९।२९।२१	१।२९।३२	१।२०।५२	३। १।४१	०। १।१७	६।२४।१४
२२	शु. १	१। ६।५६	१। ८।४३	२। ४। ९	१।२९।१५	३। २।४८	०। ९।४४	६।२३।४३
२९	८	१।१३।३९	४।१८।४१	२। ८।४४	२। ४।१६	३। ४। ०	०।१८।१२	६।२३।१३
जून ५	१५	१।२०।२२	७।१३।५८	२।१३।१८	२। ५।३५	३। ५।१६	०।२६।४०	६।२२।४६
१२	आषा. कृ. ७	१।२७। ३	१०। ८।३८	२।१७।५१	२। ३।२७	३। ६।३६	१। ५। ९	६।२२।२१

प्रत्येक रविवार के दृक्पक्षीय स्पष्ट निरयण ग्रह [प्रातः ५ घं. ३० मि., भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम]

(१ जन. १९५२ ई. को अयनांश २३°११'११")

ता. १९५२-५३ ई.	तिथि २००८-२००९वि.	सूर्य रा. अं. क.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अं. क.	शनि रा. अं. क.
जन. ६	पौष शु.१०	८।२९।२७	०।१९।४७	६। ०। २	७।२८।२९	११।१३।२०	७।१०।४०	५।२१।३०
१९५२ई. १३	माघ कृ. १	८।२८।३५	३। ७।१०	६। ३।३०	८। ६।२९	११।१४।१३	७।१९। ५	५।२१।४२
२०	८	९। ५।४२	६। २।३६	६। ६।४८	८।२५।५१	११।१५।१३	७।२७।३३	५।२१।४७
२७	शु. १	९।१२।५०	९।१३।४५	६। ९।५७	८।२५।५९	११।१६।२१	८। ६। २	५।२१।४८
फर. ३	८	९।१९।५६	०।२१।५२	६।१२।५६	९। ६।४३	११।१७।२४	८।१४।३४	५।२१।४४
१०	१५	९।२७। २	३।१५।५५	६।१६।४३	९।१८। ३	११।१८।५३	८।२३। ७	५।२१।३४
१७	फाल्गु. कृ. ६	१०। ४। ६	६।१३।२९	६।१८।१२	१०। ०। ३	११।२०।१६	९। १।४१	५।२१।२०
२४	१४	१०।११।१०	९।२१।५४	६।२०।२५	१०।१२।४५	११।२१।४३	९।१०।१७	५।२१। २
मार्च २	शु. ६	१०।१८।१२	१। ०।१३	६।२२।१८	१०।२६। २	११।२३।१४	९।१८।५३	५।२०।३८
९	१३	१०।२५।१२	३।२७।२३	६।२३।४६	११। ९। ९	११।२४।४७	९।२७।३०	५।२०।१२
१६	चैत्र कृ. ५	११। २।११	६।२२।३९	६।२४।४६	११।२०। ९	११।२६।२३	१०। ६। ६	५।१९।४१
२३	१२	११। ९। ९	१०। १। ०	६।२५।१६	११।२६।२६	११।२८। १	१०।१४।४४	५।१९।१०
३०	चैत्र शु. ५	११।१६। ४	१। ८। ७	६।२५।१०	११।२६।३२	११।२९।४०	१०।२३।२१	५।१८।३८
अप्रै. ६	रवि. ११	११।२२।५७	४। २।२८	६।२४।२७	११।२९।५८	०। १।१९	११। १।५७	५।१८। ५
१३	वैशा. कृ. ३	११।२९।४९	७। २।४३	६।२३। ७	११।१७। ४	०। ३। ०	११।१०।३३	५।१७।३३
२०	११	०। ६।४०	१०।११। ८	६।२१।१५	११।१५।३२	०। ४।४२	११।१९।१०	५।१७। ३
२७	शु. ३	०।१३।३०	१।१६। ३	६।१८।५५	११।१८। ०	०। ६।२३	११।२७।४६	५।१६।३४
मई ४	१०	०।२०।१७	४।१०।२०	६।१६।२१	११।२३।४२	०। ८। ३	०। ६।२३	५।१६। ९
११	ज्ये. कृ. २	०।२७। ३	७।१२।१४	६।१३।४९	०। १।५०	०। ९।४२	०।१४।५८	५।१५।४६
१८	९	१। ३।४८	१०।२१।५१	६।११।३३	०।११।५६	०।११।२०	०।२३।३३	५।१५।२७
२५	शु. २	१।१०।३२	१।२४।२४	६। ९।४३	०।२३।५२	०।१२।५६	१। २। ८	५।१५।१४
जून १	८	१।१७।१५	४।१८।१७	६। ८।३२	१। ७।३३	०।१४।२९	१।१०।४४	५।१५। ५
८	१५	१।२३।५७	७।२१। ३	६। ७।५९	१।२२।३६	०।१६। ०	१।१९।२१	५।१५। २
१५	आषा. कृ. ८	२। ०।३९	११। २।३२	६। ८। ६	२। ७।५०	०।१७।२८	१।२७।५७	५।१५। २
२२	३०	२। ७।२०	२। ३।१३	६। ८।५३	२।२२। १	०।१८।५३	२। ६।३२	५।१५। ६
२९	शु. ७	२।१४। १	४।२६।३५	६।१०।१४	३। ४।२९	०।२०।१२	२।१५। ८	५।१५।१७
जुला. ६	१४	२।२०।४१	७।२९।२४	६।१२। ३	३।१६। ७	०।२१।२७	२।२३।४५	५।१५।३३
१३	श्राव. कृ. ७	२।२७।२२	११।१२।४०	६।१४।११	३।२३।४९	०।२२।३८	३। २।२२	५।१५।५२
२०	१४	३। ४। २	२।१८।१९	६।१६।५८	४। ०।१३	०।२३।४३	३।१०।५८	५।१६।१७
२७	शु. ५	३।१०।४४	५। ५।२२	६।१९।५७	४। ३।३८	०।२४।४२	३।१९।३५	५।१६।४५
अग. ३	१२	३।१७।२५	८। ७।४६	६।२३।१३	४। ३।१५	०।२५।३३	३।२८।१२	५।१७।१७
१०	भाद्र. कृ. ५	३।२४। ७	११।२१।५८	६।२६।४८	४।२८।५९	०।२६।१७	४। ६।५०	५।१७।५३
१७	१२	४। ०।५०	२।२१।२२	७। ०।३५	३।२३।३६	०।२६।५२	४।१५।२८	५।१८।३१
२४	शु. ४	४। ७।३४	५।१४।३४	७। ४।३५	३।२१।४९	०।२७।२०	४।२४। ४	५।१९।१२
३१	११	४।१४।२०	८।१६।४१	७। ८।४५	३।२६।१२	०।२७।३९	५। २।४२	५।१९।५६
सितं. ७	आश्वि. कृ.४	४।२१। ७	०। ०।२८	७।१३। ६	४। ५।५८	०।२७।४७	५।११।२०	५।२०।४२
१४	११	४।२७।५५	३। ०। ६	७।१७।३५	४।१८।३५	०।२७।४६	५।१९।५७	५।२१।२९
२१	शु. २	५। ४।४६	५।२३।५४	७।२२।१२	५। १।४३	०।२७।३५	५।२८।३४	५।२२।१८
२८	९	५।११।३७	८।२६।३०	७।२६।५५	५।१४।२१	०।२७।१४	६। ७।१०	५।२३। ९
अक्टू. ५	कार्ति. कृ. २	५।१८।३०	०। ८।३३	८। १।४५	५।२६।१६	०।२६।४५	६।१५।४५	५।२४। ०
१२	९	५।२५।२५	३। ८।२३	८। ६।४१	६। ७।३२	०।२६। ६	६।२४।२०	५।२४।५२
१९	शु. १	६। २।२२	६। ३। ०	८।११।४२	६।१८।१३	०।२५।२१	७। २।५४	५।२५।४३
२६	८	६। ९।२१	९। ७। ८	८।१६।४७	६।२८।२१	०।२४।३०	७।११।२७	५।२६।३३
नवं. २	मार्ग. कृ. १	६।१६।२०	०।१६।४७	८।२१।५७	७। ७।४८	०।२३।३५	७।२०। १	५।२७।२४
९	७	६।२३।२२	३।१६।१६	८।२७।१०	७।१६। ८	०।२२।३९	७।२८।३१	५।२८।१३

(१ जन. १९५३ ई. को अयनांश २३°१२'१२")

ता. १९५२-५३ ई.	तिथि २००९-१०वि.	सूर्य रा. अं. क.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अं. क.	शनि रा. अं. क.
नवं. १६	मार्ग. कृ.१४	७। ०।२४	६।११।३१	९। ३।२६	७।२३। ३	०।२१।४३	८। ७। २	५।२९। ०
१९५२ई. २३	शु. ६	७। ७।२८	९।१८। ४	९। ७।४४	७।२२।४५	०।२०।४९	८।१५।३०	५।२९।४५
३०	१४	७।१४।३४	०।२५।४१	९।१३। ३	७।१५।३७	०।१९।५८	८।२३।५६	६। ०।२८
दिसं. ७	पौष कृ. ६	७।२१।४०	३।२४। ३	९।१८।२४	७। ७।५६	०।१९।१५	९। २।१९	६। १। ८
१४	१२	७।२८।४६	६।१९।२८	९।२३।४७	७। ८।१६	०।१८।३८	९।१०।३९	६। १।४५
२१	शु. ५	८। ५।५४	९।२८।३३	९।२९।१०	७।१४।३०	०।१८।१२	९।१८।५५	६। २।१८
२८	१२	८।१३। २	११। ५।१७	१०। ४।३५	७।२३।१५	०।१७।५४	९।२७। ५	६। २।४८
जन. ४	माघ कृ. ४	८।२०।१०	४। २। ३	१०। ९।५९	८। ३। ४	०।१७।४७	१०। ५। ८	६। ३।१३
'५३ई. ११	११	८।२७।१८	६।२७।१६	१०।१५।२३	८।१३।२८	०।१७।५०	१०।१३। ३	६। ३।३४
१८	शु. ३	९। ४।२६	१०। ७।५९	१०।२०।४६	८।२४।१७	०।१८। ४	१०।२०।४९	६। ३।५०
२५	११	९।११।३३	१।१५।१४	१०।२६। ८	९। ५।३०	०।१८।२८	१०।२८।२०	६। ४। ०
फर. १	फाल्गु. कृ.२	९।१८।४०	४।१०।२८	११। १।२८	९।१७।१५	०।१९। ०	११। ५।३५	६। ४। ६
८	९	९।२५।४५	७। ५।३३	११। ६।४७	९।२९।३४	०।१९।४०	११।१२।२८	६। ४। ७
१५	शु. २	१०। २।५०	१०।१६।२१	११।१२। ५	१०।१२।१९	०।२०।३०	११।१८।५३	६। ४। २
२२	९	१०। ९।५४	१।२४।५४	११।१७।२१	१०।२४।४७	०।२१।२६	११।२४।४६	६। ३।५२
मार्च १	चैत्र कृ. १	१०।१६।५६	४।१९।१२	११।२२।३४	११। ५।५७	०।२२।३०	११।२९।५३	६। ३।३७
८	७	१०।२३।५७	७।१४।४०	११।२७।४७	११। ९।४३	०।२३।३९	०। ४। १	६। ३।१८
१५	३०	११। ०।५६	१०।२४।२१	०। ३।५७	११। ७।२९	०।२४।५३	०। ६।५३	६। २।५५
२२	चैत्र शु. ८	११। ७।५४	२। ३।५५	०। ८। ४	११। १।२२	०।२६।१२	०। ८। ८	६। २।२९
२९	'१०वि. १४	११।१४।५०	४।२७।५७	०।१३।१०	१०।२७। ४	०।२७।३६	०। ७।२७	६। २। ०
अप्रै. ५	प्र.वै.कृ. ६	११।२१।४४	७।२४।३१	०।१८।१३	१०।२७।१६	०।२९। ४	०। ४।४९	६। १।३०
१२	१४	११।२८।३६	११। २।५२	०।२३।१४	११। १।२२	१। ०।३४	०। ०।४६	६। ०।५८
१९	शु. ६	०। ५।२७	२।१२।१५	०।२८।१२	११। ८।१६	१। २। ६	११।२६।२९	६। ०।२५
२६	१३	०।१२।१६	५। ६।२९	१। ३। ९	११।१७।१३	१। ३।४१	११।२३।१५	५।२९।५४
मई ३	द्वि.वै.कृ. ४	०।१९। ४	८। ४।२९	१। ८। ३	११।२७।४८	१। ५।१७	११।२१।५०	५।२९।२३
१०	१२	०।२५।५१	११।१२।२३	१।१२।५४	०। ९।५८	१। ६।५४	११।२२।२०	५।२८।५६
१७	शु. ४	१। २।३६	२।२०।१२	१।१७।४६	०।२३।४०	१। ८।३२	११।२४।३३	५।२८।३०
२४	११	१। ९।२०	५।१४।४०	१।२२।३२	१। ८।३९	१।१०।११	११।२८। ८	५।२८। ७
३१	ज्ये. कृ. ३	१।१६। ३	८।१४।३५	१।२७।१७	१।२३।५४	१।११।५०	०। २।४१	५।२७।५०
जून ७	११	१।२२।४५	११।२२।४८	२। २। १	२। ८। ४	१।१३।२८	०। ८। ४	५।२७।३६
१४	शु. ३	१।२९।२६	२।२८।११	२। ६।४२	२।२०।१९	१।१५। ४	०।१४। १	५।२७।२६
२१	९	२। ६। ७	५।२२।२७	२।११।२२	३। ०।२८	१।१६।४०	०।२०।२६	५।२७।२१
२८	आषा. कृ. १	२।१२।४७	८।२३।५५	२।१६। ०	३। ८।१८	१।१८।१४	०।२७।११	५।२७।२१
जुला. ५	९	२।१९।२८	०। ३।४०	२।२०।३६	३।१३।२६	१।१९।४७	१। ४।१५	५।२७।२६
१२	शु. १	२।२६। ८	३। ६।३४	२।२५।१२	३।१५।१०	१।२१।१७	१।११।२५	५।२७।३६
१९	९	३। २।४९	६। ०।३७	२।२९।४६	३।१३। ७	१।२२।४३	१।१९। ४	५।२७।५१
२६	१५	३। ९।३०	९। २।३४	३। ४।१९	३। ८।३०	१।२४। ७	१।२६।४२	५।२८।११
अग. २	श्राव. कृ. ८	३।१६।१२	०।१४।२६	३। ८।५१	३। ४।४३	१।२५।२७	२। ४।२९	५।२८।३५
९	३०	३।२२।५४	३।१५।२२	३।१३।२३	३। ५।१४	१।२६।४४	२।१२।२५	५।२९। ३
१६	शु. ६	३।२९।३८	६। ८।५६	३।१७।५२	३।११।१०	१।२७।५५	२।२०।२५	५।२९।३४
२३	१४	४। ६।२२	९।१०।४४	३।२२।२१	३।२१।४४	१।२८।५९	२।२८।३२	६। ०।१०
३०	भाद. कृ. ६	४।१३। ७	०।२४।३६	३।२६।४९	४। ४।५५	१।२९।५९	३। ६।४४	६। ०।४९
सितं. ६	१३	४।१९।५४	३।२४।२६	४। १।१६	४।१८।३५	२। ०।५३	३।१५। १	६। १।२९
१३	शु. ५	४।२६।४२	६।१७।४५	४। ५।४३	५। १।३८	२। १।३८	३।२३।२२	६। २।१२
२०	१२	५। ३।२२	९।१८।५८	४।१०। ८	५।१३।४९	२। २।१६	४। १।४७	६। २।५८

प्रत्येक रविवार के दृक्पक्षीय स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः ५ घं. ३० मि.) भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम

(१ जन. १९५४ ई. को अयनांश २३°१२'५२")

ता. १९५४ई.-५५ई.	तिथि २०११-१२वि	सूर्य रा. अं. क.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अं. क.	शनि रा. अं. क.
सितं. २७	आश्वि. कृ. ५	५।१०।२३	१। ३।५०	४।१४।३२	५।२५।१०	२। २।४४	४।१०।१६	६। ३।४६
अक्तू. ४	१२	५।१७।१६	४। ३।३०	४।१८।५७	६। ५।४७	२। ३। ४	४।१८।४९	६। ४।३६
११	शु. ३	५।२४।११	६।२६।५८	४।२३।२१	६।१५।३९	२। ३।१४	४।२७।२४	६। ५।२६
१८	११	६। १। ७	९।२७।५३	४।२७।४३	६।२४।३८	२। ३।१४	५। ६। १	६। ६।१५
२५	कार्ति. कृ. ३	६। ८। ५	१।१२।११	५। २। ५	७। २।११	२। ३। ६	५।१४।४१	६। ७। ५
नवं. १	१०	६।१५। ४	४।१२।१३	५। ६।२७	७। ६।५६	२। २।४७	५।२३।२२	६। ७।५५
८	शु. २	६।२२। ५	७। ६।१४	५।१०।४८	७। ६।१२	२। २।२०	६। २। ७	६। ८।४६
१५	९	६।२९। ८	१०। ७।४८	५।१५। ८	६।२८।२८	२। १।४४	६।१०।५२	६। ९।३६
२२	मार्ग. कृ. २	७। ६।११	१।२०। ६	५।१९।२६	६।२९।४५	२। ०।५९	६।१९।३९	६।१०।२४
२९	९	७।१३।१६	४।२०।२७	५।२३।४४	६।२३।२५	२। ०। ९	६।२८।२५	६।११।११
दिसं. ६	३०	७।२०।२२	७।१४। ७	५।२८। ०	७। ०।४१	१।२९।१०	७। ७।१३	६।११।५५
१३	शु. ७	७।२७।२९	१०।१८।२२	६। २।१६	७।१०।१०	१।२८।१८	७।१६। १	६।१२।३८
२०	१४	८। ४।३७	१।२८।२०	६। ६।३१	७।२०।२७	१।२७।२१	७।२४।४९	६।१३।१७
२७	पौष कृ. ७	८।११।४६	४।२८।१६	६।१०।४४	८। १। ४	१।२६।२७	८। ३।३७	६।१३।५४
जन. ३	१३	८।१८।५२	७।२३।२२	६।१४।५५	८।११।५६	१।२५।३५	८।१२।२६	६।१४।२६
'५५ई. १०	शु. ६	८।२६। १	१०।२९।२५	६।१९। ४	८।२३। ६	१।२४।५०	८।२१।१४	६।१४।५५
१७	१३	९। ३। ८	२। ७।२१	६।२३।११	९। ४।३५	१।२४।१३	९। ०। २	६।१५।१९
२४	माघ कृ. ५	९।१०।१६	५। ६। ३	६।२७।१५	९।१६।३०	१।२३।४४	९। ८।४९	६।१५।३८
३१	१२	९।१७।२२	८। १। ८	७। १।१६	९।२८।४२	१।२३।२४	९।१७।३७	६।१५।५३
फर. ७	शु. ४	९।२४।२८	११। ९।४२	७। ५।१४	१०।१०।२७	१।२३।१४	९।२६।२६	६।१६। ४
१४	१२	१०। १।३४	२।१७। ७	७। ९। ८	१०।१९।४२	१।२३।१४	१०। ५।१४	६।१६। ७
२१	फाल्गु.कृ. ४	१०। ८।३८	५।१४।१०	७।१२।५७	१०।२२।५३	१।२३।२५	१०।१४। ०	६।१६। ७
२८	१०	१०।१५।४४	८। ८।५८	७।१६।४०	१०।१८।३१	१।२३।४५	१०।२२।४४	६।१६। ४
मार्च ७	शु. ३	१०।२२।४१	११।१८।५८	७।२०।१८	१०।११।३७	१।२४।१३	११। १।२७	६।१५।५३
१४	१०	१०।२९।४१	२।२७। ७	७।२३।४९	१०। ८।३१	१।२४।४९	११।१०।१०	६।१५।३८
२१	चैत्र कृ. २	११। ६।३८	५।२२।४४	७।२७।१२	१०।१०।२३	१।२५।३४	११।१८।५२	६।१५।१९
२८	९	११।१३।३४	८।१७।२२	८। ०।२३	१०।१५।४८	१।२६।२७	११।२७।३३	६।१४।५५
अप्रै. ४	चैत्र शु. १	११।२०।२९	११।२७।२५	८। ३।२३	१०।२३।३६	१।२७।२६	०। ६।१२	६।१४।२९
११	'१२वि. ९	११।२७।२२	३। ६।४५	८। ६। ९	११। ३। ६	१।२८।३१	०।१४।५०	६।१४। ०
१८	१५	०। ४।१३	६। १।३५	८। ८।४१	११।१४। १	१।२९।४१	१।२३।२६	६।१३।३०
२५	वैशा. कृ. ७	०।११। ३	८।२६।३४	८।१०।५३	११।२६।१६	२। ०।५६	१। २। १	६।१२।५८
मई २	३०	०।१७।५१	०। ५।४३	८।१२।४३	०। ९।५३	२। २।१५	१।१०।३४	६।१२।२६
९	शु. ७	०।२४।३८	३।१५।४३	८।१४। ६	०।२४।४२	२। ३।३८	१।१९। ६	६।११।५५
१६	१४	१। १।२३	६।१०।२५	८।१५। ०	१। ९।५१	२। ५। ५	१।२७।३६	६।११।२५
२३	ज्ये. कृ. ५	१। ८। ७	९। ६।२२	८।१५।१८	१।२३।५२	२। ६।३३	२। ६। ४	६।१०।५८
३०	१३	१।१४।५१	०।१४।३३	८।१५। ५	२। ५।४७	२। ८। ४	२।१४।२९	६।१०।३४
जून ६	शु. ६	१।२१।३४	३।२४। २	८।१४।११	२।१५।१२	२। ९।३७	२।२२।५२	६।१०।१२
१३	१२	१।२८।१५	६।१८।५८	८।१२।४४	२।२१।५१	२।११।१०	३। १।११	६। ९।५४
२०	आषा. कृ. ४	२। ४।५६	९।१६।२४	८।१०।५३	२।२५।१६	२।१२।४५	३। ९।३१	६। ९।४०
२७	१२	२।११।३७	०।२४।१५	८। ८।४४	२।२५। ४	२।१४।२०	३।१७।४६	६। ९।३१
जुला. ४	शु. ४	२।१८।१७	४। २। १	८। ६।३७	२।२१।४६	२।१५।५६	३।२५।५७	६। ९।२५
११	११	२।२४।५८	६।२७। ७	८। ४।४४	२।१७।४०	२।१७।३१	४। ४। ४	६। ९।२८
१८	श्राव. कृ. ३	३। १।३८	९।२६।१३	८। ३।२०	२।१६। ७	२।१९। ५	४।१२। ६	६। ९।३३
२५	१०	३। ८।१९	१। ४।४४	८। २।३३	२।१८।५३	२।२०।३९	४।२०। ४	६। ९।४३
अग. १	शु. ३	३।१५। १	४।१०। ६	८। २।२६	२।२६।१४	२।२२।१०	४।२७।५६	६। ९।५८

(१ जन. १९५५ ई. को अयनांश २३°१३'४२")

ता. १९५४ई.-५५ई.	तिथि २०११-१२वि.	सूर्य रा. अं. क.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अं. क.	शनि रा. अं. क.
अग. ८	श्राव. शु. ९	३।२१।४३	७। ५। २	८। ३। ०	३। ७।३१	२।२३।४१	५। ५।४२	६।१०।१६
१५	भाद्र. कृ. १	३।२८।२६	१०। ५।२८	८। ४।१४	३।२१।१२	२।२५। ९	५।१३।१६	६।१०।४०
२२	९	४। ५।१०	१।१५।३६	८। ६। १	४। ५।२२	२।२६।३४	५।२०।४१	६।११। ९
२९	शु. १	४।११।५६	४।१८।३४	८। ८।१९	४।१८।४८	२।२७।५५	५।२७।५५	६।११।४०
सितं. ५	८	४।१८।४२	७।१२।५९	८।११। ४	५। १।१३	२।२९।१२	६। ४।५१	६।१२।१४
१२	१५	४।२५।३०	१०।१४। ०	८।१४।११	५।१२।४०	३। ०।२५	६।११।२९	६।१२।५३
१९	आश्वि.कृ. ७	५। २।१९	१।२६।१९	८।१७।३९	५।२३।१२	३। १।३४	६।१७।४४	६।१३।३३
२६	३०	५। ९।१०	४।२७।३०	८।२१।२४	६। २।४८	३। २।३९	६।२३।२७	६।१४।१६
अक्तू. ३	शु. ५	५।१६। ३	७।२१।१६	८।२५।२३	६।११।१५	३। ३।३६	६।२८।३१	६।१५। २
१०	१३	५।२२।५७	१०।२२। ६	८।२९।३५	६।१७।५६	३। ४।२९	७। २।३५	६।१५।४९
१७	कार्ति. कृ. ६	५।२९।५३	२। ६।१८	९। ३।५५	६।२१।२८	३। ५।१२	७। ५।२७	६।१६।३७
२४	१३	६। ६।५१	५। ६।४२	९। ८।२४	६।१९।१९	३। ५।४८	७। ६।५१	६।१७।२७
३१	शु. ५	६।१३।५०	८। ०। २	९।१३। २	६।११।१८	३। ६।१६	७। ६।१८	६।१८।१७
नवं. ७	१२	६।२०।५१	११। ०।२०	९।१७।४४	६। ५।४७	३। ६।३५	७। ३।५२	६।१९। ८
१४	मार्ग. कृ. ४	६।२७।५३	२।१५।१४	९।२२।३२	६। ८।४५	३। ६।४४	७। ०। ०	६।१९।५८
२१	११	७। ४।५६	५।१५।५०	९।२७।२५	६।१६।५९	३। ६।४३	६।२५।५२	६।२०।४७
२८	शु. ३	७।१२। १	८। ९। ७	१०। २।१९	६।२७।१०	३। ६।३२	६।२२।४४	६।२१।३६
दिसं. ५	१०	७।१९। ७	११। ९।२४	१०। ७।१७	७। ७।५४	३। ६।१२	६।२१।२९	६।२२।२४
१२	पौष कृ. ३	७।२६।१३	२।२३।१५	१०।१२।१६	७।१८।४६	३। ५।४३	६।२२।११	६।२३।१०
१९	१०	८। ३।२०	५।२४।३१	१०।१७।१६	७।२९।४३	३। ५। ४	६।२४।३७	६।२३।५३
२६	शु. १	८।१०।२८	८।१८। ८	१०।२२।१७	८।१०।४५	३। ४।१९	६।२८।२७	६।२४।३४
जन. २	८	८।१७।३६	११।१९।३०	१०।२७।१९	८।२२। २	३। ३।३१	७। ३।२२	६।२५।१३
'५५ई. ९	माघ कृ. १	८।२४।४४	३। १। १	११। २।२१	९। ३।३२	३। २।३६	७। ९। ५	६।२५।४९
१६	८	९। १।५२	६। २।४१	११। ७।२२	९।१५। ९	३। १।४०	७।१५।२४	६।२६।२०
२३	३०	९। ९। ०	८।२६।४७	११।१२।२३	९।२६। ८	३। ०।४४	७।२२।१२	६।२६।४८
३०	शु. ७	९।१६। ७	०। ०।१८	११।१७।२३	१०। ४।२३	२।२९।५०	७।२९।१९	६।२७।११
फर. ६	१४	९।२३।१३	३। ९।२६	११।२२।२२	१०। ६। १	२।२९। ०	८। ६।४४	६।२७।३०
१३	फाल्गु.कृ. ६	१०। ०।१८	६।१०।२९	११।२७।१९	९।२९।५१	२।२८।१६	८।१४।२२	६।२७।४५
२०	१३	१०। ७।२२	९। ४।५४	०। २।१६	९।२२।५४	२।२७।३८	८।२२। ८	६।२७।५४
२७	शु. ५	१०।१४।२५	०।११। ५	०। ७।११	९।२१।१७	२।२७।११	९। ०। ५	६।२७।५९
मार्च ६	१३	१०।२१।२६	३।१८।४८	०।१२। ५	९।२४।३७	२।२६।५२	९। ८। ७	६।२७।५८
१३	चैत्र कृ. ५	१०।२८।२६	६।१८।२०	०।१६।५७	१०। १। ५	२।२६।४२	९।१६।१४	६।२७।५२
२०	११	११। ५।२४	९।१२।४४	०।२१।४७	१०। ९।३२	२।२६।४१	९।२४।२६	६।२७।४१
२७	चैत्र शु. ४	११।१२।२१	०।२९। ९	०।२६।३६	१०।१९।२५	२।२६।५०	१०। २।४०	६।२७।२६
अप्रै. ३	'१२वि. ११	११।१९।१६	३।२८।५१	१। १।२३	११। ०।३०	२।२७। ८	१०।१०।५८	६।२७। ६
१०	वैशा. कृ. ३	११।२६। ९	६।२६।३३	१। ६। ८	११।१२।४६	२।२७।३५	१०।१९।१८	६।२६।४३
१७	१०	०। ३। ०	९।२०।४५	१।१०।५२	११।२६।१३	२।२८।११	१०।२७।३९	६।२६।१६
२४	शु. २	०। ९।५१	१। ०।१७	१।१५।३४	०।१०।४७	२।२८।५३	११। ६। २	६।२५।४७
मई १	१०	०।१६।३९	४। ८।५९	१।२०।१५	०।२५।४२	२।२९।४३	११।१४।२६	६।२५।१७
८	ज्ये. कृ. २	०।२३।२६	७। ५। ९	१।२४।५४	१। ९।२९	३। ०।३८	११।२२।५१	६।२४।४६
१५	८	१। ०।११	९।२९।२१	१।२९।३२	१।२०।५२	३। १।४१	०। १।१७	६।२४।१४
२२	शु. १	१। ६।५६	१। ८।४३	२। ४। ९	१।२९।१५	३। २।४८	०। ९।४४	६।२३।४३
२९	८	१।१३।३९	४।१८।४१	२। ८।४४	२। ४।१६	३। ४। ०	०।१८।१२	६।२३।१३
जून ५	१५	१।२०।२२	७।१३।५८	२।१३।१८	२। ५।३५	३। ५।१६	०।२६।४०	६।२२।४६
१२	आषा. कृ. ७	१।२७। ३	१०। ८।३८	२।१७।५१	२। ३।२७	३। ६।३६	१। ५। ९	६।२२।२१

प्रत्येक रविवार के दृक्पक्षीय स्पष्ट निरयण ग्रह [प्रातः ५ घं. ३० मि., भारतीय स्टॅण्डर्ड टाईम]

(१ जन. १९५९ ई. को अयनांश २३°१७'१३")

ता. १९५८/५९ ई.	तिथि २०१५/१६ वि.	सूर्य रा. अं. क.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अं. क.	शनि रा. अं. क.
नवं. ३०	मार्ग. कृ. ४	७।१४। १	२।२४।३८	०।२६। ७	८। २।२६	६।२४।१८	७।१८।३५	८। २।२७
दिस. ७	११	७।२१। ६	५।२९।४५	०।२४।३२	७।२८।२६	६।२५।४६	७।२७।२३	८। ३।१६
१४	शु. ४	७।२८।१४	९।११।२९	०।२३।३५	७।१९।२५	६।२७।१३	८। ६।१०	८। ४। ५
२१	११	८। ५।२१	०। ७।५४	०।२३।२०	७।१६।१३	६।२८।३७	८।१४।५८	८। ४।५५
२८	पौष कृ. २	८।१२।२९	३। ४।१५	०।२३।४२	७।२०।१४	६।२९।५८	८।२३।४६	८। ५।५५
जन. ४	१०	८।१९।३७	६। ९।५२	०।२४।४०	७।२७।५५	७। १।१६	९। २।३३	८। ६।३४
'५९ई. ११	शु. २	८।२६।४५	९।१९।१९	०।२६। ७	८। ७। ९	७। २।२९	९।११।२०	८। ७।२२
१८	९	९। ३।५३	०।१५।४८	०।२८। १	८।१७।१३	७। ३।३७	९।२०। ६	८। ८। ९
२५	माघ कृ. १	९।११। ०	३।१३।१८	१। ०।१६	८।२७।४९	७। ४।४०	९।२८।५२	८। ८।५४
फर. १	८	९।१८। ७	६।२०।४७	१। २।४९	९। ८।५५	७। ५।३७	१०। ७।३७	८। ९।३८
८	शु. १	९।२५।१३	९।२७।३४	१। ५।३९	९।२०।३७	७। ६।२७	१०।१६।२०	८।१०।१९
१५	७	१०। २।१८	०।२३।३४	१। ८।४१	१०। २।५७	७। ७।११	१०।२५। २	८।१०।५८
२२	१४	१०। ९।२१	३।२१।३७	१।११।५४	१०।१५।५२	७। ७।४६	११। ३।४२	८।११।३३
मार्च १	फाल्गु. कृ. ७	१०।१६।२३	७। १।४१	१।१५।१७	१०।२८।५५	७। ८।१३	११।१२।२१	८।१२। ४
८	१४	१०।२३।२४	१०। ६।३१	१।१८।४७	११।१०।३७	७। ८।३२	११।२०।५८	८।१२।३३
१५	शु. ६	११। ०।२४	११। १।३४	१।२२।२४	११।१८।१२	७। ८।४१	११।२९।३१	८।१२।५६
२२	१३	११। ७।२१	३।२९।३०	१।२६। ६	११।१९।२७	७। ८।४२	०। ८। ३	८।१३।१५
२९	चैत्र कृ. ५	११।१४।१७	७।११।५३	१।२९।५३	११।१५। ४	७। ८।३४	०।१६।३१	८।१३।३१
अप्रै. ५	१३	११।२१।१२	१०।१५।५७	२। ३।४४	११। ९।३७	७। ८।१६	०।२४।५७	८।१३।४१
१२	चैत्र शु. ४	११।२८। ५	१। ९।५९	२। ७।३८	११। ७।२२	७। ७।५०	१। ३।१९	८।१३।४७
१९	'१६वि. ११	०। ४।५६	४। ७।३७	२।११।३४	११। ९।२२	७। ७।१५	१।११।३६	८।१३।४७
२६	वैशा. कृ. ४	०।११।४५	७।२१। ७	२।१५।३६	११।१४।४२	७। ६।३४	१।१९।५०	८।१३।४३
मई ३	११	०।१८।३३	१०।२५।२६	२।१९।३८	११।२२।३२	७। ५।४८	१।२७।५७	८।१३।३४
१०	शु. ३	०।२५।२०	१।१८।४९	२।२३।४२	०। २।१९	७। ४।५८	२। ५।५९	८।१३।२१
१७	९	१। २। ६	४।१६।२७	२।२७।४८	०।१३।४७	७। ४। ५	२।१३।५५	८।१३। ४
२४	ज्ये. कृ. २	१। ८।५०	७।२९।३७	३। १।५६	०।२६।५८	७। ३।१२	२।२१।४१	८।१२।४३
३१	९	१।१५।३३	११। ४।३३	३। ६। ५	१।११।३८	७। २।१९	२।२९।२०	८।१२।१९
जून ७	शु. १	१।२२।१५	१।२७।४९	३।१०।१६	१।२६।५९	७। १।३०	३। ६।४७	८।११।५२
१४	८	१।२८।५७	४।२६। ७	३।१४।२९	२।११।३९	७। ०।४६	३।१४। १	८।११।२२
२१	आषा. कृ. १	२। ५।३७	८। ७।५७	३।१८।४१	२।२४।३८	७। ०। ६	३।२०।५८	८।१०।५१
२८	८	२।१२।१८	११।१३। ८	३।२२।५६	३। ५।४५	६।२९।३५	३।२७।३६	८।१०।२०
जुला. ५	३०	२।१८।५८	२। ६।४२	३।२७।१२	३।१४।५०	६।२९।१२	४। ३।४८	८। ९।४९
१२	शु. ७	२।२५।३९	५। ६।२८	४। १।३०	३।२१।३६	६।२८।५७	४। ९।२८	८। ९।२०
१९	१४	३। २।१९	८।१६।४२	४। ५।४९	३।२५।२९	६।२८।५१	४।१४।२७	८। ८।५२
२६	श्राव. कृ. ६	३। ९। ०	११।२९।१५	४।१०। ९	३।२५।४०	६।२८।५३	४।१८।३०	८। ८।२६
अग. २	१३	३।१५।४२	२।१५।१२	४।१४।३१	३।२२। ५	६।२९। ५	४।२१।२२	८। ८। ३
९	शु. ५	३।२२।२४	५।१७। ३	४।१८।५५	३।१६।५४	६।२९।२६	४।२२।४५	८। ७।४४
१६	१३	३।२९। ७	८।२६।१०	४।२३।२१	३।१४।२४	६।२९।५५	४।२२।२०	८। ७।३०
२३	भाद्र. कृ. ५	४। ५।५१	११।२९। ८	४।२७।४८	३।१७।२८	७। ०।३१	४।२०। ०	८। ७।१९
३०	११	४।१२।३७	२।२३।१९	५। २।१६	३।२६। ९	७। १।१४	४।१६।११	८। ७।१२
सित. ६	शु. ४	४।१९।२३	५।२७।१८	५। ६।४६	४। ८।२४	७। २। ६	४।११।५५	८। ७।१०
१३	११	४।२६।११	९। ६।१८	५।११।१८	४।२१।४७	७। ३। ३	४। ८।२८	८। ७।१३
२०	आश्विन, कृ. ३	५। ३। १	०। ७। ७	५।१५।५१	५। ४।४९	७। ४। ६	४। ६।४४	८। ७।२२
२७	१०	५। ९।५२	३। ९।१२	५।२०।२७	५।१७। ७	७। ५।१४	४। ६।५७	८। ७।३५
अक्तू. ४	शु. २	५।१६।४५	६। ६।४७	५।२५। ५	५।२८।३८	७। ६।२६	४। ८।५४	८। ७।५२

(१ जन. १९६० ई. को अयनांश २३°१७'५३")

ता. १९५९/६० ई.	तिथि २०१६/१७ वि.	सूर्य रा. अं. क.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अं. क.	शनि रा. अं. क.
अक्तू. ११	आ. शु. १०	५।२३।३९	९।१६।४६	५।२९।४४	६। ९।३०	७। ७।४४	४।१३।२०	८। ८।१४
१८	कार्ति. कृ. २	६। ०।३५	०।१५।२८	६। ४।२६	६।१९।४६	७। ९। ५	४।१६।५२	८। ८।३९
२५	८	६। ७।३३	३। ९।१६	६। ९।१०	६।२९।१७	७।१०।२९	४।२२।१७	८। ९। ९
नवं. १	शु. १	६।१४।३२	६।१५।१८	६।१३।५६	७। ७।४९	७।११।५७	४।२८।२३	८। ९।४२
८	८	६।२१।३३	९।२७। २	६।१८।४४	७।१४।१६	७।१३।२६	५। ५। ०	८।१०।१८
१५	१५	६।२८।३५	०।२४।११	६।२३।३४	७।१६।३२	७।१४।५७	५।१२। ०	८।१०।५७
२२	मार्ग. कृ. ७	७। ५।३९	३।१७।५३	६।२८।२६	७।११।२३	७।१६।३१	५।१९।२२	८।११।३९
२९	१४	७।१२।४४	६।२३।१७	७। ३।२१	७। २।४०	७।१८। ४	५।२६।५९	८।१२।२४
दिस. ६	शु. ७	७।१९।५०	१०। ६।३४	७। ८।१९	७। ०।४७	७।१९।३८	६। ४।४९	८।१३।१०
१३	१४	७।२६।५७	१। ३। ४	७।१३।१८	७। ६। १	७।२१।१४	६।१२।४७	८।१३।५७
२०	पौष कृ. ५	८। ४। ४	३।२७। ८	७।१८।१९	७।१४।३२	७।२२।४८	६।२०।५५	८।१४।४६
२७	१२	८।११।१२	७। १।३४	७।२३।२३	७।२४।२०	७।२४।२२	६।२९। ९	८।१५।३५
जन. ३	शु. ५	८।१८।२०	१०।१५। ७	७।२८।२९	८। ४।४१	७।२५।५४	७। ७।२९	८।१६।२५
'६०ई. १०	१२	८।२५।२८	१।११।४७	८। ३।३७	८।१५।२४	७।२७।२४	७।१५।५४	८।१७।१४
१७	माघ कृ. ३	९। २।३६	४। ६।४१	८। ८।४७	८।२६।२९	७।२८।५२	७।२४।२०	८।१८। ३
२४	११	९। ९।४३	७।१०।५५	८।१४। ०	९। ७।५८	८। ०।१७	८। २।५०	८।१८।५२
३१	शु. ३	९।१६।५१	१०।२२।५७	८।१९।१४	९।१९।५७	८। १।३९	८।११।२२	८।१९।३८
फर. ७	१०	९।२३।५७	१।२०। ५	८।२४।२९	१०। २।२२	८। २।५७	८।१९।५५	८।२०।२३
१४	फाल्गु. कृ. २	१०। १। १	४।१६। ३	८।२९।४६	१०।१४।४८	८। ४।११	८।२८।३०	८।२१। ६
२१	९	१०। ८। ५	७।२१।२३	९। ५। ५	१०।२५।४३	८। ५।२०	९। ७। ५	८।२१।४७
२८	शु. २	१०।१५। ८	११। ०।४७	९।१०।२५	११। २। २	८। ६।२२	९।१५।४२	८।२२।२४
मार्च ६	९	१०।२२। ९	१।२८। ०	९।१५।४६	११। १। ९	८। ७।१८	९।२५।१८	८।२२।५८
१३	१५	१०।२९। ९	४।२४।४९	९।२१। ८	१०।२[illegible]।५९	८। ८। ८	१०। २।५५	८।२३।३९
२०	चैत्र कृ. ८	११। ६। ७	८। २।२६	९।२६।३१	१०।१९।४५	८। ८।५१	१०।११।३२	८।२३।५७
२७	३०	११।१३। ३	११। ९।१२	१०। १।५८	१०।१९। ९	८। ९।२६	१०।२०।१०	८।२४।२०
अप्रै. ३	चैत्र शु. ७	११।१९।५८	२। ५।५१	१०। ७।१७	१०।२२।४५	८। ९।५२	१०।२८।४७	८।२४।३९
१०	'१७वि. १४	११।२६।५१	५। २।५९	१०।१२।४१	१०।२९।१८	८।१०।११	११। ७।२५	८।२४।५४
१७	वैशा. कृ. ६	०। ३।४२	८।१३।१९	१०।१८। ४	११। ७।५६	८।१०।१९	११।१६। २	८।२५। ४
२४	१४	०।१०।३२	११।१८।२०	१०।२३।२८	११।१८।१२	८।१०।१८	११।२४।३८	८।२५। ८
मई १	शु. ५	०।१७।२०	२।१३।५७	१०।२८।५०	११।२९।५७	८।१०। ९	०। ३।१५	८।२५। ८
८	१२	०।२४। ७	५।१०।५७	११। ४।१२	०।१३। ८	८। ९।४९	०।११।५१	८।२५। ३
१५	ज्ये. कृ. ५	१। ०।५३	८।२३।३०	११। ९।३२	०।२७।४२	८। ९।२२	०।२०।२६	८।२४।५४
२२	१२	१। ७।३७	११।२७।५४	११।१४।५१	१।१२।५८	८। ८।४७	०।२९। ३	८।२४।४०
२९	शु. ४	१।१४।२०	२।२२।२८	११।२०। ७	१।२७।३६	८। ८। ६	१। ७।३८	८।२४।२२
जून ५	११	१।२१। ३	५।१९।१२	११।२५।२२	२। ०।२६	८। ७।२०	१।१६।१४	८।२४। ०
१२	आषा. कृ. ३	१।२७।४४	९। २।४५	०। ०।३४	२।२१। ४	८। ६।२९	१।२४।५०	८।२३।३५
१९	११	२। ४।२५	०। ७।२८	०। ५।४३	२।२९।१८	८। ५।३६	२। ३।२६	८।२३। ८
२६	शु. २	२।११। ५	३। १।२१	०।१०।४८	३। ४।५८	८। ४।४२	२।१२। २	८।२२।४०
जुला. ३	९	२।१७।४६	५।२८। ८	०।१५।५०	३। ६।५७	८। ३।५०	२।२०।३७	८।२२। ९
१०	श्राव. कृ. २	२।२४।२७	९।११।१८	०।२०।४९	३। ५।२४	८। ३। ३	२।२९।१४	८।२१।३८
१७	९	३। १। ७	०।१६।३९	०।२५।४२	३। १। ९	८। २।१८	३। ७।५१	८।२१। ८
२४	शु. १	३। ७।४८	३।१०।२०	१। ०।३२	२।२७।२०	८। १।४०	३।१६।२८	८।२०।३[illegible]
३१	८	३।१४।३०	६। ७।५३	१। ५।१६	२।२७।१२	८। १।१०	३।२५। ५	८।२०।१०
अग. ७	१५	३।२१।१२	९।१९।३८	१। ९।५४	३। २। ७	८। ०।४८	४। ३।४२	८।१९।४६
१४	भाद्र. कृ. ८	३।२७।५५	०।२५।१६	१।१४।२६	३।११।४३	८। ०।३४	४।१२।२०	८।१९।२३

प्रत्येक रविवार के दृक्पक्षीय स्पष्ट निरयण ग्रह [प्रातः ५ घं. ३० मि., भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम]

(१ जन. १९६८ ई. को अयनांश २३°।२४'।४१")

ता. १९६८-६९ ई.	तिथि सं. २०२५-२६ वि.	सूर्य रा. अं. क.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अं. क.	शनि रा. अं. क.
जुला. १६	आषा.शु. ९	२।२९।२४	६।१६।५९	६। ४।५४	२।१९।५३	३।१६।५६	४।११।४०	११।१८।४९
'६८ई. २३	श्राव.कृ. २	३। ६। ५	९।२२।५९	६। ८। ४	२।१९।१२	३।१८।२७	४।१५।५२	११।१९। ३
३०	८	३।१२।४६	०।१८। ७	६।११।३४	२।२३। ४	३।१९।५९	४।१८।५०	११।१९। २
अग. ६	३०	३।१९।२७	३।१७।५९	६।१५।१९	३। १।४४	३।२१।३१	४।२०।१९	११।१८।५७
१३	शु. ८	३।२६।१०	६।२७।५६	६।१९।१६	३।१४। ९	३।२३। ४	४।२०। ७	११।१८।४६
२०	१५	४। २।५४	१०। १।४२	६।२३।२३	३।२७।५९	३।२४।३५	४।१८। १	११।१८।३३
२७	भाद्र.कृ. ७	४। ९।३९	०।२६। ८	६।२७।३७	४।११।५७	३।२६। ८	४।१४।१६	११।१८।१०
सित. ३	१४	४।१६।२५	३।२६।२५	७। २। १	४।२५। ४	३।२७।३८	४। ९।५७	११।१७।४७
१०	शु. ७	४।२३।१४	७। ८।२९	७। ६।३२	५। ७। ६	३।२९। ७	४। ६।२०	११।१७।२०
१७	१४	५।००।०३	१०।१०।४७	७।११।१०	५।१८।१८	४। ०।३२	४। ४।२६	११।१६।५०
२४	आश्वि.कृ. ५	५। ६।५३	१। ४।२८	७।१५।५५	५।२९।३३	४। १।५८	४। ४।२७	११।१६।१८
अक्तू. १	१२	५।१३।४४	४। ४।४०	७।२०।४६	६। ७।५४	४। ३।२०	४। ६।१८	११।१५।४६
८	शु. ५	५।२०।३६	७।१८।१९	७।२५।४२	६।१५।५४	४। ४।३८	४। ९।३४	११।१५।१४
१५	१२	५।२७।३३	१०।२०। ५	८। ०।४३	६।२१।३०	४। ५।५२	४।१४। २	११।१४।४१
२२	का.कृ. ४	६। ४।३०	१।१३।१५	८। ५।४९	६।२४।१९	४। ७। २	४।१९।२१	११।१४।१०
२९	११	६।११।२८	४।१२।५२	८।१०।५८	६।१९।५०	४। ८। ७	४।२५।२३	११।१३।४१
नव. ५	शु. ४	६।१८।२९	७।२७। ५	८।१६।१०	६।११। ०	४। ९।३१	५। १।५६	११।१३।१९
१२	११	६।२५।३०	१०।२९। ७	८।२१।२६	६। ८। ४	४। ९।५९	५। ८।५४	११।१२।५४
१९	मार्ग.कृ. २	७। २।३४	१।२२।१८	८।२६।४५	६।१३।१४	४।१०।४५	५।१६। ३	११।१२।३६
२६	९	७। ९।३७	४।२१।५६	९। २। ६	६।२२।१४	४।११।२३	५।२३।४९	११।१२।२५
दिस. ३	शु. २	७।१६।४४	८। ५। ७	९। ७।३०	७। २।३७	४।११।५१	६। १।३८	११।१२।१७
१०	९	७।२३।५०	११। ७।४४	९।१२।५६	७।१३।२२	४।१२।१२	६। ९।२६	११।१२।१४
१७	पौष कृ. १	८। ०।५७	२। १।१६	९।१८।२१	७।२४।१४	४।१२।२४	६।१७।४४	११।१२।१७
२४	८	८। ८। ७	५। २।२२	९।२३।४८	८। ५।१२	४।१२।२७	६।२५।५६	११।१२।२६
३१	३०	८।१५। ३	८।१३। ७	९।२९।१६	८।१६।२२	४।१२।२०	७। ४।१६	११।१२।३९
जन. ७	शु. ८	८।२२।२०	११।१५।४५	१०। ४।४४	८।२७।४६	४।१२। १	७।१२।२९	११।१२।५८
'६९ई. १४	१४	८।२९।२८	२। ९।५२	१०।१०।१२	९। ९।२५	४।११।३४	७।२१। ७	११।१३।२२
२१	माघ कृ. ६	९। ६।४६	५।१३। ५	१०।१५।३९	९।२१। ५	४।११। ३	७।२९।३६	११।१३।५०
२८	१४	९।१३।४४	८।२१।५६	१०।२१। ५	१०। १।३५	४।१०।२३	८। ८। ८	११।१४।२२
फर. ४	शु. ६	९।२०।५०	११।२३।३१	१०।२६।३०	१०। ८।२०	४। ९।३३	८।१६।४२	११।१४।५८
११	१२	९।२७।५५	२।१७।५४	११। १।५१	१०। ७।२१	४। ८।४१	८।२५।१८	११।१५।३८
१८	फाल्गु.कृ. ५	१०। ४।५९	५।२३।२०	११। ७।१५	९।२९।५४	४। ७।४८	९। ३।५४	११।१६।२०
२५	१२	१०।१२। ३	९। १।४२	११।१२।३६	९।२४।१८	४। ६।५४	९।१२।२९	११।१७। ६
मार्च ३	शु. ४	१०।१९। ४	०। १।२२	११।१७।५५	९।२४।१९	४। ५।५९	९।२१।१७	११।१७।५३
१०	११	१०।२५। ५	२।२५।२७	११।२३।१२	९।२९।४३	४। ५।१०	९।२९।४४	११।१८।४४
१७	चैत्र कृ. ३	११। ३। ४	६। ३।१२	११।२८।२८	१०। ५।४०	४। ४।२२	१०। ८।३२	११।१९।३६
२४	११	११।१०। २	९।११।५७	०। ३।३९	१०।१४।४५	४। ३।४१	१०।१६।५९	११।२०।२६
३१	चैत्र शु. २	११।१६।५६	०। ९।३६	०। ८।४८	१०।२५। ३	४। ३।१०	१०।२५।३८	११।२१।१८
अप्रै. ७	सं. '२६वि. ९	११।२३।५०	३। ३।४०	०।१३।५६	११। ६।२१	४। २।४६	११। ४।१४	११।२२।११
१४	वैशा.कृ. १	०। ०।४२	६।११।५४	०।१९। १	११।१९।११	४। २।३१	११।१२।५१	११।२३। ४
२१	९	०। ७।३२	९।२२। ९	०।२४। ४	०। ३। ५	४। २।२५	११।२१।२८	११।२३।५६
२८	शु. १	०।१४।२१	०।१८।१६	०।२९। ५	०।१७।५६	४। २।२८	०। ०। ५	११।२४।४८
मई ५	७	०।२१। ९	३।१२।२२	१। ४। [illegible]	१। २।४२	४। २।४१	०। ८।४१	११।२५।३८
१२	१५	०।२७।५५	६।२०। ७	१। ८।५९	१।१५।५०	४। ३। २	०।१७।१७	११।२६।२७
[illegible]	ज्ये.कृ. ७	१। ४।३९	१०। १।४५	१।१३।५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

(१ जन. १९६९ ई. को अयनांश २३°।२५'।३२")

ता. १९६९-७० ई.	तिथि सं. २०२६-२७ वि.	सूर्य रा. अं. क.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अं. क.	शनि रा. अं. क.
मई २६	ज्ये.कृ. १४	१।११।२३	०।२७। ७	१।१८।४३	२। ३।५०	४। ४। ७	१। ४।२९	११।२७।५८
जून २	शु. ६	१।१८। ६	३।२९।४४	१।२३।३३	२। ७।५६	४। ४।५१	१।१३। ५	११।२८।४०
९	१३	१।२४।४८	६।२८।३४	१।२८।१९	२। ८।२०	४। ५।४२	१।२१।४१	११।२९।१९
१६	आषा.कृ. ६	२। १।२९	१०।१०।३७	२। ३। ४	२। ५।३१	४। ६।३८	२। ०।१६	११।२९।५५
२३	१३	२। ८।१०	१। ५।५४	२। ७।४७	२। १।४२	४। ७।४०	२। ८।५२	०। ०।२७
३०	शु. ४	२।१४।५१	४। १।३२	२।१२।२८	१।२९।५०	४। ८।४७	२।१७।२८	०। ०।५४
जुला. ७	१२	२।२१।३१	७। ७।४६	२।१७। ८	२। १।४२	४। ९।५९	२।२६। ५	०। १।१९
१४	श्राव.कृ. ५	२।२८।११	१०।१८।५२	२।२१।४५	२। ७।३६	४।११।१४	३। ४।४१	०। १।३८
२१	११	३। ४।५४	१।१४।१८	२।२६।२१	२।१७।१५	४।१२।३३	३।१३।१८	०। १।५३
२८	शु. ३	३।११।३३	४।११।२१	३। ०।५५	२।२९।५९	४।१३।५५	३।२१।५५	०। २। ३
अग. ४	१०	३।१८।१५	७। ७।५१	३। ५।२८	३।१४।२२	४।१५।१९	४। ०।३२	०। २। ८
११	भाद्र.कृ. ३	३।२४।५८	१०।२६।५४	३।१०। ०	३।२८।४३	४।१६।४६	४। ९। ९	०। २। ७
१८	१०	४। १।४१	१।२२।२८	३।१४।३०	४।१२। ७	४।१८।१४	४।१७।४७	०। २। २
२५	शु. २	४। ८।२६	४।२०।५०	३।१८।५९	४।२४।२२	४।१९।४४	४।२६।२४	०। १।५२
सित. १	९	४।१५।१२	७।२८।४०	३।२३।२७	५। ५।३१	४।२१।१४	५। ५। ०	०। १।३६
८	आश्वि.कृ. २	४।२१।५९	११। ५। ३	३।२७।५३	५।१५।३६	४।२२।४५	५।१३।३७	०। १।१७
१५	८	४।२८।४७	२। ०।२२	४। २।१९	५।२४।३०	४।२४।१६	५।२२।१३	०। ०।५३
२२	३०	५। ५।३७	४।२९।३७	४। ६।४३	६। १।५२	४।२५।४६	६। ०।४९	०। ०।२६
२९	शु. ८	५।१२।२९	८। ९।३३	४।११। ७	६। ६।४६	४।२७।१६	६। ९।२४	११।२९।५६
अक्तू. ६	१५	५।१९।२३	११।१३।४०	४।१५।२९	६। ७।२७	४।२८।४५	६।१७।५९	११।२९।२४
१३	कार्ति.कृ. ७	५।२६।१८	२। ८।२१	४।१९।५०	६। २। ६	५। ०।१२	६।२६।३२	११।२८।५१
२०	१४	६। ३।१४	५। ७।३९	४।२४।१०	५।२६।१५	५। १।३७	७। ५। ५	११।२८।१८
२७	शु. ६	६।१०।१३	८।२०।१७	४।२८।२८	५।२२।४९	५। २।५९	७।१३।३८	११।२७।४५
नव. ३	१४	६।१७।१३	११।२२। ८	५। २।४६	५।२९। २	५। ४।१८	७।२२। ९	११।२७।१४
१०	मार्ग.कृ. ५	६।२४।१४	२।१६।४४	५। ७। २	६। ८।५४	५। ५।३४	८। ०।३८	११।२६।४५
१७	१२	७। १।१७	५।१५।३३	५।११।१७	६।१९।५२	५। ६।४५	८। ९। ६	११।२६।१९
२४	शु. ५	७। ८।२१	८।२९।५४	५।१५।३०	७। ०।५९	५। ७।५२	८।१७।३३	११।२५।५७
दिस. १	१२	७।१५।२७	०। २। ३	५।१९।४१	७।१२। ३	५। ८।५३	८।२५।५६	११।२५।३९
८	पौष कृ. ३	७।२२।३३	२।२५।३३	५।२३।५०	७।२३। २	५। ९।४८	९। ४।१६	११।२५।२६
१५	१०	७।२९।३९	५।२३।५८	५।२७।५७	८। ४। ४	५।१०।३६	९।१२।३३	११।२५।१९
२२	शु. ३	८। ६।४७	९। ८।२३	६। २। १	८।१५।१०	५।११।१७	९।२०।४४	११।२५।१६
२९	१०	८।१३।५५	०।११। ७	६। ६। ३	८।२६।२१	५।११।५०	९।२८।४९	११।२५।१९
जन. ५	माघ कृ. २	८।२१। ३	३। ४।३६	६।१०। १	९। ७।२०	५।१२।१५	१०। ६।४५	११।२५।२८
'६९ई. १२	९	८।२८।११	६। ३।२५	६।१३।५६	९।१६।५८	५।१२।३१	१०।१४।३२	११।२५।४२
१९	शु. २	९। ५।१९	९।१६।२३	६।१७।४७	९।२२।२५	५।१२।३८	१०।२२। ६	११।२६। १
२६	९	९।१२।२६	०।१९।४१	६।२१।३३	९।१९।४४	५।१२।३५	१०।२९।२५	११।२६।२५
फर. २	१५	९।१९।३३	३।१३।२८	६।२५।१३	९।११।३०	५।१२।२३	११। ६।२३	११।२६।५३
९	फाल्गु.कृ. ७	९।२६।३८	६।१३।४८	६।२८।४७	९। ६।५७	५।१२। २	११।१२।५६	११।२७।२५
१६	३०	१०। ३।४३	९।२४।३२	७। २।१४	९। ८।३०	५।११।३२	११।१८।५५	११।२८। २
२३	शु. ७	१०।१०।४७	०।२७।४०	७। ५।३२	९।१४। ३	५।१०।५५	११।२४।१३	११।२८।४२
मार्च २	१३	१०।१७।४९	३।२१।५१	७। ८।४१	९।२१।५५	५।१०।११	११।२८।३४	११।२९।२५
९	चैत्र कृ. ६	१०।२४।४९	६।२४।२७	७।११।३८	१०। १।१६	५। ९।२२	०। १।४२	०। ०।११
१६	१३	११। १।४८	१०। ३।२३	७।१४।२१	१०।११।४४	५। ८।२९	०। ३।१७	०। ०।५९
२३	चैत्र शु. ५	११। ८।४६	१। ५।२८	७।१६।४९	१०।२३।१४	५। ७।३५	०। २।५९	०। १।४८
३०	'२६वि. १२	११।१५।४१	३।२९।४८	७।१८।५८	११। ५।४८	५। ६।४१	०। ०।४२	०। २।४०

(१५४)

प्रत्येक रविवार के दृक्पक्षीय स्पष्ट निरयण ग्रह [प्रातः ५ घं. ३० मि., भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम]

(१ जन. १९७० ई. को अयनांश २३°।२६'।२१")

ता. १९६९ई.	तिथि २०२६वि.	सूर्य रा. अं. क.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अं. क.	शनि रा. अं. क.
अप्रै. ६	वैशा. कृ. ४	११।२२।३५	७। ४।४८	७।२०।४५	११।१९।२६	५। ५।४९	११।२६।५०	०। ३।३३
'६९ई. १३	'२६वि. १२	११।२९।२८	१०।१३।३४	७।२२। ७	०। ३।५७	५। ५। १	११।२२।२९	०। ४।२५
२०	शु. ४	०। ६।१९	१।१३।२६	७।२३। ०	०।१८।२४	५। ४।१९	११।१८।५९	०। ५।१९
२७	१०	०।१३। ८	४। ७।३८	७।२३।२०	१। १। ८	५। ३।४३	११।१७।१३	०। ६।१२
मई ४	ज्ये. कृ. ३	०।१९।५५	७।१४।२४	७।२३। ४	१।१०।४६	५। ३।१४	११।१७।२४	०। ७। ५
११	१०	०।२६।४२	१०।२३।५४	७।२२।११	१।१६।४१	५। २।५४	११।१९।२१	०। ७।५७
१८	शु. २	१। ३।२७	१।२९।५३	७।२०।४३	१।१८।३५	५। २।४३	११।२२।४२	०। ८।४८
२५	८	१।१०।११	४।१५।४७	७।१८।४४	१।१६।४५	५। २।४१	११।२७। ७	०। ९।३८
जून १	प्र.आषा.कृ.१	१।१६।५४	७।२३।१३	७।१६।२७	१।१२।५९	५। २।४७	०। २।२२	०।१०।२५
८	९	१।२३।३६	११। ४। ३	७।१४। ५	१।१०।१५	५। ३। २	०। ८।१४	०।११।११
१५	प्र.आ.शु. १	२। ०।१७	२। ०।४१	७।११।५३	१।१०।४२	५। ३।२६	०।१४।३६	०।११।५३
२२	७	२। ६।५८	४।२४।२९	७।१०। ५	१।१४।४८	५। ३।५१	०।२१।१९	०।१२।३३
२९	१४	२।१३।३९	८। १।३९	७। ८।५२	१।२२।१५	५। ४।३६	०।२७।२०	०।१३।१०
जुला. ६	कृ. ७	२।२०।१९	११।१३।३७	७। ८।१८	२। २।४५	५। ५।२१	१। ५।३६	०।१३।४३
१३	१४	२।२६।५९	२। ९।३९	७। ८।२५	२।१५।५३	५। ६।१४	१।१३। ३	०।१४।१२
२०	आषा. शु. ६	३। ३।४०	५। ३।४७	७। ९।१२	३। ०।३६	५। ७।११	१।२०।४१	०।१४।३७
२७	१३	३।१०।२१	८।१०।१४	७।१०।३६	३।१५।१९	५। ८।१५	१।२८।२६	०।१४।५८
अग. ३	श्राव. कृ. ६	३।१७। ३	११।२२।२५	७।१२।३२	३।२९। ०	५। ९।२३	२। ६।१८	०।१५।१३
१०	१३	३।२३।४५	२।१८।२७	७।१४।५६	४।११।२४	५।१०।३५	२।१४।१८	०।१५।२४
१७	शु. ४	४। ०।२९	५।१३।२९	७।१७।४५	४।२२।३२	५।११।५१	२।२२।२३	०।१५।३०
२४	१२	४। ७।१३	८।१९।३१	७।२०।५६	५। २।२५	५।१३।११	३। ०।३३	०।१५।३०
३१	भाद्र. कृ. ४	४।१३।५९	०। ०।३५	७।२४।२६	५।१०।५१	५।१४।३४	३। ८।४८	०।१५।२६
सितं. ७	११	४।२०।४६	२।२६।५२	७।२८।१२	५।१७।२४	५।१५।५९	३।१७। ७	०।१५।१६
१४	शु. ३	४।२७।३४	५।२३।१२	८। २।११	५।२१।१६	५।१७।२६	३।२५।३१	०।१५। १
२१	१०	५। ४।२४	८।२९।३९	८। ६।२४	५।२०।१८	५।१८।५५	४। ३।५८	०।१४।४२
२८	आश्वि.कृ. ३	५।११।१५	०। ८।३१	८।१०।४७	५।१४।१२	५।२०।२४	४।१२।२९	०।१४।१९
अक्तू. ५	९	५।१८। ८	३। ४।५३	८।१५।१८	५। ७।२७	५।२१।५५	४।२१। २	०।१३।५२
१२	शु. १	५।२५। ३	६। २।२७	८।१९।५८	५। ७।३२	५।२३।२६	४।२९।३९	०।१३।२२
१९	९	६। २। ०	९।१०।२९	८।२४।४५	५।१४।४९	५।२४।५७	५। ८।१८	०।१२।५०
२६	कार्ति. कृ. १	६। ८।५८	०।२६।४२	८।२९।३७	५।२५।३०	५।२६।२८	५।१६।५९	०।१२।१६
नवं. २	८	६।१५।५७	३।१२।४१	९। ४।३४	६। ७। ३	५।२७।५७	५।२५।४२	०।११।४३
९	३०	६।२२।५९	६।१०।५९	९। ९।३६	६।१८।३४	५।२९।२५	६। ४।२७	०।११। ९
१६	शु. ७	७। ०। १	९।२१।२८	९।१४।४१	६।२९।५०	६। ०।५१	६।१३।१२	०।१०।३८
२३	१५	७। ७। ५	०।२५।२८	९।१९।४९	७।१०।५३	६। २।१५	६।२१।५९	०।१०। ८
३०	मार्ग. कृ. ६	७।१४।१०	३।२०।२९	९।२४।५८	७।२१।४७	६। ३।३६	७। ०।४६	०। ९।४२
दिसं. ७	१३	७।२१।१६	६।१८।५४	१०। ०।१०	८। २।३८	६। ४।५४	७। ९।३४	०। ९।१९
१४	शु. ६	७।२८।२३	१०। १।५१	१०। ५।२२	८।१३।२१	६। ६। ७	७।१८।२२	०। ९। १
२१	१३	८। ५।३१	१। ४।४६	१०।१०।३५	८।२३।३८	६। ७।१६	७।२७।१०	०। ८।४८
२८	पौष कृ. ४	८।१२।३८	३।२९। २	१०।१५।४९	९। २।२०	६। ८।१९	८। ५।५९	०। ८।४०
जन. ४	११	८।१९।४६	६।२६।५१	१०।२१। २	९। ६।३३	६। ९।१७	८।१४।४७	०। ८।३७
'७०ई. ११	शु. ४	८।२६।५५	१०।११। ५	१०।२६।१५	९। २।२२	६।१०। ९	८।२३।३६	०। ८।४०
१८	११	९। ४। ३	१।१४।१२	११। १।२७	८।२३।४४	६।१०।५३	९। २।२४	०। ८।४८
२५	माघ कृ. ३	९।११।१०	४। ७।४६	११। ६।३८	८।२०।२६	६।११।३०	९।११।१२	०। ९। २
फर. १	१०	९।१८।१६	७। ५।३२	११।११।४८	८।२३।२४	६।११।५८	९।१९।५९	०। ९।२१
८	शु. ३	९।२५।२२	१०।१९।१८	११।१६।५७	८।२९।५७	६।१२।१८	९।२८।४६	०। ९।४४

ता. १९७०ई.	तिथि २०२६-२७वि.	सूर्य रा. अं. क.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अं. क.	शनि रा. अं. क.
फर. १५	माघ शु. १०	१०। २।२७	९।२३।१९	११।२२। ४	९। ८।२६	६।१२।२९	१०। ७।३३	०।१०।१३
२२	फाल्गु.कृ. १	१०। ९।३१	४।१६।४१	११।२७। ९	९।१८। ७	६।१२।३१	१०।१६।१८	०।१०।४५
मार्च १	८	१०।१६।३३	७।१५।१३	०। २।१२	९।२८।४३	६।१२।२४	१०।२५। ३	०।११।२२
८	शु. १	१०।२३।३४	१०।२७।११	०। ७।१४	१०।१०।११	६।१२। ७	११। ३।४७	०।१२। २
१५	८	११। ०।३३	२।११।५०	०।१२।१४	१०।२२।३४	६।११।४२	११।१२।३०	०।१२।४५
२२	१५	११। ७।३१	४।२५।२२	०।१७।११	११। ५।५४	६।११। ९	११।२१।११	०।१३।३१
२९	चैत्र कृ. ६	११।१४।२७	७।२५।४०	०।२२। ७	११।२०। १	६।१०।२९	११।२९।५२	०।१४।१९
अप्रै. ५	१४	११।२१।२१	१०। ५।३८	०।२७। ०	०। ४। ४	६। ९।४३	०। ८।३०	०।१५। ९
१२	चैत्र शु. ६	११।२८।१४	२। ९।५२	१। १।५२	०।१६।१४	६। ८।५२	०।१७। ८	०।१६। १
१९	'२७वि. १३	०। ५। ५	५। ३।४२	१। ६।४२	०।२४।४७	६। ७।५९	०।२५।४३	०।१६।५४
२६	वैशा. कृ. ५	०।११।५४	८। ६।१८	१।११।३०	०।२८।४६	६। ७। ६	१। ४।१७	०।१७।४७
मई ३	१३	०।१८।४२	११।१५। २	१।१६।१६	०।२८।१०	६। ६।१३	१।१२।५०	०।१८।४१
१०	शु. ५	०।२५।२९	२।१७।४६	१।२१। ०	०।२४।२७	६। ५।२३	१।२१।२०	०।१९।३५
१७	११	१। २।१४	५।११।४१	१।२५।४२	०।२०।४६	६। ४।३८	१।२९।४८	०।२०।२९
२४	ज्ये. कृ. ४	१। ८।५८	८।१६।३५	२। ०।२३	०।१९।५२	६। ३।५९	२। ८।१५	०।२१।२१
३१	११	१।१५।४१	११।२५।१३	२। ५। २	०।२२।३४	६। ३।२६	२।१६।३८	०।२२।१३
जून ७	शु. ३	१।२२।२४	२।२५।५२	२। ९।४०	०।२८।३१	६। ३। २	२।२५। ०	०।२३। ३
१४	१०	१।२९। ५	५।१९।३८	२।१४।१७	१। ७।१३	६। २।४५	३। ३।१९	०।२३।५२
२१	आषा. कृ. २	२। ५।४६	८।२६। ६	२।१८।५२	१।१८।२४	६। २।३८	३।११।३४	०।२४।३८
२८	१०	२।१२।२७	०। ५।४१	२।२३।२६	२। १।४९	६। २।३९	३।१९।४६	०।२५।२२
जुला. ५	शु. २	२।१९। ७	३। ४।२०	२।२७।५८	२।१६।४५	६। २।४९	३।२७।५४	०।२६। ३
१२	८	२।२५।४८	५।२७।५०	३। २।३०	३। १।४५	६। ३। ८	४। ५।५८	०।२६।४१
१९	श्राव. कृ. १	३। २।२८	९। ४।५०	३। ७। १	३।१५।४१	६। ३।३५	४।१३।५६	०।२७।१५
२६	९	३। ९। ९	०।१५।५४	३।११।३१	३।२८।१०	६। ४।१०	४।२१।५०	०।२७।४५
अग. २	३०	३।१५।५१	३।१३। ८	३।१६। ०	४। ९।१३	६। ४।५१	४।२९।३४	०।२८।११
९	शु. ७	३।२२।३३	६। ६।३४	३।२०।२९	४।१८।४७	६। ५।४०	५। ७।११	०।२८।३३
१६	१४	३।२९।१६	९।१३। ७	३।२४।५७	४।२६।३९	६। ६।३५	५।१४।३८	०।२८।५०
२३	भाद्र. कृ. ७	४। ६। ०	०।२५।३०	३।२९।२५	५। २।१५	६। ७।३६	५।२१।५२	०।२९। २
३०	१४	४।१२।४६	३।२२। १	४। ३।५२	५। ४।३३	६। ८।४२	५।२८।५२	०।२९। ९
सितं. ६	शु. ५	४।१९।३३	६।१५।५४	४। ८।२०	५। २।१७	६। ९।५३	६। ५।३३	०।२९।१०
१३	१३	४।२६।२१	९।२१।३४	४।१२।४६	४।२५।५२	६।११। ८	६।११।५१	०।२९। ७
२०	आश्वि.कृ. ६	५। ३।१०	१। ४।१७	४।१७।१३	४।२०।३९	६।१२।२६	६।१७।३७	०।२८।५८
२७	१२	५।१०। १	४। ०।४३	४।२१।४०	४।२२।२०	६।१३।४८	६।२२।४४	०।२८।४४
अक्तू. ४	शु. ४	५।१६।५४	६।२५।३६	४।२६। ६	५। ०।३६	६।१५।१३	६।२६।५८	०।२८।२५
११	११	५।२३।४९	१०। ०।४६	५। ०।३३	५।१२। ३	६।१६।४०	७। ०। ३	०।२८। २
१८	कार्ति. कृ. ४	६। ०।४५	१।१२।२४	५। ४।५९	५।२४।१२	६।१८।१०	७। १।३८	०।२७।३५
२५	११	६। ७।४२	४। ९। १	५। ९।२६	६। ६। ७	६।१९।४०	७। १।२३	०।२७। ६
नवं. १	शु. २	६।१४।४२	७। ५।१५	५।१३।५३	६।१७।३६	६।२१।१२	६।२९।१४	०।२६।३३
८	१०	६।२१।४३	१०।१०।५७	५।१८।१९	६।२८।४३	६।२२।४४	६।२५।३२	०।२६। ०
१५	मार्ग. कृ. २	६।२८।४५	१।२०।२०	५।२२।४६	७। ९।३२	६।२४।१७	६।२१।२०	०।२५।२६
२२	९	७। ५।४९	४।१६।५६	५।२७।१३	७।२०। ६	६।२५।४९	६।१७।५९	०।२४।५२
२९	शु. १	७।१२।५४	७।१४।२०	६। १।४०	८। ०।२२	६।२७।२१	६।१६।२५	०।२४।१९
दिसं. ६	८	७।२०। ०	१०।२९।५१	६। ६। ७	८। ९।५७	६।२८।५१	६।१६।४९	०।२३।४९
१३	पौष कृ. १	७।२७। ६	१।२८।३६	६।१०।३३	८।१७।४०	७। ०।२०	६।१९। १	०।२३।२२
२०	७	८। ४।१४	४।२४।४३	६।१५। ०	८।२०।३५	७। १।४६	६।२२।३९	०।२२।४९

(१३६)

ई. सन्	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१९११	१९१२	१९१३	१९१४	१९१५	१९१६	१९१७	१९१८	१९१९	१९२०	१९२१	१९२२	१९२३	१९२४	१९२५	१९२६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१९	[illegible]	क. २०	क. २३	क. २५	क. २७	मि. ०	मि. २	मि. ४	मि. ६	मि. ९	मि. ११	मि. १३	मि. १५	मि. १८	मि. २०	मि. २२	मि. २४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८	१७	१९	२१	२४	२६	क. २८	०	२	५	७	९	११	१४	१६	१८	२१	२३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१८	१५	१७	१९	२१	२३	२६	२८	०	२	४	७	९	११	१३	१६	१८	२०	२२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१४	१६	१९	२१	२३	२५	२७	२९	१	४	६	८	१०	१३	१५	१७	१९	२१	२४
सित. १	कं. १	३	[illegible]	८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१६	१९	२१	२३	२५	२७	२९	मि. १	४	६	८	१०	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२६
नव. १	१	४	६	८	१०	१३	१५	१७	१९	२१	२४	२६	२८	मि. ०	३	५	७	९	१२	१४	१६	१८	२०	२३	२५	२७

ई. सन्	१९२७	१९२८	१९२९	१९३०	१९३१	१९३२	१९३३	१९३४	१९३५	१९३६	१९३७	१९३८	१९३९	१९४०	१९४१	१९४२	१९४३	१९४४	१९४५	१९४६	१९४७	१९४८	१९४९	१९५०	१९५१	१९५२
जन. १	मि. २[illegible]	मि. २९	क. १	क. ३	क. ६	क. ८	क. १०	क. १२	क. १४	क. १७	क. १९	क. २१	क. २३	क. २५	क. २८	तु. ०	तु. २	तु. ४	तु. ६	तु. ८	तु. १०	तु. १३	तु. १५	तु. १७	तु. १९	तु. २१
मार्च १	२५	२७	०	२	४	६	९	११	१३	१५	१७	२०	२२	२४	२६	क. २९	१	३	५	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०
मई १	२८	२७	मि. २९	१	३	५	७	९	१२	१४	१६	१८	२०	२३	२५	२७	०	२	४	६	८	१०	१२	१५	१६	१९
जुला. १	२६	२५	क. ०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२३	२५	२७	क. २९	१	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८
सित. १	२८	क. ०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२७	२९	तु. १	३	५	७	१०	१२	१४	१६	१८	२०
नव. १	२९	१	३	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२७	२९	तु. १	३	[illegible]	७	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२

ई. सन्	१९५३	१९५४	१९५५	१९५६	१९५७	१९५८	१९५९	१९६०	१९६१	१९६२	१९६३	१९६४	१९६५	१९६६	१९६७	१९६८	१९६९	१९७०	१९७१	१९७२	१९७३	१९७४	१९७५	१९७६	१९७७	१९७८
जन. १	तु. २२	तु. २४	तु. २७	वृ. ०	वृ. २	वृ. ४	वृ. ६	वृ. ८	वृ. १०	वृ. १२	वृ. १४	वृ. १६	वृ. १८	वृ. २०	वृ. २२	वृ. २४	वृ. २६	वृ. २८	ध. ०	ध. २	ध. ५	ध. ७	ध. ९	ध. ११	ध. १३	ध. १५
मार्च १	२३	२५	२७	तु. २९	१	३	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२३	२५	२७	२६	१	४	६	८	१०	१२	१४	१७
मई १	[illegible]	२३	२५	२७	तु. २९	३	४	६	९	११	१३	१५	१७	१९	२२	२४	२६	२८	१	३	५	७	९	१२	१४	१६
जुला. १	२०	२२	२५	२७	२९	१	३	५	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२५	२७	वृ. २९	१	४	६	८	१०	१२	१५
सित. १	२२	२४	२६	२८	वृ. ०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२७	२९	१	३	५	७	१०	१२	१४
नव. १	२४	२६	२८	वृ. ०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	ध. ०	३	५	७	९	११	१३	१५

ई. सन्	१९७९	१९८०	१९८१	१९८२	१९८३	१९८४	१९८५	१९८६	१९८७	१९८८	१९८९	१९९०	१९९१	१९९२	१९९३	१९९४	१९९५	१९९६	१९९७	१९९८	१९९९	२०००	२००१
जन. १	ध. १७	ध. १९	ध. २२	ध. २४	ध. २६	ध. २८	म. ०	म. २	म. ४	म. ६	म. ८	म. १०	म. १३	म. १५	म. १७	म. १९	म. २१	म. २३	म. २५	म. २७	म. २९	कु. २	कु. ४
मार्च १	१९	२१	२३	२५	२७	म. ०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१७	१९	२१	२३	२५	२७	२९	कु. २	४	६
मई १	१८	२१	२३	२५	२७	०	२	४	६	८	११	१३	१५	१७	१९	२२	२४	२६	२८	कु. ०	२	५	७
जुला. १	१७	१९	२१	२४	२६	ध. २८	०	[illegible]	५	७	९	१२	१४	१६	१८	२१	२३	२५	२७	०	२	४	६
सित. १	१५	१८	२१	२३	२५	२७	ध. २९	२	४	६	८	१०	१२	१५	१७	१९	२१	२४	२६	म. २८	कु. ०	३	५
नव. १	१७	१९	२१	२४	२६	२८	म. ०	२	४	६	८	११	१३	१५	१७	१९	२१	२४	२६	२८	०	२	४

नोट– ऊपर दी गई सारिणीयों से अभीष्ट वर्ष-मास-तारीख को अनुपात से स्वल्पान्तरेण नेपच्यून के स्पष्ट सायन राशि अंश ज्ञात हो जाते हैं। इसमें से इस पञ्चाङ्ग में दी गई सारिणी द्वारा साधित अयनांश के अंश घटा देने से निरयण भोगांश ज्ञात हो जाता है। स्थूल रूप से मध्यमगति अनुसार नेपच्यून के राशि-अंश जानने की विधि यह है. अभीष्ट ईस्वी वर्ष में से १८६१ घटाएं। शेष को १४ से भाग दें। लब्धि भोगांश की राशि आएगी। शेष को दो से गुणा करने पर अंश प्राप्त होंगे। उदाहरणार्थ १८९२ में नेपच्यून की स्थिति स्थूल रूप से जाननी हो तो इसमें से १८६१ घटा कर शेष ३१ को १४ से भाग देने पर २ राशि एवं शेष ३ को दुगुना करने पर ६ अंश मिले। अतः सायन भोगांश मिथुन राशि ६ अंश हुआ।

... भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम]

(१ जन. १९७० ई. को अयनांश २३°।२६'।२१")

ता. १९६९ई.	तिथि २०२६वि.	सूर्य रा. अं. क.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अं. क.	शनि रा. अं. क.
[illegible] ६	वैशा. कृ. ४	११।२२।३५	७। ४।४८	७।२०।४५	११।११।२६	५। ५।४९	११।२६।५०	०। ३।३३
'६९ई. १३	'२६वि. १२	११।२९।२८	१०।१३।३४	७।२२। ७	०। ३।५७	५। ५। १	११।२२।२९	०। ४।२५
२०	शु. ४	०। ६।१९	१।१३।२६	७।२३। ०	०।१८।२४	५। ४।१९	११।१८।५९	०। ५।१९
२७	१०	०।१३। ८	४। ७।३८	७।२३।२०	१। १। ८	५। ३।४३	११।१७।१३	०। ६।१२
मई ४	ज्ये. कृ. ३	०।१९।५५	४।१४।२४	७।२३। ४	१।१०।४६	५। ३।१४	११।१७।२४	०। ७। ५
११	१०	०।२६।४२	१०।२३।५४	७।२२।११	१।१६।४१	५। २।५४	११।१९।२१	०। ७।५७
१८	शु. २	१। ३।२७	१।२९।५३	७।२०।४३	१।१८।३५	५। २।४३	११।२२।४२	०। ८।४८
२५	८	१।१०।११	४।१५।४७	७।१८।४४	१।१६।४५	५। २।४१	११।२७। ७	०। ९।३८
जून १	प्र.आषा.कृ. १	१।१६।५४	७।२३।१३	७।१६।२७	१।१३।५९	५। २।४७	०। २।२२	०।१०।२५
८	९	१।२३।३६	११। ४। ३	७।१४। ५	१।१०।१५	५। ३। २	०। ८।१४	०।११।११
१५	द्वि.आ.शु. १	२। ०।१७	२। ०।४१	७।११।५३	१।१०।४२	५। ३।२६	०।१४।३६	०।११।५३
२२	७	२। ६।५८	४।२४।२९	७।१०। ५	१।१४।४८	५। ३।५१	०।२१।१९	०।१२।३३
२९	१४	२।१३।३९	८। १।३९	७। ८।५२	१।२२।१५	५। ४।३६	०।२७।२०	०।१३।१०
जुला. ६	कृ. ७	२।२०।१९	११।१३।३७	७। ८।१८	२। २।४५	५। ५।२१	१। ५।३६	०।१३।४३
१३	१४	२।२६।५९	२। ९।२९	७। ८।२५	२।१५।५३	५। ६।१४	१।१३। ३	०।१४।१२
२०	आषा. शु. ६	३। ३।४०	५। ३।४७	७। ९।१२	३। ०।३६	५। ७।११	१।२०।४१	०।१४।३७
२७	१३	३।१०।२१	८।१०।१४	७।१०।३६	३।१५।१९	५। ८।१५	१।२८।२६	०।१४।५८
अग. ३	श्राव. कृ. ६	३।१७। ३	११।२२।२५	७।१२।३२	३।२९। ०	५। ९।२३	२। ६।१८	०।१५।१३
१०	१३	३।२३।४५	२।१८।२७	७।१४।५६	४।११।२४	५।१०।३५	२।१४।१८	०।१५।२४
१७	शु. ४	४। ०।२९	५।१३।२९	७।१७।४५	४।२२।३२	५।११।५१	२।२२।२३	०।१५।३०
२४	१२	४। ७।१३	८।१९।३१	७।२०।५६	५। २।२५	५।१३।११	३। ०।३३	०।१५।३०
३१	भाद्र. कृ. ४	४।१३।५९	०। ०।३५	७।२४।२६	५।१०।५१	५।१४।३४	३। ८।४८	०।१५।२६
सितं. ७	११	४।२०।४६	२।२६।५२	७।२८।१२	५।१७।२४	५।१५।५९	३।१७। ७	०।१५।१६
१४	शु. ३	४।२७।३४	५।२३।१२	८। २।११	५।२१।१६	५।१७।२६	३।२५।३१	०।१५। १
२१	१०	५। ४।२४	८।२९।३९	८। ६।२४	५।२०।१८	५।१८।५५	४। ३।५८	०।१४।४२
२८	आश्वि.कृ. ३	५।११।१५	०। ८।३१	८।१०।४७	५।१४।१२	५।२०।२४	४।१२।२९	०।१४।१९
अक्तू. ५	९	५।१८। ८	३। ४।५३	८।१५।१८	५। ७।२७	५।२१।५५	४।२१। २	०।१३।५२
१२	शु. १	५।२५। ३	६। २।२७	८।१९।५८	५। ७।३२	५।२३।२६	४।२९।३९	०।१३।२२
१९	९	६। २। ०	९।१०।२९	८।२४।४५	५।१४।४९	५।२४।५७	५। ८।१८	०।१२।५०
२६	कार्ति. कृ. १	६। ८।५८	०।१६।४२	८।२९।३७	५।२५।३०	५।२६।२८	५।१६।५९	०।१२।१६
नवं. २	८	६।१५।५७	३।१२।४१	९। ४।३४	६। ७। ३	५।२७।५७	५।२५।४२	०।११।४३
९	३०	६।२२।५९	६।१०।५९	९। ९।३६	६।१८।३४	५।२९।२५	६। ४।२७	०।११। ९
१६	शु. ७	७। ०। १	९।२९।२८	९।१४।४१	६।२९।५०	६। ०।५१	६।१३।१२	०।१०।३८
२३	१५	७। ७। ५	०।२५।२८	९।१९।४९	७।१०।५३	६। २।१५	६।२१।५९	०।१०। ८
३०	मार्ग. कृ. ६	७।१४।१०	३।२०।३९	९।२४।५८	७।२१।४७	६। ३।३६	७। ०।४६	०। ९।४२
दिसं. ७	१३	७।२१।१६	६।१८।५४	१०। ०।१०	८। २।३८	६। ४।५४	७। ९।३४	०। ९।१९
१४	शु. ६	७।२८।२३	१०। १।५१	१०। ५।२२	८।१३।२१	६। ६। ७	७।१८।२२	०। ९। १
२१	१३	८। ५।३१	१। ४।४६	१०।१०।३५	८।२३।३८	६। ७।१६	७।२७।१०	०। ८।४८
२८	पौष कृ. ४	८।१२।३८	३।२९। २	१०।१५।४९	९। २।२०	६। ८।१९	८। ५।५३	०। ८।४०
जन. ४	११	८।१९।४६	६।२६।५१	१०।२१। २	९। ६।२३	६। ९।१७	८।१४।४७	०। ८।३७
'७०ई. ११	शु. ४	८।२६।५५	१०।११। ५	१०।२६।१५	९। २।२२	६।१०। ९	८।२३।३६	०। ८।४०
१८	११	९। ४। ३	१।१४।१२	११। १।२७	८।२३।४४	६।१०।५३	९। २।२४	०। ८।४८
२५	माघ कृ. ३	९।११।१०	४। ७।४६	११। ६।३८	८।२०।२६	६।११।३०	९।११।१२	०। ९। २
फर. १	१०	९।१८।१६	७। ५।३२	११।११।४८	८।२३।२४	६।११।५८	९।१९।५९	०। ९।२१
८	शु. ३	९।२५।२२	१०।१९।१८	११।१६।५७	८।२९।५७	६।१२।१८	९।२८।४६	०। ९।४४

ता. १९७०ई.	तिथि २०२६-२७वि.	सूर्य रा. अं. क.	चन्द्र रा. अं. क.	मंगल रा. अं. क.	बुध रा. अं. क.	गुरु रा. अं. क.	शुक्र रा. अं. क.	शनि रा. अं. क.
फर. १५	माघ शु. १०	१०। २।२७	१।२३।१९	११।२२। ४	९। ८।२६	६।१२।२९	१०। ७।३३	०।१०।१३
२२	फाल्गु.कृ. १	१०। ९।३१	४।१६।४१	११।२७। ९	९।१८। ७	६।१२।३१	१०।१६।१८	०।१०।४५
मार्च १	८	१०।१६।३३	७।१५।१३	०। २।१२	९।२८।४३	६।१२।२४	१०।२५। ३	०।११।२२
८	शु. १	१०।२३।३४	१०।२७।११	०। ७।१४	१०।१०।११	६।१२। ७	११। ३।४७	०।१२। २
१५	८	११। ०।३३	२।११।५०	०।१२।१४	१०।२२।३४	६।११।४२	११।१२।३०	०।१२।४५
२२	१५	११। ७।३१	४।२५।२२	०।१७।११	११। ५।५४	६।११। ९	११।२१।११	०।१३।३१
२९	चैत्र कृ. ६	११।१४।२७	७।२५।४०	०।२२। ७	११।२०। १	६।१०।२९	११।२९।५२	०।१४।१९
अप्रै. ५	१४	११।२१।२१	१०। ५।३८	०।२७। ०	०। ४। ४	६। ९।४३	०। ८।३०	०।१५। ९
१२	चैत्र शु. ६	११।२८।१४	२। ९।५२	१। १।५२	०।१६।१४	६। ८।५२	०।१७। ८	०।१६। १
१९	'२७वि. १३	०। ५। ५	५। ३।४२	१। ६।४२	०।२४।४७	६। ७।५९	०।२५।४३	०।१६।५४
२६	वैशा. कृ. ५	०।११।५४	८। ६।१८	१।११।३०	०।२८।४६	६। ७। ६	१। ४।१७	०।१७।४७
मई ३	१३	०।१८।४२	११।१५। २	१।१६।१६	०।२८।१०	६। ६।१३	१।१२।५०	०।१८।४१
१०	शु. ५	०।२५।२९	२।१७।४६	१।२१। ०	०।२४।२७	६। ५।२३	१।२१।२०	०।१९।३५
१७	११	१। २।१४	५।११।४१	१।२५।४२	०।२०।४६	६। ४।३८	१।२९।४८	०।२०।२९
२४	ज्ये. कृ. ४	१। ८।५८	८।१६।३५	२। ०।२३	०।१९।५२	६। ३।५९	२। ८।१५	०।२१।२१
३१	११	१।१५।४१	११।२५।१३	२। ५। २	०।२२।३४	६। ३।२६	२।१६।३८	०।२२।१३
जून ७	शु. ३	१।२२।२४	२।२५।५२	२। ९।४०	०।२८।३१	६। ३। २	२।२५। ०	०।२३। ३
१४	१०	१।२९। ५	५।१९।३८	२।१४।१७	१। ७।१३	६। २।४५	३। ३।१९	०।२३।५२
२१	आषा. कृ. २	२। ५।४६	८।२६। ६	२।१८।५२	१।१८।२४	६। २।३८	३।११।३४	०।२४।३८
२८	१०	२।१२।२७	०। ५।४१	२।२३।२६	२। १।४९	६। २।३९	३।१९।४६	०।२५।२२
जुला. ५	शु. २	२।१९। ७	३। ४।२०	२।२७।५८	२।१६।४५	६। २।४९	३।२७।५४	०।२६। ३
१२	८	२।२५।४८	५।२७।५०	३। २।३०	३। १।४५	६। ३। ८	४। ५।५८	०।२६।४१
१९	श्राव. कृ. १	३। २।२८	९। ४।५०	३। ७। १	३।१५।४१	६। ३।३५	४।१३।५६	०।२७।१५
२६	९	३। ९। ९	०।१५।५४	३।११।३१	३।२८।१०	६। ४।१०	४।२१।५०	०।२७।४५
अग. २	३०	३।१५।५१	३।१३। ८	३।१६। ०	४। ९।१३	६। ४।५१	४।२९।३४	०।२८।११
९	शु. ७	३।२२।३३	६। ६।३४	३।२०।२९	४।१८।४७	६। ५।४०	५। ७।११	०।२८।३३
१६	१४	३।२९।१६	९।१३। ७	३।२४।५७	४।२६।३९	६। ६।३५	५।१४।३८	०।२८।५०
२३	भाद्र. कृ. ७	४। ६। ०	०।२५।३०	३।२९।२५	५। २।१५	६। ७।३६	५।२१।५२	०।२९। २
३०	१४	४।१२।४६	३।२२। १	४। ३।५२	५। ४।३३	६। ८।४२	५।२८।५२	०।२९। ९
सितं. ६	शु. ५	४।१९।३३	६।१५।५४	४। ८।२०	५। २।१७	६। ९।५३	६। ५।३३	०।२९।१०
१३	१३	४।२६।२१	९।२१।३४	४।१२।४६	४।२५।५२	६।११। ८	६।११।५१	०।२९। ७
२०	आश्वि.कृ. ६	५। ३।१०	१। ४।१७	४।१७।१३	४।२०।३९	६।१२।२६	६।१७।३७	०।२८।५८
२७	१२	५।१०। १	४। ०।४३	४।२१।४०	४।२२।२०	६।१३।४८	६।२२।४४	०।२८।४४
अक्तू. ४	शु. ४	५।१६।५४	६।२५।३६	४।२६। ६	५। ०।३६	६।१५।१३	६।२६।५८	०।२८।२५
११	११	५।२३।४९	१०। ०।४६	५। ०।३३	५।१२। ३	६।१६।४०	७। ०। ३	०।२८। २
१८	कार्ति. कृ. ४	६। ०।४५	१।१२।२४	५। ४।५९	५।२४।१२	६।१८।१०	७। १।३८	०।२७।३५
२५	११	६। ७।४२	४। ९। १	५। ९।२६	६। ६। ७	६।१९।४०	७। १।२३	०।२७। ६
नवं. १	शु. २	६।१४।४२	७। ५।१५	५।१३।५३	६।१७।३६	६।२१।१२	६।२९।१४	०।२६।३३
८	१०	६।२१।४३	१०।१०।५७	५।१८।१९	६।२८।४३	६।२२।४४	६।२५।३२	०।२६। ०
१५	मार्ग. कृ. २	६।२८।४५	१।२०।२०	५।२२।४६	७। ९।३२	६।२४।१७	६।२१।२०	०।२५।२६
२२	९	७। ५।४९	४।१६।५६	५।२७।१३	७।२०। ६	६।२५।४९	६।१७।५९	०।२४।५२
२९	शु. १	७।१२।५४	७।१४।२०	६। १।४०	८। ०।२२	६।२७।२१	६।१६।२५	०।२४।१९
दिसं. ६	८	७।२०। ०	१०।२९।५१	६। ६। ७	८। ९।५७	६।२८।५१	६।१६।४९	०।२३।४९
१३	पौष कृ. १	७।२७। ६	१।२८।३६	६।१०।३३	८।१७।४०	७। ०।२०	६।१९। १	०।२३।२२
२०	७	८। ४।१४	४।२४।४३	६।१५। ०	८।२०।३५	७। १।४६	६।२२।३९	०।२२।४९

नेपच्यून के सायन राशि अंश

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१९११	१९१२	१९१३	१९१४	१९१५	१९१६	१९१७	१९१८	१९१९	१९२०	१९२१	१९२२	१९२३	१९२४	१९२५	१९२६
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१६	[illegible]	[illegible] २७	क. २३	क. २५	क. २७	सि. ०	सि. २	सि. ४	सि. ६	सि. ९	सि. ११	सि. १३	सि. १५	सि. १८	सि. २०	सि. २२	सि. २४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१४	१७	१९	२१	२४	२६	क. २८	०	२	५	७	९	११	१४	१६	१८	२१	२३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१५	१७	१९	२१	२३	२६	२८	०	२	४	७	९	११	१३	१६	१८	२०	२२
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१४	१६	१९	२१	२३	२५	२७	२९	१	४	६	८	१०	१३	१५	१७	१९	२१	२४
सित. १	क. १	३	[illegible]	८	९	[illegible]	१४	१६	१९	२१	२३	२५	२७	२९	सि. १	४	६	८	१०	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२६
नव. १	१	४	६	८	१०	१३	१५	१७	१९	२१	२४	२६	२८	सि. ०	३	५	७	९	१२	१४	१६	१८	२०	२३	२५	२७

ई. सन्	१९२७	१९२८	१९२९	१९३०	१९३१	१९३२	१९३३	१९३४	१९३५	१९३६	१९३७	१९३८	१९३९	१९४०	१९४१	१९४२	१९४३	१९४४	१९४५	१९४६	१९४७	१९४८	१९४९	१९५०	१९५१	१९५२
जन. १	सि. २७	सि. २९	क. १	क. ३	क. ६	क. ८	क. १०	क. १२	क. १४	क. १७	क. १९	क. २१	क. २३	क. २५	क. २८	तु. ०	तु. २	तु. ४	तु. ६	तु. ८	तु. १०	तु. १३	तु. १५	तु. १७	तु. १९	तु. २१
मार्च १	२५	२७	०	२	४	६	९	११	१३	१५	१७	२०	२२	२४	२६	क. २९	१	३	५	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०
मई १	२८	२७	सि. २९	१	३	५	७	९	१२	१४	१६	१८	२०	२३	२५	२७	०	२	४	६	८	१०	१२	१५	१६	१९
जुला. १	२६	२८	क. ०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२३	२५	२७	क. २९	१	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८
सित. १	२८	क. ०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२७	२९	तु. १	३	५	७	१०	१२	१४	१६	१८	२०
नव. १	२९	१	३	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२७	२९	तु. १	३	[illegible]	७	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२

ई. सन्	१९५३	१९५४	१९५५	१९५६	१९५७	१९५८	१९५९	१९६०	१९६१	१९६२	१९६३	१९६४	१९६५	१९६६	१९६७	१९६८	१९६९	१९७०	१९७१	१९७२	१९७३	१९७४	१९७५	१९७६	१९७७	१९७८
जन. १	तु. २२	तु. २४	तु. २७	वृ. ०	वृ. २	वृ. ४	वृ. ६	वृ. ८	वृ. १०	वृ. १२	वृ. १४	वृ. १६	वृ. १८	वृ. २०	वृ. २२	वृ. २४	वृ. २६	वृ. २८	ध. ०	ध. २	ध. ५	ध. ७	ध. ९	ध. ११	ध. १३	ध. १५
मार्च १	२३	२५	२७	तु. २९	१	३	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२३	२५	२७	२६	१	४	६	८	१०	१२	१४	१७
मई १	२१	२३	२५	२७	तु. २९	३	४	६	९	११	१३	१५	१७	१९	२२	२४	२६	२८	१	३	५	७	९	१२	१४	१६
जुला. १	२०	२२	२५	२७	२९	१	३	५	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२५	२७	वृ. २९	१	४	६	८	१०	१२	१५
सित. १	२२	२४	२६	२८	वृ. ०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१६	१८	२०	२२	२४	२७	२९	१	३	५	७	१०	१२	१४
नव. १	२४	२६	२८	वृ. ०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	ध. ०	३	५	७	९	११	१३	१५

ई. सन्	१९७९	१९८०	१९८१	१९८२	१९८३	१९८४	१९८५	१९८६	१९८७	१९८८	१९८९	१९९०	१९९१	१९९२	१९९३	१९९४	१९९५	१९९६	१९९७	१९९८	१९९९	२०००	२००१
जन. १	ध. १७	ध. १९	ध. २२	ध. २४	ध. २६	ध. २८	म. ०	म. २	म. ४	म. ६	म. ८	म. १०	म. १३	म. १५	म. १७	म. १९	म. २१	म. २३	म. २५	म. २७	म. २९	कु. २	कु. ४
मार्च १	१९	२१	२३	२५	२७	म. ०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१७	१९	२१	२३	२५	२७	२९	कु. २	४	६
मई १	१८	२१	२३	२५	२७	०	२	४	६	८	११	१३	१५	१७	१९	२२	२४	२६	२८	कु. ०	३	५	७
जुला. १	१७	१९	२१	२४	२६	ध. २८	०	[illegible]	५	७	९	१२	१४	१६	१८	२१	२३	२५	२७	०	२	४	६
सित. १	१५	१८	२१	२३	२५	२७	ध. २९	२	४	६	८	१०	१२	१५	१७	१९	२१	२४	२६	म. २८	कु. ०	३	५
नव. १	१७	१९	२१	२४	२६	२८	म. ०	२	४	६	८	११	१३	१५	१७	१९	२१	२४	२६	२८	०	२	४

नोट— ऊपर दी गई सारिणियों से अभीष्ट वर्ष-मास-तारीख को अनुपात से स्वल्पान्तरेण नेपच्यून के स्पष्ट सायन राशि अंश ज्ञात हो जाते हैं। इसमें से इस पञ्चाङ्ग में दी गई सारिणी द्वारा साधित अयनांश के अंश घटा देने से निरयण भोगांश ज्ञात हो जाता है। स्थूल रूप में मध्यमगति अनुसार नेपच्यून के राशि-अंश जानने की विधि यह है, अभीष्ट ईस्वी वर्ष में से १८६१ घटाएं। शेष को १४ से भाग दें। लब्धि भोगांश की राशि आएगी। शेष को दो से गुणा करने पर अंश प्राप्त होंगे। उदाहरणार्थ १८९२ में नेपच्यून की स्थिति स्थूल रूप से जाननी हो तो इसमें से १८६१ घटा कर शेष ३१ को १४ से भाग देने पर २ राशि एवं शेष ३ को दुगुना करने पर ६ अंश मिले। अतः सायन भोगांश मिथुन राशि ६ अंश हुआ।

यूरेनस एवं नेपच्यून के सायन भोगांश (Tropical Longitudes) एवं उनके आधार पर फलादेश

डा. शक्तिधर शर्मा

इस ग्रन्थ के पाठकों के लाभार्थ यहां यूरेनस एवं नेपच्यून के कुछ वर्षों के सायन राशि-अंश दे रहे हैं। यूरेनस का सायन भगणकाल लगभग ८४ वर्ष है। यहां सारणियों में ई. १९०० से १९८४ तक के सायन भोगांश (राशि अंश) दे दिये हैं। नेपच्यून का भगणकाल लगभग १६५ वर्ष है। परन्तु यहां पर हम केवल १०० वर्ष के सायन राश्यंश ही दे सके हैं। यूरेनस के लिए किसी भी अभीष्ट वर्ष के सायन राश्यंश इन्हीं सारणियों से ज्ञात किए जा सकते हैं। नेपच्यून के लिए १०० वर्ष के भोगांश ही पर्याप्त समझे हैं। इन की सारणियों के अन्त में दिये नोट में यूरेनस के ... में किसी भी वर्ष के लिए सायन भोगांश ज्ञात करने की विधि दे दी गई है। उस विधि से सरलता से ही इसके सायन राशि अंश जाने जा सकते हैं।

यूरेनस (हर्शल) के सायन राशि अंश

ई. सन्	१९०१	१९०२	१९०३	१९०४	१९०५	१९०६	१९०७	१९०८	१९०९	१९१०	१९११	१९१२	१९१३	१९१४	१९१५	१९१६	१९१७	१९१८	१९१९	१९२०	१९२१	१९२२	१९२३	१९२४
जन. १	ध. १३	ध. १७	ध. २२	ध. २६	म. ०	म. ४	म. ८	म. १२	म. १६	म. १९	म. २३	म. २७	कु. १	कु. ५	कु. ९	कु. १३	कु. १७	कु. २०	कु. २४	कु. २८	मी. २	मी. ६	मी. ९	मी. १३
मार्च १	१६	२०	२४	२८	३	७	११	१५	१९	२३	२७	कु. १	४	८	१२	१६	२०	२४	२७	मी. १	५	९	१२	१६
मई १	१७	२०	२४	२८	३	७	११	१६	२०	२४	२८	२	६	११	१४	१८	२२	२६	मी. ०	४	८	१२	१५	१९
जुला. १	१८	१७	२२	२६	१	५	१०	१४	१८	२३	२७	१	५	१०	१४	१८	२२	२६	०	४	८	१२	१६	२०
सित. १	१२	१६	२०	२५	ध. २९	३	८	१२	१६	२०	२५	म. २९	३	७	११	१६	२०	२४	कु. २८	२	६	११	१५	१९
नव. १	१४	१९	२२	२६	म. ०	४	८	१३	१७	२१	२५	२९	३	७	११	१५	१९	२३	२७	१	५	९	१३	१७
ई. सन्	१९२५	१९२६	१९२७	१९२८	१९२९	१९३०	१९३१	१९३२	१९३३	१९३४	१९३५	१९३६	१९३७	१९३८	१९३९	१९४०	१९४१	१९४२	१९४३	१९४४	१९४५	१९४६	१९४७	१९४८
जन. १	मी. १७	मी. २१	मी. २५	मी. २९	मे. ३	मे. ६	मे. १०	मे. १४	मे. १८	मे. २२	मे. २६	वृ. ०	वृ. ५	वृ. ९	वृ. १३	वृ. १७	वृ. २२	वृ. २६	मि. ०	मि. ४	मि. ९	मि. १३	मि. १८	मि. २२
मार्च १	२०	२४	२७	मे. १	५	९	१२	१६	२०	२४	२८	२	६	९	१३	१७	२२	२६	०	४	८	१२	१७	२१
मई १	२३	२७	मे. १	४	८	१२	१६	२०	२३	२७	वृ. १	५	९	१२	१६	२०	२४	२८	२	६	१०	१४	१९	२३
जुला. १	२४	२८	२	६	१०	१४	१८	२२	२६	वृ. ०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	मि. २	६	१०	१४	१८	२२	२६
सित. १	२३	२७	१	५	९	१४	१८	२२	२३	वृ. ०	४	८	१३	१७	२१	२५	२९	३	८	१२	१६	२०	२५	२९
नव. १	२१	२५	मी. २९	३	७	११	१५	२०	२४	मे. २८	२	६	११	१५	१९	२४	२८	२	७	११	१६	२०	२५	२९
ई. सन्	१९४९	१९५०	१९५१	१९५२	१९५३	१९५४	१९५५	१९५६	१९५७	१९५८	१९५९	१९६०	१९६१	१९६२	१९६३	१९६४	१९६५	१९६६	१९६७	१९६८	१९६९	१९७०	१९७१	१९७२
जन. १	मि. [illegible]	क. [illegible]	क. ६	क. ११	क. १६	क. २०	क. २५	सिं. ०	सिं. ५	सिं. १०	सिं. १५	सिं. १९	सिं. २४	सिं. २९	कं. ४	कं. ९	कं. १४	कं. १९	कं. २३	कं. २८	तु. ३	तु. ८	तु. १२	तु. १६
मार्च १	२७	०	४	९	१४	१८	२३	क. २८	२	७	१२	१७	२२	२७	२	७	१२	१७	२२	२७	२	७	१२	१७
मई १	[illegible]	१	५	१०	१४	१९	२३	२७	२	७	११	१६	२१	२५	०	५	१०	१५	१९	२४	कं. २९	४	९	१४
जुला. १	क. [illegible]	[illegible]	९	१३	१७	२२	२६	सिं. ०	५	९	१३	१८	२२	२७	१	६	११	१५	२०	२४	२९	४	८	११
सित. १	[illegible]	[illegible]	१२	१६	२१	२५	२९	४	८	१३	१७	२२	२६	कं. ०	५	९	१४	१८	२३	२७	तु. २	६	११	१५
नव. १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सिं. १	६	११	१५	२०	२४	३०	४	८	१३	१७	२२	२६	तु. १	६	१०	१४	१९
ई. सन्							१९७९	१९८०	१९८१	१९८२	१९८३	१९८४												
जन. १							वृ. १०	वृ. [illegible]	वृ. २७	ध. [illegible]	ध. ५	ध. ९												
मार्च १							[illegible]	२४	२९	४	७	११												
मई १							[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]												
जुला. १							[illegible]	२३	२८	२	६	११												
सित. १									२५	०	४	८												
नव. १									२५	वृ. २९	३	७												
									[illegible]	ध. १	५	१०												

		।२३	१०। १।	।२२		
२१		५।३१	९। ४।४६	१०।१०।३५	८।२	
२८	पौष कृ. ४	८।१२।३८	३।२९। २	१०।१५।४९	९। २	
जन, ४	११	८।१९।४६	६।२६।५१	१०।२१। २	९। ६।२	
'७०ई, ११	शु. ४	८।२६।५५	१०।११। ५	१०।२६।१५	९। २।२२	६।
१८	११	९। ४। ३	१।१४।१२	११। १।२७	८।२३।४४	६।
२५	माघ कृ. ३	९।११।१०	४। ७।४६	११। ६।३८	८।२०।२६	६।११
फर, १	१०	९।१८।१६	७। ५।३२	११।११।४८	८।२३।२४	६।११
८	शु. ३	९।२५।२२	१०।११।१८	११।१६।५७	८।२९।५७	६।१२।

नोट:—यूरेनस (हर्शल) का भगण-काल लगभग ८४ वर्ष है। अतः यदि सारणी में दिये वर्षों से भिन्न वर्ष का भोगांश जानना हो तो ई. वर्ष में १९०० घटा कर शेष को ८४ से भाग देकर जो शेष बचे उसे १९०० में जोड़ कर ऊपर की सारिणी में अभीष्ट मास तारीख के सायन राशि-अंश जान लें। इस पञ्चाङ्ग में दी गई सारिणियों से साधित अयनांश के अंश घटाने पर स्थूल रूप से यूरेनस का निरयण भोगांश ज्ञात होगा। यहां दी गई तारीखों के अतिरिक्त तारीखों में सायन राशि अंश ज्ञात करने के लिए अनुपात करें।

ग्रहों की चाल बड़ी निराली, कभी सताए कभी हो अथ दिवाली।

संप्रग-कांग्रेस के लिए सं. २०६३ की स्थिति ग्रहानुसार

संप्रग शपथ ग्रहण जन्म कुण्डली

नक्षत्र स्वाती। राहु काल सर्प योग २२-५-०४ सायं ५.३० नई दिल्ली

ज्योतिष गणना के अनुसार क्रूर, पाप ग्रहों शनि, राहु, केतु, मंगल के योग के कारण केन्द्र में सत्तारूढ़ संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार और कांग्रेस के लिए अगस्त ०५ से फरवरी २००६ तक सात माह मारक रूप में अशुभ दायक है। संप्रग और कांग्रेस के नेतृत्व के लिए आंतरिक षडयंत्रों और घटक दलों की सिरफुटी अब्बल घटनाएं घटेंगी। सरकार को नाड़ खेत को खाय वाली कहावत लागू होगी। यह घटना वि.सं.२०६२ के पंचांग में प्रकाशित हो चुकी है। स्मरणार्थ पुन: आधार बावत प्रस्तुत की जा रही है। भारत संप्रग सरकार की जन्म कुण्डली और प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह जी की कुण्डली के अनुसार दोनों को अपयश मिलेगा। किसी भी समय संप्रग सरकार के अप्रत्याशित महासंकट का महाग्रास बनने की संभावना है। ग्रह योगानुसार कर्क का शनि, शनि की साढ़े साती, गोचर में मंगल के साथ केन्द्र योग सूर्य बुध पर पाप ग्रहों की दृष्टि मंगल द्वारा षडाष्टक योग, सातवें घर पर मंगल-शनि का प्रभाव, कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी, प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की राशियों में द्विर्द्वादश योग, वृहस्पति का केतु के साथ कन्या में होना, गोचर में कन्या एवं सिंह राशि, गोचर में सूर्य अनिष्टकारी है। प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह जी के राहु की महादशा में बुध की दशा और सूर्य-चन्द्र की उपदशा सबसे ज्यादा खराब है। यह एकाएक गठबंधन को गिराने का योग या स्वयं ही त्याग पत्र दे दें, ऐसा योग पूर्व में प्रकाशित को आधार हेतु स्मरण कराया है। विद्वान् वर्ग ज्योतिष की प्रभावशीलता को स्वीकार करेंगे, आशा है।

डॉ. मनमोहन सिंह जी प्रधानमंत्री (भारत सरकार) धनु लग्न-कर्क राशि, राहु महादशा, बुध की दशा, शनि वक्री, बुध अस्त, गोचर में शनि कर्क में, राहु मीन में, केतु कन्या का। साल ग्रहों की दृष्टि अशुभदायक योग भी है।

विभिन्न लग्नों का अंकन एवं पठन से भविष्य फल बोध

जगत लग्न कुण्डली

यूरोपीय देशों की कु. १

यूरोपीय देशों की कु. २

मुस्लिम देशों की कुण्डली

जार्ज बुश की कुण्डली

स्वतंत्र भारत की कुण्डली

भारत के राष्ट्रपति की शपथ कुण्डली

श्री भैरोसिंह शेखावत

भा.ज.पा. पार्टी

कांग्रेस पार्टी

यूरेनस एवं नेपच्यून के सायन भोगांश (Tropical Longitudes) एवं उनके आधार पर फलादेश

डा. शक्तिधर शर्मा

इस अङ्क पाठकों के लाभार्थ यहां यूरेनस एवं नेप्च्यून के कुछ वर्षों के सायन राशि-अंश दे रहे हैं। यूरेनस का सायन भगणकाल लगभग ८४ वर्ष है। यहां सारणियों में ई. १९०० से १९८४ तक के सायन भोगांश (राशि अंश) दे दिये हैं। नेप्च्यून का भगणकाल लगभग १६५ वर्ष है। परन्तु यहां पर हम केवल १०० वर्ष के सायन राश्यंश ही दे सके हैं। यूरेनस के लिए किसी भी अभीष्ट वर्ष के सायन राश्यंश इन्हीं सारणियों से ज्ञात किए जा सकते हैं। नेप्च्यून के लिए १०० वर्ष के भोगांश ही पर्याप्त समझे हैं। इन की सारणियों के अन्त में दिये नोट में [illegible] में किसी भी वर्ष के लिए सायन भोगांश ज्ञात करने की विधि दे दी गई है। उस विधि से सरलता से ही इनके सायन राशि अंश जाने जा सकते हैं।

यूरेनस (हर्शल) के सायन राशि अंश

ई. सन	१९०१	१९०२	१९०३	१९०४	१९०५	१९०६	१९०७	१९०८	१९०९	१९१०	१९११	१९१२
जन. १	ध. १३	ध. १७	ध. २२	ध. २६	म. ०	म. ४	म. ८	म. १२	म. १६	म. १९	म. २३	म. २७
मार्च १	१६	२०	२४	२८	३	७	११	१५	१९	२३	२७	कु. १
मई १	१७	२०	२४	२८	३	७	११	१६	२०	२४	२८	२
जुला. १	१८	१७	२२	२६	१	५	१०	१४	१८	२३	२७	१
सित. १	१२	१६	२०	२५	ध. २९	३	८	१२	१६	२०	२५	म. २९
नव. १	१४	१९	२२	२६	म. ०	४	८	१३	१७	२१	२५	२९

ई. सन	१९१३	१९१४	१९१५	१९१६	१९१७	१९१८	१९१९	१९२०	१९२१	१९२२	१९२३	१९२४
जन. १	कु. १	कु. ५	कु. ९	कु. १३	कु. १७	कु. २०	कु. २४	कु. २८	मी. २	मी. ६	मी. ९	मी. १३
मार्च १	४	८	१२	१६	२०	२४	२७	मी. १	५	९	१२	१६
मई १	६	११	१४	१८	२२	२६	मी. ०	४	८	१२	१५	१९
जुला. १	५	१०	१४	१८	२२	२६	०	४	८	१२	१६	२०
सित. १	३	७	११	१६	२०	२४	कु. २८	२	६	११	१५	१९
नव. १	३	७	११	१५	१९	२३	२७	१	५	९	१३	१७

ई. सन	१९२५	१९२६	१९२७	१९२८	१९२९	१९३०	१९३१	१९३२	१९३३	१९३४	१९३५	१९३६
जन. १	मी. १७	मी. २१	मी. २५	मी. २९	मे. ३	मे. ६	मे. १०	मे. १४	मे. १८	मे. २२	मे. २६	वृ. ०
मार्च १	२०	२४	२७	मे. १	५	९	१२	१६	२०	२४	२८	२
मई १	२३	२७	मे. १	४	८	१२	१६	२०	२३	२७	वृ. १	५
जुला. १	२४	२८	२	६	१०	१४	१८	२२	२६	वृ. ०	४	८
सित. १	२६	२७	१	५	९	१४	१८	२२	२३	वृ. ०	४	८
नव. १	२१	२५	मी. २९	३	७	११	१५	२०	२४	मे. २८	२	६

ई. सन	१९३७	१९३८	१९३९	१९४०	१९४१	१९४२	१९४३	१९४४	१९४५	१९४६	१९४७	१९४८
जन. १	वृ. ५	वृ. ९	वृ. १३	वृ. १७	वृ. २२	वृ. २६	मि. ०	मि. ४	मि. ९	मि. १३	मि. १८	मि. २२
मार्च १	६	९	१३	१७	२२	२६	०	४	८	१२	१७	२१
मई १	९	१२	१६	२०	२४	२८	२	६	१०	१४	१९	२३
जुला. १	१२	१६	२०	२४	२८	मि. २	६	१०	१४	१८	२२	२६
सित. १	१३	१७	२१	२५	२९	३	८	१२	१६	२०	२५	२९
नव. १	११	१५	१९	२४	२८	२	७	११	१६	२०	२५	२९

ई. सन	१९४९	१९५०	१९५१	१९५२	१९५३	१९५४	१९५५	१९५६	१९५७	१९५८	१९५९	१९६०
जन. १	मि. [illegible]	क. [illegible]	क. ६	क. ११	क. १६	क. २०	क. २५	सि. ०	सि. ५	सि. १०	सि. १५	सि. १९
मार्च १	२५	०	४	९	१४	१८	२३	क. २८	२	७	१२	१७
मई १	[illegible]	१	५	१०	१४	१९	२३	२७	२	७	११	१६
जुला. १	क. [illegible]	[illegible]	०	१३	१७	२१	२६	सि. ०	५	९	१३	१८
सित. १	[illegible]	[illegible]	१२	१६	२१	२४	२९	४	८	१३	१७	२२
नव. १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सि. १	६	११	१५	२०	२४

ई. सन	१९६१	१९६२	१९६३	१९६४	१९६५	१९६६	१९६७	१९६८	१९६९	१९७०	१९७१	१९७२
जन. १	सि. २४	सि. २९	क. ४	क. ९	क. १४	क. १९	क. २३	क. २८	तु. ३	तु. ८	तु. १२	तु. १६
मार्च १	२२	२७	२	७	१२	१७	२२	२७	२	७	१२	१७
मई १	२१	२५	०	५	१०	१५	१९	२४	क. २९	४	९	१४
जुला. १	२२	२७	१	६	११	१५	२०	२४	२९	४	८	१३
सित. १	२६	क. ०	४	९	१४	१८	२३	२७	तु. २	६	११	१५
नव. १	२९	४	८	१३	१७	२२	२६	तु. १	६	१०	१४	१९

ई. सन	१९७९	१९८०	१९८१	१९८२	१९८३	१९८४
जन. १	वृ. १०	वृ. २३	वृ. २७	ध. [illegible]	ध. ५	ध. ९
मार्च १	[illegible]	२४	२९	[illegible]	७	११
मई १	[illegible]	[illegible]	२८	[illegible]	६	११
जुला. १	[illegible]	[illegible]	२५	०	४	८
सित. १	[illegible]	[illegible]	२५	वृ. २९	३	७
नव. १	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ध. १	५	१०

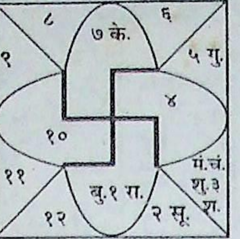
नोट:—यूरेनस (हर्शल) का भगण-काल लगभग ८४ वर्ष है। अतः यदि सारणी में दिये वर्षों से भिन्न वर्ष का भोगांश जानना हो तो ई. वर्ष में १९०० घटा कर शेष को ८४ से भाग देकर जो शेष बचे उसे १९०० में जोड़ कर ऊपर की सारिणी में अभीष्ट मास तारीख के सायन राशि-अंश जान लें। इस पञ्चाङ्ग में दी गई सारिणियों से साधित अयनांश के अंश घटाने पर स्थूल रूप से यूरेनस का निरयण भोगांश ज्ञात होगा। यहां दी गई तारीखों के अतिरिक्त तारीखों में सायन राशि अंश ज्ञात करने के लिए अनुपात करें।

		[illegible]।२३	१०। ९[illegible]	[illegible]५।२२	[illegible]	
२१		५।३१	११। ४।४६	१०।१०।३५	८।२[illegible]	
२८	पौष कृ. ४	८।१२।३८	३।२९। २	१०।१५।४९	९। २[illegible]	
जन, ४	११	८।१९।४६	६।२६।५१	१०।२१। २	९। ६।२[illegible]	
१९७६, ११	शु. ४	८।२६।५५	१०।११। ५	१०।२६।१५	९। २।२२	६।[illegible]
१८	११	९। ४। ३	११।४।१२	११। १।२७	८।२३।४४	६।[illegible]
२५	माघ कृ. ३	९।११।१०	४। ७।४६	११। ६।३८	८।२०।२६	६।११ २३
फर, १	१०	९।१८।१६	७। ५।३२	११।११।४८	८।२३।२४	६।११।४१
८	शु. ३	९।२५।२२	१०।११।१८	११।१६।५७	८।२९।५७	६।१२।[illegible]

ग्रहों की चाल बड़ी निराली, कभी सताएं कभी हो जाये दिवाली।

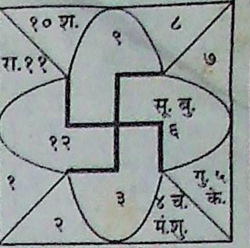
संप्रग-कांग्रेस के लिए सं. २०६३ की स्थिति ग्रहानुसार

संप्रग शपथ ग्रहण जन्म कुण्डली



नक्षत्र स्वाती। राहु काल सर्प योग २२-५-०४ सायं ५.३० नई दिल्ली

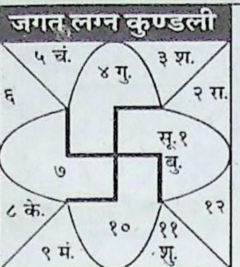
ज्योतिष गणना के अनुसार क्रूर, पाप ग्रहों शनि, राहु, केतु, मंगल के योग के कारण केन्द्र में सत्तारूढ़ संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार और कांग्रेस के लिए अगस्त ०५ से फरवरी २००६ तक सात माह मारक रूप में अशुभ दायक है। संप्रग और कांग्रेस के नेतृत्व के लिए आंतरिक षडयंत्रों और घटक दलों की सिरफुटी अव्वल घटनाएं घटेंगी। सरकार को नाड़ खेत को खाय वाली कहावत लागू होगी। यह घटना वि.सं.२०६२ के पंचांग में प्रकाशित हो चुकी है। स्मरणार्थ पुन: आधार बावत प्रस्तुत की जा रही है। भारत संप्रग सरकार की जन्म कुण्डली और प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह जी की कुण्डली के अनुसार दोनों को अपयश मिलेगा। किसी भी समय संप्रग सरकार के अप्रत्याशित महासंकट का महाग्रास बनने की संभावना है। ग्रह योगानुसार कर्क का शनि, शनि की साढ़े साती, गोचर में मंगल के साथ केन्द्र योग सूर्य बुध पर पाप ग्रहों की दृष्टि मंगल द्वारा षडाष्टक योग, सातवें घर पर मंगल-शनि का प्रभाव, कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी, प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की राशियों में द्विर्द्वादश योग, वृहस्पति का केतु के साथ कन्या में होना, गोचर में कन्या एवं सिंह राशि, गोचर में सूर्य अनिष्टकारी है। प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह जी के राहु की महादशा में बुध की दशा और सूर्य-चन्द्र की उपदशा सबसे ज्यादा खराब है। यह एकाएक गठबंधन को गिराने का योग या स्वयं ही त्याग पत्र दे दें, ऐसा योग पूर्व में प्रकाशित को आधार हेतु स्मरण कराया है। विद्वान् वर्ग ज्योतिष की प्रभावशीलता को स्वीकार करेंगे, आशा है।



डॉ. मनमोहन सिंह जी प्रधानमंत्री (भारत सरकार) धनु लग्न-कर्क राशि, राहु महादशा, बुध की दशा, शनि वक्री, बुध अस्त, गोचर में शनि कर्क में, राहु मीन में, केतु कन्या का। साल ग्रहों की दृष्टि अशुभदायक योग भी है।

विभिन्न लग्नों का अंकन एवं पठन से भविष्य फल बोध

जगत् लग्न कुण्डली



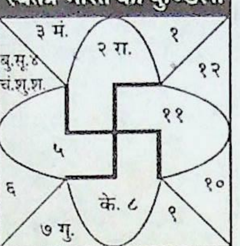
यूरोपीय देशों की कु. १

यूरोपीय देशों की कु. २

मुस्लिम देशों की कुण्डली

जार्ज बुश की कुण्डली

स्वतंत्र भारत की कुण्डली

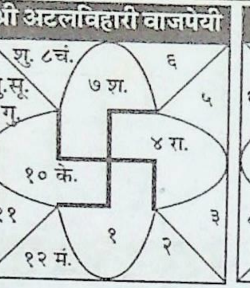


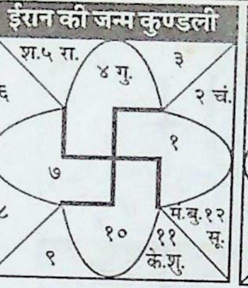
भारत के राष्ट्रपति की शपथ कुण्डली

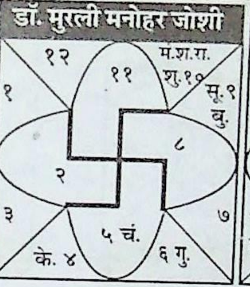
श्री भैरोसिंह शेखावत

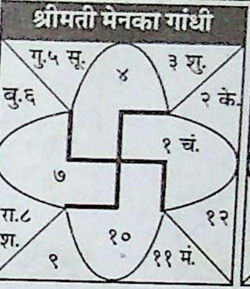
भा.ज.पा. पार्टी

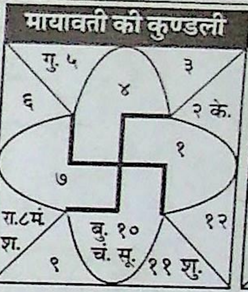
कांग्रेस पार्टी


श्री अटलविहारी वाजपेयी

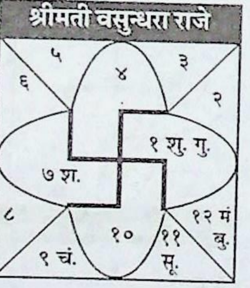

ईरान की जन्म कुण्डली

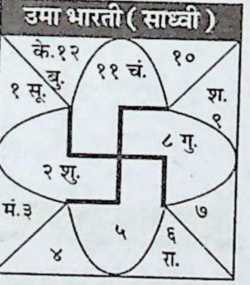

डॉ. मुरली मनोहर जोशी

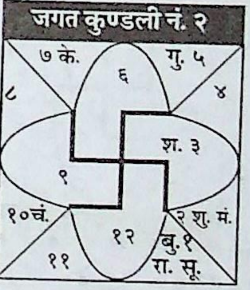

श्रीमती मेनका गांधी

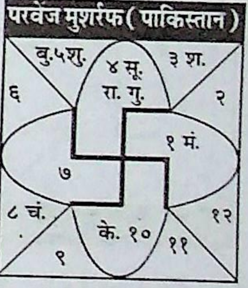

मायावती की कुण्डली

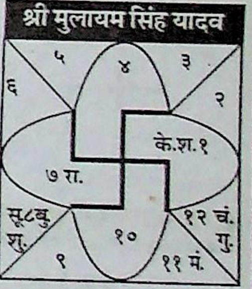

श्री अशोक गहलोत

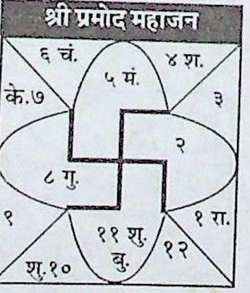

श्रीमती वसुन्धरा राजे

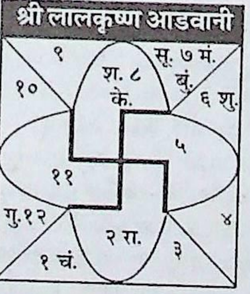

उमा भारती (साध्वी)

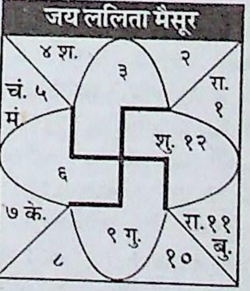

जगत कुण्डली नं. २

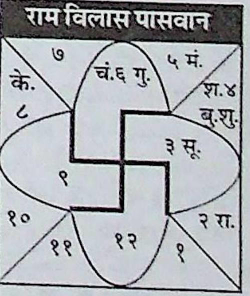

परवेज मुशर्रफ (पाकिस्तान)

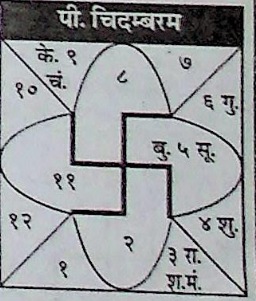

श्री मुलायम सिंह यादव


श्री प्रमोद महाजन

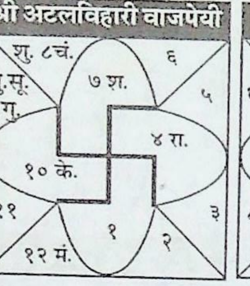

श्री लालकृष्ण आडवानी

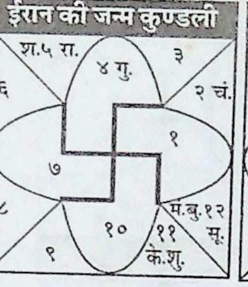

जय ललिता मैसूर

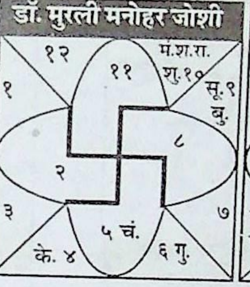

राम विलास पासवान

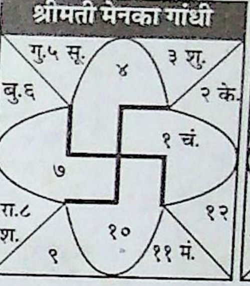

पी. चिदम्बरम

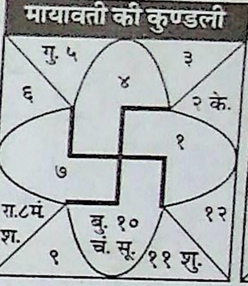
इन नेताओं की कुण्डली के ग्रह योग एवं विश्व स्तरीय भविष्य का कथन मेदनीय ज्योतिष एवं शकुन शास्त्र तथा अन्य ग्रह बलाबल का आधार ईष्ट शक्ति से जानकर यह भविष्य कथन जनहित में किया जा रहा है ।


श्री अटलविहारी वाजपेयी

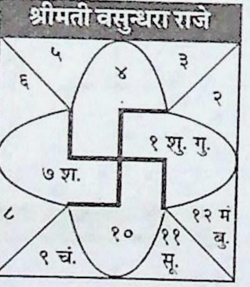

ईरान की जन्म कुण्डली

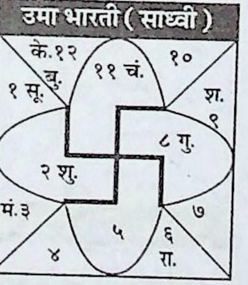

डॉ. मुरली मनोहर जोशी

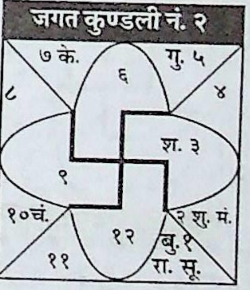

श्रीमती मेनका गांधी

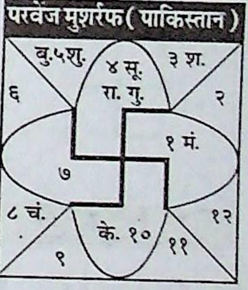

मायावती की कुण्डली

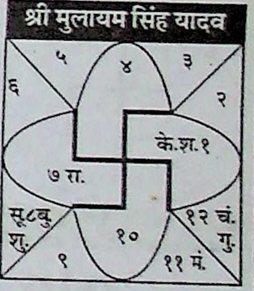

श्री अशोक गहलोत

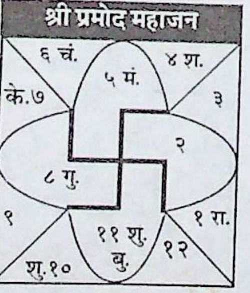

श्रीमती वसुन्धरा राजे

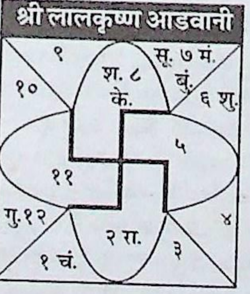

उमा भारती (साध्वी)

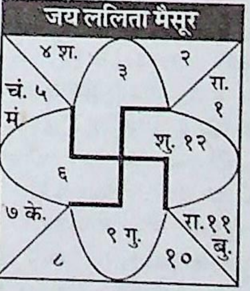

जगत कुण्डली नं. २

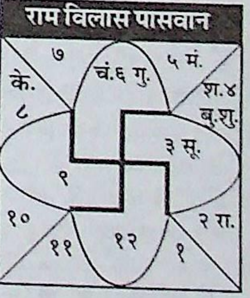

परवेंज मुशर्रफ (पाकिस्तान)


श्री मुलायम सिंह यादव


श्री प्रमोद महाजन


श्री लालकृष्ण आडवानी


जय ललिता मैसूर


राम विलास पासवान


पी. चिदम्बरम

इन नेताओं की कुण्डली के ग्रह योग एवं विश्व स्तरीय भविष्य का कथन मेदनीय ज्योतिष एवं शकुन शास्त्र तथा अन्य ग्रह बलाबल का आधार ईष्ट शक्ति से जानकर यह भविष्य कथन जनहित में किया जा रहा है।

संक्षिप्त विषय सूची (सं. २०३५ वि.)

२०३५ वि. के प्रारम्भ में श्री मार्तण्ड पंचांग अपने ५० वर्ष पूर्ण करेगा। अतः सं. २०३५ के इस अंक को भी हमने 'स्वर्ण जयन्ती अंक' का ही रूप माना है

...—इस पृष्ठ पर स्थानाभाव के कारण हम पूर्ण रूप से पंचांग गत विषयों की सूची नहीं दे पाए हैं। वस्तुत: आपकी आवश्यकता के सभी विषय आपको ...ध्यान दें-आपका ...पंचांग डबल पचांग है। घटी पलात्मक पंचांग के साथ ही पृ. ८५ से ९१ तक सारा पंचांग घन्टामिनटों में भी दिया गया है।

श्री अटलविहारी

शु. ८चं.
बु.सू.
९गु.

...र्जर्षि का महाप्रयाण

...को सायं मा... बजे बघाट-स्टेट में सोलन ...१०५ दुर्गासिह जी C.I.E. के ७६ वर्ष की अवस्था में ...की विरलवाही राजर्षि प... को वस्तुत: एक अपूरणीय क्षति ...ो नियमित संयत, सात्विक दिनचर्या में आपके सतत सम्पर्क में ...नेरांग महात्मा लोग भी प्रभा... थे। कुछ वर्ष पूर्व जब आपके पूर्वजों ...प्रतीक बहुमूल्य सुविशाल ...आदि अमूल्य आभूषणों उपकरणों सहित ...भस्मसात् हुआ, तब ...ने इस दुर्घटना को वैभव के मोह से मुक्ति ...ईश्वरानुग्रह बतलाते हुए अपनी प्रसन्नता ही व्यक्त की। योगियों को ...डालने में विश्रुत वि... राजैश्वर्य भी ज्ञान में विशुद्ध आपकी अन्तरात्मा ...कर सकने में सर्वथा अक्षम रहा। सुलभ विलास की आकर्षक शक्ति को ...ण्ठन कर डालने में सक्षम, कठिन व्रत नियमों से परिष्कृत एवं पावन आपका यौवन ...हाकवि कालीदास द्वारा वर्णित "यौवने विषयैषिणाम्" सूर्य वंशज राजाओं को यौवन ...भी कहीं अधिक श्रद्धेय रहा है। सरदार वल्लभ भाई पटेल द्वारा केन्द्र में राज्य के ...की मांग पर हिमाचलीय राजाओं में सर्व-प्रथम आपके द्वारा ही राज्य को ...त किया गया। आपके इस अनाकांक्षावृत्ति के अलभ्य आदर्श से प्रभावित केन्द्र ...आप से हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री पद सम्भालने के लिए आग्रह किया गया। आप ने इस उच्चाधिकार को अपने तपोमय जीवन में एक बड़ी बाधा कहकर ...कार कर दिया।

युवावस्था में एकमात्र महारानी ... निधन के उपरान्त सन्तति के अभाव में ...पके दृढ़ एक-पत्नीत्व व्रत ने (मर्यादा) पुरुषोत्तम श्री राम की स्मृति को साकार ...दिया। निकट के बन्धुओं के जीवन व्यापी अभाव ने आपकी सहज शान्तिमयी, ...न्त वृत्तिको दर्शनशास्त्र के परिशीलन, तथा विद्वानों-महापुरुषों के समागम की ...कर दिया।

आपने अपने शासनकाल में अपनी प्रजा को पुत्र से भी अधिक स्नेह दिया। ...र विधर्मी दोनों पर निर्विशेष रूप से पड़ती हुई आपकी वत्सल दृष्टि ने ...ई साम्प्रदायिक या जातीय भावना के विष से उत्पन्न होने वाला पक्षपात या ...अपने राज्य में नहीं होने दिया। 'राजा प्रकृति रञ्जनात्' राजा की यह ...आप में सचमुच मूर्तिमती थी।

आप जैसे परमपूत, ब्रह्ममय, जीवन्मुक्त महापुरुष की दिवंगत आत्मा को ...-शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना कोई अर्थ नहीं रखती, यह तो उसका स्वयंसिद्ध ...धिकार है। ब्रह्मर्षि पद के सर्वथा अनुरूप परमवीतराग उस महान आत्मा के परब्रह्म ...विलय पर हम शोक भी क्या प्रकट करें। फिर भी प्रत्येक समागम में हम से संसार ...नश्वरताकी चर्चा करने वाले उस योगिराज का यह विछोह हम अज्ञानियों के लिए वस्तुत: यन्त्रणा बन गया है, ऐसे आत्मिक वैभव सम्पन्न महापुरुष के लिए यह शरीर ...ग नि:सन्देह निर्वाण प्राप्ति है, लेकिन जगत् के कल्याणकार्य में यह सचमुच एक बहुत ...डा विघ्न है। आपकी छत्रछाया में शान्तिमय जीवन व्यतीत करने वाला मैं और मेरा ...वार आज अपने आपको निराश्रय अनुभव कर रहा है।

...मुकुन्दवल्लभ (सपरिवार)

अशुद्धि पत्र (सं. २०३४ वि.)

वि. सं. २०३४ के 'श्री मार्तण्ड पंचांग' में नीचे लिखी कुछ मुद्रणसम्बन्धी अशुद्धियां हमारी दृष्टि में आई हैं, पाठक इन्हें ठीक कर लें। ये गलतियाँ दूसरे संस्करण में छपे पंचांगों में नहीं हैं—

पृष्ठ	कालम	पंक्ति आदि	अशुद्ध	शुद्ध
१२	१	-१२	५८.२७	४५८.२७
१५	२	१८	सर्वोच्चादि...	स्वोच्चादि...
१५	२	१९	स्वोच्चा...	स्वोच्चादि...
१५	२	२४	वृद्धि हो या अधिक...	वृद्धि अधिक...
१७	९	१०	०।११।४०	०।१६।४०
३३	२	सूर्य ग्रहण चित्र (३)	सूर्यविम्ब = १	सूर्य विम्ब = १०
५६	१	३२	कृष्णाष्टमी भी	कृष्णाष्टमी
१५३	२	६	ग्रह के प्रवेश	ग्रह के प्रवेश
१५७	१	६	सन् १९७७	सन् १९२७

पृष्ठ २२ पर २६ और २७ दोनों कालम २४ अप्रैल से १ जुलाई तक एक-एक पंक्ति क्रमश: नीचे खिसका दीजिए।

पृष्ठ ८८ पर पौष कृष्ण पक्ष के तीसरे कालम में ३०दिसं.१९७७ई. से ४ जन. १९७८ ई. तक तिथियां क्रमश: ६ से ११ तक गलती से छप गई हैं, इन्हें क्रमश: ५ से १० तिथियां समझें।

हार्दिक समवेदना

मौसम विभाग भारत सरकार के 'नाटिकल आल्मनाक' सैक्शन के कार्यविक्षक अधिकारी, हमारे परममित्र श्री ए. बन्द्योपाध्याय M.Sc. की विदुषी धर्मपरायण धर्मपत्नी का एक दुर्घटना में आकस्मिक देहावसान वस्तुत: अरुन्तुद घटना है। जीवन के मध्य में ही पत्नी का इस प्रकार आकालिक अनन्त विछोह जीवन के शेष भाग में किसी भी प्रकार का उत्साह नहीं रहने देता, ("प्रियानाशे कृत्स्नं किल जगदरण्यं हि भवति"), तथापि जीवन की इस अपूर्व शून्यता को श्री बन्द्योपाध्याय जैसे विद्वान, व्यक्ति ईश्वर कृत, अपरिहार्य भवितव्यता जान कर मातृ स्नेह से वञ्चित अपने बच्चों के प्रति दुहरा उत्तरदायित्व समझते हुए कर्मयोगी की भान्ति सांसारिक क्रिया कलाप का निर्वहण करते रहेंगे—ऐसा हमें विश्वास है। उनके गृहिणी शून्य इस नीरस जीवन में उत्साह उत्पन्न हो, तथा उनकी दिवंगत धर्मपत्नी की आत्मा को शान्ति मिले — यह हमारी प्रभु से प्रार्थना है।

प्रियव्रत-शक्तिधर-इन्दुशेखर